अति रमणीये काव्ये पिशुनो दूषण मन्वेषयति
अति रमणीये वपुषि व्रणामिव मक्षिका निकर:

अति सुन्दर काव्य मे भी पिशुन (धूर्त्तपुरुष) दोषो को ही खोजता रहता है। जैसे कि अति सुन्दर शरीर मे भी मक्षिकाऐ केवल व्रण (घाव) को ही खोजतीं हैं।





ऐसा कोई भी बुद्धिमान् मनुष्य संसार में न होगा जिसने कि धर्म और अधर्म की विचारणा मे अपना थोड़ा बहुत समय न लगाया हो। धर्म क्या है और अधर्म क्या है प्रायः इसी विवेचना में नाना सम्प्रदायों के नाना ही ग्रन्थ बन चुके हैं और समय २ पर भिन्न २ मतावलम्बियों के इसी विषय पर लम्बे २ व्याख्यान और चौड़े २ वादविवाद भी होते रहते हैं। एक समाज जिसको धर्म कहता है दूसरा समाज उसीको अधर्म कह कर पुकारता है। इस धर्माऽधर्म की ही चर्चा मे स्वार्थ देवका साम्राज्य होने के कारण निर्णय के स्थान मे वितण्डावाद हो जाता है और शास्त्रार्थी शस्त्रार्थी बन जाते हैं। निर्मल हृदय वाले महात्माओं का अपमान होता है और पाषण्डियो का जय २ कार होने लगता है। *"धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः"* धर्म के विना मनुष्य पशु समान है, इस न्याय के आधार पर कोई भी पुरुष पशुओं की सङ्ख्या में सम्मिलित होना नहीं चाहता। किसी अज्ञानी से भी पशु कहना उसको चिढ़ाना है। परन्तु सुख भी भोगना और धर्म भी हो जाना ये दोनों बाते कैसे हो सक्ती हैं। धर्म्म २ कहना केवल जीभ हिलाना है और धर्म्म करना सांसारिक सुखों को जलाञ्जलि देना है। धर्म्म कोई पैतृक (पिता सम्बन्धी) व्यवसाय नहीं है यदि कोई अनभिज्ञ पुरुष शुद्ध महात्माओं के उपदेश को यह कह कर कि "यह उपदेश हमारे पितृ धर्म से विपरीत है" नहीं मानता है वह केवल अन्ध परम्परा का ही अनुयायी है *"तातस्य कूपोऽयं मिति ब्रुवाणाः क्षार जल का पुरुषाः पिबन्ति"* यह कूआ हमारे पिता का है यह कहकर खारी होनेपर भी मूर्ख पुरुष ही उसका जल पीते हैं। शुद्ध साधुओं का उपदेश संसार से तारने का है धर्म के विषय में अपना पराया समझना एक बड़ी भूल है। यदि एक बड़ी नदी से पार होने के लिये किसी की टूटी हुई नाव काम नहीं देती तो किसी दूसरे के जहाज़से पार हो जाना क्या बुद्धिमानी का काम नहीं है। धर्म कोष के अध्यक्ष शुद्ध साधु ही हैं धर्म की प्राप्ति करने के लिये साधुओं की ही शरण लेना अत्यावश्यकीय है। किन्तु

साधुओं के समान वेष धारण करने से ही साधु नहीं होता अथच भगवान् की आज्ञानुसार ही आचार विचार पालनेवाला साधु कहा जाता है। सिंह की चर्म पहिन कर गर्धव तभीतक सिंह माना जाता है जब तक कि वह अपने मधुर स्वर से गाना नहीं आरम्भ करता है। वेषधारी तभीतक साधु प्रतीत होता है जवतक कि उसकी पञ्च महाव्रत पालना में शिथिलता नहीं दीख पड़ती है।

जब कि आप एक छोटी सी भी नदी पार करने के लिये नाव को ठोक पीट कर उसकी दृढ़ता की परीक्षा करने के पश्चात् चढ़ने को उद्यत होते हैं तो क्या यह आवश्यकीय नहीं है कि संसार जैसे महासागर के पार करने के लिये पोत (जहाज़) रूपी साधुओं की भले प्रकार परीक्षा कर लें। मान लिया कि साधु-साधुओं का वेष वनाय हुए है। और दूसरों के पराजय करने के लिये उसने कुयुक्तियां भी वहुत सी पढ़ रक्खी हैं तथापि यदि भगवान् की आज्ञा के विरुद्ध चलता है और "इस समय में पूरा साधुपना नहीं पल सक्ता" ऐसी शास्त्र विरुद्ध वातें कह २ कर लोगों को भ्रमाता रहता है तो वह केवल पत्थर की नाव के समान है न स्वयं तर सक्ता है न दूसरों को तार सक्ता है।

साधुओं का आचार विचार भगवान् की वाणी से विदित होता है। सूत्र ही भगवान् की वाणी हैं। सूत्रों का विषय गम्भीर होने से तथा गृहस्थ समाज का सूत्र पढ़ने का अनधिकार होने से सर्व साधा रण को भगवान् की वाणी विदित हो जावे और संसार सागर से पार होनेके लिये साधु असाधु की परीक्षा हो जावे यह विचार कर ही जैन श्वेताम्बर तेरापन्थ नायक पूज्य श्री १००८ जयाचार्य महाराज ने इस "भ्रम विध्वंसन" ग्रन्थ को वनाया है। इस ग्रन्थ में जो कुछ लिखा है वह सब सूत्रों का प्रमाण देकर ही लिखा गया है अतः यह ग्रन्थ कोई अन्य ग्रन्थ नहीं है किन्तु सर्व सूत्रों का ही सार है। भगवान् के वाक्यों के अर्थ का अनर्थ जहां कहीं जिस किसी स्वार्थ लोलुपी ने किया है उसके खंडन और सत्य अर्थ के मण्डन में जय महाराज ने जैसी कुशलता दिखलायी है वैसी सहस्र लेखनियों से भी वर्णन नहीं की जा सक्ती। यद्यपि आपके वनाये हुए अनेक ग्रन्थ हैं तथापि यह आपका ग्रन्थ मिथ्यात्व अन्धकार मिटाने के लिये साक्षात् सूर्यदेव के ही समान है। एकवार भी जो पुरुष इस ग्रन्थ का मनन कर लेगा उसको शीघ्र ही साधु असाधु की परीक्षा हो जावेगी और शुद्ध साधु की शरण मे आकर इस असार संसार से अवश्य तर जावेगा।

यद्यपि यह ग्रन्थ पहिले भी किसी मुम्बई के प्राचीन ढङ्ग के यन्त्रालय में छप चुका है। तथापि वह किसी प्रयोजन का नहीं हुआ छपा न छपा एकसा ही रहा। एक तो टायप ऐसा कुरूप था, दीख पड़ता था कि मानों लियो का ही छपा हुआ है। दूसरे प्रूफ संशोधन तो नाममात्र भी नहीं हुआ समस्त शब्द विपरीत दशा में ही छपे हुए थे। कई २ स्थान पर पंक्तियां हो छोड़ दी थीं दो एक स्थान पर एक दो पृष्ठ भी टूटा हुआ मिला है। सारांश यह है कि एक पंक्ति भी शुद्ध नहीं छापी गई। ऐसी दशा में जयाचार्य का सिद्धान्त इस पूर्व छपे हुए पुस्तक से जानना दुर्लभ ही हो गया था। ऐसी व्यवस्था इस अपूर्व ग्रन्थ की देख कर तेरा-पन्थ समाज को इसके पुनरुद्धार करने की पूर्ण ही चिन्ता थी। परन्तु होता क्या मूल पुस्तक जो कि जयाचार्य की हस्तलिखित है साधुओं के पास थी बिना मूल पुस्तक से मिलाये संशोधन कैसे होता। शुद्ध साधुओं की यह रीति नहीं कि गृहस्थ समाज को अपनी पुस्तक छपाने को अथवा नक़ल करने को देवें। ऐसी अवस्था में इस ग्रन्थ का संशोधन असम्भव सा ही प्रतीत होने लगा था। समय बलवान् है पूज्य श्री १००८ कालू गणिराज का चतुर्मास सं० १९७९ में बीकानेर हुआ। वहां पर साधुओं के समीप मूल पुस्तकमें से धार धार कर अपने स्थानमें आकर त्रुटियां शुद्ध कीं। ऐसे गमनाऽऽगमन में संशोधन कार्य के लिये जितना परिश्रम और समय लगा उसको धारनेवालेका ही आत्मा वर्णन कर सका है। इसमें कुछ संशोधक की प्रशंसा नहीं किन्तु यह प्रताप श्रीमान् कालू गणिराज का ही है जिन के कि शासन में ऐसे अनेक २ दुर्लभ कार्य सुलभता को पहुंचे हैं। कई भाइयों की ऐसी इच्छा थी कि इस ग्रन्थ को खड़ी बोली में अनुवादित किया जावे परन्तु जैसा रस असल में रहता है वह नक़ल में नहीं। इस ग्रन्थ की भाषा मारवाड़ी है थोड़े पढ़े लिखे भी अच्छी तरह समझ सकते हैं। यद्यपि इस ग्रन्थ के प्रूफ संशोधन में अधिक से अधिक भी परिश्रम किया गया है, तथापि संशोधक की अल्पज्ञता के कारण जहां कहीं कुछ भूलें रह गई हों तो विज्ञ जन सुधार कर पढ़ें। भूल होना मनुष्यों का स्वभाव है। टायप भी कलकत्ते का है छापते समय भी मात्राएं टूट फूट जाती हैं कहीं २ अक्षर भी दबनेके कारण नहीं उघड़ते हैं अतः शुद्ध किया हुआ भी असंशोधित सा ही दीखने लगता है इतना होनेपर भी पाठकों को पढ़ने में कोई अड़चन नहीं होगी। इस मे सब से मोटे २ अक्षरों में सूत्र पाठ दिया गया है और सबसे छोटे २ अक्षरो मे टब्बा अर्थ है। मध्यस्थ अक्षरों में वार्त्तिक अर्थात् पाठ का न्याय

है। रख्या अर्थ मे पाठके शब्द के प्रथम ० ऐसा चिन्ह लगाया गया है जो कि समस्त शब्द का वोधक है। संस्कृत टीका इटालियन (टेढ़े) अक्षरों में छापी गई है। जैसा क्रम छापने का है उसीके अनुसार इस ग्रन्थ के छपाने में पूरा ध्यान दिया गया है। तथापि कोई महोदय यदि दोष देंगे तो पारितोषिक समझ कर सहर्ष स्वीकार किया जायगा। प्रथम वार इस ग्रन्थ की २००० प्रतियां छपाई गई हैं। लागत से भी मूल्य कम रक्खा गया है। इस ग्रन्थ के छपाने का केवल उद्देश्य भगवान् के सत्य सिद्धान्त का घर २ प्रचार होना है। समस्त जैन समाजों का कर्त्तव्य है कि पक्षपात रहित होकर इस ग्रन्थ का अवश्य मनन करें। यह ग्रन्थ जैसा निष्पक्ष और स्पष्ट वक्ता है दूसरा नहीं। तेरापन्थ समाज का तो ऐसा एक भी घर नहीं होना चाहिये जिसमें कि यह जयाचार्य का ग्रन्थ भ्रमविध्वंसन न विराजता हो। यह ग्रन्थ तेरापन्थ समाज का प्राण है विना इस ग्रन्थ के देखे कभी सूक्ष्म वातों का पता नहीं लग सक्ता। इस ग्रन्थ के संशोधन कार्य में जो आयुर्वेदाचार्य पं० रघुनन्दनजी ने सहायता दी है उसके लिये हम पूर्ण कृतज्ञ हैं। समस्त परिश्रम तभी सफल होगा जब कि आप ग्रन्थ के लेने में विलम्ब न लगायेंगे और अपने इष्ट मित्रों को लेने के लिये प्रेरित करेंगे। इसकी अनुक्रमणिका भी अधिकार, वोल, और पृष्ठ की सङ्ख्या देकर के भूमिका के ही आगे लगाई गई है जो कि पाठकों को पाठ खोजने में अतीव सहायिका होगी। प्रथम छपे हुए भ्रम विध्वंसन में सूत्रों की साख देने में अतीव भूलें हुई २ थी अबके वार में यथाशक्ति सूत्र की ठीक २ साख देने मे ध्यान दिया गया है तथापि यदि किसी-२ पुस्तक में इस साख के अनुसार पाठ न मिले तो उसीके आसपास में पाठक खोज लेवें। क्योंकि कई पुस्तकों में साखों में तो भेद देखा ही जाता है। विशेष करके निशीथ के वोलों की संख्या में तो अवश्य ही भेद पाया जावेगा क्योंकि उसकी संख्या हस्तलिखित प्रतियों में तो कुछ और-और छपी हुई पुस्तकोंमें कुछ और ही मिली है। पहिले छपे हुए "भ्रम विध्वंसन" मे और इस में कुछ भी परिवर्त्तन नहीं है किन्तु २-४ स्थलों में नोट देकर संशोधक की ओर से जो खड़ी वोलीमें लिखा गया है वह पहले भ्रम विध्वंसन से अधिक है। आज का हम सौभाग्य दिवस समझते हैं जब कि इस अमूल्य ग्रन्थ की पूर्त्ति हमारे दृष्टि गोचर होती है। कई भ्रातृवर इस ग्रन्थकी "चातक मेघ प्रतीक्षा वत्" प्रतीक्षा कर रहे थे अब उनके कर कमलों में इसग्रन्थ को समर्पित कर हम भी कृत कृत्य होंगे।

पाठकों को पहिले बतलाया जा चुका है कि इस ग्रन्थ के कर्त्ता जयाचार्य अर्थात् श्री जीतमलजी महाराज हैं। परन्तु केवल इतने ही विवरण से पाठकों की अभिलाषा पूर्ण नही होगी। अतः श्रीजयाचार्य महाराज जिस जैन श्वेताम्बर तेरा-पन्थ समाज के चतुर्थ पट्ट स्थित पूज्य रह चुके हैं उस समाज की उत्पत्ति और उस समाज के स्थापक श्री "भिक्षु" गणिराज की संक्षेप जीवनी प्रकाशित की जाती है।

नित्य स्मरणीय पूज्य "भिक्षु" स्वामी की जन्म भूमि मरुधर (मारवाड़) देश में "कण्टालिया" नामक ग्राम है। आपका अवतार पवित्र ओसवाल वंश की "सुखलेचा" जाति में पिता साह "बलुजी" के घर माता "दीपांदे" की कुक्षि में विक्रम सम्वत् १७८३ आषाढ शुक्ला सर्वसिद्धा त्रयोदशी के दिन हुआ। आपके कुलगुरु "गच्छ वासी" नामक सम्प्रदाय के थे अतः उनके ही समीप आपने धर्म कथा श्रवणार्थ आना जाना प्रारम्भ किया। परन्तु वहा केवल बाह्याडम्बर ही देख कर आपने "पोतिया बन्ध" नामक किसी सम्प्रदाय का अनुसरण किया। वहां भी उसी प्रकार धर्म्म भावका अभाव और दम्भ का ही स्तम्भ खड़ा देख कर आपकी इष्ट सिद्धि नहींहुई। अथ इसी धर्म्म प्राप्ति की गवेषणामें बाईस सम्प्रदायके किसी विभाग के पूज्य 'रघुनाथ" जी नामक साधु के समीप आपका गमनाऽऽगमन स्थिर हुआ। आप की धर्म्म विषय से प्रबल उत्कण्ठा होने लगी और इसी अन्तर में आपने कुशील को त्याग कर शील व्रत का भी अनुशीलन कर लिया। और "मैं अवश्य ही संयम धारण करूंगा" ऐसे आपके भावी संस्कार जगमगाने लगे। यह ही नही किन्तु आपने संयमी होने का दृढ अभिग्रह ही धार लिया। भावी बलवती है-इसी अवसर में आपको प्रिय प्रिया का आपसे सदा के लिये ही वियोग हो गया। यद्यपि आपके सम्बन्धियों ने द्वितीय विवाह करने के लिये अति आग्रह किया तथापि भिक्षु के सदय हृदय ने अ-सार संसार त्यागने का और संयम ग्रहण करने का दृढ संकल्प ही करलिया। भिक्षु दीक्षा के लिये पूर्ण उद्यत हो गये परन्तु माताजी की अनुमति नही मिली। जब रघु-नाथजीने भिक्षु की माता से दीक्षा देने के विषय में परामर्स किया तो माताजीने रघुनाथजी से उस * सिंह स्वप्न का विवरण कह सुनाया जो कि भिक्षु की गर्भाव-स्थिति में देखा था। और कहा कि इस स्वप्न के अनुसार मेरा पुत्र किसी राज्य विशेष का अधिकारी होना चाहिए भिक्षार्थी बनने के लिये मैं कैसे आज्ञा दूं। रघुनाथजी

* सिंहका स्वप्न मण्डलीक राजा की माता अथवा भावितात्म अनगार की माता देखती है।

ने इस स्वप्न को सहर्ष स्वीकार किया और कहा कि यह स्वप्न चतुर्दश १४ स्वप्नों के अन्तर्गत है। अतः यह तुम्हारा पुत्र देश देशान्तरों में भ्रमण करता हुआ सिंह समान ही गर्जेगा इसको दीक्षा होने में विलम्ब मत करो। माता जीका विचार पवित्र हुआ और आत्मज (भिक्षु) के आत्मोद्धार के लिये आज्ञा दे दी।

उस समय भगवान् के निर्मल सिद्धान्तों को स्वार्थान्ध पुरुषों ने विगाड़ रक्खा था। भिक्षु किस के समीप दीक्षा लेते निर्ग्रन्थ गुरु होनेका कोई भी अधिकारी नहीं था। तथापि अप्राप्ति में रघुनाथ जी के ही समीप भिक्षु द्रव्य दीक्षा लेकर अपने भावि कार्य में प्रवृत्त हुए। यह द्रव्यदीक्षा द्रव्यगुरु रघुनाथ जी से भिक्षु स्वामी ने सम्वत् १८०८ में ग्रहण की। आपकी वुद्धि भावितात्म होनेके कारण स्वतः ही तीव्र थी अतः आपने अनायास ही समस्त सूत्र-सिद्धान्तका अध्ययन कर लिया। केवल अध्ययन ही नहीं किया किन्तु सूत्रों के उन २ गम्भीर विषयों को खोज निकाला जिनको कि वेषधारी साधु स्वप्न में भी नहीं समझते थे। और विचारा कि ये सम्प्रदाय जिन में कि मैं भी सम्मिलित हूं पूर्णतया ही जिन आज्ञा पर ध्यान नहीं देते और केवल अपने उदर की ही पूर्ति करने के लिये नाम दीक्षा धारण किये हुए हैं। ये लोक न स्वय तर सक्ते हैं न दूसरों को ही तार सक्ते हैं। वना वनाया घर छोड़ दिया है और अव स्थान २ पर स्थानक वनवाते फिरते हैं। भगवान् की मर्यादा के उपरान्त उपधि वस्त्र. पात्र. आदिक अधिकतया रखते हैं। आधा कर्मी आहार भोगते और आज्ञा विना ही दीक्षा देते दीख पड़ते हैं। एवं प्रकार के अनेक अनाचार देख करके भिक्षु का मन सम्प्रदाय से विचलित होने लगा। इसके अनन्तर-इसी अवसर में मेवाड़ के "राजनगर" नामक नगर में पठित महाजनों ने सूत्र सिद्धान्त पर विचार किया और वर्त्तमान गुरुओंके आचार विचार सूत्र विरुद्ध समझ कर उनकी वन्दना करनी छोड़ दी। मारवाड़ में जव यह वात रघुनाथजी को विदित हुई तो सर्व साधुओंमें परम प्रवीण भिक्षु स्वामी को ही समझकर और उनके साथ टोकरजी. हरनाथजी. वीरभाणजी. और भारीमालजी. को करके भेजा। राजनगर में यह भिक्षु स्वामीका चौमासा सम्वत् १८१५ में हुआ। चर्चा हुई लोकों ने स्थानकवास कपाट जड़ना खोलना. आदिक अनेक अनाचारों पर आक्षेप किया और यही कारण वन्दना न करने का वतलाया। भिक्षु स्वामी ने अपने द्रव्य गुरु रघुनाथजी के पक्ष को रखने के लिये अपनी वुद्धि चातुर्यता से लोगों को समझाया और वन्दना कराई। किन्तु लोगों ने

यही कहा कि महाराज ! यद्यपि हमारी शङ्काओं का पूर्ण समाधान नहीं हुआ है तथापि हम केवल आपके विलक्षण पाण्डित्य पर ही विश्वास रख कर आपके अनुगामी बनते हैं। इसी अवसर में असाता वेदनीय कर्म के योग से भिक्षु स्वामी किसी ज्वर विशेष से पीड़ित हुए और ऐसी अस्वस्थ व्यवस्था में आपके शुद्ध अध्यवसाय उत्पन्न होने लगे। भिक्षु स्वामी को महान् पश्चात्ताप हुआ और विचारा कि मैंने बहुत बुरा काम किया जो कि द्रव्यगुरु के कहने से श्रावकों के शुद्ध विचार को झूठा कर दिया। यदि मेरी मृत्यु हो जावे तो अन्तिम फल बहुत अनिष्ट होगा। द्रव्यगुरु परलोक में कदापि सहायक न होंगे। यदि मैं आरोग्य हो जाऊंगा तो अवश्य सत्य सिद्धान्त की स्थापना करूंगा। एवं आरोग्य होनेपर अपने विचार को पवित्र करते हुए भिक्षु स्वामी ने श्रावकों से स्पष्ट कह दिया कि भ्रातृवरो ! आप लोगों का विचार ठीक है और हमारे द्रव्यगुरु केवल दुराग्रह करते हुए अनाचार सेवन करते हैं। ऐसा भिक्षु मुख से अमूल्य निर्णय सुन कर श्रावक लोक प्रसन्न हुए। और कहने लगे कि महाराज ! जैसी सत्य की आशा आप से थी वैसी ही हुई।

अथ चतुर्मास समाप्त होने पर राजनगर से विहार किया और मार्ग में छोटे २ ग्राम समझ कर दो साथ कर लिये और भिक्षु स्वामी ने वीरभाणजी से कहा कि यदि आप गुरु के समीप पहिले पहुंचे तो कोई इस विषय की बात नहीं करना नहीं तो गुरु एक साथ भड़क जावेंगे। मैं आकर विनय कला से समझाऊंगा और शुद्ध श्रद्धा धारण करानेका पूरा प्रयत्न करूंगा। वीरभाण जी ही आगे पहुंचे और रघुनाथ जी ने राज नगर के श्रावकों की शङ्का दूर होने के बारे मे प्रश्न किया। वीरभाणजी ने वह सब वृतान्त कह सुनाया और कहा कि जो हम आधाकर्मी आहार स्थानकवास आदि अनाचार का सेवन करते हैं वह अशुद्ध ही है और श्रावकों की शङ्काएं सत्य ही थीं। रघुनाथजी बोले कि वीरभाण ! ऐसी क्या विपरीत बातें कहते हो तब वीरभाणजी नेकहा कि महाराज ! यह तो केवल वानगी ही है पूरा वर्णन तो भिक्षु स्वामी के पास है। इसी अन्तर में भिक्षु स्वामी का आगमन हुआ और गुरु को वन्दना की। गुरु की दृष्टि से ही भिक्षु समझ गये कि वीरभाणजी ने आगे से ही बात कर दी है। गुरु का पहिला सा भाव न देखकर भिक्षु ने गुरु से कहा. गुरुजी ! क्या बात है आपकी पहले सी कृपा दृष्टि नही विदित होती है।

रघुनाथजी बोले कि भाई ! तुम्हारी बातें सुन कर हमारा मन फट गया है और अब हम तुम्हारे आहार पानीको सम्मिलित नहीं रखना चाहते। यह सुन कर भिक्षु ने मन में विचारा कि वास्तव में तो इनमें साधुपने का कोई आचार विचार नहीं है तथापि इस समय खैंचातान करनी ठीक नहीं है पुनः इनको समझा लूंगा। यह विचार कर गुरु से कहा कि गुरूजी ! यदि आप को कोई सन्देह हो तो प्रायश्चित्त दे दीजिये। इस युक्ति से आहार पानी सम्मिलित कर लिया। समय पाकर रघुनाथजी को बहुत समझाया और शुद्ध श्रद्धा धराने का पूरा प्रयत्न किया और यह भी कहा कि अब का चतुर्मास साथ २ ही होना चाहिये जिससे चर्चा की जावे और सत्य श्रद्धा की धारणा हो। क्योंकि हमने घर केवल आत्मोद्धार के लिये ही छोड़ा है। रघुनाथजीने यह कहकर कि "तू और साधुओं कोभी फटालेगा" चौमासा साथ २ नहीं किया। एवं पुनः द्वितीयवार भिक्षु स्वामी रघुनाथजी से बगड़ी नामक नगर में मिले और आचार विचार शुद्ध करने के बारे में बहुत समझाया। परन्तु द्रव्य गुरु ने एक बात भी नहीं मानी तब भिक्षु स्वामीने यह विचार कर कि अब ये बिलकुल नहीं समझते हैं और केवल दम्भजाल में ही फंसे रहेंगे अपना आहार पृथक् कर लिया। और प्रातःकाल के समय स्थानकसे बाहर निकल पड़े। रघुनाथ जी ने यह समझ कर के कि "जब भिक्षु को नगर में स्थान ही नहीं मिलेगा तो विवश हो कर स्थानक में ही आजावेगा" सेवक द्वारा नगरवासियों को सङ्घ की शपथ देकर सूचना दे दी कि कोई भी भिक्षु के ठहरने के लिये स्थान नहीं देना। । भिक्षु ने जब यह सब प्रपञ्च सुना तो मन में विचारा कि नगर में स्थान न मिलने पर यदि मैं पुनः स्थानक ही में गया तो फिर फन्दे में ही पड़ जाऊंगा। एवं अपने मन में निर्णय कर विहार किया और बगड़ी नगर के बाहर जैतसिंहजी की छत्रियों में स्थित हो गये। जब यह बात नगर में फैली और रघुनाथजी ने भी सुना कि भिक्षु स्वामी छत्रियों में ठहरे हुए हैं तो बहुत से मनुष्यों को साथ लेकर छत्रियों में गये. और भिक्षु स्वामी को टोला से बाहर न निकलने के लिये बहुत समझाया। परन्तु भिक्षु स्वामी ने एक भी नहीं सुनी और कहा कि मैं आपकी सूत्र-विरुद्ध बातों को कैसे मान सक्ता हूं। मैं तो भगवान् की आज्ञानुसार शुद्ध संयम का ही पालन करूंगा। ऐसी भिक्षु की बातें सुन कर रघुनाथजी की आशा टूट गई और मोहके वश होकर अश्रुधारा भी बहाने लगे। उदयभाणजी नामक साधु ने कहा कि आप टोला के धनी होकर के भी मोह में अवलिप्त हुए अश्रु बहाते हैं। तब रघुनाथजी

बोले कि भाई ! किसी का एक मनुष्य भी जावे तो भी वह अत्यन्त विलाप करता है मेरे तो पांच एक साथ जाते हैं और टोला म खलबली मचती है मैं कैसे न विलाप करूं । ऐसा द्रव्यगुरु का मोह देखकर भिक्षु स्वामी का मन किञ्चिदपि विचलित नहीं हुआ और विचारा कि इसी तरह जब मैं घर से निकला था तब मेरी माता भी रोई थी। इन वेषधारियों में रहने से तो पर भव में अतीव दुःख उठाना पड़ेगा। अन्त्य में रघुनाथजी ने भिक्षु स्वामी से कहा कि तू जावेगा कहांतक तेरे पीछे-२ मनुष्य लगा दूंगा। और मैं भी पीछे २ ही विहार करूंगा। इत्यादिक भयावह वार्तोपर कुछ भी ध्यान नहीं दिया और भिक्षु ने बगड़ी से विहार किया। द्रव्यगुरु को अपने पीछे २ ही आता देखकर के "बरलू" नामक ग्राम में चर्चा की। आदि में रघुनाथजी ने कहा कि भिक्षो ! आजकल पूरा साधुपना नहीं पल सक्ता है। यह सुनकर भिक्षुने कहा कि-आचारांग सूत्र में कहा है कि "आजकल साधुपना नहीं पल सक्ता" ऐसी प्ररूपणा भागल साधु करेंगे इत्यादिक बातें भगवान् ने कई स्थलोंपर पहिले से ही कह दी हैं। ऐसा उत्तर सुनकर द्रव्यगुरु को उस समय अत्यन्त कष्ट हुआ और बोले कि यदि कोई दो घड़ी भी शुभ ध्यान धर कर शुद्ध आचार पाल लेगा वह केवल ज्ञान को प्राप्त कर सक्ता है। यह सुनकर भिक्षु ने कहा कि यदि दो घड़ी में ही केवलज्ञान मिले तो मैं श्वास रोक कर के भी दो घड़ी ध्यान धर सक्ता हूं। परन्तु ये बात नहीं यदि दो घड़ी में ही केवलज्ञान मिल सक्ता तो क्या प्रभव आदिक ने दो घड़ी भी शुद्ध चारित्र नही पाला था किन्तु उनको तो केवलज्ञान नहीं हुआ। वीर भगवान्‌के १४ सहस्र शिष्यों में से केवलज्ञानी तो केवल ७ सौ ही हुए क्या शेष १३ सहस्र ३ सौ ने २ घड़ी भी शुद्ध संयम नहीं पाला जो कि छद्मस्थ ही रहे आये। और १२ वर्ष १३ पक्ष तक वीर भगवान् छद्मस्थ अवस्था में रहे तो क्या उस अवसर में वीर ने दो घड़ी भी शुद्ध संयम की पालना नहीं की। इत्यादिक अनेक सत्य प्रमाणों से भिक्षु ने रघुनाथजी को निरुत्तर करते हुए बहुत समय पर्य्यन्त चर्चा की। तथापि दुराग्रह के कारण रघुनाथजी ने शुद्ध पथ का अवलम्बन नहीं किया। इसके अनन्तर किसी बाईस टोला के विभाग के पूज्य जयमलजी नामक साधु भिक्षु स्वामी से मिले। भिक्षु ने प्रमाणित युक्तियों से जयमलजी के हृदय में शुद्ध श्रद्धा बैठाल दी और जयमलजी भिक्षु के साथ जाने को तयार भी हो गये। जब यह बात रघुनाथजी ने सुनी कि जयमलजी भिक्षु के अनुयायी होना चाहते हैं तब जयमलजी से कहा कि जयमलजी ! आप एक टोला के धनी होकर यह क्या

काम करते हैं। आप यदि भिक्षु के साथ हो जावेंगे तो इसमें आपका कुछ भी नाम नही होवेगा केवल भिक्षु का ही सम्प्रदाय कहा जावेगा। इत्यादिक अनेक कुयुक्तियों से रघुनाथजी ने जयमलजी का परिणाम ढीला कर दिया। अथ जयमलजी ने भिक्षु से कह भी दिया कि भिक्षु स्वामिन्! आप शुद्ध संयम पालिए हम तो गले तक दवे हुए हैं हमारा तो उद्धार होना असम्भवसा ही है।

इस अवसर के पश्चात् भिक्षु ने भारीमालजी से कहा कि भारीमाल! तेरा पिता कृष्णजी तो शुद्ध संयम पालने में असमर्थ सा प्रतीत होता है अतः उसका निर्वाह हमारे साथ नहीं हो सक्ता। तू हमारे साथ रहेगा अथवा अपने पिता का सहगामी बनेगा। ऐसा सुनकर विनीत भाव से भारीमालजी ने उत्तर दिया कि महाराज! मैं तो आपके चरण कमलों में निवास करता हुआ शुद्ध चारित्र्य पालूंगा मुझ को अपने पिता से क्या काम है। ऐसा सुन्दर उत्तर सुनकर भिक्षु प्रसन्न हुए पश्चात् भिक्षु ने कृष्णजीसे कहा कि आपका हमारे सम्प्रदाय में कुछ भी काम नहीं है। यह सुनकर कृष्णजी भिक्षु से बोले कि यदि आप मुझ को नहीं रक्खेंगें तो मैं अपने पुत्र भारीमालको आपके पास नहीं छोडूंगा अतः आप भारीमाल को मुझे सौंप दीजिए। यह सुनकर भिक्षु स्वामी ने कृष्णजी से कहा कि यदि तुम्हारे साथ भारीमाल जावे तो लेजावो मैं कब रोकता हूं। कृष्णजी ने एकान्तमें लेजा कर अपने साथ चलने के लिये भारीमालजीको बहुत समझाया साथ जाना तो दूर रहा किन्तु अपने पिता के हाथ का यावज्जीव पर्य्यन्त भारीमालजीने आहार करनेका त्याग और कर दिया। तत्पश्चात् विवश होकर कृष्णजी ने भिक्षु से कहा कि महाराज! अपने शिष्य को लीजिए यह तो मेरे साथ चलने को तयार नहीं है कृपया मेरा भी कहीं ठिकाना लगा दीजिए। अथ भिक्षु ने कृष्णजी को जयमलजी के टोले में पहुचा कर तीन स्थानों पर हर्ष कर दिया। जयमलजी तो प्रसन्न हुए कि हमको चेला मिला कृष्णजी समझे कि हम को ठिकाना मिला भिक्षु समझे कि हमारा उपद्रव गया। इसके पश्चात् भिक्षु ने भारीमालजी आदि साधुओं को साथ ले कर विहार किया और जोधपुर नगर मे आ विराजमान हुए। जब दीवान फतहचन्दजी सिंघीने बाज़ार में श्रावकों को पोषा करते देखा तब प्रश्न किया कि आज स्थानक में पोषा क्यों नही करते हो। तब श्रावकों ने वह सब कथा कह सुनायी जिस कारण से कि भिक्षु स्वामी रघुनाथजी के टोले से पृथक् हुए और स्थानक वास आदिक विविध अनाचारों को छोड़ कर शुद्ध श्रद्धा धारण की। सिंघीजी बहुत प्रसन्न हुए और भिक्षुके सदाचारकी बहुत प्रशंसा

की। उस समय १३ ही श्रावक पोषा कर रहे थे और १३ ही साधु थे अतः भिक्षु के सम्प्रदाय का "तेरापन्थ" नाम पड़ गया। अथवा भिक्षु ने भगवान् से यह प्रार्थना की कि प्रभो! यह तेरा ही पन्थ है अतः 'तेरापन्थ" नाम पड़ा। वास्तव में तो १३ बोल अर्थात् ५ सुमति ३ गुप्ति ५ महाव्रत पालने से ही "तेरापन्थ" नाम पड़ा। इसके अनन्तर भिक्षु ने मेवाड़ देशस्थ "केलवा' नगर में संम्वत् १८१७ में आषाढ शुक्ला १५ के दिन भगवान् अरिहन्त का स्मरण कर भावदीक्षा ग्रहण की। और अन्य साधुओंको भी दीक्षा देकर शुद्ध पथ में प्रवर्त्ताया। वेषधारियों की अधिकता होने से उस समय में भिक्षु को सत्य धर्मके प्रचार में यद्यपि अधिक परिश्रम सहना पड़ा तथापि निर्भीक सिंह के समान गर्जते हुए भिक्षु ने मिथ्यात्वका विनाश करके शुद्ध श्रद्धा की स्थापना की। एवं श्रीभिक्षु शुद्ध जिन धर्मका प्रचार करते हुए विक्रम सम्वत् १८६० भाद्र शुक्ला १३ के दिन सप्त प्रहर का संन्थारा करके स्वर्ग पन्था के पथिक वने।

यह "भिक्षु जीवनी" ग्रन्थ वड़ जाने के भयसे संक्षिप्त शब्दों से ही लिखी गई है पूर्ण विस्तार श्री जयाचार्य कृत भिक्षुजसरसायन में ही मिलेगा। कई धूर्त्त पुरुषों ने ईर्षा के कारण जो "भिक्षु जीवनी" मन मानी लिखमारी है वह सर्वथा विरुद्ध समझनी चाहिये।

अथ श्री भिक्षुके अनन्तर द्वितीय पट्ट पर पूज्य श्री भारीमालजी विराजमान हुए आप साक्षात् शान्ति के ही मूर्ति थे। आपका अवतार मेवाड़ देशके "मुहों" नामक ग्राम में सम्वत् १८०३ में हुआ था। आपके पिताका नाम "कृष्ण" जी और माता का नाम "धारणी" जी था। आप ओश वंशस्थ "लोढा" जातीय थे। आपका स्वर्ग वास सम्वत् १८७८ माघ कृष्ण ८ को हुआ।

पूज्य श्रीभारीमालजी के अनन्तर तृतीय पट्टपर श्री ऋषिरायजी महाराज (रायचन्द्रजी) विराजमान हुए। आपका शुभ जन्म सम्वत् १८४७ में मेवाड़ देशके "वड़ी रावल्यां" नामक ग्राम में हुआ था। आपकी ओशवंशस्थ "वंव" नामक जाति थी आपके पिता का नाम चतुरजी और माता का नाम कुसालांजी था आप सम्प्रदाय के कार्य की वृद्धि करते हुए सम्वत् १९०८ माघ कृष्ण १४ के दिन स्वर्ग स्थलको पधारे।

श्रीऋषिरायजी महाराज के अनन्तर चतुर्थ पट्ट पर इस ग्रन्थ के रचयिता श्रीजयाचार्यजी (जीतमल्जी) महाराज विराज मान हुए। आपको कविता करने का

अद्वितीय अभ्यास था। आपने अपने नवीन रचित ग्रन्थों से जैसी जिन धर्म की महिमा बढ़ाई है उसका वर्णन नहीं हो सका। आपका शुभ जन्म मारवाड़ में "रोयट" नामक ग्राम में ओशवंशस्थ गोलछा जाति में सम्वत् १८६० आश्विन शुक्ला २ के दिन हुआ था। आपके पिता का नाम आईदानजी और माता का नाम कलुजी था। आपने कल्प कल्पान्तरों के लिये "श्रीभगवती की जोड़" आदि अनेक रचना द्वारा भूमिपर अपना यश छोड़ कर सम्वत् १९३८ भाद्रपद कृष्ण १२ के दिन स्वर्ग के लिये प्रस्थान किया।

पूज्य श्रीजयाचार्य के अनन्तर पञ्चम पट्ट पर श्री मघवा गणी (मघराजजी) सुशोभित हुए। आपकी शान्ति मूर्त्ति और ब्रह्मचर्यका तेज देख कर कवियों ने आपको मघवा (इन्द्र) की ही उपमा दी है। आप व्याकरण काव्य कोषादि शास्त्रों में प्रखर विद्वान् थे। आपका शुभ जन्म बीकानेर राज्यान्तर्गत बीदासर नामक नगर में ओशवंशस्थ बेगवानी नामक जाति में संम्वत् १८९७ चैत्र शुक्ला ११ के दिन हुआ। आपके पिताका नाम पूरणमलजी और माता का नाम बन्नाजी था। आप आनन्द पूर्वक जिन मार्गकी उन्नति करते हुए सम्वत् १९४९ चैत्र कृष्ण ५ के दिन स्वर्ग के लिए प्रस्थित हुए।

पूज्य श्रीमघवा गणी के अनन्तर छठे पट्ट पर श्रीमाणिकचन्द्रजी महाराज विराजमान हुए। आपका शुभ जन्म जयपुर नामक प्रसिद्ध नगर में संवत् १९१२ भाद्र कृष्ण ४ के दिन ओशवंशस्थ खारड श्रीमाल नामक जाति में हुआ। आपके पिता का नाम हुकुमचन्द्रजी और माता का नाम छोटांजी था। आप थोड़े ही समय में समाजको अपने दिव्य गुणों से विकाशित करते हुए संवत् १९५४ कार्त्तिक कृष्ण ३ के दिन स्वर्ग वासी हुए।

पूज्य श्रीमाणिक गणी के अनन्तर सप्तम पट्टपर श्री डालगणी महाराज विराजमान हुए आपका शुभ जन्म मालवा देशस्थ उज्जयिनी नगर में ओशवंशस्थ पीपाड़ा नामक जाति में संवत् १९०९ आषाढ़ शुक्ला ४ के दिन हुआ। आपके पिता का नाम कनीरामजी और माता का नाम जडावांजी था जिनलोगोंने आपका दर्शन किया है वे समझते ही हैं कि आपका मुख मण्डल ब्रह्मचर्यके तेज के कारण मृगराज मुख सम जगमगाता था। आप जिनमार्ग की पूर्ण उन्नति करते हुए संवत् १९६६ भाद्रपद शुक्ला १२ के दिन स्वर्ग को पधार गये।

पूज्य श्रीडाल गणीके अनन्तर अष्टम पट्ट पर वर्त्तमान समय में श्रीकालूगणी महाराज विराजते हैं। जिन मनुष्यों ने आपका दर्शन किया होगा वे अवश्य ही निष्पक्ष रूप से कहेंगे कि आपके समान वालब्रह्मचारी तेजस्वी और शान्ति मूर्त्ति इस समय में और दूसरा कोई नही है। आपकी मूर्त्ति मङ्गल मयी है अतः आपने जिस समय से शासन का भार उठाया है तभी से इस समाजकी दिन प्रति दिन उन्नति ही हो रही है। आपके अपूर्व पुण्य पुञ्ज को देख कर अनेक नर नारी "महाराज तारो-महाराज तारो" इत्यादि असङ्ख्य कारुण्य शब्दों से दीक्षा ग्रहण करने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं तथापि आप उनकी विनय, क्षमा, पूर्ण वैराग्य, कुलीनता, आदि गुणों की जब तक भले प्रकार परीक्षा नहीं कर लेते हैं दीक्षा नहीं देते। आपकी सेवा में सर्वदा ही नाना देशों से आये हुए अनेक उच्च कोटि के मनुष्य उपस्थित रहते हैं। और आपके व्याख्यानामृत का पान करके कृत कृत्य हो जाते हैं। आपने समस्त जिनागम का भले प्रकार अध्ययन किया है यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि यदि ऐसा गुण वाला साधु चौथे आरे में होता तो अवश्य ही केवलज्ञान उत्पन्न हो जाता। आप संस्कृत व्याकरण काव्य कोष आदिक विविध विषयों में पूर्ण विद्वान् हैं। और व्याकरण में तो विशेष करके आपका ऐसा पूर्ण अनुभव हो गया है कि जैन व्याकरण और पाणिनि आदि व्याकरणों की समय २ पर आप विशेष समालोचना किया करते हैं। कई संस्कृत के कवीश्वर और पूर्ण विद्वान् आपकी बुद्धि विलक्षणता को देखकर आपकी कीर्ति ध्वजा को फहराते हैं। और दर्शन करके अतिशः कृतार्थ होते हैं। यह ही नहीं आपनें वैष्णव धर्मावलम्बी गीता आदि ग्रन्थों का भी अवलोकन किया हुआ है। और अन्य सम्प्रदायकी भी भली बातों को आप सहर्ष स्वीकार करते हैं। आप अपने शिष्य साधुओंको संस्कृत भी भले प्रकार पढ़ाते हैं। आपके कई साधु विद्वान् और संस्कृत के कवि हो गये हैं। आपके शासन में विद्या की अतीव उन्नति हुई है। आपका ऐसा क्षण मात्र भी समय नहीं जाता जिसमें कि विद्या संवन्धी कोई विषय न चलता हो।

आपकी पञ्च महाव्रत दृढता की प्रशंसा सुनकर जैन शास्त्रोंका धुरन्धर विज्ञाता जर्मन देश निवासी डाक्टर हर्मन जैकोबी आपके दर्शनार्थ लाडणूं नामक नगर में आया और आपसे संस्कृत भाषा में वार्त्तालाप किया आपके मुखारविन्द से जिनोक्त सूत्रों के उन गम्भीर विषयों को सुनकर जिनमें कि उसको भ्रम था अति प्रसन्न हुआ। और कहने लगा कि महाराज! मैंने आचाराङ्ग के अंग्रेजी

अनुवाद में किसी यति निर्मित संस्कृत टीका की छाया ले कर जो मांस विधान लिख दिया है उसका खण्डन कर दूंगा। आपके सत्य अर्थ को सुनकर डाक्टर हर्मन का आत्मा प्रसन्न हो गया। और वह कई दिन तक आपकी सेवाकर अपने यथा स्थान को चला गया।

लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बर और मुजफ्फर नगर के रईस लाला सुखबीरसिंहजी भी आपके दर्शन दो बार कर चुके हैं और आपकी प्रशंसा में आपने कई लेख भी लिखे हैं। जो कोई भी योग्य विद्वान् और कुलीन पुरुष आपके दर्शन करते हैं समझ जाते हैं कि आपके समान सच्चा त्याग मूर्ति आजकल और कोई भी शुद्ध साधु नहीं है। आपकी जन्म भूमि बीकानेर राज्यान्तर्गत छापर नामक नगर है। आपका पवित्र जन्म ओसवंश के चौपड़ा कोठारी नामक जाति में श्रीमूलचन्दजी के गृह में सं० १९३३ फाल्गुन शुक्ला २ के दिन श्री श्री श्री १०८ महासती छोगांजी की पवित्र कुक्षि में हुआ था। आपकी माताजीने भी आपके साथ ही दीक्षा ली थी। उक्त आपकी माताजी अभी बीदासर नगर में विद्यमान हैं जोकि अति वृद्ध हो जाने के कारण विहार करने में असमर्थ हैं।

"नहि कस्तूरिका गन्धः शपथेनाऽनुभाव्यते" कस्तूरीके सुगन्धित्व सिद्ध करनेमें शपथ खानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। उसका गन्ध ही उसकी सिद्धि का पर्य्याप्त प्रमाण है। यद्यपि श्री भिक्षुगणी से लेके श्रीकालू गणी तक का समय और उसका जाज्वल्यमान तेज स्वतः ही तेरापन्थ समाजके धर्माचार्यों को क्रमानुक्रम भगवान् का पट्टाधिकारी होना सिद्ध कर रहा है। तथापि उसकी सिद्धि की पुष्टि में शास्त्रोंका भी प्रमाण दिया जाता है। पाठक गण पक्षपात रहित हृदयसे इसका विचार करें।

भगवान् श्रीमहावीरजी स्वामीके मुक्ति पधारनेके पश्चात् १००० वर्ष पर्यन्त पूर्वका ज्ञान रहा। ऐसा "भगवती श० २० उ० ८" में कहा है।

तत्पश्चात् २००० वर्ष के भस्मग्रह उतरनेके उपरान्त श्रमण निर्ग्रन्थ की उदय २ पूजा होगी। ऐसा "कल्प सूत्र" में कहा है।

सारांश यह है कि—भगवान् के पश्चात् ९८१ वर्ष पर्य्यन्त शुद्ध प्ररूपणा रही। और पश्चात् १५२२ वर्ष पर्य्यन्त अशुद्ध बाहुल्य प्ररूपणा रही। अर्थात् दोनोंको मिलाने से २५०० वर्ष हुआ। उस समय धूमकेतु ग्रह ३३३ वर्षके लिये लगा। विक्रम सम्वत् १५३१ में "लूंका" मुंहता प्रकट हुआ। २००० वर्ष पूर्ण हो जानेसे

भस्म ग्रह उतर गया। इसका मिलान इस प्रकार कीजिये कि ४७० वर्ष पर्य्यन्त नन्दी वर्द्धनका शाका और १५३० वर्ष पर्य्यन्त विक्रम सम्वत् एवं दोनोंको मिलानेसे २००० वर्ष हो गए। उस समय भस्म ग्रह उतर जानेसे और धूम केतुके बाल्यावस्थाके कारण बल प्रकट न होनेसे ही "लूंका" मुंहता प्रकट हो गया और शुद्ध प्ररूपणा होने लगी। तत्पश्चात् क्रमानुक्रम धूम केतुके बलकी वृद्धि होनेसे शुद्ध प्ररूपणा शिथिल हो गई। जब धूमकेतुका बल क्षीण होने पर आया तब सम्वत् १८१७ में श्री भिक्षुगणीका अवतार हुआ और शुद्ध प्ररूपणाका पुनः श्रीगणेश हुआ। परन्तु धूमकेतुके बिलकुल न उतरनेसे जिन मार्ग की विशेष वृद्धि नहीं हुई। पश्चात् सम्वत् १८५३ में धूमकेतु ग्रहके उतर जानेके कारण श्रीस्वामी हेमराजजी की दीक्षा होने के अनन्तर क्रमानुक्रम जिन मार्गकी वृद्धि होने लगी।

अस्तु आज कल जैसे कि साधुओं का सङ्गठन और एक ही गुरु की आज्ञा में सञ्चलन आदिक तेरापन्थ समाज में है स्पष्ट वक्ता अवश्य कह देंगे कि वैसा अन्यत्र नहीं। आज कल पूज्य कालू गणी की छत्रछाया में रहते हुए लगभग १०४ साधु और २४३ साध्वीयां शुद्ध चारित्र्य पाल रहे हैं। इस समाज का उद्देश्य बेष बढ़ाना नहीं किन्तु निष्कलङ्क साधुता का ही बढ़ाना है। यदि साधु समाज के समस्त आचार विचार वर्णन किये जावें तो एक इतनी ही बड़ी पुस्तक और बन जावेगी। हम पहिले भी लिख आये हैं कि इस ग्रन्थ के संशोधन कार्य्य में आयुर्वेदाचार्य पं० रघुनन्दनजी ने विशेष सहायता की है अतः उनकी कृतज्ञता के रूप में हम इस पुस्तक के छपाने में निजी व्यय करते हुए भी पुस्तकों की समस्त रक्खे हुए मूल्य की आय को उनके लिये समर्पण करते हैं। यद्यपि "भिक्षु जीवनी" लिखी जा चुकी है तथापि वही विद्वज्जनों के अनुमोदनार्थ संस्कृत कविता मे परिणत की जाती है। परन्तु समस्त कथा का क्रम ग्रन्थ की वृद्धि के भय से नहीं लिया जाता है। किन्तु संक्षेपातिसंक्षेप भाव का ही आश्रय लेकर साहित्य का अनुशीलन किया गया है। प्रेमिजन अवगुणों को छोड़कर गुणों पर ध्यान दें।

नाना काव्य रसाधारां भारतीन्ता मुपास्महे
द्विपदोऽपि कविर्यस्याः पादाब्जे षट्पदायते ॥१॥

कूप मेकायितः क्वाहं क्व भिक्षूणां यशोनिधिः
तथापि मम मात्सर्य्यं विदूरे नै विलोक्यताम् ॥२॥

अभक्तो भक्ततां याति यस्य भक्ति मुपाश्रयन्
अकविर्न कविः किंस्यां तत्कीर्त्ति कथयन्नहम् ॥३॥

नाम्ना "कण्टालिया" ग्रामः कश्चिदस्ति मरुस्थले
भिक्षु भानूदयाद्धेतो यों वाच्य उदयाचलः ॥४॥

"बल्लुजी" त्यभिधस्तत्र साहोपाधि विभूषितः
"सुक्खलेचा" विशेषायाम् ओश जातां वुपाजनि ॥५॥

"दीपांदे" नामिका तेन पर्य्यणायि प्रिया प्रिया
यत्कुक्षि कुहर स्थायी मृगेन्द्रो गर्जनांगतः ॥६॥

अन्ध ध्वान्त विनाशाय विकाशाय जिनोदितेः
धर्म्म संस्थापनार्थाय प्रेरितः पूर्व कर्मणा ॥७॥

तस्यां सत्व गुणो जीवः कोऽपि गर्भ मिष वहन्
भावि संस्कार संयोगा द्दिवि देवं इवाऽविशत् ॥८॥

एकदाऽथ शयाना सा सिंह स्वप्न मवैक्षत
पुष्पोपमं फलस्यादौ शोभनं शास्त्र सम्मतम् ॥९॥

एतमालोकते माता मण्डलीकस्य भूपतेः
अनागारस्य वा माता भावितात्मस्य पश्यति ॥१०॥

तयष्टसप्तैकवर्षस्थे आषाढस्य सिते दले
ततः सर्वत्र संसिद्धां सर्व सिद्धां त्रयोदशीम् ॥११॥

लक्षीकृत्य लपत्कुक्षि भाविधर्मोपदेशकम्
तेजः पुञ्जमिव प्राची बाल रत्न मजीजनत् ॥१२॥

वंशाऽऽकाशे चकाशेऽथ वर्द्धमानः शनैः शनैः
शुक्ल पक्ष द्वितीयान्थः शशीव शब्दः शिशुः ॥१३॥

गद्गदै र्वचनै रेष चकर्ष पथिकानपि
लालितो ललनांकेषु पालको लल्लितालकः ॥१४॥

असारेऽपि च संसारे भिक्षु नाम्नाऽवनामितः
सार धर्म्म मवैहिष्ट क्षार सिन्धा विवामृतम् ॥१५॥

गृहस्थ गीताऽथ विवाहितोऽपि ससार चक्रे न चकार बुद्धिम्
राशीविषाणां विषयेऽपि जातो न लिप्यते स्वच्छ मणि र्विषेण ॥१६॥

प्रभावेन सुसाधूना केवल वेषधारिषु
धर्म्म मन्वेषयामास पल्लवेष्विव हीरकम् ॥१७॥

अनार्थ जिन सिद्धान्ते सनाथं वेष धारयो
टोलाऽऽह्व जनता नाथ रघुनाथ मथो ययौ ॥१८॥

वन्धोऽपि निर्गुणःक्वापि बहिराडम्बरायितः
निर्विषोऽपि फणी मान्यः फणाऽऽटोपैर्हि केवलैः ॥१९॥

एतस्मिन्नन्तरे भिक्षो दीक्षा मिच्छार्थिन स्ततः
भावि संयोगतो लेभे वियोग महयोगिनी ॥२०॥

रघुनाथ समीपेऽय दीक्षितो द्रव्य दीक्षया
कश्चिद्भृगै मरन्दार्थं गोहीतोऽपि निषेव्यते ॥२१॥

अधीत्य सूत्रान् सु विचिन्त्य भावान् विलोक्य दोषांश्च बहून् समाजे
कुशाग्रबुद्धे विचचाल चित्तं "न किंशुकेषु भ्रमरा रमन्ते" ॥२२॥

श्रावका "राजनगरे" तस्मिन्नवसरे ततः
सूत्र सिद्धान्त मालोक्य नावन्दन्त गुरू निमान् ॥२३॥

तच्छ्रावकाणा मुपदेशनाय सुवीरभाणादि जनेन साकम्
दक्ष गुरुः प्रेषयतिस्म भिक्षुं विचार्य हंसेष्विव राजहंसम् ॥२४॥

ततो जनै स्तैः सह युक्तिवादं विधाय भिक्षु र्गुरुपक्षपाती
सन्देह सत्तामपि तान्दधानान् चकार सर्वान् निज पाद नम्रान् ॥२५॥

अथोऽवदन्मुनिर्जनः नहि भ्रमोज्झित मनः
तथापि ते विचित्रताः प्रकुर्वते पवित्रताः ॥२६॥

तदैव भिक्षवे ज्वरः चुकोप कोऽपि गह्वरः
तदर्त्ति पीडिते सति स्थिता शुभा मुने र्मतिः ॥२७॥

मनस्य चिन्तयत्स्वयं मृषाऽवदाम हा वयम्
इमे जनाःसदाशया विरोधिता वृथा मया ॥२८॥

स्फुट त्यदः क्षणा दुरो विलोकयन् छलं गुरोः
अरोगता महं यदा भजे, ब्रुवे स्फुटं तदा ॥२९॥

गुरु विरुद्ध गायकः परत्र नो सहायकः
इति स्फुटं विचारयन् जगाद न्हन् निशामयन् ॥३०॥

अहो जना भवन्मतं जिनोक्त शास्त्र सम्मतम्
असत्य माश्रिता वयं विदन्तु सत्य निर्णयम् ॥३१॥

मुने रिमा परां गिर निशम्य ते जना श्चिरम्
निपत्य पादयो स्तदा बभाषिरे प्रियम्वदाः ॥३२॥

अहो मुनीश ! तावकं विलोक्य शुद्ध भावकम्
वय प्रसन्नता गताः त्वयैव कुप्रथा हता ॥३३॥

ततः समागत्य तदीय वृत्तं गुरुं बभाषे सकल सशान्तिः
परन्तु स स्वार्थ विलिप्त चेता गुरु विरुद्धं कथयाम्बभूव ॥३४॥

न पाल्यते सम्प्रति शुद्ध भावः केनापि कुत्रापि मुनीश्वरेण
भिक्षो ! रतस्त्व किम काल मेनं अवेत्य तूष्णीं भव दूषणेषु ॥३५॥

यः पालये त्कोऽपि घटी द्वयेऽपि शुद्धं चरित्र यदि साधु वर्य्यः
स केवलज्ञान मुपैतु तर्हि त्वं तेन तूष्णीं भव दूषणेषु ॥३६॥

आकर्ण्य सूक्तं विपरीत मेतत् भिक्षु र्गुरुन्त विशद जगाद
अहो गुरो नेति कुहापि दृष्टं शास्त्रान्तरे पन्नवताऽभ्यवादि ३७

एत त्तु सूत्रेषु मयाव्यलोकि एवं वचो वक्ष्यति वेषधारी
"न पाल्यते सम्प्रति शुद्ध भावः केनापि कुत्रापि मुनीश्वरेण" ३८

स्यात् केवलत्वं घटिका द्वयेन यदा तदाहं श्वसन निरुद्धय
अपि क्षमः पालयितु चरित्रं "परन्तु सूत्रे विहित नहीदं ३९

वीरस्य पार्श्वेपि पुरा मुनीद्रा गृहीतवन्तो बहवः सुदीक्षाम्
न केवलत्वं सकला अवैपुः नाऽपालि किन्तै र्घटिका द्वयेऽपि ४०

गुरो ! विमुच्येति वृथा प्रपञ्चं श्रद्धां सुशुद्धां तरसा गृहीष्व
न शोभनः स्थानकवास एष त्यक्तं स्वकीय गृहमेव यर्हि ४१

ज्ञात्वापि शुद्धां मुनि भिक्षु वार्णीं तत्याज नैजं न दुराग्रहं सः
भिक्षु स्तदैतं कुगुरुं विहाय यथोचितायां विजहार भूमौ ४२

स्वतः प्रवृत्तां शुभ भाव दीक्षां वीरं गुरुं चेतसि मन्यमानः
गृहीतवान् सूत्र विशिष्ट धर्मे प्रवर्त्तयामास तथान्य साधून् ४३

विपक्षै रत्न संक्षेपे नादोपः क्षिप्यतां क्षणं
एतं रघुः समुद्रं किं घटे पूरयितुं क्षमः ४४

जयतु जयतु लोकः-श्रील वीरं विशोकः
भवतु भवतु भिक्षुः-कीर्तिमान् सर्व दिक्षु ।

जयतु जयतु कालुः-कान्तिः कान्तः कृपालुः
मिलतु मिलतु योगः-सन्मुनीना मरोगः ४५

प्रूफ संशोधकः—
अलीगढ़ सुनामग्रामस्थ, आशुकविरत्न
पं० रघुनन्दन आयुर्वेदाचार्य।

अस्तु—तेरापन्थ समाजस्थ साधुओं के संक्षेपतया आचार विचार पढ़ कर पाठकों को यह भ्रम अवश्य हुआ होगा कि जब साधु अपनी पुस्तक छपाने को अथवा नकल करने को किसी को नहीं देते तो यह इतनी बड़ी पुस्तक कैसे छपी।

पाठकों! पहिला छपा हुआ "भ्रमविध्वंसन" तो इस द्वितीय वार छपे हुए "भ्रमविध्वंसन" का आधार है। पहिली वार कैसे छपा इसकी कथा सुनिये।

एक कच्छ देशस्थ बेला ग्राम निवासी मूलचन्द कोलम्बी तेरापन्थी श्रावक था। साधुओं में उसकी अतुल भक्ति थी। और तपस्या करने में भी सामर्थ्यवान् था। साधुओं की सेवा भक्ति साधुओं के स्थान में आ आ कर यथा समय किया करता था। एक समय साधुओं के पास इस "भ्रम विध्वंसन" की प्रति को देखकर उसका मन ललचा आया और इस ग्रन्थ की छपाने की उसने पूरी ही मन में ठान ली।

समय पाकर किसी साधु के पुठे में रक्खी हुई भ्रम विध्वंसन की प्रति को रात में चुरा ले गया और जैसे तैसे छपा डाला । पाठकों को यह भी ज्ञात होना चाहिये। कि वह भ्रम विध्वंसन जिसको कि वह चुरा ले गया था मसौदा मात्र ही था कहीं कटी हुई पंक्तियां थीं कहीं पृष्ठों के अङ्क भी क्रम पूर्वक नहीं थे। कहीं कोन का पाठ पत्रों के किनारों पर लिखा हुआ था। अतः उसने यह छपाया तो सही परन्तु खण्डवण्ड छपा डाला कई बोल आगे पीछे कर दिये कहीं किनारों पर लिखा हुआ छपाना ही छोड़ दिया। इतने पर भी फिर प्रूफ नाम मात्र भी नहीं देखा अतः ग्रन्थ एक विरूपता में परिणत हो गया। उस पहिले छपे हुए और इस द्वितीय बार छपे हुए भ्रम विध्वंसन में जहां कहीं जो आपको परिवर्तन मालूम होगा वह परिवर्तन नहीं है किन्तु जयाचार्य की हस्तलिखित प्रति में से धार धार कर यह ठीक किया हुआ है।

साखों में जो भूलें रह गई हैं उनको शुद्ध करने के लिये शुद्धाशुद्धि पत्र लगा दिया है। सो पाठकों का पुस्तक पढ़ने से पहिले यह कर्त्तव्य होगा कि साखों को शुद्ध कर लें। पाठ में भी नये टाइप के योग से कहीं २ अक्षर रह गये हैं उनको पाठक मूल सूत्रों में देख सकते हैं।

नोट—भूमिका में भगवान् से आदि ले श्री कालूगणी तक की जो पट्ट परम्परा बांधी है उसमें वड्ड चूलिया का भी प्रमाण समझना चाहिये।

पाठकों को बस इतना ही सामाजिक दिग्दर्शन करा कर अपनी लेखनी को विश्राम भवन में भेजा जाता है। और आशा की जाती है कि आबाल वृद्ध सब ही इस ग्रन्थ को पढ़ कर आशातीत फल को प्राप्त करेंगे। इति शम्

भवदीय

"ईसरचन्द" चौपड़ा।

शुद्धाशुद्धि पत्रम् ।

नीचे लिखे हुए पृष्ठ पंक्ति मिला कर अशुद्ध को शुद्ध कर लेना चाहिये। यहां केवल शुद्ध पत्र दिया जाता है।

पृष्ठ	पंक्ति	
२०	१४	आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ६ उ० १ गा० ११
२३	११	आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १५
२४	६	भगवती श० १४ उ० ७
३२	४	भगवती श० ६ उ० ३१
६४	८	सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३
८३	६	उत्तराध्ययन अ० १२ गा० १४
६६	२३	भगवती श० ६ उ० ३१
१४२	५	सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १० गा० ३
१४४	१०	सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० १ गा० १
१४७	१४	ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० ४
१४६	२०	ठाणाङ्ग ठा० ३ उ० ३
१६८	६	अन्तगड व० ३ अ० ८
१६५	१८	भगवती १५
२०७	१०	भगवती श० १८ उ० २
२४८	२२	पन्नवणा पद १७ उ० १
३०७	७	ठाणाङ्ग ठा० ५ उ० २ तथा सम० स० ५
३१३	७	ठाणाङ्ग ठा० १०
३२८	६	ठाणाङ्ग ठा० ५ उ० २ तथा सम० स० ५
३३८	१६	पन्नवणा पद ११
३४५	२०	भगवती श० १८ उ० ८
३५७	३	आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ६ उ० ४
३८०	१७	भगवती श० ७ उ० ६
४०८	२३	आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ३ उ० १
४२४	१५	सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ४ उ० १ गा० १
४२५	११	उत्तराध्ययन अ० १५ गा० १६
४५१	१६	उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३५
४५६	२१	सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १३

अनुक्रमणिका ।

मिथ्यात्विक्रियाऽधिकारः ।

७ बोल पृष्ठ १५ से १७ तक ।

मिथ्यात्वी ने सोलमी कला पिण न आवे पहनों न्याय पाठ (उ० अ० १ गा० ४४)

८ बोल पृष्ठ १७ से १८ तक ।

प्रथम गुणठाणा ना धणी रो तप आज्ञा बाहिरे थापवा सूयगडाङ्ग नो नाम लेवे ते झूठा छै । पाठ (सूय० श्रु० १ अ० २ उ० १ गा० ६)

९ बोल पृष्ठ १८ से १९ तक ।

मिथ्यात्वी ना पच्चखाण किण न्याय दुपचखाण छै (भ० श० ७ उ० २)

१० बोल पृष्ठ २० से २० तक ।

प्रथम गुणठाणे शील व्रत रे ऊपर महावीर स्वामी रो न्याय (आ० श्रु० १ अ० ९)

११ बोल पृष्ठ २१ से २२ तक ।

मिथ्यात्वी रो अशुद्ध पराक्रम संसार नो कारण छै पिण शुद्ध पराक्रम संसार नो कारण न थी । पाठ (सूय० श्रु० १ अ० ८ गा० २३)

१२ बोल पृष्ठ २३ से २३ तक ।

सम्यग्दृष्टि नें पिण पाप लागे । वीर भगवान् रो कथन पाठ (आचा० अ० १५)

१३ बोल पृष्ठ २४ से २४ तक ।

सम्यग्दृष्टि ने पाप लागे । ते वली पाठ (भ० श० १४ उ० १)

* १५ बोल पृष्ठ २५ से २७ तक ।

प्रथम गुणठाणे शुद्ध करणी छै आज्ञामांहि छै पहनों प्रमाण ।

---

* इस मिथ्यात्विक्रियाऽधिकार में प्रेस के भूतों की कृपा से १४ बोल की संख्या के स्थानपर १५ बोल हो गया है । अतः आगे सर्व संख्या ही इसी क्रम के अनुसार हो चुकी है अधिकार में ३० बोल हो गये हैं वास्तव में २९ बोल ही हैं । उसी प्रकार यहां अनुक्रमणिका में भी १४ बोल की संख्या छोड़नी पड़ी है ।

संशोधक

इति जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने मिथ्यात्विक्रियाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता।

दानाऽधिकारः।

इति जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने दानाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

अनुकम्पाऽधिकारः ।

---

७ बोल पृष्ठ १३५ से १३६ तक ।

गृहस्थां ने लड़ता देखी साधु मार तथा मतमार इम न चिन्तवे (आ० श्रु० २ अ० २ उ० १)

८ बोल पृष्ठ १३६ से १३७ तक ।

साधु गृहस्थ नें अग्नि प्रज्वाल बुझाव इम न कहे (आ० श्रु० २ अ० २ उ० १)

९ बोल पृष्ठ १३७ से १३८ तक ।

असंयम जीवितव्य वर्ज्यो छै । (ठा० ठा० १०

१० बोल पृष्ठ १३८ से १३९ तक ।

असंयम जीवितव्य वांछणो नहीं (सू० श्रु० १ अ० १ गा० २४)

११ बोल पृष्ठ १३९ से १३९ तक ।

असंयम जीवणो मरणो वांछणो वर्ज्यो (सू० श्रु० १ अ० १३ गा० २३)

१२ बोल पृष्ठ १४० से १४० तक ।

असंयम जीवितव्य वांछणो वर्ज्यो (सू० श्रु० १ अ० १५ गा० १०)

१३ बोल पृष्ठ १४० से १४१ तक ।

असंयम जीवणो वांछणो वर्ज्यो (सू० श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० १५)

१४ बोल पृष्ठ १४१ से १४१ तक ।

असंजम जीवितव्य वांछणो वर्ज्यो (सू० श्रु० १ अ० ५ उ० १ गा० ३)

१५ बोल पृष्ठ १४१ से १४२ तक ।

असंजम जीवितव्य वांछणो नहीं (सू० श्रु० १ अ० १ गा० ३)

१६ बोल पृष्ठ १४२ से १४३ तक ।

असंयम जीवितव्य वांछणो वर्ज्यो (सू० श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १६)

१७ बोल पृष्ठ १४३ से १४४ तक ।

संयम जीवितव्य धारणो कह्यो (उत्त० अ० ४ गा० ७)

लब्धि-अधिकारः।

इति जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने लब्ध्यधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

प्रायश्चित्ताऽधिकार ।

इति श्री जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने गोशालाऽधिकाराऽनुक्रमणिका समाप्ता।

गुण वर्णनाऽधिकारः

इति श्री जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने गुणवर्णनाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता।

लेश्याऽधिकारः ।

इति श्री जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने लेश्याऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

वैयावृत्ति-अधिकारः ।

इति श्री जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने वैयावृत्ति-अधिकारानुक्रमणिका समाप्ता।

विनयाऽधिकारः ।

इति जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने विनयाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

पुण्याऽधिकारः ।

इति श्री जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने पुण्याऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता।

आश्रवाऽधिकार।

इति जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने आश्रवाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता।

सम्वराऽधिकारः ।

इति जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने संवराऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

जीवभेदाऽधिकारः ।

इति श्रीजयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने जीव भेदऽधिकारा नुक्रमणिका समाप्त ।

आज्ञाऽधिकारः ।

इति श्रीजयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने आज्ञाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता।

शीतल-आहाराऽधिकारः।

इति श्रीजयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने शीतलाहाराऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता।

सूत्र पठनाऽधिकारः ।

इति श्रीजयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने सूत्रपठनाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्त ।

निरवद्य क्रियाऽधिकारः ।

इति जयाचार्य कृते भ्रमविध्वसने निरवद्य क्रियाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

निर्ग्रन्थाहाराऽधिकारः ।

इति श्रीजयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने निर्ग्रन्थाहाराऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता।

निर्ग्रन्थ निद्राऽधिकारः।

इति श्रीजयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने निर्ग्रन्थ निद्राऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता।

एकाकि साधु-अधिकारः।

इति जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने एकाकि साधु-अधिकारानुक्रमणिका समाप्ता।

उच्चारपासवणाऽधिकारः।

इति जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने उच्चारपासवणाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

कविताऽधिकारः ।

इति श्री जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने कविताऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

अल्पपाप बहु निर्जराऽधिकारः ।

इति श्री जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने अल्पपाप बहु निर्जराऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

कपाटाऽधिकारः ।

इति श्री जयाचार्य कृते भ्रमविध्वंसने कपाटाऽधिकारानुक्रमणिका समाप्ता ।

इत्यनुक्रमणिका ।



ॐ

भ्रम विध्वंसनम् ।

अथ मिथ्यात्वि क्रियाऽधिकारः ।

भ्रम विध्वंसन कुमति कुहेतु खंडन सुमति सुहेतु मुखमंडन मिथ्यात्व-मत विहंडन सिद्धान्त न्याय सहित श्री भिक्षु महा मुनिराज कृत सिद्धान्त हुंडी तेहना सहाय्य थकी संक्षेप मात्र वली विशेषे करी परवादी ना कुहेतुनी शङ्का ते भ्रम तेहनूं विध्वंसन ते नाश करीवूं ए ग्रन्थे करि. ते माटे ए ग्रन्थ नूं नाम "भ्रम विध्वंसन" छै। ते सूत्र न्याय करी लिखिये छै।

भगवान् रो धर्म तो केवली री आज्ञा माही छै। ते धर्मरा २ भेद संवर, निर्जरा, ए बिहुं भेदा में जिन आज्ञा छै। ए संवर निर्जरा वेहुं इ धर्म छै। ए संवर निर्जरा टाल अनेरो धर्म नहीं छै। केइ एक पाषण्डी संवर ने धर्म श्रद्धे पिण निर्जरा नें धर्म श्रद्धे नहीं। त्यांरे संवर निर्जरारी ओलखणा नहीं। ते संवर निर्जरा रा अजाण थका निर्जरा धर्म ने उथापवा अनेक कुहेतु लगावे। जिम अनाण वादी (अज्ञान वादी) पाषण्डी ज्ञान ने निषेधे तिम केई पाषण्डी साधु रा वेष माहि साधु रो नाम धरावे छै। अने निर्जरा धर्म ने निषेध रह्या छै। अने भगवान् तो ठाम २ सूत्र में संयम तप. ए बिहुं धर्म कह्या छै।

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥

(दशवैकालिक अध्ययन १ गाथा १)

इहां धर्म मंगलीक उत्कृष्ट कह्यो, ते अहिंसा ने संयम ने अने तपने धर्म कह्यो छै। संयम ते संवर धर्म, अने तप ते निर्जरा धर्म छै। अने त्याग विना जीवरी दया पाले ते अहिंसा धर्म छै। अने जीव हणवारा त्याग ते संयम पिण कहीजै, अने अहिंसा पिण कहीजे। अहिंसा तिहां तो संयम नी भजना छै। अने संयम तिहां अहिंसा नी नियमा छै।

ए अहिंसा धर्म अने तप धर्म तो पहिला च्यार गुण ठाणा (गुणस्थान) पिण पावे छै। पहिले गुणठाणे अनेक सुलभ बोधी जीवां सुपात्र दान देइ जीव-दया तपस्या, शीलादिक, भली उत्तम करणी शुभ योग, शुभ लेश्या निरवद्य व्यापार थी परीतसंसार कियो छै। ते करणी शुद्ध आज्ञा मांहिली छै। ते करणी रे लेखे देश थकी मोक्ष मार्ग नो आराधक कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै।

अहं पुण गोयमा! एव माइक्खामि जाव परूवेमि. एवं खलु मए चत्तारि पुरिस जाया पण्णत्ता। तंजहा-सील संपण्णे नामं एगे नो सुय संपण्णे, सुयसंपण्णे नामं एगे नो सील संपण्णे. एगे सील संपण्णेवि सुय संपण्णे वि. एगे नो सील संपण्णे नो सुय संपण्णे. ॥ १ ॥

तत्थणं जे से पढमे पुरिस जाए सेणं पुरिसे सीलवं असुयवं उवरए अविण्णायधम्मे एसणं गोयमा! मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते ॥ २ ॥

तत्थणं जे से दोच्चे पुरिस जाए सेणं पुरिसे असीलवं सुतवं अणुवरए विण्णाय धम्मे एसणं गोयमा! मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते ॥ ३ ॥

तत्थणं जे से तच्चे पुरिस जाए सेणं पुरिसे सीलवं सुतवं उवरए विण्णाय धम्मे एसणं गोयमा! मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते ॥ ४ ॥

तत्थणं जे से चउत्थे पुरिस जाए सेणं पुरिसे असीलवं असुतवं अणुवरए अविण्णाय धम्मे एसणं गोयमा! मए पुरिसे सव्व विराहए पण्णत्ते ॥

(भगवती शतक ८ उद्देश्य १०)

अ० हूं पिण हे गोतम! ए० इम कहूं छू. जा० यावत् इम परूपूं. ए० इम निश्चय म्हे च० चार पुरुष ना प्रकार प्ररूप्या तं० ते कहे छै सी० शीलते क्रिया ते करी सम्पन्न पिण सु० ज्ञान सम्पन्न नथी सु० एक श्रुत ज्ञाने करी सम्पन्न छै, पिण शील कहितां क्रिया सम्पन्न नथी. ए० एक शीले करी सहित अने ज्ञाने करी पिण सहित एक एक नथी शीले करी सहित अने नथी ज्ञाने करी सहित ॥ १ ॥

त० तिहां जे ते प्रथम पुरुष नों प्रकार से० ते पुरुष सी० शील कहितां क्रिया सहित पिण अ० श्रुत ज्ञान सहित नथी उ० पोतानी बुद्धिइ पाप थी निवर्त्यो छै. अ० न जाणयो धर्म. ए० हे गौतम! म्हे ते पुरुष देश आराधक प्ररूप्यो एप बाल तपस्वी. ॥ २ ॥

त० तिहां जे ते बीजो पुरुष प्रकार से० ते पुरुष. अ० क्रियारहित छै पिण. सु० श्रुतवन्त छै पाप थी निवर्त्यो नथी. वि० अने ज्ञान धर्म ने जाण्यो छै सम्यक् दृष्टि ए० हे गौतम! म्हे ते पुरुष दे० देशविराधक कह्यो. अव्रती सम्यग् दृष्टि जाणवो ॥ ३ ॥

त० तिहां जे त्रीजो पुरुष प्रकार. से० ते पुरुष. सी० शीलवत (क्रियावत) छ सु० अनें श्रुतवंत ते ज्ञानवन्त छै पाप थी निवर्त्यो छै वि० धर्म जाण्यो छै. ए० हे गौतम! म्हे ते पुरुष स० सर्वाराधक कह्यो सर्व प्रकार ते मोक्ष नो साधक जाणवो एप गीतार्थ साधु ॥ ४ ॥

त० तिहां जे ते चौथा प्रकार नो पुरुष. से० ते पुरुष अ० क्रिया करी ने रहित. अ० अने श्रुतज्ञान रहित पाप थी निवर्त्यो नथी. अ० धर्म मार्ग जाणतो नथी. ए० हे गोतम! म्हे ते पुरुष. स० सर्व विराधक कह्यो. अव्रती बाल तपस्वी ॥

अथ इहां भगवन्ते चार प्रकार ना पुरुष कह्या। तिहां पहिला पुरुष नी जाति शील ते क्रिया आचार सहित अने ज्ञान सम्यक्त्व रहित पाप थकी निवर्त्यो पिण धर्म जाण्यो नथी, ते पुरुष ने देश आराधक कह्यो, प्रथम भांगो ए बाल

तपस्वी नी आश्रय। बीजो भांगो शील क्रिया रहित अने ज्ञान शक्ति सहित ए अव्रती सम्यग्दृष्टि ते देश विराधक ते दूजो भांगो। ज्ञान अने शील क्रिया सहित ते साधु- सर्वव्रती सर्वआराधक ए तीजो भांगो। अने ज्ञान क्रिया रहित अव्रती बाल पापी ए सर्वविराधक चौथो भांगो। इहां प्रथम भांगा में ज्ञान सम्यक्त्व रहित शील क्रिया सहित ते बाल तपस्वी नें भगवन्ते देश अराधक कह्यो छै। अने केतला एक अजाण मिथ्यात्वी नी शुद्ध करणी ने आज्ञा बाहिरे कहे छै। ते करणी थी एकान्त संसार बधतो कहै छै ते एकान्त झूठ रा बोलणहार छै। जो मिथ्यात्वी री शुद्ध भली निरवद्य करणी आज्ञा बाहिरे हुवे तो वीतराग देव मिथ्या दृष्टि बाल तपस्वी ने देश अराधक क्यूं कह्यो। ए तो प्रत्यक्ष पहिला गुणठाणा वाला नों प्रथम भांगो ते बाल तपस्वी ने देशअराधक कह्यो। ते लेखे तेहनी शुद्ध करणी आज्ञा मांहि छै। ते करणी निरवद्य छै। तिवारे कोई कहे ते मिथ्या दृष्टि बाल तपस्वी रे संवर वर्ततो तो किञ्चित् मात्र नहीं तो व्रत विना देशआराधक किम हुवे।

इम पूछे तेहनो उत्तर—व्रती ने तो सर्व आराधक कहीजे। अनें ए बाल तपस्वी ने व्रत नहीं पिण निर्जरा रे लेखे देशआराधक कह्या छै। ए करणी थी घणी कर्मांनी निर्जरा हुवे छै। इम घणी २ कर्मा नी निर्जरा करतां घणा जीव सम्यग्दृष्टि पाय मुक्ति गामी थया छै। तामलीतापस ६० हजार वर्ष ताईं बेले २ तपस्या कीधी तेहथी घणा कर्म क्षय किया। पछे सम्यग्दृष्टि पाय मुक्तिगामी एका-वतरी थयो। जो ए तपस्या न करतो तो कर्मक्षय न हुन्ता. ते कर्मांनी निर्जरा विना सम्यग्दृष्टि किम पावतो। अनें एकावतारी किम हुन्तो। वली पूरण तापस १२ वर्ष बेले २ तप करी घणा कर्म खपाया चमरेन्द्र थयो सम्यग्दृष्टि पामी एका-वतरी थयो। इत्यादिक घणा जीव मिथ्यात्वी थका शुद्ध करणी थकी कर्म खपाया ते करणी शुद्ध छै। मोक्षनो मार्ग छै। ते लेखे भगवन्त देश अराधक कह्यो छै। तिवारे कोई अज्ञानी जीव इम कहे एतो देश आराधक कह्यो छै। ते मिथ्यात्वी री करणी रो देश आराधक कह्यो छै, पिण मोक्ष मार्ग रो देश आराधक नहीं। तेहनो उत्तर—जो ए प्रथम भांगावाला बाल तपस्वी ने देश आराधक मुक्ति मार्ग नो न कह्या तो बाकी तीन भांगा में अव्रती सम्यग्दृष्टि ने देश विराधक कह्या, ते पिण तेहनी करणी रो कहिणो। मोक्ष मार्ग रो विराधक न कहिणो। अने तीजे भांगे साधु ने सर्व आराधक कह्यो ते पिण तिण रे लेखे मोक्ष मार्ग रो सर्व

आराधक न कहिणो। ए पिण तिण री करणी रो कहिणो। अनें चौथे भांगे अनार्य ने सर्वविराधक कह्यो। ए पिण तिण रे लेखे अनार्य री करणी रो सर्वविराधक कहिणो। पिण मोक्ष मार्ग रो सर्वविराधक न कहिणो। अनें जो यां तीना ने मोक्ष मार्ग रा आराधक तथा विराधक कहे, तो प्रथम भांगे वाल तपस्वी ने पिण मोक्ष मार्ग रो देशआराधक कहिणो। ए तो प्रत्यक्ष पाधरो भगवन्ते कह्यो। जे साधु नें तो सर्वआराधक मोक्ष मार्ग नो कह्यो, तिण रो देश मोक्ष रो मार्ग तपरूप वाल तपस्वी आराधे ते भणी वाल तपस्वी नेमोक्ष मार्ग रो देश आराधक कह्यो छै। अने जे अजाण कहे---तेहनी करणी रो देश अराधक कह्यो छै। ते विरुद्ध कहै छै। जे तेहणी करणी रो तो सर्वआराधक छै। जे पोता नी करणी रो देश आराधक किम हुवे। जे पोतारी करणी रो देशआराधक कहे ते अण विमास्या ना वोलणं हारा छै। मद पीधां मतवालां नी परे विना विचार्यां वोले छै। ए तो प्रत्यक्ष मोक्ष रो मार्ग तपरूप आराधे ते भणी देश अराधक कह्यो छै। भगवती नी टीका में पिण ज्ञान तथा सम्यक्त्व रहित क्रिया सहित वाल तपस्वी ने मोक्षमार्ग नों देश आराधक कह्यो छै। ते टीका लिखिये छै।

देसाराहएति—स्तोक मंश मोक्ष मार्गस्याराधयती त्यर्थः।

सम्यग्बोध रहितत्वात् क्रिया परत्वात्।

पहनो अर्थ—स्तोक कहतां थोड़ो अंश मोक्ष मार्ग रो आराधे ते सम्यग्-बोध ते सम्यग्दृष्टि रहित छै। अने क्रिया करिवा तत्पर छै। ते भणी देश आराधक कह्यो। वली टीका में "सुयसंपण्णे" कहितां श्रुत शब्दे ज्ञान दर्शन ने कह्यो छै। ते टीका लिखिये छै।

श्रुत शब्देन ज्ञान दर्शनयोर्गृहीतत्वात्।

पहनों अर्थ—श्रुत शब्दे करि ज्ञान दर्शन वेहंनो ग्रहण करिये। इहां ज्ञान दर्शन नें श्रुत कह्या छै ते श्रुते करी रहित कह्यां माटे मिथ्यादृष्टि, अने शील क्रिया सहित ते भणी देश आराधक कह्यो. एतो चौड़े मोक्ष मार्ग रो अराधक टीका में तथा वड़ा टब्बा मे पिण कह्यो। अने इण करणी ने आज्ञा वाहिरे कहे ते वीतराग

रा वचन रा उत्थापण हार छै। मृषावादी छै। एतला न्याय सूत्र अर्थ बतायां पिण न समझे तेहने कुमार्ग रो पक्षपात ज्यादा दीसै छै। दर्शन मोहरो उदय विशेष छै। डाहा होय तो विचारि जोय जो।

इति १ बोल सम्पूर्ण।

वलीप्रथम गुण ठाणा रो धणी सुपात्र दान देइ परीत संसार करि मनुष्य नो आयुषो बांध्यो सुबाहुकुमार ने पाछिले भवे सुमुख गाथापति ई। ते पाठ लिखिए छै।

तेणं कालेणं. तेणं समएणं. धम्म घोसाणं. थेराणं. अन्तेवासी. सुदत्तेनामं अणगारे. उराले जाव तेय लेसे. मासं मासेणं खममाणे विहरंति। ततेणं से सुदत्ते अणगारे. मास खमण पारणगंसि. पढ़माए पोरसीए सज्झायं करेति जहा गोयम सामी. तहेव सुधम्मे थेरे. आपुच्छति। जाव अडमाणे सुमुहस्स. गाहावतिस्स. गिहं अणुपविट्ठे. ततेणं से सुमुहे गाहावती. सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं. पास तिपासित्ता. हट्ठतुट्ठ आसणाओ. अब्भुट्ठेति २. पादपीठाओ पच्चोरुहति। पाओयाओमुयइ. एग साडियं उत्तरा संगं करेति २। सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं पच्चू गच्छइ तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २। वंदइ णमंसइ २ त्ता। जेणेवं भत्त घरे तेणे व उवागच्छइ २ त्ता। सय हत्थेणं विउलेणं असण पाण खाइम साइम पडिलाभे सामीत्ति। तुट्ठे २ ततेणं तस्स सुमुहस्स तेणं दव्व सुद्धेणं तिविहेणं तिकरण सुद्धेणं

२। सुदत्ते अणगारे पडिलाभए समाणे संसारे परित्ति कए मनुस्साउए निबद्धे ।

(विपाक सूत्र सुख विपाक अध्ययन १)

ते० तेणे काले तेणे समए. ध० धर्म घोषनामें थे० स्थविर नें. अ० समीप नों रहण हार सु० सुदत्तनामा अणगार. उ० उदार जा० यावत् गोपवी राखी छे तेजु लेश्या मा० ते मास मास खमण करतो. वि० विचरे छे। त० तिवारें पछे ते० ते सुदत्त नामे अणगार मा० मास खमण ना पारणा ने विषय प० पहिली पोरसीइं. स० सज्झाय करे ज० जिम गोतम स्वामी. त० तिम सु० धर्मघोष थीजो नाम स्थविर. थे० स्थविर ने पूछी ने जा० यावत् वलि गोचरी करतां सु० सुमुख नामे. गा० गाथापति ने गि० घर प्रवेश कीधो त० तिवारें ते सु० सुमुख नामे गाथापति सु० सुदत्त अणगार साधुने. ए० आंवतां पा० देखे. पा० देखी ने ह० हर्ष्यो सन्तोष पाम्यो थोड़ परो आसण थी ऊ० उठे उठी ने पा० बाजोट थी हेठो उतरयो उतरी ने. पा० पगनी पानही मूकी ने ए० एक साटिक उत्तरासंग कीधो करी ने. सु० सुदत्त अणगार. स० सात आठ पग साहमो आवे आवीने ति० त्रिणवार आ० प्रदक्षिणा पास थी आरम्भी ने प्रदक्षिणा करे करीने वं० वांदे नमस्कार करे करीने. जे० जिहां, भ० भातघर छे त० तिहां उ० आव्या आवीने. स० आपना हाथ थकी वहराव्यं अ० असन पाण खादिम सादिम. प० वहराव्या वहिरावतां तु० सन्तोषकारतो. त० तिवारे सुमुख गाथापति. ते० ते द० द्रव्य शुद्ध ते मनोज्ञ आहार १ दातारना शुद्ध भाव २ लेणहार निर्दोष पात्र शुद्ध. ३ ति० तिह प्रकार मन वचन काया करी ने सुदत्त अणगार ने प० प्रतिलाभ्या थके सुमुख स० संसार परीत कीधो. म० मनुष्य नो आयुषो बांध्यो. ।

अथ इहां सुबाहु ने पाछिल भवे सुमुख गाथापति सुदत्त अणगार ने आवतो देखी अत्यन्त हर्ष सन्तोष पामे । आसन छोड़ उत्तरासन करी सात आठ पावण्डा सामो आवी त्रिण प्रदक्षिणा देई वन्दना नमस्कार करी असनादिक बहिरावी ने घणो हर्ष्यो । तो एतलो विनय कियो वन्दना करी ए करणी आज्ञा बाहिरे किम कहिये । ए करणी अशुद्ध किम कहिये । ए तो प्रत्यक्ष भली शुद्ध निर्दोष आज्ञा माहिली करणी छै ।वली असनादिक देवे करी परीत संसार कियो । अनन्तो संसार छेदी मनुष्य नो आउखो बांध्यो, तो ए अनन्तो संसार छेद्यो ते निर्दोष सुपात्र दाने करि. ए करणी अत्यन्त विशुद्ध निर्मली ने अशुद्ध किम कहिये । आज्ञा बाहिरे किम कहिये । ए तो प्रत्यक्ष प्रथम गुण ठाणे थकां ए करणी सूं परीत संसार कियो मनुष्य नो आयुषो बांध्यो । जो सम्यग्दृष्टि हुवे तो देवता रो

आयुषो बांधतो। सम्यग्दृष्टि हुवे तो मनुष्य मरी मनुष्य हुवे नही। भगवती शतक ३ उद्देश्य १ कह्यो—सम्यग्दृष्टि मनुष्य तिर्यञ्च एक वैमानिक टाल और आयुषो बांधै नहीं अनें इण सुमुखे मनुष्य नो आयुषो बांध्यो। ते भणी ए प्रथम गुण ठाणे हुन्तो ते दान ने-भगवन्त शुद्ध कह्यो छै। दातार शुद्ध, ते सुमुख ना तीन करण अनें मन वचन कायाना ३ योग शुद्ध कह्या तो तिण ने अशुद्ध किम कहीजे ए करणी आज्ञा बाहिरे किम कहीजे। ए शुद्ध करणी आज्ञा बाहिरे कहे ते आज्ञा बाहिरे जाणवा। केइ एक अज्ञानी कहे सुमुख गाथापति साधु ने देखतां सम्यग्दृष्टि पामी। ते सम्यग्दृष्टि सूं परीत संसार कियो। ते सम्यग्दृष्टि अन्तर्मुहूर्त में वमीने मनुष्य नो आयुषो बांध्यो। इम अयुक्ति लगावे ते एकान्त झूठ रा बोलण हार छै। इहां तो सम्यग्दृष्टि नो नाम कांइ चाल्यो नहि। इहां तो पाधरो कह्यो। सुपात्र दाने करी परीत संसार करी, मनुष्य नो आयुषो बांध्यो। पिण इम न कह्यो सम्यग्दृष्टि करी परीत संसार करि पछे सम्यग्दृष्टि वमी ने मनुष्य नो आयुषो बांध्यो। एतो मन सूं गालां रा गोला चलावे छै। सूत्र में तो सम्यग्दृष्टि रो नाम पिण चाल्यो नहिं तो पिण भारी कर्मा आपरा मन सूं इज खोटा मतरी टेक सूं सम्यग्दृष्टि पमावे अनें वली वमावे छै। ते न्यायवादी हलुककर्मी तो माने नहीं एतो प्रत्यक्ष उघाड़ो झूठ छै। ते उत्तम तो न माने। ए तो सुमुखे शुद्ध दाने करि परीत संसार करी मनुष्य नो आयुषो बांध्यों ते करणी शुद्ध छै आज्ञा मांहि छै। अशुद्ध करणी सूं तो परीत संसार हुवे नहीं। अशुद्ध करणी सूं तो संसार वधे छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

वली मेघकुमार रो जीव पाछिले भवे हाथी, सूसला री दया पाली परीत-संसार मिथ्यात्वी थके कियो। ते पाठ लिखिये छै।

तएणं तुमं मेहा ! ताए पाणाणुकंपयाए ४ संसार परित्तीकए मणुस्साउए निवद्धे ।

(ज्ञाता अध्ययन १)

सं० तिवारे तु० तुमे मे० हे मेघ ! ता० ते उपजा पा० प्राण भूत जीव सत्वनी अनुकम्पा करी सं० ससार थोडो बाकी करयो रह्यो. म० मनुष्य नो आयुषो बांध्यो ।

अथ अठे ते सुसला प्राण भूत जीव. सत्व री अनुकम्पा करी ने हाथी परीत संसार करी मनुष्य नो आयुषो बांध्यो कह्यो। ए पिण मिथ्यादृष्टि थके परीत संसार कियो। ते शुद्ध करणी आज्ञा में छै। सम्यग्दृष्टि हुवे तो मनुष्य नो आयुषो बांधे नहीं। सम्यग्दृष्टि तिर्यंच रे निश्चय एक वैमानिक रो आयुषो बंधे। इहां केइ एक पाखण्डी अयुक्ति लगावी कहै—तिण वेलां हाथी ने उपशम सम्यक्त्व आव्या तिण सम्यग्दृष्टि थी परीत संसार कियो। अन्तर्मुहूर्त में ते सम्यग्दृष्टि वमी ने मनुष्य नो आयुषो बांध्यो, एहवो झूंठ बोले। इहां तो सम्यग्दृष्टि नो नाम चाल्यो नहीं। सूत्र में पाधरो कह्यो छै। जे सूसलारी दया थी परीत संसार करी मनुष्य नो आयुषो बांध्यो। पिण इम न कह्यो—जे सम्यग्दृष्टि थी परीत संसार करी पछे सम्यग्दृष्टि वमी ने मनुष्य नो आयुषो बांध्यो, एहवो बोल तो चाल्यो नहीं। वली मेघकुमार ने भगवन्ते कह्यो। हे मेघ ! ते तिर्यञ्च रा भव में तो सम्यक्त्व रत्न रो लाभ न पायो। जद पिण दया थी परीत संसार कियो तो हिवड़ा नो स्यूं कहिवो एहवो कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

तंजइ ताव तुमे मेहा ! तिरिक्ख जोणिय भाव मुवागएणं अपड़िलद्ध सम्मत्तरयण लंभेणं से पाए पाणाणु कंपयाए जाव अन्तरा चेव संधारिये णो चेवणं णिखित्ते किं मंग पुण तुमे मेहा ! इयाणिं विपुल कुल समुब्भवेणं ।

(ज्ञाता अध्ययन १)

तं० ते माटे ता० प्रथम ज० जो त० तुमे मे० हे मेघ ! ति० तिर्यंचनी गति नो भाव पाम्यौ तिहां अ० न लाध्यो न पाम्यो स० सम्यक्त्व रत्न नो लाभ से ते पा प्राणी नी अनुकंपाए करी जा० ज्यां लगे अ० पगरे विचाले ससला बैठो छै णो० नहीं निश्चय ऊपर पग मूंक्यो ससला ऊपर. किं० तो किसू कहिवो हे मेघ ! इ० हिवड़ां - वि० -विस्तीर्ण कु० कुलरे विषे स० ऊपनो हे मेघ !

इहां श्री भगवन्ते इम कह्यो। हे मेघ! ते तिर्यञ्च रे भवे तो "अपडिलद्ध" कहितां न लाध्यो "समत्त रयणं" कहितां सम्यक्त्व रत्न नों "लंभेणं" कहतां लाभ। यहां तो चौड़े सम्यक्त्व वर्जी छै। ते माटे ते हाथी मिथ्यात्वी थके दया थी परीत संसार कियो। ते करणी शुद्ध छै। निरवद्य निर्दोष आज्ञा मांहिली छै। केइ एक अजाण "अपडिलद्ध समत्तरयण लंभेणं" ए पाठ नो ऊंधो अर्थ करे छै। ते पाठ ना मरोडण हार छै। वली त्यांमें इज * दलपत रायजी प्रश्न पूछया तेहना उत्तर दौलतरामजी दीधा छै। तें प्रश्नोत्तर मध्ये पिण हाथी ने तथा सुमुख गाथापति नें प्रथम गुण ठाणे कह्या छै। वली ते प्रश्नोत्तर मध्ये दलपतराय जी पूछयो। "अपडिलद्ध सम्मत्तरयण लंभेणं" ए पाठ नो अर्थ स्यूं, तिवारे तेणे दौलतरामजी अर्थ इम कियो। "अपडिलद्ध" कहतां न लाध्यो "समत्तरयण लंभेणं" कहतां सम्यक्त्व रत्न रो लाभ, एहवो अर्थ कियो छै। ते अर्थ शुद्ध छै। कोई विपरीत अर्थ करे ते एकान्त मृषावादी छै। तिवारे कोई इम कहै तुमे ए दौलतराम जी रो शरणो किम लेवो छो। तुम्हें तो तिण दौलतरामजी नें मानो नहीं। ते माटे तेहनो नाम किम लेवो। तेहनो उत्तर—भगवती शतक १८ उ० १० कह्यो। जे सोमल ब्राह्मण श्री महावीर ने पूछ्यो, हे भगवन्! सरिसव (सर्षप) भक्ष्य के अभक्ष्य तिवारे भगवान् बोल्या। "सेणूणं मे सोमिला बम्हण! एसु दुविहा सरिसवा प० तं० मित्त सरिसवाय. धण्ण सरिसवाय" एहनो अर्थ—"सेणूणं" कहितांते निश्चय करि "मे" कहतां तुम्हारा "बम्हण" कहतां ब्राह्मण संबंधिया शास्त्र ने विषे सरिसवना बे भेद प्ररूप्या। इहां भगवान् कह्यो, हे सोमिल! तुम्हारा ब्राह्मण संबन्धिया शास्त्र नें विषे सरिसवना दो भेद कह्या। मित्र सरिसव—धान सरिसव एछे तेहना भेद कह्या, इम मासा कुलथारा पिण भेद तेहना शास्त्र नों नाम लेइ बताया तो तेणे श्री महावीरे ते ब्राह्मण नों मत मान्यो नथी। पिण तेहना शास्त्र थी बताया, ते अनेरा ने समझावा भणी। तिम इहां दौलतरामजी रो नाम लेइ पाठरो अर्थ बतायो। ते पिण तेहनी श्रद्धा वालांनें समझाया भणी। अनें जे

* ये दलपतरायजी और दौलतरामजी- कोटाबून्दीके आसपास विचरने वाले बाइस सम्प्रदायके साधु थे। इनकी बनाई हुई १ प्रश्नोत्तरी है। उसका ही यह १३८वां प्रश्न है। पूर्ण तया ये विदित नहीं है कि ये प्रश्नोत्तरी छपी हुई है वा नहीं।

"संशोधक"

न्यायवादी होसी ते तो सूत्र नो वचन उथापे नहीं। अने अन्यायवादी सूत्र नो पिण वचन उथापतो न शंके अने तेहना वडेरां ने पिण उथापने हाणी ने सम्यक्त्व थापे छै। अनेक विरुद्ध अर्थ करतां शंके नहीं। तेहनें परलोक में पिण सम्यग्दृष्टि सामगी दुर्लभ छै। डाहा होवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

वली शकडाल पुत्र भगवान् ने वांदा। ते पाठ कहे छै।

तएणं से सद्दालपुत्ते आजीविय उवासय इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरंति तं गच्छामिणं समणं भगवं महावीरं वंदामी नमंसामी जाव पज्जुवासामि एव संपेहति २ त्ता राहाए जाव पायच्छित्त सुद्ध-प्पवेसाइं जाव अप्प महग्घा भरणालंकीय सरीरे मणुस्स वग्गुरा परिगते सातो गिहातो पडिनिगच्छति २ त्ता पोलास-पुर नगरं मज्झं मज्झेणं निगच्छति २ त्ता जेणेव सहस्सं-बवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवा-गच्छइ २ त्ता। तिक्खुतो आयाहीणं पयाहीणं करेइ २ वंदइ २ णमंसइ २ जाव पज्जुवासइ।

(उपासक दशा अध्ययन ७)

त० तिवारे से० ते स० शकडाल पुत्र आ० आजीविका उपासक ए० एह (भगवन्त ना पधारनेरी) कथा (वार्त्ता) ल० सांभली नें विचार करे छै ए० ए ख० निश्चय. स० श्रमण भगवान् महावीर पधारया छै त० ते माटे ग० जावू. स० श्रमण भ० भगवन् महावीर ने वांदूं. न० नमस्कार करु जाव पज्जु० पर्युपासना (सेवा) करु ए० इम सं० विचार करे विचार करी ने राहा० न्हांव्यो जावत् शुद्ध हुवो सुन्दर स्थान ने विषे प्रवेश करवा योग्य यावत् अल्प भारवन्त अने बहुमूल्य वस्त्र वस्त्रालङ्कारे करी सुशोभित छै शरीर जेहनों एहवो थके म०

मनुष्य नो परिवार सहित सा० आपनें गि० घरथू निकले नि० निकली नें पो० पोलास-पुर नगरनां म० मध्यो मध्य थई जावे जावी ने जि० जिहाँ स० सहस्राम्र उद्यान ने विषे जे० जिहां स० श्रमण भगवन्त श्री महावीर ते० तिहां उ० आव्या आवीने ति० त्रिणवार डावा पासा थकी लेइने प० जीमण पासे प्रदक्षिणा क० करै करी नै० व० वांदे ण० नमस्कार करे वांदी ने नमस्कार करीनें जा० यावत् सेवा भक्ति करतो हुवे ।

अथ अठे कह्यो, शकडाल पुत्र गोशाला रो श्रावक मिथ्यात्वी हुन्तो । तिवारे भगवान ने त्रिण प्रदक्षिणा देइ वंदणा नमस्कार कीधी । ए वंदणा री करणी शुद्ध के अशुद्ध । ये शुभ योग रूप करणी छै के अशुभ योग रूप करणी छै। ए करणी आज्ञा मांही छै के बाहिरे छै । ए तो साम्प्रत निरवद्य छै, आज्ञा मांहि छै, शुद्ध छै, अशुद्ध कहै छै ते महा मूर्ख जाणवा । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ४ बोल सम्पूर्ण ।

वली मिथ्यात्वी ने भली करणी रै लेखे सुव्रती कह्यो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

> वेमायाहिं सिक्खाहिं जेनरा गिहि सुव्वया ।
> उवेंति माणसंजोणिं कम्मसच्चा हु पाणिणो ॥

(उत्तराध्ययन अध्यन ७ गाथा २०)

वे० जे मनुष्य योनि माहि अनेक प्रकारे सि० भद्रपणादिक शिष्याइ. जे० जे मनुष्य गि० ग्रहस्थ छतां सु० सुव्रती. उ० पामे ऊपजे मा० मनुष्यनी योनि क० कर्म ते करणी स० सत्य बचन बोलै दयावन्त एहवा पा० प्राणी हुइ ते मनुष्य पणु पामें ।

अथ इहां इम कह्यो । जे पुरुष गृहस्थ पणे प्रकृति भद्र परिणाम क्षमादि गुण सहित एहवा गुणा ने सुव्रती कह्या । परं १२ व्रत धारी नथी । ते जाव मनुष्य मरि मनुष्य मे उपजे । एतो मिथ्यात्वी अनेक भला गुणां सहित ने सुव्रती कह्यो । ते करणी भली आज्ञा माही छै । अने जे क्षमादि गुण आज्ञा में नहीं हुवे तो सुव्रतो क्यूं कह्यो । ते क्षमादिक गुणा री करणी अशुद्ध होवे तो कुव्रती कहता ।

ए तो सांप्रत भली करणी आश्रय मिथ्यात्वी ने सुव्रती कह्यो छै। अने जो सम्यग्दृष्टि हुवे तो मरी नें मनुष्य हुवे नहीं। अने इहां कह्यो ते मनुष्य मरी मनुष्य में उपजे ते न्याय प्रथम गुण ठाणे छै। तेहनें सुव्रतो कह्यो। ते निर्जरा री शुद्ध करणी आश्रय कह्यो छै। तेहने अशुद्ध किम कहीजे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

केतला एक एहवूं कहे—जे सम्यग्दृष्टि मनुष्य तिर्यञ्च एक वैमानिक टाल और आयुवो न बांधे। ते पाठ किहां कह्यो छै। ते सूत्र पाठ लिखिये छै।

मय पज्जव णाणीणं भंत्ते पुच्छा. गोयमा! णो नेरइया उयं पकरेंति णो तिरिक्ख जोणिया णोमणुस्स देवा उयं पकरेन्ति जइ देवा उयं पकरेन्ति किं भवन वासि पुच्छा गोयमा! णो भवनवासि देवा उयं पकरेन्ति णो वाणमन्तर णो जोतिसिय. वेमाणिय देवा उयं पकरेन्ति।

(भग० श० ३० उ० १)

म० मन पर्यवज्ञानी नी भं० हे भगवन्त! पु० पृच्छा. हे गौतम! णो० नारकी ना आयुषा प्रते करे नहीं णो० नहीं तिर्यंचना आयु प्रते करे णो० नहीं मनुष्य नो आयु प्रते करे. दे० देवता आयु प्रते करे, तो किं० किसूं भवनवासी देव आयु. प्रते करे ए प्रश्न हे गौतम! णो० नहीं भवनवासी आयु प्रते करे. णो० नहीं व्यन्तर देव आयुः प्रते करे णो० नहीं ज्योतिषी देव आयु प्रते करे. वे० वैमानिक देव आयु प्रते करे।

इहां मन पर्यव ज्ञानी एक वैमानिक नो आयुषो बांधे. ए तो मन पर्याय ज्ञानी नो कह्यो। हिवे सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्च आयुषो बांधे. ते पाठ लिखिये छै।

किरिया वादीणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया किं णेरइया उयं पकरेन्ति पुच्छा गोयमा ! जहा मणपज्जवणाणी।

(भग० श० ३० उ० १)

कि० क्रियावादी भ० हे भगवन्त प० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिया कि० स्यूं नारकी ना आयुषो प्रते करे हे गौतम ! ज० जिम मनपर्यव ज्ञानी नी परे जाणवा।

इहां क्रियावादी ते सम्यग्दृष्टि ने कह्यो छै। ते माटे क्रियावादी ते सम्यग्दृष्टि रे आयुषा रो बंध मन पर्याय ज्ञानी ने कह्यो। ते इण रे पिण बंधे इम कह्यो ते भणी सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्च पिण वैमानिक रो आयुषो बांधे और न बांधे। हिवे सम्यग्दृष्टि मनुष्य किसो आयुषो बांधे ते पाठ लिखिये छै।

जहा पंचिन्दिय तिरिक्ख जोणियाणं. वत्तव्वया भणिया. एवं मणस्साणवी वत्तव्वया भाणियव्वा. णवरं मणपज्जवणाणी. णो सण्णावउत्ताय. जहा सम्मदिट्ठी तिरिक्ख जोणिया तहेव भाणियव्वा।

(भगवती शतक ३० उद्दे० १)

ज० जिम प० पचेन्द्रिय ति० तिर्यंच योनिया नी व० वक्तव्यता भ० भणी छै ए इम म० मनुष्य नी पिण भणवी ण० एतलो विशेष न० मन पर्यव ज्ञानी णो नहीं सज्ञोपयुक्त ज० जिम सम्यग्दृष्टि तिर्यंच योनियानीपरे भ० कहिवा।

अथ क्रियावादी सम्यग्दृष्टि मनुष्य तिर्यञ्च रे एक वैमानिक रो बंध कह्यो और आयुषो बांधे नहीं इम कह्यो। ते माटे सुमुख गाथापति तथा हाथी तथा सुव्रती मनुष्य इहां कह्या ते सर्व नें मनुष्य ना आयुषा नो बंध कह्यो। ते भणी ए सर्व सम्यग्दृष्टि नहीं। ते माटे मनुष्य नो आयुषो बांधे छै। सम्यग्दृष्टि हुवे तो वैमानिक रो बंध कहता।

केई अज्ञानी इम कहे। मिथ्यात्वी ने एकान्त वाल कह्यो। जो तेहनी करणी आज्ञा माही होवे तो तेहने एकान्त वाल क्यूं कह्यो। तत्रोत्तरं—जो एकान्त वालनी करणी आज्ञा वाहिरे हुवे तो अव्रती सम्यग्दृष्टि ने पिण एकान्त वाल कहीजे भगवती श० ८ उ० ८ एकान्त वाल एकान्त पंडित अने वाल पंडित ए तीन भेद समचे कह्या छै। तिहां संसार रा सर्व जीव तेह तीन भेदां में विचार लेवा। एकान्त पंडित ते साधु छठा गुण ठाणा थी चौदमा तांई सर्व व्रत माटे एकान्त पंडित। एकान्त वाल पहिला गुण ठाणा थी चौथा गुण ठाणा सुधी सर्वथा अव्रत माटे एकान्त वाल। वाल पण्डित ते श्रावक पांचमे गुण ठाणे कांयतो व्रत कांयक अव्रत ते भणी वाल पण्डित। इहां वाल नाम मिथ्यात्व नो नहीं, वाल नाम मिथ्यात्व नो हुवे तो श्रावकने वाल पण्डित कह्यां माटे श्रावकरे पिण मिथ्यात्व हुवे। अने श्रावक रे मिथ्यात्व री क्रिया भगवन्ते सर्वथा प्रकारे वर्जी छै। ते भणी वाल नाम मिथ्यात्व नो नहीं। ए वाल नाम अव्रत नो छै। अने पण्डित नाम व्रत नो छै। ते एकान्त वाल तो चौथा गुण ठाणा सुधी छै। तिहां किञ्चिन्मात्र व्रत नहीं छै। ते भणी सम्यग्दृष्टि चौथा गुण ठाणा रा धणी ने पिण एकान्त वाल कहीजे। जो एकान्त वालनी करणी आज्ञा वाहिरे कहे तिणरे लेखे अव्रती शीलादिक पाले सुपात्र दान तप साधां ने वन्दनादिक भली करणी करे, ते सर्व करणी आज्ञा वाहिरे कहिणी। एकान्त वाल कह्या ते तो किञ्चिन्मात्र व्रत नहीं ते आश्रय कह्या, पिण करणी आश्रय एकान्त वाल न कह्या छै। करणी आश्रय वाल कहे ते महा मूर्ख जाणवा। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण।

केतला एक इम कहे—जे अन्य मती मास २ क्षमण तप करे, ते सम्यग्दृष्टि रा धर्म रे सोलमी कला पिण न आवे। श्री भगवन्ते इम कह्यो छै। ते भणी ते मिथ्यात्वी नी करणी सर्व आज्ञा वाहिरे छै। ते गाथा न्याय सहित कहे छै।

मासे मासे तु जो वालो कुसग्गेणं तु भुंजए।
न सो सुयक्खाय धम्मस्स कलं अग्घइ सोलसिं॥

(उत्तराध्ययन अध्ययन ६ गाथा ४४)

मा० मासे मासे निश्चय निरन्तर जो कोई बाल अविवेकी कु० डाभ ने अग्रे आवे तेतलाज अन्न नो पारणो भु० भोगवे करे तोही पिण न० नहीं सो० ते अज्ञानी नो तप सु० भलू तीर्थंकरादिके—अ० आख्यातो कह्यो सर्व व्रत रूप चारित्र ध० जे धर्म ने पाले क० कलायें अर्घे नहीं सोलमी ए।

अथ इहां तो मिथ्यात्वी नो मास २ क्षमण तप सम्यग्दृष्टि ना चारित्र धर्म ने सोलमी कला न आवे एहवूं कह्यो छै। ते चारित्र धर्म तो संवर छै तेहने सोलमी कला ई न आवे कह्यो। ते सोलमी कला नो इज नाम लेइ वतायो। पिण हजारमें इ भाग न आवे। तेहने संवर धर्म छै इज नथी। पिण निर्जरा धर्म आश्रय कह्यो नथी। तिवारे कोई कहै ए मिथ्यात्वी नो मास क्षमण सम्यग्दृष्टि रा निर्जरा धर्म ने सोलमे भाग नथी। इम निर्जरा धर्म आश्रय कह्यो छै। तो तिण रे लेखे सम्यग्दृष्टि रा निर्जरा धर्म रे सोलमे भाग न आवे। तो सतरमे भाग तो आवे। जो सम्यग्दृष्टि रा धर्म रे सतरमे भाग तेहना मास क्षमण हुवे तो तिणरे लेखे पिण आज्ञा में ठहर गयो। पिण एतो संवर चारित्र धर्म आश्रय कह्यो छै। ते चारित्र धर्म रे कोडमें ही भाग न आवे। पिण सोलमा रो इज नाम लेइ वतायो छै। वली उत्तराध्ययन री अवचूरी में पिण चारित्र धर्म रे सोलमे भाग न आवे इम कह्यो। पिण निर्जरा धर्म आश्रय न कह्यो। ते अवचूरी लिखिये छै।

"न इति निषेधे स एवंविध कष्टानुयायी। सुष्ठु शोभनः सर्व सावद्य विरति रूपत्वा दाख्यातो जिनैः स्वाख्यातो धर्मो यस्य स तथा तस्य चारित्रिण इत्यर्थः कलां भागम्-अर्घति अर्हति षोडशीं।"

इहां अवचूरी में पिण इम कह्यो। मिथ्यात्वी नो मासक्षमण तप चारित्र धर्म सर्व सावद्य ना त्याग रूप धर्म ने सोलमी कला पिण न आवे। पिण निर्जरा आश्रय न कह्यो। जे मिथ्यात्वी मास २ क्षमण करे। पिण तेहने चारित्र धर्म

न कहिये। निर्जरा धर्म निर्मल छै। ते करणी तपस्या शुद्ध छै, आज्ञा माहि छै। ए निर्जरा धर्म ने आज्ञा वाहिरे कहे ते आज्ञा वाहिरे जाणवा। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ७ बोल सम्पूर्ण।

वली केइ पहिला गुण ठाणा धणी री करणी आज्ञा वाहिरे थापवा "सूयगडाङ्ग" रो नाम लेइ कहे छै। जे प्रथम गुण ठाणे मास २ क्षमण तप करे तिन सूं अनन्ता जन्म मरण वधावे, ते भणी तेहनो तप आज्ञा वाहिरे छै। इम कहे ते गाथा रो न्याय कहे छै।

जइ विय णिगणे किसेचरे, जइ विय भुंजिय मासमंतसो॥
जे इह मायाइमिज्जइ, आगन्ता गब्भायणंतसो॥

(सूयगडाङ्ग श्रुतस्कंध १ अ० २ उ० १ गाथा ६)

ज० यदपि पर तीर्थि तापसादिक तथा जैन लिंगी पासत्थादिक णि० नम्र सर्व बाह्य परिग्रह रहित कि० दुर्बल छतो च० विचरे. ज० यदपि तप वर्णों करे भु जीमे मा मास क्षमणाने. म० अन्ते पारणो करे छै जीवे त्यां लगे. जे कोई इ० संसार ने विषे मा० माया सहित मि० संयोग करे बुगल ध्यानो नें माया नो फल कहै छै आ० ते आगमीये काले गर्भादिक ना दुःख पामस्ये णं अनन्त संसार परि भ्रमण करे।

अथ इहां केई कहै—ते वाल तपस्वी मास २ क्षमण तप करे तो पिण अनन्त जन्म मरण कह्या। अने ए करणी आज्ञा में हुवे तो अनन्त जन्म मरण क्यूं कह्या। तेहनो उत्तर—इहां सूत्र में तो इम कह्यो। जे मास ने छेहड़े भोगवे, तो पिण माया करे, ते माया थी अनन्त संसार भमे, ए तो माया ना फल कह्या छै, पिण तपने खोटो कह्यो नथी। इहां तो अपूठो तपने विशिष्ट कह्यो छै। ते किम—जे मास क्षमण करे तो पिण माया थी संसार भमे। ए मास क्षमण री करणी शुद्ध छै तिणसूं इम कह्यो छै अने तेहनो तप शुद्ध न होवे तो इम क्या नें

कहता "ए मास क्षमण इसी करणी करे तो पिण माया थी रुले" इहां माया नें अत्यन्त खोटी देखाड़वा तेहनी शुद्ध करणी रो नाम कह्यो, अने माया थी गर्भादिकना दुःख कह्या छै। अनें तेहना तप थी तो दुःख हुवे नहीं। तेहना तप थी पुण्य तो ते पिण कहै छै। अनें पुण्य थको तो दुःख पामे नहीं। अनें इहां अनन्त दुःख कह्या. ते तो माया ना फल छै, परं तपस्या ना फल नहीं, तपस्या तो निरवद्य छै। तिवारे कोई कहे—ए आज्ञा माहिली करणी छै, तो मोक्ष क्यूं वर्जी तेहनो उत्तर—एहने श्रद्धा ऊंधी ते माटे मोक्ष नथी। परं मोक्ष नो मार्ग वर्ज्यो नथी। जे अव्रती सम्यग्दृष्टि ज्ञान सहित छै, तेहने पिण चारित्र विण मोक्ष नथी। परं मोक्ष नो मार्ग कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ८ बोल सम्पूर्ण।

केतला एक इम कहै। जे मिथ्यात्वी ना पचखाण (प्रत्याख्यान) दुपच्चखाण (दुष्प्रत्याख्यान) कह्या छै। तेहनी करणी जो आज्ञा में हुवे तो तें दुपचखाण क्यूं कह्या। तेहनो उत्तर—दुपच्चखाण कह्या ते तो ठीक छै। जे जीव अजीव त्रस स्थावर. नें जाणे नहीं। अनें सर्व जीव हणवारा त्याग किया, ते जीव जाण्यां विना किण नें न हणे, केहना त्याग पाले। जे जीव नें जाणे नहीं, जीव हणवारा त्याग करे ते किम पाले। तें न्याय दुपचखाण कह्या छै। ते पाठ लिखिये छै।

सेणूणं भंते! सव्व पाणेहिं. सव्व भूएहिं सव्व जीवेहिं. सव्व सत्तेहिं. पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवइ तहा दुपच्चक्खायं गोयमा! सव्व पाणेहिं जाव सव्व सत्तेहिं पच्चक्खाण मिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवइ. सिय दुपच्चखायं भवइ। सेकेणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ सव्व पाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं जाव सिय दुपच्चक्खायं भवइ। गोयमा! जस्सणं सव्व पाणेहिं जाव सव्व सत्तेहिं पच्चक्खायमिति वद-

मरणस्स नो एवं अभि समरणागयं भवइ-इमे जीवा. इमे अजीवा. इमे तसा. इमे थावरा. तस्सणं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खाय मिति वदमाणस्स नो सु पच्चक्खायं दुपच्चक्खायं भवइ।

(भगवती श० ७ उ० २)

से० ते भगवन्! स० सर्व प्राण. स० सर्व भूत स० सर्व जीव सर्व सत्व नें विषे प० प्रत्याख्यान छै मि० इम कहिवा वाला नें सु० सुप्रत्याख्यान हुइ स० अथवा दु० दुष्प्रत्याख्यान हुइ गो० हे गोतम! स० सर्व प्राण. भूत. जीव सत्व नें विषे प० प्रत्याख्यान छै मि० इम कहिवा वाला नें सि० क्वचित् सु० सुप्रत्याख्यान हुइ सि० क्वचित् दु० दुष्प्रतिख्यान हुइ से० ते के० कौण कारण. भ० हे भगवन्! ए० इम कहिइ सं० सर्व प्राण भूत सत्व नें विषे जा० यावत् क्वचित् सुप्रत्याख्यान सि० क्वचित् दुष्प्रत्याख्यान भ० हुइ हे गोतम! ज० जेहने. स० सर्व प्राण साथें जा० यावत् स० सर्वसत्व साथें प० पचखाण मि० एहवूं. व० कहते छतें. नो० नहीं. ए० एहवूं अ० जाणवूं हुइं ज्ञानें करीने इ० ए जीव इ० ए अजीव इ० ए त्रस इ० ए स्थावर. त० तेहनें स० सर्व प्राण साथे. जा० यावत् सर्व सत्व साथे. पचखूं. मि० इम व० कहतांने नो० नहीं सु पचखाण हुइ दु० दुपचखाण हुइं।

अथ अठे तो इम कह्यो—जे जीव. अजीव. त्रस स्थावर. तो जाने नहीं, अनें कहै—म्हारे सर्व जीव हणवारा त्याग छै। ते जीव जाण्यां विना किण्नें न हने, केहना त्याग पाले। ते न्याय—मिथ्यात्वी ना दुपचखाण कह्या छै। तथा वली मिथ्यात्वी त्रस जाण ने त्रस हणवारा त्याग करे तेहने संवर न हुवे, ते माटे दुपचखाण कहीजे। पचखाण नाम संवर नो छै। तेहनें संवर नहीं। ते भणी तेहना पचखाण दुपचखाण छै। पिण निर्जरा तो शुद्ध छै। ते निर्जरा रे लेखे निर्मल पचखाण छै। मिथ्यात्वी शीलादिक आदरे, ते पिण निर्जरा रे लेखे निर्मल पचखाण छै। तेहना शीलादिक आज्ञा माहीं जाणवा। डाहा हुवे तो विचारि जोईजो।

इति ९ बोल सम्पूर्ण।

वली केइ ऊंधो तर्क सूं पूछे। जे प्रथम गुणठाणे शील व्रत नीपजे के नहीं। तेहनें इम कहिणो—अव्रती सम्यग्दृष्टि त्याग विना शील पाले तेहने शीलव्रत निपजे कि नहीं। जब कहे—तेहनें तो व्रत निपजे नहीं, निर्जरा धर्म हुवे छै। तो जोवोनी जे अव्रती सम्यग्दृष्टिरे त्याग विना शीलादिक पाल्यां व्रत निपजे नहीं तो मिथ्यात्वी रे व्रत किम निपजे। जिम अव्रती सम्यग्दृष्टि रे शीलादिक थी घणी निर्जरा हुवे छै। तिम प्रथम गुण ठाणे पिण सुपात्र दान देवे शील पाले दयादिक भली करणी सूं निर्जरा हुवे छै। तिवारे कोइ कहै—जे चौथा गुणठाणा रो धणी शीलादिक पाले, प्राणाति पातादिक आश्रव टाले, एहवो किहां कह्यो छै। तेहनो उत्तर—श्री महावीर दीक्षा लियां पहिलो बे वर्ष झाझेरा (अधिक) घरमें रह्या। पिण विरक्त पणे रह्या, काचो पाणी न भोगव्यो। एहवूं कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै।

अवि साहिये दुवेवासे सीतोदं अभोच्चा णिक्खन्ते एगन्तगए पिहि यच्चे से अहिन्नाय दंसणे सन्ते ।

(आचारांग श्रु० १ अ० ६ गा० ११)

अ० झाझेरा दु० बे वर्ष गृहवास नें विषे सी० काचो पाणी न पीधो णि० गृहवास छांडी ने ए० तथा गृहवास थकां एकत्व पणो भावतां पि० क्रोधादिक थकी उपशान्त तथा से० ते तीर्थंकर अ० जाण्यो छै त० ते ज्ञान सम्यक ते करी-पोताना आत्मानें भावे ३ इन्द्रिय नो इन्द्रिय करी प्रशान्त ।

अथ अठे कह्यो भगवान् श्री महावीर स्वामी दीक्षा लियां पहिलां झाझा (अधिक) दो वर्ष तांइ विरक्त पणे रह्या। सचित्त पाणी भोगव्यो नहीं तो त्यांरे व्रत तो हुवे नहीं। पिण निर्जरा शुद्ध निर्मल छै। तो जोवोनी चौथे गुणठाणे पिण व्रत नहीं तो प्रथम गुणठाणे व्रत किम हुवे। डाहा हुवे तो विचारि जोईजो।

इति १० बोल सम्पूर्ण ।

केतला एक कहै—मिथ्यादृष्टि ने आज्ञा वाहिरे कहीजे। निवारे तेहनी करणी पिण आज्ञा वाहिरे छे। मिथ्यात्वी अनें मिथ्यात्वी री करणी एक कही, ते ऊपर कुहेतु लगावी कहे—"अनुयोग द्वार" में कह्यो छै, गुण अनें गुणीभूत एक छै। तिण न्याय मिथ्यात्वी अनें मिथ्यात्वी री करणी एक छै, आज्ञा वाहिरे छै। इम कहे तलोत्तरं—इम जो मिथ्यात्वी अनें मिथ्यात्वी नी शुद्ध करणी एक हुवे आज्ञा वाहिरे हुवे तो सम्यग्दृष्टि अनें सम्यग्दृष्टि नी अशुद्ध करणी ए पिण तिणरे लेखे एक कहिणी। इहां पिण गुण अनें गुणीभूत नो न्याय मेलणो। अनें जो सम्यग्दृष्टि ना संग्राम कुशीलादिक ए अशुद्ध करणी न्यारी गिणस्यो, आज्ञा वाहिरे कहिस्यो, तो प्रथम गुणठाणे मिथ्यात्वी रा सुपात्रदान शीलादिक ए पिण भला गुण आज्ञा माहीं कहिणा पड़सी।

वली केतला एक "सूयगडाङ्ग" रो नाम लेई प्रथम गुणठाणा रा धणी री करणी सर्व अशुद्ध कहे। तेहना सुपात्र दान शील तप आदिक ने विषे पराक्रम सर्व अशुद्ध कर्म बन्धन रो कारण कहे। ते गाथा लिखिये छै।

जेयाऽबुद्धा महाभागा वीरा असमत्त दंसिणो।
असुद्धं तेसिं परक्कंतं सफलं होइ सव्वसो॥

(सूयगडाङ्ग श्रुतस्कध १ अध्ययन ८ गाथा २३)

जे० जे कोई अबु० अबुद्ध तत्व ना अजाण छै म० परं लोकमांहें ते पूज्य कहिवाई वी० वीरसुभट कहिवाइ एहवा पिण अ० असम्यक्त्व, ज्ञान दर्शण विकल देवगुरु धर्म न जानें अ० अशुद्ध तेहनों जे दान शील तप आदि अध्ययनादि विषे उद्यम पराक्रम स० संसार ना फल सहित हो० हुइ स० सर्वथा प्रकारे कर्म बन्धन रो कारण पर निर्जरा रो कारण नथी।

अथ अठे तो इम कह्यो—जे तत्व ना अजाण मिथ्यात्वी नो जेतलो अशुद्ध पराक्रम छै, ते सर्व संसार नो कारण छै। अशुद्ध करणी रो कथन इहां कह्यो। अनें शुद्ध करणी रो कथन तो इहां चाल्यो नथी। वली ते मिथ्यात्वी ना दान शीलादिक अशुद्ध कह्या। तेहनो न्याय इम छै—अशुद्ध दान ते कुपात्र ने देवो. कुशील ते खोटो आचार तप ते अग्नि नो तापवो. भावना ते खोटी भावना.

भणवो ते कुशारुत्तनो. ए सर्व अशुद्ध छै, ते कर्मबन्धन रा कारण छै। पिण सुपात्र दान देवो शील पालवो. मास खमणादिक तप करवो भली भावनानुभाविवो, सिद्धान्त नो सुणवो. ए अशुद्ध नहीं छै, ए तो आज्ञा माही छै। अनें जो तेहनी सर्व करणी अशुद्ध हुवे तो तिणरे लेखे सम्यग्दृष्टि री सर्व करणी शुद्ध कहिणी। तिहां इज दूजी गाथा इम कही छै ते लिखिये छै।

जेय वुद्धा महाभागा वीरा समत्त दंसिणो।
शुद्धं तेस्सिं परक्कन्तं अफलं होइ सव्वसो॥

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ८ गा० २४)

जे० जे कोई बु० तीर्थंकरादि म० महा भाग्य पूज्य तथा वी० वीर,कर्म विदारवा समर्थ स० सम्यग्दृष्टि एहवानों जेतला अनुष्ठान ने विषे उद्यम ते. अ० सर्व प्रकारे संसार ना फल रहित ते अफल कर्म बंधनो कारण नथी किन्तु निर्जरा रो कारण।

अथ इहां—सम्यग्दृष्टि रो शुद्ध पराक्रम छै. सर्व निर्जरा नो कारण छै. पिण संसार नो कारण नथी. इम कह्यो। इहां सम्यग्दृष्टि रे अशुद्ध पराक्रम रो कथन चाल्यो नथी। जो मिथ्यादृष्टि रो पराक्रम सर्व अशुद्ध हुवे तो सम्यग्दृष्टि रो पराक्रम सर्व शुद्ध कहिणो, त्यांरे लेखे तो सम्यग्दृष्टि कुशीलादिक संग्राम वाणिज्य व्यापार. अनेक पाप करे ते सर्व शुद्ध कहिणा। अनें सम्यग्दृष्टि रा सावद्य कुशीलादिक ने अशुद्ध कहे तो मिथ्यात्वी रा निरवद्यदान शीलादिक पिण अशुद्ध होवे नहीं। ए तो पाधरो न्याय छै। मिथ्यात्वी रो मिथ्यात्वपणा नो पराक्रम अशुद्ध छै, अनें सम्यग्दृष्टि नो सम्यग्दृष्टि पणानो भलो पराक्रम शुद्ध छै। मिथ्यात्वी नी अशुद्ध करणी रो कथन अनें सम्यग्दृष्टि नी शुद्ध करणी रो कथन तो इहां चाल्यो छै। अनें मिथ्यात्वी नी शुद्ध करणी नो कथन अनें सम्यग्दृष्टि री अशुद्ध करणी रो कथन इहां चाल्यो नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोईजो।

इति ११ बोल सम्पूर्ण।

केतला एक पाखंडी कहे—सम्यग्दृष्टि कुशी आदिक अनेक सावद्य कार्य करे ते सर्व शुद्ध छै। सम्यग्दृष्टि नें पाप लागे नहीं। सम्यग्दृष्टि ने पाप लागे तो ते सम्यग्दृष्टि रो-पराक्रम शुद्ध क्या नें कहे। तत्रोत्तरं—जो सम्यग्दृष्टि ने पाप लागे नहीं तो भगवान् महावीर स्वामी दीक्षा लीधी जद इम क्यूं कह्यो "जे हूं आज थकी सर्व पाप न करूं" इम कही चारित्र पडिवज्जो छै। ते पाठ लिखिये छै।

तओणं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दहिणं वामेण वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेत्ता सिद्धाणं णमोक्कारं करेइ करेत्ता "सव्वं मे अकरणिज्जं पापकम्मं" तिकट्टु सामाइयं. चरित्तं. पडिवज्जइपडिवज्जइत्ता।

(आचारांग अ० १५)

त० तिवारे स० श्रमण भगवन्त महावीर दा० जीमणे हाथसू दा० जीमणे पासा रो वा० डावा हाथ सु डावा पासा रो पं० पचमुष्टिक लोचकरी नें सि० सिद्धां ने ण० नमस्कार करी करीनें स० सर्व मे० मुझने अ० करनो योग्य नथी पा० पाप कर्म. ति० इम करीने. सा० सामायक च० चारित्र प० पडिवज्जे आदरे. प० आदरी नें तिण अवसरे।

अथ इहां भगवन्त दीक्षा लेतां कह्यो—"जे आज थकी सर्वथा प्रकारे पाप मोने न करिवो" इम कही सामायक चारित्र आदर्यो। जो सम्यग्दृष्टि नें पाप लागे नहीं तो भगवन्त सम्यग्दृष्टि था जो आगे पाप लागतो न हुन्तो तो "हूं आज थकी सर्व पाप न करूं" इम कहिवारो कांइ काम। डाहा हुवे तो विचारि जोईजो।

इति १२ बोल सम्पूर्ण।

तथा सम्यग्दृष्टि-ने पाप लागे ते वली सूत्र पाठ लिखिये छै ।

अणुत्तरोववाइयाणं भंते ! देवा केवइएणं कम्माव-सेसेणं अणुत्तरोववाइय देवत्ताए उववण्णा । गोयमा ! जाव इये छट्ठ भत्तिए समणे णिग्गंथे कम्मं णिज्जरेइ एव इएणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइय उववण्णा ।

(भ० श० १४ उ० १)

अ० अनुत्तरोपपातिक भं० हे भगवन्त ! दे० देवपणे के० केतलाइं. क० कर्म अवशेषे अ० अनुत्तरोपपातिका दे० देवपणे उ० अवतार हुइं हे गौतम ! जा० जेतलूं छ० छठ भक्ति स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ. क० कर्मप्रति. णि० निर्जरे ए० एतले. क० कर्म अवशेषे थकी अ० अनुत्तर विमाणे ऊपणा ।

अथ अठे भगवन्ते इम कह्यो—एक बेला रा कर्म बाकी रह्या । अणुत्तर विमान में उपजेतो ऋषभदेव स्वामी सर्वार्थसिद्ध थी चवी नवमास गर्भरा दुःख सही पछे दीक्षा लीधी, १ वर्ष तांइ भूखा रह्या, देव मनुष्य तिर्यञ्च नी उपसर्ग सही केवल ज्ञान उपजायो । जो सम्यग्दृष्टि नें पाप लागे इज नहीं तो ऋषभदेवजी एहवा दुःख भोगव्या ते कर्म किहां उपजाव्या । सर्वार्थसिद्ध में गया जिवारे तो एक बेला रा कर्म बाकी रह्या, तठा पछे सम्यक्त तो गई नथी । जो सम्यग्दृष्टि ने पाप न लागे तो एतला कर्म किहां लाग्या । पिण सम्यग्दृष्टि रे पाप लागे छै । अनें सम्यग्दृष्टि रो सर्व पराक्रम शुद्ध कहे—ते साम्प्रत सूत्र ना अजाण छै, मृषावादी छै । सम्यग्दृष्टि रा कुशीलादिक आज्ञा बाहिरे छै । डाहा हुवे तो विचारि जोईजो ।

इति १३ बोल सम्पूर्ण ।

वली केतला एक कहे—जे प्रथम गुणठाणे शुद्ध करणी छै आज्ञा माहि छै तो "उवाई" सूत्र मे कह्यो। जे विना मन शीलादिक पाले ते देवता थाइ ते परलोक ना अनआराधक कह्या। ते माटे तेहना शीलादिक आज्ञा बाहिरे छै। जे आज्ञा माहि हुवे तो. परलोक ना आराधक कहिता। इम कहे तत्रोत्तरं—इहां "उवाई" में कह्यो जे विगय (घृतादिक) न लेवे पुष्प अलंकार न करे। शीलादिक पाले, इत्यादिक हिंसारहित निरवद्य करणी करे ते करणी आज्ञा मांहि छै। ते करणी अशुद्ध किम कहिये। अनें परलोक ना आराधक कह्या छै, ते सर्व थकी आराधक आश्रय कह्या। तथा सम्यक्त्व नीं आराधना आश्री ना कह्यो पिण देश-आराधना आश्री तथा निर्जरा धर्म आश्री आराधना नों ना नथी कह्यो। जिम भगवती श० १० उ० १ कह्यो. पूर्व दिशे "धम्मत्थिकाए" धर्मास्तिकाय नथी एहवूं कह्यूं। अनें धर्मास्तिकाय नो देश प्रदेश तो छै, तो पूर्व दिशे धर्मास्तिकाय नो ना कह्यो ते तो सर्वथकी धर्मास्तिकाय वर्ज्यो छै। पिण धर्मास्तिकाय नो देश वर्ज्यो नथी। तिम अकाम शील उपशान्त पणो ए करणी रा धणी ने परलोक ना आरा-धक नथी, इम कह्या। ते पिण सर्वथकी आराधक नथी। परं निर्जरा आश्री देशआराधक तो ते छै। जिम पूर्व दिशे धर्मास्तिकाय सर्व थकी नथी। तिम प्रथम गुणठाणे शुद्ध करणी करे ते पिण सर्वथकी आराधक नथी। जिम पूर्व दिशे धर्मास्तिकाय नो देश छै, ते भणी देशथकी धर्मास्तिकाय कहिइ तिम प्रथम गुणठाणे शुद्ध करणी करे, ते निर्जरा लेखे तो देशआराधक कहिइ। ते देशआरा-धक नी साक्षी. भगवती श० ८ उ० १० कह्यूं छै विचारि लेवूं। जिम भगवती श० उ० ६ तो साधु ने निर्दोष दीधां एकान्त निर्जरा कही परं पुण्य नों नाम चाल्यो नहीं। अनें "ठाणांग" ठाणे ६ "अन्नपुन्ने" ते साधु ने निर्दोष अन्न दीधां पुण्य नो बंध कह्यो, पिण निर्जरा रो नाम चाल्यो नहीं। तो उत्तम विचारी ए बिहूं पाठ मिलावे। जे साधु नें दीधां निर्जरा पिण हुवे अनें पुण्य पिण बंधे। तिम प्रथम गुणठाणा रो धणी शुद्ध करणी करे तेहनें "उवाई" में तो कह्यो परलोक ना आराधक नथी। अनें भगवती श० ८ उ० १० कह्यो। ज्ञान विना जे करणी करें ते देशआराधक छै। ए बिहूं पाठ रो न्याय मिलावणो। सर्वथकी तथा संवर आश्री तो आराधक नथी। अनें निर्जरा आश्री तथा देश थकी आराधक तो छै। पिण जावक किञ्चिन्मात्र पिण आराधक नथी, एहवी ऊंधी थाप करणी नहीं—

जो मिथ्यात्वी नी शुद्ध करणी आज्ञा बाहिरे हुवे, तो देश आराधक क्यूं कह्यो । ए तो पाधरो न्याय छै । तथा वली "उवाई" मध्ये अम्बड़ ने परलोक नो आराधक कह्यो छै । वली सर्व श्रावकां नें "उवाई" प्रश्न २० परलोक ना आराधक कह्या छै । अनें मिथ्यात्वी तापसादिक ने परलोक ना अनाराधक कह्या छै । जो परलोक ना अनाराधक कह्यां माटे ते प्रथम गुणठाणा रे धणी रा सर्व कार्य आज्ञा बाहिरे कहे तिणरे लेखे अम्बड़ सन्यासी ने तथा सर्व श्रावकां ने परलोक ना आराधक कह्या छै ते भणी ते श्रावकां ना पिण सर्व कार्य आज्ञामें कहिणा । तो चेड़ो राजा संग्राम कीधो, घणा मनुष्य मास्या, तेहने लेखे ए पिण कार्य आज्ञामें कहिणो । "वर्णनागनतुयो" ए पिण श्रावक हुन्तो, ते परलोक नो आराधक थयो तो तेहने लेखे ए पिण संग्राम करि मनुष्य मास्या, ए पिण कार्य आज्ञामें कहिणो । अम्बड़ काचो पाणी नदीमें वहतो आज्ञा थी लेतो ते पिण आज्ञामें कहिणो । वली श्रावक अनेक वाणिज्य व्यापार हिंसा झूठ चोरी कुशीलादिक सेवे छै । अनें उवाई प्रश्न २० सर्व श्रावकां नें परलोक ना आराधक कह्या छै । जो आराधक वाला री सर्व करणी आज्ञा में कहे तो ए श्रावकां रा हिंसादिक सर्व सावद्य कार्य आज्ञामें कहिणा । अनें परलोक ना आराधक कह्या त्यां श्रावकां री अशुद्ध करणी संग्राम कुशीलादिक आज्ञा बाहिरे कहे तो प्रथम गुणठाणा रा धणी ने परलोक ना अनाराधक कह्या, तेहनी शुद्ध करणी शील तपस्या क्षमा सन्तोषादिक भला गुण आज्ञामांहि कहिणा । ए तो पाधरो न्याय छै । तथा वली "रायपसेणी" सूत्रमें सूर्याभदेव ने भगवन्ते आराधक कह्यो—जो आराधकवाला री करणी सर्वआज्ञामें कहे तो तिणरे लेखे सूर्याभ पिण सावद्यकामा राज्य बैसतां ३२ थाना पूज्या । वली कुशीलादि तेहना सर्वआज्ञामें कहिणा । वली भगवती श० ३ उ० ८ सनत्कुमार तीजा देवलोकना इन्द्रने पिण "आराहए नो विराहए" एहवा पाठ कह्यो । एतले अधिक कह्यो, तो तिणरे लेखे तेहनी सावद्यकरणी पिण आज्ञामें कहिणी । शक्रेन्द्र-ईशानेन्द्र-चमरेन्द्र इत्यादिक अनेक देवता ने आराधक कह्या छै । पिण तेहनी सावद्यकरणी आज्ञामें नहीं, ए आराधक छै ते सम्यग्दृष्टिरे लेखे छै, पिण करणी लेखे नहीं । तिम मिथ्यात्वी ने आराधक नथी इम कह्या तेपिण सम्यक्त्व तथा संवर नथी, ते लेखे अनाराधक कह्या । पिण करणीरे लेखे नथी कह्या । वली "आनन्द" आदिक श्रावकांरे घरे घणा

आरम्भ समारम्भ हुन्ता—कर्षण (खेती) आदिक कुशील वाणिज्य व्यापारादिक सावद्यकरणी करता हुन्ता, तेहने पिण परलोकना आराधक कह्या। ते पिण सम्यक्त्व तथा श्रावक रा व्रतां रे लेखे आराधक कह्या, पिण तेहनी सावद्य करणी आज्ञामें नहीं। तिम प्रथम गुण ठाणा रा धणीने "परलोकना आराधक न थी" इम कह्या ते सम्यक्त्व नथी ते आश्री कह्या पिण तेहनी निरवद्य करणी आज्ञा बाहिरे नहीं। विराधकवालां री सर्वकरणी आज्ञा बाहिरे कहे विराधक कह्यां माटे, तो तिणरे लेखे आराधकवाला सम्यग्दृष्टि श्रावकांरी करणी सर्व आज्ञामें कहिणी आराधक कह्यां माटे। अने जो आराधक वाला सम्यग्दृष्टि श्रावकां री अशुद्ध करणी आज्ञा बाहिरे कहे तो अनाराधक वाला प्रकृतिभद्रकादि मनुष्य मिथ्यात्वीरी शुद्ध करणी जे छे, ते आज्ञामाहीं कहिणी एलो वीतराग रो सरल सूधो मार्ग छै। जिण मार्गमें कपटाई रो काम छै नहीं। वली विराधक आराधक रो नाम लेइ शुद्ध करणी आज्ञा बाहिरे थापे तेहने पूछा कीजे—कृष्ण श्रेणकादिकने आराधक कहीजे, विराधक कहीजे, : आराधक कहे तो तेहना संग्राम कुशीलादिक आज्ञामें कहिणा तिण रे लेखे। अनें जो विराधक कहे तो तिण लेखे कृष्णादिक धर्म दलाली करी श्री जिन बांधा ए करणी आज्ञा बाहिरे कहिणी। ये न्याय बतायां शुद्ध जाब देवा असमर्थ तिवारे अक बक बोले। केइ क्रोधरो शरणो गहै। तेहने सांची श्रद्धा आवणी घणी दुर्लभ छै। अनें जो न्यायवादी हलुकर्म्मी ए न्याय सुणी शुद्ध श्रद्धा धारे खोटी श्रद्धा छांडे पिण ऊंधो श्रद्धा री टेक न राखे ते उत्तम जीव जाणवा। डाहा हुवे तो विचारि जोईजो।

इति १५ बोल सम्पूर्ण।

केतला एक इम कहे जो प्रथम गुण ठाणा रा धणीरी करणी आज्ञामाही छै तो तिणने मिथ्यादृष्टि मिथ्यात्व गुण ठाणे क्यूं कह्यो। तेहनो उत्तर—मिथ्यात्व छै, जेहने तिणने मिथ्यात्वी कह्यो तेहने कतियक श्रद्धा संवली छै अने केतलक बोल ऊंधा छै. तिहां जे जे बोल ऊंधा छे तो मिथ्यात्व, अने जे केतला ?

एक बोल संउली श्रद्धारूप शुद्ध छै ते प्रथम गुण ठाणो छै। मिथ्यात्वीना जेतला गुण ते मिथ्यात्व गुण ठाणो छै। जिम छठा गुण ठाणा रो नाम प्रमादी छै, तो ए प्रमाद छै ते तो गुण ठाणो नहीं छै ए प्रमाद तो सावद्य छे। अनें छठो गुण ठाणो निरवद्य छै। पिण प्रमादे करि ओलखायो छै। जे प्रमादी नो सर्वचरित्र रूपगुण ते प्रमादी गुण ठाणो छै। तथा वली दशवां गुण ठाणा रो नाम सूक्ष्म-सम्पराय छै। ते सूक्ष्म तो थोड़ो सम्पराय ते लोभने सूक्ष्म संपराय थोड़ो लोभ ते तो सावद्य छै। एतो गुणा ठाणो नहीं। दशमो गुण ठाणो तो निरवद्य छै। ते किम सूक्ष्म संपराय वाला नों जे चरित्र रूप गुण ते सूक्ष्म संपराय गुण ठाणो छै। तिम मिथ्यात्वी रा जे केतला एक शुद्ध श्रद्धा रूप गुण ते मिथ्यात्व गुण ठाणो छै। तिवारे कोई कहै—प्रथम गुण ठाणे किसा बोल संवला छै। तेहनो उत्तर—जे मिथ्यात्वी गाय ने गाय श्रद्धे. मनुष्य ने मनुष्य श्रद्धे. दिनने दिन श्रद्धे. सोना ने सोनो श्रद्धे. इत्यादि जे संवली श्रद्धा छै ते क्षयोपशम भाव छै। अने मिथ्यादृष्टि नें क्षयोपशम भाव अनुयोग द्वार सूत्रमें कही छै। ते संवली श्रद्धा रूप गुणने प्रथम गुणठाणो कहिजे। ए तो निरवद्य छै। कर्म नो क्षयोपशम कह्यो छै। जद कोई कहे—ए प्रथम गुण ठाणो निरवद्य कर्म नो क्षयोपशम किहां कह्यो छै। तेहनो उत्तर—समवायांगे १४ जीव ठाणा कह्या छै। त्यां एहवो पाठ छै।

कम्म विसोहिय मग्गणं. पडुच्च. चोद्दस जीवठाणा. प० तं० मिच्छदिट्ठी. सासायण सम्मदिट्ठी सम्ममिच्छदिट्ठी, अविरयसम्मदिट्ठी, विरयाविरए. पम्हत्त संजए. अप्पमत्त संजए. नियट्ठि अनिट्टिबायरे, सुहुमसंपराए उवसमएवा खवएवा, उवसंतमोहेवा, खीणमोहे, सजोगी केवली, अजोगी केवली ॥ ५ ॥

समवायांग स० १४

क० कर्म विशोध विशेषणा प० आश्री ने चो० चवदह जीवना स्थानक भेद कह्या १४ गुणठाणा ते कहै छै मि० मिथ्यात्व गुण ठाणे सास्वादन सम्यग्दृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि. अव्रति सम्यग्दृष्टि व्रताव्रती प्रमत्तसंयत अप्रमत्तसंयत नियट्टिबादर अनियट्टिबादर सूक्ष्म सम्पराय ते उवशाम्या थी अनें क्षीण थी. उपशान्त मोह, क्षीण मोह, सजोगी केवली, अजोगी केवली ।

इहां इम कह्या—जे कर्मनी विशुद्धि ते क्षयोपशम तथा क्षायक आश्री १४ जीवठाणा परूप्या । इहां चौदह जीवठाणा कर्मनी विशुद्धि आश्री कह्या पिण कर्म उदय न कह्यो । मोह कर्मना उदय आश्री कहिता तो सावद्य, अनें कर्मनी विशुद्धि आश्री कह्या ते भणी निरवद्य छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १६ बोल सम्पूर्ण ।

वली केतला एक घणी अयुक्ति लगाय ने मिथ्यात्व गुणठाणे भली करणी शील संतोष क्षमादिक मास क्षमणादिक तप करे ते करणी सर्व आज्ञा बाहिरे कहे छै । तेहनो उत्तर—जो मिथ्यात्वी री भली करणी आज्ञा बाहिरे हुवे तो मिथ्यात्वी रो सम्यग्दृष्टि किम हुवे, घणा जीव मिथ्यात्वी थकां शुद्ध करणी करतां कर्म खपाया सम्यग्दृष्टि पाया छै, जो अशुद्ध करणी हुवे तो अशुद्ध आज्ञा बाहिर ली करणी सूं सम्यग्दृष्टि किम पावे । तिवारे कोई इम कहे—जो प्रथम गुणठाणा रो धणी करणी करतां सम्यग्दृष्टि पामें ते आज्ञा माहि छै, तो ग्यारमा गुणठाणा रो धणी पहिले गुणठाणे आवे तेहनी करणी आज्ञा बाहिरे कहिणी । तेहनो उत्तर—ग्यारमा गुणठाणा रो धणी ग्यारमा थी तो पहिले गुणठाणे आवे नहीं, ग्यारमा थी तो दशमे आवे, अनें मरे तो चौथे आवे इम दशमा थी नवमें नवमा थी आठमें आठमा थी सातमें, सातमा थी छठे आवे । यां सर्व गुणठाणा थी मरे तो चउथे आवे । ए तो विशेष निर्मल परिणाम थी उतरतो आयो पिण सावद्य अशुभ योग सूं न आयो । जिम किणही महीनों पचख्यो ते शुद्ध पाली पनरे १५ पचख्या इम १० पचख्या जाव शुद्ध पाली उपवास पचख्यो जे मास क्षमण कीधो । तिवारे धर्म घणो अनें उपवास रो धर्म थोड़ो थयो । परं उपवास रो पाप नहीं ।

पाप तो महीना भांग्यां हुवे । ते महीनादिक उपवास ताईं तपस्या में दोष लगायो नहीं तिणसूं उपवास रो पाप नहीं । तिम ग्यारमें गुणठाणे निर्मल परिणाम था ते गुणठाणा री स्थिति भोगवी दशमें आयां थोड़ा निर्मल परिणाम. परं पाप नहीं । इम दशवां री स्थिति भोगवी नवमें आयां वली थोड़ा शुभ योग निर्मल, इम नवमा थी आठमे, आठमा थी सातमे, सातमा थी छठे आयां थोड़ा शुभ योग निर्मल छै । पिण अशुभ योग थी छठे नथी आया । ते किम सातमा थी आगे अणारम्भी शुभयोगी कह्या छै तिहाँ अशुभ योग छै इज नथी । तो आज्ञा बाहिरे किम कहिए । वली सूत्र पाठ लिखिये छै ।

तत्थणं जे ते संजया. ते दुविहा. प० तं० पमत्त-संजयाय, अपमत्तसंजयाय । तत्थणं जे ते अपमत्त संजया तेणं णो आयारंभा णो परारंभा जाव अणारंभा । तत्थणं जे ते पमत्त संजया ते सुहं जोगं पडुच्च णो आयारंभा. णो परारंभा जाव अणारंभा । असुहं जोगं पडुच्च आयारंभावि जाव णो अणारंभा ।

(भगवती. श० १ उ० १)

त० तिहां जे ते सं० संयमी. ते० ते. दु० बे प्रकारे प० कह्या. तं० ते कहै छै प० प्रमत्तसंयमी. अ० अप्रमत्तसंयमी त० तिहां. जे० जे ते अ० अप्रमत्त संयमी ते० ते णो० आरंभी नहीं. णो० परारंभी नहीं. जा० यावत्. अ० अनारम्भी त० तिहां जे ते प० प्रमत्त संयमी. सु० सुभयोग. प० प्रति अंगीकार करी ने णो० आत्मारंभी नहीं जा० यावत् अणारंभी अ० अशुभयोग मन वच काया करीने आ० आत्मारंभी परारंभी तदुभयारंभी यावत् णो० अनारंभी नहीं.

अथ इहां अप्रमादी साधुने अनारंभी कह्या छै । ते माटे सातमा थी आगे अप्रमादी छै तेहने अशुभ योग तो नथी तो अशुभ योग थी छठे किम आवे अनें छठे गुणठाणे शुभ योग आश्री तो अनारंभी कह्या छै, ते शुभ योग वर्तें तेहथी तो हेठे पड़े नहीं । अनें अशुभ योग आश्री आरंभी कह्या छै, ते अशुभ योग थी दोष लागे छै । छठा गुण ठाणा थी विपरीत श्रद्धयां प्रथम गुणठाणे आवे पिण

ग्यारमा थी प्रथम गुणठाणे न आवे, अनें ग्यारमा थी प्रथम गुणठाणे आवे— इम कहे ते मृषावादी छे। ए तो पाधरो न्याय छे, जिम छठे गुणठाणे अशुभ योग वर्त्यां दोष लागे हेठो पड़े तिम प्रथम गुणठाणे शुभयोग वर्त्यां कर्म निर्जरा करतां ऊंचो चढ़ि सम्यग्दृष्टि पावे छे। तामली पूर्णादिक शुभ करणी तपस्या थी घणा कर्म खपाया ए तो चौड़े दीसे छे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १७ बोल सम्पूर्ण।

वली असोच्चा केवलीने अधिकारे तपस्यादिक भली करणी करतां सम्यग्दृष्टि पावे एहवो कह्यो छे। ते सूत्र पाठ लिखिये छे।

तस्सणं भंते! छट्ठं छट्ठेणं अनिखित्तेणं. तवोकम्मेणं, उड्ढं वाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स आयावण भूमीए, आयावेमाणस्स पगइ भद्दयाए. पगय उवसंतयाए. पयइ पगणू कोह माण माया लोभयाए. मिउमद्दव संपन्नयाए अल्लीणयाए भद्दयाए. विणीययाए अन्नया कयाइं सुभेणं अज्झवसाणेणं. सुभेणं परिणामेणं. लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं. तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोह मग्गणगवेसणं करेमाणस्स विभंगे नामं अन्नाणे समुपज्जइ सेणं तेणं विभंगनाण समुप्पन्नेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं असंखेज्जाइं जोअण सहस्साइं जाणइ पासइ सेणं तेणं विभंगनाणेणं समुप्पन्नेणं जीवेविजाणइ अजीवेविजाणइ पासंडत्थेसारम्भे सपरिग्गहे साकल-

स्समाणेवि जाणइ विसुज्झमाणेवि जाणइ सेणंपुव्वामेव सम्मत्तं पड़िवज्जइ. समण धम्मं रोएइ २ चरित्तं पड़िवज्जइ २ लिंगं पड़िवज्जइ. ।

(भगवती श० ६ उ० १)

स० ते श्रमण सांभल्यां केवल ज्ञान प्रति उपार्जे तेहने हे भगवन्त ! छ० छठे छठे अणि० निरन्तर स० तप करे एतले छठ तपवन्त बाल तपस्वी ने विभंगनाण उपजे ए जाणववानें ऊ० ऊंचा बाहुप्रति प० धरी ने. सू० सूर्यने सन्मुख साहमें मुखइं आ० आतपनानी भूमि ने विषे आ० आतपना लेता ने. प० प्रकृति भद्रक पणा थी. प० प्रकृति स्वभावइ उ० उपशान्त पणा थी प० स्वभावे प० स्तोक छे क्रोध मान माया लोभ तेणें करीने मि० मृदुमार्दव तेणें करी सम्पन्न पणा थी अ० इन्द्री ने गोपवा थी भ० भद्रक पणा थी वि० विनीत पणा थी. अ० एकदा प्रस्ताव ने विषे सु० शुभ अध्यवसाय करीने. सु० भले प० परिणामें करीने. ले० लेश्याने वि० विशुद्ध माने करी शुद्ध लेश्याइं करी त० विभंग ज्ञानावरणीय कर्मनो ख० क्षयोपशम छतइं इ० अर्थ चेष्टा ज्ञान सन्मुखविचारणा अपे० धर्मध्यान बीजा पक्ष रहित निर्णय करतो म० धर्मनी आलोचना ग अधिक धर्मनी आलोचना करतां छते वि० विभंग णा० नामे अ० अज्ञान स० उपजई से० ते बाल तपस्वी तेणे विभंग णा० नामे स. उपजवे करीने ज० जघन्य अ० अंगुल नो असंख्यात मो भाग उ० उत्कृष्टो अ० असंख्याता योजन ना सहस्र ने जा० जाण पा० देखे से० ते बाल तपस्वी ते० तेणे विभंगअज्ञान स० उपनें छतइ जी० जीवप्रति जा० जाणें अजीव प्रति पिण जा० जाणे पा० पाषंडी नें आरंभ सहित तप परिग्रह सहित जाणे स० ते० महा क्लेशे करी ने क्लेश मान थका जाणइं वि० थोड़ी विशुद्ध ताई करी ने विशुद्ध मान थका जाणइं से० ते विभंग अज्ञानी चारित्र प्रति पत्ति थकी पूर्वे स० सम्यक्त्व प्रति पडिवज्जे, सम्यक्त्व पडिवज्जां पछे स० श्रमण धर्म नी रो० रुचि करे श्रमण धर्म नी रुचि हुआ पछे । च० चारित्र पड़िवज्जे च० चारित्र पडिवज्जां पछे. लि० लिंग पडिवज्जे ।

अथ इहां असोच्चा केवली ने अधिकारे इम कह्यूं जे कोई बालतपस्वी साधु श्रावक पासे धर्म सुण्यां विना बेले २ तप करे, सूर्य साहमी आतापना लेवे, ते प्रकृति भद्रीक विनीत उपशान्त स्वभावे पतला क्रोध मान माया लोभ मृदु कोमल अहंकाररहित एहवा गुण कह्या । ए गुण शुद्ध छै के अशुद्ध छै, ए गुण निरवद्य छै के सावद्य छै, ते एहवा गुणां सहित तपस्या करतां घणा कर्मक्षय कीया । तिवारे एकदा प्रस्तावे शुभ अध्यवसाय शुभ परिणाम, अत्यन्त विशुद्ध लेश्या. आयां

विभङ्ग ज्ञानावरणीय कर्म रो क्षयोपशम करे, इहां शुभ अध्यवसाय शुभ परिणाम विशुद्ध लेश्या थी कर्म खपाया। ए शुद्ध करणी थी कर्म खपाया के अशुद्ध करणी थी कर्म खपाया। ए भला परिणाम विशुद्ध लेश्या सावद्य छै के निरवद्य छै शुभ योग छै के अशुभ योग छै आज्ञामें छै के आज्ञाबाहिरे छै। इहां विशुद्ध लेश्या कही ते भाव लेश्या छै। द्रव्य लेश्याथी तो कर्म खरे नहीं द्रव्य लेश्या तो पुद्गल अठफर्शी छै ते माटे। अने कर्म खपाया ते धर्मलेश्या जीव ना परिणाम छै तेहथी कर्म क्षय हुवे छै। तैजस (तेजू) पद्म शुक्ल ए तीन भली लेश्या छै ते विशुद्ध लेश्या कही छै। अनें उतराध्ययन अ० ३४ गाथा ५७ ए तीन भली लेश्याने धर्मलेश्या कही छै। अनें इहां बालतपस्वी विशुद्ध लेश्याथी कर्म खपाया ते धर्मलेश्याथी खपाया छै अधर्म लेश्याथी तो कर्म क्षय हुवे नहीं। अने धर्मलेश्या तो आज्ञामें छै तेहथी कर्म खपाया छै। वली "ईहापोह मग्गण गवेसणं करे माणस्स" ए पाठ कह्या "ईहा" कहितां भला अर्थ जाणवा सन्मुख थयो "अपोह" कहितां धर्मध्यान बीजा पक्षपात रहित "मग्गण" कहितां समूचे धर्मनी आलोचना "गवेसणं" कहितां अधिक धर्मनी आलोचना ए करतां विभंग अज्ञान उपजे। इहां तो धर्मज्ञान धर्मनी आलोचना अधिक धर्मनी आलोचना प्रथम गुण ठाणे कही तो धर्मनी आलोचना ने अने धर्मध्यान नें आज्ञा बाहिरे किम कहिये एतो प्रत्यक्ष आज्ञामाहि छै। पछै विभंग अज्ञान थी जघन्यअंगुलने असंख्यातमे भाग जाणीने देखे। उत्कृष्टो असंख्यात हजार योजन जाणीने देखे ते विभंग अज्ञाने करी जीव अजीव जाण्या। तिवारे सम्यग्दृष्टि पामे सम्यग्दृष्टि पामतां विभंग रो अवधि हुवे। पछे चारित्र लेइ लिङ्ग पड़िवज्जे। एतले गुणा री प्राप्ति थई ते निरवद्य करणी करतां सम्यग्दृष्टि अने चारित्र पाम्या छै। जो अशुद्ध करणी हुवे तो सम्यग्दृष्टि अनें चारित्र किम पामे इणे आलावे चौड़े कह्यो प्रथम तो वेलेर तप सूर्यनी आतापना मृदु कोमल उपशान्त निर-हंकार सगुण कह्या पछे शुभ परिणाम शुभ अध्यवसाय विशुद्ध लेश्या कही, वली "अपोहलो" अर्थ धर्मध्यान कह्यो, धर्म नी आलोचना कही एहवा उत्तम गुण कह्या तेहने अवगुण किम कहिए। एहवा गुणा करी सम्यक्त्व पाम्यां एहवो कह्यो तो त्यां गुणा ने आज्ञा बाहिरे किम कहिये। जो ए बाल तपस्वी बेले २ तप न करतो तो एतला गुण किम प्रकटता अने यां गुणा विना शुद्ध अध्यवसाय भला परिणाम भली लेश्या किम आवती। अने यां गुणा विना धर्म ध्यान न ध्यावतो भली विचा-

रणा न आवतीं तो सम्यग्दृष्टि किम पामतो । ते माटे ए करणी थी सम्यग्दृष्टि पामी ते करणी शुद्ध आज्ञा मांहिली छै एहवी शुद्ध करणीने आज्ञा वाहिरे कहे ते आज्ञा वाहिरे जाणवा । केतला एक जोव प्रथम गुण ठाणे धर्म ध्यान न कहे छै, अनें इहां बाल तपस्वीने धर्मध्यान कह्यो छै, वली धर्मनी आलोचना कही छै तिवारे कोई कहे ए धर्मध्यान अर्थमें कह्यो छै पिण पाठमें न कह्यो तेहनो उत्तर—"ए अपोह" नो अर्थ धर्म ध्यान पक्षपात रहित एहवूं कह्यूं ते अर्थ मिलतो छै। वली विशुद्ध परिणाम विशुद्ध लेश्या कही छै, विशुद्ध लेश्या कहिवे तैजस (तेजू) पद्म शुक्ल लेश्या प्रथम गुण ठाणे कहिणी । अनें उत्तराध्ययन अ० ३४ गा० ३१ शुक्ल लेश्या ना लक्षण कह्या छै ।

"अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता-धम्मसुक्काइ झायए ।"

इहां कह्यो आर्त्तरुद्र ध्यान वरजे-और धर्मशुक्ल ध्यान ध्यावे ए शुक्ल लेश्या ना लक्षण कह्या ते शुक्ल ध्यान तो ऊपरले गुण ठाणे छै अने प्रथम गुण ठाणे शुक्ल लेश्या वर्त्ते ते वेलां आर्त्तरुद्र ध्यान तो वर्ज्यो छै अनें धर्मध्यान पावे छै एतो पाठमें शुक्ल लेश्या ना लक्षण धर्मध्यान कह्या । ते माटे प्रथम गुण ठाणे शुक्ल लेश्या पिण पावे छै ज्ञान नेत्रे करि विचारि जोइजो । वली एहनों न्याय दृष्टान्ते करी दिखाड़े छै ।

जिम एक तलाव नों पाणी एक घड़ो तो ब्राह्मण भर ले गयो । अनें एक घड़ो भंगी भर ले गयो भंगी रा घड़ामें भंगी रो पाणो वाजे । अनें ब्राह्मण रा घड़ा में ब्राह्मण रो पाणी वाजे पिण पाणी तो मीठो शीतल छै भंगीरा घड़ामें आयां खारो थयो नथी तथा शीतलता मिटी नहीं पाणी तो तेहिज तलाव नों छै पिण भाजन लारे नाम बोलवा रूप छै । तिम शील. दया क्षमा. तपस्यादिक रूप पाणी ब्राह्मण समान सम्यग्दृष्टि आदरे । भंगी समान मिथ्यादृष्टि आदरे तो ते तप शील दया. नों गुण जाव नहीं । जिम पाणी ब्राह्मण तथा भंगी रो वाजे पिण पाणी मीठा में फेर नहीं पाणी मीठो एक सरीखो छै । तिम मिथ्यादृष्टि शीलादिक पाले ते मिथ्यादृष्टि री करणी वाजे । सम्यग्दृष्टि शीलादिक पाले ते सम्यग्दृष्टि री करणी वाजे । पिण करणी दोनूं निर्मल मोक्ष मार्ग नी छै । पाप रूप आताप नी

मेटणहारी छै। पुण्य रूप शीतलताई नी करणहारी छै। ते करणी आज्ञा माहि छै तेहनी आज्ञा साधु प्रत्यक्ष देवे छै। जे मिथ्यादृष्टि साधु ने पूछे हूं सुपात्र दान देवूं, शील पालूं, बेला तेलादिक तप करूं। जब साधु तेहने आज्ञा देवे के नहीं, जो आज्ञा देवे तो ते करणी आज्ञा माहीज थई। अने जे आज्ञा बाहिरे कहे. तेहने लेखे तो आज्ञा देणी हो नहीं। अशुद्ध आज्ञा बाहिरे हुवे तो ते करणी कराचणी नहीं मुखसूं तो आज्ञा देवे छै जे तूं शीलपाल म्हारी आज्ञा छै इम आज्ञा देवे छै। अनें वली इम पिण कहे ए करणी आज्ञा बाहिरे छै इम कहे ते आपरी भाषा रा आप अजाण छै जिम कोई कहे म्हारी माता बांझ छै ते सरीखा मूर्ख छै.! माहरी माता छै इम पिण कहे अने बांझ पिण कहे, तिम आज्ञा पिण ते करणी री देवे, अने आज्ञा बाहिरे पिण कहे, ते महा मूर्ख जाणवा। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १८ बोल सम्पूर्ण।

वली शुद्ध करणीनी आज्ञा तो ठाम २ सूत्रमें चाली छै। "रायपसेणी" सूत्रमें सूर्याभ ना. "अभिओगिया" देवता भगवान्ने वांद्या तिवारे भगवान् आज्ञा दीधी छै ते सूत्रपाठ कहे छै।

जेणेव आमलकप्पाए णयरी जेणेव अंबसालवणे चेइये जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति २ त्ता वंदइ नमंसइ. २ त्ता एवं वयासी. अम्हेणं भंते! सूरियाभस्स देवस्स अभिओगिया देवा देवाणुप्पियं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो। देवाइ समणे भगवं महावीरे ते देवे एवं वयासी-पोराण

मेयं देवा ! जीय मेयं देवा ! किच्च मेयं देवा ! करणिज्ज मेयं देवा ! आचिरण मेयं देवा ! अब्भणुण्णाण मेयं देवा !

(राय पसेणी-देवताऽधिकार)

जे० जिहां आ० आमलकपा नगरी जे० जिहां अवसाल चे० चैत्यवाग जे० जिहां स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० तिहां उ० आवे आवीनें स० श्रमण भ० भगवान् म० महावीरने ति० तीन वार आ० जीमणा पासा थी प० प्रदक्षिणा क० करे करीनें वं० वांदे न० नमस्कार करे करीनें ए० इम बोले अ० अम्हे भं० हे भगवान् ! सू० सूर्याभ देव ना आ० अभियोगिया देवता दे० देवानुप्रिय तु० तुम्हैंप्रति व० वांदां ण० नमस्कार करां स० सत्कार देवां स० सन्मान देवां क० कल्याणकारी म० मंगलीक दे० तीनलोकना अधिपति चे० भला मन ना हेतु ते माटे चैत्य प० तुम्हारी सेवा करां तिवारे दे० हे देवां ! स० श्रमण भ० भगवन्त म० महावीर ते० ते देव प्रते ए० इम बोल्या पो० जूनो कार्य तुम्हारू ए० ए दे० हे देवां ! जी० जीत आचार तुम्हारू हे देवां ! क० ए कर्त्तव्य तुम्हारूं हे देवां ! आ० ए तुम्हारू आचरण हे देवां ! अ० म्हैं अने अनेरे तीर्थंकरे अनुज्ञा दीधी आज्ञा दीधी हे देवां !

इहां कह्यो—सूर्याभ ना अभियोगिया देवता भगवान्ने वंदना नमस्कार कियो तिवारे भगवान् बोल्या । ए वन्दनारूप तुम्हारो पुराणो आचार छै ए तुम्हारो जीत आचार छै. ए तुम्हारो कार्य छै. ए वंदना करवा योग्य छै. ए तुम्हारो आचरण छै ए वंदनारी म्हारी आज्ञा छै। इहां तो भगवान् कह्यो म्हारी आज्ञा छै—तो तिम करणीने आज्ञा वाहिरे किम कहिये, इम सूर्याभे भगवन्त वांद्या तेहने पिण आज्ञा दीधी। अने सूर्याभे नाटक नो पूछ्यो तिवारे मौन साधी पिण आज्ञा न दीधी तो ए नाटकरूप करणी सम्यग्दृष्टि री पिण आज्ञा वाहिरे छै। अने वंदनारूप करणी री सूर्याभ सम्यग्दृष्टि ने भगवन्त आज्ञा दीधी। तिमज तेहना अभियोगिया ने पिण आज्ञा दीधी छै। तो ते करणी आज्ञा वाहिरे किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १६ बोल सम्पूर्ण ।

वली स्कंदक सन्यासीने प्रथम गुणठाणे छतां भगवान् ने वंदना करण री गौतम स्वामी आज्ञा दीधी ते पाठ लिखिये छै ।

तएणं से खंदए कच्चायण गोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—गच्छामोणं गोयमा ! तव धम्मायरियं धम्मोवदेसयं समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव पज्जुवासामो अहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिवंधं करेह।

(भगवती श० २ उ० १)

त० तिवारे से० ते खं० स्कन्दक का० कात्यायन गोत्री छईने भ० भगवत् गौतमने ए० इम कहै ज० जईइं हे गौतम ! त० तुम्हारा धर्माचार्यप्रति धर्मोपदेशक स० श्रमण भगवन्त महावीर प्रति व वांदां ण० नमस्कार करां जा० यावत् प० सेवा करां जिम सुख हे देवानुप्रिय ! मा० प्रतिवन्ध अन्तराय व्याघात मत करो।

अथ अठे स्कंदके कह्यो हे गौतम ! तांहरा धर्माचार्य भगवान् महावीर नें वांदां यावत् सेवा करां। तिवारे गौतम वोल्या—जिम सुख होवे तिम करो हे देवानुप्रिय ! पिण प्रतिवन्ध विलम्ब (जेज) मत करो। इसी शीघ्र आज्ञा वंदना नी दीधी तो ते वंदना रूप करणी प्रथम गुण ठाणा रो धणी करे, तेहने आज्ञा वाहिरे किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २० बोल सम्पूर्ण।

तिवारे कोई कहे इहां तो जिम सुख होवे तिम करो इम कह्यो पिण आज्ञा न दीधी। तेहनो उत्तर—स्कन्दक दीक्षा लियां पछे तपस्या नी आज्ञा मांगी तिहां एहवो पाठ छे।

इच्छामिणं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुराणाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए अहासुहं देवाणु-

प्पिया मापडिबंधं तएणं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुणाए समाणे हट्ठतुट्ठे ।

(भगवती श० २ उ० १)

इ० वांछूं छूं भ० हे भगवन्त तु० तुम्हारी आज्ञाइं करीने मा० मास नीं परिमाण भि० भिक्षुने योग्य प्रतिमा अभिग्रह विशेष ते प्रति अंगीकार करीनें वि० विचरवूं तिवारे भगवान् कह्यो अ० जिम सुख उपजे तिम करो दे० हे देवानुप्रिय ! मा० प्रतिबंध व्याघात मत करस्यो त० तिवारे ते स्कंदक अणगार स० श्रमण भगवन्त म० महावीर देव अ० एहवी आज्ञा आपे थकें ह० हर्ष पाम्या तोष पाम्या ।

इहां कह्यो स्कंदके तपस्या नी आज्ञा मांगी तिवारे "अहासुहं" एहवो पाठ कह्यो ते आज्ञा रो पाठ छै । तिम स्कंदके वीर वंदन री धारी तिवारे गौतम पिण "अहासुहं" एहवो पाठ कह्यो ते आज्ञा रो पाठ छै । ते वंदना करण री आज्ञा दीधी छै । तथा "पुष्फ चूलिया" उपंगे भूतादारिका ने माता पिता पार्श्वनाथ भगवंत ने कह्यो । ए भूता वालिका संसार थी भय पामी ते माटे तुम्हाने शिष्यिणी रूप भिक्षा देवां छां । ते आप ल्यो तिवारे भगवान् "अहासुहं" पाठ कह्यो छै ते लिखिये छै ।

"तं एयणं देवाणुप्पिये सिस्सिणी भिक्खं दलयंति पडिच्छंतुणं देवाणुप्पिया सिस्सिणी भिक्खं ! अहासुहं देवाणुप्पिया ।"

इहां पिण दीक्षा ना आज्ञा ऊपर "अहासुहं" पाठ कह्यो—तिम स्कन्दक सन्यासी ने पिण गौतमे "अहासुहं" पाठ कह्यो. ते आज्ञा दीधी छै । ए तो ठाम २ शुद्ध करणी नी आज्ञा चाली तेहने अशुद्ध आज्ञा वाहिरे कहे ते सिद्धान्त रा अजाण छै । ए तो प्रत्यक्ष पाठमें आज्ञा चाली ते पिण न मानें ते गूढ मिथ्यात्व रा धणी अन्यायवादी जाणवा । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २१ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली तामली तापस नी अनित्य जागरणा कही छै। ते पाठ प्रते लिखिये छै।

तएणं तस्स तामलिस्स वालतवस्सिस्स अएणयाकयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाल समयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमे या रूवे अज्झत्थिए। चिन्तिए जावसमुप्पज्जित्था।

(भगवती श० ३ उ० १)

त० तिवारे त० ते ता० तामली वा० वाल तपस्वीने अ० एकदा समयने विषे पु० मध्य रात्री ना कालने विषे अ० अनित्य जागरणा जा० जागता थके इ० एतदा रूप एहवो अ० अध्यात्म जा० यावत् एहवो चित्त में भाव उपज्यो।

अथ इहां तामली वाल तपस्वी री अनित्य चिन्तवना कही छै। ए संसार अनित्य छै एहवी चिन्तवना ते तो शुद्ध छै। निरवद्य छै तेहने सावद्य किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २२ बोल सम्पूर्ण।

तथा वली सोमल ऋषि नी अनित्य चिन्तवना कही छै ते पाठ लिखिये छै।

तत्तेणं तस्स सोमिलस्स माहणरिसिस्स. अएणया-कयाइं पुव्वरत्तावरत्त काल समयंसि. अणिच्च जागरियं जागर माणस्स इमे वा रूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

(पुष्फियोपाङ्ग अ० ३)

त० तिवारे त० ते सो० सोमिल ब्राह्मण ऋषिने अ० एकदा प्रस्तावे पु० मध्य रात्रि ना काल ने विषे अ० अनित्य जागरणा जा० जागते थके इ० एहवा. अ० अध्यवसाय जा० यावत् स० ऊपना.

अथ इहां सोमल ऋषि नी अनित्य चिन्तवना कही ए अनित्य चिन्तवना शुद्ध करणी छै निरवद्य छै तेहनें आज्ञा बाहिरे किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २३ बोल सम्पूर्ण ।

अत्र कोई कहै—ए अनित्य चिन्तवना आज्ञा बाहिरे छै, अशुद्ध छै सावद्य छै निरवद्य हुवे तो धर्म जागरण कहिता । साधु श्रावक री किहांइ अनित्य चिन्तवना कही हुवे तो बताओ । ते ऊपर वली भगवान् री अनित्य चिन्तवना रो पाठ लिखिये छै ।

तएणं अहं गोयमा ! गोसाले णं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं पणिय भूमीए । छव्वासाइं लाभं अलाभं सुहं दुक्खं सक्कारं असक्कारं अणिच्चजागरियं विहरित्था ।

(भगवती शतक १५)

त० तिवारे अ० हूं गो० हे गौतम ! गो० गोशाला मखलिपुत्र स० सघाते प० प्रणीत भूमिका ने आरम्भी नें छ० छव वर्ष लगें ला० लाभ प्रति अ० अलाभ प्रति सु० सुख प्रति दु० दुःख प्रति स० सत्कार प्रति अ० असत्कार प्रति अ० अनित्य छै सर्व एहवी चिन्ता करतां थकां वि० विहार करू छूं ।

अथ अठे भगवान् कह्यो—हे गौतम ! मैं गोशाला साथे छव वर्ष ताई लाभ अलाभ सुख दुःख सत्कार असत्कार भोगवतो. हूं अनित्य चिन्तवना करतो विचर्यो तिहां छद्मस्थ पणे भगवान् री अनित्य चिन्तवना कही । तो ए अनित्य चिन्तवना ने आज्ञा बाहिरे, किम कहिए । ए तो अनित्य चिन्तवना शुद्ध निरवद्य आज्ञा माहें छै । तिणसूं भगवान् पिण अनित्य चिन्तवना कीधी । अने अनित्य चिन्तवना ने अशुद्ध आज्ञा बाहिरे कहे आर्त्त रुद्र ध्यान कहे । तेहने लेखे तो ए अनित्य चिन्तवना भगवान् में करणी नहीं । पिण अनित्य संसार छै एहवी चिन्त-

वना तो धर्म ध्यान रो भेद छै। ते माटे आज्ञा माहे छै अनें भगवान् पिण ए अनित्य चिन्तवना करी छै। जो अशुद्ध हुवे तो ए चिन्तवना भगवान् करे नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २४ बोल सम्पूर्ण।

तिवारे कोई एक कहे—अनित्य चिन्तवना धर्म ध्यान रो भेद किसा सूत्रमें कह्यूं छै तेहनो पाठ कहे छे।

धम्मस्सणं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहा. प० तं०. अणिच्चाणुप्पेहाए असरणाणुप्पेहाए, एगत्ताणुप्पेहाए संसाराणुप्पेहाए।

(उवाई सूत्र)

ध० धर्मध्यान नी चार अनुप्रेक्षाविचारणा चित्त माही चिन्तन रूप प० कह्या तं० ते कहै छै। अ० ए सांसारिक सर्व पदार्थ अनित्य छै। एहवी विचारणा चिंतन १ अ० संसार माही कोई केहने शरण नथी एहवी विचारणा चिंतन २ ए० ए जीव एकलो आयो एकलो जास्ये एहवी विचारणा चिन्तन ३ सं० संसार गति आगति रूप फिरवो छै ४।

इहां धर्म ध्यान नी ४ अनुप्रेक्षा ते चिन्तवना कही। तिहां पहिली अनित्यानुप्रेक्षा ए संसार अनित्य छै एहवी चिन्तवना करे ते अनित्यानुप्रेक्षा कहिए। इहां तो अनित्य चिन्तवना धर्मध्यान रो भेद कह्यो तो ए अनित्य चिन्तवना ने आज्ञा बाहिरे किम कहिए। ए अनित्य चिन्तवना भगवान् चिन्तवी। वली अनित्य चिन्तवना धर्म ध्यान रो भेद चाल्यो, तेहिज अनित्यचिन्तवना तामली सोमल-ऋषि, प्रथम गुणठाणे थके कीधी। तेहने अधर्म किम कहिये। ए धर्म ध्यान रो भेद आज्ञा बाहिरे किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ५

इति २५ बोल सम्पूर्ण।

वली बाल तप. अकाम निर्जरा ने आज्ञा माही कह्या ते पाठ लिखिये छै ।

मणुस्साउयकम्मा सरीर पुच्छा. गोयमा ! पगइ भद्दयाए. पगइ विणीययाए. साणुक्कोसणयाए. अमच्छरियत्ताए. मणुस्साउयकम्मा जावप्पओगबंधे. देवाउयकम्मा. शरीर पुच्छा गोयमा ! सराग संजमेणं. संजमासंजमेणं. बालतवो कम्मेणं. अकामणिज्जराए. देवाउयकम्मा सरीर जावप्पओगबंधे ।

(भगवती शतक ८ उ० ९)

म० मनुष्यां ना आयु कर्म शरीर नी पृच्छा हे गौतम ! प० स्वभावे भद्रकपणू परने परितापे नहि प० स्वभावे विनीत पणे करीने सा० दयाने परिणामे करीने अ० अणमच्छरता तेणे करीने म० मनुष्य नू आयु कर्म यावत् प्रयोगबध हुइं दे० देवता ना आयु कर्म शरीर नी पृच्छा हे गोतम ! सराग संयमे करीने स० संयमासंयम ते दे० देशव्रती तेणे करीने बा० बाल तप करवे करीने अ० अकाम निर्जराइ दे० देवता नू आयु कर्म नाम शरीर यावत् प्रयोग बंध हुइं ।

अथ इहां चार प्रकारे मनुष्य नो आयुषो बंधे कह्यो । जे प्रकृति भद्रीक. विनीत. दयावान्. अमत्सर भाव ए चार करणी शुद्ध छै, आज्ञा माहि छे। ए तो दयादिक परिणाम साम्प्रत आज्ञामें छै। तेहने आज्ञा बाहिरे किम कहिए। अनें मनुष्य तिर्यञ्चरे मनुष्य रो आयुषो बंधे। ते तो च्यार कारणे करि बंधे छै। ते तो मनुष्य तिर्यञ्च प्रथम गुण ठाणे छै। सम्यग्दृष्टि मनुष्य तिर्यञ्च रे वैमानिक रो आयुषो बंधे ते माटे। अनें जे दयादिक परिणाम अमत्सर भाव आज्ञा बाहिरे कहे तो तेहने लेखे हिंसादिक परिणाम मत्सर भाव आज्ञामें कहिणो। अनें जो हिंसादिक परिणाम मत्सर भाव कपटाई आज्ञा बाहिरे कहे तो दयादिक परिणाम अमत्सर भाव सरल पणो आज्ञामें कहिणो। ए तो पाधरो न्याय छै। वली सराग संयम १ संयमासंयम ते श्रावक पणो २ बाल तप ३ अकाम निर्जरा ४ ए चार कारणे करी देव आयुषो बंधें। इम कह्यो तो ए ४ च्यार कारण शुद्ध के अशुद्ध, सावद्य छै के निरवद्य छै, आज्ञामें छै के आज्ञा बाहिरे छै। ए तो चार करणी शुद्ध आज्ञा

माहिली सूं देव आयुषो बंधे छे। अनें जे बालतप अकाम निर्जरा. ने आज्ञा बाहिरे कहै—तेहने लेखे सरागसंयम. संयमासंयम. पिण आज्ञा बाहिरे कहिणा। अनें जो सरागसंयम संयमा संयम ने आज्ञामें कहे तो बालतप. अकाम-निर्जरा. ने पिण आज्ञा में कहिणा। ए बालतप. अकामनिर्जरा. शुद्ध आज्ञा माहि छै ते माटे सरागसंयम संयमासंयम. रे भेला कह्या। जो अशुद्ध होवे तो भेला न कहिता। अनें जे सरागसंयम. संयमासंयम. तो आज्ञामे कहे। अने बालतप अकाम निर्जरा आज्ञा बाहिरे कहे ते आप रा मन सूं थाप करे, ते अन्यायवादी जाणवा। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २६ बोल सम्पूर्ण।

वली गोशाला रे पिण एहवा तपना करणहार स्थविर कह्या छै। ते पाठ लिखिये छै।

आजीवियाणं चउव्विहे तवे प० तं० उग्गतवे. घोर तवे. रसनिज्जुहणया. जिब्भिंदिय पडिसंलीणया.।

(ठाणांगठाणा ४ उ० २)

आ० गोशाला ना शिष्यनें चा० चार प्रकारनो तप प० परूप्यौ. तं० ते कहे छै। उ० इह लोकादिकनी वांछा रहित शोभनतप १ घो० आत्मानी अपेक्षा रहित तप २ र० घृतादिक रसनों परित्याग ३ जि० मनोज्ञ अमनोज्ञ आहारनें विषे रागद्वेष रहित ४।

अथ गोशाला रे स्थविर एहवा तपना करणहार कह्या छै। उग्र तप १ घोर तप २ रसना त्याग ३ जिह्वेन्द्रिय वशकीधी ४। तेहनो खोटी श्रद्धा अशुद्ध छै पिण ए तप अशुद्ध नहीं ए तप तो शुद्ध छै आज्ञा मांहि छै। ए जिह्वेन्द्रिय प्रति संलीनता तो "भगवन्ते बारह भेद निर्जराना कह्या": तेहमे कही छे। उवाई मे प्रति संलीनता ना ४ भेद किया। इन्द्रियप्रतिसंलीनता १ कषायप्रति संलीनता २ योगप्रति संली-

नता ३ विविक्त सयणासणसेवणया ४। अनें इन्द्रिय प्रतिसंलीनता ना ५ भेदा में रस इन्द्रियप्रति संलीनता "निर्जरा ना वारह भेद चाल्या" ते मध्ये कही छै। ते निर्जरा ने आज्ञा बाहिरे किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २७ बोल सम्पूर्ण।

वली बीजे संवरद्वार प्रश्न व्याकरण में श्रीवीतरागे सत्य वचन ने घणो प्रशंस्यो छै ते सत्य निरवद्य आज्ञा माही छै। तिहां एहवो पाठ छै।

अणेग पासंड परिग्गहियं. जं तिलोकम्मि सारभूयं गंभीरतरं महासमुद्दाओ थिरतरगं मेरु पव्वआओ।

(प्रश्न व्याकरण संवरद्वार २)

अ० अनेक पाषंडी अन्य दर्शनी तेणे प० परिग्रह्यो आदर्यो। ज० जे त्रिलोक माही सा० सारभूत प्रधान वस्तु छै। तथा गं० गाढ़ोगभीर अक्षोभित थकी म० महासमुद्र थकी एहवा सत्यवचन थि० स्थिरतरगाढ़ो मे० मेरुपर्वत थकी अधिक अचल।

इहां कह्यो—सत्यवचन साधुने आदरवा योग्य छै। ते साथ अनेक पाषंडी अन्य दर्शनी पिण आदस्यो कह्यो ते सत्यलोकमें सारभूत कह्यो। सत्य महासमुद्र थकी पिण गम्भीर कह्यो मेरु थकी स्थिर कह्यो एहवा श्रीभगवन्ते सत्यने वखाणयो। ते सत्यने अन्यदर्शनी पिण धास्यो। तो ते सत्यने खोटो अशुद्ध किम कहिये। आज्ञा बाहिरे किम कहिये। आज्ञा बाहिरे कहे तो तेहनी ऊंधी श्रद्धा छै पिण निरवद्य सत्य श्री वीतरागे सरायो ते आज्ञा बाहिरे नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २८ बोल सम्पूर्ण।

वली जीवाभिगमे जम्बूद्वीप नी जगतीने ऊपर पद्मवर वेदिका अने वनखंडने विषे वाणव्यन्तर क्रीड़ा करे तिहां एहवा पाठ कह्या छै।

तत्थणं वाणमन्तरा देवा देवीओय आसयंति. सयन्ति. चिट्ठंति. णिसीयंति. तुयट्टंति. रमंति. ललंति. कोलंति. मोहन्ति. पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरिक्कंताणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणं फलवित्ति विशेषपच्चणुब्भवमाणा विहरंति।

(जम्बूद्वीप पन्नत्ति)

त० तिहां वा वाणव्यन्तर ना देवी देवता अनें देवांगना आ० सुख पामी बसे छै। स० सूवे लांबी कायाइं चि० बैसे ऊंचा चढ़ीने णि० पासा पालटे छै तु० सखे सूवे र० रमे छै अक्षादिके ल० लीला करे छै को० क्रीड़ा करे छै मो० मैथुन सेवा करे पु० पूर्व भवना कीधा सु० सुचीर्णारूडा कीधा सु० सुपरिपक्व रूडा कीधा धर्मानुष्ठानादि क० कल्याणकारी क० कीधा क० कर्म क० कल्याण फलविपाक प्रते प० अनुभवतां भोगतां थकां वि० विचरे छै।

अथ अठे इम कह्यो। ते वनखंडने विषे वाण व्यन्तर देवता देवी बैसे सूवे क्रीडा करे। पूर्व भवे भला पराक्रम फोड़व्या तेहना फल भोगवे एहवा श्रीतीर्थंकर देवे कह्यो। तो जे वाण व्यन्तर में तो सम्यग्दृष्टि उपजे नहीं व्यन्तर में तो मिथ्यात्वीज उपजे छै। अनें जो मिथ्यात्वीरो पराक्रम सर्वअशुद्ध होवे तो श्रीतीर्थंकर देवे इम क्यूं कह्यो। जे वाण व्यन्तरे पूर्वभवे भला पराक्रम किया तेहना फल भोगवे छै। ए तो मिथ्यात्वी रा शील तपादिकने विषे भलो पराक्रम कह्यो छै। जो तिणरो पराक्रम अशुद्ध हुवे तो भगवन्त भलो पराक्रम न कहिता। ए तो भली करणी करे ते आज्ञा माहि छै ते माटे मिथ्यात्वीरो भलो पराक्रम कह्यो। ते व्यन्तर पूर्वले भवे मिथ्यादृष्टि पणे तप शीलादिक भला पराक्रमे करि व्यन्तर पणे ऊपना। ते भणी श्रीतीर्थंकरे व्यन्तर ना पूर्वना भवनो भलो पराक्रम कह्यो। ते भला पराक्रमरूप भली करणी ते आज्ञामाहि छै ते करणीने आज्ञा बाहिरे कहे ते महा मूर्ख जाणवा।

जे श्रीजिन आज्ञा ना अजाण छै ते प्रथम गुणठाणा रा धणी री शुद्ध करणीने अशुद्ध कहै, सावद्य कहै आज्ञा बाहिरे कहे संसार वधतो कहे। तेहने सावद्य निरवद्य आज्ञा अनाज्ञा री ओलखना नहीं तिणसूं शुद्ध करणीने आज्ञा बाहिरे कहे छै।

अनें श्रीवीतराग देव तो प्रथम गुण ठांणा रा धणी री निरवद्य करणी ठाम २ शुद्ध कही छे आज्ञामें कही छै ते करणी थी संसार घटायां संक्षेप साक्षीरूप केतला एक बोल कहे छै। भगवती श० ८ उ० १० सम्यक्त्व विना करणी करे तेहने देश आराधक कह्यो तथा ज्ञाता अ० १ मेघकुमारने जीवे हाथीभवे दया करी परीत संसार करी मनुष्य नो आयुषो बांध्यो कह्यो। (२) तथा सुख विपाक अध्ययन १ में सुमुखगाथापति सुदत्त अनगारने दान देय परीत संसारकरी मनुष्य नो आयुषो बांध्यो कह्यो। (३) तथा उत्तराध्ययन अ० ७ गा० २० मिथ्यात्वीने निर्जरा लेखे सुव्रती कह्यो। (४) तथा भगवती श० ३ उ० १ तामलीनी अनित्य चिन्तवना कही। (५) तथा पुष्फिया उपांगे अ० ३ सोमल ऋषिनी अनित्य चिन्तवना कही। (६) कोई अनित्य चिन्तवना ने अशुद्ध कहे तो भगवती श० १५ छद्मस्थपणे भगवन्तनी अनित्य चिन्तवना कही (७) तथा उवाई में अनित्य चिन्तावनाने धर्मध्यान रो तेरहमो भेदकह्यो (८) तथा भगवती श० ९ उ० ३१ असोच्चा केवलीने अधिकारे-प्रथम गुणठाणा रे धणी,रा शुभ अध्यवसाय शुभपरिणाम विशुद्धलेश्या धर्म री चिन्तवना. अनें अर्थमें धर्मध्यान कह्यो। (९) तथा जीवाभिगमे तथा जम्बूद्वीप पणत्ति में वाणव्यन्तर सुखपाम्या ते भलापराक्रमथी पाम्या कह्या। ते वाणव्यन्तर में मिथ्यादृष्टि इज उपजै छै। (१०) तथा ठाणाङ्ग ठाणा ४ उ० २ गोशाला रे स्थविरां रे ४ प्रकार रो तप कह्यो। उग्रतप. घोरतप. रसपरित्याग. जिह्वा इन्द्रिय पड़ि संलीनता। (११) तथा दश वैकालिक अ० १ में संयम. तप. ए विहूं धर्म कह्या (१२) तथा सूत्र रायपसेणीमें सूर्याभ ना अभियोगिया वीतरागने वंदना कीधी। ते वन्दना करण री आज्ञा भगवान् दीधी. (१३) तथा भगवती श० २ उ० १ भगवन्त ने वंदना करण री स्कंदक सन्यासी ने गौतम स्वामी आज्ञा दीधी। (१४) इत्यादिक अनेक ठामे निरवद्य करणी ने शुद्ध कही। ते करणी ने अशुद्ध कहे आज्ञा वाहिरे कहे ते एकान्त मृषावादी जाणवा। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २६ बोल सम्पूर्ण।

वली केतला एक अजाणजीव इम कहे—जे उवाई में कह्यो छै। मातापिता रा विनय थी देवता थाय। तो मातापिता रो विनय करे ते सावद्य छै आज्ञा

बाहिरे छै। पिण तिण सावद्य थी पुण्यबंधे अने देवता थाय छै। इम ऊंधी थाप करे तेहनो उत्तर। जे उवाई में घणा पाठ कह्या छै। हाथी मारी खाय ते हाथी तापस पिण मरी देवता थाय इम कह्यो। मृग तापस मृग मारी खाय ते पिण मरी देवता थाय इम कह्यो। तो जे हाथीतापस मृगतापस देवता थाय। ते हाथी मृग मारे तेहथी तो थावै नहीं। पुण्यबंधे ते तापसादिक में अनेरा शील तप आदिक गुण छै तेहथी तो पुण्यबंधे अनें देवता हुवे। तिम मातापिता नो विनय करे तेहवा जीवां में पिण और भद्रकादि भला गुणाथी पुण्यबंधे देवता थाय। पिण मातापिता री शुश्रूषा थी देवता हुवे नहीं। गुण थी देवता हुवे छै। तिहां एहवो पाठ कह्यो छै।

से जे इमे गामागर नगर जाव सन्निवेसेसु मणुआ भवंति—पगति भद्दका पगति उवसंता. पगति पत्तणु कोह माण माया लोभा मिउ मद्दव संपन्ना अल्लीणा वीणिया अम्मा पिओ उसुस्सुसका अम्मापित्ताणं अणतिक्कमणिज्जवयणा अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्प परिग्गहा अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समारंभेणं अप्पेणं आरंभ समारंभेणं वित्तिकप्पेमाणा बहूइं वासाइं आउयं पालंति पालित्ता कालमासे कालं किच्चा अनुत्तरेसु वाणमंतरेसु देवत्ताए उववत्तारो भवन्ति, तच्चेय सव्वंणवरं-ठिति चोद्दसवास सहस्साइं॥

(सूत्र उवाई प्रश्न ७)

से० ते जे० जे गा० ग्राम आगर नगर यावत् स० सन्निवेश ने विषे. म० मनुष्य हुवे छै (ते कहै छै) प० प्रकृति भद्रक कुटिलपणा रहित प० प्रकृति स्वभावे जे क्रोधादिक उपशाम्या छै। प० प्रकृति स्वभावे पतला की० क्रोधमान माया लोभ मूर्च्छारूप छै जेहनें मि० मृदुसुकोमल, म० अहकार नो जीतवो तेणेंकरी ने सहित अ० गुरु ना चरण आश्रीते रह्या वि० विनीत सेवा भक्ति ना करणहार अ० मातापिता ना सेवाभक्ति ना करण हार अ० मातापिता नो वचन कथन उल्लंघे नहीं ऊ० अल्पइच्छा मोटीवांछा जेहनें नहीं। अ० अल्पयोगे आरभ पृथिव्यादिक ना उपद्रव्य कर्षणादिक छै जेहने अ० अल्पथोड़ो परिग्रह धनधान्यादि कनी मूर्च्छा छै जेहने। अ० अल्पथोडो आरभ जीवनो विनाश जेहने तेणेंकरी अ० अल्प थोडो समारभ जीवने परितापनू

उपजाविवूं जेहनें छै तेणेकरी अ० अल्प थोडो जीवनो विनाश अनें समारंभ जीवनें परितापरूप छै जेहनें तेणेकरी वि० वृत्ति आजीविका क० करतां थकां ब० घणा वर्ष लगी आयुषो जीवितव्य-पाले एहवो आयुषो प्रतिपालीनें का० काल मरण ना अवसर ने विषे कालमरण करी नें अ० घणा ठाम छै तेमाही अनेरो कोई एक वा० व्यन्तरना देवलोक रहिवाना ठाम ने विषे दे० देवतापणे उ० उपपात सभाइं उपजीवो लहैं तं० गतिआयवो आयुषानो स्थिति उपपात सर्व पूर्वली परे. ए० एतलो विशेष ठि० स्थिति चौदह सहस्र वर्ष लगी हुइं ।

अथ इहां तो भद्रकादि घणा गुण कह्या । सहजे क्रोधमान मायालोभ पतला अल्प इच्छा अल्प आरंभ अल्प समारंभ एहवा गुणा करि देवता हुवे छै । तिवारे कोई कहे पतला गुणा में कह्या जे मातापिता रो वचन लोपे नहिं ए पिण गुणामें कह्यो ते गुणइज छै । पिण अवगुण नहीं । अवगुण हुवे तो गुणामें आणें नहीं । ए पिण गुणा में कह्यो । इम कहे तेहनो उत्तर—अहो महानुभावो ! ए गुण नहीं ए तो प्रतिपक्ष वचन छैं । जे इहां इम कह्यो सहजे पतला क्रोध मान माया लोभ, ए क्रोध-मान माया लोभ पतला थोड़ा ते तो अवगुणइज छै । थोड़ा अवगुण छै पिण क्रोधादिक तो गुण नहीं पिण प्रतिपक्ष वचने करि ओलखायो छै । पतला क्रोधादिक कह्या तिवारे जाडा क्रोधादिक नहीं, एगुण कह्या छै । वली कह्यो अल्प इच्छा अल्प आरंभ अल्प समारंभ ए पिण प्रतिपक्ष वचने करी ओलखायो छै । परं अल्प आरंभ अल्प समारंभ अल्प इच्छा कही । तिवारे इम जाणीइं जे घणी इच्छा नहीं ए गुण छै । एपिण प्रतिपक्ष वचने ओलखायो छै । तिम ए पिण कह्यो मातापिता रो विनीत मातापिता रो वचन लोपे नहीं. एपिण प्रतिपक्षे वचने करि ओलखायो छै जे मातापिता रा विनीत कह्या । तिवारे इम जाणीइं मातापिता रा अविनीत नहीं क्षुद्र नहीं अयोग्यता न करे कजियाखोड़ बथोकड़ा खंडखंड नहीं एगुण छै । एपिण प्रतिपक्ष वचन छै । अनें जो मातापिता रो विनीत तेहीज गुणथाय तो तिणरे लेखे अल्प इच्छा अल्प आरंभ अल्प समारंभ ए पिण गुण कहिणा । जिम थोड़ो आरंभ कह्यां घणों आरंभ नहीं इम जाणीइं । तिम मातापिता रा विनीत कह्यां अविनीत कजियाखोड नहीं इम जाणिये । अणे जो मातापिता रा विनीत कह्या—तेहिज गुण थायसे तो इहां इम कह्यो मातापिता रो वचन उल्लंघे नहीं । तिणरे लेखे एपिण गुण कहिणो । जो ए गुण छै तो धर्म करंता मातापिता वर्जे, अने न माने तो ए वचन लोप्यो ते माटे तिणरे लेखे अवगुण कहिणो । साधुपणो लेतां श्रावक पणूं

आदरतां सामायकपोषा करतां मातापिता वर्जे तो तिणरे लेखे धर्म करणो नहीं। अनें सामायकादि करे तो अविनीत थयो ते अवगुण हुवे तेहथी तो धर्म हुवे नहीं। इम कह्यां पाछो सूधो जवाब न आवे जब अकबक बोले मतपक्षी हुवे ते लीधी टेक छोड़े नहीं। अनें न्याय विचारी ने खोटी टेक मिथ्यात्व छांडी साँची श्रद्धा धारे ते न्यायवादी हलुकर्म्मी उत्तम जीव जाणवा। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो

इति ३० बोल सम्पूर्ण।

इति मिथ्यात्वि क्रियाऽधिकारः।



अथ दानाऽधिकारः ।

अथ कोई कहे असंयती ने दीधां पुण्य पाप न कहिणो । मौन राखणी । अने जे पाप कहे ते आगला रे अन्तराय रो पाड़णहार छै । उपदेश में पिण पाप न कहिणो । उपदेश मे पिण पाप कह्यां आगलो देसी नहीं जद अन्तराय पड़े, ते भणी उपदेश में पिण पाप कहिणो नहीं, मौन राखणी । इम कहे तेहनो उत्तर—साधुरे मौन कही ते वर्त्तमानकाल आश्री कही छै । देतो लेतो इसो वर्त्तमान देखी पाप न कहे । उण वेलां पाप कह्यां जे लेवे छै तेहनें अन्तराय पड़ै ते माटे साधु वर्त्तमाने मौन राखे । तथा कोई अभिग्रहिक मिथ्यात्व नो धणी पूछे—तठे पिण द्रव्य क्षेत्र काल भाव अवसर देखने बोलणो । पिण अवसर विना न बोले । जद आगलो कहै—जे वर्त्तमान में अन्तराय न पाड़णी, अन्तराय तो तीनुहीं काल मे पाड़णी नहीं । अने उपदेशमें पाप कह्यां आगलो देसी नहीं जद आगमिया काल में अन्तराय पड़ी इम कहे तेहने इम कहिणो । इम अन्तराय पड़े नही अन्तराय तो वर्त्तमानकाल में इज कही छै । पिण और वेलां अन्तराय कही नहीं । अनें उपदेशमें—हुवे जिसा फल बतायां अन्तराय श्रद्धे तिणरे लेखे तो किणही ने दीधां पाप कहिणो नहीं । कसाई चोर भील मेर मैंणा अनार्य म्लेच्छ हिंसक कुपात्रा नें दीधां पाप कहे तो तिणरे लेखे अन्तराय रो पाड़णहार छै । वली अधर्मदान में पिण पाप किणही काल में कहिणो नहीं । पाप कह्यां आगलो देवे नही तो त्यांरे लेखे उठे पिण अन्तराय पाड़ी, वेश्या नें कुकर्म करवा देवे, तिण में पिण पाप कहिणो नहीं । पाप कह्यां वेश्या नें देसी नहीं जद आगामीए काले अन्तराय पड़सी । धुर नें बाधिसाटे धान दीधां उपदेश मे पाप कहिणो नहीं, पाप कह्यां देसी नहीं, तो तिणरे लेखे अन्तराय पड़सी । वली खर्चे वरोटी जीमणवार मुकलावो पहिरावणी मुसालादिक नाटकियादिक ने दीधां—पिण पाप कहिणो नही, इहां पिण तिणरे लेखे अन्तराय पड़ै छै । वली सगाई कियाँ पिण पाप कहिणो नहीं । पाप कह्याँ पुत्रादिक नी सगाई करे नहीं, जद पिण त्यांरे लेखे अन्तराय पड़े । इण श्रद्धा रे लेखे कुपात्रदान में पिण पाप

कहिणों नहीं। वली कोई नें सामायक पोषो करावणो नहीं। सामायक पोषा में कोई नें देवे नहीं। जद पिण इहां अन्तराय कर्म बंधे छै, इम अन्तराय श्रद्धे छै। तो ते पाछे बोल कह्या ते क्यूं सेवे छै। अन्तराय पिण कहिता जाय. अने पोते पिण सेवता जाय। त्यां जीवां नें किम समझाविये। अनें सूयगडाङ्ग अ० ११ गा० २० अर्थमें वर्त्तमानकाले निषेध्या अन्तराय कही छै। परं और काल में न कही। साधु गोचरी गयो गृहस्थ रा घर रे बाहिरवे भिख्यारी ऊभो छै। ते वर्त्तमानकाले देखी साधु तिण घरे गोचरी न जाय अनें साधु गोचरी गयां पछे भिख्यारी आवे तो तेहनी अन्तराय साधु रे नहीं। तिम वर्त्तमानकाले देनो लेतो देखी पाप कह्यां अन्तराय लागे। अनें उपदेश में हुवे जिसा फल बतायां अन्तराय लागे नहीं उपदेश में तो श्री तीर्थङ्करे पिण ठाम २ सूत्रां में असंयती नें दियां कडुआ फल कह्या छै। ते साक्षीरूप कहे छे। भगवती श० ८ उ० ६ असंयती नें अशनादिक ४ सचित्त अचित्त सूझता असूझता दियाँ एकान्त पाप कह्यो (१) तथा सूयगडाङ्ग श्रु० खं० १ अ० ६ गा० ४१ आर्द्र मुनि विप्र जिमायां नरक कह्या (२) तथा उत्तराध्ययन अ० १२ गा० १४ हरिकेशी मुनि ब्राह्मणां ने पाप कारिया क्षेत्र कह्या (३) तथा उत्तराध्ययन अ० १४ गा० १२ पुरोहित भृगु ने पुत्रां कह्यो विप्र जिमायां तमतमा जाय। (४) तथा उपासक दशा अ० १ आनन्द श्रावक अभिग्रह धार्यो. जे हूं अन्य तीर्थियांने दान देवूं नहीं देवावूं नहीं। (५) तथा ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० ४ कुपात्रा नें कुक्षेत्र कह्या (६) तथा उपासक दशा अ० ७ शकडाल पुत्र गोशाला ने सेज्या संथारो दियो तिहां "णो चेवण्णं धम्मोतिवा तवोतिवा" कह्यूं (७) तथा विपाक अ० १ मृगालोढा ने दुःखी देखि गोतम स्वामी पूछ्यो। इण कांई कुपात्र दान दीधो तेहना ए फल भोगवे छैं इम कह्यो। (८) तथा सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ११ गा० २० सावद्य दान प्रशंस्यां छव काय रो घाती कह्यो। (९) तथा सूयगडाङ्ग श्रु १ अ० ९ गा० २३ गृहस्थ ने देवो साधां त्याग्यो ते संसार भ्रमण हेतु जाणी ने छोड्यो इम कह्यो। (१०) तथा निशीथ उ० १५ साधु गृहस्थ नें अशनादिक देवे देतां ने अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो। (११) तथा सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ श्रावक रो खाणौ पीणौ नेहणौ अव्रतमें कह्यौ। (१२) तथा ठाणाङ्ग ठाणा १० अव्रत ने भावशस्त्र कह्यो। (१३) इत्यादिक अनेक ठामे असंयती ने दान देवे तेहना कडुआ फल उपदेश में श्री तीर्थङ्करे कह्या छै। ते भणी उपदेश में पाप कह्यां अन्तराय लागै नहीं। उपदेश में छै जिसा फल

बतायां अन्तराय लागे तो मिथ्या दृष्टिरो सम्यग्दृष्टि किम हुवे । धर्म अधर्म री ओलखना किम आवे ओलखणा तो साधुरी बताई आवे छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

हिवे जे असंयती अन्यतीर्थी ना दान रा फल कडुआ सूत्र में कह्या छै। ते पाठ मरोड़ी विपरीत अर्थ केतला एक करे छै। ते ऊंधा अर्थरूप भ्रम मिटावा ने सिद्धान्त ना पाठ न्याय सहित देखाड़े छै। प्रथम तो आनन्द श्रावक नो अभिग्रह कहे छै।

तएणं से आणंदे गाहावइ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वईयं सत्त सिक्खावइयं दुवालसविहं सावागधम्मं पडिवज्जहि २ त्तासमणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—णो खलु मे भंते! कप्पइ अज्जप्पभइओ अण्ण उत्थिएवा अण्णउत्थिय देवयाणिवा अण्ण उत्थिय परिग्गहियाणिवा अरिहन्त चेइयाति १ वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुव्विं अणालवित्तेणं आलवित्तएवा संलवित्त एवा तेसिं असणंवायाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणुप्पदाउंवा नन्नत्थ रायाभिओगेणं, गणाभिओगेणं वलाभिओगेणं देवाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्ती कंतारेणं।

(उपासक दशा अ० १)

त० तिवारे आ० आनन्द नामक गाथा पति स० श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी रे निकटे. पं० ५ अनुव्रत स० ७ शिक्षारूप. दु० १२ प्रकार रा सा० श्रावक धर्म प० अंगीकार कीधो. करी नें स० श्रमण भगवान् महावीर स्वामी वांद्या नमस्कार कीधो. वांदीनें न० नमस्कार करी नें. ए० इम. व० बोल्या णो० नहीं ख० निश्चय करी ने. मे० मोनें. भ० हे भगवन्त ! क० कल्पई आज पछे अ० अन्य तीर्थी शाक्यादिक अ० अन्य तीर्थी ना देव हरि हरादिक अ० अन्यतीर्थिये प० आपणा करी ने ग्रह्या अ० अरिहन्त ना. चे० साधु-नें नें. वं० वन्दना करवी न कल्पई पू० पहिलूं. अ० विना बोलायां ते हने अ० एकवार बोलाविवो न कल्पे स० वार वार बोलाविवो न कल्पे ते० तेहने अ० अशनादिक ४ आहार दा० देवूं नहीं अ० अनेरा पाहे दिवरावूं नहीं. ण० एतलो विशेष रा० राजाने आदेशे आगार ग० घणा कुटुम्ब ना समवाय ने आदेशे आगार २ व० कोई एक बलवन्त ने परवश पणे आगार ३ दे० देवता नें परवश पणे आगार गु० कुटुम्ब में बड़ेरो ते गुरु कहिये तेहने आदेशे आगार वि० अटवी कांतार ने विशे कारणे आगार ६।

अथ अठे भगवान् कनें आनन्द श्रावक १२ व्रत आदर्या तिण हिज दिन ए अभिग्रह लीधो। जे हूं आज थी अन्यतीर्थी ने अने अन्यतीर्थी ना देव ने अने अन्य तीर्थी ना ग्रह्या अरिहन्त ना चैत्य ते साधु श्रद्धाभ्रष्ट थया ए तीनां नें वांदूं नहीं नमस्कार करूं नहीं। अशनादिक देवूं नहीं देवावूं नहीं। तिण में ६ आगार राख्या ते तो आपरी कचाई छै। परं धर्म नहीं। धर्म तो ए अभिग्रह लीओ तिण में छै। अने आगार तो सावद्य छै। जो अन्य तीर्थी ने दियां धर्म हुवे तो आनन्द श्रावक ए अभिग्रह क्यूं लियो। जे हूं अन्य तीर्थी ने देवूं नहीं दिवावूं नहीं। ए पाठ रे लेखे तो अन्य तीर्थी ने देओ एकान्त सावद्य कर्म बंधनो कारण छै। तरे आनन्द छोड्यो छै। तिवारे कोई एक अयुक्ति लगावी कहे। ए तो अन्य तीर्थी धर्म रा द्वेषी निन्दक ने देवा रा त्याग कीधा। परं अनाथ ने देवारा त्याग कीधा नहीं। तेहनो उत्तर-एह नो न्याय ए पाठ में इम कह्यो। जे हूं अन्य तीर्थी ने वांदूं नहीं आहार देवूं नहीं। ए इमें तो अन्य तीर्थी सर्व आया। सर्व अन्य तीर्थी ने वंदना अशनादिक नो निषेध कह्यो छै अने जे कहे धर्म ना द्वेषी ने देणो छोड्यो। बीजा अन्य तीर्थियां ने देवा रो नियम लीधो नहीं। इम कहे ते हने लेखे तो धर्म ना द्वेषी ने वन्दना न करणी बीजां ने वन्दना पिण करणी। ए तो बेहुं पाठ भेला कह्या छै। जो बीजा ग़रीब अन्यतीर्थी ने अशनादिक दियां पुण्य कहे तो तिणरे लेखे ते अन्य तीर्थियां ने वंदना कियां पिण पुण्य कहिणो। अने जो बीजा ग़रीब अन्य तीर्थी ने वंदना कियां पुण्य नहीं तो अन्नादिक दियां पिण पुण्य नहीं। ए तो पाधरो न्याय छै। जे सर्व अन्य-

तीर्थियां ने वंदना नमस्कार करण रा त्याग पाप जाणी ने किया तो अन्नादिक देवा रा त्याग पिण पाप जाण ने किया छै । पहिला तो वन्दना रो पाठ अने पछे अशनादिक देवो छोड्यो ते पाठ छै । ते विहूं पाठ सरीखा छै । वली छव आगार रो नाम लेवे छै ते छव आगार थी तो अन्य तीर्थी ने वन्दना पिण करे अने दान पिण देवे । जे राजाने आदेशे अन्य तीर्थी ने वन्दना पिण करे दान पिण देवे । (१) इम गण समुदाय ने आदेशे (२) बलवन्त ने जोड़े (३) देवता ने आदेशे (४) वडेरा रे कह्यां (५) ए पांच कारणे परवश पणे करी अन्य तीर्थी ने वन्दना पिण करे दान पिण देवे । अने छठो "वित्ती कंतार" ते अटवी आदिक ने विषे अन्य तीर्थी आव्या छै । तो एने अने रा लोक वन्दना करे, दान देवे छै । तो तेहना कह्या थी लज्जाइं करी वन्दना पिण करे दान पिण देवे । ए लज्जाइं देवे वन्दना करे ते पिण परवश छै । जे राजाने आदेशे ते पिण राजा री लाजरूप परवश पणो छै । इम छहूं आगार परवश पणे वन्दना करे दान देवे । जो छठा आगार में दान में धर्म कहे तो वन्दना में पिण धर्म कहिणो । अनें जो वन्दना में धर्म नहीं तो ते दान में पिण धर्म नहीं ए तो छव आगार छै । ते आप री कचाई छै, पिण धर्म नहीं । जो यां ६ आगारां में धर्म हुवे तो सामायिक पोषा मे ए आगार क्यूं त्याग्यो । ए तो आगार माठा छै । तरे छांडे छै धर्म ने तो छांडे नहीं । जिसा पांच आगारां में फल हुवे तेहिज फल छठा आगार नो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

अत्र कोई कहे—अन्य तीर्थी ने देवा रा आनन्दे त्याग कीधा पिण असंयती ने देवा रा त्याग नथी कीधा । ते माटे अन्यतीर्थी ने देवा नो पाप छै परं असंयती ने दियां पाप नहीं. असंयती ने दियां पाप कह्यो हुवे तो बतावो । ते ऊपर असंयती ने दियां पाप कह्यो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

समणोवासगस्सणं भंते ? तहारूवं असंजय. अविरय. अपडिह्य, पञ्चक्खाय पावकम्मे पासुएणवा अफासुएणवा एसणिज्जेणवा अणेसणिज्जेणवा असणपाण जाव किं कज्जइ गोयमा ? एगंतसो से पावे कम्मे कज्जइ नत्थि से काइ निजरा कज्जइ।

(भगवती श० ८ उ० ६)

स० श्रमणोपासक भ० हे भगवन्त ! त० तथा रूप असयती अ० अव्रती अ० नथी प्रतिहण्या प० पचखानें करी नें प० पापकर्म जेणे, एहवा असयतो ने फा० प्राशुक अ० अप्रासुक ए० एषणीय दोष रहित अ० अशन पा० पाणी जा० यावत् दीधां स्यू फल हुवे हे गौतम ! ए० एकान्त ते पापकर्म क० हुई ण० नथी ते० तेहने का० काई णि० निर्जरा एतले निर्जरा न हुइ।

अथ अठे तथा रूप असंयती ने फासु अफासु सूझतो असूझतो अशनादिक देवे ते श्रावकने एकान्त पाप कह्यो छै। अनें जो उपदेश में पिण मौन राखणी हुवे तो इहां एकान्त पाप क्यूं कह्यो। इहां केतला एक अयुक्ति लगावी इम कहे. ए तथा रूप असंयती ते अन्य तीर्थी ना वेष सहित मतनो धणी ते तथा रूप असंयती तेहने "पड़िलाभ माणे" कहितां साधु जाणी ने दीधां एकान्त पाप कह्यो छै। ते दीधां रो पाप नहीं छै। ते तथा रूप असंयतीने साधु जाण्या मिथ्यात्वरूप पाप लागे ते एकान्त पाप मिथ्यात्व ने कहीजे। एहवो विपरीत अर्थ करे छै। तेहने इम कहीजे ए अन्य तीर्थी ना वेषसहित असंयती तो तुम्हे कहो छै तो ते अन्य तीर्थी नो रूप प्रत्यक्ष दीखे तेहने साधु किम जाणो। ए तो साक्षात् अन्य तीर्थी दीसे तेहने श्रावक तो साधु जाणे नहि। अने इहां दान देवे ते श्रमणोपासक श्रावक कह्यो छै। "समणोवासएणंभंते" एहवूं पाठ छै। ते माटे अन्यतीर्थी ने श्रावक तो साधु जाणे नहीं। वली इहाँ सचित्त अचित्त सूझतो असूझतो देवे कह्यो तो श्रावक साधु जाणने सचित्त असूझता ४ आहार किम वहिरावे ते माटे ए तो साम्प्रत मिले नहीं। वली जे कहे छै देवा रो पाप नहीं साधु जाण्या एकान्त पाप ते मिथ्यात्व लागे। ए पिण विपरीत अर्थ करे छै। इहां देवा रो पाठ कह्यो पिण

जाणवा रो पाठ इज नहीं । इहां तो गोतम पूछ्यो । तथा रूप असंयती ने सचित्त अचित्त सूझतो असूझतो ४ आहार श्रावक देवे तेहने स्यूं हुवे । इम देवा रो प्रश्न चाल्यो, पिण इम न कह्यो । साधु जाणे तो स्यूं हुवे इम जाणवा रो प्रश्न तो न कह्यो । जो जाणवा रो प्रश्न हुवे तो सचित्त अचित्त सूझता असूझता वली ४ आहार ना नाम क्यूं कह्या । ए तो प्रत्यक्ष दान देवा रो इज प्रश्न कियो । तिण सूं ४ आहार ना नाम चाल्या । तिण दीधां में इज भगवन्ते एकान्त पाप कह्यो छै । वली एकान्त पाप मिथ्यात्व ने इज कहे । ते पिण केवल मृषावाद ना बोलण हार छै । जे ठाणांगे ४ सुखशय्या कही तिणमें प्रथम सुखशय्या निःशङ्कपणो बीजी परलाभनो अनवांछवो—तीजी काम भोगनें अणवांछवो चौथी कष्ट वेदना समभावे सहिवूं । ते चौथी सुखशय्या नो पाठ लिखिये छै ।

अहावरा चउत्था सुहसेज्जा सेणं मुण्डे जावपव्वइए तस्सणमेवं भवइ जइ ताव अरिहंता भगवन्ता हट्ठा आरोग्गा वलिया कल्लसरीरा अन्नयराइं. ओरालाइं. कल्लाणाइं. विउलाइं. पयत्ताइं. पग्गहियाहिं. महाणुभागाइं. कम्म-क्खयकरणाइं. तवोकम्माइं. पड़िवज्जंति. किमंगपुणअहं अज्झोवगमिओ वक्कमियंवेयणं णो सम्मं सहामि. खमामि. तितिक्खेमि अहियासेमि ममंचणं अज्झोवगमिओ वक्क-मिअं सम्ममसहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खेमा-णस्स अणहियासेमाणस्स किमण्णेकज्जइ एगंतसो पावे कम्मे कज्जइ ममंचणं मज्झोवगमिओ जाव सम्मं सहमा-णस्स जाव अहियासे माणस्स किमण्णे कज्जइ. एगंतसो मेणिज्जरा कज्जइ चउत्था सुहसेज्जा ।

(ठाणाङ्ग ठाणे ४ उ० ३)

अ० अथ हिवे अ० अपर अनेरी. च० चउथी सूत्रगथ्या से० ते मुंड थई जा० यावत् प० प्रवर्ज्या लेई ने त० ते साधु ने ए० इम मनमांहि भ० हुई ज० जो ता० प्रथम अ० अरिहन्त भ० भगवन्त हृ० शोकने अभावे हरप्यानी परे हर्प्या अ० ज्वरादिक वर्जित ब० बलवन्त क० परवड़ू शरीर अ० अनशनादिक तप मांहिलू अनेरू शरीर उ० अनशनादिक रोग रहित युक्त क० मंगलीक रूप चि० घणा दिन नो प० अति हि संयम सहित. प० आदर पणे पड़िवज्ज्या म० अत्यन्त शक्ति युक्त पणे शुद्धि नो करणहार म० मोक्ष ना साधन थी कर्मक्षय नु करणहार त० तप कर्म तप क्रिया. प० पड़िवज्जे सेवे। कि० प्रश्ने अग ते आमन्त्रणे अलकारे पु० वली पूर्वोक्तार्थ नू विलक्षण पणू दिखाड़वाने अर्थे अ० हूं अ० जे उदेरी लीजिये ते लोच ब्रह्मचर्यादिके उ० आयुपो उपक्रमिये उलघईये एणे करी ते उपक्रम ज्वरातिसारादिक नी वेदना स्वभावे उपजे नो० नहीं स० सन्मुख पणे करी जिम सुभट वैरी ना थाट प्रत्ये ने साहमो थाइ ने लेवे तिमि वेदना थकी भाजूं नहीं ख० कोपरहित अदीनपणे खमू अ० रूड़ी परे अहीयासू ए शब्द सर्व एकार्थज छै। म० मुझ ने अभ्युपगम की लोचादिक नी उ० उपक्रम की ज्वरादिक नी वेदना स० सम्यक् प्रकारे अणसहितां ने अ० अणखमता ने अ० अदीन पणे अणखमतां ने अ० अण अहियासताने कि० वितर्क ने अर्थे क० हुइं ए० एकान्त सो० सर्वथा मुझ ने पा० पाप कर्म क० हुइं एतलो जो तीर्थंकर सरीखा पुरुष तपादिक नो कष्ट सहै छै तो हूं अब्भोवगमिया अने उवक्कमिया वेदना किम न सहूं जो न सहूं तो एकान्त पाप कर्म लगे अनें जो म० मुझ ने अ० ब्रह्मचर्यादिक ना सा० तावत् स० सम्यक् प्रकारे स० सहतांथकां जाव अ० अहियासतां थकां कि वितर्क ने अर्थे ए० एकान्त सो० ते मुझ ने निर्जरा क० थाइ ।

अथ अठे इम कह्यो—जे साधु ने कष्ट उपनें इम विचारे, जे अरिहन्त भगवन्त निरोगी काया रा धणी कर्म खपावा भणी उदेरी ने तप करे छै। तो हूं लोच-ब्रह्मचर्यादिक नी तथा रोगादिक नी वेदना किम न सहूं। एतले ए वेदना सम भाव अणसहितां मुझ ने एकान्त पाप कर्म हुइं। अनें समभावे वेदना सहितां मुझ ने एकान्त निर्जरा हुई। इहां साधु ने पिण वेदना अणसहिवे एकान्त पाप कह्यो। जे एकान्त पाप मिथ्यात्व ने कहै छै तो साधु नें तो मिथ्यात्व छै इज नथी। अनें वेदना अणसहिवे एकान्त पाप कह्यो छै। ते माटे एकान्त पाप ने मिथ्यात्व इज कहै छै। ते झूठा छे। इहां पाप रो नाम इज एकान्त पाप छै एकान्त शब्द तो पाप ना विशेषण ने अर्थे कह्यो छै। जे साधु वेदना सहे तो एकान्त निर्जरा कही छै। इहां पिण एकान्त विशेषण ने अर्थे कह्यो छै। तथा भगवती श० ८ उ० ६ साधु ने निर्दोष दियां एकान्त निर्जरा कही छै। तथा भगवती श० १ उ० ८ अव्रती

ने एकान्त बाल कह्यो साधु ने एकान्त पण्डित कह्यो। इत्यादिक अनेक ठामे एकान्त शब्द कह्या छै, एक पाप छै पिण बीजो नहीं! अन्त कहितां निश्चय करके तेहने एकान्त पाप कहिये। हेम नाममाला में ६ काण्ड में १ वां श्लोक "निर्णयो निश्चयोऽन्तः" इहां अन्त नाम निश्चय नो कह्यो छै। तथा भगवती श० ७ उ० ६ "एकन्तमंतंगच्छइ" ए पाठ में एगन्त शब्द कह्यो छै। तेहनो अर्थ टीका में इम कह्यो छै। ते टीका—

"एगंमिति-एक इत्येवमंतो निश्चय एवासावेकान्तः इत्यर्थः"

तेहनो अर्थ—एक अन्त कहितां निश्चय ते एकान्त, एतले एक कह्यो भावें एकान्त कह्यो। इम अन्त कहितां निश्चय कह्यो छै एक अन्त कहितां निश्चय करी पाप ते एकान्त पाप छै। एक पाप इज छै पिण और नहीं इम निश्चय शब्द कहिवो। अने एकान्त शब्द नो भ्रम पाड़ी एकान्त पाप मिथ्यात्व ने इज ठहिरावे छै ते मृषावादी छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइज्यो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

वली "पडिलाभमाणे" ए शब्द थीं साधु जाणी देवे इम थापें छै। ते पिण झूठा छै। ए "पडिलाभमाणे" तो देवा नो छै। इहां साधु नो तो नाम चाल्यो नहीं। ए तो 'पडि' कहतां परि उपसर्ग छै। अने लाभ ते "लभ-प्रापणे" प्रापण अर्थ ने विषे लभ् धातु छै। ते पर अनेरा ने वस्तु नो लाभ तेनें पड़िलाभ कहिइ। साधु जाणी ने श्रावक देवे तिहां "पड़िलाभ माणे" पाठ कह्यो तिम साधु ने असाधु जांणी हेल्या निन्दा अवज्ञा करे कोई धर्म रो द्वेषी अपमान देई जहर सरीखो अमनोज्ञ आहार देवे तिहां पिण "पडिलाभ माणे" पाठ कह्यो छै। ते प्रते लिखिये छै।

कहणं भंते ! जीवा असुभदीहाउ यत्ताए कम्मं पकरंति गोयमा ! पाणे अइवाएत्ता मुसंवइत्ता तहारूवं समणंवा

माहणंवा हीलित्ता निंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमणित्ता अन्नयरेणं अमणुणणेणं अप्पोय कारणेणं असणपाण खाइम साइमेणं पडिलाभित्ता एवं खलुजीवा जाव पकरेंति।

(भ० श० ५ उ० ६ तथा ठाणाङ्ग ठा० ३)

क० किम् भ० हे भगवन्त जी० जीव ! अ० अशुभ दीर्घ आयुषा प्रति प० बांधे० हे गौतम! पा० प्राणजीव प्रति अति हणी नें मृषा प्रति व० बोली ने तहा० तथा रूप दान देवा जोग स० श्रमण नें प० पोते हणवा थी निवृत्यो छै अने दूजाने कहे माहणस्यो ते माहणने ही० हेलणा ते जातिनू उघाड़ वू तेणे करी नि० निन्दामन करीनें खि० खिसन ते जन समक्ष ग० गर्हणा तेहनीज साखे। अ० अपमान अन ऊभाथाय वू अ० अनेरो एतलावाना माहिलू एक अ० अमनोज्ञ अ० अप्रीति कारक अ० अशन पा० पाणी खा० खादिम सा० स्वादिम, प० प्रतिलाभी ने ए० इम ख० निश्चय जी० जीव अशुभ दीर्घायु बांधे।

अठ अठे कह्यो। जीवहणे झूंठ बोले साधुरी हेला निन्दा अवज्ञा करी अपमान देई अमनोज्ञ अप्रीति कारियो अशनादिक प्रतिलाभे। तेहने अशुभ दीर्घायु पो बंधे एहवूं कह्यूं छै। तो ये साधु जाणी ने हेला निन्दा अवज्ञा किम करे। वली साधु ने गुरु जाणी तेहने अपमान किम करे। वली गुरु जाणी ने अमनोज्ञ अप्रीति कारियो आहार किम आपे। ए तो प्रत्यक्ष देणवालो धर्म रो द्वेषी छै। साधु ने खोद्र जाणी हेला निन्दा अवज्ञा करी अपमान देई अमनोज्ञ अप्रीतिकारियो ज़हर सरीखो आहार देवे छै तिहां पिण "पड़िलाभित्ता" एहवो पाठ कह्यो छै। ते माटे जे कहें "पड़िलाभमाणे" कहितां गुरु जाणी देवे, एहवूं कहे ते झूंठा छै। "पड़िलाभमाणे" कहतां देतो थको इम अर्थ छै पिण साधु असाधु जाणवा रो अर्थ नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

वली साधु ने मनोज्ञ आहार वहिरा वे तिहां पिण "पड़िलाभमाणे" पाठ छै। ते लिखिये छै।

कहणं भंते ? जीवा शुभ दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति. गोयमा ? नोपाणे अइवाएत्ता नो मुसं वइत्ता तहारूवं

संमणांवा माहणांवा वंदित्ता जाव पज्जुवासेत्ता. अरणयरेणं मणुएणेणं पीइकारएणं असणं पाणं खाइमं साइमं पड़िलाभित्ता एवं खलुजीवा आउ·पकरेंति ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

क० किम् भ० हे भगवन्त ! जी० जीव सु० शुभ दीर्घआयुषा नो क० कर्म ब० बांधे हे गौतम ! णो० जीव प्रति न हणे णो० मृषा प्रति नहीं बोले तथारूप स० श्रमण प्रति मा० माहण ब्रह्मचारी प्रति व० वांदे वांदी ने जा० यावत् प० सेवा करी ने अ० अनेरो म० मनोज्ञ पी० प्रीतिकारी भलो भाव कारी अ० अशन पा० पाणी खा० खादिम सा० स्वादिम प० प्रतिलाभी ने ए० इम ख० निश्चय जीव यावत् शुभ दीर्घायु बांधे ।

अथ अठे इम कह्यो । साधुने उत्तम पुरुष जाणी वन्दना नमस्कार करी सन्मान देई मनोज्ञ प्रीति कारियो अशनादिक प्रतिलाभ्यां शुभ दीर्घायुषो बांधे । इहां "पड़िलाभित्ता" पाठ कह्यो । तिम हिज "पड़िलाभित्ता" पाठ पाछिले आलावे कह्यो । जे साधु ने भलो जाणी प्रशंसा करी ने मनोज्ञ आहार देवे । तिहां "पड़िलाभित्ता" पाठ कह्यो । तिम साधु ने खोटो जाणी हेलनादिक करी अमनोज्ञ आहार देवे तिहाँ पिण 'पड़िलाभित्ता" पाठ कह्यो । ए साधु जाणी देवे अने असाधु जाणी ने देवे । ए बिहूं ठिकाने "पड़िलाभित्ता" पाठ कह्यो । वली मनोज्ञ आहार देवे तथा अमनोज्ञ आहार देवे ए बिहूं में "पड़िलाभित्ता" पाठ कह्यो । वली वन्दना नमस्कार सन्मान करी देवे, तथा हेला निन्दा अवज्ञा अपमान करी देवे ए बेहूं में "पड़िलाभित्ता" पाठ कह्यो । शुभ दीर्घ आयुषो बांधे तथा अशुभ दीर्घायुषो बांधे ए बिहूं में "पड़िलाभित्ता" नाम देवा नो छे । पिण साधु जाणवा रो कारण नहीं. डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली गुरु जाण्या विना देवे तिहां पिण "पड़िलाभित्ता" पाठ कह्यो छे । ते लिखिये छे ।

तेणं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासति २त्ता हट्ठतुट्ठा आसणातो अब्भुट्ठेति २त्ता वंदइ २त्ता विपुल असणं ४ पड़िलाभेति २ त्ता एवं वयासी ।

(ज्ञाता अ० १४)

त० तिवारे सा० तिका पोट्टिला ता० ते अ० आर्यां महासती ने ए० आवती पा० देखे देखीने ह० हर्ष संतुष्ट पामी आ० आसण थकी अ० उठे उठीने व० वांदे वांदीनें वि० विस्तीर्ण अ० अशनादिक ४ आहार प० प्रतिलाभीने ए० इम बोले ।

अथ अठे पोट्टिला—श्रावकरा व्रत आदर्यां पहिलां आर्यां नें अशनादिक प्रतिलाभी पछे तेतली पुत्र भर्त्तार वश हुवे ते उपाय पूछ्यो । एहवूं कह्यो । इहां पिण अशनादिक पड़िलाभे इम कह्यो । तो ए गुरुणी जाणीने यन्त्र मन्त्र वशीकरण वार्त्ता किम् पूछे । जे साध्वी नें गुरुणी जाणी ने धर्मवार्त्ता पूछवानी रीति छै । पिण गुरुणी पाशे मन्त्र यन्त्रादिक किम करावे । वली श्रावक ना व्रत तो पाछे आदर्या छै । तिवारे गुरुणी जाणी छै । ते माटे पहिलां अशनादिक प्रतिलाभ्या ते वेलां गुरुणी न जाणी गुरु पछे धार्या । ते माटे पड़िलाभेइ नाम देवा नों छै । पिण साधु जाणवा रो नहीं । जिम पोट्टिला अशनादिक प्रतिलाभी वशीकरण वार्त्ता पूछी तिम हीज ज्ञाता अ० १६ सुखमालिका पिण साध्वीयां ने अशनादिक प्रतिलाभी यन्त्र मन्त्रादिक वशीकरण वार्त्ता पूछी । इम अनेक ठामे गुरु जाण्या विना अशनादिक दिया तिहां "पड़िलाभेइ" इम पाठ कह्यो छै । ते माटे "पड़िलाभेइ" नाम साधु जाणवा रो नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्ण

तियारे केतला एक इम कहे—जे साधु ने देवे तिहां तो "पड़िलाभ माणे" एहवो पाठ छै । पिण "दलएज्जा" एहवो पाठ नहीं । अनें साधु विना अनेरा ने देवे तिहां 'दलएज्जा' एहवो पाठ छै । पिण "पड़िलाभेज्जा" एहवो पाठ नहीं ।

इम अयुक्ति लगावे. तेहनो उत्तर—जे "पड़िलाभेजा" अनें "दलएज्जा" ए बेहूं एकार्थ छे। जे देवे कहो भावे पड़िलाभे कहो। किणही ठामे तो साधु ने देवे तिहां "पड़िलाभ माणे" कह्यो। अनें किणही ठामें साधु ने अशनादिक देवे तिहां "दलएज्जा पाठ कह्यो छे। ते पाठ लिखिये छे।

से भिक्खू वा (२) जाव समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा असणंवा (४) कोट्ठियातो वा कोलज्जातो वा असंजए भिक्खु पडियाए उक्कुजिया अवउज्जिया ओहरिया आहट्ट दलएज्जा तहप्पगारं असणंवा मालोहडन्ति णच्चा लाभेसंते णो पडिगाहेज्जा।

(आचारांग श्रु० २ अ० १ उ० ७)

से० ते साधु साध्वी जा० यावत् गृहस्थ ने घरे गयो थको से० ते ज० जे पु० वली जा० जाणे अ०-अशनादिक ४ आहार को० कोठी माटी नी तेहमाही थकी को० बांस नी कोठी तेहमाही थकी अ० असंयती गृहस्थ भि० साधु ने प० अर्थे उ० ऊपरलो शरीर नीचो नमाडी कूबडा नी परे थई देवे अ० मांहि पेसी, एतले नीचलो शरीर माही पेसी ऊपरलो शरीर बाहिर इणी परे करी आ० आणी ने द० देई त० तथा प्रकार नों तेहवो अ० अशनादि ४ आहार मो० ए मालोहड भिक्षा णा० जाणी ने ला० लाभे थके. णो० न लेई।

अथ इहां साधु नें अशनादिक वहिरावे तिहां पिण "दलएज्जा" पाठ कह्यो छे। ते माटे "दलएज्जा" कहो भावे "पडिलाभेज्जा" कहो। ए विहूं एकार्थ छे ते माटे जे कहें साधु ने वहिरावे तिहां "पडिलाभेजा" कह्यो पिण "दलएज्जा" न कह्यो। इम कहे ते झूठा छे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ७ बोल सम्पूर्ण।

अनें जे कहे साधु बिना अनेरा नें देवे—तिहां "पड़िलाभेजा" पाठ न कह्यो। "पड़िलाभेजा" पाठ साधु रे ठिकाणे इज थाये ते पिण झूठा छे। साधु

विना अनेरा ने देवे तिहां पिण "पड़िलाभमाणे" पाठ कह्यो छै ते पाठ कहिये छै।

ततेणं सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा हट्ठ तुट्ठ सुयस्स अंतियं सोयमूलयं धम्मं गेण्हइ २ त्ता परिव्वाइएसु विपुलेणं असणं पाणं खाइमं साइमं वत्थ पड़िलाभेमाणे विहरइ ।

(ज्ञाता अ० ५)

त० तिवारे सु० सुदर्शण सु० शुकदेव ने अ० समीप ध० धर्म प्रते सो० सांभली ने हर्ष सतोष पामैं सु० शुकदेव ने अ० समीपे सो० शुचि मूल ध० धर्म प्रते गे० ग्रहे ग्रही ने प० परिव्राजकां ने वि० विस्तीर्ण अ० अशनादिक आहार प० प्रतिलाभ तो थको जा० यावत् वि० विचरे ।

अथ अठे सुदर्शन सेठ शुकदेव सन्यासी ने विस्तीर्ण अशनादिक प्रतिलाभ तो थको विचरे। एहवूं श्री तीर्थङ्करे कह्यो। ए तो प्रत्यक्ष अन्य तीर्थी ने देवे तिहां पिण "पडिलाभमाणे' पाठ भगवन्ते कह्यो। तो ते अन्य तीर्थी ने साधु किम कहिये। ते माटे जे कहे साधु विना अनेरा नें देवे तिहां "दलएज्जा" पाठ छै पिण पड़िलाभ माणे पाठ नहीं ते पिण झूठा छै। अने कोई कहे शुकदेव तो सुदर्शन नों गुरु हुन्तो ते माटे ते सुदर्शन शुकदेव ने अशनादिक प्रतिलाभतो, ते गुरु जाणी वहिरावतो विचरे। इहां सुदर्शन नी अपेक्षाइ ए पाठ छै। इम कहे तेहनो उत्तर—इहां "पडिलाभमाणे" कहितां सुदर्शन गुरु जाणी प्रतिलाभ तो थको विचरे तो. भगवती श० ५ उ० ६ कह्यो- अशुभ दीर्घ आयुषो ३ प्रकारे बंधे। तिहां पिण कह्यो, जे साधु नी हेला. निन्दा अवज्ञा. करी अपमान देई अमनोज्ञ- (अप्रीतिकारियो) आहार "पडिलाभित्ता" कहितां प्रतिलाभतो कह्यो। तिणरे लेखे ए पिण गुरु जाणी प्रतिलाभतो कहिणो, तो गुरु जाणी हेला- निन्दा अवज्ञा किम करे। अपमान-देई अमनोज्ञ (अप्रीतिकारी) जहर सरीखो आहार गुरु जाणी

किम् प्रतिलाभे। ए तो वात प्रत्यक्ष मिले नहीं "पड़िलाभेइ" नाम तो देवा नों छे। पिण गुरु जाणी देवे इम नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ८ बोल संपूर्ण।

एतले कह्यां थके समझ न पड़े तो प्रत्यक्ष "पड़िलाभ" नाम देवानों छै। ते सूत्र पाठ कहे छै।

दक्खिणाए पडिलंभो अत्थिवा नत्थिवा पुणो।
नवियागरेज्ज मेहावी संति मग्गंच वूहए॥

(सूयगडांग श्रु० २ लु० ५ गा० ३३)

द० दान तेहनों प० गृहस्थे देवो लेणहार नें लेवो इसो व्यापार वर्त्तमान देखी अ० अस्ति नास्ति गुण दूषण कांई न कहे गुण कहितां असंयम नी अनुमोदना लागे दूषण कहितां वृत्तिच्छेद थाय इण कारण न० अस्ति नास्ति न कहे मे० मेधावी हिवे साधु किम बोले स० ज्ञान दर्शन चारित्र रूप वु० वधारे एतावता जिण वचन बोल्यां असंयम सावद्य ते थाय तिम न बोले।

अथ अठे कह्यो "दक्खिणाए" कहितां दान नों "पडिलंभो" कहितां देवो एतले गृहस्थ में दान देवे, तिहां साधु अस्ति नास्ति न कहे मौन राखे। इहां पिण "पडिलंभ" नाम देवानों कह्यो। ए गृहस्थादिक ने दान देवे तिहां "पड़िलंभ" पाठ कह्यो। जे "पडिलंभ" रो अर्थ साधु गुरु जाणी देवे, इम अर्थ करे छै। तो गृहस्थ ने साधु जाणी किम देवे। ए गृहस्थ ने साधु जाणे इज नहीं, ते माटे "पडिलाभ" नाम देवानो इज ही छै। पिण साधु जाणी देवे इम अर्थ नहीं। इम घणे ठामे "पडिलाभ" नाम देवानों कह्यो छै। सूत्रनों न्याय पिण न मानें तेहनें मिथ्यात्व मोह नों उदय प्रबल दीसे छै। भगवती श० ५ उ० ६ तथा ठाणाङ्ग ठाणे ३ साधु ने उत्तम जाणी वन्दना नमस्कार भक्ति करी मनोज्ञ आहार देवे तिहां पिण "पडिलाभित्ता" पाठ कह्यो (१) तथा साधु खोटो जाणी हेला, निन्दा,

अवज्ञा अपमान करी ज़हर सरीखो अमनोज्ञ आहार देवे तिहां पिण "पडिलाभित्ता पाठ कह्यो । (२) तथा आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० ७ साधु ने आहार वहिरावे तिहां पिण "दलएज्जा" पाठ कह्यो । (३) तथा ज्ञाता अ० १४ पोट्टिला श्रावक ना व्रत धार्यां पहिलां साध्वीयां नें अशनादिक दियो तिहां "पडिलाभेइ" पाठ कह्यो पछे वशीकरण वार्त्ता पूछी अन गुरु तो पछे कस्या । (४) इम ज्ञाता अ० १६ सुखमालिका पिण 'गुरु कीधां पहिलां आर्यां नें वहिरायो तिहां "पडिलाभे" पाठ कह्यो । (५) तथा ज्ञाता अ० ५ सुदर्शन शुकदेव ने अशनादिक दियो तिहां पिण "पडिलाभमाणे" ए पाठ श्री भगवन्ते कह्यो । (६) तथा सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३ गृहस्थादिक नें दान देवे तिहां "पडिलंभ" पाठ कह्यो छै । इत्यादिक अनेक ठामे पडिलंभ नाम देवानो कह्यो पिण साधु जाणवा रो कारण नहीं । तिम असंयती ने पिण सचित्तादिक देवे तिहां "पडिलाभमाणे" पाठ कह्यो छै । ते पडिलाभ नाम देवानो छै । ते भणी असंयती ने अशनादिक प्रतिलाभ्या कह्यो भावे दिया कह्यो । जे तथा रूप असंयती ने श्रावक तो साधु जाणें इज नहीं । अनें साधु जाण नें श्रावक तो असूझतो तथा सचित्त अशनादिक देवे नहीं । ए तो पाधरो न्याय छै । तो पिण दीर्घ संसारी सूत्र को पाठ मरोड़ता शङ्के नहीं, वली तथा रूप असंयती ने इज अन्य तीर्थी कहे तो पिण झूठा छै । तथा रूप असंयती में तो साधु श्रावक विना सर्व आया । तिम तथारूप श्रमण ने दियां एकान्त निर्जरा कही । ते तथा रूप श्रमण मे सर्व साधु आया कोई साधु वाकी रह्यो नहीं । तिम तथा रूप असंयती में सर्व असंयती आया । अन्य तीर्थी ने पिण असंयती नों इज रूप छै । वली वणिमग रांक भिख्यारां रे पिण असंयती नों इज रूप छै । ते माटे यां सर्व तथा रूप असंयती कही जे । वली साधु रा वेप में रहे पर ईर्या भाषा एषणा आचार श्रद्धा रो ठिकाणो नही ए पिण साधु रो रूप नहीं । ते भणी तथा रूप असंयती इज छे आचार श्रद्धा व्यवहार करी शुद्ध छै ते तथा रूप साधु छै तेहनें दियां निर्जरा छै । अनें तथा रूप असंयती नें दियां एकान्त पाप श्री वीतरागे कह्यो छै । तेह में धर्म कहे ते महामूर्ख छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

केतला एक कहे । असंयती ने दीधां धर्म नहीं पर पुण्य छै । तेहनो उत्तर । जे पुण्य हुवे तो आर्द्रकुमार "पुण्य कहे, त्यांने क्यूं निषेध्या । ते पाठ लिखिये छै ।

सिणायगाणं तु उवे सहस्से जे भोयए णित्तिए माहणाणं ।
ते पुण्ण खंधं सुमहं जणित्ता भवंति देवा इइ वेय वाओ ॥४३॥
सिणायगाणं तु उवे सहस्से जे भोयए णित्तिए कुलालयाणं।
से गच्छइ लोलुया संपगाढे तिव्वाभितावी णरगाहि सेवी ॥४४॥
दयावरं धम्म उगंच्छमाणे वहावहं धम्म पसंसमाणे ।
एगंपि जे भोअयइ असीलं णिवोणि संजाइ कओ सुरेहिं ॥४५॥

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ६ गा० ४३-४४-४५)

हिवे आर्द्र कुमार प्रति ब्राह्मण पोता नो मार्ग देखाड़े छै. सि० स्नातक षट् कर्म ना करणहार निरन्तर वेद नां भणनहार आपणां आचार नें विषे तत्पर एहवा ब्राह्मण उ० वे सहस्र प्रति जे० जे पुरुष णि० नित्य भो० जिमाड़े त्यांने मनो वांच्छित आहार आवे ते० ते पुरुष पु० पुण्य नों स्कंध छ० घणो एक जे० उपार्जी नें भ० थाय दे० देवता इ० इसो हमारे वे० वेदनों वचन छै इम जाणी ए मार्ग वेदोक्त छै ते तू आदर एहवा ब्राह्मणा ना वचन सांभली आर्द्रकुमार कहै छै ॥ ४३ ॥

अहो ब्राह्मणो ! जे सि० स्नातक ना उ० वे सहस्र जे० जे दातार भो० जिमाड़े णि० नित्य ते स्नातक केहवा छै कु० जे आमिष नें अर्थे कुले कुले भमें ते कुलाटक मार्जार जाणवा ते सरीखा ते ब्राह्मण जाणवा जिणें कारणे एह पिण सावद्य आहार वांच्छता छता सदाइ घर घर नें विषे भमें एहवा ने जिमाड़े 'ते कुपात्र दान नें प्रमाणें से० ते. ग० जाइ लो० लोलुपी ब्राह्मण सहित मांस नें गृद्धी पणें करी. ति० तीव्र वेदनां ना सहनहार एतावता तेत्रीस सागरोपम पर्य्यंत ण० नरके नारकी थाइ इत्यादि ॥ ४४ ॥

वलि आर्द्रकुमार कहे छै. द० दया रूप व० प्रधान ध० धर्म्म नें उ० उगंछतो निंदतो व० हिंसा. ध० धर्म्म प० प्रशंसतो अ० शील रहित अशील व्रत. ए० एहवा एक नें जे भो० जीमाड़े ते णि० नृप राजा अथवा अनेराइ ते णि० नरक भूमि जाइ जिणे कारणें नरक मांही सदाही कृष्ण अन्धकार रात्रि सरीखो काल वर्ते छै तिहां जा० जाइ एह वचन सत्य करो मानो तुमे कहो जे देवता थाइ ते मृषा एहवा पुरुष नें असुर नें विषे पिण गति न जाणवी तो क० देवता विमाणिक किहां थी थाइ ॥ ४५ ॥

अथ अठे आर्द्र मुनि नें ब्राह्मणां कह्यो जे पुरुष वे हजार ब्राह्मण नित्य जिमाड़े ने महा पुण्य स्कंध उपार्जी देवता हुइं एहवो हमारे वेदनों वचन छै तिवारे

आर्द्र मुनि बोल्या अहो ब्राह्मणों ! जे माँसना गृद्धी घर घर नें विषे मार्जार नी परे भ्रमण करनार एहवा वे हजार कुपात्र ब्राह्मणां नें नित्य जीमाड़े ते जीमाड़नहार पुरुष ते ब्राह्मणां सहित बहु वेदनां छै जेहनें विषे एहवी महा असह्य वेदनायुक्त नरक नें विषे जाई अनें दयारूप प्रधान धर्म्म नी निंदा नो करणहार हिंसादिक पंच आश्रव नीं प्रशंसा नो करणहार एहवो जे एक पिण दु:शीलवंत निर्व्रती ब्राह्मण जीमाड़े ते महा अन्धकार युक्त नरक मे जाई तो जे एहवा घणां कुपात्र ब्राह्मणां नें जीमाड़े तेहनों स्यूं कहिवो अनें तमें कहो छो जे जीमाड़नहार देवता थाई तो हमें कहां छां जे एहवा दातार नें असुरादिक अधम देवता में पिण प्राप्ति नहीं तो जे उत्तम विमाणिक देवता नीं गति नीं आशा तो एकान्त निराशा छै। एहवो आर्द्र मुनि ब्राह्मणां ने कह्यो। तो जोवोनी जे असंयती ने जिमायां पुण्य हुवे, तो आर्द्र मुनि पुण्य ना कहिणहार ने क्यूं निषेध्या नरक क्यूं कही। ते उपदेश में पिण पाप कहिणो नहीं तो नरक क्यूं कही। तिवारे केइ अज्ञानी कहे—ए तो ब्राह्मणां ने पात्र बुद्धे जिमाड्यां नरक कही छै। तेहने पात्र जाण्या ऊंधी श्रद्धा थी नरक जाय। इम कुहेतु लगावे। तेहने इम कहीजे। इहां तो जिमाड्यां नरक कही छै। अने ब्राह्मण पिण इमहिज कह्यो जे ब्राह्मण जिमाड़े तेहने पुण्य बंधे देवता हुवे हमारा वेद में इम कह्यो परं इम तो न कह्यो हे आर्द्रकुमार! ब्राह्मणां नें पात्र जाण. ए ब्राह्मण सुपात्र छै इम तो कह्यो नहीं। ब्राह्मण तो जिमावा नो इज प्रश्न कियो। तिवारे आर्द्रमुनि जिमाड़वा ना फल बताया। जे "भोयए" एहवो पाठ छै। जे ब्राह्मणां ने भोजन करावे ते नरक जावे इम कह्यो पिण दीर्घ संसारी जीव पाठ मरोड़ता शंके नहीं। वली केई मतपक्षी इम कहे—ए आर्द्रकुमार चर्चा रा वाद में कह्यो छै। ते आर्द्रकुमार किस्यो केवली थो। नरक कही ते तो ताण में कही छै। इम कहे—तेहनें इम कहिणो। आर्द्रमुनि तो शाक्यमति पाषंडी गोशाला ने बौद्धमति नें एक दण्डियां ने हस्ती तापस ने एतला ने जवाब दीधां चर्चा कीधी तिवारे पिण केवल ज्ञान उपनो न थो—ते साचा किम जाण्यां। गोशालादिक ने जवाब दीधां—ते साचा जाण्या तो भूठो ए किम जाण्यो। ए तो सर्व साचा जाब दीधा छै। अनें भूठो कह्यो होवे तो भगवान् इम क्यूं न कह्यो। हे आर्द्रमुनि! और तो जवाब ठीक दीधा पिण ब्राह्मणां ने जवाब देतां चूक्यो "मिच्छामि दुक्कडं" दे इम तो कह्यो नहीं। ए तो सर्व जवाब सिद्धान्त रे

न्याय दीधा छै। अनें आप रो मत थापवा आर्द्रकुमार मुनि ने झूठो कहै ते मृषा-वादी जाणवा। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १० बोल सम्पूर्ण ।

वली भग्गु रे पुत्रां पिण पिताने इम कह्यो, ते पाठ लिखिये छै।

वेया अहीया न भवंतिताणं भुत्तादिया निंति तमंत मेणं।
जायाय पुत्ता न हवंति माणं कोणाम ते अण मन्नेजएयं॥

(उत्तराध्ययन अ० १४ गा० १२)

वेद भणावा हुन्ती न० नहीं. भ० थाय जीवा ने त्राण शरण अनें भु० ब्राह्मण नें जिमायां हुन्ता ने पहुंचाडे तमतमा नरक ने विषे. णं० कहतां वचनालङ्कार जा० आत्मा थकी ऊपना. पु० पुत्र न० न थाय नरकादिके पड़ता जीवां नें त्राण शरण अनें जो पुत्र थी शिवगति होवे तो दान धर्म निरर्थक ते भणी इम छै. ते माटे. को० कुण नाम सभावनो. ते० तुम्हारू वचन अ० मानें ए पूर्वोक्त वेदादिक भणवो ते एतले विवेकी हुवे ते तुम्हारू वचन भला करी न जाणे।

अथ इहां भग्गु ने पुत्रां कह्यो—वेद भण्या त्राण न होवे। ब्राह्मण जिमायां तमतमा जाय तमतमा ते अंधारा में अंधारा ते एहवी नरक में जाय। इम कह्यो—जो विप्र जिमायां पुण्य बंधे तो नरक क्यूं कही। इहां केइ इम कहै एहवो भग्गु ना पुत्रां कह्यो ते तो गृहस्थ हुन्ता त्यांरे झूठ बोलवा रा किसा त्याग था। इम कहे त्यांने इम कहिणो। जे भग्गु ना पुत्रां तो घणा बोल कह्या छै। वेद भण्या त्राण शरण न हुवे। पुत्र जन्म्या पिण दुर्गति न टले। जो ए सत्य छै तो ए पिण सत्य छै। और बोल तो सत्य कहै—आपरी श्रद्धा अटके ते बोल नें झूठो कहै। त्यां जीवां नें किम सम-झाविये। वली भग्गु जा पुत्रां नें गणधर भगवन्ते सराया छै। ते किम तेहनी पहिली ग्यारमी गाथा में इम कह्यो छै। "कुमारगा ते पसमिक्खवक" एहनो अर्थ— "कुमारगा" कहितां बेहुं कुमार "ते पसमिक्ख०" कहिता आलोची विमासी विचारी ने वचन बोलावे छै। इम गणधरे कह्यो विमासी आलोची बोले तेहनें झूठा किम कहिये। तथा केतला एक इम कहे ए तो भग्गु ना पुत्रां कह्यो—हे पिताजी! तुम्हें कह्या श्रद्धयां तमतमा ते मिथ्यात्व लागे इम अयुक्ति लगावी तमतमा मिथ्यात्व

ने थापे। पिण इहां तमतमा शब्द कह्यो—ते नरक ने कही छै। पर मिथ्यात्व ने न कह्यो उत्तराध्ययन अवचूरी में पिण इम कह्यो छै ते अवचूरी लिखिये छै।

"भोजिता द्विजा विप्रा नयन्ति प्रापयन्ति तमसोपि यत्तमस्तस्मिन् रौद्रे रौरवादिके नरके वा वाक्यालंकारे।"

अथ इहां अवचूरी में पिण इम कह्यो तम अन्धकार में अन्धारो पहवी नरक में जावे। तमतमा शब्द रो अर्थ नरकहीज कह्यो, रौरवादिक नरका वासानों नाम कही बतायो छै। तो जोवोनी विप्र जिमायां नरक कही अने गणधरे कह्यूं विमासी वाल्या इम सराया छै। तो असंयती ने दियां पुण्य किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ११ बोल सम्पूर्ण।

तिवारे कोई इम कहे। सहजे पेट भरया अनुकम्पा ने अर्थ विप्र जिमांया नरक जाय तो श्रावक पिण विप्र जिमावे छै। ते तो नरक जाय नहीं. ते माटे ए तो मिथ्यात्व थकी नरक कही छै। अनें जे दान थी नरक जाय तो प्रदेशी दानशाला मंडाई ते तो नरक गयो नहीं। तेहनों उत्तर—ए समचे माठी करणी रा माठा फल कह्या छै। सूत्र में मांस खाय पंचेन्द्रिय हणे ते नरक जाव पहवो कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

णेरइआ उयकम्मा सरीरप्पओग बंधेणं भंते! पुच्छा गोयमा! महारंभयाए. महा परिग्गहियाए. पंचिंदिय वहेणं कुणिमाहारेणं. णेरइया उयकम्मा. सरीरप्पओग णामाए कम्मस्स उदएणं णेरइया उयकम्मा शरीर जाव प्पओग बंधे।

(भगवती श० ८ उ० ६)

ने० नारकी आयु. कर्म शरीर प्रयोग बन्ध केम हुइ तेहनी. पु० पृच्छा हे गौतम! म० महारंभ कंपणादिक थी म० अपरिमाण परिग्रह तेहने करी ने पंचेन्द्रिय जीव नो जे वध तेणे करी ने मांस भोजन तेणें करी ने ने० नारकी नों आयुकर्म शरीर प्रयोग नाम कर्म ना उदय थी. ने० नारकी आयु कर्म शरीर. जा० यावत् प्रयोग बंध हुवे।

अथ इहाँ कह्यो महारंभी, महापरिग्रही, मांस खाय, पंचेन्द्रिय हुणे ते नरक जाय, तो चेडो राजा वरणनागनतुओ इत्यादिक घणा जणा संग्राम करी मनुष्य मास्या पिण ते तो नरक गया नहीं। तथा वली भग० श० २ उ० १ वारह प्रकारे वाल मरण थी अनन्ता नरक ना भव कह्या तो वाल मरण रा धणी सघलाइ तो नरक जाय नहीं। वली स्त्री आदिक सेव्यां थी दुर्गति कही तो श्रावक पिण स्त्री आदिक सेवे परं ते तो दुर्गति जाय नहीं। ए तो माठा कर्त्तव्य ना समचे माठा फल बताया छै। ए माठा कर्त्तव्य तो दुर्गति ना इज कारण छै। अने जो और करणीरा जोरसूं दुर्गति न जाय तो पिण ते माठा कर्त्तव्य शुद्ध गति ना कारण न कहिये ते तो दुर्गति ना इज हेतु छै। मांस मद्य भखै स्त्री आदिक सेवे वाल मरण मरे ए नरक ना कारण कह्या। तिम विप्र जिमावे एपिण नरक ना कारण छै। अनें ज इहां मिथ्यात्व करी नरक कहे तो मिथ्यात्व तो घणा रे छै। अनें सर्व मिथ्यात्वी तो नरक जाये नहीं। केइ मिथ्यात्वी देवता पिण हुवे छै। जे देवता हुवे ते और करणी सूं हुवे। परं मिथ्यात्व ले नरक नो हेतु इज छै। तिम विप्र जिमावे ते नरक नो हेतु कह्यो छै तो पुण्य किम कहिये। उपदेश में पाप कह्यां अन्तराय किम कहिये। इम कह्यां अन्तराय पड़े तो आर्द्र मुनि भगु ना पुत्रांने, नरक न कहिता अन्तराय थी तो तें पिण डरता था। परं अन्तराय तो वर्त्तमान काल मे इज छै। उपदेश में कह्यां अन्तराय न थी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १२ बोल सम्पूर्ण।

न्याय थकी वली कहिये छै। कोई कहे मौन वर्त्तमानकाल में किहां कही छै। तेहनो जवाब कहे छै।

जेयदाणं पसंसंति-वह मिच्छंति पाणिणो
जेयणं पड़िसेहंति-वित्तिच्छेयं करन्ति ते ॥२०॥
दुहओ वि ते ण भासंति-अत्थि वा णत्थि वा पुणो
आयं रहस्स हेच्चाणं-निव्वाणं पाउणंति ते ॥२१॥

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ११ गा० २०-२१)

जे० जती घणा जीवां ने उपकार थाइ छै. इम जाणी ने दा० दान ने प्रशंसे प० ते. परमार्थ ना अजाण. वध हिंसा इ० इच्छे वांच्छे. पा० प्राणी जीव नो. जे गीतार्थ दान

ने निषेधे ते वि० वृत्तिच्छेद वर्तमान काले पामवानो उपाय तेहनों विघ्न करे. ते अविवेकी ॥ २० ॥ वली राजादिक साधु ने पूछे तिवारे जे करिवो ते दिखाड़े छै दु० बिहुं प्रकारें ते० ते साधु. अ० न भाषे. अ० अस्ति पुण्य छै। न० एणो पुण्य नहीं छै. इम न कहे। पु० वली मौन करी बिहुं भाहिलो एम इम प्रकारे बोले तो स्यूं थाय ते कहे छै। आ० लाभ थाय किसानों. र० पापरूप रज तेहनों लाभ थाय ते भणी अविध भाषवो छांडवे निरवद्य भापवे करी नि० मोक्ष. पा० पामे. ते० ते साधु ॥ २१ ॥

अथ अठे इम कह्यो जे सावद्य दान प्रशंसे ते छहकाय नो वधनो वंछणहार कह्यो। अनें जे वर्त्तमान काले निषेधे-ते अन्तराय रो पाडणहार कह्यो। वृत्तिच्छेद नो करणहार तो वर्त्तमान काले निषेध्यां कह्यो पिण और काल में कह्यो नहीं। अनें सावद्य दान प्रशंसे तेहनें छवकाय नी घात नो वंछणहार कह्यो, तो देणवाला ने घाती किम कहिये। जिम कुशील नें प्रशंसे तेहनें पापी कहिये, तो सेवणवाला नें स्यूं कहिवो। तिम सावद्य दान प्रशंसे तेहने घाती कह्यो तो देवणवाला नें स्यूं कहिवो दान प्रशंसे ते तो तीजे करण छै ते पिण घाती छै तो जे दान देवे ते तो पहिले करण घाती निश्चय ही छै तेहमें पुण्य किहां थकी। अनें वर्त्तमान काले निषेध्यां वृत्तिच्छेद कही। पिण उपदेश में वृत्तिच्छेद कह्यो नहीं। तिवारे कोई कहे—ए वर्त्तमान काल रो नाम तो अर्थ में छै। पिण पाठ में नही तिण ने इम कहिणो ए अर्थ मिलतो छै अनें पाठ में वृत्तिच्छेद कही छै। दान लेवे ते देवे छै ते वेलां निषेध्यां वृत्तिच्छेद हुवे अनें जे लेवे ते देवे न थी तो वृत्तिच्छेद किम हुवे। ते माटे वृत्तिच्छेद वर्त्तमानकाल में इज छै। वली "सूयगडांग" नी वृत्ति शीलाङ्काचार्य कीधी ते टीका में पिण वर्त्तमान काल रो इज अर्थ छै। ते टीका लिखिये छै।

"एन मेवार्थ पुनरपि समासतः स्पष्टतर विभणिषुराह—

जेयदाण मित्यादि—ये केचन प्रपा सत्रादिक दान बहूनां जन्तूना मुपकारीति कृत्वा प्रशसन्ति (श्लाघन्ते)। ते परमार्थानभिज्ञाः प्रभूततर प्राणिनां तत्प्रशंसा द्वारेण वधं (प्राणातिपातं) इच्छन्ति। तद्दानस्य प्राणातिपात मन्तरेणाऽनुपपत्तेः। ये च किल सूक्ष्मधियो वय मित्येव मन्यमाना आगम सद्भावाऽनभिज्ञा. प्रतिषेधन्ति (निषेधयन्ति) तेऽप्यगीतार्थाः प्राणिनां वृतिच्छेदं वर्त्तनोपायविघ्नं कुर्वन्ति" ॥ २० ॥

"तदेवं राज्ञा अन्येन चैश्वरेण कूप तडाग सत्रदाना द्युद्यतेन पुण्य सद्भावं

पृष्टैर्मुमुक्षुभि र्यद्विधेय तद्दर्शयितुमाह । दुहओवीत्यादि—यद्यस्ति पुण्यमित्येवमू-चुस्ततोऽनन्तानां सत्वानां सूक्ष्म वादराणां सर्वदा प्राणत्याग एव स्यात् । प्रीणन-मात्रन्तु पुनः स्वल्पानां स्वल्पकालीयम्—अतोऽस्तीति न वक्तव्यम् । नास्ति पुण्य मित्येवं प्रतिषेधेऽपि तदर्थिना मन्तरायः स्यात्—इत्यतो द्विविधा प्यस्ति नास्ति वा पुण्य मित्येवं ते मुमुक्षवः साधवः पुन र्न भाषन्ते । किन्तु पृष्टैः सद्भिर्मौन मेव समाश्रयणीयम् । निर्वन्धेत्वस्माकं द्विचत्वारिंदोष वर्जित आहारः कल्पते । एवं विषये मुमूक्षूणा मधिकार एव नास्तीयुक्तम्

> सत्यं वप्रेषु शीतं-शशि कर धवल वारि पीत्वा प्रकाम
> व्युच्छिन्ना शेष तृष्णाः-प्रमुदित मनसः प्राणिसार्था भवन्ति ।
> शेषं नीते जलौघे-दिनकर किरणै र्यान्त्यनन्ता विनाशं
> तेनो दासीन भावं-व्रजति मुनिगणः कूपवप्रादि कार्ये ॥१॥

तदेव मुभयथापि भाषिते रजसः कर्मण आयो लाभो भवती त्यतस्तमाय रजसो—मौनेनाऽनवद्य भाषणेन वा हित्वा (त्यक्त्वा) तेऽनवद्य भाषिणो निर्वाणं मोक्षं प्राप्नुवन्ति ॥ २१ ॥

इहां शीलाङ्काचार्य कृत २० वीं गाथा नी टीका में इम कह्यो जे पौ सत्तूकारादिक ना दान ने जे घणा ने उपकार जाणी ने प्रशंसे, ते परमार्थ ना अजाण प्रशंसा द्वारा करी घणा जीवा नो वध वाच्छे छै। प्राणातिपात विना ते दान नी उत्पत्ति न थी ते माटे। अनें सूक्ष्म (तीक्ष्ण) बुद्धि छै म्हारी एहवो मानतो आगम सद्भाव अजाणतो तिण नें निषेधे, ते पिण अविवेकी प्राणी नी वृत्तिच्छेद ने वर्त्तमानकाले पामवानो विघ्न करे। इहां तो दान वर्त्तमानकाले निषेध्यां अन्तराय कही छै। पिण अनेरा कालमे अन्तराय कही न थी। अने वली २१ वीं गाथा नी टीका में पिण इम हीज कह्यो। राजादिक वा अनेरा पुरुष कूआ तालाव पौ दानशाला विषे उद्यत थयो थको साधु प्रति पुण्य सद्भाव पूछै, तिवारे साधु ने मौन अवलम्बन करवी कही। पिण तिण काल नो निषेध कह्यो न थी। अनें बड़ा टब्बा में पिण वर्त्तमानकाल रो इज अर्थ कह्यो ते अर्थ मिलतो छै ते

वर्तमान काल विना तो भगवती श० ८ उ० ६ असंयती ने दियां एकान्त पाप कह्यो। तथा सूयगडाङ्ग श्रु० २ उ० ६ गा० ४५ ब्राह्मण जिमायां नरक कही छै। तथा ठाणांग ठाणे १० वेश्यादिक ने देवे ते अधर्म दान कह्यो। तथा सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ६ गा० २३ साधु विना अनेरा ने देवो ते संसार भ्रमण ना हेतु कह्यो। इत्यादिक अनेक ठामे सावद्य दान रा फल कडुआ कह्या। ते माटे इहां मौन वर्त्तमान काल में इज कही। ते अर्थ पाठ थी मिलतो छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १३ बोल सम्पूर्ण।

एतले कह्ये न मानें तेहनें वली सूत्र नी साक्षी थकी न्याय देखाड़े छै।

दक्खिणाए पडिलंभो अत्थिवा नत्थिवा पुणो।
नवियागरेज्ज मेहावी संति मग्गंच बूहए॥

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३)

द० दान तेहनों प० गृहस्थ देवो लेणहार ने लेवो इसो व्यापार वर्त्तमान देखी अ० अस्ति नास्ति गुण दूषण कांई न कहे. गुण कहितां असंयमनो अनुमोदना लागे दूषण कहितां वृत्तिच्छेद थाइ इण कारण अ० अस्ति नास्ति न कहे मे० मेधावी हित्ने साधु किम बोले. स० ज्ञान दर्शन चारित्र रूप बु० वधारे एतावता जिण वचन बोल्यां असंयम सावद्य ते थाइ तिम न बोले।

अथ इहां पिण इम कह्यो—दान देवे लेवे इसो वर्त्तमान देखी गुण दूषण न कहे। ए तो प्रत्यक्ष पाठ कह्यो जे देवे लेवे ते वेलां पाप पुण्य नहीं कहिणो। "दक्खिणाए" कहितां दान नो "पडिलंभ" कहितां आगला नें देवो ते प्राप्ति एतले दान देवे ते दान नी आगला ने प्राप्ति हुवे ते वेलाँ पुण्य पाप कहिणो वर्ज्यो। पिण और वेलां वर्ज्यो नहीं। अनें किण ही वेलां में पाप रा फल न बतावणा तो अधर्म दान में पाप क्यूं कहे। असंयती नें दीधां एकान्त पाप भगवन्ते क्यूं कह्यो। आनन्द श्रावक अभिग्रह धार्यो जे हूं अन्य तीर्थी ने देवूं नहीं। ए अभिग्रह क्यूं

घाल्यो । आर्द्र कुमार विप्र जिमायां नरक क्यूं कही । भग्गु ना पुत्रां विप्र जिमाया तमतमा क्यूं कही । त्यांनें गणधरां क्यूं सराया । इत्यादिक सावद्य दान ना माठा फल क्यूं कह्या । जो उपदेश में पिण छै जिसा फल न बतावणा तो एतले ठामे कडुआ फल क्यूं कह्या । परं उपदेश में आगला नें समझावा सम्यग्दृष्टि पमाडवा छै जिसा फल बतायां दोष नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १४ बोल सम्पूर्ण ।

तथा ज्ञाता अ० १३ नन्दण मणिहारा री दान शाला नों विस्तार घणो चाल्यो छै ते पाठ लिखिये छै ।

ततेणं णंदे तेहिं सोलसेहिं रोयायंकेहिं अभिभूए समाणे णंदाए पुक्खरिणीए मुच्छित्ते ४ तिरिक्ख जोणिएहिं बद्धाए बद्धयए सिए अट्ट दुहट्ट वंसट्टे काल मासे कालं किच्चा णंदा पोक्खरिणीए दद्दुरीए कुच्छिंसि दद्दुरत्ताए उववण्णे ॥ २६ ॥

(ज्ञाता अ० १३)

त० तिवारे ण० नन्दन नामक मणिहारो ते० तिण १६ रोगां थी अ० पराभव पामी ने णं० नंदा नामक पुष्करिणी में मूच्छित थको ति० तिर्यंच नी योनि बांधी ने अ० अति रुद्र ध्यान ध्यावी नें का० काल अवसर ने विषे का० काल करी नें णं० नन्दा नामक पुष्करिणी में द० डेडकपणे ऊपनो

अथ इहां कह्यो—जे नन्दन मणिहारो दान शालादिक नों घणो आरम्भ करी मरने डेडको थयो । जो सावद्य दान थी पुण्य हुवे तो दानशालादिक थी घणा असयती जीवां रे साता उपजाई ते साता रा फल किहां गयो । कोई कहै मिथ्यात्व थी डेडको थयो तो मिथ्यात्व तो घणा जीवां रे छै । ते तो संसार में गोता खाय रह्या छै । पिण नन्दन रे तो दानशालादिक नो वर्णन घणो कियो । घणा असंयती जीवां रे शान्ति उपजाई छे । तेहना अशुभ फल ए प्रत्यक्ष दीसे छै ।

वली "रायपसेणी" मे प्रदेशी दानशाला मंडाई कही छै। राज रा ४ भाग करने आप न्यारो होय धर्म ध्यान करवा लाग्यो। केशी स्वामी विहूं इ ठामे मौन साधी छै। पिण इम न कह्यो—हे प्रदेशी ! तीन भाग में तो पाप छै। परं चौथो भाग दानशाला रो काम तो पुणय रो हेतु छै। थारो भलो मन उठ्यो। ओ तो आच्छो काम करिवो विचार्‍यो। इम चौथा भाग नें सरायो नहीं। केशी स्वामी तो विहू सावद्य जाणी ने मौन साधी छै। ते माटे तीन भाग रो फल जिसोई चौथे भाग रो फल छै। केइ तीन भाग मे पाप कहे चौथा भाग में पुणय कहे। त्यांने सम्यग्दृष्टि न्यायवादी किम कहिये। केशी स्वामी तो प्रदेशी १२ व्रत धार्‍यां पछें एहवूं कह्यो। जे तू रमणीक तो थयो पिण अरमणीक होय जे मती। तो जाणोनी १२ व्रत थी रमणीक कह्यो छै। पिण दानशाला थी रमणीक कह्यो नथी। डाहा हुवे तो विचारि जोडजो।

इति १५ बोल संपूर्ण।

तिवारे केइ कहे—असंयती ने दियां धर्म पुणय नही तो सूत्र में १० दान क्यूं कह्या छै। ते माटे १० दान ओलखवा भणी तेहना नाम कहे छै।

दसविहे दाणे प० तं०—
अणुकंपा संगहे चेव भया कालुणि एतिय।
लज्जाए गार वेणंच अधम्मेय पुण सत्तमे।
धम्मे अट्ठमे वुत्ते काहिइय कयन्तिय॥

(सूत्र ठाणांग ठा० १०)

द० दश प्रकारे दान प० परूप्या तं० ते कहे छै। अ० अनुकम्पा दान ते कृपाये करी दीनां अनाथां नें जे दीज ते दान पिण अनुकम्पा कहिये कोई रांक अनाथ दरिद्री कष्ट पड्यां रोगे शोके हैराणां ने अनुकम्पाए दीजे ते अनुकम्पा दान। (१) स० सग्रह दान ते कष्टादिक ने विषे साहाय्य ने अर्थे दान दे अथवा गृहस्थ ने आपी ने मुकावे। (२) भ० भय करी दान

दे ते भय दान। (३) का० शोक ते पुत्र वियोगादिक जे दान ए म्हारु आगल सुखी थाये ते माटे रक्षा निमित्ते दान आपे तथा मुआ नें केडे वाराढिक नो करवो। (४) लज्जा ए करी जे दान दीजै ते लज्जा दान। (५) गा० गर्वे करी खर्चे ते गर्व दान ते नाटकिया मलादिक ने तथा विवाहादिक यश ने अर्थे। (६) अ० अधर्म पोषणहारो जे दान ते अधर्म दान गणिकादिक नूं। (७) ध० धर्म नों कारण ते धर्म दान इज कहिये ते सुपात्र दान। (८) का० ए मुझ ने कांई उपकार करस्ये एहवूं जे दे ते काहि दान। क० इणे मुझ ने घणी वार उपकार कीधो हुं पिण उसींगल थायवानें काजे कांइ एक आपूं इम जे देइ ते कतन्ती दान। (१०)

अथ इहां १० प्रकार रा दान कह्या तिण में धर्म दान री आज्ञा छै। ते निरवद्य छै बीजा नव दानां री आज्ञा न देवे। ते माटे सावद्य छै असंयती ने असूझता अशनादिक ४ दीधां एकान्त पाप भगवती श० ८ उ० ६ कह्यो। ते माटे ए नव दानां में धर्म-पुण्य-मिश्र-नहीं छै। कोई कहे एक धर्म दान एक अधर्मदान बीजां आठां में मिश्र छै। केइ एकलो पुण्य छै इम कहे, एहनो उत्तर—जो वेश्यादिक नो दान अधर्म में थापे विषय रो दोष बताय नें। तो बीजा आठ पिण विषय में इज छै। भय रो वाल्यो देवे ते पिण आप री विषय कुशल राखवा देवे छै। मुआ केडे खर्चादिक करे ए म्हारो पुत्र आगले भवे सुखी थायस्ये इम जाणी आरम्भ करे ते पिण विषय में छै। गर्वदान ते अहंकार थी खर्चे मुकलावों पहिरावणी आदि ए पिण विषय में इज छै। नेहतादिक घाले ए मुझ ने पाछो देस्ये ए पिण विषय में छै। बाकी रा ४ दान पिण इमज कोई आप रे विषय ने काजे कोई पारकी विषय सेवा में देवे—ए नव हीदान वीतराग नीआज्ञा में नहीं वारे छै। लेणवाला अव्रत में लेवे तो देणवाला ने निर्जरा पुण्य किहां थकी होसी। ठाणाङ्ग ठाणा ४ उ० ४ च्यार विसामा कह्या। प्रथम विसामो श्रावक ना व्रत आदर्या ते, बीजो सामायक देशावगासी तीजो पोषो चौथो संथारो सावद्य रूप भार छोड्यो ते विसामो (विश्राम) तो ए ६ दान चार विसामा बाहिरे छै। धर्मदान विसामा माहि छै। ए न्याय तो चतुर हुवे तो ओलखे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १६ बोल सम्पूर्ण।

कोई कहे दान क्यूं कह्यो. तो हिवे इण ऊपर १० प्रकार रो धर्म अनें १० प्रकार रो स्थविर कहे छै ।

दस विहे धम्मे प० तं० गाम धम्मे, नगर धम्मे, रट्ठ धम्मे, पासंडधम्मे. कुलधम्मे, गणधम्मे, संघधम्मे. सुयधम्मे, चरित्तधम्मे. अत्थिकाय धम्मे ।

(ठाणाङ्ग ठाणा १०)

द० दश प्रकारे धर्म्म गा० ग्राम ते लोक ना स्थानक ते हेतु धर्म आचार ते ग्राम ? जुई जुई अथवा इन्द्रिय ग्राम तेहनो ध० विषय नो अभिलाप न० नगरधर्मते नगराचार ते नगर प्रते जुआ जुआ र० रष्ट धर्म ते देशाचार पाषडी नूं धर्म ते पाषड आचार. कु० कुल धर्म ते उग्रादिक कुल नो आचार अथवा चन्द्रादिक साधु ना गच्छनूं समूह रूप तेहनों धर्म समाचारी ग० गण धर्म ते मह्लादिक गणनो स्थिति अथवा गण ते साधु ना कुलनूं समुदाय ते गण कोटि-कादिक तेहनूं धर्म समाचारी स० सघ धर्म ते गोठी नो आचार अथवा साधु ना सगत समुदाय अथवा चतुर्वर्ण सघ नों धर्म आचार सु० श्रुत ते आचारांगादि क० ते दुर्गति पडतां प्राणी ने धरे ते भणी ।

अ० प्रदेश तेहनी जे का० समूह अस्तिकाय ते इज जे गति ने विषे जे पुद्गलादिक धरिवा थकी अस्तिकाय धर्म

दस थेरा पं० तं० गाम थेरा. नगर थेरा. रट्ठ थेरा. पासंड थेरा. कुल थेरा. गण थेरा, संघ थेरा. जाइ थेरा. सुय थेरा. परियाय थेरा.

(ठाणाङ्ग ठाणा १०)

हिवे १० स्थविर कहे छै । ग्राम धर्मादि तो स्थविरादिक न हुवे ते भणी स्थविर कहे छै । द० दस दुःस्थित जन नें मार्ग ने विषे स्थविर करे ते स्थविर तिहां जे ग्राम १ नगर २ देश ३ मे विषें बुद्धिवन्त आदेज वचन मोटी मर्याद रा करनहार ग्राम ते ग्रामादिक स्थविर धर्मोपदेश श्रद्धा नों देणहार ते हीज स्थिर करवा थको स्थविर जे लौकिक लोकोत्तर कुल ग० गण स० सघनो मर्याद नों करणहार वडेरा ते कुलादिक स्थविर वयस्थविर ज० साठ वर्ष नो वय नों छु० श्रुत स्थविर ते ठाणाङ्ग समवायाङ्ग धरणहार ते प० प्रव्र्याय स्थविर ते बीस वर्ष नो चारि-त्रियो ।

अथ ए १० धर्म १० स्थविर कह्या। पिण सावद्य निरवद्य ओलखणा। अनें दान १० कह्या. ते पिण सावद्य निरवद्य पिछाणणा। धर्म अनें स्थविर कह्या छै, पिण लौकिक लोकोत्तर दोनूं छै। जिम "जम्बूद्वीपपनत्ति"में ३ तीर्थ कह्या मागध वरदाम प्रभास पिण आदरवा जोग नहीं तिम सावद्य धर्म स्थविर दान पिण आदरवा योग्य नहीं। सावद्य छांडवा योग्य छै। विवेकलोचने करी विचारि जोइजो।

इति १७ बोल सम्पूर्ण।

कोई कहे ९ प्रकारे पुण्य बंधे ए कह्यो छै। ते माटे पाठ कहे छै।

नव विहे पुराणे प० तं० अराण पुराणे. पाणपुराणे. लेणपुराणे. सयणपुराणे वत्थपुराणे. मणपुराणे. वयपुराणे. काय-पुराणे. नमोक्कारपुराणे।

(ठाणांग ठाणा ९)

न० नव प्रकारे पुण्य परूप्या ते० ते कहे छै अ० पात्र ने विषे अन्नादिक दीजे तें थकी तीर्थंकर नामादिक पुण्य प्रकृति नो बंध तेह थकी अनेरा ने देवो ते अनेरी प्रकृति नो बंध पा० तिम हिज पाणी नों देवो ल० घर हाटादिक नो देवो स० सथारादिक नों देवो व० वस्त्र नों देवो म० गुणवन्त ऊपर हर्ष व० वचन नी प्रशंसा का० पर्युपासना नों करिवो. न० नमस्कार नों करवो

अथ इहां नव प्रकार पुण्य समुच्चे कह्यो। ते निरवद्य छै। मन. वचन. काया, पुण्य नमस्कार पुण्य पिण समुच्चे कह्या। पिण मन वचन. काया निरवद्य प्रवर्त्तायां पुण्य छै। सावद्य में पुण्य नहीं। तिम बीजा पिण निरवद्य प्रवर्त्तायां पुण्य छै। सावद्य मे पुण्य नहीं। कोई कहे अनेरा ने दीधां अनेरी पुण्य प्रकृति छै। तिण रे लेखे किण ही नै दीधां पाप नहीं। अने जे टब्बा में कह्यो पात्र ने विषे जे अन्नादिक नों देवो तेह थकी तीर्थङ्करादिक पुण्य प्रकृति नों बंध, तो आदिक शब्द में तो बयालीसुइ ४२ पुण्य प्रकृति आई। जिम ऋषभादिक कहिवे चौवीसुइ तीर्थङ्कर आया। गोतमादिक साधु कहिवे २४ हजार हि आया। प्राणातिपातादिक पाप

कहिवे १८ पाप आया । मिथ्यात्वादिक आश्रव कहिवे ५ आश्रव आया । तिम तीर्थङ्करादिक पुण्य प्रकृति कहिवे सर्व पुण्य नी प्रकृति आई वली कांई पुण्य नी प्रकृति बाकी रही नहीं । अनेरां ने दीधां अनेरी प्रकृति नो बंध कह्यो छै । ते साधु थी अनेरो तो कुपात्र छै । तेहनें दीधां अनेरी प्रकृति नों बंध ते अनेरी प्रकृति पाप नी छै । पुण्य थी अनेरो पाप धर्म सु अनेरो अधर्म लोक थी अनेरो अलोक जीव थी अनेरो अजीव मार्ग थी अनेरो कुमार्ग दया थी अनेरी हिंसा इत्यादिक बोलसूं ओलखिये । इण न्याय पुण्य थी अनेरी पाप नी प्रकृति जाणवी अनें जो अनेरा ने दियां पुण्य छै । तो अनेरा ने पाणी पायां पिण पुण्य छै । जिम अनेरा नें नमस्कार कियां पाप क्यूं कहे छै । अनेरा नें नमस्कार करण रो सूंस देणो नहीं । पाप श्रद्धा नो नहीं तो आनन्द श्रावके अन्य तीर्थी नें नमस्कार न करिवूं । एहवो अभिग्रह क्यूं धारयो । अनें भगवन्त तो साधु नें कल्पे ते हिज द्रव्य कह्या छै । अनेरा नें दियां पुण्य हुवे तो गाय पुण्णे भैंस पुण्णे रूपौ पुण्णे. खेती पुण्णे डोली पुण्णे. इत्यादिक बोल आणता ते तो आणया नही । तथा वली अनेरां ने दियां अनेरी प्रकृति नों बंध टब्बा में छै । पिण टीका में न थी । ते टीका लिखिये छै ।

"पात्रायान्नदानाद्य त्तीर्थकरादि पुण्यप्रकृति बंधस्तदन्नपुण्यमेवं शयन लेणाति लयन-गृह-शयनं-संस्तारकः"

इहां तो अनेरां ने दियां अनेरी प्रकृति नो बंध. एहवूं तो ठाणाङ्ग नी टीका अभय देव सूरि कीधी तेहमें पिण न थी । इहां तो इम कह्यो जे पात्र ने अन्न देवा थी जे पुण्य प्रकृति नों बंध तेहने "अन्नपुण्णे" कही जे । इहां अन्न कह्यो पिण अन्य न कह्यो । अन्य कह्यां अनेरो हुवे ते अन्य शब्द न थी अन्नपुण्य रो नाम छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १८ बोल सम्पूर्ण ।

अनेरा नें दियां तो भगवती श० ८ उ० ६ एकान्त पाप कह्यो छै । तथा उत्तराध्ययन अध्ययन १४ गा० १२ भृगु ना पुतां विप्र जिमायाँ तमतमा कही छै ।

तथा सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० ६ गा० ४४ आर्द्रकुमार ब्राह्मण जिमायां नरक कही छै। तथा ठाणाङ्ग ठाणे ४ उ० ४ कुपात्र नें कुक्षेत्र कह्या। ते पाठ लिखिये छै।

चत्तारि मेहा प० तं० खेत्तवासी णाम मेगे णो अक्खेत्तवासी एवा मेव चत्तारि पुरिसजाया प० तं० खेत्तवासी णाम मेगे णो अक्खेतवासी।

(ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० ४)

च० चार मेह परूप्या त० ते कहे छै खे० क्षेत्र ते धान नो उत्पत्ति स्थानवसें पिण णो० अक्षेत्र वसें नहीं इम चौभङ्गो जोडवो ए० एणी परे च्यार पुरुष नी जाति प० परूपी त० ते कहिये छै। खे० पात्र ने विषे अन्नादिक देवे णो० पिण कुपात्र ने न देवे कुपात्र ने दे पिण सुपात्र ने न दे मिथ्यादृष्टि तीजे विवेक विकल अथवा मोटा उदार पणा थी अथवा प्रवचन प्रभावनादिक कारण ना वस थको पात्र पिण कुपात्र पिण बेहूं ने दे चौथो कृपण बेहू ने न दे।

अथ इहां पिण कुपात्र दान कुक्षेत्र कह्या कुपात्र रूप कुक्षेत्र में पुण्य रूप बीज किम उगे। डाह्या हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १६ बोल सम्पूर्ण

तथा शकडाल पुत्र गोशाला ने पीठ फलक शय्या. संस्तारादिक दिया—तिहां पहवो पाठ कह्यो। ते लिखिये छै।

तएणं सेसद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी. जम्हाणं देवाणुप्पिया! तुब्भे मम धम्मायरिस्स जाव महावीरस्स सन्तेहिं तच्चेहिं तहि एहिं सब्भेहि सब्भूतेहिं भावेहिं गुण कित्तणं करेहि. तम्हाणं अहं तुब्भे पड़िहारिएणं पीढ़ जाव संथारयणं उवनिमंतेमि नो चेवणं धम्मोतिवा तवोतिवा।

(उपासक दशा अ० ७)

त० तिवारे से० ते स० शकडाल पुत्र स० श्रमणोपासक गोशाला मंखलि पुत्र ने ए० इम बोल्या हे देवानु प्रिय ! तु० तुम्हे माहरा धर्माचार्य ना जा० यावत् महावीर देवता स० छता त० सांचा ह० तेहवा यथाभूत भा० भाव थी गु० गुण कीर्त्तन कह्या ते० ते भणी अ० हूं तु० तुझ ने पा० पाडीहारा पी० बाजोट जाव सथारो उ० आपूं छूं नो० नहीं पिण निश्चय ध० धर्म ने अर्थे त० नहीं तप ने अर्थे

अथ अठे पिण गोशाला ने पीठ फलक शय्या संथारा शकडाल पुत्र दिया । तिहां धर्म तप नहीं इम कह्यूं । तो गोशाला तो तीर्थङ्कर बाजतो थो तिण ने दियां ही धर्म तप नहीं—तो असंयती ने दियां धर्म तप केम कहिये । पुण्य पिण न श्रद्धवो । पुण्य तो धर्म लारे बंधे छै ते शुभयोग छै । ते निर्जरा विना पुण्य निपजे नहीं । ते माटे असंयती ने दियां धर्म पुण्य नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २० बोल सम्पूर्ण ।

वली असंयती ने दियां कडुआ फल कह्या छै । ते पाठ लिखिये छै ।

* सेणं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसिं किंणामएवा. किंगोएवा. कयरंसि. गामंसिवा. नयरंसिवा. किंवादच्चा. पुराणं. दुच्चिणणाणं. दुप्पडिकंताणं. असुभाणं. पावाणं. कम्माणं. पावगं फल वित्ति विसेसं पच्चणु भवमाणो भोच्चा किंवा समायरत्ता केसिंवा पुरा किच्चा जाव विहरइ ।

(विपाक अ० १)

* मुग्ध जनोंको मोहनेके लिये बाईस सम्प्रदायके पूज्य जवाहिरलालजी की प्रिया "प्रत्युत्तर दीपिका" इस पाठपर पञ्चम स्वरमें अलापती है । एवं आपने प्रथम खण्डके १५० पृष्टमें श्री जिनाचार्य जीतमल्ल जी महाराज को इस पाठमें से कुछ भाग चोर लेने का निर्मूल आक्षेप लगाती हुई मिथ्या भाषण की आचार्य परीक्षा में उत्तम श्रेणी द्वारा उत्तीर्ण होती है । अब हम उक्त प्रिया की कोकिल कण्ठता का पाठकों को परिचय देते हैं । और न्याय करनेके लिये आग्रह करते हैं ।

हे पूज्य ! पु० ए पुरुष पु० पूर्व जन्मान्तरे के० कुण हुन्तो कि० किस्यूं नाम हुन्तो किस्यूं गोत्र हुन्तो क० कुण गा० ग्रामे वस्तो न० कुण नगर ने विषे वस्तो कि० कुण अशुद्ध तथा कुपात्र दान दीधो पू० पूर्वले दु० दुश्चीर्ण कर्म करी प्राणातिपातादिक रूढी परे आलोवणा निन्दणा सन्देह रहित तथा प्रायश्चित्त करी टाल्या नहीं अशुभना हेतु पा० दुष्ट भावनों ज्ञानावरणीय आदिक कर्म नों फ० फलरूप विशेष भोगवतो थको विचरे कि० कुण व्यसनादिक क्रोध लोभादि समाचर्या के० पूव कुण कुशीलादि करी अशुभ कर्म उपार्ज्या कुण अभक्ष्य मांसादि भोगव्या।

अथ इहां गोतम भगवन्त ने पूछ्यो। इण मृगालोढे पूर्वे काईं कुकर्म कीधा, कुपात्र दान दीधा। तेहना फल ए नरक समान दुःख भोगवे छै। तो

+ पाठकगण ! कई हस्त लिखित सूत्र प्रतियों में सर्वथा ऐसा ही पाठ है जैसा कि जयाचार्य (जीतमल जी महाराज) ने उद्धृत किया है। और कई प्रतियों में नीचे लिखे हुए प्रकारसे भी है।

"सेणं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसी किणामएवा किंगोएवा कयरंसि गामंसिवा किंवाद्च्चा किंवा भोच्चा किंवा समायरत्ता केसिंवा पुरापोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिकंताणं असुभाणं पावाणं फल वित्ति विसेसं पच्चणुभवमाणे विहरइ।

इस पाठ को मिलाने से जयाचार्य उद्धृत पाठ के बीचमें किंवा दच्चा के आगे "किंवा भोच्चा किंवा समायरत्ता" ये पाठ नहीं है। इसीपर "प्रत्युत्तर दीपिका" चोर लिया चोर लिया कह कर आंसू बहाती है। ये केवल स्वाभाविक ही "प्रत्युत्तर दीपिका" का स्त्री चरित्र है।

पाठक गण ? ज्ञान चक्षु से विचारिये। इस पाठ को न रखने से क्या लाभ और रखने से जयाचार्य को क्या हानि निज सिद्धान्त में प्रतीत हुई। अस्तु— प्रत्युत, इस पाठ का होना तो जयाचार्यकी श्रद्धा को और भी पुष्ट करता है। जैसे कि—

"किंवा भोच्चा" क्या २ मांसादि सेवन किया, ।"किंवा समायरित्ता" क्या २ व्यसन कुशीलादि का समाचरण किया।

इससे तो यह सिद्ध हुआ कि "किंवा दच्चा किंवा भोच्चा किंवासमायरित्ता" ये तीनों एक ही फलके देनेवाले हैं। अर्थात्-कुपात्र दान मांसादि सेवन व्यसन कुशलादिक ये तीनों ही एक मार्गके ही पथिक हैं। जैसे कि "चोर-जार-ठग ये तीनों समान व्यवसायी हैं। तैसे ही जयाचार्य सिद्धान्तानुसार कुपात्र दान भी मांसादि सेवन व्यसन कुशीलादिक की ही श्रेणी में गिनने योग्य है।

अब तो आप "प्रत्युत्तर दीपिका" से पूछिये कि हे मञ्जुभाषिणि ? अब तेरा ये आलाप किस शास्त्र के अनुगत होगा।

अस्तु—यदि किसी आतुर को इस पाठके परिवर्त्तन (एक फेर) का ही विचार हो तो जिस हस्त लिखित प्रति में से जयाचार्य ने ये पाठ उद्धृत किया है। उस सूत्र प्रति को आप श्रीमान् जिनाचार्य पूज्य कालूरामजी महाराज के दर्शन कर उनके समीप यथा समय देख सकते हैं, जो कि तेरापन्थ नायक भिक्षु स्वामीजी से जन्म के भी पूर्व लिखी गई है।

"संशोधक"

जोवोनी. कुपात्र दान नें चौड़े भारी कुकर्म कह्यो । छव काय रा शस्त्र ते कुपात्र छै । तेहनें पोष्यां धर्म पुण्य किम निपजे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २१ बोल सम्पूर्ण ।

तथा ब्राह्मणां नें पापकारी क्षेत्र कह्याछे । ते पाठ लिखिये छै ।

कोहो य माणो य वहो य जेसिं-
कोसं अदत्तं च परिग्गहं च
ते माहणा जाइ विज्जा विहूणा-
ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० १४)

को० क्रोध अनें मान च शब्द हुन्ती माया लोभ वं० वध (प्राणघात) जे ब्राह्मण नै पाले अनें मो० मृषा अलीक नों भाषवो अण दीधां नों लेवो च शब्द थी मैथुन अनें परिग्रह. गाय भैंस भूम्यादिक नों अंगीकार करवो जेहनें ते ब्राह्मण जो ब्राह्मण जाति अनें वि० चउदे १४ विद्या तेणे करी वि० रहित जाणवा. अनें क्रिया कर्म ने मागे करी चार वर्ण नी अवस्था थाइं. ता० ते जे तुमने जाणया वर्त्तो छै लोका माहे. खे० ब्राह्मण रूप अक्षेत्र तेनू निश्चय अति पापकार छै क्रोधादिके करी सहित ते माटे पाप नों हेतु छै पिण भला नहीं ।

अथ अठे ब्राह्मणां ने पापकारी क्षेत्र कह्या । तो बीजा नें स्यूं कहिवो । इहां कोई कहे ए वचन तो यक्षे कह्या छै तो ब्राह्मणा ने क्रोधी मानी मायी लोभी हिंसादिक पिण यक्षे कह्या । जो ए सांचा तो उवे पिण सांचा छै । तथा सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ६ गा० २३ गृहस्थ ने देवो साधु त्याग्यो ते संसार भ्रमण नों हेतु जाणी त्याग्यो कह्यो छै । तथा दशवैकालिक अ० ३ गा० ६ गृहस्थ नी व्यावच करे करावे अनुमोदे तो साधु ने अनाचार कह्यो । तथा निशीथ उ० १५ बो० ७८-७९ गृहस्थ ने साधु-आहार देवे देता-ने अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो । तथा आवश्यक अ० ४ कह्यो साधु उन्मार्ग तो सर्व छांड्यो—मार्ग अङ्गीकार कियो । तो

ते उन्मार्ग थी पुण्य धर्म किम नोपजे। तथा उत्तराध्ययन अ० २६ कह्यो साधु श्रावक सामायिक में सावद्य योग त्यागे तो जे सामायक में कार्य छोड्यो ते सावद्य कार्य में धर्म पुण्य किम कहिये। ए धर्म पुण्य तो निरवद्य योग थी हुवे छै। जे सामायक में अनेरां ने देवा रा त्याग किया, ते सावद्य जाणी ने त्याग्यो छै, ते तो खोटो छै तरे त्याग्यो छै। उत्तम करणी आदरी माठी करणी छांडी छै। तो ए सावद्य दान सामायक में त्याग्यो तिण में छै के आदस्यो तिण में छै। डाह्या हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २२ बोल सम्पूर्ण।

तथा भगवती श० ८ उ० ५ तथा उपासक दशा अ० १ पनरे कर्मादान कह्या छै, ते पाठ लिखिये छै।

समणो वासएणं पराणरस्स कम्मा दाणाति जाणि-यंव्वाति न समारियव्वाति तंजहा इंगाल कम्मे. वण कम्मे साडी कम्मे. भाडी कम्मे. फोडी कम्मे. दंत वणिज्जे. रस वणिज्जे. केस वणिज्जे. विस वणिज्जे. लक्खणिज्जे. जंत पीलण कम्मे. निल्लंछण कम्मे. दवग्गिदावणया. सर दह तड़ाग परि सोसणिया. असईजण पोसणया ॥ ५१ ॥

(उपासक दशा अ० १)

स० श्रावक नें प० १५ प्रकार रा. क० कर्मादान (कर्म आवारा स्थान) व्यापार जाणना. किन्तु न० नहीं आदरवा त० ते कहै छै इ० अग्नि कर्म वन कर्म साडी (शकटादि वाहन) कर्म भा० भाडी (भाडो उपजावन वालो) कर्म फोडी कर्म दन्त वाणिज्य रस वाणिज्य केश वाणिज्य विष वाणिज्य ल० लाक्षा लाह आदि वाणिज्य यन्त्र पीलन कर्म निल्लछण (बैल आदि का अङ्ग विशेष छेदन) कर्म दावाग्नि (वन में खेत्र आदिकों में अग्नि लगाना) कर्म स० तालाव आदिके रे पाणी नो शोषण आदि कर्म अ० वेश्या आदि नें पोषणा आदिक व्यापार कर्म

तिहां 'असती जण पोसणया" तथा "असइपोसणया." कह्यो छै। एहनों अर्थ केतला एक विरुद्ध करै छै। अने इहां १५ व्यापार कह्या छै तिवारे कोई इम कहे इहां असंयती पोष व्यापार कह्यो छै। तो तुम्हें अनुकम्पा रे अर्थे असंयती ने पोष्यां पाप किम कहो छै। तेहनो उत्तर—ते असंयती पोषी २ ने आजीविका करे ते असंयती पोष व्यापार छै। अनें दाम लियां विना असंयती ने पोषे ते व्यापार नथी कहिये। परं पाप किम न कहिये। जिम कोयला करी वेचे ते "अंगालकर्म" व्यापार, अने दाम विना आगला ने कोयला करी आपे ते व्यापार नथी। परं पाप किम न कहिये। जे वनस्पति वेचे ते "वण कर्म" व्यापार कहिये। अनें दाम लियां विना पर जीव भूखा नी अनुकम्पा आणी वनस्पति आपे ते व्यापार नहीं। परं पाप किम न कहिये। इम जे बदाम आदिक फोड़ी २ आजीविका करे दाम ले ते "फोड़ी कर्म व्यापार" अनें दाम लियाँ विना आगला री खेद टालवा बदाम नारियल आदिक फोड़े ते व्यापार नहीं। परं पाप किम न कहिए। इम आजीविका निमित्ते सर द्रह तालाव शोषवे ते सर द्रह-तलाव शोषणिया व्यापार अनें जे आगला रे काम तलाव शोषवे ते व्यापार नहीं परं पाप किम न कहिये। तिम असंयती पोषी २ आजीविका करे। दानशाला ऊपर रहे रोजगार रे वास्ते तथा ग्वालियादिक दाम लेइ गाय भैंस्यां आदि चरावे। इम कुक्कुट मार्जार आदिक पोषी २ आजीविका करे। आदिक शब्द में तो सर्व असंयती ने रोजगार रे अर्थे राखे ते असंयती व्यापार कहिए अनें दाम लियां विना असंयती ने पोषे ते व्यापार नहीं। परं पाप किम न कहिये। ए तो पनरे १५ ई व्यापार छै ते दाम लेई करे तो व्यापार। अनें पनरे १५ ई दाम विना सेवे तो व्यापार नहीं। परं पाप किम न कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २३ बोल सम्पूर्ण।

वली केतला एक इम कहे—जे उपासक दशा अ० १ प्रथम व्रत ना ५ अतीचार कह्या। तिण में भात पाणी रो विच्छेद पाड्यो हुवे, ए पांचमो अतिचार कह्यो छै। तो जे असंयती ने भात पाणी रो विच्छेद पाड्यां अतीचार लागे। ते

भात पाणी थी पोष्यां धर्म क्यूं नहीं। इम कहै तेहनो उत्तर—सूत्रे करी लिखिये छै—

तदा णं तरंचणं थूलग पाणातिवाय वेरमणस्स समणोवास तेणं पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-बंधे, वहे छविच्छेए अतिभारे भत्त पाण वोच्छेत्ते ॥ ४५ ॥

(उपासक दशा अ० १)

त० तिवारे पछे थू० स्थूल प्राणातिपात वेरमण व्रत रा स० श्रावक नें प० ५ अतीचार पे० पाताल ने विषे ले जाणेवाला छै किन्तु स० आदरवा योग्य नहीं त० ते कहे छै ब० मारवा नी बुद्धि इ करी पशु आदि नें गाढा बन्धने करे बांधे व० गाढा प्रहारे करी मारे छ० अङ्गोपाङ्ग नें छेदे अ० शक्ति उपराना ऊपरे भार आपे. भ० मारवा नी बुद्धि इ आहार पाणी रो विच्छेद करे

इहां मारवा ने अर्थे गाढे बंधन बांधे तो अतीचार कह्यो। अनें थोड़े बंधन बांधे तो अतीचार नहीं। पिण धर्म किम कहिये। मारवा ने अर्थे गाढ़े घाव घाले तो अतीचार अनें ताडवा नी बुद्धे लकड़ी इत्यादिक थी थोड़ो घाव घाले तो अतिचार नहीं। परं धर्म किम कहिये। इम हीज चामडी छेद कहिवो, इम मारवा नें अर्थे अति ही भार घाल्यां अतीचार, अन थोड़ो भार घाले ते अतीचार नहीं। परं धर्म किम कहिवे। तिम मारवा ने अर्थे भात पाणी रो विच्छेद पाड्यां तो अतिचार, अनें त्रस जीव नें भात पाणी थी पोषे ते अतीचार नहीं। पिण धर्म किम कहिये। अनेरा संसार ना कार्य छै। तिम पोषणो पिण संसार नो कार्य छै पिण धर्म नहीं। जे पोष्यां धर्म कहे तेहने लेखे पाठे कह्या—ते सर्व बोला में धर्म कहिणो। अनें पाछिला बोल ढीले बंधन बांध्यां ताड़वा ने अर्थे लकड़ियादिक थीं कूट्यां धर्म नहीं। तिम भात पाणी थी पोष्यां पिण धर्म नहीं। वली आगल कह्यो पारका व्याहव नाता जोड़ाया तो अतीचार. अनें घरका पुत्रादिक ना व्याहव कियां अतीचार नहीं लागे। पिण धर्म किम कहिये। वली प्रथम

व्रत ना ५ अतिचार में दास दासी स्त्री आदिका ने मारवा ने अर्थे घर में बांधी भात पाणी ना विच्छेद पाड्यां अतीचार पर' दास दासी पुत्रादिक नें पोपे, तिण में धर्म किम कहिये। जे तिर्यञ्च रे भात पाणी रा विच्छेद पाड्यां अतीचार छै। तिम मनुष्य ने भात पाणी रो विच्छेद पाड्यां अतीचार छै। अनें तिर्यञ्च ने भात पाणी थी पोष्यां धर्म कहे तो तिण रे लेखे दास दासी पुत्र स्त्रियादिक मनुष्य नें पिण पोष्यां धर्म कहिणो। ए अतीचार तो समचे त्रस जीवने भात पाणी रो विच्छेद करे ते अतीचार कह्यो छै। अनें त्रस में तिर्यञ्च पिण आया मनुष्य पिण आया। अनें जे कहे स्त्रियादिक ने पोपे ते विषय निमित्ते, दास दासी ने पोपे ते काम ने अर्थे। तिण सुं या नें पोष्यां धर्म नहीं। तो गाय भैंस ऊंट छाली वलद इत्यादिक तिर्यञ्च ने पोपे ते पिण घर रा कार्य नें अर्थे इज पोपे। ए तो तिर्यञ्च मनुष्य नवजाति ना परिग्रह माहि छै। ते परिग्रह ना यत्न कियां धर्म किम हुवे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २४ बोल सम्पूर्ण।

वली कोई इम कहे। तुंगिया नगरी ना श्रावकां रा उघाड़ा बारणा कह्या छै। ते भिख्यारां ने देवा नें अर्थे उघाड़ा बारणा छै। इम कहे तेहनो उत्तर—उघाड़ा बारणा कह्या छै ते तो साधु री भावना रे अर्थे कह्या छै। ते किम—जे और भिख्यारी तो किमाड़ खोल नें पिण माहे आवे छै। अनें साधु किमाड़ खोलनें आहार लेवा न आवे। ते माटे श्रावकां रा उघाड़ा बारणा कह्या छै। साधु री भावना रे अर्थे जड़े नहीं। सहजे उघाड़ा हुवे अद उघाड़ाज राखे। तिणसुं "अवगुंय दुवारा" पाठ कह्यो छै। भगवती श० २ उ० ५ तुंगिया नगरी ना श्रावकां रे अधिकारे टीका में वृद्ध व्याख्यानुसारे अर्थ कियो ते टीका कहे छे।

अवगुंय दुवारेति—अप्रावृतद्वाराः कपाटादिभि रस्थगित गृह द्वारा इत्यर्थः। सद्दर्शन लाभेन न कुतोपि पाषंडिका द्बिभ्यति शोभन मार्ग परिग्रहेणो-द्घाट शिरसस्तिष्ठन्तीति भावः—इति वृद्धव्याख्या।

इहां भगवती नी वृत्ति में पिण इम कह्यो। जे घर ना द्वार जड़े नहीं ते भला दर्शन रे सम्यक्त्व ने लाभे करी। पिण किणही पाखंडी थी डरे नहीं। जे पाखंडी आवी तेहना स्वजनादिक नें पिण चलावा असमर्थ कदाचित् कोई पाखंडी आवी चलावे। एहवा भय करी किमाड़ जड़े नहीं। इम कह्यो छै। तथा वली उवाई नी वृत्ति में पिण वृद्ध व्याख्यानुसारे इमज कह्यो छै। ए तो सम्यक्त्व नों सेंठा पणो बखाणयो। तथा सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० २ दीपिका में पिण इम हिज कह्यो छै। ते दीपिका लिखिये छै।

अवगुंय दुवारेति—अप्रावृतानि द्वाराणि येषां ते तथा सन्मार्गलाभात् कुतोपि भयं कुर्वन्ती त्युद्घाटित द्वाराः ॥

इहाँ सूयगडाङ्ग नी दीपिका में पिण कह्यो। भलो मार्ग सम्यग् दृष्टि पाम्या ते माटे कोई ना भय थकी किवाड़ जड़े नहीं। इहां पिण सम्यक्त्व नों दृढपणो बखाणयो। तथा वली सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० ७ दीपिका में कह्यो। ते दीपिका लिखिये छै।

अवगुंय दुवारेति—अप्रावृत मस्थगित द्वार गृहस्य येन सो ऽ प्रावृतद्वारः पर तीर्थिकोऽपि गृहं प्रविश्य धर्मयदि वदेत् वदतु वा न तस्य परिजनोपि सम्यक्त्वा-च्चालयितुं शक्यते तद्भीत्या न द्वार प्रदान मित्यर्थः ।

इहां पिण कह्यो। जे परतीर्थी घर में आवी धर्म कहे। ते श्रावक ना परिजन ने पिण चलावा असमर्थ, ए सम्यक्त्व में सेंठो ते माटे पाखंडी रा भय थकी कमाड़ जड़े नहीं। इहां पिण सम्यक्त्व नों सेंठा पणो बखाणयो। पिण इम न कह्यो। असंयती ने देवा ने अर्थे उघाड़ा बारणा राखे। एहवो कह्यो नहीं। ए तो "अवंगुय दुवार" नों अर्थ टीका में पिण सम्यक्त्व नों दृढपणो कह्यो। तथा भिक्षु ते साधु री भावना रे अर्थे बारणा उघाड़ा राखना कहे तो ते पिण मिले। ते किम— साधु नें वहिरावा नों पाठ आगे कह्यो छै। ते माटे ए भावना रो पाठ छै। अनें असंयती भिखारी रे अर्थे उघाड़ा बारणा कह्या हुवे. तो भिखारी नें देवा रो पिण पाठ कहिता। ते भिखारी ने देवा रो पाठ कह्यो न थी। "समणे निग्गंथे

फासु एसणिज्जेणं' इत्यादि. श्रमण निर्ग्रन्थ नें प्रासु एपणीक देतो थको विचरै । इम साधु नें देवा नों पाठ कह्यो । ते माटे साधु रे अर्थ उघाड़ा वारणा कह्या । पिण भिखयारा रे अर्थे उघाड़ा वारणा कह्या न थी । डाह्या हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २५ बोल सम्पूर्ण

केतला एक कहे छै । जे भगवती श० ८ उ० ६ असंयती नें दीधां एकान्त पाप कह्यो । पिण संयतासंयती नें दियां पाप न कह्यो । ते माटे श्रावक नें पोष्यां धर्म छै । अनें श्रावक नें दीधां पाप किण सूत्र में कह्यो छै । ते पाठ बतावो । इम कहे तेहनों उत्तर—सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० ७ तीन पक्ष कह्या छै । धर्मपक्ष-अधर्मपक्ष-मिश्रपक्ष. साधु रे सर्वथा व्रत ते "धर्मपक्ष" अव्रती रे किञ्चन् व्रत नहीं. ते "अधर्म-पक्ष' श्रावक रै केई एक वस्तु रा त्याग ते तो व्रत केई एक वस्तु रा त्याग नहीं ते अव्रत, ते भणी श्रावकने "मिश्रपक्ष"कही जे । जेतली व्रत छै श्रावक रे-ते तो धर्मपक्ष माहिली छै । जेतली अव्रत छै ते अधर्मपक्ष माहिलो छै । अव्रत सेवे सेवावे अनु-मोदे तिहां वीतराग देव आज्ञा देवे नहीं । ते भणी श्रावक री अव्रत सेव्यां सेवायां धर्म नहीं । श्रावक रे जेतला २ त्याग छै ते तो व्रत छै धर्म छै तेतलो २ आगार छै. ते अव्रत छै अधर्म छै । ते श्रावक रा व्रत अनें अव्रत नों निर्णय सूत्र साक्षी करी कहे छै ।

सेजं इमे गामागर नगरं जाव सण्णिवेसेसु. मनुया भवंति. तं० अप्पारंभा अप्प परिग्गहा. धम्मिआ. धम्माणुआ. धम्मिट्ठा. धम्मक्खाई. धम्म पलोइ. धम्मपज्जयणा. धम्म-समुदायरा. धम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा. सुसीला सुव्वया सुपडिआणंदा साहु एगच्चाओ. पाणाइवायाओ पडिविरया जाव जीवाए. एगचाओ अप्पडिविरया. एवं जाव परिग्गहाओ

पड़िविरया. एगच्चाओ. अप्पड़िविरया. एगच्चाओ कोहाओ. माणाओ. मायाओ. लोभाओ. पेज्जाओ. दोसाओ. कलहाओ. अब्भक्खाणाओ. पेसुणाओ. परपरिवायाओ. अरतिरतीओ. मायामोसाओ. मिच्छा दंसण सल्लाओ पड़िविरया जावज्जीवाए एगच्चाओ. अप्पड़िविरया. जावज्जीवाए. एगच्चाओ. आरंभाओ. समारंभाओ. पड़िविरया जावज्जीवाए एगच्चाओ. आरंभ समारंभाओ. अपड़िविरया. एगच्चाओ. करणकरावणाओ पड़िविरया जावज्जीवाए. एगच्चाओ. अप्पडिविरया. एगच्चाओ. पयण पयावणाओ. पड़िविरया जावज्जीवाए. एगच्चाओ पयण पयावणाओ अपड़िविरया. एगच्चाओ कोट्टण पिट्टण तज्जण तालण वह बंध परिकिलेसाओ. पड़िविरया जावज्जीवाए. एगच्चाओ अपड़िविरयाओ. एगचाओ न्हाणु मद्दण वण्णक विलेवण सद्द फरिस रस रूव गंध मल्लालंकाराओ पड़िविरया जावज्जीवाए. एगचाओ अपड़िविरया. जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्ज जोगोवहिया कम्मंता. परपाण परितावणकरा कज्जंति. ततोवि एगच्चाओ पड़िविरया जावज्जीवाए. एगच्चाओ अपड़िविरया तं जहा समणो वासगा भवंति.

(उवाई प्र० २० तथा सूयगडाङ्ग अ० १८)

से० ते जे० एह प्रत्यक्ष ससारी जीव ग्राम आगर लोहादिक ना न० नगर जिहां कर नहीं गवादिक नो जा० यावत्. स० सन्निवेश तेहनें विषे म० मनुष्य पुरुष स्त्री आदिक छै त० ते कहे छै अ० अल्प थोडोज आरभ व्यापारादिक अल्प थोड़ो परिग्रह धनधान्यादिक ध० धम श्रुत चरित्र ना करणहार ध० धर्म श्रुत चरित्ररूप ने केडे चाले छै ध० धर्म श्रुत चारित्रय रूपआल- हो धर्म चेष्टारूप ध० धर्म श्रुत चारित्र रूप भव्य ने समलावे ध० धर्म श्रुत चारित्र रूप ने रहिवा योग्य जाणे चार २ तिहां दृष्टि प्रवृते ध० धर्मश्रुत चारित्ररूप ने विषे कर्म क्षय करिवा सावधानि

छै अथवा धर्म ने रागे रगाणा छै ध० धर्म श्रुत चारित्ररूप ने विषे प्रमोद सहित आचार छै जेहनों. ध० धर्म चारित्र ने अखंड पाल वे सूत्र नें आराधवे ज वृत्ति छै आजीविका कल्प करे छै। सु० भलो शील आचार छै जेहनों सु० भला व्रत छै सु० आह्लाद हर्ष सहित चित्त छै साधु नें विषे जेहना सा० साधु ना समीपवर्त्ती ए० एकैक प्राणी जीव इन्द्रियादिक नों अतिपात हणवो तेह थकी अतिशय सूं विरम्या निवृत्या विरक्त हुआ छै। जा० जीवे ज्यां लगे एकैक प्राणी जीव पृथिव्यादिक थकी निवृत्या न थी ए० इम मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह एक देश थकी निवृत्या इत्यादिक मूर्च्छा कर्म लागवा थी निवृत्या ए० एकैक झूठ चोरी मैथुन परिग्रह द्रव्य भाव मूर्च्छा थकी निवृत्या न थी. ए० एकैक क्रोध थकी निवृत्या एकैक क्रोध थकी निवृत्या न थी, मा० एकैक मान थी निवृत्या एकैक मान थी न निवृत्या. ए० एकैक माया थी निवृत्या एकैक थी न निवृत्या एकैक लोभ थी निवृत्या एकैक लोभ थी न निवृत्या पे० एकैक प्रेम राग थी निवृत्या एकैक न थी निवृत्या दो० एकैक द्वेष थकी निवृत्या एकैक थकी न निवृत्या. क० एकैक कलह थी निवृत्या एकैक थी न निवृत्या अ० एकैक अभ्याख्यान थी निवृत्या एकैक थी न निवृत्या पे० एकैक पैशुन्यचाडी थी निवृत्या एकैक थी न निवृत्या एकैक पारका अपवाद थी निवृत्या एकैक थी न निवृत्या एकैक रति अरति थी निवृत्या एकैक थी न निवृत्या मा० एकैक माया मृषा थी निवृत्या एकैक थी न निवृत्या एकैक मिथ्या दर्शन शल्य थी निवृत्या छै जा० जीवे ज्यां लगे एकैक मिथ्यात्व दर्शन थकी न निवृत्या ए० एकैक आरम्भ जीवनों उपद्रव हणवो समारभ ते उपद्रव्यादिक कार्य नें विषे प्रवर्त्तवो अ० अतिशय सूं प० निवृत्या छै ए० एकैक आरम्भ समारम्भ थकी अ० निवृत्या न थी एकैक करिवो कराववो ते अने रा पाहे तेहथी प० निवृत्या छै जा० जीवे ज्यां लागे ए० एकैक करिवो कराववो व्यापारादिक तेह थकी निवृत्या न थी प० एकैक पचिवो पचाविवो अने रा पाहे तेह थी निवृत्या छै जा० जीवे ज्यां लगे प० एकैक पचिवो पोते पचाविवो अने रा पाहे अन्नादिक तेह थकी निवृत्या न थी एकैक को० कूटवा पीटवा ताडन तर्जन वध बधव परिक्लेश ते बाधा नो उपजावो ते थी निवृत्या जा० जीवे ज्यां लगे एकैक थी निवृत्या न थी एकैक स्नान उगटणो चोवड वाना नो पूरवो टकानो करवो विलेपन अगर माल्य. फूल अलङ्कार-आभरणादिक तेह थकी प० निवृत्या जा० जीवे ज्यां लागे एकैक स्नानादिक पूर्वे कह्या तेह थकी निवृत्या न थी। जे कांई वली अनेराई अनेक प्रकार तेहवा पूर्वोक्त. सा० सावद्य सपाप योग मन बचन काया रा उ० माया प्रयोजन कषाय प्रत्यय एहवा क० कर्म ना व्यापार प० पर अनेरा जीव नें प० परिताप ना क० करणहार क० करीजे निपजावे ते० तेह थकी निश्चय प० एकैक थकी निवत्या छै जा० जीवे ज्यां लगे ए० एकैक सावद्य योग थकी अ० निवृत्या नथी. त० ते कहै छै स० श्रमण साधु ना उपासक सेवक एहवा श्रावक भ० कहिये।

अथ अठे श्रावक रा व्रत अव्रत जुदा जुदा कह्या। मोटा जीव हणवा रा मोटा झूठ रा मोटी चोरी मिथुन परिग्रह री मर्यादा उपरान्त त्याग कीधो ते तो

व्रत कही । अनें पांच थावर हणवा रो आगार छोटो झूठ छोटी चोरी मिथुन परिग्रह री मर्यादा कीधी-ते मांहिला सेवन सेवावन अनुमोदन रो आगार ते अव्रत कही । वली एक एक आरंभ समारंभ रा त्याग कीधा ते व्रत एकैक रो आगार ते अव्रत एकैक करण करावण पचन पचावन रा त्याग ते व्रत एकैक रो आगार ते अव्रत । एकैक कूटवा थी पीटवा थी बांधवा थी निवृत्या-ते तो व्रत अनें एकैक कूटवा थी बांधवा थी निवृत्या न थी ते अव्रत एकैक स्नान उगटनों विलेपन शब्द स्पर्श रस पकवांनादिक गन्ध कस्तूरी आदिक अलंकारादिक थी निवृत्या ते व्रत एकैक थी न निवृत्या ते अव्रत । जे अनेराई सावद्य योग रा त्याग ते तो व्रत । अनें आगार ते अव्रत । इहां तो जेतला २ त्याग ते व्रत कह्या । अने जेतला २ आगार ते अव्रत कह्या । तिण में रस पकवांनादिक रा गेहणा रा त्याग ते व्रत कही । अनें जेतलो खावण पीवण गेहणादिक भोगवण रो आगार ते अव्रत कही छै । ते अव्रत सेवे सेवावे अनुमोदे ते धर्म नहीं । जे श्रावक तपस्या करे ते तो व्रत छै । अनें पारणो करे ते अव्रत माही छै । आगार सेवे छै-ते सेवनवाला नें धर्म नहीं तो सेवावण वाला नें धर्म किम हुवे । ए अव्रत एकान्त खोटी छै । अव्रत तो रेणा देवी सरीखी छै । ठाणाङ्गठाणे ५ तथा समवायाङ्ग अव्रत ने आश्रव कह्या छै । ते अव्रत सेव्यां धर्म नहीं । किण ही श्रावक १० सूकड़ी १० नीलोती उपरान्त त्याग कीधा ते दश उपरान्त त्यागी ते तो व्रत छै धर्म छै । अनें १० नीलोती १० सूकड़ी खावा रो आगार ते अव्रत छै । ते आगार आप सेवे तथा अनेरा ने सेवावे अनुमोदे ते अधर्म छै-सावद्य छै । जिम किणही श्रावक ३ आहारना त्याग कीधा एक ऊन्हा पाणी रो आगार राख्यो तो ते ३ आहार रा त्याग तो व्रत छै धर्म छै । अनें एक ऊन्हा पाणी रो आगार रह्यो ते अव्रत छै, अधर्म छै । ते पाणी पीवे अनें गृहस्थ नें पावै अनुमोदे तिण व्रत सेवाई के अव्रत सेवाई । उत्तम विचारि जोइज्यो । ए तो प्रत्यक्ष पाणी पीयां पाप छै । ते पहिले करण अव्रत सेवे छै । और ने पावे ते बीजे करण अव्रत सेवावे छै । अनुमोदे ते तीजे करण छै । जे पहिले करण पाणी पीयां पाप छै तो पायां अनुमोद्यां धर्म किम होवे । डाह्या हुवे तो विचारि जोइज्यो ।

इति २६ बोल सम्पूर्ण ।

वलीअव्रत नें भाव शस्त्र कह्यो ते पाठ लिखिये छै—

दसविहे सत्थे प० तं०—

सत्थ मग्गी विसं लोणं सिणेहो खार मंविलं ।
दुप्पउत्तो मणो वाया काओ भावो य अविरई ॥

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

द० दश प्रकारे स० जेणे करी हणिये ते शस्त्र ते हिंसक वस्तु ते हूं भेद द्रव्य थकी अनें भाव थकी तिहां द्रव्य थी कहे छै । स० शस्त्र अग्नि थकी अनेरी अग्नि छै ते स्वकाय शस्त्र पृथ्व्यादिक नी अपेक्षा पर काय शस्त्र वि० विष स्थावर-जङ्गम लो० लवण ते मीठो सि० स्नेह ते तेल घृतादिक खा० खार ते भस्मादिक आ० आम्लादिक दु० दुष्प्रयुक्त पाडुआ मन वा० वचन का० इहां काया हिंसा ने विषे प्रवर्त्तें ई ते भणी खड्गादिक शस्त्र पिण काया शस्त्र में आवे भा० भावे करी शस्त्र कहे छै । अ० अव्रत ते अपचखाण अथवा अव्रत रूप भाव शस्त्र ।

अथ अठे १० शस्त्र कह्या तिण में अव्रत नें भाव शस्त्र कह्यो । तो जे श्रावक ने अव्रत सेवायां रूड़ा फल किम लागे । ए तो अव्रत शस्त्र छै ते माटे जेतला २ श्रावक रे त्याग छै ते तो व्रत छै । अनें जेतलो आगार छै ते सर्व अव्रत छै । आगार अव्रत सेव्यां सेवायां शस्त्र तीखो कीधो कहिये । पिण धर्म किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २७ बोल सम्पूर्ण ।

केतला एक कहे—अव्रत सेव्यां धर्म नहीं पर पुण्य छै । ते पुण्य थी देवता थाय छै अव्रत थी पुण्य न बंधे, तो श्रावक देवलोक किसी करणी थी जाय । तेहनो उत्तर—ए तो श्रावक व्रत आदस्था ते व्रत पालतां पुण्य बंधे । तेहथी देवता हुवे पिण अव्रत थी देवता न थाय । ते सूत्र पाठ कहे छै ।

बाल पंडिएणं भंते ! मणूसे किं नेरइया उयं पकरेइ जाव देवाउयं किचा देवेसु उववज्जइ. गोयमा ! णो णेरइया

उयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ से केणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ. गोयमा! बाल पंडिएणं मणुस्से तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सोच्चा निसम्म देसं उवरमइ देसं णो-उवरमइ देसं पच्चक्खाइ. देसं णो पच्चक्खाइ. से तेणट्ठेणं देसोवरमइ. देस पच्चक्खाणेणं णो णेरइया उयं पकरेइ जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जइ. से तेणट्ठेणं जाव देवेसु उववज्जइ।

(भगवती श० १ उ० ८)

बाल पंडित ते देशव्रती श्रावक. भं० हे भगवन्त! किं स्यूं नारकी नूं आयुषो प० करे जा० यावत् दे० देव नूं आयुषो किं० करी नें दे० देवलोक ने विषे उपजे गो० हे गौतम! णो० नारकी ना आयुषो प्रते न करे जा० यावत् दे० देवनों आयुषो कि० करी ने दे० देव ने विषे उपजे से० ते स्यां माटे जावत् दे० देवनूं आयुषो कि० करी ने. दे० देवलोक ने विषे उपजे हे गौतम? बाल पंडित म० मनुष्य त० तथारूप स० श्रमण साधु मा० माहण ते ब्राह्मण ने पासे ए० एक पिण आर्य आरम्भ रहित ध० धर्म नूं रूडु वचन सो० सांभली नें नि० हृदय धरी नें देशथकी विरमें स्थूल प्राणातिपातिक वर्जे सूक्ष्म प्राणातिपात थी निवर्त्ते नहीं दे० देश कांइक प० पचखे दे० देश कांइक णो० न पचखे से० ते कारणे दे० देश उपरम्यो देश पचख्यो तेणे करी णो० नहीं नारकी नों आयुषो करे जा० यावत् दे० देवनूं आयुषो किं० करी ने. दे० देवनें विषे उपजे से० तेणे अर्थे यावत् देव ने विषे उ० उपजे।

अथ अठे कह्यो जे श्रावक देश थकी निवृत्यो देश थकी नथी निवर्त्यो देश-पचखाण कीधो देश पचखाण कीधो नथी। जे देशे करि निवृत्यो अनें देश पचखाण कीधो तेणे करी देवता हुवे। इहां पचखाणे करी देवता थाय कह्यो ते किम जे पचखाण पालतां कष्ट थी पुण्य बंधे तेणे करी देवायुष बंधे कह्यो। पिण अव्रत सेव्यां सेवायां देव गति नो बंध न कह्यो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २८ बोल सम्पूर्ण।

केतला एक कहे—जे श्रावक सामायक मे साधु ने वहिरावे तो सामायक भांगे, ते भणी सामायक में साधु नें वहिरावणो नही ते किम श्रावक सामायक में जे द्रव्य वोसगया छै ते द्रव्य आज्ञा लियां विना साधु नें वहिरावणो नहीं। पहवी झूठी परूपणा करे तेहनो उत्तर—सामायक में ११ व्रत निपजे के नहीं। जव कहे ११ व्रत तो निपजे छै। तो १२ मों क्यूं न निपजे व्रत सूं तो व्रत अटके नहीं। सामायक में तो सावद्य योग रा पचखाण छै। अनें साधु ने वहिरावे ते निरवद्य योग छै। ते भणी सामायक में वहिरायां दोष नहीं। तिवारे आगलो कहे द्रव्य वोसिराया छै। तिण सूं ते द्रव्य वहिरावणा नहीं। तेहने इम कहिये ते द्रव्य तो पहनाज छै। ए तो सामायक में छांड्या जे द्रव्य तेहथी सावद्य सेवा रा त्याग छै। अनें साधु ने वहिरावे ते निरवद्य योग छै ते माटे दोष नहीं। जो सामायक में छोड्या जे द्रव्य वहिरावणा नहीं। इम जाणी आहार वहिरावे नहीं तो तिण रे लेखे जागां री पीठ, फलक शय्या संस्तारा री आज्ञा पिण देणी नहीं। वली त्यां रे लेखे औषधादिक पिण देणी नहीं। वली स्त्री पुत्रादिक दीक्षा लेवे तो तिण रे लेखे सामायक में त्यांने पिण आज्ञा देणी नहीं। ए नव जाति रो परिग्रह सामायक में वोसिरायो छै। अनें स्त्रीआदिक पिण परिग्रह माहें छै ते माटे अनें स्त्रीआदिक नी तथा जागां आदिक नी आज्ञा देणी तो अशनादिक री पिण आज्ञा देणी। अनें हाथां सूं पिण अशनादिक वहिरावणो। अनें "वोसराया" कही भ्रम पाड़े तेहनो उत्तर—ए नव जाति रो परिग्रह सामायक में वोसरायो कह्यो ते पिण देश थकी वोसिराया, परं ममत्व भाव प्रेम रागबन्धन तांतो टूटो नथी। पुत्रादिक थयां राजी पणो आवे छै। ते माटे पहनाज छै पिण सर्वथा प्रकारे ममत्व भाव मिट्यो नथी। ते सूत्र पाठ लिखिये छै।

समणोवासगस्स णं भंते सामाइय कडस्स समणोवासए अत्थमाणस्स केइ भंडं अवहरेज्जा सेणं भंते! तं भंडं अणुगवेसमाणे किं सयं भंडं अणुगवेसइ परायगं भंडं अणुगवेसइ· गोयमा! सयं भंडं अणुगवेसइ नो परायगं भंडं अणुगवेसइ तस्सणं भंते! तेहिं सीलव्वय गुण वेरमण

पच्चक्खाण पोसहोववासेहिं से भण्डे अभंडे भवइ. हंता भवइ. से केणं खाइणं अट्ठेणं भन्ते! एवं वुच्चइ सयं भण्डं अणुगवेसइ णो परायगं भण्डं अणुगवेसइ. गोयमा! तस्सणं एवं भवइ. णो मे हिरण्णे णो मे सुवण्णे णो मे कसे नो मे-दूसे. विउल धण कणग रयण-मोत्तिय-शंख. सिल-प्पवाल रत्त रयण मादिए संतसार सावएज्जे ममत्त भावे पुण से अपरिणाए भवइ से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ सयं भण्डं अणुगवेसइ णो परागयं भण्डं अणुगवेसइ ॥ १ ॥

समणो वासगस्स णं भन्ते! सामाइय कडस्स समणो-वासए. अत्थमाणस्स केइ जायं चरेज्जा सेणं भन्ते! किं जायं चरइ अजायं चरइ. गोयमा! जायं चरइ नो अजायं चरइ. तस्सणं भन्ते! तेहिं सीलव्वयगुण. वेरमण पच्चक्खाण पोसहोववासेहिं सा जाया अजाया भवइ. हंता भवइ. से केणं खाइणं अट्ठेणं भन्ते! एवं वुच्चइ जायं चरइ नो अजायं चरइ गोयमा! तस्सणं एवं भवइ नो मे माया णो मे पिया णो मे भाया णो मे भइनी. नो मे भज्जा नो मे पुत्ता नो मे धूआ नो मे सुण्हा पेज्ज बंधणे पुण से अवोच्छिण्णे भवइ. से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव नो अजायं चरइ. ॥ २ ॥

(भगवती श० ८ उ० ५)

स० श्रमणोपासक श्रावक नें भ० हे भगवन्त! सा० सामायक क० कीधे छते स० श्रमण नें उपाश्रय नें विषे अ० बैठो छै एहने के० कोइक पुरुष भं० भंड वस्त्रादिक वस्तु गृह नें विषे ते प्रति अ० अपहरे से० ते श्रावक भं० हे भगवन्त! ते० ते भंड वस्त्रादिक प्रते गवे-षणा करे सामायक पूर्ण थयां पछी जोई कि ते स्यूं पोता ना भंड नी अ० अनुगवेषणा करे

छै प० के पारका भंड नी. अनुगवेषणा करे छै गो० हे गौतम! स० पोताना भंडनी अनुगवेषणा करे छै। नो० नहीं पारका भंडनी अनुगवेषणा करे छै त० ते श्रावक नें भं० हे भगवन्त! ते० ते सी० शील व्रत गुण व्रत व० रागादिक नो विरति प० पचखाण नवकारसी प्रमुख पो० पोषध उपवास पर्व तिथि उपवास तिथि ते० ते भं० भंड वस्तु नें अभंड थाइं परिग्रह वोसिराव्यां थी. हं० हां गौतम! हुइ से० ते के केह अ० अर्थे भं० हे भगवन्त! ए० इम वु० कहे. स० ते श्रावक पोता नूं भांड जोई छै णो० नहीं परकूं भंड अ० जोई छै। गो० हे गौतम! त० ते श्रावक नों. ए० एहवो मननो परिणाम हुइं णो० नहीं मे० माहरो. हिरण्य णो० नहीं माहरो सु० सुवर्ण. णो नहीं. मे० माहरो कं० कांस्य णो० नहीं मे० माहरो. दू० दूष्यवस्त्र णो० नहीं मे० माहरो. वि० विस्तीर्ण घ० धन गणिमादि क० सुवर्ण कर्केतनादि र० रत्न मणि चन्द्रकान्तादि मो० मोती स० शंख. सि० सिलप्प प्रवाली. र० रत्न पद्मरागादि. सं० विद्यमान सा० सार प्रधान सा० स्वाप ते द्रव्य वोसिराव्यूं परिग्रह मन वचन काया इं करिवूं करायवूं पचख्यूं छै। पिण. म० परिग्रह ने विषे ममता परिणाम नथी पचख्या, अनुमति ते ममता ते न पचखी तेहनी ममता तेणें मेली नथी. से० ते. तेणें अर्थे हे गौतम! ए० इम वु० कहे स० पोतानूं भंड अ० जोई छै णो० पारकू भंड जोवै नथी स० श्रमणोपासक ने भं० हे भगवन्त! सामायक कीधे छते स० श्रमण ने उपाश्रय बैठो छै. के० कोई जार पुरुष भार्या प्रति च० सेवे से० ते जार पुरुष भं० हे भगवन्त! भार्या प्रते सेवे के अभार्या प्रते सेवे. हे गौतम! जा० भार्या प्रति सेवे छै णो० नहीं अभार्या प्रति सेवे छै। त० ते श्रावक भं० हे भगवन्त! सी० शीलव्रत अनुव्रत गुणव्रत. व० रागादिक विरति प० पचखाण नवकारसी प्रमुख पो० पोषध उपवास तेणे करीने सा० ते भार्या प्रते वोसरावी छै ते भार्या अभार्या भ० हुइ. ह० हां गौतम! हुइं. से० ते. केहे ख० ख्याति अ० अर्थे करी ने भं० हे भगवन्त! ए० इम वु० कहे. जा० भार्या प्रति सेवे छै। णो० नहीं अभार्या प्रति सेवे छै। हे गौतम! ते श्रावक नों. ए० एहवो अभिप्राय हुइं. णो नहीं मे० माहरी माता णो० नहीं. मे० माहरो पिता. णो० नहीं मे० माहरो भाई. णो० नहीं मे० माहरी बहिन. णो० नहीं मे० माहरी भार्या. णो० नहीं मे० माहरा पुत्र णो नहीं मे० माहरी बेटी णो० नहीं मे० माहरी. सु० पुत्रनी भार्या पे० पिण प्रेमबंधन से० तेहने अ० विच्छेद नथी पाम्यो ते श्रावक नें तिणें अनुमति पचखी नथी. प्रेम बन्धने अनुमति पिण पचखी नथी. से० ते तेणे अर्थे. गो० हे गौतम! ए० इम वु० कही. जा० यावत् णो० नहीं अभार्या प्रति सेवे।

अथ इहां कह्यो—श्रावक सामायक में साधु उतरया, तेणें उपाश्रय बैठां कोई तेहनो भंड ते वस्तु चोरे तो ते सामायक चितारयां पछे पोता नों भंड गवेषे के अनेरा नों भंड गवेषे। तिवारे भगवान् कह्यो—पोता नो इज भंड गवेषे छै पिण अनेरा नों भंड गवेषे नहीं। तिवारे वली गौतम पूछ्यो। तेहनें ते सामायक

पोषा में भंड वोसिरायो छै। भगवान् कह्यो हां वोसिरायो छै। ते वोसिरायो तो वली पोता नों भंड किण अर्थ कह्यो। जद भगवान् कह्यो ते सामायक में इम चिन्तवे छै। ए रूपो सोनों रत्नादिक माहरा नहीं इम विचारे पिण तेहने ममत्व भाव छूटो नथी। इम कह्यो तो जोवोनी सामायक में ममत्व भाव छूट्यो नहीं। ते माटे ते धनादिक तेहनों इज कह्यो अनें वोसिरायो कह्यो छै। ते धनादिक थी सावद्य कार्य करवो त्याग्यो छै। पिण तेहनों ममत्व भाव मिट्यो नहीं। ते भणी ते धनादिक एहनों इज छै। ते माटे सामायक में साधु ने वहिरावे ते कार्य निरवद्य छै ते दोष नथी। जिम धन नों कह्यो तिम आगले आलावे स्त्री नों कह्यो। तो सामायक में पिण स्त्री नें वोसिराई कही छै। तेहनी साधु पणा री आज्ञा देवे तो आहार नी आज्ञा किम न देवे। स्त्रियादिक वहिरावे तो आहार किम न वहिरावे। इहाँ तो सूत्र में धन नों अनें स्त्री नों पाठ एक सरीखो कह्यो छै। ते माटे वहिरायां दोष नहीं। जिम आवश्यक सूत्र में कह्यो—साधु एकाशणा में एकल ठाणा में गुरु आयां उठे तो पचखाण भांगे नहीं। तो श्रावक नी सामायक किम भांगे। अकल्पतो कार्य कियां सामायक भांगे पिण निरवद्य कार्य थी सामायक किम भांगे। श्रावक रे साधु नें वहिरायां १२ मों व्रत निपजे छै। अनें व्रत थी सामायक भांगे श्रद्धे, त्यांने सम्यग्दृष्टि किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २६ बोल सम्पूर्ण।

वली केतला एक पाखंडी श्रावक जिमायां धर्म श्रद्धे। तिण ऊपर पडिमाधारी जिन कल्पी अभिग्रहधारी साधु रो नाम लेवे। तथा महावीर रा साधु नें पार्श्वनाथ ना साधु अशनादिक देवे नहीं ते कल्प नहीं तिणसूं न देवे पिण गृहस्थ त्यांने वहिरावे तिण ने धर्म छै। तिम श्रावक ने अशनादिक साधु देवे नहीं, ते साधु रो कल्प नहीं तिण सूं न देवे छै। पिण गृहस्थ श्रावक नें जिमावे तिण में धर्म छै। इम कुहेतु लगाय नें श्रावक जिमायां धर्म कहे छै। तेहनो उत्तर— महावीर ना साधु ने थी पार्श्वनाथ ना साधु अशनादिक देवे नहीं। ते तो त्यांरो कल्प नहीं। पिण महावीर ना साधु नें कोई गृहस्थ आहार देवे तेहनें पार्श्वनाथ ना

साधु तथा जिन कल्पी साधु भलो जाणे अनुमोदना करे छै। अनें श्रावक न साधु अशनादिक देवे नहीं देवावे नहीं अनें देता नें अनुमोदे नहीं। बली आज्ञा पिण देवे नहीं तिणसूं श्रावक नें जिमायां ऊपर पार्श्वनाथ महावीर ना साधु नों न्याय मिले नहीं। वली पार्श्वनाथ ना साधु केशी स्वामी गौतम ने संथारो दियो कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै।

पलालं फासुयं तत्थ पंचमं कुस तणाणिय ।
गोयमस्स निसेज्जाए खिप्पं संपणामए ॥

(उत्तराध्ययन अ० २३ गा० १७)

प० पराल फा० प्राशुक जीवरहित निर्जीव। त० तिहां तिन्दुक नामा बन ने विषे चार प्रकार ना पराल शालिनों १ व्रीहिनों २ कोद्रवानों ३ रालानाम बनस्पति नों ४ पं० पांचमों डाभ प्रमुख नों ५ अ० अनेरा पिण साधु योग्य तृणादिक गो० गोतम ने नि० बेसवा ने अर्थ खि० शीघ्र स० आपे छै बैठवा निमित्त.

अथ इहां गौतम ने तो केशी स्वामी सन्थारो आप्यो कह्यो छै। अनें श्रावक नें तो साधु संथारादिक त्रिविधे करि आपे नही। ते भणी पार्श्वनाथ महावीर ना साधु रो न्याय श्रावक ने जिमाव्यां ऊपर न मिले। डाहा हुवे तो विचारि ओइजो।

इति ३० बोल संपूर्ण ।

तथा वली असोच्चा केवली अन्यमति ना लिङ्ग थकां कोई ने शिष्य न करे वखांण करे नहीं। पिण अनेरा साधु कने "तूं दीक्षा ले" एहवूं उपदेश करे छै। ते पाठ लिखिये छै।

सेणं भंते पव्वावेज्जवा मुंडावेज्जवा णो इणट्ठे समट्ठे उवदेसं पुण करेज्जा ।

(भगवती श० ९ उ० ३१

से० ते भं० हे भगवन्त! प० प्रव्रज्या देवे मु० मुडावे णो० ए अर्थ समर्थ नहीं उ० उपदेश. पु० वली क० करे. "तू प्रभु का पासे दीक्षा ले" इम उपदेश करे ।

अथ इहां पिण कह्यो जे असोच्चा केवली आप तो दीक्षा न देवे। परं अनेरा कनें दीक्षा लेवानों उपदेश करे छै। अनें श्रावक नें अशनादिक देवानों साधु उपदेश पिण न करे, तो देण वालां ने धर्म किम हुवे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३१ बोल सम्पूर्ण।

तथा अभिग्रह धारी परिहार विशुद्ध चारित्तिया नें अनेरा साधु आहार न देवे। अनें कारण पड्यां ते साधु नें पिण अशनादिक देवो कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै।

परिहार कप्पट्ठियस्सणं भिक्खुस्स कप्पइ. आयरिय. उवज्झाएणं. तद्दिवसं एगंसि. गिहंसि पिंडवायं. दव्वावित्तए. तेणपरं. नो से कप्पइ. असणं वा ४ दाउंवा अणुपदाउंवा कप्पइ. से अन्नपरं. वेया.वडियं करित्तए. तंजहा. उट्ठाणंवा निसीयावणं वा तुयट्टावणंवा उच्चारंवा पासवणंवा. खेलं जल संघाण विगिंचणंवा विसोहणंवा करित्तए अह पुण एवं जाणेजा. छिण्णा वा एसुपन्थेसु आउरे झुंजिए पिवासिए तवसी दुव्वले किलंते मुच्छेज्जवा. पवड़ेज्जवा. ए वसे कप्पइ. असणंवा ४ दाउंवा अणुपदाउंवा ।

(वृहत्कल्प उ० ४ बो० २६)

प० परिहार विशुद्ध चरित्र ना धणी ने परिहार कल्प स्थित भिक्षु परिहार विशुद्ध चारित्र नो धणी कोई तप विशेष ने लिये प्रवेश करे एक दिन आहार गुरु तेह में गृहस्थ ना घर नों आपा

वे विधि दिखाडे आहार लेवा नी ते पिण पारणो जेहवो कल्पे तिम रीति देखाडी एह निर्विग्यमाण कप्पट्ठी प० परिहार विशुद्ध चरित्र नी ए विध भि० साधुने क० कल्पे. आ० आचार्य. उ० उपाध्याय त० तेणें तप करिवो मांड्यो ते दिवस नें विषे ए० एक घर ने विषे पि० आहार ने. द० देवरावो कल्पे ते विधि देखाड़े छै । ते० ते दिन उपरान्त. नो० न कल्पे से० तेहनें अ० अशनादिक ४ दा० देवराय वो. अ० घणीवार पिण देवरावो न कल्पे क० कल्पे से० तेहने. अ० अनेरी वे० व्यावच करवा ग्लानना पामें ते माटे. त० तिमज छै तिम कहे छै उ० काउसग्ग ऊभो करिवो नि० बेसाणवो सु० सुवावजो उ० बड़ी नीति पा० लघु नीति खे० खेल गलानों बलजो ज० शरीर नो मल स० संघाण नासिका नो मैल वि० निवर्त्तावबो वि० उच्चारादिके शरीर खरड्यों हुवे ते दूर करावबो असझाय टलावबा. अ० वली ए० इम जा० जाणे हिवे वली इम करतां नें शरीर ग्लानना पावे. तिवारे गुरु आदिक वैयावच कही ते रीति करे जाणी जे छि० कोई आवतो जावतो नथी एहवा निग्रंथ मार्ग ने विषे ते चरित्रियो आ० आतक रोगे करी भूख पीड़ितो हुवे पि० तृषा व्याप्त तपस्वी. दु० दुर्बल कि० किलामना पामी मु० मूर्च्छित नि० निर्बल पणे छ० भूख लागी ए० इम एहवे अवसर से० ते कल्पे तेहने अशनादिक ४ एकवार आणी आपवो अ० घणीवार आपवो ।

अथ अठे कह्यो । जे अभिग्रह धारी परिहार कल्पसित साधु ने पिण तेणेज दिने स्थविर साथे जाइ आहार दिवावे-उपरान्त न दिवावे । अनेरी व्यावच तेहनें बीजा साधु करे । अनें भूख तृषाइं कारणे अशनादिक पिण ते अभिग्रह धारी ने अनेरा साधु देवे इम कह्यो । अनें "श्रावक" ने तो कारण पड्यां पिण साधु अशनादिक देवे नहीं, दिवावे नहीं । ते माटे जिन कल्पी स्थविर कल्पी नों न्याय श्रावक नें जिमाव्यां ऊपर न मिले । वली जिन कल्पी साधु स्थविर कल्पी ने अशनादिक देवे नहीं परं देतां नें अनुमोदना तो करे छें । अनें श्रावक नें तो साधु आहार देवे नहीं दिवावे नहीं । देतां ने अनुमोडे पिण नहीं । ते माटे इहां जिन कल्पी स्थविर कल्पी रो न्याय मिले नहीं । अनें जिन कल्पी साधु तो विशेष धर्म करवा नें अशुभ कर्म खपावां ने अर्थे शुभ योग राई त्याग कीधा ते किण नें ई दीक्षा देवे नहीं वखाण करे नहीं । अनेरा साधु नी व्यावच करे नहीं । संथारो करावे नहीं । पिण और साधु ए कार्य करे छै । त्यांरी अनुमोदना करे छै । अनुमोदना रा त्याग नथी कीधा । अनें श्रावक नें आहार देवे । तेहनी अनुमोदना करवा रा ई साधु रे त्याग छै । अनें जिन कल्पी निरवद्य योग रूंध्यां-ते विशेष गुण रे अर्थे पिण सावद्य जाणी त्याग्या नथी । अनें श्रावक नें देवा रा साधां त्याग कीधा, ते सावद्य जाणी ने त्रिविधे २ त्याग कीधा छै । घर छोड़ी दीक्षा लीधी तिण दिन

एहवूं कह्यूं "सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि" सर्व सावद्य योग रा म्हारे पचखाण छै । । इम पाठ कही चारित्र आदर्यो । तो ते गृहस्थ ने देवो त्याग्यो-ते पिण सावद्य जाण ने त्याग्यो छै । तो सावद्य कार्य में धर्म किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ३२ बोल सम्पूर्ण ।

तथा जे सूयगडाङ्ग में कह्यो-जे साधु गृहस्थादिक नें देवो त्याग्यो । ते संसार भ्रमण नों हेतु जाण ने छोड्यो एहवो कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

जेणिहं णिव्वहे भिक्खू अन्नपाणं तहाविहं
अणुप्पयाणं मन्नेसिं तं विज्जं परिजाणिजा ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ६ गा० २३)

जे० जेणे अन्नपाणी इ इम करी इह लोक नें विषे भि० साधु संयम निर्वहे जीवे तथा विध तहवो निर्दोष अन्नपाणी ग्रहे आजीविका करे एह अन्नपाणी नों देवो केहनें अ० गृहस्थ नें पर तीर्थी नें असयती नें त० ते सर्व संसार भमवा हेतु जाणी नें पडित परिहरे ।

अथ इहाँ पिण कह्यो । ते गृहस्थादिक नें देवो संसार भ्रमण नों हेतु जाणी नें साधु त्याग्यो । इम कह्यो तो गृहस्थ में तो श्रावक पिण आयो । तो ते श्रावक ने दान री साधु अनुमोदना किम करे । तिण में धर्म पुण्य किम कहे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ३३ बोल सम्पूर्ण ।

वली निशीथ सूत्र में इम कह्यो । जे गृहस्थ नों दान अनुमोदे तो चौमासो प्रायश्चित आवे । ते पाठ लिखिये छै ।

जे भिक्खू अण्णउत्थिएणवा गारत्थिएणवा असणंवा ४ देयइ देयन्तंवा साइज्जइ ॥ ७८ ॥

जे भिक्खू अण्णउत्थिएणवा गारत्थिएणवा वत्थंवा पडिग्गहंवा कंबलंवा पाय पुच्छणंवा देयइ देयन्तं वा साइज्जइ. ॥ ७९ ॥

(निशीथ उ० १५ बो० ७८-७९)

जे० जे कोई भि० साधु साध्वी अ० अन्य तीर्थी ने गा० गृहस्थ नें अ० अशना-दिक ४ आहार देवे दे० देवतां नें सा० अनुमोदे ॥ ७८ ॥

जे० जे कोई भि० साधु साध्वी अ० अन्य तीर्थी गा० गृहस्थ नें व० वस्त्र पा० पात्र क० कांवलो पा० पाय पूछणों रजो हरण दे० देवै दे० देवता ने सा० अनुमोदे ॥ ७९ ॥

अथ इहां गृहस्थ नें अशनादिक दियां, अनें देतां नें अनुमोद्यां चौमासी प्रायश्चित कह्यो छै। अनें श्रावक पिण गृहस्थ इज छै ते माटे गृहस्थ नों दान साधु नें अनुमोदनों नहीं। धर्म हुवे तो अनुमोद्यां प्रायश्चित क्यूं कह्यो। धर्मरी सदा ही साधु अनुमोदना करे छै। तिवारे कोई इहाँ अयुक्ति लगावी कहे। जे साधु गृहस्थ ने अशनादिक देवे तो प्रायश्चित–अनें गृहस्थ नें साधु देवे तिण ने भलो जाण्या प्रायश्चित छै। परं गृहस्थ नें गृहस्थ देवे तेहनी अनुमोदना नों प्रायश्चित नहीं। इम कहे तेहनों उत्तर—इण निशीथ ने पनर में १५ उद्देशे एहवा पाठ कह्या छै। "जे भिक्खु सचित्तं अंबं भुंजइ भुंजंतंवा साइज्जइ" इहां कह्यो सचित्त आंबो भोगवे तो अनें भोगवतां ने अनुमोदे तो प्रायश्चित आवे। जो साधु भोगवतो हुवे तेहनें अनुमोदणों नहीं, तो गृहस्थ आंबो भोगवे तेहने साधु किम अनुमोदे। जो गृहस्थ रा दान नें साधु अनुमोदे तो तिण रे लेखे आंबो गृहस्थ भोगवे. तेहने पिण अनुमो-दणो-अनें जो गृहस्थ आंबो भोगवे. तेहनें अनुमोद्यां धर्म नहीं, तो गृहस्थ ने दान देवे ते पिण अनुमोद्यां धर्म नहीं। अनें जे कहे साधु गृहस्थ नें दान देवे नहीं अनें साधु गृहस्थ नें देतो हुवे तेहनें अनुमोदनों नहीं। एहवो ऊंधो अर्थ करे तेहने लेखे इसा सैकड़ा पाठ निशीथ में कह्या छै, ते सर्व एक धारा छै। जे गृहस्थ

आंश्रो चूंतना नें साधु अनुमोदे नहीं, तिम आहार देता नें अनुमोदे नहीं तो ते दान में धर्म किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ३४ बोल सम्पूर्ण ।

केतला एक पहवो प्रश्न पूछै। जे पड़िमाधारी श्रावक ने दीधां काई हुवे। तेहनो उत्तर—पड़िमाधारी पिण देशव्रती छै। तेहना जेतला २ त्याग ते तो व्रत छै। अनें पारणे सूझता आहार नो आगार अव्रत छै ते अव्रत सेवे छै, ते पड़िमाधारी। तेहनें धर्म नहीं तो जे अव्रत सेवावण वालाने धर्म किम हुई। गृहस्थ ना दान नें साधु अनुमोदे तो प्रायश्चित आवे तो पड़िमाधारी श्रावक पिण गृहस्थ छै तेहनां दान अनुमोदन वाला नें ही पाप हुवे, तो देणवाला ने धर्म किम हुवे। तिवारे कोई कहे ए पड़िमाधारी श्रावक नें गृहस्थ न कहिये। पहनें सूत्रमें तो "समणभुए" कह्यो छै। तेहनों उत्तर—जिम द्वारिका नें "देवलोक भुए" कही पिण देवलोक नथी। एतो उपमा कही छै। तिम पड़िमाधारी ने पिण "समण भुए" कह्यो। ते उपमा दीधी छै। ते ईर्यादिक आश्रय पिण गृहस्थपणो मिट्यो नहीं। संथारा में पिण आनन्द श्रावक नें गृहस्थ कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै।

तत्तेणं से आणंद समणो वासए भगवं गोयमं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पादेसुवंदति णमंसति २ त्ता एवं वयासी—अत्थिणं भंते! गिहिणो गिहिवास मज्झे वसन्तस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ. हंता अत्थि ॥ ८३ ॥

जइणं भंते! गिहिणो जाव समुप्पज्जइ. एवं खलुभंते ममंविगिहणो गिहिमज्झे वसंतस्स ओहिणाणे समुप्पणे पुरत्थिमेणं लवण समुद्दे पञ्च जोयण सयाइं जाव लोलुए नरयं जाणामि पासामि ॥ ८४ ॥

तएणं से गोयमे आणंदे समणोवासएणं एवं वयासी—अत्थिणं आणंद ! गिहिणो जाव समुप्पज्जति णो चेव णं एवं महालए तेणं तुम्हं आणन्दा ! एयस्स ट्ठाणस्स आलोएहि जाव तवोकम्मं पड़िवज्जहि ॥ ८५ ॥

(उपासक दशा अ० १)

तिवारे पछे आनन्द श्रमणोपासक नें. भ० भगवान् गोतम ने ति० त्रिणवार मु० मस्तके करी पा० चरणा नें विषे वांदे. ण० नमस्कार करे वांदी नें नमस्कार करी नें इम बोल्या अ० छै भं० हे पूज्य भगवन् ! गि० गृहस्थ नें गि० गृहवास म० माहे. व० वसता नें ओ० अवधि ज्ञान स० ऊपजै हं० हां आनन्द ! उपजे जं० जो भं० हेपूज्य भगवन् ! गि० गृहस्थ ने गि० गृहवास माहे. व० वसता ने ओ० अवधि ज्ञान उपजे ए० इम ख० निश्चय करी नें भं० हे भगवन्त ! म० मुझने पिण गि० गृहस्थ नें गि० गृहवास माहे व० वसता नें ओ० अवधि ज्ञान स० उपनो छै पू० पूर्वदिश ल० लवण. स० समुद्र माहे. प० पांच सौ योजन लगे जाणूं देखूं इम दक्षिण नें पश्चिम उत्तर चूल हेमवन्त पर्वत ऊचो सुधर्म देवलोक लगे जा० यावत् लो० लोलुच पायड़ो नीचो पहिली नरक नों नरकावालो जाणू छू। त० तिवारे पछे. से० ते भगवन्त. गो० गोतम आ० आनन्द स० श्रावक प्रते ए० इम प० बोल्या. आ० उपजे तो छै ।आ० हे आनन्द ! गि० गृहस्थ-वास म० माहे व० वसता ने स० श्रावक नें ओ० अवधि ज्ञान स० उपजे छै पिण णो० नहीं उपजे छै निश्चय एवड़ो मोटो अवधि ज्ञान त० तिण कारणे. तु० तुम्हे आ० अहो आणन्द ! ए० ए ठा० स्थानक कूड़ नो. आ० आलोवो निन्दवो जा० यावत्. त० तपकर्म अ० अंगीकार करो ।

अथ इहां आनन्द श्रावके सन्थारा में पिण गोतम ने कह्यो—जे हूं गृहस्थ छूं. अनें घर मध्ये वसता नें एतलूं अवधि ज्ञान उपनो छै। तो जोवोनी संथारा में पिण आनन्द नें गृहस्थ कहिये। घर मध्ये वसतो कहिये। तो पड़िमा में घर मध्ये वसतो गृहस्थ किम न कहिये। इण न्याय पडिमाधारी श्रावक नें गृहस्थ कहिये। अनें 'निशीथ उ० १५' गृहस्थ नें असनादिक दियां देतां ने अनुमोद्यां चौमासो दंड कह्यो। तो पड़िमाधारी पिण गृहस्थ छै, तेहनां दान ने साधु अनु-मोदे तो तेहनें दंड आवे तो देण वाला ने धर्म किम हुवे। तिवारे कोई कहे गृहस्थ नों दान साधु नें अनुमोदनों नहीं ते माटे साधु अनुमोदे तो तिण नें दण्ड आवे। पिण गृहस्थ नें धर्म हुवे। इम कहे, तेहनो उत्तर—ए निशीथ १५ उद्देशे

गणा बोल कह्या छे। सचित आंबो चूंसे, सचित्त आंबो भोगवे, भोगवतां ने अनुमोदे, तो साधु नें दंड कह्यो। जो सचित्त आंबा भोगवतां ने अनुमोदे ते साधु ने दण्ड आवे तो जे गृहस्थ सचित्त आंबो भोगवे तो तेहनें धर्म किम हुवे। तिम गृहस्थ ने दान देवे तेहनें साधु अनुमोदे तो दंड आवे तो जे गृहस्थ नें देवे तिण नें धर्म किम हुवे। इण न्याय पड़िमाधारी गृहस्थ तेहनों दान अनुमोयां इ दंड आवे तो देण वाला ने धर्म किम हुवे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३५ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली गृहस्थ नी व्यावच करे, करावे, अनुमोदे तो अनाचार कह्यो। ते पाठ लिखिये छे।

गिहिणो वेया वडियं जाइ आजीव वत्तिया ।
तत्ता निवुड भोइत्तं आउरस्स रणाणिय ॥ ६ ॥

(दशवैकालिक अ० ३ गा० ६)

गि० गृहस्थ नी वे० वैयावचनों करिवो तें अनाचीर्ण आ० जाति आ० आजीविका पेट भराई ने व० अर्थे पोतानी जाति जणावी नें आहार लेवे ते अनाचीर्ण त० उन्हों पाणी अग्नि नो शस्त्र पूरो प्रणम्यो नथी एहवा पाणी नों भोगविवो ते मिश्र पाणी भोगवे तो अणाचार आ० रोगादिके पीड्यो थको. स० स्वजनादिक ने संभारे ते अणाचार.

अथ अठे कह्यो—गृहस्थ नी व्यावच कियां करायां अनुमोयां. अठावीसमो अणाचार कह्यो। जे अशनादिक देवे ते पिण व्यावच कही छे। अनें गृहस्थ में पड़िमाधारी पिण आयो। तेहनें पिण गृहस्थ कह्यो छे। तिण सूं तिण नें अशनादिक दियां दिरायां अनुमोयां अणाचार लागे ते अणाचार में धर्म किम कहिये। तिवारे कोई कहे ए अणाचार तो साधु ने कह्यो छे। पिण गृहस्थ नें धर्म छे। तेहनो उत्तर—बावन ५२ अनाचार में मूलो भोगवे ते पिण अनाचार कह्यो। आदो भोगवे तो अनाचार कह्यो। छव ६ प्रकार रा सचित्त लूण भोगविया अणाचार। काजल

धाल्यां, विभूषा कियां, पीठी मर्दन कियां, अनाचार कह्यो ते साधु ने अनाचार छै। ते गृहस्थ रा सर्व बोल सेवे तेहनें धर्म किम हुवे। जे साधु तो ३ करण ३ जोग सूं ५२ अनाचार सेवे तो व्रत भांगे। अनें गृहस्थ ए ५२ बोल सेवे तेहनो व्रत भांगे नहीं, परं पाप तो लागे। अनें जे कहे—गृहस्थ नी वैयावच साधु करे तो अणाचार पिण गृहस्थ नें धर्म छै। तो तिण रे लेखे मूलो आदो पिण साधु भोगव्यां अनाचार अनें गृहस्थ भोगवे तो धर्म कहिणो। इम ५२ बोल साधु सेव्यां अणाचार अनें गृहस्थ सेवे तो तिण रे लेखे धर्म कहिणो। अनें और बोल गृहस्थ सेव्यां धर्म नहीं तो व्यावच पिण गृहस्थ री गृहस्थ करे तिण में धर्म नहीं। इणन्याय पड़िमाधारी पिण गृहस्थ छै। तेहनें अशनादिक नों देवो. ते व्यावच्च छै, तेहमें धर्म नहीं। अनें जे "समणभुए" ते श्रमण सरीखो ए पाठ रो अर्थ बतावी लोकां रे भ्रम पाडे छै ते तो उपमा वाची शब्द छै। उपमा तो घणे ठामे चाली छै। अन्तगढ दशांगे तथा वन्हि दशा उपांगे सूत्रे द्वारिका ने "पच्चक्ख देवलोक भुया" कही। ए द्वारिका प्रत्यक्ष देवलोक सरीखी कही। तो किहां तो देवलोक, अनें किहां द्वारिका नगरी, पिण ए उपमा छै। तिम पड़िमाधारी ने कह्यो "समणभुए" ए पिण उपमा छै। किहां साधु सर्व व्रती अनें किहां श्रावक देशव्रती। तथा वली स्थविरां रा गुणा में एहवा पाठ कह्या—

"अजिणा जिण संकासा जिणा इव अवितहवा गरेमाणा"

इहां पिण स्थविरां ने केवली सरीखा कह्या। तो किहां तो केवली रो ज्ञान अनें किहां छद्मस्थ रो ज्ञान। केवली नें अनन्त मे भांगे स्थविरां पासे ज्ञान छै। पिण जिन सरीखा कह्या। अनन्त गुणो फेर ज्ञान में छै। तेहनें पिण जिन सरीखा कह्या ते ए देश उपमा छै। तिम आनन्द नें "समणभुए" कह्यो। ए पिण देश उपमा छै।

तथा वली "जम्बू द्वीप पणत्ति" में भरत जी रा अश्व रत्न रा वर्णन में एहवो पाठ छै। "इसिमिव खमाए" ऋषि (साधु) नी परे क्षमावान् छै। तो किहां साधु संयती अनें किहां ए अश्व असंयती ए पिण देश उपमा छै। तिम पड़िमाधारी नें "समणभुए" कह्यो। ए पि ण देशथकी उपमा छै। परं सर्वथकी

नहीं। ते किम जे साधु रे सर्वथा प्रकारे बन्धन त्रूट्यो। अनें पड़िमाधारी रे प्रेम बन्धन त्रूट्यो नथी ते माटे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३६ बोल सम्पूर्ण।

वली पड़िमाधारी रे प्रेमबन्धन त्रूट्यो नथी। ते पाठ लिखिये छै—

केवल सेणाय पेज्ज वंधणं अवोच्छिन्नं भवति॰ एवं से कप्पइ णाय विहिएतए।

(दशाश्रुत स्कन्ध अ० ६)

के० एक॰ से० तेहनें॰ णा० ज्ञान माता पितादिक ने विषे प्रेमबंधन अ० त्रूट्यो नथी॰ भ० हुवे॰ ए० एणी परे॰ से० तेहने क० कल्पे घटे णा० न्यातविधि गोचरी करे आहार नें जावे।

अथ अठे इग्यारमी पड़िमा में पिण ए पाठ कह्यो। जे न्यातीलां रो राग प्रेम बंधन त्रूट्यो नथी ते माटे न्यातीलां रे इज घरे जावे इम कह्यूं। अनें साधु रे सर्वथा प्रकारे तांतो त्रूटो छै। ते भणी "अणाय कुले" घणे ठामे कह्यो छै। ते भणी "समणभुए" उपमा देशथकी छै। पिण सर्वथकी नहीं। इहां तो चौड़े कह्यो जो न्यातीलां रो राग प्रेम बंधन न त्रूट्यो, ते भणी न्यातीलां रे इज घरे गोचरी जाय, तो प्रेमबन्धन थी न्यातीला पिण देवे छै। तो दातार तथा लेनहार बिहूं नें जिन आज्ञा किम देवे। जे ए प्रेम राग रूप बंधन सावद्य आज्ञा बाहिरे छै। तो ते राग करी तेहनें घरे गोचरी जाय ते पिण कार्य सावद्य आज्ञा बाहिरे छै। अनें जे लेनहार नें धर्म नहीं तो दातार नें धर्म किम हुवे। इण न्याय पड़िमाधारी ने "समणभुए" कह्यो। ते देशथकी उपमा छै, परं सर्व थकी नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३७ बोल सम्पूर्ण।

तिवारे कोई एक कहे-जो पड़िमाधारी नें दियां धर्म न हुवे तो "दशाश्रुतस्कंध" में इम क्यूं कह्यो । जे पड़िमाधारी न्यातीलांरे घरे भिक्षा ने अर्थ जाय, तिहां पहिलां उतरो दाल अनें पछे उतस्या चावल तो कल्पेपड़िमाधारी नें दाल लेणी, न कल्पे चावल लेवा ॥१॥ अने पहिलां उतस्या चावल पछे उतरी दाल तो कल्पे चावल लेवा न कल्पे दाल ॥२॥ दाल अनें चावल दोनूइ पहिलां उतस्या तो दोनूइ कल्पे ॥३॥ अनें दोनुं पछे उतस्या तो दोनुं न कल्पे ॥४॥ इहां चावल दाल पहिलां उतस्या ते पड़िमाधारी नें लेवा कल्पे, कह्या—ते माटे पड़िमाधारी लेवे तेहमें जिन आज्ञा छै। आज्ञा बाहिरे हुवे तो कल्पे न कहिता।

इम कहे तेहनों उत्तर—ए कल्प नाम आज्ञा नो नहीं छै। ए कल्पनाम तो आचार नों छै। पड़िमाधारी में जेहवो आचार कल्पतो हुन्तो ते बतायो। पिण आज्ञा नही दीधी। इम जो आज्ञा हुवे, तो अम्बड ने अधिकारे पिण एहवो कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

अम्बडस्स परिव्वायगस्स कप्पति मागहए अद्धाढए जलस्स पड़िगाहित्तए सेविय, वहमाणे णो चेवणं अवहमाणे एवं थिमियं पसणे परिपूए णो चेवणं अपरिपूए सेविय, सावज्जेति कओणो चेवणं अणवज्जे सेविये, जीवातिकाओ णो चेवणं अजीवा सेविय दिगणे णो चेवणं अदिगणे सेविय हत्थ पाय चरु चम्म पक्खालणट्ठयाए पिवित्तएवा णो चेव णं सिणाइत्तएवा।

(उवाई प्रश्न १४)

अ० अम्बड परिव्राजक नें कल्पे म० मगध देश सम्बन्धी अर्धाढक मान विशेष सेर ४ ज० जल पाणी नों पडिगाहिवो अतिशय सूं ग्रहिवो से० ते पिण वहती नदी आदिक संबंधि प्रवाहनों. णो० न लेवो अवहतो बावड़ी कूआ तालाब सम्बन्धी पाणी ए० इम पाणी नीचे कादो न थो प० अति आछो निर्मल प० वस्त्रे करी नें गल्यो लेवो णो० पिण ते न लेवो अ० जे वस्त्रे करी-करी गल्यो न हुई से० ते पिण निश्चय करी सावद्य पाप सहित त्ति० एहवो कही नें पिण ते न जाणे अनवद्य. चे० (पदपूर्ण भणी) से० ते पिण जीव-सचेतन रूप ति०

इहवो कहीनें णो॰ पिण न जानवो. अ॰ अजीव चेतना रहित से॰ ते पिण दीधो लेवणो. णे॰ पिण ते न लेवो जे अ॰ अण दीधो

से॰ ते पिण ह॰ हाथ पा॰ पाय पग च॰ चरु पात्र च॰ चमचा करछी प॰ पखालवारे अर्थे णो॰ नहीं सि॰ स्नान निमित्ते।

अथ इहां कह्यो—कल्पे अम्बड सन्यासी नें मगध देश सम्बन्धी अर्ध आढक मान ४ सेर पाणी लेवो ते पिण कर्दम रहित निर्मल छाण्यो—ते पिण सावद्य कहितां पाप सहित ए कार्य एहवूं कहीनें। ते पिण पाणी सचित्त छै जीव सहित छै इम कही नें ते पाणी अम्बड ने लेवो कल्पे, एहवूं कह्यूं छै। तो जे "पड़िमाधारी ने पहिलां उतरी दाल लेवी कल्पे" इम कह्यां माटे आज्ञा में कहे तो तिणरे लेखे अम्बड काचो पाणी लियो ते पिण जिन आज्ञा में कहिणो। कल्पे अम्बड नें काचो पाणी लेवो. इम कह्यो ते माटे इहां पिण आज्ञा कहिणी। अम्बड काचो पाणी पाप सहित कही ने लेवे। तिण में जिन आज्ञा नहीं तो पड़िमाधारी में पिण आज्ञा नहीं। कोई मतपक्षी कहे जे कह्यो-कल्पे अम्बड नें काचो पाणी लेवो, ए तो सन्यासीपणा नों कल्प आचार कह्यो छै। पिण अम्बड श्रावक थयां पाछे कल्पे पाणी लेवो, इम न कह्यो। इम कहे तेहनों उत्तर—अम्बड नों कल्प कह्यो. ते तो श्रावक थयां पाछलो ए पाठ छै। पिण पहिलां नों नहीं। ते किम, जे इहां पाठ में इम कह्यो-कल्पे अम्बड नें काचो पाणी लेवो। ते पिण वह वह तो निर्मल छाण्यो. ते पिण सावद्य पाप सहित ए कार्य छै. तथा ए पाणी जीव छै. इम कही ने लेवो कल्पे, कह्यो। ते माटे ए ओलखणा तो श्रावक थयां पछे आई छै। ते माटे 'पाप सहित ए कार्य' इम कही नें लेवे। अनें सन्यासी पणा ना कल्प में सावद्य अनें जीव कही नें लेवो ए पाठ न थी। अनेरा सन्यासी रा विस्तार में एहवा पाठ छै। ते लिखिये छै।

तेसिणं परिव्वायगाणं कप्पति मागहए पत्थए जलस्स पड़िगाहित्तए सेविय वहमाणे णो चेवणं अवहमाणे सेविय थिमि उदए नो चेवणं कद्दमोदए सेविय वहुपसण्णे नो चेवणं अवहुपसण्णे सेविय परिपूए णो चेवणं अपरिपूए सेविय णं

दिएणे णो चेवणं अदिएणे सेविय पिवित्तए णो चेवणं हत्थ पाय चरु चम्म पक्खालणट्ठाए सिणाइत्तएवा।

(उवाई प्रश्न १२)

से० ते प० सन्यासी नें. क० कल्पे (कटे) मा० मगध देश सम्बन्धी प० पाथो एक मान विशेष सेर २ प्रमाण. ज० जलपाणी नों पडिगाहिवो अतिशय सू ग्रहिवो णो० पिण ते न लेवो अ० अणवहतो वावड़ी कूआ तालाव सम्बन्धी से० ते पिण पाणी जेह नीचे कर्दम नथी णो० पिण ते न लेवो जे कर्दमोदक कादा सहित पाणी से० ते पिण कल्पे बहु प्रसन्न अति आछो निर्मल णो० ते पिण न लेवो अति मैलो से० ते पिण परिपूत वस्त्रे करी नें गल्यो णो० पिण ते न लेवो अपरिपुत वस्त्रे करी गल्यो।न हुइं. से० ते पिण निश्चय लेवो दत्त दीधो मनुष्यादिकें णो० पिण ते न लेवो अणदीधो मनुष्यादिके. से० ते पिण पीवा निमित्ते. णो० नहीं ह० हाथ पग चरु चमचो. प० पखालवा रे अर्थे सि० और नहीं स्नान निमित्ते।

अथ इहां अनेरा सन्यासी रा कल्प में एहवो पाठ कह्यो, जे कल्पे परिव्राजकां ने मगध देश सम्बन्धिया पाथो प्रमाण पाणी लेवो। ते पिण कर्दम रहित निर्मल छाण्यो. ते पिण दीधो लेवो कल्पे। पिण इम नकह्यो। ए सावद्य अनें जीव कही नें लेवे। ते अनेरा सन्यासी जीव. अजीव. सावद्य. निरवद्य. ना अजाण छै। अनें अम्बड सावद्य. निरवद्य. जीव. अजीव. जाणे छै श्रावक छै। ते माटे अम्बड तो सावद्य. जीव. कहीने लेवे। अनें अनेरा सन्यासी ए सावद्य अनें ए पाणी जीव छै. इम कह्यां विना ई लेवे छै। इण न्याय अम्बड सन्यासी श्रावक थयां पछे ए "कल्पे" कह्यो छै। वली तिण हीज प्रश्न में पहिलां अम्बड ने श्रावक कह्यो छै। "अंबडेणं परिव्वायए समाणे वासए अभिगय जीवाजीव उपलद्ध पुण्ण पावा" इत्यादिक पाठ कही नें पछे आगले कह्यो. कल्पे अम्बड नें सचित्त वहतो पाणी सावद्य कही नें लेवो, ते माटे श्रावक पणो आयां पछे अम्बड नों ए कल्प कह्यो ते सावद्य कल्प छै पिण धर्म नहीं। तिम पड़िमाधारी नों ते कल्प कह्यो छे पिण धर्म नहीं। भगवन्त तो जेहनों जे कल्प हुन्तो ते वतायो। पिण आज्ञा नहीं दीधी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३८ बोल सम्पूर्ण।

तथा वली "वर्णनाग नतुओ" संग्रामे गयो-तिहां एहवो पाठ कह्यो छै। ते लिखिये छै।

कप्पइ मे रह मुसलं संगामं संगामेमाणस्स। जे पुव्विं पहणाइ से पडिहणित्तए अवसेसे णो कप्पतीति अय मेया रूवं अभिग्गहं अभि गिरिहत्ता रह मुसलं संगामं संगामेत्ति।

(भगवती श० ७ उ० ६)

क० कल्पे मुझ नें र० रथ मुसल नामा संग्राम स० संग्राम करते छते जे० जे पूर्व हणें से० ते प्रति हणवो। अ० अव शेष कहितां बीजा नें हणवो न कल्पे न घटे अ० एतादृश रूप एहवो अ० अभिग्रह प्रतिग्रह ग्रहो ने र० रथ मुसल संग्राम प्रति करे।

अथ इहां पिण वर्ण नाग नतुओ संग्रामे गयो। तिहां एहवो अभिग्रह धास्यो, कल्पे मुझ ने जे पूर्वे हणे तेहनें हणवो। जे न हणे तेहनें न हणवो। इहां पिण शस्त्र चलावे तेहनें हणवो कल्पे कह्यो। ए "वर्ण नाग नतुओ" नें तो श्रावक कह्यो छै. एहनों ए कल्प कह्यो। पिण जिन आज्ञा नहीं। ए तो जे कल्प हुन्तो ते बतायो। तिम अम्बड नें काचो पाणी लेवो कल्पे, तीर्थङ्करे कह्यो। पिण जिन आज्ञा नहीं। ए तो अम्बड नो जेहवो कल्प आचार हुन्तो ते बतायो। तिम पड़िमाधारी नों जेहवो कल्प आचार हुन्तो ते बतायो। पिण जिन आज्ञा नहीं। ते पड़िमाधारी ने एहवो दशा श्रुत स्कन्धमें पाठ कह्यो। "केवल सेणा य पेज्जबंधणं अवोच्छिन्ने भवति एवं से कप्पइ णाय विहिंएत्तए" इहां कह्यो जे केवल न्यातीला रो प्रेम बन्धन तूटो न थी ते माटे—कल्पे पड़िमाधारी नें न्यातीला रे इज घरे वहिरवो, इम कह्यो। पिण न्यातीला रे इज जाय चो इम आज्ञा दीधी नहीं। कल्पे पहिलां दाल उतरी ते लेवी, इहां आज्ञा कहे, तो त्यांरे लेखे न्यातीला रे इज घरे वाहिरवो, इहां पिण आज्ञा कहिणी। वली कल्पे अम्बड नें काचो पाणी सावद्य कही लेवो, इहां पिण त्यांरे लेखे आज्ञा कहिणी। वली कल्पे "वर्णनागनतुआ" नें पहिलां हणे तेहनें हणवो, इहां पिण तिण रे लेखे आज्ञा कहिणी। अनें जो "वर्ण

नाग नतुओ" नों तथा अम्बड नों जेहवो कल्प आचार हुन्तो. ते वतायो , पिण जिन आज्ञा नहीं । तो पड़िमाधारी नें न्यातीला रे घरे वहिरवो कल्पे, एह पिण तेहनो जे कल्प (आचार) हुन्तो ते वतायो पिण आज्ञा नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ३६ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली उत्तराध्ययन में कह्यो । सर्व श्रावक थकी पिण साधु चारित्र करी प्रधान छै । इम कह्यो, ते पाठ कहे छै ।

संति एगेहिं भिक्खूहिं गारत्था संजमुत्तरा ।
गारत्थेहिं सव्वेहिं साहवो संजमुत्तरा ॥ २० ॥

(उत्तराध्ययन अ० ५ गा० २०)

सं० छै , ए० एकेक भी० पर पाषंडी कापड़ीयादिक ना भिक्षु थी गा० गृहस्थ नो १२ व्रत रूप सं० संयम उ० प्रधान गा० गृहस्थ स० सगलाई देशव्रती थकी सा० साधुनो सर्वव्रती ५ महाव्रत रूप संयम करी उ० प्रधान छै ।

अथ इहां इम कह्यो—जे एकेक भिक्षाचर अन्यतीर्थी थकी गृहस्थ श्रावक देशव्रते करी प्रधान अनें सर्व गृहस्थ थकी साधु सर्व व्रते करी प्रधान । तो ओलोनी सर्व गृहस्थ थकी पिण सर्व व्रते करी साधु में प्रधान कह्यो । तो पड़िमाधारी श्रावक साधु रे तुल्य किम आवे । सर्व गृहस्थ में तो पड़िमाधारी पिण आयो । ते श्रावक पड़िमाधारी पिण देशव्रती छै । ते माटे सर्व व्रती रे तुल्य न आवे । इणन्याय "समणभुए" पड़िमाधारी श्रावक नें कह्यो । ते देशथकी व्रतां रे लेखे उपमा दीधी छै । परं तेहनों खाणो पीणो तो व्रत नथी । तेहनी तपस्या में धर्म छै, परं पारणा में धर्म नथी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ४० बोल सम्पूर्ण ।

वली केई कहै—श्रावक सामायक पोषां में बैठो छै तेहने कारण ऊपनां और गृहस्थ साता करे, तो साधु आज्ञा न देवे परं धर्म छै। एहनें सावद्य रो त्याग छै। ते माटे एहनी व्यावच कियां पाप नहीं। इम कहै तेहनो उत्तर—सामायक पोषां मे आगमिया काल में सावद्य सेवन रो त्याग नहीं छै। आगमिया काल मे सावद्य सेवन री इच्छा मिटी नहीं। तो जीवांनी इण शरीर थी आगमिया काल में पाच आश्रव सेवण रो आगार छै। ते भणी तेहनो शरीर शस्त्र छै। अनें जे शरीर नी व्यावच करे तेणे शस्त्र तीखो कीधो जिम कोई मासताइ छुरी कटारी सूं जीवहणवारा त्याग कीधा ते छुरी तीखी करे तो पिण आगमिया काल नी अपेक्षा तिण वेलां शस्त्र तीखो कियो कहिये। तिम सामायक पोषा मे इण काया सूं पांच आश्रव सेवण रा त्याग परं आगमिया काल में ते काया थी ५ आश्रव सेवण रो आगार ते माटे ए शरीर शस्त्र छै। तेहनी व्यावच करण वाले छः काया रो शस्त्र तीखो कीधो कहिये। हिवडां त्याग परं आगमिया काल नी अपेक्षा ए शरीर शस्त्र छै। वली सामायक पोषा माहि पिण अनुमोदण रो करण खुल्यो ते न्याय शस्त्र कह्यो छै। वली कोइक मास में ६ पोषा ८ पोहरिया करे छै। अनें परदेशां दूकाना छै। सैकड़ां गुमाश्ता कमाय रह्या है। तो ते वर्ष रा ७२ पोषा रो ब्याज लेवे कि नहीं। बहत्तर दिन में जे गुमाश्ता हजारां रुपया कमावे ते सर्व नफो लेवे कि नहीं। सर्व नो मालिक तो एहिज छै। ते माटे पोषा में पिण तांतो तूट्यो नथी। परिग्रह ममत्व भाव मिट्यो नहीं। ते साख भगवती श० ८ उ० ५ कही छै। ते माटे सामायक मे पिण तेहनी आत्मा शस्त्र छै।

तिवारें कोई कहे सामायक में श्रावक री आत्मा शस्त्र किहां कही छै। तेहनूं उत्तर सूत्र पाठ मध्ये कह्यो। ते पाठ लिखिये छै—

.. समणो वासगस्स णं भंते! सामाइय कडस्स समणो-वस्सए अत्थमाणस्स तस्स णं भंते! किं ईरियावहिया किरियाकज्जइ. संपराइया किरिया कज्जइ. गोयमा! नो ईरियावहिया किरिया कज्जइ. संपराइया किरिया कज्जइ. से केणट्ठेणं जाव संपराइया गोयमा! समणोवासयस्स णं सामाइय

कडस्स समणोवस्सए अत्थमाणस्स आया अहिगरणी भवइ. आयाहि गरण वत्तियं च णं तस्स नो ईरिया वहिया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ संपराइया किरिया कज्जइ से तेणट्ठेणं. ॥४॥

• (भगवती श० ७ उ० १)

स० श्रमणोपासक ने भं० हे भगवन्त ! सामायक कीये छते म० श्रमण नों जे उपाश्रय तेहने विपे अ० बैठो छै त० ते श्रमणोपासक ने भ० भगवन्त ? किस्यूं इ० इरियावहिकी क्रिया हुई अथवा संपरायकी क्रिया हुई निरुद्ध कषायपणा थी ए आयकाईं प्रश्न हे गौतम ? णो० इरियावहिकी क्रिया न उपजे सं० सपरायको उपजे से० ते केह अर्थे यावत् सपराय क्रिया हुइं. गौतम ? स० श्रमणोपासक ने सामायक कीधं छतै स० श्रमण साधु तेहने उपाश्रय नें विपे. अ० रहतें छतं आ० आत्माजीव आ० अधिकरण ते हल शकटादिक ते कषाय ना आश्रय भूत छै आ० आत्मा अधिकरण नें विपे वर्त्तें छै ते माटे तेहनें णो० इरियावहिको क्रिया न उपजे. स० सपराइ क्रिया उपजे से० ते माटे।

अथ इहाँ पिण सामायक मे श्रावक री आत्मा अधिकरण कही छै। अधिकरण ते छव ई काय रो शस्त्र जाणवो। ते माटे सामायक पोषा में तेहनी काया शस्त्र छै। ते शस्त्र तीखो कियाँ धर्म नहीं। वली ठाणाङ्ग ठाणे १० अव्रत नें भाव शस्त्र कह्यो छै। ते सामायक मे पिण वस्त्र गेहणा पूंजणी आदिक उपकरण अनें काया ए सर्व अव्रत में छै। तेहना यत्न कियाँ धर्म नहीं।

तिवारे कोई कहै सामायक में पूंजणी राखे तेहनो धर्म छै। दया रे अर्थे पूंजणी राखे छै। तेहनो उत्तर—ए पूंजणी आदिक सामायक में राखे ते अव्रत में छै। ए तो सामायक में शरीर नी रक्षा निमित्त पूंजणी आदिक उपधि राखे छै। ते पिण आप री कचाई छै परं धर्म नहीं। ते किम—जे पूंजणी आदिक न राखे तो कायर स्थिर राखणी पड़े। अनें काया स्थिर राखणे री शक्ति नहीं। माछरादिक ना फर्स खमणी आवे नहीं। ते माटे पूंजणी आदिक राखे। माछरादिक पूंजी खाज खणे। ए तो शरीर नी रक्षा निमित्ते पूंजे. पिण धर्म हेतु नहीं। कोई कहे दया रे अर्थे पूंजे ते मिले नहीं। जो पूंजणी विना दया न पले, तो अढ़ाई द्वीप बारे असंख्याता तिर्यञ्च श्रावक छै। सामायकादिक व्रत पाले छै। त्यांरे तो पूंजणी दीसे

नहीं । जे दया रे अर्थे पूंजणो राखणी कहै—त्यांरे लेखे अढ़ाई द्वीप बारे श्रावकां रे दया किम पले पिण ए पूंजणीयादिक राखे ते शरीर नी रक्षाने अर्थे छै। जे बिना पूंज्यां तो खणवारा त्याग अनें माछरादिक रा फर्स खमणी न आवे तिणसूं पूंजीनें खणे छै। ए पूंजे ते खाज खणवा साता रे अर्थे, जो पूंजे इज नहीं—तो दया तो घणी चोखी पले। ते किम माछरादिक उड़ावना पड़े नहीं। तेहना फर्स सह्यां कष्ट खम्यां घणी निर्जरा हुवे। परं दया तो उठे नहीं अनें पहवी शक्ति नहीं। ते माटे पूंजणी आदिक राखी खाज खणे छै। जिम किणही अछांण्यो पाणी पीवा रा त्याग कीधा—अनें पाणी छाणे ते पीवा रे अर्थे, परं दयारे अर्थे छाणे नहीं। ते किम—विना छांण्या तो पीवा रा त्याग अनें न छांणे तो पाणी पीणो नहीं। अपूठी दया तो चोखी पले पिण आप सें पाणी पीधां विना रहिणी न आवे। तिण सूं पीवा रे अर्थे छांणे ते धर्म नहीं। तिम सामायक में विना पूंज्यां खाज खणवारा त्याग अनें जो पूंजे नहीं तो खाज खणणी नहीं पड़े, पहवी शक्ति नहीं। तिणसूं पूंजणी राखे छै। ए श्रावक रा उपधि सर्व अव्रत में छै। तिवारे कोई कहै—साधु पिण पूंजणी आदिक राखे छै। जो श्रावक नें धर्म नहीं तो साधु नें पिण धर्म नहीं। इम कहे तेहनों उत्तर—ए साधु पिण शरीर ने अर्थे राखे छै। ए तो बात सत्य छै पिण साधु रो शरीर छव ६ काय रो पीहर छै पिण शस्त्र नहीं ते माटे साधु रा उपधि अनें शरीर पिण धर्म नें हेतु छै। ते माटे साधु उपधि राखे ते धर्म छै। अनें श्रावक रो शरीर छव ६ काय रो शस्त्र छै। ते माटे तेहना उपकरण पिण शरीर नें अर्थे छै। ते भणी गृहस्थ उपकरण राखे ते सावद्य व्यापार छै। अनें साधु उपकरण राखे ते निरवद्य भला व्यापार छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४१ बोल सम्पूर्ण ।

तिवारे कोई कहै ए श्रावक उपकरण राखै ते भला नहीं। अनें साधु राखे ते भला व्यापार किहां कह्या छै। तेहनो उत्तर। सूत्रें करी कहिये छै।

चउव्विहे पणिहाणे प० तं० मण पणिहाणे वय पणिहाणे. काय पणिहाणे. उवगरण पणिहाणे. एवं नेरइयाणं पंचेंदियाणं जाव वेमाणियाणं। चउव्विहे सुप्पणिहाणे. प० तं० मणसुप्पणिहाणे. जाव उवगरण सुप्पणिहाणे. एवं संजय मणुस्साणवि। चउव्विहे दुप्पणिहाणे. प० तं० मणदुप्पणिहाणे जाव उवगरण एवं पंचेंदियाणं जाव वेमाणियाणं.

(ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० १)

च० चारि प्रकारे. प० व्यापार प० परूप्या तं० ते कहे छै म० मन प्रणिधान व्यापार आर्त्त आदि चार ध्यान वचन प्रणिधान. का० काय प० व्यापार उ० उपकरण प्रणिधान ते लौकिक लोकोत्तर रूप उपकरण वस्त्र पात्रादिक तेहनू संयमन ने काजे असंयम नें काजे प्रवर्तांविवो—ते उपकरण प्रणिधान ए० इम णे नारकी ने प० पचेन्द्रिय ने जा० जावत् वैमानिक लगे एकेन्द्रियादिक वर्ज्या तेहनें मनादिक नथी तो प्रणिधान किहां थी॥ हिवे प्रणिधान विशेष कहे छै च० चार प्रकारे सु० रूडो जे सयमार्थ पणा थकी मनादिक नो व्यापार ते सुप्रणिधान परूप्यो। म० मन सुप्रणिधान. जा० जावत् उ० उपकरण सुप्रणिधान ए० इम मनुष्य ना दंडक मांही एक संयती मनुष्य नें चारित्र परिणाम छै ते माटे ये चार प्रणिधान सयती ने इज हुइं॥ च० चार प्रकारे दु० असंयम ने अर्थे मनादिक नो व्यापार ते दुष्प्रणिधान पं० परूप्यो त० ते कहे छै म० मनदुःप्रणिधान व० वचन दुःप्रणिधान क० काया दुःप्रणिधान जा० यावत् उ० उपकरण दु० दुःप्रणिधान ए० इम पं० ए पंचेन्द्रिय ने हुइं जा० यावत् वे० वैमानिक लगे।

अथ इहां चार व्यापार कह्या। मन १ वचन २ काया ३ उपकरण ४ ए चारूं व्यापार सन्नि पंचेन्द्रिय रे कह्या। ए चारूं भुंडा व्यापार पिण १६ दंडक सन्नी पंचेन्द्रिय रे कह्या। अने ये चारूं भला व्यापार तो एक संयती मनुष्यां रे इज कह्या। पिण और रे न कह्या। तो ओवोनी साधु रा उपकरण तो भला व्यापार में घाल्या अनें श्रावकरा पूंजणी आदिक उपकरण भला व्यापार में न घाल्या। ते माटे पूंजणी आदिक श्रावक राखे ते सावद्य योग छै। अनें साधु राखे ते भला निरवद्य व्यापार छै। श्रावकरा उपकरण तो अव्रत मांहि छै। परिग्रह माहे छै।

ते माटे भला व्यापार नहीं। तथा निशीथ उ० १५ गृहस्थ ने रजोहरण पूंजणी आदिक दियां देतांने भलो जाण्या चौमासी प्रायश्चित कह्यो छै। पूंजणी देतां ने भलो जाण्यां ही प्रायश्चित आवे तो गृहस्थ माहोमाही पूंजणी आदिक देवे त्यांने धर्म किम कहिये।

कोई कहे साधु गृहस्थ नें सामायक पालणी सिखावे-परं पलावे नहीं पलावारी आज्ञा देवे नहीं तो पालणी किम सिखावे। तत्रोत्तरम्—एक मुहूर्त नी सामायक कीधी। अनें एक मुहूर्त्त वीतां पछे सामायक तो पल गई. ए तो आलोयणा री पाटी छै। ते आलोवणा करण री आज्ञा छै। धर्म छै। ते भणी आलोयण री पाटी सिखावै छै ते आज्ञा बाहिरे नहीं। अनें साधु पलावे नहीं ते उठवा रो ठिकाणो जाण नें पलावे नहीं। जिम किण ही पौरसी कीधी ते जीमण रे अर्थे साधु ने पूछे। साधु पौहर दिन आयो जाणे तो पिण बतावे नहीं। तिम उठण रो ठिकाणो जाण ने पलावे नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४२ बोल सम्पूर्ण।

इति दानाऽधिकारः समाप्तः।



अथ अनुकम्पाऽधिकारः।

केतला एक अज्ञानी इम कहे। एक तो जीवहणे १ एक न हणे २ एक जीव बचावे ३ ए जीव बचावे ते न हणे तिण में आयो। एहवो कुहेतु लगावी ने असंयती जीवाँरो जीवणो वाञ्छयां धर्म कहे छै। तेहनो उत्तर—एक तो जीव हणे १ एक न हणे २ एक जीव छुडावे ३ ए तीनूं न्यारा २ छै। दोयां में मिले नहीं ते ऊपर दूजो दृष्टान्त देई ओलखावे छै। जिम एक तो भूंठ बोलें १ एक भूंठ न बोले २ एक सांच बोले ३ ए पिण तीनूं न्यारा छै। अनें भूठ बोले ते तो अशुद्ध छै १ भूंठ बोले नहीं ते शुद्ध छै २ अनें सांच बोले ते शुद्ध अशुद्ध बेहू छै ३। जे सावद्य सांच बोले ते तो अशुद्ध-अनें निरवद्य साच बोले ते शुद्ध छै। इम साच बोले ते तीजो न्यारो छै। तिम जीव हणे ते तो अशुद्ध छै १ न हणे ते शुद्ध छै २ अनें छोडावे तेहनो न्याय—जे जीव हणता नें उपदेश देई ने हिंसा छोडावे ते तो शुद्ध छै। अनें जोरावरी सूं तथा अर्थ (धन) देइ तथा जीवरो जीवणो वांछी छोडावे ते अशुद्ध छै। इम तीनूं न्यारा २ छै। जद आगलो कहे इम नहीं ए तो एम छै। एक भूठ बोले १ एक भूठ न बोले २ एक भूठ बोलता ने वर्जे २ ए ३ दोयाँ में घालो। तिम जीवरा पिण तीनूं बोल दोयां में घालणा। तेहनो उत्तर—एक तो भूठ बोले ते सावद्य असत्य वचन योग छै १। एक भूठ बोलवारा त्याग कीधा ते संवर छै २। एक भूठ बोलता नें वर्जे उपदेश देवे समझावे ते वचन रो शुभ योग छै निर्जरा री करणी छै इम तीनूं न्यारा २ छै। तिम एक तो जीव हणे तें हिंसक १ एक हणवा-रा त्याग कीधा ते हणे नहीं ए संवर २ तीजो जीव हणतां ने उपदेश देई ने सम-भावे. हिंसा छोडावे ३ जिम उपदेश देइ भूठ छोडावे, तिम उपदेश देइ हिंसा छुडावे। ए वचन रो शुभ योग निर्जरा री करणी छै। ए तीनूं न्यारा २ छै। जद आगलो कहे इम नहीं। एक तो जीव हणे १ एक जीव न हणे २ एक जीव रो जीवणो वांछी नें जीव ने छोडायो ३। ए किण में आयो तेहनों उत्तर—एक तो चोरी

करे १ एक चोरी न करे २ एक ते धणी रो धन राखवा नें चोरी करता नीं चोरी छोड़ावे ३ जिम गृहस्थ रो धन राखवा चोरी छुड़ावे ए तीजो न्यारो छै। तिम जीव नो जीवणों वांछी जीव छुडावे ते पिण तीजो न्यारो। चोरी छुड़ावे ए पिण तीजो न्यारो छै। जिम चोर नें तरिवा उपदेश देइ हिंसा छोड़ावे ते पिण शुद्ध छै। धन राखवारो कर्त्तव्य साधु न करे। धन राखवा ने अर्थे चोर ने साधु उपदेश देवे नहीं। तिम असंयती नो जीवणो वांछी नें तेहना जीवितव्य नें अर्थे साधु उपदेश देवे नहीं। हिंसक अनें चोर नें तरिवा भणी उपदेश देवे। परं धन राखवा ने अर्थे अनें असंयम जीवितव्य नैं अर्थे उपदेश देवे नहीं। श्री तीर्थङ्कर देव पिण पोताना कर्म खपावा तथा अनेरा नें तारिवा नें अर्थे उपदेश देवे इम कह्यूं छै। पिण जीव बचावा उपदेश देवे इम कह्यो नहीं। ते पाठ प्रते लिखिये छै।

नो काम किच्चा नय बाल किच्चा
राया भिओगेण कुतो भएणं।
वियागरेज्जा पसिणं नवावि
सकाम किच्चे णिह आरियाणं॥ १७॥

गन्ता वतत्था अदुवा अगंता
वियागरेज्जा समिया सुपण्णे।
अणारिया दंसणतो परित्ता
इति संकमाणे न उवे तितत्था॥ १८॥

(सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० ६ गा० १७-१८)

नो० अकाम कृत्य नथी एतले कुण अर्थे जे अण विमास्यां काम नों करणहार हुवे ते आपणा नें तथा पर नें निरर्थक कार्य करे पर श्री भगवन्त सर्वज्ञ सर्वदर्शी परहित नों करणहार आपणां नें पर ने निरुपकारी किम थाय ते भणी स्वामी निरर्थक काम नू करणहार नथी न० तथा स्वामी बाल कृत्य नथी बाल नी परे अण विमास्यो काम न करे तथा रा० राजा न अ० अभियोगे करी धर्म देशनादिक ने विषे प्रवर्त्ते नहीं कु० कुणहीना भ० भयथकी वि० वागरे नहीं प० प्रश्ने कि बहु ना उपकार विना किणाही ने कोई न कहै अनुत्तर विमान

वासी देवता रे मनहीज सू पूछी निर्णय करे. अथवा जे कोई इम कहे वीतराग धर्मकथा स्यां काजे करे छै इसी आशंका आणी चौथे पदे कहे छै। स० पोताना काम काजे एतावता तीर्थंकर नाम कर्म खपावा नें काजे. इहां आर्य क्षेत्र आर्य लोकना प्रतिबोधवा भणी धर्म देश ना करे परं अनेरो कार्य आत्म प्रशंसादिक करे नथी. ॥ १७ ॥

वली आर्द्र मुनि कहे छै म० ते भगवन्त परहित काजे जई ने अथवा तिहां आण आंइने किम्बहुना जिम २ भव्य जीव नें उपकार थाइ. तिम २ वि० धर्म देश ना वागरे जे उपकार जाणे तो जाई नें पिण धर्म कहे. अ० अथवा उपकार न देखे तो तिहां आव्यां नें पिण न कहे. इण कारण तेहनें राग द्वेष नी संभावना नथी। सम्यग्दृष्टि पणे चक्रवर्त्ती अथवा रंक ने पूछिउ अथवा अनपूछिउ थके धर्म कहे. शीघ्र प्रज्ञावन्त एतले सर्वज्ञ तथा जे अनार्य देश न जाय स्वामी तेहनू कारण सांभलो अ० अनार्य दं० दर्शन थकी पिण उ० भ्रष्ट. इति० इण कारणे. स० शंक मानता थकां त० तिहां णा० न जाय जिण कारण ते जीव वीतराग ने देखी अवहेलनादिके कर्म उपार्जी आपण पे अनन्त संसार करिस्ये इस्यूं जाणी तिहां न जाय परं राग द्वेष भय को नथी ॥ १८ ॥

अथ अठे कह्यो—पोता ना कर्म खपावा तथा आर्य क्षेत्र ना मनुष्य नें तारिवा भगवान् धर्म कहे, इम कह्यो पिण इम न कह्यो जे जीव बचावा नें अर्थे धर्म कहे. इण न्याय असंयती जीवां रो जीवणो वांछ्यां धर्म नहीं। तिवारे कोई कहे असंयती जीवां रो जीवणो वांछणो नहीं। तो थे जीव हणवा रा सूंस करावो ते जीव हणे नहीं. तिवारे असंयम जीवितव्य वधे छे। तथा महणो २ कहो छो। तथा जीव हणता ने उपदेश देई हिंसा छोड़ावो छो। तरे असंयम जीवितव्य वधे छै। तेहनो उत्तर—साधु जीव हणता ने उपदेश देवे ते तो तिणरो पाप टालवाने असंयती रो संयती करवा ने. पिण असंयती नें जिवावण नें उपदेश न देवे। जिम कोई कसाई पांचसौ २ पंचेन्द्रिय जीव नित्य हणे छै, ते कसाई नें कोई मारतो हुवे तो तिण नें साधु उपदेश देवे। ते तिण ने तारिवा नें अर्थे, पिण कसाई नें जीवतो राखण नें उपदेश न देवे। ए कसाई जीवतो रहे तो आछो. इम कसाई नों जीवणो वांछणो नहीं। केई पंचेन्द्रिय हणे. केई एकेन्द्रियादिक हणे छै। ते माटे असंयती जीव ते हिंसक छै। हिंसक नों जीवणो वांछ्यां धर्म किम हुवे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण।

केतला एक अजाण जीव इम कहे—असंयती जीवांरो जीवणो वांछ्यां धर्म छै। ते कहे—असंयती जीवांरा जीवण रे अर्थे उपदेश देणो। ते सूत्र ना अजाण छै। अनें साधु तो असंयम जीवितव्य जीवे नहीं. जीवावे नहीं. जीवतां नें भलो पिण जाणे नहीं। तो असंयम जीवितव्य वाछ्यां धर्म किहां थकी। ठाम २ सूत्र में असंयम जीवितव्य अनें बाल मरण वांछणो वर्ज्यो छै। ते संक्षेपे सूत्र साख करी कहे छै। ठाणाङ्ग ठाणे १० दश वांछा करणी वर्जी। तिहां कह्यो जीवणो मरणो वांछणो नहीं। ए पिण असंयम जीवितव्य अनें बाल मरण आश्री वर्ज्यो छै। (१) तथा सूयगडाङ्ग अ० १० गा० २४ जीवणो मरणो वांछणो नहीं। ए पिण जीवणो ते असंयम जीवितव्य आश्री कह्यो। (२) तथा सूयगडाङ्ग अ० १३ गा० २३ में पिण जीवणो मरणो वांछणो वर्ज्यो। ए पिण असंयम जीवितव्य आश्री वर्ज्यो छै। (३) तथा सूयगडाङ्ग अ० १५ गा० १० में कह्यो असंयम जीवितव्य नें अनादर देतो विचरे। (४) तथा सूयगडाङ्ग अ० ३ उ० ४ गा० १५ में पिण कह्यो जीवणो मरणो वांछणो नहीं। ए पिण असंयम जीवितव्य बाल मरण वर्ज्यो। (५) तथा सूयगडाङ्ग अ० ५ उ० १ गा० ३ में पिण असंयम ना अर्थी नें बाल अज्ञानी कह्या। (६) तथा सूयगडाङ्ग अ० १० गा० ३ में पिण असंयम जीवितव्य वांछणो वर्ज्यो। (७) तथा सूयगडाङ्ग अ० २ उ० २ गा० १६ में कह्यो। उपसर्ग उपना कष्ट सहिणो। पिण असंयम जीवितव्य न वांछणो। (८) तथा उत्तराध्ययन अ० ४ गा० ७ में कह्यो। जीवितव्य वधारवा नें आहार करवो। ए संयम जीवितव्य आश्री कह्यो। (९) तथा सूयगडाङ्ग अ० २ उ० १ गा० १ में कह्यो। संयम जीवितव्य दोहिलो (दुर्लभ) छै। पिण असंयम जीवितव्य दोहिलो न थी कह्यो। (१०) तथा आवश्यक सूत्र में "नमोत्थुणं" में कह्यो "जीवदयाणं" जीवितव्य ना दातार ते संयम जीवितव्य ना दातार आश्री कह्या। (११) तथा सूयगडाङ्ग अ० २ उ० १ गा० १८ में जीवण वांछणो वर्ज्यो। ते पिण असंयम जीवितव्य वर्ज्यो छै। (१२) तथा सूयगडाङ्ग श्रु २ अ० ५ गा० ३० में कह्यो। सिंह बाघादिक हिंसक जीव देखी नें मार तथा मत मार कहिणो नहीं। इहां पिण तेहना जीवण रे अर्थे मत मार कहिणो नहीं। (१३) तथा दशवैकालिक अ० ७ गा० ५० में कह्यो देव मनुष्य तिर्यञ्च माहोमाही विग्रह करे ते देखी नें तेहनी हार जीत वांछणो नहीं। (१४) तथा दश वैकालिक अ० ७ गा० ५१ में वायरो १ वर्षा २ शीत ३ तावड़ो ४ कलह ५

सुकाल ६ उपद्रव रहित पणो ७ ए सात बोल वांछणा वर्ज्यां। (१५) तथा आचाराङ्ग श्रु० २ अ० २ उ १ गृहस्थ माहोमाहि लड़े त्यांने मार तथा मतमार इम वांछणो वर्ज्यो ते पिण राग द्वेष आश्री वर्ज्यो छे। (१६) तथा आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १ कह्यो गृहस्थ तेउकाय रो आरम्भ करे, तिहां अग्नि प्रज्वाल तथा मत प्रज्वाल इम वांछणो नहीं। इहां अग्नि मत प्रज्वाल इम वांछणो वर्ज्यो ते पिण जीवण रे अर्थे वांछणो वर्ज्यो छै। (१७) तथा सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० ६ गा० १७ आर्द्र कुमार कह्यो भगवान् उपदेश देवे ते अनेरा नें तारिवा तथा आपरा कर्म खपावा उपदेश देवे पिण असंयती रे जीवण रे अर्थे उपदेश देणो न कह्यो। (१८) तथा उत्तराध्ययन अ० ६ गा० १२ १३ १४ १५ मिथिला नगरी बलती जाण नें नमि ऋषि साहमोइ जोयो नहीं, तो जीवणो किम वांछणो। (१६) तथा उत्तराध्ययन अ० २१ गा० ६ समुद्रपाल चोर नें मारतो देखी नें धर्म देई छोडायो नहीं। (२०) तथा वली निशीथ उ० १३ गृहस्थ मार्ग भूला नें रस्तो बतावे तो चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो। (२१) तथा निशीथ उ० १३ गृहस्थ नी रक्षा निमित्ते मंत्रादिक भूति कर्म करे तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो। (२२) तथा निशीथ उ० ११ पर जीव नें डरावे डरावता नें अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो। (२३) तथा ठाणाङ्ग ठाणे ३ उ० ३ हिंसा करता देखी नें धर्म उपदेश देइ समझावणो तथा मौन राखणो। तथा उठिने एकान्त जाणो ए ३ बोल कह्या. पर जोरावरी सूं छोड़ावणो कह्यो नहीं। (२४) तथा भगवती श० ७ उ० १० अग्नि लगायां घणो आरम्भ घणो आश्रव कह्यो अनें बुझायां थोड़ो आरम्भ थोड़ो आश्रव कह्यो पिण धर्म न कह्यो। (२५) तथा भगवती श० १६ उ० ३ साधुरी अर्श (मस्सा) छेदे ते वैद्य नें क्रिया कही पिण धर्म न कह्यो। (२६) तथा निशीथ उ० १२ में बोल १-२ त्रस जीवनी अनुकम्पा आण नें बांधे बांधता नें अनुमोदे। छोडे छोड़ता नें अनुमोदे तो चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो। (२७) तथा आचारांङ्ग श्रु० २ अ० ३ उ० १ नावा में पाणी आवतो देखी घणा लोकां ने पाणी में डूबता नें देखी नें साधु नें ते छिद्र गृहस्थ ने बतावणो नहीं। इम कह्यो। (२८) इत्यादिक घणे ठामे असंयती रो जीवणो वांछणो वर्ज्यो छै। अनें

अनन्ती वार असंयम जीवितव्य जीव्यो अनन्ती वार बाल मरण मुओ पिण गर्ज सरी नहीं ते भणी असंयम जीवितव्य वांछ्यां धर्म नहीं । ज्ञान. दर्शन. चरित्र तप. ए चारू' मुक्ति रा मार्ग आदरे. तथा आदरावे. ते तिरणो वांछ्यां धर्म छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

केतला एक कहे असंयती रो जीवणो वांछ्यां धर्म नहीं तो नेमिनाथ जी जीवां रो हित वंछ्यो—इम कह्यो त्यां जीवां रे मुक्ति रो हित थयो नहीं ।

ते माटे जीवां रो जीवणो वांछ्यो ये जीवां रो हित छै। इम कहे। वली "साणुक्कोसे जिएहि उ" ए पाठ रो ऊंधो अर्थ करी जीवां रो हित थापे छै। (साणुक्कोस-कहितां अनुकंपा सहित, जिएहिउ—कहितां जीवां रो हित वांछ्यो) ते जीवां रो जीवणो वंछ्यो इम कहे—ते झूठ रा बोलणहार छै। ए तो विपरीत अर्थ करे छै। त्यां जीवां रे जीवण रे अर्थे तो नेमिनाथजी पाछा फिरया नहीं। ए जो जीवां री अनुकम्पा कही तेहनो न्याय इम छै। जे म्हारा ब्याह रे वास्ते यां जीवां ने हणे तो मोनें तो ए कार्य करवो नहीं। इम विचारि पाछा फिरया। ए तो अनुकम्पा निरवद्य छै। अनें जीवां रो हित वांछ्यो सूत्र रो नाम लेइ कहे—ते सिद्धान्त रा अजाण छै। तिहां तो इम कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै।

सोऊण तस्स वयणं बहुपाणि विणासणं ।
चिंतेइ से महापन्नो साणुक्कोसो जिएहि उ ॥ १८ ॥

(उत्तराध्ययन अ० २२ गा० १८)

सो० सांभली नें त० ते सारथी नों श्री नेमिनाथ वचन व० घणा पा० प्राणी जीव नों वि० विनाशकारी वचन सांभली नें चि० चिन्तवे से० ते म० महा प्रज्ञावन्त सा० दया सहित जि० जीवां नें विषे उ० पूर्वे

अथ अठे तो इम कह्यो—सारथी रा वचन सांभली ने घणा प्राणी रो विनाश जाणी नें ते महा प्रज्ञावान् नेमिनाथ चिंतवे। "साणुक्कोस" कहितां करुणासहित "जिएहिं" कहितां जीवां नें विषे "उ" कहितां पाद पूर्ण अर्थे—इम अर्थ छै। "साणुक्कोसे जिएहिउ" ए पद नो अर्थ उत्तराध्ययन री अवचूरी में कियो। ते लिखिये छै। *"स भगवान् सानुक्रोशः सकरुणः उः पूर्ये"* एहवो अर्थ अवचूरी में कियो। तथा पाई टीका में तथा विनयहंसगणि कृत लघु दीपिका में पिण इमज कियो ते शुद्ध छै। अनें केतला एक टब्बामें कह्यो "सकलजीवां ना हितकारी" तेहनों न्याय—इम प्रथम तो अवचूरी, पाई टीका उक्त दीपिका, में अर्थ नथी। ते माटे ए टब्बो टीका नों नथी। तथा सकल जीवां ना हितकारी कहिये, ते सर्व जीवां नें न हणवा रा परिणाम ते वैर भाव नथी, न हणवा रा भाव तेहिज हित छै। पिण जीवणो वांछे ते हित नथी। प्रश्नव्याकरण प्रथम संवर द्वारे कह्यो। "सव्व जग वच्छलयाए" इहां कह्यो सर्व जग ना "वच्छल" कहिये हित-कारी तीर्थङ्कर। इहाँ सर्व जीवां में एकेन्द्रियादिक तथा नाहर चीता बघेरा सर्प आदि देइ सकल जीवां में सुपात्र कुपात्र सर्व आया। ते सर्व जीवां ना हितकारी कह्या। ते सर्व जीव न हणवा रा परिणाम तेहीज हित जाणवो। तथा उत्तरा-ध्ययन अ० ८ में कह्यो "हिय निस्सेसाय सव्व जीवाणं तेसिं च मोक्खणट्ठाए" इहाँ कह्यो "हिय निस्सेसाय" कहिये मोक्ष नें अर्थे सर्व जीव नें एहवो कह्यो। ते भाव हित मोक्ष जाणवो। अनें चोरां ने कर्मा सूं मुकावण अर्थे कपिल मुनि उपदेश दियो। तथा उत्तराध्ययन अ० १३ में चित्त मुनि ब्रह्मदत्त नें हित ना गवेषी थकां उपदेश दियो। इहां पिण भाव हित जाणवो। तथा उत्तराध्ययन अ० ८ गा० ५ "हिय निस्सेसाय बुद्धि वुच्चत्थे" जे काम भोग में खूता तेहनी बुद्धिहित अनें मोक्ष थी विपरीत कही। इहां पिण भाव हित मोक्ष मार्ग रूप तेहथी विपरीत बुद्धि जाणवी। तथा उत्तराध्ययन अ० ६ गा० २ "मित्तिभुएसुकप्पए" मित्र पणो सर्व प्राणी नें विषे करे। इहां एकेन्द्रियादिक जीव नें न हणे तेहीज मित्र पणो। तिम "जिएहि उ" रो टब्बा में अर्थ हित करे तेहनी ताण करे। तेहनो उत्तर—सर्व जीव नें नहिं हणवा रा भाव कोई सूं वैर बांधवा रा भाव नहीं, तेहीज हित जाणवो। अनें अवचूरी तथा पाई टीका में तथा उत्तम दीपिका में हित नों अर्थ कियो नथी। "साणुक्कोसे जिएहिउ" साणुक्कोसे कहितां करुणासहित "जिएहिं"

कहितां जीवां नें विषे. "उ" कहिता पाद पूरणे एहवो अर्थ कियो छै। "जिएहि उ" कह्यो, पिण "जिएहिय" एहवो पाठ न कह्यो। ठाम २ "हिय" पाठ नो अर्थ हित हुवे छै। तथा उत्तराध्ययन अ० १ गा० ६ कह्यो। "इच्छंतो हिय मप्पणो" वांछतो हित आपणी आत्मा नो इहां पिण हिय कह्यो। पिण हिउ न कह्यो। उत्तराध्ययन अ० १ गा० २८ "हियं तं मण्णइ पण्णो" इहां पिण गुरु नी सीख विनीत हितकारी मानें। तिहां "हिय" पाठ कह्यो, पिण "हिउ" न कह्यो। तथा उत्तराध्ययन अ० १ गा० २६ "हियं विगय भया वुद्धा" सीख हित नी कारण कही तिहां "हिय" पाठ कह्यो। पिण "हिउ" न कह्यो। तथा उत्तराध्ययन अ० ८ गा० ३ "हिय निस्सेस सव्वजीवाणं" इहां पिण "हिय" कह्यो। पिण "हिउ" न कह्यो। तथा तिणहिज अध्ययन गा० ५ "हियनिस्सेसय वुद्धि वुच्चत्थे" इहां पिण "हिय" कह्यो पिण "हिउ" न कह्यो। तथा भगवती शतक १५ में कह्यो। चौथो शिखर फोड़ता तिणे वाणिये वर्ज्यों। तिहां पिण "हियकामए" पाठ छै। तिहां "हिय" कह्यो। पिण "हिउ" न कह्यो। तथा भगवती श० ३ उ० १ तीजा देवलोक ना इन्द्र नें अधिकारे "हिय कामए सुहकामये" कह्यो। तिहां "हिय" पाठ छै, पिण "हिउ" पाठ नथी। तथा उत्तराध्ययन अ० १३ गा० १५ में "धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही-चित्तो इमं वयण मुदाहरित्था" इहां पिण "हिय" पाठ कह्यो पिण "हिउ" पाठ न कह्यो। तथा उत्तराध्ययन अ० २ गा० १३ "एगया अचेलए होइ सचेले आविएगया एयं धम्मं हियं णच्चा नाणी नो परि देवए" इहां पिण "हिय" पाठ कह्यो। पिण "हिउ" पाठ न कह्यो। इत्यादिक अनेक ठामे हिय नो अर्थ हित कियो छै। अनें नेमिनाथ ने अधिकारे हिय पाठ नथी। यकार नथी—"हिउ" पाठ छै। "जिएहिं" इहां हि वर्ण छै। ते तो विभक्ति ने अर्थे मागधी वाणी मादे "जिएहि" पाठ नों अर्थ टीका में "जीवेषु" कह्यो। "उ" शब्द नों अर्थ "पूर्ण" कियो छै। ते जाणवो अनें नेमिनाथ जीवां रो जीवणो न वांछ्यो। आप रो तिरणो वांछ्यो तिहां आगली गाथा में एहवो कह्यो। ते लिखिये छै।

जइ मज्झ कारणा ए ए हम्मंति सु बहुजिया।
नमे एयं तु निस्सेसं पर लोगे भविस्सइ ॥ १६ ॥

(उत्तराध्ययन अ० २२ गा० १६)

ज० जो म० माहरे का० काज ए० ए. ह० हणसी सु० अति ब० घणा जि० जीव ण० नहीं मे० मुझ ने ए० जीवघात. नि० कल्याण (भलो) प० परलोक में विषे भ० होसी

अथ इहां तो पाधरो कह्यो—जे म्हारे कारण यां जीवा में हणे तो ए कारण ज मोनें परलोक में कल्याणकारी भलो नहीं। इम विचारि पाछा फिरया। पिण जीवाँ ने छुड़ावा चाल्यो नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

वली मेघकुमार रे जीव हाथी रे भवे एक सुसला री अनुकम्पा करी परीत संसार कियो। अनें केइ कहे मंडला में घणा जीव बच्या त्यां घणा प्राणी री अनुकम्पा इ करी परीत संसार कियो कहे, ते सूत्रार्थ ना अजाण छै। एक सुसलारी दया थी परीत संसार कियो छै। ते पाठ लिखिये छै।

तएणं तुमं मेहा! गायं कडुइत्ता पुणरवि पायं पडिक्खमिस्सामि तिकट्टु तं ससयं अणुपविट्ठं पासति पाणाणु कंपयाए भुयाणु कंपयाए जीवानु कंपयाए सत्तानु कंपयाए से पाए अंतरा चेव संधारिये. णो चेव णं णिक्खित्ते.

(ज्ञाता अ० १)

त० तिवारे तु० तूं गा० गात्र ने विषे खाज करी नें पु० वली पा० हेठे पग मूकू त्ति० एह विचारी नें त० तिहां ठिकाणे पग रे हेठे एक ससलो ते पगारी खाली जगा दीठी आय बैठो ते पा० प्राणी नी दया इं करी भूत नी दया इ करी जीव नी दया इ करी स० सत्व नी दया इ करी से० ते (हाथी) पा० पग अं० विचाले चे० निश्चय करी सं० राख्यो. णो० नहीं चे० निश्चय ऊपर पग णि० मूक्यो

अथ इहां सुसला नें इज प्राण, भूत, जीव, सत्व, कह्यो। पिण और जीवां आश्री न कह्यो। प्राण धरवा थी ते सुसला नें प्राणी कहीजे। सुसला पणे

थयो ते भणी भूत कहीजे। आयुषा ने वले जीवे ते भणी जीव कहीजे। 'शुभाशुभ कर्मा नें विषे सक्त अथवा शक्त (समर्थ) ते भणी सत्व कहीजे इम सुसला नें चार नामे करि बोलायो छै। ते माटे एकार्थ छै, ज्ञाता नी वृत्ति में पिण चार शब्द नें एकार्थ कह्या छै। ते टीका कहे छै।

पाणानुकंपयेत्यादि "पद चतुष्टय मेकार्थं दयाप्रकर्ष प्रतिपादनार्थम्"

पहनो अर्थ—ए पद चार छै. ते एकार्थ छै। जुया २ चार शब्द कह्या ते विशेष दया ने अर्थे कह्या छै। इम टीका में पिण ए चार शब्द नों अर्थ एकज कियो छै। ते माटे एक सुसला नें प्राणी. भूत. जीव. सत्व. ए चार शब्दे करी बोलायो छै। जिम भगवती श० २ उ० १ मडाइ निर्ग्रन्थ प्राशुक भोजी नें ६ नामे करी बोलाव्यो कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

मडाई णं भंते नियंठे नो निरुद्ध भवे, नो निरुद्ध भव पवंचे. णो पहीण संसारे णो पहीण संसार वेयणिज्जे नो वोच्छिरण संसारे. णो वोच्छिरण संसार वेयणिज्जे. णो नियट्ठे णो निट्ठि यट्ठकरणिज्जे. पुणरवि इच्छंतं हव्व मागच्छइ. हंता गोयमा! मडाई णं नियंठे जाव पुण रवि इच्छंतं हव्व मागच्छइ. सेणं भंते! कि वत्तव्वंसिय. गोयमा! पाणेत्ति वत्तव्वंसिया. भूतेति वत्तव्वंसिया. जीवेति वत्तव्वंसिया. सत्तेति वत्तव्वंसिया. विन्नुयत्ति वत्तव्वंसिया. वेदेति वत्तव्वंसिया पाणे भूये जीवे सत्ते विण्णूवेदेति वत्तव्वंसिया. से केणट्ठेणं पाणेति वत्तव्वंसिया जाव वेदेति वत्तव्वंसिया. जह्मा आणमंति वा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तम्हा पाणेति वत्तवंसिया जह्मा भूए भवइ भविस्सइ तम्हा भूए ति वत्तव्वं सिया जम्हा जीवे जीवइ

जीवत्तं आउयं च कम्मं उवजीवइ तह्मा जीवेति वत्तव्वंसिया जह्मा सत्तेसुहा सुहेहिं कम्मेहिं तम्हा सत्तेवि वत्तव्वंसिया जह्मा तित्त कडु कसाय अंबिल महुरे रसे जाणइ तम्हा विण्णु त्ति वत्तव्वंसिया वेदेइय सुह दुक्खं तम्हा वेदेति वत्तव्वंसिया, से तेणट्ठेणं जाव पाणेति वत्तव्वंसिया, जाव वेदेति वत्तव्वंसिया ॥३॥

(भगवती श० २ उ० १)

म० प्राशुक भोजी भं० हे भगवन् ! णो० नथी. रुंध्यो, आगलो जन्म जेणे णो० नथी रुंध्यो भव नों प्रबन्ध जेणे भवविस्तार णो० नथी प्रक्षीण संसार जेहनों णो० नथी प्रक्षीण संसार नी वेदनीय जेहनें णो० नथी तूट्यो गति गमनबंध जेहने णो० नथी विच्छेद पामी संसार वेदनीय कर्म जेहनें णो० नथी कार्यकाम संसार ना नीठ णो० नथी नीठो करणीय कार्य जेहनें. पु०.वली तिर्यंच नरदेव नारकी सम्बंधी भव करतो मनुष्य भव पामें मनुष्य पणूं वली पामें हां. णो० गोतम म० प्राशुक भोजी निर्ग्रन्थ जा० यावत् वली मनुष्यादिक पणूं पामे से० ते निर्ग्रन्थ नें भगवन्त ! कि-स्यूं कही नें बोलावीये हे गोतम ? पा० प्राण कही नें बोलावीये भू० भूत इम कहीं ने बोलावीये जो० जीव कही नें बोलावीये स० सत्व कही नें बोलावीये वि० विज्ञ इम कहीं ने बोलावीये वे० वेद इम कही ने बोलावीये प्राण. भूत जीव. सत्व विज्ञ वेद इम कही ने बोलावीए। से० ते के० किण अर्थे भगवन्त ! पा० प्राण इम कहीं ने बोलाविये जा० यावत् विज्ञ-वेद इम कही ने बोलाविये हे गोतम ! ज० जे भणी आनमन्त छै पा० प्राणमन्त छै उ० उस्वास छै णी० निस्वास छै त० ते भणी प्राण इम कहिये ज० जे भणी भु० हुवो हुइ हुस्यै त० ते भणी भूत इम कहिये ज० जे भणी जीव प्राण धरे छै तथा जीवत्व लक्षण ' अनें आयु कर्म प्रति अनुभवे छै ते माटे जीव कहिये ज० जे भणी सक्त ते आसक्त अथवा शक्त समर्थ शुभ चेष्टा नें विषे अथवा सक्त सवद्ध शुभाशुभ कर्मे करी नें ते भणी सत्व कहिये। ज० जे माटे तिक्त कटु कषायलू अं० आंबिल खाटा मधुर रस प्रति जाणें त० ते भणी विज्ञ एहवो कहिए वे० वेदे सुख दुःख नें ते भणी वेदी इम कहिए. से० ते ते० ते माटे जा० यावत् पा० प्राण इम कहिए जा० यावत् वे० वेद इम कहिए

अथ इहां मडाइ निर्ग्रन्थ प्रासु भोजी ने प्राण. भूत. जीव. सत्व. विण्णु वेदी ए ६ नामे करि बोलायो। तिम ते खुसला नें पिण चार नामे करी बोलायो। छै। विचारे कोई कहे खुसला ना ४ नाम कह्या तो "पाणाणुकंपयाए" इहां पाणा

बहुवचन क्यूं कह्यो। तत्रोत्तरं–इहां बहुवचन नहीं. ए तो एक बचन छै। इहां पाण-अनुकंपयाए. ए विहूंनो अकार मिली दीर्घ थयो छै। ते माटे "पाणानुकंपयाए" कह्यो। इण न्याय एक बचन छै। ते माटे एक सुसला री दया थी परीत संसार कियो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

केतला एक कहे—पड़िमाधारी साधु लाय में बलता नें कोई बांहि पकड़ने बाहिर काढे तो तेहनी दया ने अर्थे निकल जाय, ते इम जाणे हूं लाय में रहि सूं तो ये बल जास्ये। इम जाणी तेहनी दया ने अर्थे बाहिर निकलवो कल्पे दशाश्रुतस्कंध मे एहवूं कह्यो छै। इम कहे ते मृषावादी छै सूत्र ना अजाण छै। तिण ठामे तो दया नों नाम चाल्यो नहीं। तिहां प्रथम तो पड़िमाधारी नी गोचरी नी विधि कही। पछे बोलवारी विधि कही। पछे उपाश्रय नी विधि कही। पछे संथारा नी विधि कही। पछे तिहां रहितां परिषह उपजे तेहनों विस्तार कह्यो। इम जुई जुई विधि कही छै। तिहां इम कह्यो छै। पड़िमाधारी रहे ते उपाश्रय नें विषे स्त्री पुरुष अकार्य करवा आवे. तो ते स्त्री पुरुष आश्री पड़िमाधारी साधु नें निकलवो न कल्पे। वली पड़िमाधारी रह्यो तिहां कोई अग्नि लगावे तो अग्नि आश्री निकलवो न कल्पे। ए तो अग्नि नों परिषह खमवो कह्यो। वली तिहां रहितां कोई वध ने अर्थे खड्गादिक ग्रही नें आवे तो तेहना खड्गादिक अवलम्बवा न कल्पे। ए वध परिषह खमवो कह्यो। इम न्यारा २ विस्तार छै पिण एक विस्तार नहीं ते पाठ लिखिये छै।

मासिएणं भिक्खु पडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स केइ उवसयं अगणिकाएण झामेज्जा णो से कप्पइ तं पडुच्च निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा तत्थणं केइ वहाय गहाय आगच्छे जाव णो से कप्पइ अवलंबित्तए वा पवलंबित्तए वा कप्पइ से आहारियं रियत्तए ॥१३॥

(दशा श्रुतस्कन्ध दशा० ७

मा० एक मास नी भिक्षु साधु नी प्रतिज्ञा प० प्रतिपन्न अ० साधु नें के० कोई एक उपाश्रय नें विषे अ० अग्निकाय करी बले नो० नहीं तेहनें कल्पे त० ते अग्नि उपाश्रय माही आवो. प० ते माटे उपाश्रय माहे थी नि० निकलवो प० बाहिर थी माहे पेसवो त० तिहां के० कोई पुरुष व० पडिमाधारी ना वध नें अर्थे ग० खड्गादिक ग्रही नें आ० आवे जा० यावत् गो० नहीं ते० ते कल्पे अ० शस्त्र नों पकड़वो. वा० अथवा प० रोकवो, क० कल्पे आ० यथा ईर्यांइ चालवो

अथ इहाँ तो कह्यो। पड़िमाधारी रहे ते उपाश्रय नें विषे कोई अग्नि लगावे तो ते अग्नि आश्री निकलवो न कल्पे। ए तो अग्नि नों परिषह खमवो कह्यो। हिवे वली वध परिषह उपजे ते पिण सम्यग् भावे खमवूं एहवूं कह्यो "तत्थ तिहां पड़िमाधारी रहे ते उपाश्रय ने विषे कोई पुरुष "वहाय" कहितां वध ते हणवा नें अर्थे "गहाय" कहितां खड्गादिक ग्रही नें हणे तो तेहना खड्गादिक अव-लंब वा पकड़वा न कल्पे। एतले पड़िमाधारी नें हणे तो तेहना शस्त्रादिक पक-ड़वा न कल्पे. "कप्पइसे आहारियं रियत्तए" कहितां कल्पे तेहनें यथा ईर्यांइ चालवो। इम अग्नि परिषह वध परिषह. ए दोनूं जुआ २ छै। इहां कोई झूठ बोली नें कहे— साधु रहे तिहां कोई अग्नि लगावे. तिहां कोई वध ने अर्थे आवे तो साधु विचारे कदाचित् ए बल जाय. इम तेहनी दया आणी नें बाहिरे निकलवो कल्पे एहवो झूठ बोले छै। पिण सूत्र में तो एहवो कह्यो न थी। जे अग्नि में तो साधु बले छै। वली तिहां मारवा नें अर्थे आवा रो कांई काम छै। अग्नि में बले तिहां वली वध ने अर्थे किम आवे इहां अग्नि नों परिषह तो प्रथम खमवो कह्यो। तिहाँ सेंठों रहिवो। अनें बीजी बार जो कदाचित् वध परिषह उपजे तो ते वध परिषह पिण खमवो कह्यो। तिहां सेंठों रहिवो ए तो दोनूं परिषह उपजे ते खमणा कह्या। पिण वध परिषह थी डरतो निकले नहीं। वली केइ अजाण कहे—साधु अग्निमें बलता ने अग्नि आश्री निकलवो नहीं। अनें तिहां कोई सम्यग्दृष्टि दयावन्त बांहि पकड़ने बाहिरे काढ़े तो तेहनी दया आणी ईर्या सूं निकलवो कल्पे। इम कहे पाठ में पिण विपरीत कहे छै ते किम—सूत्र में तो "वहाय गहाय" एहवो पाठ छै। तिहाँ वहाय रे ठामे "बाहाय गाहाय" एहवो पाठ कहे छै। पिण सूत्रमें तो वहाय पाठ कह्यो। पिण बाहाय पाठ तो कह्यो नथी। ठाम ठाम जूनी पर्त्तां में वहाय पाठ छै। वली दशाश्रुत स्कंध नी टीका में पिण "वहाय" पाठ रो इज अर्थ कियो पिण "बाहाय" ये पाठ रो अर्थ न कियो। ते टीका लिखिये छै।

इति स्थान विधि रुक्तः साम्प्रतं गमन स्थान विधि माह तत्थणंति. तत्र मार्गे वसत्यादौ वा कश्चित् वधार्थं वधनिमित्तं गहायत्ति-गृहीत्वा खड्गादिक मिति शेषः, आगच्छेत् । णो अवलंबितएवा--अवलम्बयितुम्--आकर्षयितुं प्रत्यवलम्बयितुं, पुनः पुन रवलम्बयितुं यथेर्या मनतिक्रम्य गच्छेत् ।' एतावता छिद्यमानोऽपि नाति शीघ्रंयायात् ।

इहां टीकामें पिण इम कह्यो—जे वध नें अर्थे खड्गादिक ग्रही ने आवे तो तेहना खड्गादिक अवलम्बवा पकड़वा न कल्पे। पिण इम न कह्यो-बांहि पकड़ ने बाहिरे काढ़े तो निकलवो कल्पे ते माटे बांहिनों अर्थ करे ते मृषावादी छै। अनें जो अग्नि माहि थी बांहि पकड़ी ने बाहिरे काढ़े तेहने अर्थे निकले तो इम क्यूं न कह्यो ते पुरुष नी दया ने अर्थे बाहिर निकलवो कल्पे। पिण बाहिर निकलवा रो पाठ तो चाल्यो नहीं। इहां तो इम कह्यो जे पडिमाधारी रहे ते उपाश्रय स्त्री पुरुष आवे तो "नो से कप्पइ तं पडुच्च निक्खमित्तएवा" ए निकलवा रो पाठ तो "निक्खमित्तएवा" इम हुवे। तथा वली आगे कह्यो. जे पड़िमाधारी रहे ते उपाश्रय नें विषे कोई अग्नि लगावे तो "नो से कप्पइ तं पडुच्च निक्खमित्तएवा" ए निकलवा रो पाठ कह्यो। तिम तिहां निकलवा रो पाठ कह्यो नहीं। जो ते पुरुष नी दया नें अर्थे निकले तो एहवो पाठ कहिता "कप्पइ से तं पडुच्च निक्खमित्तएवा" इम निकलवा रो पाठ चाल्यो नहीं। अनें तिहां तो "आहारियं रियत्तए" ए पाठ छै। "आहारियं रियत्तए" अनें "निक्खमित्तए" ए पाठ ना अर्थ जुआ जुआ छै। "निक्खमित्तए" कहितां निकले। ए निकलवा रो तो पाठ मूल थी ज न कह्यो। अनें "अहारियं रियत्तए" ए पाठ कह्यो तेहनों अर्थ कहे छै। "अहारियं" इहां ऋजु (ऋजु-गतौ स्थैर्ये च) धातु छै। ते गति अनें स्थिर भाव रूप ए बे अर्थां ने विषे छै। जे गति अर्थ नें विषै हुवे तो आगलि चालवा रो विस्तार छै। ते माटे ए चालवा री विधि समचे बताई। पिण ते वध परिषह मांहि थी चालवा रो समास नहीं। अनें स्थिर भाव अर्थ होय तो इम अर्थ करवो। पड़िमाधारी नें हणवा नें अर्थे खड्गादिक ग्रही नें आवे तो तेहना खड्गादिक अवलम्ब वा न कल्पे। "कप्पइ से अहारियं रियत्तए" कल्पे तेहनें शुभ अध्यवसाय ने विषे स्थिर पणे रहिवो पिण माहिला परि-

णाम किञ्चित् चलायवा नहीं। जिम आचारांग श्रु० २ अ० ३ उ० १ कह्यो-जे साधु नावा में बैठा नावा में पाणी आवतो देखी मन वचने करी पिण गृहस्थ नें बतावणो नहीं। राग द्वेष पणे रहित आत्मा करिवो। तिहां पिण "आहारियं रियेज्जा" एहवो पाठ कह्यो छै। तेहनों अर्थ शीलाङ्काचार्य कृत टीका में इम कह्यो छे। ते टीका लिखिये छै।

अहारियमिति-यथेर्यं भवति तथा गच्छेत्। विशिष्टाध्यवसायो यायादित्यर्थः।

अथ इहां टीका में पिण इम कह्यो। विशिष्ट अध्यवसाय ने विषे प्रवर्त्तवो। तिम इहां पिण "आहारियं रियेज्जा" एहनो अर्थ शुभ अध्यवसाय नें विषे प्रवर्त्ते। तथा थिर भाव नें विषे रहे एहवूं जणाय छै। पिण बध परिग्रह माहि थी उठे नहीं। जे पडिमाधारी तो हाथी सिंहादिक साहमा आवे तो पिण टले नहीं। तो परिग्रह मांहि थी किम उठे। तिवारे कोई कहे—परिग्रह थी डरता न उठे। परं दया अनुकम्पा नें अर्थे बाहिरे निकले। इम कहे तेहनें इम कहिणो, ए तो साम्प्रत अयुक्त छै। जे पड़िमाधारी किण हीनें संथारो पिण पचखावे नहीं, कोई नें दीक्षा पिण देवे नहीं। श्रावक ना व्रत अदरावे नहीं, उपदेश देवे नहीं, चार भाषा उपरान्त बोले नहीं—तो ए काम किम करे। अनें जो दया नें अर्थ उठे तो दया ने अर्थ उपदेश पिण देणो। दीक्षा पिण देणी। हिंसा, झूठ, चोरी, रा त्याग पिण करावणा। इत्यादिक और कार्य पिण करणा। पिण पड़िमाधारी धर्म उपदेशादिक कांइं न देवे। ए तो एकान्त आप रो इज उद्धार करवा ने उठ्या छै। ते पोते किणही जीव नें हणे नहीं। ए तो आपरीज अनुकम्पा करे। पिण परनी न करे। जिम ठाणाङ्ग ठाणे ४ उ० ४ कह्यो। "आयाणुकंपए नाम मेगे णो पराणु कंपए आत्मानीज अनुकम्पा करे पिण परनी न करे ते जिनकल्पी आदिक। इहां पिण जिन कल्पी आदिक कह्यो। ते आदिक शब्द में तो पड़िमाधारी पिण आया ते आप री इज अनुम्पा करे। पिण परनी न करे, ते जीव नें न हणे ते आपरीज अनुकम्पा छे। ते किम—जे एहनें मारयां मोनें पाप लागसी तो हूं डूबसूं। इम आप री अनुकम्पा नें अर्थे जीव हणे नहीं। जो जीव नें हणे तो पोतानीज अनुकम्पा उठे छे—आप डूबे ते माटे। अनें अग्नि मांहि थी न निकले अनें कोई बले तो आप नें पाप लागे नहीं। ते माटे पड़िमाधारी परिग्रह मांहि थी निकले नहीं—अडिग रहे। अनें जे सिद्धान्त ना अजाण झूठा अर्थ बताय नें पड़िमाधारी नें

परिषह मांहि थी निकलवो कहे, ते मृषावादी छै । प्रथम तो सूत्र में कह्यो । "वहाय गहाय" वध ते हणवा नें अर्थे शस्त्र ग्रहो नें हणे इम कह्यो । ते पाठ उत्थापी नें "वाहाय गाहाय" पाठ थापे । ए बांहि रो पाठ तो कह्यो इज नथी । ते विरुद्ध पाठ लिखी ने अज्ञाण नें भरमावे छै । टीका में पिण वध नों अर्थ कियो । पिण बांहि नों अर्थ कियो नहीं । तो ए बांहि रो पाठ किम थापिये । एहवी झूंठी थाप करे तेहनें परलोके जिह्वा पामणी दुर्लभ छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली साधु उपदेश देवे ते पिण जीवण रे अर्थे जीवां रो राग आणी नें उपदेश पिण न देणो एहवूं कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

अस्सेसं अक्खयं वावि सव्व दुक्खेति वा पुणो ।
वज्झापाणा उवज्झंति इतिवायं न नीसरे ॥ ३० ॥

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३०)

अ० जगत् माहिं समस्त वस्तु घट पटादिक एकान्त अ० नित्य सासताइज छै । इसो वचन न बोले । स० तथा वली सगलो जगत् दुःखात्मक छै इस्यूं पिण न बोले इण कारण जग माही एकैक जीव नें महा सुखी बोल्या छै यतः "तण सथार निविट्ठो-मुणिवरो भग्ग राग-मय मोहो । जं पावइ मुत्तिसुहं-कत्तोत चक्कवट्टीवि" इति वचनात् । तथा वध दिवाधवा योग्य चोर परदारक तेहनें तथा ए पुरुष अ० वधवा योग्य नथी ए पिण न कहे । इम कहितां तेहनी कर्म नी अनुमोदना लागे । इणि परे सिंह व्याघ्र मार्जार आदिक हिंसक जीव देखी चारित्रिया मध्यस्थ रहे इ० एहवो वचन नहीं बोले ।

अथ अठे कह्यो—जीवां नें मार तथा मत मार एहवूं पिण वचन न कहिणो । इहां ए रहस्य महणो २ तो साधु नो उपदेश छै । ते तारिवा ने अर्थे उपदेश देवे । अन इहाँ वर्ज्यो. द्वेष आणी ने हणो इम न कहिणो । अनें त्यां जीवा रो राग आणी नें मत हणो इम पिण न कहिणो । मध्यस्थ पणे रहिवो । इहाँ शीलाङ्काचार्य कृत

टीका में पिण इम कह्यो मत मार कह्यां ते हिंसक जीवां ना कार्य नी अनुमोदना लागे । ते टीका लिखिये छै ।

"वध्या श्चौर पर दारिका दयो ऽ वध्या वा तत्कर्मानु मति प्रसंगा दित्येवं भूतां वाचं स्वानुष्ठान परायण स्साधुः पर व्यापार निरपेक्षो निसृजे तथाहि सिंह व्याघ्र मार्जारादीन् परसत्व व्यापादयन परायणान् दृष्ट्वा माध्यस्थ मवलंवयेत्"

इहां शीलाङ्काचार्य कृत टीका में तथा वड़ा टब्बा में पिण कह्यो । जे चोर पर दारादिक नें वधवा योग्य कह्यां तेहनी हिंसा लागे । तथा वधवा योग्य नहीं, ते माटे मत हणो इम कह्यां तेहना कार्य नी अनुमोदना लागे । ते माटे हिंसक जीव देखी मार तथा मत मार न कहिणो । मध्यस्थ भावे रहिणो । एहवूं कह्यूं, इहां सिंह व्याघ्रादिक हिंसक जीव कह्या—ते आदिक शब्द में सर्व हिंसक जीव आव्या छै । तेहनों राग आणी तथा जीवणो वांछी ने मत मार पिण न कहिणो तो असंयती रो जीवण वांछ्यां धर्म किम हुवे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

तथा गृहस्थ नें माहों मांही लड़ता देखी ने एहनें मार-तथा मत मार ए साधु नें चिन्तवणो नहीं इम कह्यो ते इहां सूत्र पाठ कहे छै ।

आयाण मेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए वसमाणस्स इह खलु गाहवती वा जाव कम्मकरी वा अन्न मन्नं अक्कोसंतिवा वयंतिवा रुंभंतिवा उद्दवंतिवा अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा एते खलु अन्नमन्नं उक्कोसंतुवा मावा उक्कोसंतुवा जाव मावा उद्दवंतु ।

(आचारांग श्रु० २ अ० ७ उ० १)

अ० पाप नों स्थानक ए पिण भि० साधु ने सा० गृहस्थ कुल सहित उ० एहवे उपाश्रय व० रहतां वसतां इ० इणि उपाश्रय ख० निश्चय गा० गृहस्थ जा० जाव कर्मकरी जटिणी प्रमुख अ० परस्पर माहो माहि अनेरा नें अ० आक्रोशे व० देहादिक सुं वधे रु० रोके उ० उपद्रवे ताडे मारे अ० अथ हिने तेहने सरूपे भि० साधु देखी कदाचित् उ० ऊंचो. ण० नीचो म० मन णि० करे मनमाहि इसूं भाव आणे ए० एह ते ख० निश्चय अ० माहो माहि. अ० आक्रोशो मा० एहनें म करो आक्रोश जा० यावत् म करो अ० उपद्रव, ताडे, मारे इहां ऊपर राग द्वेष नो भाव आव्यो अथवा इम जाणे एहनें आक्रोश करो तेह उपरे द्वेष नों भाव आव्यो राग द्वेष कर्म बंध नों कारण ते साधु ने न करवा ।

अथ इहां कह्यो गृहस्थ माहोमाहि लड़े छै। आक्रोश आदिक करे छै। तो इम चिन्तवणो नहीं एहनें आक्रोशो हणो रोको उद्वेग दुःख उपजावो। तथा एहनें मत हणो मत आक्रोशो मत रोको उद्वेग दुःख मत उपजावो. इम पिण चिन्तवणो नहीं। एह तो ए परमार्थ. जे राग आणी जीवणो वांछी इम न चिन्तवणो। ए बापड़ा नें मत हणो दुःख उद्वेग मत देवो तो राग में धर्म किहां थी। जीवणो वांछ्या धर्म किम कहिये। अनें जे हणे तेहनो पाप टलावा नें तारिवा नें उपदेश देई हिंसा छोडावे ते तो धर्म छै। पिण राग में धर्म नहीं। असंयती रो जीवणो वांछ्यां धर्म नहीं। डाहा हुवे ते विचारि जोइजो ।

इति ७ बोल सम्पूर्ण ।

तथा साधु गृहस्थ नें अग्नि प्रज्वाल बुझाव तथा मत बुझाव इम न कहे। इम कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावतीहिं सद्धिं संवसमाणस्स-इह खलु गाहावती अप्पणो सअट्ठाए अगणिकायं उज्जालेज्जवा पज्जालेज्जवा विज्जावेज्जवा अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा-एतेखलु अगणिकायं उज्जालेंतुवा मा वा

उज्जालेंतुवा पज्जालेंतुवा मा वा पज्जालेंतुवा विज्जवेंतुवा मा वा विज्जवेंतुवा ।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १

पाप नों स्थालक ए पिण भि० साधु नें गा० गृहस्थ स० साथ वसता नें इ० इहां ख० निश्चय गा० गृहस्थ अ० आपणे अर्थे अ० अग्निकाय उ० उज्वाले वा प० प्रज्वाले. वा० अथवा वि० बुझावे एहवो प्रकार कर तो अ० अथ हिवे साधु गृहस्थ नें देखी नें उ० ऊंचो ब० नीचो म० मन णि० करे किम करी इम चिन्तवे. ए० ए गृहस्थ ख० निश्चय अ० अग्निकाय उ० उज्वालो अथवा मत उज्वालो प्रज्वालो. वा० मत प्रज्वालो वि० बुझावो वा० अथवा मत बुझावो। एहवे भावे घणो असंयम अग्नि कायनी हिंसा विराधना प्रमुख ६ कायनी हिंसा लागें तिण कारण इसो न चिन्तवे.

अथ अठे इम कह्यो। जे अग्नि लगाव तथा मत लगाव बुझाव तथा मत बुझाव इम पिण साधु ने चिन्तवणो नहीं। तो लाय मत लगाव इहां स्यूं आरम्भ छै। ते माटे इसो न चिन्तवणो। इहां ए रहस्य—जे अग्नि थी कीड़यां आदिक घणा जीव मरस्ये त्यां जीवां रो जीवणो वांछी ने इम न चिन्तवणो जे अग्नि मत लगाव। अनें अग्नि रो आरंभ तेहनों पाप टलावा तेहनें तारिवा अग्नि रो आरंभ करवा रा त्याग करायां धर्म छै। पिण जीवणो वांछ्यां धर्म नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ८ बोल सम्पूर्ण ।

तथा असंयम जीवितव्य तो साधु नें वांछणो नहीं ते असंयम जीवितव्य तो ठाम २ वरज्यो छै ते संक्षेप पाठ लिखिये छै ।

दसविहे आसंसप्पयोगे प० तं० इह लोगा संसप्पओगे परलोगा संसप्पओगे दुहओ लोगा संसप्पओगे जीविया संसप्पयोगे मरण संसप्पओगे कामा संसप्पओगे भोगा

संसप्पओगे लाभा संसप्पओगे पूया संसप्पयोगे सक्कार संसप्पओगे ।

(ठाणाङ्ग ठा० १०)

द० दश प्रकारे आ० इच्छा तेहनों प० व्यापार ते करिवो प० परूप्यो तं० ते कहे छै, इह लोके ते मनुष्य लोक नी आसंसा जे तप थी हूं चक्रवर्ती आदिक होय जो प० ए तप करवां थी इन्द्र अथवा सामानिक होयजो दु० हूं इन्द्र थइ नें चक्रवर्ती थायजो अथवा इह लोके ते इण जन्मे काइ एक वांछे परलोके कांइ एक वांछे बिहूं लोके कांइ एक वांछे जि० ते चिरजीवी होयजो म० शीघ्र मरण मुझ ने होवजो का० मनोज्ञ शब्दादिक माहरे होयजो भो० भोग गन्ध रसादिक माहरे होयजो ला० ते कीर्त्ति श्लाघादिक नों लाभ मुझ नें होयजो । पू० पूजा पुष्पादिक नी पूजा मुझ ने होयजो. स० सत्कार ते प्रधान वस्त्रादिके पूजवो मुझ ने होयजो

अथ अठे पिण कह्यो । जीवणो मरणो आपणों २ वांछणो नहीं तो पारको क्यां नें वांछसी । जीवण मरण में धर्म नहीं धर्म तो पचखाण में छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

तथा सूयगडाङ्ग अ० १० में कह्यो । असंयम जीवितव्य बांछणो नहीं । ते पाठ लिखिये छै ।

निक्खम्म गेहा उ निराव कंखी,
कायं विउ सेज्ज नियाण छिन्नो ।
णो जीवियं णो मरणा वकंखी,
चरेज्ज भिक्खू वलया विमुक्के ॥

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १० गा० २४)

नि० घर थी निकली चरित्र आदरी नें जीवितव्य नें विषे निरापेक्षी हुतो—का० शरीर वि० वोसरावी नें प्रतिकर्म चिकित्सादिक अनकरतो शरीर ममता छोडे नि० निपाणा रहित तथा नो० जीवबो न वांछे म० मरणो पिण- कं० न वांछे- च० संयम अनुष्ठान पाले भि० साधु व० संसार व० तथा कर्मबंध थकी वि० मूकाणो.

अथ अठे पिण जीवणो वांछणो वरज्यो । ते असंयम जीवितव्य बाल मरण आश्री वर्ज्यो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १० बोल सम्पूर्ण ।

तथा सूयगडाङ्ग अ० १३ गा० २३ में पिण जीवणो मरणो वांछणो वर्ज्यो ते पाठ लिखिये छै ।

आहत्त हियं समुपेह माणे,
सव्वेहि पाणे हि निहाय दंडं ।
णो जीवियं णो मरणावकंखी,
परि वदेज्जा वलया विमुक्के ॥

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १३ गा० २३)

आ० यथा तथा सूधो मार्ग सूत्र गत स० सम्यक् प्रकारे आलोचोतो अनुष्ठान अभ्यास- सो सर्व प्राणी जीव त्रस स्थावर नों दंड विनाश ते छोड़ी नें प्राण तजे पिण धर्म उलंघे नहीं. णो० जीवितव्य तथा णो मरण पिण वांछे नहीं एहवो हुतो प्रवर्त्ते संयम पाले व० मोह- गहन थकी ते विमुक्त जाणवो

अथ अठे पिण जीवणो मरणो वांछणो वर्ज्यो । ते मरणो असंयती रो न वांछणो । तो असंयती रो जीवणो पिण न वांछणो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ११ बोल सम्पूर्ण ।

तथा सूयगडाङ्ग अ० १५ में पिण असंयम जीवितव्य वांछणो वर्ज्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

जीवितं पिट्ठयो किच्चा, अंतं पावंति कम्मुणा ।
कम्मुणा सम्मुही भूता, जे मग्ग मणु सासइ ॥

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १५ गा० १०)

जि० असयम जीवितव्य पि० उपराठो करी निषेधी जीवितव्य नें अनादर देतो भला अनुष्ठान नें विषे तत्पर छता अ० अंत पामें अंत करे क० ज्ञानावरणीय आदिक कर्म नों तथा क० रूडा अनुष्ठान करी. स० मोक्ष मार्ग नें सम्मुख छता अथवा केवल उपने छते सासता पद नें सनमुख छता जे० जे वीतराग प्रणीत मार्ग ज्ञानादिक अ० मोखवे प्राणीयानो हितकारी प्रकाशे आपणा पे समाचरे

अथ अठे पिण कह्यो—असंयम जीवितव्य नें अन आदर देतो थको विचरे तो असंयम जीवितव्य वांछयां धर्म किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १२ बोल सम्पूर्ण ।

तथा सूयगडाङ्ग अ० ३ उ० ४ गा० १५ जीवणो वांछणो वर्ज्यो ते पाठ लिखिये छै।

जेहि काले परिक्कंतं न पच्छा परितप्पइ ।
ते धीरा बंधणु मुक्का नाव कंखंति जीवियं ॥

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० १५)

जे० जेणे महा पुरुष. का० काल प्रस्तावे धर्म नें विषे पराक्रम कीधो न० ते पछे मरण वेलां प० पिछतावे नहीं ते धीर पुरुष ब० अष्ट कर्म बंधन थकी छूटा मुकाणा छै। ना० न वांछे जी० असयम जीवितव्य-अथवा बाल मरण पिण न वांछे एतावता जीवितव्य मरण नें विषे सम भाव वर्ते ।

अथ अठे पिण कह्यो । जीवणो मरणो वांछणो नहीं । ते पिण असंयम जीवितव्य बाल मरण आश्री वर्ज्यों । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १३ बोल सम्पूर्ण ।

तथा सूयगडाङ्ग अ० ५ में असंयम जीवितव्य वांछणो वर्ज्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

जे केइ बाले इह जीवियट्ठी
पावाइं कम्माइं करेंति रुद्दा,
ते घोर रूवे तिमिसंधयारे
तिव्वाभितावे नरए पडंति ॥

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ५ उ० १ गा० ३)

जे० जे कोई बाल अज्ञानी महारंभी महा परिग्रही इण संसार ने विषे जी० असंयम जीवितव्य ना अर्थी. पा० मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय योग ए पाप. क० ज्ञानावरणीयादिक कर्म क० उपार्जे छै, मैला कर्म केहवा रुद्र प्राणीया नें भय नों कारण. ते० ते पुरुष तीव्र पाप ने उदय घो० घोर रूप अत्यन्त डरामणो. ति० महा अन्धकार तिहां आंखें करी कांई दीखे नहीं ति० तीव्र गाढ़ो ताव छै जिहां इहां नी अग्नि थकी अनन्तगुणी अधिक ताप छै न० एहवा नरक ना विषे प० पडे ते कूड़ कर्म ना करणहार.

अथ अठे पिण कह्यो । जे बाल अज्ञानी असंयम जीवितव्य वांछे. ते नरक पड़े तो साधु थई नें असंयम जीवितव्य नी वांछा किम करे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १४ बोल सम्पूर्ण ।

तथा सूयगडाङ्ग अ० १० में पिण जीवणो वांछणो वर्ज्यों । ते पाठ कहे छै ।

सुयक्खाय धम्मे वितिगिच्छतिन्ने,
लाढ़े चरे आय तुले पयासु ।
चयं न कुज्जा इह जीवियट्ठि,
चयं न कुज्जासु तवस्सि भिक्खू ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १ गा० ३)

सु० रूडी परे जिन धर्म कह्यो ए धर्म एहवो हुइ तथा. वि० सन्देह रहित वीतराग बोले ते सत्य इसो माने एतले ज्ञानदर्शन समाधि कही तथा ला० संयम ने विषे निर्दोष आहार लेतो थको विचरे आ० आत्मा तुल्य प० सर्व जीव नें देखे एहवो साधु हुइ आ० आश्रव न करे इहां असंयम जीवितव्य अर्थी न हुई च० धन धान्यादिक नु परिग्रह न करे सु० भलो तपस्वी भि० ते साधु हुवे

अथ अठे पिण कह्यो । असंयम जीवितव्य नो अर्थी न हुवे । ते जीवितव्य सावद्य में छै । ते माटे ते असंयम जीवितव्य वांछ्यां धर्म नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १५ बोल सम्पूर्ण

तथा सूयगडाङ्ग अ० ५ उ० २ जीवणो वांछणो वर्ज्यो ते पाठ लिखिये छै ।

नो अभिकंखेज्ज जीवियं नो विय पुयण पत्थए सिया
अज्जत्थ मुवेंति भेरवा सुन्नागार गयस्य भिक्खुणो ।

(सुयगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १६)

नो० तेवो उपसर्ग पीड्यो छतो साधु असंयम जीवितव्य न वांछे एतले मरण आगमे जीवितव्य घणो काल जीवू इम न वांछे नो० परिसह नें सहिवे वस्त्रादिक पूजा लाभ नी प्रार्थना न वांछे सि० कदाचित् न करे अ० आत्मा ने विषे सु० उपजे परिसह केहवा भे० भय कारिया

पिशाचादक ना घ० सूना घर नें विषे ग० रह्या जि० साधु में जीवितव्य मरण री आकांक्षा रहित एहवा साधु नें उपसर्ग सहितां सोहिला हुई।

अथ इहां पिण जीवणो वांछणो वर्ज्यो। ते पिण असंयम जीवितव्य आश्री वांछणो वर्ज्यो छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १६ बोल संपूर्ण।

तथा उत्तराध्ययन अ० ४ संयम जीवितव्य धारणो कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

चरे पयाइं परिसंकमाणो,
जं किंचिपासं इह मन्नमाणो।
लाभंतरे जीविय वूहइत्ता,
पच्छा परिन्नाय मलावधंसी॥

(उत्तराध्ययन अ० ४ गा० ७)

च० विचरे मुनि केहवूं प० पगे २ संयम विराधना थी डरे ते माटे शंकतो चाले जे कोइ अल्प मात्र पिण गृहस्थ संसतादिक तेहनें संयम नी प्रवृत्ति रूंधवा माटे. पा० पासनी परें पास हुई ए संसार ने विषे मानतो हुन्तो ला० लाभ विशेष छै ते एतले भला २ सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्र नू लाभ ए जीवितव्य थकी छै तिहां लगे जी० जीवितव्य नें अन्नपानादिक देवे करी वधारे प० ज्ञानादिक लाभ विशेष नी प्राप्ति थी पछे परि० ज्ञान प्रज्ञाइं गुण उपार्जवा असमर्थ एहवू जाणी नें विचारे पछे प्रत्याख्यान परिज्ञाइं म० मलभेय शरीर कार्मणादिक विध्वंसे

अथ अठे पिण कह्यो। अन्न पाणी आदिक देई संयम जीवितव्य वधारणो पिण ओर मतलब नहीं। ते किम उण जीवितव्य री वांछा नहीं। एक संयम री वांछा आहार करतां पिण संयम छै। आहार करण री पिण अव्रत नहीं। तीर्थङ्कर

री आज्ञा छै अनें श्रावक नो तो आहार अव्रत में छै। तीर्थङ्कर नी आज्ञा बाहिरे छै। श्रावक नें तो जेतलो पचखाण छै ते धर्म छै। अव्रत छै ते अधर्म छै। ते माटे असंयम मरण जीतव्य री वांछा करे ते अव्रत में छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १७ बोल सम्पूर्ण।

तथा सूयगडाङ्ग अ० २ में पिण संयम जीवितव्य दुर्लभ कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

सं बुज्झह किं न बुज्झह संबोही खलुपेच्च दुल्लहा। णो हुउ वणमंत राइओ णो सुलभं पुण रावि जीवियं।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० २ गा० १)

सं० श्री आदिनाथ जी ना ९८ पुत्र भरतेश्वर अपमान्या संवेग उपने ऋषभ आगल आव्या ते प्रते एह संबंध कहे छे अथवा श्री महावीर देव परिषदा माहे कहे अहो प्राणी तुम्हें बूझो कांइं नथी बूझता, चार अंग दुर्लभ स० सम्यग ज्ञानबोधि ज्ञान दर्शन चरित्र ख० निश्चयें पे० परलोक में अति ही दुर्लभ छे णो० अवधारणे जे अतिक्रमी गइ रा० रात्रि दिवस तथा यौवनादिक पाछो न आवे पर्वत ना पाणी नी परे णो० पामतां सोहिलो नथी पु० वली जी० संयम जीवितव्य पचखाण सहित जीवितव्य

अथ अठे पिण संयम जीवितव्य दोहिलो कह्यो। पिण और जीवितव्य दोहिलो न कह्यो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १८ बोल सम्पूर्ण।

तथा नमी राज ऋषि मिथिला नगरी बलती देखी साहमो जोयो न कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

एस अग्गीय पाऊय एयं डज्झइ मंदिरं।
भयवं अन्तेउरं तेणं कीस णं नाव पिक्खह ॥ १२॥

एय मट्ठं निसामित्ता हेउ कारण चोइयो।
तओ नमी राय रिसी देवेंदं इण मव्ववी ॥ १३ ॥

सुहं वसामो जीवामो जेसिं मो नत्थि किंचणं।
महिलाए डज्झमाणीए न मे डज्झइ किंचणं ॥ १४ ॥

चत्त पुत्त कलत्तस्स निव्वावारस्स भिक्खुणो।
पियं न विज्जइ किंचि अप्पियं पि न विज्जइ ॥ १५ ॥

(उत्तराध्ययन अ० ६ गा० १२-१३-१४-१५)

ए० प्रत्यक्ष अ० अग्नि अनें वा० वाय रे करी ए० प्रत्यक्ष तुम्ह संबंधी उ० बले छ मं० मन्दिर घर भ० हे भगवन् ! अं० अंतःपुर समूह की० स्यां भणी ना नयी जोयता, तुम में तो ज्ञानादि राखवा तिम अंतपुर पिण राखवू ॥ १२ ॥

देवेन्द्र रो ए० ए अ० अर्थ नि० सुनी हे० हेतु कारण इं प्रेरया थका न० नमीराज ऋषि दे० देवेन्द्र ने इ० ए वचन म० बोल्या ॥ १३ ॥

सु० सुखे वसूं छू अने सु० सुखे जीवू छू जे अणमात्र पिण म्हारे न० छै नहीं कि० किंचित् वस्तु आदिक. मिथिलानगरी बलती छतीये म० माहरू नयी बलतो किंचित् मात्र पिण थोड़ो ई पिण जे भणी ॥ १४ ॥

च० छोड्या छै पु० पुत्र अने क० कलत्र जेणे एहवू वली नि० निर्व्यापार कर्या पशु पालनादिक क्रिया व्यापार ते रहित करी भि० साधु ने पि० प्रिय नयी किं० किंचित् अल्प पदार्थ पिण राग अणकरवा माटे अ० अप्रिय पिण नयी कोई पदार्थ साधु ने द्वेष पिणं अकरवा माटे

अथ अठे इम कह्यो—मिथिला नगरी बलती देख नमीराज ऋषि साहमो न जोयो। वली कह्यो म्हारे वाहलो दुःवाहलो एकही नहीं। राग द्वेष अणकरवा माटे। तो साधु. भिनकिया आदिक रे लारे पड़नें उंदरादिक जीवां ने बचावे: ते

शुद्ध के अशुद्ध। असंयती रा शरीर ना जावता करे ते धर्म के अधर्म। असंयम जीवितव्य वांछे. ते धर्म के अधर्म छै। ज्ञानादिक गुण वांछ्यां धर्म छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १६ बोल सम्पूर्ण ।

तथा दश वैकालिक अ० ७ में पिण इम कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

देवाणं मणुयाणंच तिरियाणं च वुग्गहे
अमुयाणं जओहोउं मावा होउत्ति नो वए।

(दश वैकालिक० अ० ७ गा० ५०)

दे० देवता नें तथा म० मनुष्य नें. च० वली ति० तिर्यञ्च नें च० वली वु० विग्रह (कलह) थाइ छै। अ० असुकानों ज० जय जीतवो होज्यो अथवा मा० म होज्यो असुकानों जय इम तो न बोले साधु

अथ अठे पिण कह्यो। देवता मनुष्य तथा तिर्यञ्च माहोमाही कलह करे तो हार जीत वांछणी नहीं। तो काया थी हार जीत किम करावणी. असंयती ना शरीर नी साता करे ते तो सावद्य छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २० बोल सम्पूर्ण ।

तथा दश वैकालिक अ० ७ में कह्यो तें पाठ लिखिये छै।

वायुवुट्ठिं च सीउराहं खेमं धायं सिवंतिवा
कयाणु होज्ज एयाणि मा वा हो उत्ति नो वए।

(दश वैकालिक अ० ७ गा० ५१)

वा० वायरो वु० वर्षांत. सी० शीत ताप खे० राजादिक ना कलह रहित हुवे ते क्षेम धा० सुकाल सि० उपद्रव रहित पणो क० किवारे हुस्यै ए० वायरा आदिक हुवे । अथवा मा थास्यौ इति इम साधु न बोले-

अथ अठे कह्यो वायरो वर्षा, शीत, तावड़ो.राज विरोध रहित सुभिक्ष पणो. उपद्रव रहित पणो. ए ७ बोल हुवो इम साधु नें कहिणो नहीं । तो करणो किम् उंदरादिक नें मिनकियादिक थी छुड़ाय नें उपद्रव पणा रहित करे ते सूत्र विरुद्ध कार्य छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २१ बोल सम्पूर्ण ।

तथा सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० ७ में पिण आपरा कर्म तोड़वा तथा आगलान तारिवा उपदेश देणो कह्यो छै । तथा ठाणाङ्ग ठा० ४ पहवो पाठ कह्यो ते लिखिये छै ।

चत्तारि पुरिस जाया प० तं० आयाणुकंपए नाम मेगे णो पराणुकंपए ।

(ठा० ठा० ४)

च० चार पुरुष जाति परूप्या त० ते कहे छै आ० पोताना हित नें विषे प्रवर्त्ते ते प्रत्येक बुद्ध अथवा जिन कल्पी अथवा परोपकार बुद्धि रहित निर्दय णो० पारका हित नें विषे न प्रवर्त्ते १ पर उपकारे प्रवर्त्ते ते पोता ना हित ना कार्य पूरा करीनें पछे परहित नें विषे एकान्ते प्रवर्त्ते ते तीर्थंकर अथवा "मेतारज" वत् २ तीजो बेहूनों हित वांछे ते स्थविरकल्पी साधुवत् ३ चोथो पापआत्मा बेहूंनों हित न वांछे ते कालकसूरीवत् ४

अथ अठे पिण कह्यो । जे साधु पोतानी अनुकम्पा करे. पिण आगला नी अनुकम्पा न करे । तो जे पर जीव ऊपर पग न देवे. ते पिण पोतानी ज अनुकम्पा निश्चय नियमा छै । ते किम एहनें मास्यां मोनें इज पाप लागसी इम जाणी

न हणे । ते भणी पोता नो अनुकम्पा कही छै अनें आप नें पाप लगायनें आगलानी अनुकम्पा करे ते सावद्य छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २२ बोल सम्पूर्ण ।

तथा उत्तराध्ययन अ० २१ समुद्र पाली पिण चोर नें मारतो देखी छोडायो, चाल्यो नहीं । ते पाठ लिखिये छै ।

तं पासिऊण संवेगं समुद्दपालो इणमब्बवी
अहो असुभाण कम्माणं निजाणं पावगंइमम्

(उत्तराध्ययन अ० २१ गा० ६)

तं० ते चोर ने पा० देखी नें स० वैराग्य ऊपनों स० समुद्र पाल इ० इम म० बोल्यो.. आ० आश्चर्यकारी अ० अशुभ कर्म नों नि० छेहड़े पा० अशुभ विपाक इ० ए प्रत्यक्ष

अथ इहां पिण कह्यो—समुद्रपाली चोर ने मारतो देखी वैराग्य आणी चारित्र लीधो पिण गर्थ देइ छोडायो नहीं । परिग्रह तो पाचमों पाप कह्यो छै । जे परिग्रह देइ जीव छुड़ायां धर्म हुवे तो बाकी चार आश्रव सेवाय नें जीव छोड़ायां पिण धर्म कहिणो । पिण इम धर्म निपजे नहीं । असंयम जीवितव्य वांछे ते तो मोह अनुकम्पा छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २३ बोल सम्पूर्ण ।

तथा गृहस्थ रस्तो भूलो दुखी छै । तेहनें मार्ग बतावणो नहीं । गृहस्थ रस्तो भूला नें मार्ग बतायां साधु नें प्रायश्चित कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

जे भिक्खू अरण उत्थियाणं वा गारत्थियाणं वा णट्ठाणं मूढाणं विप्परियासियाणं मग्गं वा पवेदेइ संधिं पवेदेइ मग्गाणं वा संधिं पवेदेइ संधिं उ वा मग्गं पवेदेइ· पवेदंतं वा साइज्जइ.

(निशीथ उ० १३ बोल २७)

जे० जे साधु अ० अन्यतीर्थिक नें तथा गा० गृहस्थ नें ण० पथ थकी नष्टां नें मू० अटवी में दिशा मूढ हुवा नें वि० विपरीत पणु पाम्या नें मार्ग नों प० कहिवो स० संधि नो कहिवो म० मार्ग थकी स० संधि प० कहिवो स संधि थकी म० मार्ग नों प० कहिवो तथा घणा मार्ग नी संधि प० कहे कहता नें सा० अनुमोदे। तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त.

अथ अठे गृहस्थ तथा अन्य तीर्थी नें मार्ग भूला नें दुःखी अत्यन्त देखी, मार्ग बतायां चौमासी प्रायश्चित कह्यो। ते माटे असंयती री सुखसाता वांछ्यां धर्म नहीं। गृहस्थ नी साता पूछ्यां दशवैकालिक अ० ३ में सोलमो अनाचार कह्यो।

तथा वली व्यावच कियां करायां अनुमोद्यां अट्ठावीसमों अनाचार कह्यो। पिण धर्म न कह्यो। ते माटे असंयती शरीर नो जावता कियां धर्म नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २४ बोल सम्पूर्ण।

तथा धर्म तो उपदेश देइ समझायां कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

तओ आयक्खा प० तं० धम्मियाए पडिचोयणाए भवइ १ तुसिणीए वासिया २ उट्ठित्ता वा आया एगन्त मवक्कमेज्जा ३

(ठाणाङ्ग ठाणा ३ उ० ४)

त० त्रिण आ० आत्म रक्षक ते राग द्वेषादिक अकार्य थकी अथवा भवकूप थकी आत्मा नें राखे ते आत्म रक्षक ध० धर्म नी प० चोइणाइं करी नें पर नें उपदेशे जिम अनुकूल

प्रतिकूल उपसर्ग करता नें वारे तेथी ते उपसर्ग करवा रूप अकार्य नू सेवणहार न हुइं अनें साधु पिण उपसर्ग नें प्रभावे कार्य अकार्य करे उपसर्ग करतो वार्यो तो ते थकी साधु पिण अकार्य थी राख्यो अनें उपसर्ग थकी पिण आत्मा राख्यो अथवा तु० साधु अणबोल्यो रहे निरापेक्षी थको अनें वारी न सके अबोल्यो पिण रही न सके तो तिहां थी उठी नें आपण पे ए० एकान्त भाग नें विषे म० जाई.

अथ अठे पिण कह्यो। हिंसादिक अकार्य करता देखी धर्म उपदेश देइ समझावणो तथा अणबोल्यो रहे। तथा उठि एकान्त जावणो कह्यो। पिण जवरी सूं छोडावणो न कह्यो। तो रजोहरण (ओघा) थी मिनकी नें डराय नें ऊंदरां ने बचावे। तथा माका ने हटाय माखी नें बचावे। त्यांने आत्म-रक्षक किम कहिये। अनें जो त्रस काय जवरी सूं छोड़ावणी तो पंच काय हणता देखी ने क्यूं न छोड़ावणी नीलण फूलण माछल्यादिक सहित पाणीका नाड़ा ऊपर तो भैंस्यां आवे। सुलिया धान्य रा ढिगला में सुलसुलिया इड़ादिक घणा छै। ते ऊपर बकरा आवे। जमीकन्द्रा ढिगला ऊपर बलद आवे। अलगण पाणी रा माटा ऊपर गाय आवे ऊकड़ री लटां सहित छै तेहनें पक्षी चुगे छै। ऊंदरा ऊपर मिनकी आवे। माखिया ऊपर माका आवे। हिवे साधु किण नें छुड़ावे। साधु तो छकाय नो पीहर छै। जे ऊंदरा ने माख्यां ने तो बचावे अनेरा ने न बचावे ते कांई कारण। ए जवरी सूं बचावणो तो सूत्र में चाल्यो नहीं। भगवन्त तो धर्मोपदेश देइ समझाव्यां, तथा मौन राख्यां, तथा उठि एकान्त गयाँ, आत्म-रक्षक कह्यो। पिण असंयती रो जीवणो वांछ्यां आत्म-रक्षक न कह्यो। तो मिनकी ने डरायनें ऊंदरा नें बचावे तेहनें आत्म-रक्षक किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २५ बोल सम्पूर्ण।

तथा अनेरा नें भय उपजावे ते हिंसा प्रथम आश्रव द्वारे "प्रश्नव्याकरण" में कही छै। तो मिनकी ने भय किम उपजावणो। वली भय उपजायां प्रायश्चित कह्यो। ते पांठ लिखिये छै।

जे भिक्खू परं विभावेइ विभावंतंवा साइज्जइ।

(निशीथ उ० ११ बो० १७८)

जे० जे कोइ साधु साध्वी अनेरा नें इहलोक मनुष्य ने भय करी परलोक ते तिर्यञ्चादिक नें भय करी नें वि० बीहावे वि० बीहावता नें सा० अनुमोदे इहां भय उपजावतां दोष उपजे बिहावतो थको अनेरा नें भूत जीव नें हणे तिवारे छही काय नी विराधना करे इत्यादिक दोष उपजे तो पूर्ववत्प्रायश्चित्त।

अथ अठे पर जीव ने बिहाव्यां बिहावतां नें अनुमोद्यां चौमासी प्रायश्चित कह्यो। तो मिनकी नें डराय नें उन्दरा नें पोषणो किहां थी। अनें असंयती ना शरीर नी रक्षा किम करणी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २६ बोल सम्पूर्ण।

तथा गृहस्थ नी रक्षा निमित्ते मंत्रादिक कियां प्रायश्चित कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

जे भिक्खू अणउत्थियंवा गारत्थियंवा भुइ कम्मं करेइ करंतंवा साइज्जइ।

(निशीथ उ० १२ बो० १४)

जे० जे कोई साधु साध्वी अन्य तीर्थी नें गा० गृहस्थ नें भू० रक्षा निमित्ते भूती कर्म कियाई करी मन्त्री ने भूती कर्म करे भूती कर्म करतां ने सा० साधु अनुमोदे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त

अथ अठे गृहस्थ नी रक्षा निमित्त मंत्रादिक कियां अनुमोद्यां चौमासी प्रायश्चित कह्यो। तो जे ऊंदरादिक नी रक्षा साधु किम करे। अने जो इम रक्षा कियां धर्म हुवे तो डाकिनी शाकिनी भूतादिक काढ़ना सर्पादिक ना ज़हर उतारना

औषधादिक करी. असंयती नें बचावणा । अनें जो एतला बोल न करणा तो असंयती ना शरीर नी रक्षा पिण न करणी । डाहा हुवें तो विचारि जोइजो ।

इति २७ बोल सम्पूर्ण ।

वली साधु तो गृहस्थ ना शरीर नी रक्षा किम करै सामायक पोषा मैं पिण गृहस्थ नी रक्षा करणी वर्जी छै । ते पाठ कहे छै ।

तएणं तस्स चुल्लणी पियस्स समणो वासयस्स पुव्व-रत्तावरत्त काल समयंसि एगे देवे अंतियं पाऊब्भवेता ॥४॥ तत्तेणं से देवे एग नीलुप्पल जाव असिं गहाय चुल्लणीपितं समणो वायय एवं वयासी. हंभो चुल्लणी पिया ! जहा काम देवे जाव ना भंजसी तो ते अहं अज्ज जेठं पुत्तं सातो गिहातो णीणेमी तव आघत्तो घाएमि २ त्ता ततो मंस सोल्ले करेमि ३ त्ता आदाण भरियंसि कड़ाइयंसि अदाहेमि २ त्ता तंवगातं मंसेणय सोणिएणय आइचामि जहाणं तुमं अट्ट दुहट्ट वसट्टे अकाले चेव जीवीयाओ ववरो विज्जासि ॥५॥ तएणं से चुल्लणी पीए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरंति ॥६॥ तएणं से देवे चुल्लणी पियं अभीयं जाव पासती दोच्चंपि तच्चंपि चुल्लणी पियं समणो वासयं एवं वयासी हंभो चुल्लणी पिया अपत्थीयापत्थीया जाव न भंजसि तं चेव भणइ सो जाव विहरंति ॥७॥ तएणं से देवे चुलणी पियाणं अभीयं जाव पासित्ता आसुरुत्ते-चुलणी पितस्स

समणोवासगस्स जेट्ठ पुत्तं गिहातो णीणेती २ त्ता आगत्तो घाएती २ त्ता तओ मंससोल्लए करेति २ त्ता आदाण भरियंसि कडाहयंसि अद्दहेति २ त्ता चुल्लणी पियस्स गायं मंसेणय सोणीएणय अइच्चंति ॥८॥ तएणं से चुल्लणी पिया समणोवासाया तं उज्जलं जाव अहियासंती ॥९॥ तत्तेणं से देव चुल्लणीप्पियं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ २ त्ता दोच्चंपि चुल्लणि पियं समणोवासयं एवं वयासी हंभो चुल्लणी पिया ! अपत्थीया पत्थीया जाव न भंजसि तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साहो गिहातो नीणेमी २ त्ता तव अग्गओ घाएमि जहा जेट्ठं पुत्तं तहेव भणइ तहेव करेइ एवं तच्चं कणियासंपि जाव अहियासेति ॥१०॥ तएणं से देवे चुल्लणी पिया। अभीयं जाव पासाइ २ त्ता चउत्थंपि चुल्लणी प्पियं एवं वयासी-हंभो चुल्लणि पिया ! अपत्थीया पत्थीया जइणं तुम्हं जाव न भंजसि ततो अहं अज्ज जा इमा तव माया भद्दासत्थवाहीणी देवयं गुरु जणणी दुक्कर २ कारिया तंसि साओ गिहाओ नीणेमि २ त्ता तव अग्गओ घाएमि २ त्ता तओ मंससोलए करेमि २ त्ता आदाणं भरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि २ त्ता तव गायं मंसेणय सोणिएणं अइच्चामि जहाणं तुम्हं अट्ट दुहट्ट वसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरो वज्जसि ॥११॥ तत्तेणं चुल्लणी पिया तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरंति ॥१२॥ तएणं से देवं चुल्लणिपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासति

२ त्ता चुल्लणी पियं समणोवासयं दोच्चंपि तच्चंति एवं वयासी-हंभो चुल्लणी पिया ! तहेव जाव विविरो विज्जसि ॥१३॥ तएणं तस्स चुल्लणीपियस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे इमे या रूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्ता अहो णं इमे पुरिसे अणारिये अणारिय बुद्धि अणायरियाइं पावाइं कम्माइं समायरंति जेणं मम जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ णीणेति मम अग्गओ घाएति २ त्ता जहा कयं तहा चिन्तीयं जाव आइचेति। जेणं मंम मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ णीणेति जाव आइचंति, जेणं मम कणीएसं पुत्तं साओ गिहाओ तहेव जाव आइचेति, जातियणं, इमा मम माया भद्दा सत्थवाही देवगुरु जणणी दुक्कर २ कारिया तं पियणं इच्छंति सयाओ गिहाओ णीणेत्ता मम अग्गओ घाइत्ताए. तं सेयं खलु मम एयं पुरिसं गिहितए त्तिकट्टु उट्ठाइये सेविय आगसि उप्पइए तेणेय खंभे आसादिलं महया २ सद्देणं कोलाहलेणं कए ॥१४॥ तत्तेणं सा भद्दा सत्थवाहिणी ते कोलाहल सद्द सोच्चा निसम्म जेणेव चुल्लणीपियं समणोवासयं एवं वयासी-किएणं पुत्ता ! तुम्हं महया २ सद्देणं कोलाहले कए ! ॥१५॥ तएणं से चुल्लणीपिया अम्मयं भद्दसत्थ वाहीणीयं एवं वयासी एवं खलु अम्मो ! ण याणामि केइ पुरिसे आसुरुत्ते। एगंमह निलूप्पल जाव असिं गहाय मम एवं वयासी हंभो चुल्लणी पिया ! अपत्थीया पत्थीया जइणं तुम्हं जाव ववरो विज्जसि सत्तेणं अहं तेणं पुरिसे एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विह-

रामी। तएणं से पुरिसे मम अभीयं जाव विहरमाणं पासंति दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी हं भो चुल्लणीप्पिया! तहेव जाव आइचंति. तत्तेणं अहं तं उज्जलं जाव अहिया-सेमि एहं तहेव जाव कणीयसं जाव अहियासेमि तएणं से पुरिसे मम अभिते जाव पासति २ ममं चउत्थंपि एवं वयासी. हं भो चुल्लणी पिया! अपत्थीय पत्थीवा जाव न भंजसि तो ते अज्जा जा इमा तव माता भद्दा गुरु देवे जाव ववरो विज्जासी। तत्तेणं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामी तएणं से पुरिसे दोच्चंपि तच्चंपि मम एवं वयासी हं भो चुल्लणी पिया अ० जइणं तुम्हं जाव ववरो विज्जसि। तएणं तेणं देवेणं दोच्चंपि ममं तच्चोपि एवं वुत्त समाणेस्स अयमेया रूवे अज्झत्थिए जाव समुप्प-जित्ता अहोणं इमे पुरिसे अणारिये जाव अणायरिय कम्माइं समायणी जेणं मम जेट्ठं पुत्तं सातो गिहातो तहेव कणि-यसं जाव आइचति तुज्झे वियणं इच्छति सातो गिहातो णी-णेत्ता मम आगाओ घाएति तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिएणत्तए तिकट्टु उट्ठाइये सेविय आगासे उप्पत्तिए मए विय खंभे आसाईए महया २ सद्देणं कोलाहले कए॥ १६॥ तएणं सा भद्दा सत्थ वाहीणी चुल्लणी पियं एवं वयासी—नो खलु केइ पुरीसे तव जाव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेत्ता तव अग्गओ घाएति, एसणं केइ पुरिसे तव उव-सग्गं करेति. एसणं तुम्मेवि दरिसणे दिट्ठे। तेणं तुमं इदाणि भग्गवए, भग्ग नियमे, भग्गपोसहोववासे, विहरसि.

तेणं तुमं पुत्ता! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायछित्तं पडिवज्जाहिं ॥१७॥ तएणं चुल्लणी पिया समणोवासए अम्मगाए भद्दाए सत्थवाहीणिए तहत्ति एयमट्ठ विणएणं पडि सुणेइ २ त्ता तस्स ठाणस्से आलोएइ जाव पडिवज्जइ ॥ १८ ॥

(उपासक दशा अ० ३)

त० तिवारे. त० ते चु० चुलणी पिया स० श्रावक नें पु० मध्यरात्रि ना काल, स० समा नें विषे ए० एक देवता अ० समीप पा० प्रकट हुवे ॥४॥ त० तिवारे पछे से० ते देवता ए० एक म० मोटो नी० नीलोत्पल कमल एहवो नीलो जा० यावत् अ० खड्ग (तरवार) ग० ग्रही नें चु० चुलणी पिया स० श्रावक प्रते ए० एम व० बोल्यो. ह० अरे अहो चूलणी पिता! ज० जिम काम-देवनी परे ज० यावत् जो तू व्रत नहीं भांजसी तो त० तिवारे पछे ते ताहरा अ० हूं अ० आज जे० वड़ा पु० पुत्र नें स० तांहरा गि० घर थकी णी० काढ सू काढ़ी नें त० तांहरे आ० आगे. घा० मारिस ए० एम० व० बोल्यो त० तिवारे पछे म० मांसना सो० शूला तीन करस्यू त० आधण म० भर सू तेल सू क० कड़ाही नें थाती अ० तेल सू तलस्यू त० तांहरो गात्र म० मासे करी नें. ला० लोहिये करी ने अ० छांटस्यू ज० जे भणी तु० तू आ० आर्त्त रौद्र ध्यान नें. व० वश पहुतो थको अ० अवसर बिना अकाले जीवितव्य थकी व० रहित होसी. ॥५॥ त० तिवारे पछे से० ते चूलणी पिता स० श्रावक ते० तेणे देवता इं ए० इम वु० कहे थके अ० बीहनों नहीं जा० यावत् वि० विचरे त० तिवारे पछे से० ते देवता चु० चुलणी-पिता स० श्रावक नें निर्भय थको जा० यावत् वि० विचरतां थको देख्यो दो० बीजीवार त० त्रिणवार चू० चूलणी पिता स० श्रावक प्रते ए० इम बोल्यो ह० अरे अहो चूलणी पिता त० तिमज कह्यो सो० तं पिया जा० यावत् नि० निर्भय थको विचरे छै॥ ६ ॥ त० तिवारे पछे से० ते देवता स० श्रावक नें अ० निर्भय थको जा० यावत् देखी नें अ० अति रिसाणो चू० चूलणी पिता स० श्रावक ना जे० वड़ा पुत्र ने स० पोता ना गि० घर थकी णि० आणी नें तांहरे आगे घा० मारी मारी ने त० तेहना मांसना स० शूला क० करी नें आ० आधण तेल सू भ० भरी नें क० कड़ाही मांही अ० तल्यो चु० चूलणी पिया स० श्रावक ना गा० शरीर ने म० मांसे करी नें लो० लोहिये करी ने आ० सींच्यो त० तिवारे पछे से० ते चु० चुलणी पिता स० श्रावक. से० ते वेदना उ० उजली जा० यावत् अ० अहियासी (खमी) त० तिवारे पछे से० ते देवता चु० चूलणी पिता स० श्रावक प्रते अ० अभीहतो थको जा० यावत् पा० देखी नें दो० दूजी वार त० तीजी वार चु० चू०

लणी पिता स० श्रावक प्रते ए० इम. व० बोल्यो ह० अरे अहो चु० चूलणी पिया ! अ० कोई अर्थ नहीं तेह वस्तु ना प्रार्थनहार मरण ना वांछणहार जा० यावत् न० नहीं भांजसी तो त० तिवारे पछे ते तांहरो अ० हूं अ० आज म० विचलो पु० पुत्र नें सा० पोता ना घर थकी णो० आणी आणीने त० तांहरे आगलि हणस्यू ज० जिमज वडो बेटो ते त० तिमज कह्यो देवता त० तिमज क० कीधो ए० इम क० छोटा बेटा नें पिण हणियो जा० यावत् वेदना अहियासी त० तिवारेपछे से० ते. देवता चूलणी पिता श्रावक नें अ० अण बीहतो थको जा० यावत् पा० देखी नें च० चौथी वार चु० चूलणी पिया प्रते ए० इम व० बोल्यो ह० अरे अहो चूलणी पिता ! अ० अण प्रार्थना प्रार्थणहार ज० जो तू जा० यावत्. न० नहीं भांगे तो त० तिवारे पछे अ० हूं अ० आज जा० जे इ० ए प्रत्यक्ष भ० भद्रासार्थवाही दे० देव समान, गु० गुरु समान ज० माता दु० दुष्कर २ करणी ते पामता दोहिली त० तेहनें सा० पोताना घर थकी नि० काढ़ी ने त० तांहरे आ० आगल घा० हणस्यूं त० त्रिण म० मांस ना सो० शूला क० करी नें आ० आधण तेल सूं भ० कड़ाही माहीं घाती नें अ० तेल सूं तली नें ताहरो गा० गात्र म० मांसे करी नें सो० लोहिये करी ने आ० छांट स्यू ज० जे भणी तु० तू अ० आर्त्त रुद्र ध्यान में व० वश पहुंतो थको अ० अवसर विना वे० निश्चय करी नें जी० जीवितव्य थकी व० रहित हुस्ये त० तिवारे पछे से० ते चू० चूलणी पिया ते० तेणे देवता ए० इम वु० कहे थके जा० यावत् अबीहतो थको जा० यावत् वि० विचरे छै त० तिवारे पछे से० ते दे० देवता चू० चूलणी पिता नें अ० निर्भय थको जा० यावत् वि० विचरतो थको पा० देख्यो पा० देखी ने चू० चूलणी पिता स० श्रावक प्रते दो० दूजी वार तीजी वार ए० इम बोल्यो ह० अरे अहो चूलणी पिता त० तिमज जा० यावत् जीवितव्य थको रहित होइस त० तिवारे पछे त० ते चू० चुलणी पिया स० ते. दे० देवता. दो० दूजीवार ए० इम वु० कहे थके इ० एहवा अध्यवसाय ऊपना अ० आश्चर्यकारी इ० ए पुरुष अ० अनार्य छै अ० अनार्य बुद्धिवालो छे अनार्य कर्म. पा० पापकर्म ने स० समाचरे छै जे० जे भणी म० माहरो जे० बडो पुत्र स० पोता ना गि० घर थकी नि० आणनें म० माहरे आगले घा० हणयो जि० जिम दे० देवता कीधा त० तिमज चि० चिन्तव्यो जा० यावत् आ० सीच्यो गा० गात्र जे० जे भणी म० माहरो म० विचला पुत्र स० पोताना घर थकी. जा० यावत् सींच्यो जे० जे भणी म० माहरे क० लघुपुत्र नें त० तिमज जा० यावत् आ० सींच्यो जी० जे भणी इ० ए प्रत्यक्ष म० माहरी मा० माता भद्रा नामे स० सार्थवाही देवगुरु समान जे० माता ते दु० दुष्कर दुष्कारिणी ते पामतां दोहिली छै तेहनें पिण इ० वांछे छै स० पोताना गि० घर थकी. णी० आणी नें म० माहरे आ० आगली घा० घात करीस. त० ते भणी से० भलो ख० निश्चय करी म० मुझ ने एक पुरुष नें प० पकड़वो इम चिन्तवी ने उ० धायो पकडवा से० ते तले देवता आ० आकाशें उ० उड्यो नासी गयो त० तिवारे पछे ख० थांभो आ० ग्रह्यो झाली ने म० मोटे २ स० शब्दे करीनें को० कोलाहल शब्द कीधो त० तिवारे पछे सा० ते भ० भद्रा सार्थवाही त० ते कोलाहल श० शब्द सो० सांभली ने नि०

हियामें विचारी नें जे० जिहां चूलणी पिया ते० तिहां उ० आवी आवी नें चू० चूलणी पिता स० श्रावक ने ए० इम० व० बोली कि० किम पु० हे पुत्र ! तु० तुम्हे मोटे २ स० शब्द करी नें को० कोलाहल शब्द कीधो त० तिवारे पछे से० ते चूलणी पिया अ० माता भ० भद्रा सार्थवाही प्रते इम व० बोल्यो ए० इम ख० निश्चय करी नें अ० हे माता ! हूं न जाणू के० कोई पुरुष आ० कोपायमान थको ए० एक म० मोटो नी० नीलोत्पल कमल एहवो अ० खड्ग ते तरवार ते ग्रही नें म० मुझ नें ए० इम व० बोल्यो ह० अरे अहो चुलणी पिया ! अ० अप्रार्थना प० प्रार्थणाहार मरण वांछणहार ज० यावत् व० जीव काया थी रहित थाइस त० तिवारे पछे अ० हूं ते० तेणे दे० देवता ए० इम वु०कहे थके. अ० निर्भय थको जा० यावत विचरवा लागो. त० तिवारे पछे ते देवत मुझने'. अ० निभय रहित जा० यावत् व० विचारतो देख्यो देखीनें म० मुझने दो० दूजी वार त० तीजी वार ए० इम व० बोल्यो ह० अरे अहो चु० चुलणी पिता ! त० तिमज जा० यावत् गा० गात्र शरीर नें अ० सींच्यो त० तिवारे पछे अ० हूं अ० अत्यन्त उज्वली आकरी. जा० यावत् अ० खमी वेदना ए० इम त० तिमज जा० यावत् क० लघु बेटो यावत् खमी त० ते वेदना अनत उजली त० तिवारे पछे से० ते देवता. म० मुझ नें च० चौथी वार ए० इम व० बोल्यो ह० अरे अहो चू० चूलणी पिता ! अ० अप्रार्थण रा प्रार्थणहार मरण वांछणहार जा० यावत् न० नहीं भांजे तो त० तिवारे पछे अ० हूं अ० आज जा० जन्म नी देणहारी त० तांहरी माता गु० गुरुणी समान तेहनें भद्रा सार्थवाही नें जा० यावत् जी० जीवत थकी वि० रहित करस्यू त० तिवारे पछे अ० हूं दे० देवता इ ए० इम वु० वचन कहे थके. अ० निर्भय थको जा० यावत् वि० विचार वा लागो त० तिवारे पछे से० ते दे० देवता दु० दूजी वार त० तीजी वार ए० इम वु० बोल्यो ह०।अरे अहो चूलणी पिता ! अ० आज व० जीवीतव्य थकी रहित थाइस। तिवारे पछे ते० देवता दूजी वार तीजी वार ए० इम वु० कहे थके. इ० एतावत रूप अ० एहवा अध्यवसाय मनका उपनां अ० आश्चर्यकारी इ० ए पु० पुरुष अ० अनार्य जा० यावत् पा० पापकर्म स० समाचरे छै। जे० जे भणी म० माहरो जे० ज्येष्ठ पुत्र सा० पोताना घर थकी त० तिमज क० लघु पुत्र नें जाव० आण ने यावत् आ० सींच्यो. तु० तूने पिण इ० वांच्छे छै सा० पोताना घर थकी णी० आणी आणी नें म० माहेर आ० आगले घा० हणस्यै त० ते भणी से० श्रेय कल्याण नों कारण ख० निश्चय करी नें म० मुझ ने ए० ए पुरुष. गि० झालवो ति० इम विचारी नें उ० उठी नें हू धायो से० ते देवता आ० आकाश नें विषे उ० उडी गयो म० म्हारे हाथ ख० खभो आयो पकड़ी नें म० मोटे २ शब्दे करी ने को० कोलाहल शब्द कीधो त० तिवारे पछे सा० भद्रा सार्थवाही चु० चुलणी पियानें ए० इम व० बोली. नो० नहीं ख० निश्चय करी नें ए० केई एक पुरुष त० ताहरो वडो बेटो जा० यावत् लघु बेटो सा० पोताना घर थकी णी० आणयो आणी ने त० तांहरे आगल. वा० मारया ए० ए कोई पुरुष त० तुझ ने उपसर्ग करी नें. ए० एहवे रूपे. तु० तुझ नें दर्शन करी ने दिख्याड्यो चलाय गयो. त० तेणे कारणे. तु० तुम ना हिवडां भांग्यो व्रत, भांग्यो नियम, भांग्यो पोषो, पोषो व्रतादिक भांगो थको वि० हू

विचरे छै. त० ते माटे हे पुत्र ! ए प्रत्यक्ष स्थानक. आ० आलोवो. जा० यावत्. पा० प्रायश्चित्त अंगीकार करो. त० तिवारे पछे. से० ते० चू० चूलणी पिता स० श्रावक. अ० माता. भद्रा नामे सार्थ वाही नों वचन. त० सत्य कीधो. ए० पूर्वोक्त अर्थ सांचो. वि० विनय सहित. प० सांभल्यो सामली नें. त० ते. ठा० स्थानक नें. आ० आलोयो. जा० यावत्. प० प्रायश्चित्त अंगीकार कियो ।

अथ अठे पिण कह्यो—चुलणी पिया श्रावक रा मुहड़ा आगे देवता तीनं पुत्रां ना शूला किया पिण त्याने बचाया नहीं. माता ने बचावा. उठ्यों ते पोषा, नियम. व्रत. भांग्यो कह्यो। तो उंदरादिक ने साधु किम बचावे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २८ बोल सम्पूर्ण ।

तथा साधु ने नावा में पाणी आवतो देखी ने बतावणो नहीं। ते पाठ लिखिये छै ।

से भिक्खू वा (२) णावाए उत्तिंगेणं उदयं आसवमाणं पेहाए, उवरूवरिंणावं कज्जलावेमाणं पेहाए णो परं उव संकमित्तु एवं बूया आउंसतो गाहावइ एयं ते णावाए, उदयं उत्तिंगेणं आसवति उवरु वरिंवा णावाकज्जलावेति एतप्पगारं मणंवा वायं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा अप्पुस्सुए अबहिलेसे एगंति गएणं अप्पाणं विपोसेज्ज समाहीए. । तओ संजयामेव णावा संतारिमे उदए आहारियं रियेज्जा.

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० ३ उ० १)

से० साधु. साध्वी. णा० नावानें विषे. उ० छिद्र करी. उ० पाणी. आ० आश्रवतो आवतो. पे० देखी ने तथा उ० उपरे घणो पाणी सू नावा भराती. पे० देखी नें. णो० नहीं प० गृहस्थ नें. तेहने समीपे आवी. ए० एहवो. बु० कहे. आ० अहो आयुषवन्त गृहस्थ ! ए० ए,

ते तांहरी. ग्गा० नांवाने विषे. उ० उदक. उ० छिद्रे करी. श्रा० आवे छै. उ० उपरे २ घणो २ आवते. ग्गा० नावा. क० भराई छै. ए० ए तथा प्रकार ए भाव सहित. म० मन तथा वा० वचन एहवा. गो० नहीं. पु० आगल करी. वि० विहरे नहीं. एतावता मन मांहि एहवो भाव न चिन्तवै. जो ए गृहस्थ नें पाणी भराती नावा कहूं अथवा वचने करी कहे नहीं जो ए नावा तांहरी पाणी इं भरिये छै. एहवो न कहे. किन्तु. अ० अविमनस्क एतले स्यूं भाव शरीर उपकरण ने विषे ममता अण करतो. तथा अ० सयम थकी जेहनी लेश्या बाहिर नथी निकलती, एतावता संयम में वर्त्ते. एकान्त गत रागद्वेष रहित. आ० आत्मा करवी इण परे. समाधि सहित. त० तिवारे, साधु. ग्गा० नावा नें विषे रह्यो थको शुभ अनुष्ठान नें विषे प्रवर्त्ते ।

अथ अठे कह्यो—जे पाणी नावा में आवे घणा मनुष्य नावा में डूबतां देखे तो पिण साधु नें मन वचन करी पिण बतावणो नहीं। जे असंयती रो जीवणो वांछयां धर्म हुवे तो नावा में पाणी आवतो देखी साधु क्यों न बतावे। केतला एक कहै—जे लाय लाग्यां ते घर रा किंमाड़ उगाडणा तथा गाड़ा हेठे बालक आवे तो साधु नें उठाय लेणो, इम कहे। तेहनो उत्तर—जो लाय लाग्यां ढाढा बाहिरे काढणा तो नावा में पाणी आवे ते क्यूं न बतावणो। इहां तो श्री वीतराग देव चौड़े बर्ज्यो छै। जे पाणी में डूबतो देखी न बचावणो। तो अग्नि थकी किम बचावणो। इम असंयती रो जीवणो वांछयां धर्म हुवे, तो नमी ऋषि नगरी बलती देखी नें साहमो क्यूं न जोयो। तथा समुद्र पाली चोर नें मारतो देखी क्यूं न छोड़ायो। तथा १०० श्रावकां रो पेट दूखे साधु हाथ फेरे तो सौ १०० बचे। तो हाथ क्यूं न फेरे, तथा लटां गजायां कातरादिक ढांढा रा पग हेठे मरता देखी साधु क्यूं न बचावे। जो मिनकी ने नशाय उंदरा नें बचावे तो सौ १०० श्रावकां ने तथा लटां गजायां आदि नें क्यूं न बचावे. तथा दशवैकालिक अ० ७ गा० ५१ कह्यो. ए जीव नों उपद्रव मिटे इसी वांछा पिण न करवी. तो उंदरादिक नों उपद्रव किम मेटणो। तथा दशवैकालिक अ० ७ गा० ५० कह्यो देवता मनुष्य तिर्यञ्च माहो माही लड़े तो हार जीत वांछणी नथी। तो मिनकी री हार उंदरानी जीत किम वांछणी। वली किम हार जीत तेहनी हाथां सूं करणी। तथा केई कहे—पक्षी माला (घोंसला) थी साधु रे कनें आय पड्यो तो तेहनें बचावण नें पाछो माला में साधु नें मेलणो, इम कहे तेहनो उत्तर—जो पक्षी ने बचावणो तो तपस्वी श्रावक साधु रे स्थानक कायोत्सर्ग (ध्यान) में तांगी (खूंगी) थी हेठो पड्यो गावड़ी (गर्दन) भांगती देखी साधु ते श्रावक नें बैठो क्यों

न करें। तथा सौ १०८ श्रावकां रे पेट ऊपर हाथ फेरी क्यूं न बचावे। पक्षी उंदरादिक असंयती ने बचावणा तो श्रावकां नें क्यूं न बचावणा। जो असंयम जीवितव्य वांछयां धर्म हुवे तो साधु ने ओहीज उपाय सीखणो। डाकण साकण भूतादिक काढणा सर्पादिक ना ज़हर उतारणा। मंत्रादिक सीखणा इत्यादिक अनेक सावद्य कार्य करणा। त्यांरे लेखे पिण ए धर्म नहीं ते भणी साधु ए सर्व कार्य न करे। निशीथ उ० १३ गृहस्थ नी रक्षा निमित्ते भूती कर्म कियां प्रायश्चित कह्यो छै। ते भणी असंयती रो जीवणो वांछयां धर्म नहीं। ठाम २ सूत्र में असंयम जीवितव्य वांछणो वर्ज्यो छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २९ बोल सम्पूर्ण।

केतला एक कहे छै, अनुकम्पा सावद्य-निरवद्य किहां कही छै। तथा अनुकम्पा कियां प्रायश्चित किहां कह्यो छै। ते ऊपर सूत्र न्याय कहे छै।

जे भिक्खू * कोलुण पडियाए अण्णयरिंयं तस पाण जायं तण फासएणवा मुंजपासएणवा कट्ठपासएणवा चम्मपासएणवा. वेत्तपासएणवा. रज्जुपासएणवा. सुत्तपासएणवा. बंधइ बंधतंवा साइज्जइ. ॥ १ ॥

जे भिक्खू बंधेल्लयंवा मुयइ मुयंतंवा साइज्जइ ॥ २ ॥

(निशीथ उ० १२ बो० १—२)

ज० जे कोई. भि० साधु साध्वी. को० अनुकम्पा. प० निमित्ते. अ० अनेरोई. त० त्रस प्राणि जाति नें इन्द्रियादिक ने. त० डाभादिक नी डोरी करी. क० लकडादिक नी डोरी करी.

* कई एक अज्ञानी पुरुष अर्थ के मर्मको न समझते हुए इस "कोलुण" शब्द का अर्थ "दीन भाव" करते हैं। उन दिवान्ध पुरुषों के अभिज्ञान के लिये "कोलुण" शब्दका "अनुकम्पा" अर्थ बतलानेवाली श्री "जिनदास" गणिकृत "लघु चूर्णी" लिखी जाती है। "भिक्खू पुव्व भणिउ कोलूणति-कालुण्य अनुकम्पा प्रतिज्ञया इत्यर्थः। त्रसन्तीति त्रसाः ते च तेजोवायु द्वीन्द्रियादयश्च प्राणिनस्त्रसाः। एत्थ तेओ वाऊहिं णाहिकारो जाइ गहणओ विसिट्ठ गोजाई" इति। "संशोधक"

मु० मुंज नी डोरी करी. क० लकड़ादिक नी डोरी करी. च० चमड़ेरी डोरी करी नें. वे० वेतनी छालनी डोरी करी. र० रासडी नें पासे करी. सू० सूत नें पासे करी. एतले पासे करी नें. व बांधे. व० बांधता ने. सा० अनुमोदे. जे० जे कोई. भि० साधु साध्वी. व० एतले पासे करी बांध्या त्रस जीव ने. मु० मूके. मु० मूकता नें अनुमोदे । तो चौमासी प्रायश्चित्त

अथ इहाँ कह्यो "कोलुण पडियाए" कहितां अनुकम्पा निमित्ते त्रस जीव नें वांधे वांधता नें अनुमोदे भलो जाणे तो चौमासी दंड कह्यो। अनें बांध्या जीव ने छोड़े छोड़तां ने अनुमोदे भलो जाणे तो पिण चौमासी दंड कह्यो। बांधे छोडे तिण नें सरीखो प्रायश्चित कह्यो छै। अनें बाँध्या जीव छोड़ता नें भलो जाण्यां हूं चौमासी प्रायश्चित आवे, तो जे पुण्य कहे—तिण भलो जाण्यो के न जाण्यो। ए तो साम्प्रत आज्ञा बाहिर ली सावद्य अनुकम्पा छै। तिण सूं प्रायश्चित्त कह्यो छै। ए साधु अनुकम्पा करे तो दंड कह्यो। अनें कोई गृहस्थ करतो हुवे. तिण नें साधु अनुमोदे भलो जाणे तो पिण दंड आवे छै। अने निरवद्य अनुकम्पा रो तो दंड आवे नहीं। जे गृहस्थ सामायक पोषा करे. हिंसा झूंठ चोरी परिग्रह रा त्याग करे, ए निरवद्य कार्य छै। एहनी साधु अनुमोदना करे छै। आज्ञा पिण देवे छै। अनें जीवां ने बांधे छोड़े ते अनुकम्पा सावद्य छै। तिण सूं साधु ने अनुमोद्यां दंड आवे छै। जेतला २ निरवद्य कार्य, तिण री अनुमोदना कियां धर्म छै पर दंड नहीं। अने जेतला २ सावद्य कार्य छै तेहनी अनुमोदना कियां दंड छै पिण धर्म नहीं। ते माटे असंयती रो जीवणो वांछे ते सावद्य अनुकम्पा छै. तिण में धर्म नही। इहां केतला एक अभिग्रहिक मिथ्यात्व ना धणी अयुक्ति लगावी इम कहे। ए तो त्रस जीव नें साधु वाँधे तथा छोड़े तो दंड। अनें साधु वांधतो छोड़तो हुवे तिण नें अनुमोद्यां दंड आवे। पिण कोई गृहस्थ वंधन छोड़तो हुवे तिण ने अनुमोद्यां दंड नहीं. तिण में तो धर्म छै इम कहे। तेहनो उत्तर—ए तो त्रस जीव बांध्यां तथा छोड्यां साधु नें तो पहिलां इज दंड कह्यो। ते माटे साधु तो पोते बाधे तथा छोड़े इज नहीं। अनें जे त्रस जीव नें बांधे छोडे ते साधु नहीं। वीतराग नी आज्ञा लोपी वंधण छोड़े तिण नें साधु न कहिणो। ते असाधु छै, गृहस्थ तुल्य छे। अनें गृहस्थ बंध्या जीव नें छोडे तेहनें अनुमोद्यां दंड छै। अनें जे कहे साधु वंधण छोड़े तिण नें अनुमोदणो नही, अनें गृहस्थ छोडे तो अनुमोदणो, इम कहे तिण रे लेखे घणा बोल इमहिज कहिणा पड़सी तिण वास्ते १२ उद्देश्ये इज इम कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

जे भिक्खू अभिक्खणं २ पच्चक्खाणं भंजइ भंजंतंवा साइज्जइ ॥ ३ ॥ जे भिक्खू परित्तकाय संजुत्तं आहारं आहारेइ आहारंतं वा साइज्जइ ॥ ४ ॥

(निशीथ १२ उ० ३-४ बोल)

जे० जे कोई साधु साध्वी. अ० वारवार. प० नौकारसीयादिक पचखाण नें. भं० भांगे भं० भांगता नें. सा० अनुमोदे ३, जे० जे कोई साधु साध्वी. प० प्रत्येक वनस्पतिकाय. सं० संयुक्त. अ० अशनादिक ४ आहार. आ० आहारे. आ० आहारतानें. सा० अनुमोदे। तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त.

अथ अठे कह्यो। जे साधु पचखाण भांगे तो दंड अनें पचखाण भांगता नें अनुमोदे तो दंड कह्यो। तो तिणरे लेखे साधु पचखाण भांगतो हुवे तिण नें अनुमोदनों नहीं। अनें गृहस्थ पचखाण भांगतो हुवे तिण नें अनुमोद्यां दंड नहीं कहिणो। वली कह्यो प्रत्येक वनस्पति संयुक्त आहार भोगवे भोगवतां नें अनुमोदे तो दंड-तो तिणरे लेखे प्रत्येक वनस्पति संयुक्त आहार साधु करतो हुवे तिण नें अनुमोद्यां दंड-अनें गृहस्थ ते हीज आहार करे तिण नें अनुमोद्यां दंड नहीं। जो गृहस्थ त्रस जीव बांध्या जीव छोड़े तिण नें अनुमोद्यां धर्म कहे, तो तिणरे लेखे गृहस्थ पचखाण भांगे ते पिण अनुमोद्यां धर्म कहिणो। वली गृहस्थ प्रत्येक वनस्पति संयुक्त आहार करे ते पिण अनुमोद्यां धर्म कहिणो। इण लेखे "निशीथ" में एहवा अनेक पाठ कह्या छै। ते मूलो भोगवता नें अनुमोद्यां दंड. कुतूहल करता नें अनुमोद्यां दंड. इत्यादिक घणा सावद्य कार्य अनुमोद्यां दंड कह्यो। तो तिण रे लेखे ए सर्व सावद्य कार्य साधु करे तो अनुमोदनों नहीं। अनें गृहस्थ मूलो खाय कुतूहल करे अनें सावद्य कार्य गृहस्थ करे ते अनुमोद्यां तिण रे लेखे धर्म कहिणो। अनें जो गृहस्थ पचखाण भांगे ते अनुमोद्यां धर्म नहीं। वनस्पति संयुक्त आहार करे ते आहारे अनुमोद्यां धर्म नहीं तो गृहस्थ अनुकम्पा निमित्ते त्रस जीव नें छोड़े तिण नें पिण अनुमोद्यां धर्म नहीं कहिणो। ए तो सर्व बोल सरीखा छै। जो एक बोल में धर्म थापे तो सर्व बोलां में धर्म थापणो पड़े। ए तो वीतराग नों न्याय-मार्ग छै। सरल कपटाई रहित छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३० बोल सम्पूर्ण।

तथा वली केतला एक "कोलुण वड़ियाए" पाठ रो अर्थ विपरीत करे छे। ते कहे "कोलुण वड़िया" कहितां कुतूहल निमित्ते त्रस जीव नें बांधे छोड़े तो प्रायश्चित्त कह्यो। इम ऊंधो अर्थ करे ते शब्दार्थ ना अजाण छै। ए "कोलुण" शब्द नो अर्थ तो करुणा हुवे। पिण कुतूहल तो हुवे नहीं "कोउहल पड़ियाए" कह्यो हुवे तो "कुतूहल" हुवे। ते पाठ प्रते लिखिये छै।

जे भिक्खू कोऊहल वडियाए अण्णयरं तसपाण जातिं तण पासएणवा जाव सुत्त पासएणवा वंधति वंधंतंवा साइज्जइ ॥ १ ॥ जे भिक्खू कोऊहल वड़ियाए वंधेल्लयंवा मुयति मुयंतंवा साइज्जइ ॥ २ ॥

(निशीथ उ० १७ बो० १-२)

जे० जे कोई साधु साध्वी. को० कुतूहल नें निमित्ते. अनेरो कोईक त्रस प्राणी नी जाति नें. त० तृण नें. पा० पासे करी ने. जा० ज्यां लगे सूत्र ने पासे करी ने. व० बांधे. वं० बांधता नें अनुमोदे. तो प्रायश्चित्त आवे ॥१॥ जे छे कोई भ० साधु साध्वी. को० कुतूहल निमित्ते बांध्या नें मूके छोडे. मूकता नें अनुमोदे। तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त.

अथ अठे कह्यो—कुतूहल निमित्ते त्रस जीव ने बांधे बांधता नें अनुमोदे तो दंड—छोडे छोड़ता नें अनुमोदे तो दंड कह्यो। इहां "कोऊहल" कहितां कुतूहल कह्यो. पिण "कोलुण" पाठ नहीं। अनें १२ में उद्देश्ये "कोलुण" ते करुणा अनुकम्पा कही। पिण कोऊहल पाठ नहीं। ए बिहूं पाठां में घणो फेर छै, ते विचारि जोईजो। जिम सत्तरह १७ में उद्देश्ये कुतूहल निमित्ते त्रस जीवां ने बांधे छोडे बाधतां छोड़तां नें अनुमोद्यां प्रायश्चित्त कह्यो। तिम बारमें १२ उद्देश्ये करुणा अनुकम्पा निमित्त बांध्यां छोड्यां दंड—अनें बांधता छोड़ता नें अनुमोद्यां दंड कह्यो। जे कहे अनुकम्पा निमित्त साधु त्रस जीव नें बांधे छोडे नहीं। अनें साधु बांधतो तथा छोड़तो हुवे तेहनें अनुमोदनो नहीं। पिण गृहस्थ अनुकम्पा निमित्त त्रस जीव बांधे तथा छोड़े तेहनें अनुमोद्यां प्रायश्चित्त नहीं ते गृहस्थ नें अनुमोद्यां धर्म छै। ते माटे गृहस्थ नें अनुमोदनो. इम कहे तो सतरमे १७ उद्देश्ये कह्यो। कुतूहल निमित्त साधु त्रस जीव नें बांधे छोड़े नहीं।

अनें साधु वांधतो छोड़तो हुवे तेहनें अनुमोदनों नहीं। पिण गृहस्थ कुतूहल निमित्त त्रस जीव नें वांधे छोडे तेहनें अनुमोद्यां तिण रे लेखे धर्म कहिणो। अनें कुतूहल निमित्त गृहस्थ त्रस छोडे ते अनुमोद्यां धर्म नहीं तो अनुकम्पा निमित्त गृहस्थ त्रस छोडे ते पिण अनुमोद्यां धर्म नहीं। ए तो दोनूं पाठ सरीखा छै। तिहां अनुकम्पा निमित्त अनें इहां कुतूहल निमित्त एतलो फेर छै। और एक सरीखो छै। कुतूहल निमित्त त्रस जीव बांध्यां छोड्यां पिण चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो। अनें अनुकम्पा निमित्त त्रस जीव बांध्यां छोड्यां पिण चौमासी दंड कह्यो छै। ए बिहूं बोल पाठ में कह्या छै। ते माटे बिहूं कार्य सावद्य छै। तिण में धर्म नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३१ बोल सम्पूर्ण।

तथा केतला एक कहे—"कोलुण पडियाए" कहितां आजीविका निमित्त त्रस जीव नें बांध्यां छोड्यां प्रायश्चित कह्यो। पिण "कोलुण" नाम अनुकम्पा रो नहीं, इम कहे ते पिण विरुद्ध छै। तेहनों उत्तर सूत्र करि कहे छै।

आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावति कुलेण सद्धिं संवसमाणस्स अलसए वा विसूइयावा छड्डीवाणं उब्बाहिज्जा अण्णतरे वा से दुक्खे रोयान्तके समुप्पज्जेज्जा असंजए कलुण वडियाए तं भिक्खुस्स गातं तेलेण वा घएणवा णवणीतेण वा वसाएवा अब्भंगेज्जवा मक्खिज्जवा सिणाणेणवा। कक्केण वा लोद्देणवा वण्णेणवा चुन्नेणवा पउमेणवा आघंसेज्जवा पघंसेज्जवा उव्वेलेज्जवा उवटेज्जवा सीयोदका वियडेणवा उसीणोदक वियडेणवा उच्छोलेज्जवापच्छो लेज्जवा पहोएज्जवा।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

आ० साधु ने. ए० आदान कर्म बधवा नो कारण ते साधु नें. गा० एहवा गृहस्थ ना. कु० कुटुम्बे करी सहित. स० वसता. भोजनादि क्रिया निःशंक थाइ संकतो भोजन करे तथा लघु नीत वडो नीत नी आवाधा सहित रहे. तिण कारणे. अ० (अलसक) हस्त पग नों स्तंभ ऊपजे डील सोजो हुइं. वि० (विषूचिका) ऊपजे. छ० छर्दि (उवक) इत्यादिक उ० व्याधि साधु ने पीडे तिवारे. अ० अनेरो. वलो. से० ते साधु. दु० दुःख. रो० ज्वरादिक. आ० आतक तत्काल प्राण नों हरणाहार शूलादिक. स० उपजे एहवा जे साधु नें शरीर रोग आतक उपजे तो जाणी. भ० असयती गृहस्थ. क० करुणा. अनुकम्पा. प० अर्थे. ते० ते. भि० साधु नो गात्र शरीर. ते० तैले करी घ० घृते करी. ण० माखणे करी. व० वसाइं करी. अ० मर्दन करे. सि० सुगंध द्रव्य समुदाय करी करे. क० पीठी. लो० लोध. वर्ण. चू० चूर्ण. प० पद्म करी अ० घसे. प० विशेष घसे. उ० उतारे. उ० विशेष शुद्ध करे. सो० ठण्ढा पाणी अचित्त करी. गरम पाणी अचित्त करी. उ० धोवे. व० वारम्वार धोवे. प० साफ करे।

अथ अठे कह्यो—साधु अकल्पनीक जगां रह्यां गृहस्थ साधु नी अनुकम्पा करुणा अर्थे साधु नें तैलादिक करी मर्दन करे। ए दोष उपजे ते माटे एहवे उपाश्रये रहिवो नहीं। इहां "कलुण वडियाए" कहितां करुणा अनुकम्पा रे अर्थे इम अर्थ कियो। पिण आजीविका निमित्ते इम न कह्यो। तिम निशीथ उ० १२ "कोलुण पडियाए" ते करुणा अनुकम्पा. अर्थे इम अर्थ छै। अनें जे कोलुण शब्द रो अर्थ अनेक कुयुक्ति लगावी नें विपरीत करे पिण कोलुण रो अर्थ अनुकम्पा न करे। तो इहां पिण कलुण पडियाए कह्यो ते साधु री करुणा अनुकम्पा रे अर्थे तिण लेखे नहीं कहिवो। अनें जो इहां कलुण पडियाए रो अर्थ करुणा अनुकम्पा थापसी तो तेहनें कोलुण पड़ियाए निशीथ में कह्यो तिण रो अर्थ पिण करुणा अनुकम्पा कहिणो पड़सी। अनें इहां तो प्रत्यक्ष करुणा अनुकम्पा करी साधु ने शरीरे तैलादि मर्दन करे. ते माटे करुणा नाम अनुकम्पा नों कहीजे। पिण आजीविका रो नहीं। तिवारे कोई कहे "कलुण पडियाए" आचारांग में कह्यो। तेहनों अर्थ तो अनुकम्पा करुणा हुवे। पिण निशीथ में "कोलुण पडियाए" कह्यो—तेहनों अर्थ अनुकम्पा करुणा किम होवे। इम कहे तेहनो उत्तर—ए कोलुण रो अनें कलुण रो अर्थ एक करुणा इज छै। पिण अर्थ में फेर नहीं। जिम निशीथ उ० १२ "कोलुण पड़ियाए" रो चूर्णी में अनुकम्पा करुणा इज अर्थ कियो छै। अनें आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १ "कलुण पडियाए" रो अर्थ टीका में करुणा अनुकम्पा इज कियो छै। ए बिहूं पाठ नों अर्थ ए करुणा

अनुकम्पाइज छै, सरीखो छै' पिण अनेरो नहीं। तिवारे कोई कहे ए करुणा २ तो सर्व खोटी छै। जिम कलुण रस कह्यो ते सावद्य छै तिम करुणा पिण सावद्य छै। तेहनों उत्तर—साधु ने शरीरे मर्दन करे तिहाँ पिण "कलुण पड़ियाए" कह्यो तो ए करुणा ने स्यूं कहीजे। तिहां टीकाकार पिण इम कह्यो। "कारुण्ये न भक्तयावा" करुणा ने भावे करी तथा भक्ति करी इम कह्यो। तो ए करुणा पिण आज्ञा बारे तथा ए भक्ति पिण आज्ञा बाहिरे छै। तेहनी साधु आज्ञा न देवे ते माटे। अनें करुणा नें एकान्त खोटो कहे तिण रे लेखे साधु नें शरीरे साता करे तेह करुणा इं करी तिण में पिण धर्म न कहिणो। अनें जे धर्म कहे तो तिण रे लेखे इज "कलुण पड़ियाए" पाठ कह्यो। ते कलुण रस न हुवे। करुणा नाम अनुकम्पा नो थयो। तथा प्रश्नव्याकरण अ० १ हिंसा नें "निकलुणो" ते करुणा रहित कही छै। जे करुणा नें एकान्त खोटो इज कहे तो हिंसा नें करुणा रहित क्यूं कही। अनें जिणऋषि रेणा देवी रे साहमो जोयो ते पिण रेणा देवी नी करुणाइं करी। ए करुणा सावद्य छै। ए करुणा अनुकम्पा सावद्य निरवद्य जुदी छै। ते माटे तस जीव नी करुणा अनुकम्पा करी साधु बंधन बांधे छोडे तथा बांधता छोड़ता ने अनुमोद्यां प्रायश्चित्त कह्यो। ते पिण अनुकम्पा सावद्य छै। ते माटे तेहनों प्रायश्चित्त कह्यो छै। निरवद्य नों तो प्रायश्चित्त आवे नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३२ बोल सम्पूर्ण।

तथा वली अनुकम्पा तो घणे ठिकाणे कही छै। जिहां वीतराग देव आज्ञा देवे ते निरवद्य छै। अनें आज्ञा न देवे ते सावद्य छै। ते अनुकम्पा ओलखवा नें सूत्र पाठ कहे छै।

ततेणं से हरिण गमेसी देवो सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठयाए विणिहाय मावणे दारए करयल संपुल

गिगहइ २ त्ता तव अंतियं साहरित्ति तव अंतिए साहरित्ता । तं समयं चणं तुम्हं पि नवगहं मासाणं सुकुमालं दारए पसवसि जे वियणं देवाणु प्पियाणं तव पुत्ता ते विय तव अंतियातो करयल पुडे गिगहइ २ त्ता सुलसाए गाहावइणीए अंतिए साहरति ।

(अन्तगड-तृतीय वर्ग अष्टमाध्ययन)

त० तिवारे पछे. से० ते. हरिण गमेषी देवता. सु० सुलसा गाथापतिणीनी. अ० अनुकम्पा नें दया नें अर्थे वि० मुआ बालक नें विषे गि० ग्रहे ग्रही ने त० तांहरे अ० समीपे सा० मैले । त० तिवारे पछे. तु० तें नव मास पश्चात् सुकुमार पुत्र प्रसव्या. तांहरे समीप सूं तिण पुत्रां नें हरी नें करतल नें विषे ग्रहण करी ने गाथा पति नी सुलसारे कने मेल्या ।

अथ यहां कह्यो—सुलसानी अनुकम्पा नें अर्थे देवकी पासे सुलसानां मुआ बालक मेल्या । देवकी ना पुत्र सुलसा पासे मेल्या ए पिण अनुकम्पा कही ए अनुकम्पा आज्ञा माहे के बाहिरे सावद्य के निरवद्य छे । ए तो कार्य प्रत्यक्ष आज्ञा बाहिरे सावद्य छै । ते कार्य नी देवता ना मन में उपनी जे ए दु खिनी छै तो एहनों ए कार्य करी दुःख मेटूं । ए परिणाम रूप अनुकम्पा पिण सावद्य छै । डाहा हुवै तो विचारि जोइजो ।

इति ३३ बोल सम्पूर्ण ।

तथा श्री कृष्ण जी डोकरानी अनुकम्पा कीधी ते पाठ लिखिये छै ।

तेणं से किगह वासुदेवे तस्स परिसस्स अनुकम्पणट्ठाए हत्थि खंध वर गते चेव एगं इट्टिं गिगहइ २ त्ता वहिया रयपहाओ अन्तो अणुप्प विसंति ॥ ७४ ॥

(अन्तगड़ वर्ग ३ अ० ८)

त० तिवारे पछे से० ते कि० कृष्ण वासुदेव त० ते पुरुष नी अ० अनुकम्पा आयी में ह० हाथी ना कंधा ऊपरज थकी ए० एक ईंट प्रते गि० ग्रहे ग्रही नी ब० बाहिरे र० रांज मार्ग सूं अ० घर नें विषे अ० प्रवेश कीधी (मूकी)

अथ इहां कृष्णजी डोकरानी अनुकम्पा करी हस्ति स्कंध बैठा ईंट उपाड़ी तिण रे घरे मूकी ए अनुकम्पा आज्ञा में के बाहिरे सावद्य छै के निरवद्य छै। डाह्या हुवे तो विचारि जोइज्यो ।

इति ३४ बोल सम्पूर्ण ।

तथा यक्षे हरिकेशी मुनि नी अनुकम्पा कीधी ते पाठ लिखिये छै ।

जक्खो तहिं तिंदुग रुक्खवासी,
अणुकंपओ तस्स महा मुणिस्स ।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं,
इमाइं वयणाइ मुदा हरित्था ॥ ८ ॥

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ८)

ज० यक्ष त० तेणे अवसर ति० तिन्दुक रु० वृक्षनू वासी अ० अनुकम्पा नू करणहार भगवन्त ते हरिकेशी महा मुनीश्वर ना प० प्रवेश करी शरीर नें विषे इ० ए. व० वचन बोल्यो.

अथ इहां हरिकेशी मुनि नी अनुकम्पा करी यक्षे विप्रां ने ताड्या ऊंधा पाड्या. ए अनुकम्पा सावद्य छै के निरवद्य छै। आज्ञा में छै के आज्ञा बाहिरे छै। ए तो प्रत्यक्ष आज्ञा बाहिरे छै। डाह्या हुवे तो विचारि जोइज्यो ।

इति ३५ बोल सम्पूर्ण ।

वली धारणी राणी गर्भ नी अनुकम्पा कीधी ते पाठ लिखिये छै ।

तएणं सा धारिणी देवी तंसि अकाल दोहलंसि विणियंसि सम्माणिय दोहला तस्स गब्भस्स अणुकम्पणट्ठाए. जयं चिट्ठइ जयं आसइ जयं सुवइ आहारं पियणं आहारे माणी-णाइतित्तं णाय कडुयं णाइ कसायं णाय अंबिलं णाइ महुरं जंतस्स गब्भस्स हियं मियं पत्थं तं देसेय कालेय आहारं आहारे माणी० ।

(ज्ञाता अ० १)

त० तिवारे सा० ते धा० धारणी देवी. त० तिण. अ० अकाल मेघ नों. दो० दोहल पूर्ण हुयां पछे. त० तिण. ग० गर्भ नी. अ० अनुकम्पा ने अर्थे. ज० यत्ना पूर्वक. चि० खड़ी हुवे. ज० यत्ना पूर्वक. आ० बैठे. ज० यत्ना पूर्वक सु० सुवे आ० आहार नें विषे. पियं आहार. णा० नही करे अति तीखो. अति कडु. अति कषाय. अति अम्बट. अति मधुर. ज० जे. त० ते ग० गर्भ नें. हि० हितकारी पथ्य. दे० देश कालानुसार थाय. अ० ते आहार करे ।

अथ इहां धारणी राणी गर्भ नी अनुकम्पा करी मन गमतां आहार जीम्या ए अनुकम्पा सावद्य छै के निरवद्य छै । ए तो प्रत्यक्ष आज्ञा वाहिरे छै । डाहा हुवें तो विचारि जोइजो ।

इति ३६ बोल सम्पूर्ण ।

वली अभयकुमार नीं अनुकम्पा करी देवता मेह वरसायो ते पाठ लिखिये छै—

अभयकुमार मणुकंपमाणो देवो पुव्वभव जणिय णेह पिय बहुमाण जाय सोयंतओ० ।

(ज्ञाता अ० १)

अ० अभयकुमार प्रते अनुकम्पा करतो जे तेह मित्र नें त्रिण उपवास रूप कष्ट छै एहवो चिन्तवतो थको पु० पूर्व भव (जन्म) रो ज० उत्पन्न हुवो थको. णे० स्नेह तथा पि० प्रीति बहुमान वालो देवता. जा० गयो छै शोक जेहनों

अथ इहां अभयकुमार नी अनुकम्पा करी देवता मेह वरसायो ए पिण अनुकम्पा कही. ते सावद्य छै के निरवद्य छै। ए तो प्रत्यक्ष आज्ञा बाहिरे छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३७ बोल सम्पूर्ण।

तथा जिनऋषि रयणा देवी री अनुकम्पा कीधी ते पाठ लिखिये छै।

ततेणं जिण रक्खिआ समुप्पएण कलुण भावं मच्चु गलत्थलणो ल्लिय मइं अवयक्ख तं तहेव जक्खेओ से लए ओहिणा जाणिउण सणियं २ उव्विहइ २ णियग पिट्ठाहि विगयसड्ढे ॥४१॥

(ज्ञाता अ० ६)

त० तिवारे जि० जिण ऋषि नें. स० उपनो करुणा भाव ते देवी ऊपर ह० मरण ना मुख में पड्यो थको. णे० लोलुपी थई छै मति जेहनी. एहवा जिन ऋषि नें देखतो थको त० ते. ज० यक्ष से० सेलक. ओ० अवधि ज्ञाने करी जा० जाणी नें स० धीरे २ उ० नीचे उतारयो णि० आपनी पीठ सेती वि० गत श्रद्धावन्त एहवा ने

अथ इहां रयणा देवी री अनुकम्पा करी जिनऋषि साहमो जोयो ए पिण अनुकम्पा कही ए अनुकम्पा मोह कर्म रा उदय थी कै मोह कर्म रा क्षयोपशम थी। ए अनुकम्पा सावद्य छै के निरवद्य छे। आज्ञा में छै के आज्ञा बाहिरे छै। विवेक लोचने करी विचारि जोइजो। ए पाछे कही ते अनुकम्पा आज्ञा बाहिरे छै। मोह कर्म रा उदय थी हियो कम्पायमान हुवे ते माटे ए अनुकम्पा सावद्य छै। तिवारे कोई कहे—रयणा देवी री करुणा करी जिन ऋषि साहमों जोयो ते तो

मोह छै। पिण अनुकम्पा नहीं तेहनो उत्तर अनुकम्पा रा अनेक नाम छै। अनुकम्पा, करुणा, दया, कृपा, कोलुण, कलुण, इत्यादिक। ते सावद्य निरवद्य बेहूं छै। अने रयणा देवी री करुणा जिन ऋषि कीधी तिण ने मोह कहे तो ए पाछे कृष्णादिक अनुकम्पा कीधी ते पिण मोह छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३८ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली कोई कहे करुणा नाम तो मोह नो छै अनें अनुकम्पा नाम धर्म नो छै। पिण करुणा नाम दया रों तथा धर्म नों नहीं। तत्रोत्तरं—प्रश्नव्याकरण प्रथम आश्रव द्वारे हिंसा नें ओलखाई तिहां इम कह्यो। ए पहिलो आश्रव द्वार केहवो छै। तेहनो वर्णन सूत्र द्वारा लिखिये छै।

पाण वहो नाम एस निच्चं जिणेहिं भणिओ पावो चंडो रुद्दो खुद्दो साहसिओ अणारिओ निग्घिणो णिस्संसो महब्भओ पइब्भओ अतिभओ बीहणओ तासणओ अणज्जो उव्वेयणउय णिरयवयक्खो निद्धम्मो णिप्पिवासो णिक्कलुणो णिरय वासगमण निधणो मोह मह भय पयट्टओ मरण वेमणमो पढमं अहम्मदारं।

(प्रश्नव्याकरण १ अ०)

पा० हिंसा ना नाम ए प्रत्यक्ष जदपि जे आगल पाप चंडी आदिक स्वरूप कहिस्यें ते छांडी निवर्त्ते नहीं। तिण कारण. नि० सदा कह्यो. जि० तथा श्री वीतराग तेणे. भ० भाख्यो कह्यो. पा० पाप प्रकृति ना वध नों कारण. चं० कषाय करी क्रूर प्राणघात करे रु० रौद्र कह्यो. पा० पाप प्रकृति ना वध नों कारण. खु० पदद्रोहक तथा अधम जे भणी इणि मार्ग प्रवर्त्ते. सा० साहसात् करी सर्वत्र प्रवर्त्यो प्रसिद्ध. खु० पदद्रोहक तथा अधम जे भणी इणि मार्ग प्रवर्त्ते. सा० साहसात् करी प्रवर्त्ते. अ० म्लेच्छादिक तेहनों प्रवर्त्तवो छै. नि० निर्घृण. नृशंस (क्रूर) म० महा भयकारी. प० अन्य भयकर्त्ता. अ० अति भय (मरणान्त) कर्त्ता. बी० डरावणा. ता० त्रासकारी. अ० अन्यायकारी. उ० उद्वेगकारी. णि० परलोकादि नी अपेक्षा रहित. नि० धर्म रहित. णि०

पिपासा स्नेह रहित. णि० दयारहित. णि० नरकावास नों कारण. मो० मोह महा भयकर्त्ता म० प्राण त्याग रूप दीनता कर्त्ता प० प्रथम. अ० अधर्म द्वार छै।

अथ अठे कह्यो (निक्कलुणो) कहितां करुणा दया रहित ए प्रथम आश्रव द्वार हिंसा छै। इहां पिण हिंसा नें करुणा रहित कही ते करुणा नाम दया नो छै। अने जे करुणा नाम एकान्त मोह रो थापे ते मिले नही। जिम इहां ए करुणा पाठ कह्यो। ते निरवद्य करुणा छै। अनें रेणा देवी नी करुणा कही ते करुणा छै पिण सावद्य छै। तिम अनुकम्पा पिण सावद्य निरवद्य छै। ए पाछे :कृष्णादिक कीधी ते अनुकम्पा सावद्य छै। अनें नेमिनाथ जी जीवां री करुणा कीधी तथा हाथी सुसलारी अनुकम्पा कीधी ते निरवद्य छै। जिम करुणा सावद्य निरवद्य छै तिम अनुकम्पा पिण सावद्य निरवद्य छै। नेमिनाथ जी जीवां ने देखी पाछा फिरया तिहां पिण एहवो पाठ छै। "साणुक्कोसे जिवेहिउ" साणुकोस कहितां करुणा सहित जिएहि. कहितां जीवां नें विषे उ कहतां पाद पूरणे इहां पिण समचे करुणा कही पिण इम न कह्यो ए निरवद्य करुणा छै। अनें रेणा देवी री पिण करुणा कही पिण इम न कह्यो ए सावद्य करुणा छै। कर्त्तव्य लारे करुणा जाणिये। जे सावद्य कर्त्तव्य करे ते ठिकाणे सावद्य करुणा. अनें निरवद्य कर्त्तव्य रे ठिकाणे निरवद्य करुणा। तिम अनुकम्पा पिण सावद्य निरवद्य कर्त्तव्य लारे जाणवी। जिम कृष्ण हरिणगमेसी. धारणी राणी. तथा देवता. सावद्य कर्त्तव्य कीधा तेहनी मन में विचारी हियो कम्पायमान थयो ते माटे अनुकम्पा सावद्य छै। अनें हाथी सुसलारी अनुकम्पा करी ऊपर पग दियो नहीं ते निरवद्य कर्त्तव्य छै। तिण सूं ते अनुकम्पा पिण निरवद्य छै। जे करुणा सावद्य निरवद्य मानें त्यानें अनुकम्पा पिण सावद्य निरवद्य मानणी पड़सी। अनें करुणा तो सावद्य निरवद्य मानें अनें अनुकम्पा एकली निरवद्य मानें। ते अन्यायवादी जाणवा। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३९ बोल सम्पूर्ण।

तथा रयणा देवी, करुणा सहित जिन ऋषि ने हण्यों। एहवो कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

तएणं सा रयण दीव देवया णिस्संसा कलुणं जिण रक्खियं सकलुसं सेलग पिट्ठाहि उवयंतं दासे, मउ सित्ति जंपमाणी अप्पत्तं सागर सलिलं गिण्हिय वाहाहिं आरसंतं उड्ढं उव्विहहिति अंबर तले उवय माणं च मडलग्गेण पडिच्छित्ता निलुप्पल गवल असिय प्पगासेणं असिवरेणं खंडा-खंडिं करेंति २ सा तत्थ विविलवमाणं तस्सय सरिसवहियस्स घेत्तूणं अंगमंगाति सरुहि राई उक्खित्तवलं चउद्दिसिं करेंति सा पंजली पहट्ठा ॥४२॥

(ज्ञाता सूत्र अ० ६)

त० तिवारे सा० ते र० रत्न द्वीप नी देवी, णि० सूग रहित दया रहित परिणामे करी करुणा सहित जिन ऋषि प्रते, स० पाप सहित देवी. से० सेलक यक्ष ना पूठ थकी. उ० ऊंचा थी देख्यो पड़ता नें. दा० रे दास अरे गोला ! म० मूवो पूहवो वचन बोलती थकी अ० समुद्र ना पाणी माहे अण पहुंचता नें गि० ग्रही नें बा० बाहु सूं झाली नें आ० आर डाट करतां ऊंचो उछाल्यो अ० आकाश ने विषे उ० पाछा आवता पड़ता नें त्रिशूल नें अग्रे करी प० झेली नें. नि० नीलोत्पलनी परे तीख्या अ० खड्गे करी ख० खंड २ करे करी नें ते० तेहना विलाप करता थका ना सरुधिर अंगोपांग ग्रही नें बलि नी परे च्यारु दिशा नें विषे उछाले ।

अथ अठे कह्यो रयणा देवी, करुणा सहित जिन ऋषि नें दया रहित परिणामें करी हण्यो । ते दया रहित परिणामे करी जिन ऋषि नें हण्यो । अनें रयणा देवी रे साहमो जिन ऋषि जोयो ते सावद्य करुणा छै । जिम करुणा सावद्य निरवद्य छै । तिम अनुकम्पा पिण सावद्य निरवद्य छै । केई पूछे-अनुकम्पा दोय किहां कही छै । तेहनें पूछणो । करुणा सावद्य निरवद्य किहां कही छै । ए तो करुणा कहो भावे अनुकम्पा कहो । जे मोहना उदय थीं हियो कंपावे ते सावद्य अनुकम्पा । अनें मोह रहित निरवद्य कर्त्तव्य में हियो कंपावे ते निरवद्य अनुकम्पा । इतरो कह्यां समझ न पड़े तो आज्ञा विचार लेवी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ४० बोल सम्पूर्ण ।

वली सूर्याभ नें नाटक पाड्यो तें पिण भक्ति कही छै. ते पाठ लिखिये छै।

तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं भत्ति पुव्वग गोयमा-इसमणाणं निग्गंथाणं दिव्वं दिव्विड्ढिं वत्तीसविहिं नट्टविहिं उवदंसित्तए। ततेणं समणे भगवं महावीरे सुरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे सुरियाभस्स देवस्स एयमट्ठं नो आढाए नो परिजाणइ तुसणीए संचिट्ठइ।

(राज प्रश्नेणी)

त० ते हु० वांछूं छूं. दे० हे देवानु प्रिय ! त० तुम्हारी भक्तिपूर्वक. गो० गोतमादिक स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ नें दि० दिव्य प्रधान दे० देवता नें ऋद्धि व० वत्तीस बन्धन नटनाटक विधि प्रते उ० देखवाडवो वांछू त० तिवारे स० श्रमण भगवन्त म० महावीर सु० सूर्याभ देवे ए० इम वु० कहे थके सु० सूर्याभ देवता ए० एहवा वचन प्रते नो० आदर नें दे नो० मन करनें भलो न जाणे. आज्ञा पिण न देवे अ० अणबोल्यां थकां रहे

अथ अठे सूर्याभ री नाटक रूप भक्ति कही। तेहनी भगवान् आज्ञा न दीधी। अनुमोदना पिण न कीधी। अनें;सूर्याभ वंदना रूप सेवा भक्ति कीधी। तिहां एहवो पाठ छै। "अब्भणुणाय मेयं सुरियाभा" एवं वन्दना रूप भक्ति री म्हारी आज्ञा छै। इम आज्ञा दीधी तो ए वन्दना रूप भक्ति निरवद्य छै ते माटे आज्ञा दीधी। अनें नाटक रूप भक्ति सावद्य छै। ते माटे आज्ञा न दीधी. अनुमोदना पिण न कीधी। जिम सावद्य निरवद्य भक्ति छै—तिम अनुकम्पा पिण सावद्य निरवद्य छै। कोई कहे सावद्य अनुकम्पा किहां कही छै तेहनें कहिणो, सावद्य भक्ति किहां कही छै। ए नाटक रूप भक्ति कही पिण इम न कह्यो—ए सावद्य भक्ति छै। पिण ए भक्ति आज्ञा बाहिरे छै। ते माटे जाणिये। तिम अनुकम्पा नीं पिण आज्ञा न देवे ते सावद्य जाणवी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४१ बोल सम्पूर्ण।

तथा वली यक्षें छात्रां (ब्राह्मण विद्यार्थियां) नें ऊंधा पाड्या ते पिण व्यावच कही छै। ते पाठ लिखिये छै।

पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च,
मणप्पदोसो नमे अत्थि कोइ।
जक्खाहु वेयावडियं करेंति,
तम्हा हु एए णिहया कुमारा॥ ३२॥

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ३२)

पु० यक्ष अलगो थयूं हिवे यति बोल्यो पूर्वं इं० हिवडां अ० अनागतकाले म० मनें करी प० प्रदोष नथी मे० म्हारे अ० छै को० कोई अल्पमात्र पिण ज० यक्ष हु० निश्चय वि० वेयावच पक्षपात क० करे छै त० ते मणी हु० निश्चयें ए० ए प्रत्यक्ष नि० निरंतर णि० हणीया कु० कुमार

अथ अठे हरिकुशी मुनि कह्यो—ए छात्रां ने हण्या ते यक्षे व्यावच कीधी छै। पर म्हारो दोष तीनु ही काल में न थी। इहां व्यावच कही ते सावद्य छै आज्ञा वाहिरे छै। अनें हरिकेशी आदि मुनि नें अशनादिक दानरूप जे व्यावच ते निरवद्य छै। तिम अनुकम्पा पिण सावद्य निरवद्य है। अनें जे कोई छात्रां ने ऊंधा पाड्या ए व्यावच में धर्म श्रद्धे, तिणरे लेखे सूर्याभ नाटक पाड्यो. ए पिण भक्ति कही छै ते भक्ति में पिण धर्म कहिणो। अनें ए सावद्य भक्ति में धर्म नहीं तो ए सावद्य व्यावच में पिण धर्म नहीं। कदाचित् कोई मतपक्षी थको सावद्य नाटक रूप भक्ति मे पिण धर्म कही देवे तेहनें कहिणो—ए नाटक में धर्म हुवे तो भगवान् आज्ञा क्यूं न दीधी। जिम जमाली विहार करण री आज्ञा मांगी। तिवारे भगवान् आज्ञा न दीधी। ते हज पाठ नाटक में कह्यो। ते माटे नाटक नी पिण आज्ञा न दीधी तिवारे कोई कहे ए नाटक में पाप हुवे तो भगवान् वर्ज्यो क्यूं नहीं। तिण ने कहिणो जमाली ने विहार करतां वर्ज्यो क्यूं नही। यदि कोई कहे निश्चय विहार करसी ज इसा भाव भगवान् देख लिया अनें निरर्थक वाणी भगवान् न बोले ते माटे न वर्ज्यो। तो सूर्याभ नें पिण नाटक पाड़तो निश्चय जाण्यो, ते भणी निरर्थक वचन भगवान् किम बोले। ते मांटे नाटक नी आज्ञा न दीधी ते

नाटक रूप वचन नें आदर न दियो अनें "नो परिजाणइ" कहितां मन में पिण भलो न जाण्यो। अनुमोदना पिण न कीधी। वली "मलयगिरि" कृत राय प्रश्नेणी री टीका में पिण "नो परिजाणाइ" ए पाठनों अर्थ भगवन्ते नाटक रूप वचन नी अनुमोदना पिण न कीधी इम कह्यो छै। ते टीका लिखिये छै।

"तएणं मित्यादि-ततः श्रमणो भगवान् महावीरः सूर्याभेन देवेन एव मुक्तः सन् सूर्याभस्य देवस्य एव मनन्तरोदित मर्थं नाद्रियते. न तदर्थ करणाया-दर परो भवति. ना पि परिजानाति. नानुमन्यते स्वतो वीत रागत्वात्. गौतमा-दीनां च नाट्य विधिः स्वाध्यायादि विघात कारित्वात्. केवलं तूष्णीको ऽवति-ष्ठते"

इहां टीका में पिण कह्यो—नाटक नी अनुमोदना न कीधी। जो ए भक्ति में धर्म हुवे तो भगवान् अनुमोदना क्यूं न कीधी। आज्ञा क्यूं न दीधी। पिण ए सावद्य भक्ति छै। ते माटे आज्ञा न दीधी अनें वन्दना रूप निरवद्य भक्ति नी आज्ञा दीधी छै। तिम अनुकम्पा पिण आज्ञा बाहिर छै ते सावद्य छै अनें आज्ञा माहि छै ते अनुकम्पा निरवद्य छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४२ बोल सम्पूर्ण।

वली केतला एक कहे—गोशाला ने भगवान् बचायो. ते अनुकम्पा कही छै ते माटे धर्म छै। तेहनों उत्तर—जो ए अनुकम्पा में धर्म छै तो अनुकम्पा तो घणे ठिकाणे कही छै। कृष्ण जी ईंट उपाड़ी डोकरा रे घरे मूंकी ए डोकरानी अनुकम्पा कही छै। (१) हरिण गमेषी देवता देवकी रा पुत्रा नें चोरी सुलसारे घरे मूक्या—ए पिण सुलसा री अनुकम्पा कही छै। (२) धारणी मनगमता अशनादिक खाधा ते गर्भ नी अनुकम्पा कही। (३) देवता अकाले मेह बरसायो ए अभयकुमार नी अनुकम्पा कही। (४) यक्षे विप्रां सूं वाद कियो तिहां हरि-केशी नी अनुकम्पा कही। (५) अनें भगवान् तेजु लब्धि फोड़ी गोशाला ने बचायो ते गोशाला नी अनुकम्पा कही छै। (६) जो ए पाछे कह्या ते अनु-

कम्पा ना कार्य सावद्य छै, तो ते तेजु लब्धि फोड़ी ते माटे ए अनुकम्पा पिण सावद्य छै। ए सर्व कार्य सावद्य छै ते माटे। ए कार्य नी मनमें उपनी हियो कम्पायमान हुयो ते माटे ए अनुकम्पा पिण सावद्य छै। इहाँ अनुकम्पा अनें कार्य संलग्न छै। जे कृष्णजी ईंट उपाड़ी ते अनुकम्पा ने अर्थे "अणुकम्पणट्ठयाए" एहवूं पाठ कह्यो. ते अनुकम्पा ने अर्थे ईंट उपाड़ी मूकी इम. ते माटे ए कार्य थी अनुकम्पा संलग्न छै। ए कार्य रूप अनुकम्पा सावद्य छै। इम हरिण गमेषी तथा धारणी अनुकम्पा कीधी तिहां पिण "अणुकम्पणट्ठयाए" पाठ कह्यो। ते माटे ते अनुकम्पा पिण सावद्य छै। जिम भगवती श० ७ उ० २ कह्यो। "जीवदव्वट्ठयाए सासए भावट्ठयाए असासए" जीव द्रव्यार्थे सासतो भावार्थे असासतो कह्यो। तो द्रव्य भाव जीव थी न्यारा नहीं। तिम कृष्ण आदि जे सावद्य कार्य किया ते तो अनुकम्पा अर्थे किया ते माटे ए कार्य थी अनुकम्पा न्यारी न गिणवी। ए कार्य सावद्य तिम अनुकम्पा पिण सावद्य छै। तिम भगवान् पिण अनुकम्पा ने अर्थे तेजू लब्धि फोड़ी. ते माटे ते अनुकम्पा पिण सावद्य छै। तेजू लब्धि फोड़वा री केवली री आज्ञा नहीं छै। ते भणी भगवन्त छद्मस्थ पणे तेजू लब्धि फोड़ी तिण में धर्म नहीं। वैक्रेयिक लब्धि, आहारिक लब्धि. तेजू लब्धि, जंघाचरण, विद्याचरण, पुलाक, इत्यादिक ए लब्धि फोड़वा नी तो सूत्र में वर्जी छै। गौतमादिक साधु रा गुण आया त्यां एहवो पाठ छै। "संखित्त विउल तेय लेस्से' संक्षेपी छै विस्तीर्ण तेजू लेश्या, इहां तेजू लेश्या संकोची ते गुण कह्यो। पिण तेजू लेश्या फोड़े ते गुण न कह्यो, तो भगवन्ते तेजू लेश्या फोड़ी गोशाला नें बचायो तिण में धर्म किम कहिये। तिवारे कोई कहे-भगवान् तो शीतल लेश्या मूकी पिण तेजू लेश्या न मूकी तेजू लेश्या तो तापस गोशाला ऊपर मूकी तिवारे भगवान् शीतल लेश्या फोड नें गोशाला ने बचायो। पिण तेजू लेश्या भगवान् फोडी नहीं इम कहे तेहनो उत्तर—जे शीतल लेश्या ने तेजू लेश्या न श्रद्धे ते तो सिद्धान्त रा अजाण छै। ए शीतल लेश्या तो तेजू नों इज भेद छै। जे तपस्वी मेली ते तो उष्ण तेजू लेश्या अनें भगवान् मेली ते शीतल तेजू लेश्या एहवूं कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

तएणं अहं गोयमा ! गोशालस्स मंखलि पुत्तस्स अणुकंपणट्ठाए वेसियायणस्स बाल तवस्सिस्स —

तेय लेस्सा तेय पडिसा हरणट्टयाए एत्थणं अंतरा अहं सोय लियं तेयलेस्सं णिसिरामि, जाए सा ममं सीयलियाए तेय लेस्साए वेसियायणस्स बाल तवस्सिस्स सा उसिण तेय लेस्सा पडिहया ।

(भगवती श० १५)

त० तिवारे अ० हूं गोतम! गो० गोशाला म० मंखलि पुत्र ने अ० अनुकम्पा ने अथ वेसियायन बा० बाल तपस्वीनी. ते० तेजूलेश्या प्रते सा० संहारवा ने अर्थे. ए० इहां अन्तराले अ० हूं सी० शीतल ते० तेजूलेश्या प्रते. णि० म्हे मूकी जा० जे० ए मा० माहरी सी० शीतल. ते० तेजूलेश्याइ करी. वे० बालतपस्वी नी. ते. उ० उष्ण तेजूलेश्या प० हणाणी ।

अथ अठे तो इम कह्यो—जे तापस तो उष्ण तेजू लेश्या मूकी अनें भगवान् शीतल तेजू लेश्या मूकी । ते भगवान् री शीतल तेजू लेश्या इं करी तापस नी उष्ण तेजू लेश्या हणाणी । अठ उष्ण तेजू अनें शीतल तेजू कही । ते माटे उष्ण लेश्या ते पिण तेजू नों भेद छै । अनें शीतल लेश्या ते पिण तेजू नों भेद छै । ते भणी भगवान् छद्मस्थ पणे शीतल तेजू लेश्या फोड़ी ने गोशाला नें बचायो छै । ते सावद्य छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ४३ बोल सम्पूर्ण ।

इति अनुकम्पाऽधिकारः ।

अथ लब्धि-अधिकारः ।

कोई कहे लब्धि फोड्यां पाप किहां कह्यों छै तिण नें ओलखायण नें "पन्नवणा" पद छत्तीसमें वैक्रेय तथा तेजू लब्धि फोड्याँ जघन्य ३ उत्कृष्ट ५ क्रिया कही छै ते पाठ लिखिये छै ।

जीवेणं भंते ! वे उव्विय समुग्घाएणं समोहते समोहणित्ता जे पोग्गले निच्छुभति तेणं भंते ! पोग्गलेहिं केवति ते खेत्ते आफुणे केवइए खेत्ते फुडे गोयमा ! सरीरप्पमाण मेत्ते विक्खंभ बाहल्लेणं आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं संखेज्जाइं जोयणाइं एगदिसिं विदिसिं वा एवइए खेत्ते अफुणे एवतिए खेत्ते फुडे सेणं भंते ! खेत्ते केवति कालस्स अफुणे केवति कालस्स फुडे गोयमा ! एग समएण वा दुसमएण वा तिसमएण वा विग्गहेणं एवति कालस्स आफुणे एवति कालस्स फुडे सेसं तंचेव जाव पंच किरियावि ।

(पन्नवणा पद ३६)

जा० जीव. भं० हे भगवन् ! वे० वैक्रिय. स० समुद्घाते करी नें आप प्रदेश बाहि रकाढे स० बाहिर काढी नें. जे० जे पुद्गल प्रते ग्रहे मूके. ते० तेणो पुद्गल. भं० हे भगवन् ! के० केतलो क्षेत्र. अ० अस्पृष्ट के० केतलू क्षेत्र स्पर्शे. हे गोतम ! स० शरीर प्रमाण मात्र वि० पोहलपणे. बा० जाडपणे. आ० अनें लांबपणे. ज० जघन्य थकी. अ० अंगुल नों असंख्यात मो भाग. उ० उत्कृष्ट पणे. सं० सख्याता योजन एकदिशे अथवा विदिशे फर्स्यें नवू रूप करवानें अर्थे. सख्याता

योजन लगे एक दिशे तथा विदिशे आत्मप्रदेश विस्तारी नें अ० अस्पृष्ट. ए० एतलू क्षेत्र फर्से से० तेह भं० हे भगवन्! खे० क्षेत्र. के० केतला काल लगे. अस्पृष्ट क० केतला काललगे फरस्ये. गो० हे गोतम! ए० एक समय नें. दु० अथवा बे समय नें ति० अथवा त्रिण समय नें विग्रहे पुद्गल ग्रहतां एतलाज. समय थाय ते माटे एतला काल लगे. अस्पृष्ट एतला काल लगे फरस्ये. से० शेष सर्व तिमज यावत्. प० पांच क्रियावन्त हुइ।

अथ अठे वैक्रिय समुद्घात करि पुद्गल काढे। ते पुद्गलां सूं जेतला क्षेत्र में प्राण भूत जीव सत्व नी घात हुवे ते जाव शब्द में भलाया छै। ते पुद्गलां थी विराधना हुवे तिण सूं उत्कृष्टी ५ क्रिया कही छै। इम वैक्रिय लब्धि फोड्यां ५ क्रिया लागती कही। हिवे तेजू लेश्या फोड़े ते पाठ लिखिये छै।

जीवेणं भन्ते! तेय समुग्घाएणं समोहए समोहणित्ता जे पोग्गले निच्छुभति तेहिणं भंते पोग्गलेहिं केवति ते खेत्ते अफुणे. एवं जहेव वेउव्विय समुग्घाए. तहेव णवरं आयामेणं जहण्णेणं. अंगुलस्स संखेज्जति भागं सेसं तं चेव।

(पन्नवणा पद ३६)

जी० जीव भं० हे भगवन्! ते० तेजस समुद्घाते करी नें स० आत्म प्रदेशमाही जे० जे पुद्गल प्रते ग्रहे मूके, ते० तिणे पुद्गले. भं० हे भगवन्! के० केतलू क्षेत्र. अ० अस्पृष्ट. एणी रीते ज० जिम वैक्रिय स० समुद्घाते कह्यू तिमज सर्व कहिवु-णा० एतलो विशेष. जे लांबपणे. ज० जघन्य थकी. अ० अंगुल नों संख्यात मो भाग फरस्ये. पिण असंख्यात मों भाग नथी. से० शेष सर्व. त० तिमज.

अथ इहां वैक्रिय समुद्घात करतां पांच क्रिया कही. तिमहिज तेजू समुद्घात करतां पांच क्रिया जाणवी। जिम वैक्रिय तिम तैजस समुद्घात पिण कहिणो। इम कह्यां माटे ते समुद्घात करतां उत्कृष्टी ५ क्रिया लागे तो तेजू लब्धि फोड्यां धर्म किम कहिये। भगवन्ते छद्मस्थ पणे शीतल तेजू लेश्या फोड़ी गोशाला नें बचायो भगवती शतक १५ में कह्यो छै। अनें पन्नवणा पद छत्तीसमें तैजस समुद्घात फोड्यां ५ क्रिया कही। ते केवल ज्ञान उपना पछे ५ क्रिया कही अनें छद्मस्थ पणे ते ५ क्रिया लागे ते लब्धि आप फोड़वी तो जे छद्मस्थ पणे कार्य

कीधो ते प्रमाण करियो के केवल ज्ञान उपना पछे कह्यो ते वचन प्रमाण करिवो। उत्तम जीव विचारि जोइजो। केवली नो वचन प्रमाण छै। ए लब्धि फोड़नी तो भगवान् सूत्र में ठाम २ वर्जी छै। ए वैक्रिय तथा तेजू लब्धि फोड्यां उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ते माटे ए लब्धि फोडन री केवली री आज्ञा नहीं छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण।

तथा वली आहारिक लब्धि फोड्यां पिण ५ क्रिया लागे इम कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

जीवेणं भंते आहारग समुग्घाएणं संमोहए संमोहणित्ता जे पोग्गले निच्छुभइ तेहिणं भंते! पोग्गलेहिं केवइए खेत्ते आफुण्णे केवइए खेत्ते फुडे गोयमा! शरीरप्पमाण मेत्ते विक्खंभ वाहल्लेणं आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स संखेति भागं उक्कोसेणं संखेज्जाइजोयणाइं एगदिसिं एवतिए खेत्ते एगसमएण वा दुसमएण वा. तिसमएण वा विग्गहेणं एवति कालस्स आफुण्णे एवति कालस्स फुडं तेणं भंते! पोग्गला केवइका कालस्स निच्छुवति गोयमा! जहण्णेणं वि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तस्स। तेणं भंते! पोग्गला निच्छूढा समाणा जाइं तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणंति जाव उद्दवंति तओणं भंते! जीवे कति किरिए गोयमा! सियति किरिए सिय चउकिरिए सिय पंच किरिए।

(पन्नवणा पद ३६)

जी० जीव भ० हे भगवन्. आहारिक समुद्घाते करी नें स० आत्म प्रदेश बाहिर स० काढे काढी नें जे० जे पुद्गल प्रते ग्रहे मूके ते० तिहां हे भगवन् ! पो० पुद्गले करी ने के० केतलू क्षेत्र अस्पृष्ट केतलू क्षेत्र परसे हे गोतम ! स० शरीर ना प्रमाण ना. वि० पोहलपणे बा० जाडपणे, आ० अने लाबपणे. ज० जघन्य थी अ० अंगुल नों. स० संख्यात मों भाग उत्कृष्ट पणे स० सख्यात योजन. ए० एकदिशे. ए० एतलो क्षेत्र अस्पृष्ट ए० एकसमय ने दु० अथवा बे समय ने ति० अथवा त्रिण समय नें वि० विग्रहे ए० एतलो काल लगे अस्पृष्ट ए० एतलो काल लगे. फरस्यू हुइ ते० तेहनें भ० हे भगवन् ! पो० पुद्गल. के० केतला काल लगे ग्राह्य हुइ. गो० हे गोतम ! ज० जघन्य पणे पिण. उ० अने उत्कृट पणे पिण अ० अन्तर्मुहूर्त रहे ते० तेह भ० हे भगवन् ! पो० पुद्गल णि० काढ्या थका. ज० जेह. त० तिहां पा० प्राणभूत जी० जीव स० सत्व प्रते अ० हणे आ० यावत् उपद्रव करे ते जीव थकी. भ० हे भगवन् ! णि० आहारिक समुद्घात नों करणहार जीव केतली क्रियावन्त हुइ गो० हे गोतम ! सि० किवारे त्रिण क्रिया करे सि० किवारे चार क्रिया करे सि० किवारे पांच क्रिया लागे ।

अथ इहां आहारिक लब्धि फोड्यां पिण जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया लागती कही. तिम वैक्रिय लब्धि. तेजू लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही । ते भणी आहारिक तेजू वैक्रिय. लब्धि. फोडण री केवली री आज्ञा नहीं तो ए लब्धि फोड्यां धर्म किम हुवे, ए लब्धि फोडवे ते छठे गुणठाणे अशुभ योग आश्री फोडवे छै ते अशुभ योग में धर्म किम थापिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

वली आहारिक लब्धि फोडवे ते प्रमाद आश्री अधिकरण कह्यो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

जीवेणं भंते आहारग सरीरं णिव्वत्तिएमाणे किं अधिगरणी पुच्छा गोयमा ! अधिगरणी वि अधिगरणंपि से केणट्ठेणं जाव अधिगरणंपि । गोयमा पमादं पडुच्च से तेणट्ठेणं जाव अधिकरणं पि, एवं मणुस्से वि ।

(भगवती श० १६ उ० १)

जी० जीव. भं० हे भगवन्! आ० आहारिक शरीर प्रते णि० निपजावतो छतो किस्यू अधिकरणी ए प्रश्न गो० हे गोतम! अ० अधिकरणी पिण. अ० अधिकरण पिण. से० ते के० केहे अर्थे जा० यावत् अ० अधिकरण पिण गो० हे गोतम! प० प्रमाद प्रते आश्रयी नें जा० यावत् अ० अधिकरण पिण ए० एम.मनुष्य पिण जाणवो

अथ अठे पिण आहारिक लब्धि फोड़वी नें आहारिक शरीर करे तिण नें प्रमाद आश्री अधिकरण कह्यो। तो ए लब्धि फोड़े ते कार्य केवली री आज्ञा बाहिर कहीजे के आज्ञा माहि कहीजे। विवेक लोचने करि उत्तम जीव विचारे। श्री भगवन्ते तो आहारिक लब्धि फोडे ते प्रमाद कह्यो ते प्रमाद तो अशुभ योग आश्रव छै पिण धर्म नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

वली ए लब्धि फोड्याँ पांच क्रिया लागती कही. ते पांच क्रिया लागे तें कार्य में धर्म नहीं। वली लब्धि फोडे तिण ने मायी सकषायी कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै।

से भंते! किं माई विकुब्बइ. अमाइ विकुव्वइ गो० माइ विकुव्बति. णो अमाइ विकुव्वति।

(भगवती श० ३ उ० ४)

से० ते भं० हे भगवन्! किं स्यू मायी वैक्रिय रूप करे. अ० के अमायी वि० वैक्रिय रूप करे गो० हे गोतम! मायी विकूर्वे णो० पिण अमायी न विकूर्वे अप्रमत्त गुणठाणा रो धणी।

अथ अठे वैक्रिय लब्धि फोडे तिण नें मायी कह्यो। ते माटे सावद्य कार्य में धर्म नहीं।

वली लब्धि फोडे ते बिना आलोयां मरे तो विराधक कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

माइणं तस्स ठाणस्स अणालोइय पडिक्कंतं कालं करे ति णत्थि तस्स आराहणा अमायीणं तस्स ठाणस्स आलो-इय पड़िक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा.

(भगवती श० ३ उ० ४)

मा० मायी नें त० ते विकूवणा कारण स्थानक थकी अ० यथा आलोई नें प० अप-डिकमी ने का० काल करे. ण० न थी त० तेहनें. आ० आराधना अ० पूर्व मायी पणा थी वैक्रिय पणा प्रणीत भोजन पणा करतो हवो पछे जातां पश्चात्ताप पामी नें त० वैक्रिय लब्धि प्रते आ० आलोय नें प० पडिकमी ने. का० काल करे. तो अ० छै. तेहने आराधना. अ० अन्यथा नहीं।

अथ इहां वैक्रिय लब्धि फोडे ते मायी आलोयां विना मरे तो विराधक कह्यो। अनें आलोई मरे तो साधु नें आराधक कह्यो। ते माटे ए लब्धि फोड्यां धर्म नहीं। तिवारे कोई इम कहे—ए तो वैक्रिय लब्धि फोड़े तेहनें मायी विराधक कह्यो। पर तेजू लब्धि फोड़े तिण नें न कह्यो इम कहे तेहनों उत्तर—ए वैक्रिय लब्धि फोड़े ते मायी इम कह्यो। विना आलोयां मरे तो विराधक कह्यो। इसो खोटो कार्य छै ते माटे वैक्रिय लब्धि फोड्यां पन्नवणा पद ३६ पांच क्रिया कही छै।

अनें तेजू समुद्घात करी तेजू लब्धि फोड़े तिहां पइवूं पाठ कह्यो।

जीवेणं भंते तेयग समुग्घाएणं संमोहए संमोहणित्ता जे पोग्गले णिच्छुभइ तेहिणं पोग्गलेहिं केवतिए खेत्ते अफुण्णे एवं जहेव वेउव्विय समुग्घाए तहेव।

(पन्नवणा पद ३६)

जी० जीव भ० हे भगवन्त! ते० तेज समुद्घाते करी नें. स० आत्म प्रदेश वाहिर काढ़े काढ़ी नें जे० पुद्गल प्रते. णि० ग्रहे मूके. ते० तिणे पुद्गले. हे भगवन्! के० कतलू क्षेत्र. अ० अस्पृष्ट. ए० एणी रीते ज० जिम वैक्रिय स० समुद्घाते करी तिमज सर्व कहेवू.

अथ इहां कह्यो—जिम वैक्रिय समुद्घात करतां उत्कृष्टी ५ क्रिया लागे तिम तेजू समुद्घात करतां पिण पांच क्रिया कहिवी। जिम वैक्रिय तिम तेजस पिण कहिवूं इण कह्यां माटे जिम वैक्रिय मायी करे अमायी न करे तिम तेजू लब्धि पिण मायी फोड़वे, पिण अमायी न फोड़वे। वैक्रिय कियां ५ क्रिया लागे ते आलोयां विना मरे तो विराधक छै। तिम तेजू लब्धि फोड्यां पिण ५ क्रिया लागे ते आलोयां विना मरे तो विराधक छै। ए तो पाधरो न्याय छै। ए लब्धि फोड़े ते कार्य सावद्य छै। तिण सूं तीर्थङ्कर देव ५ क्रिया कही छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली जंघा चारण विद्या चारण लब्धि फोड़े तेहनें पिण आलोयां विना मरे तो विराधक कह्या छै। ते पाठ लिखिये छै।

विज्जा चारणस्स णं भंते ! उड्ढं केवइए गति विसए पण्णत्ते गोयमा ! सेणं इओ एगेणं उप्पाएणं णंदण वणे समो सरणं करेइ, करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ, वंदइत्ता बितिएणं उप्पाएणं पंडग वणे समोवसरणं करेइ करेइत्ता तहिं चेइयाइं वंदइ वंदइत्ता तओ पडिणिइत्तइ २ त्ता इहं चेइयाइं वंदइ विज्जाचारणस्स णं गोयमा ! उड्ढं एवइए गति विसए पण्णत्ते सेणं तस्स ठाणस्स अणालोइय पडिक्कंते कालं करेइ णत्थि तस्स आराहणा सेणं तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा।

(भगवती शतक २० उ० ६)

वि० विद्या चारण रो. भं० हे भगवन्त ! उ० ऊर्ध्व. के० केतलो. ग० गति विशेष. प० परूप्यो. (भगवान् कहे छै) गो० हे गौतम ! से० विद्याचारण. इ० इहां सू. ए० एक उपपात में उडी नें. ण० नन्दन वन नें विषे विश्राम लेवे. लेवी नें. त० तिहां चे० चैत्य ने वांदे. वांदी ने. वि० द्वितीय उपपात में प० पाण्डग वन ने विषे. स० विश्राम लेवे लेवी नें. त० तिहां चे० चैत्य नें वांदे वांदी नें त० तठे सू पाछा आवे. आवी नें. इ० इहां आवे. आवी नें. चे० चैत्य नें वांदे. वि० विद्याचारण ना. हे गौतम ! उ० ऊंचो ए० एतली ग० गति नों विषय परूप्यो. से० ते विद्याचारण. त० ते स्थानक ने. अ० अण आलोई. अ० अण पडिकमी नें. का० काल प्रते करे. ण० नहीं हुई. त० तेहनें आ० आराधना. से० ते विद्याचारण ते स्थानक ने आ० आलोई प० पडिकमी नें का० काल करे तो अ० छै. त० तेहनें. आ० आराधक चारित्र फल नों.

अथ इहां पिण जंघा चारण विद्या चारण लब्धि फोड़े ते पिण बिना. आलोयां मरे तो विराधक कह्या छै। तिहां टीकाकार पिण इम कह्यो ते टीका लिखिये छै।

"अय मत्र भावार्थो लब्ध्युपजीवन किल प्रमाद स्तत्र च सेविते ऽ नालोचिते न भवति चारित्रस्याराधना तद्विराधकश्च न लभते चारित्राराधना फल मिति"

अथ टीका में इम कह्यो—ए लब्धि फोड़े ते प्रमादनों सेववो ते आलोयां बिना चारित्र नी आराधना न थी. ते माटे विराधक कह्यो। इहां पिण लब्धि फोड्यां रो प्रायश्चित्त कह्यो। इहां पिण लब्धि फोड्यां धर्म न कह्यो। ठाम २ लब्धि फोडणी सूत्र में वर्जी छै, तो भगवन्त छठे गुण ठाणे थकां तेजू लब्धि फोड़ी ने गोशाला ने बचायो, तिण में धर्म किम कहिये। आहारिक समुद्घात करतां पांच क्रिया कही। वैक्रिय लब्धि फोड्यां ५ क्रिया कही। वैक्रिय लब्धि फोड़े तिण नें मायी कह्यो। बिना आलोयां मरे तो तिण नें विराधक कह्यो। जिम वैक्रिय लब्धि फोड्यां ५ क्रिया तिम तेजू लब्धि फोड्यां ५ क्रिया लागती तीर्थङ्कर देवे कही . तो तेजू लेश्या भगवन्त छद्मस्थ पणे फोड़ी तिण में धर्म किम होवे।

वली जंघा चारण. विद्या चारण. लब्धि फोड़े ते बिना आलोयां मरे तो विराधक कह्यो। वली आहारिक लब्धि फोड़े तेहनें प्रमाद आश्री अधिकरण कह्यो। ए तो ठाम २ लब्धि फोड़णी केवली वर्जी छै। ते केवली नों वचन प्रमाण

करिवो । परं केवली नों वचन उत्थापनें छद्मस्थपणे तो गोतम चार ज्ञान सहित १४ पूर्वधारी पिण आनन्द ने घरे वचन चूक गया तो छद्मस्थ ना अशुद्ध कार्य नी थाप किम करिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्ण ।

तथा छद्मस्थ तो सात प्रकारे चूके एहवूं ठाणांग सूत्र में कह्यो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

सत्तहिं ठाणेहिं छउमत्थं जाणेज्जा, तं पाणे अइवाएत्ता भवइ. मुसं वदित्ता भवइ. अदिन्न माइत्ता भवइ सद्द-फरिस रस रूव गंधे आसादेत्ता भवइ. पूयासक्कार मणुवूहेत्ता भवइ. इमं सावज्जंति पराणवेत्ता पड़ि सेवेत्ता भवइ. णो जहा-वादी तहा कारीयावि भवइ. सत्तहिं ठाणेहिं केवलिं जाणेज्जा तंणोपाणे अइवाएत्ता भवइ जाव जहावादी तहाकारीया वि भवइ.

(ठाणाङ्ग ठाणा ७)

साते स्थानके करि छ० छद्मस्थ जाणी इं त० ते कहे छै पा० जीव हणवा नो स्वभाव. हिंसा ना करिवा थकी इम जाणी इं ए छद्मस्थ छै १ मु० इमज मृषावाद बोले २ अ० अदत्ता दान ले ३ स० शब्द स्पर्श रस रूप गन्धं तेह. आ० राग भावे आस्वादे ४ पू० पूजा पुष्पार्चना. स० सत्कार ते वस्त्रादिकं अर्चा ते अनेरो करतो हुइं. ते० तिवारे अ० अनु-मोदे. हर्ष करे ५ ए० इम. सदोष आहारिक. सा० सपाप प० इम जाणी ने प० सेवे ६ णो० सामान्य थकी जिम बोले तिम न करे अन्यथा बोले अन्यथा करे. ७ स० साते स्थान के करो ने, के० केवली जा० जाणी इ. त० ते कहे छै. णो० केवली क्षीण चारित्रावरण थकी अतिचार सयमना थकी. अथवा अपडिसेवी पणा थकी. कदाचित् हिसा न करे. जा० ज्यां लगे. ज० जिम कहे. तिम करे.

अथ अठे पिण इम कह्यो—सात प्रकारे छद्मस्थ जाणिये। अनें सात प्रकारे केवली जाणिये। केवली तो ए सातूं इ दोष न सेवे, ते भणी न चूके. अनें छद्मस्थ ७ दोष सेवे ते भणी छद्मस्थ सात प्रकारे चूके छै। तो ते छद्मस्थ पणे जे सावद्य कार्य करे तेहना थापना किम करणी। छद्मस्थ पणे तो भगवन्ते लब्धि फोड़ी गोशाला नें बचायो। अनें केवल ज्ञान उपना पछे, लब्धि फोड्यां उत्कृष्टि ५ क्रिया लागती कही। तो केवली नो वचन उत्थाप नें छद्मस्थ पणे लब्धि फोड़ी तिण में धर्म किम थापिये। अनें जो लब्धि फोड़ी गोशाला नें बचायां धर्म हुवे तो केवल ज्ञान उपना पछे. गोशाले दोय साधां बाल्या त्यांनें क्यूं न बचाया। जो गोशाला नें बचायां धर्म छै तो दोय साधां नें बचायां तो धर्म घणो हुवे। तिवारे कोई कहे भगवान् केवली था सो दोय साधां रो आयुषो आयो जाण्यो तिण सूं न बचाया। इम कहे तेहनो उत्तर—जो भगवान् केवलज्ञानी आयुषो आयो जाण्यो तिण सूं न बचाया तो और गौतमादि छद्मस्थ साधु लब्धि धारी घणा इ हुन्ता। त्यांने तो आयुषो आयां री खबर नहीं त्यां साधां नें लब्धि फोडी ने क्यूं न बचाया। यदि कहे और साधां नें भगवान् वर्ज दिया तिण सूं और साधां पिण न बचाया। तिण ने कहिणो और साधां ने वर्ज्या ते तो गोशाला सूं धर्म चोयणा करणी वर्जी छै। बालवा रा कारण माटे, पिण और साधां नें इम तो वर्ज्यो नहीं, जे थें साधां ने बचाय जो मती। ए तो गोशाला सूं बोलणो वर्ज्यो। पिण साधां नें बचावणा तो वर्ज्या नहीं। वली विना बोल्यां इ लब्धि फोड़ ने दोय साधां ने बचाय लेवे बचावां में बोलवा रो कांई काम छै। पिण ए लब्धि फोड़ी बचावण री केवली री आज्ञा नहीं। तिण सूं और साधां पिण दोय साधां नें बचाया नहीं। लब्धि तो मोहनी कर्म रा उदय थी फोडवे छै। ते तो प्रमाद नों सेववो छै। श्री भगवन्त तो केवलज्ञान उपना पछे मोह रहित अप्रमादी छै। तिण सूं भगवान् पिण केवलज्ञान उपना पछे लब्धि फोड़ी नें दोय साधां नें बचाया नथी। तिहां भगवती नी टीका में पिण एहवो कह्यो छै, ते टीका लिखिये छै।

इह च यद् गोशालकस्य संरक्षणं भगवता कृतं तत्सरागत्वेन दयैक रसत्वात् भगवतः यच्च सुनक्षत्र सर्वानुभूति मुनि पुंगवयो र्न करिष्यति तद्वीतरागत्वेन लब्ध्यनुपजीवकत्वात् अवश्य भावि भावत्वात् वेत्यवसेयम् इति"

अथ टीका में पिण इम कह्यो—ते गोशाला नों रक्षण भगवन्ते कियो ते सराग पणे करी अनें सर्वानुभूति सुनक्षत्र मुनि नों रक्षण न करस्ये ते वीतराग पणे करि। ए तो गोशाला नें बचायो ते सराग पणो कह्यो पिण धर्म न कह्यो। ए सराग पणा ना अशुद्ध कार्य में धर्म किम होय। अनें कोई कहे निरवद्य दया थी गोशाला नें बचायो तो दोय साधां नें न बचाया तिवारे भगवान् गौतमादिक सब साधु दयावान् इज हुंता। जो गोशाला ने निरवद्य दया थी बचायो, तो दोय साधां नें क्यूं न बचाया, पिण निरवद्य दया सूं बचायो नहीं। ए तो सराग पणा सूं बचायो छै। तिण नें सरागपणो कहो भावे सावद्य अनुकम्पा कहो भावे सावद्य दया कहो, पिण मोक्ष मार्ग नी निरवद्य अनुकम्पा निरवद्य दया नहीं। इहां तो शीतल तेजू लब्धि फोड़ी ने बचाओ चाल्यो छै। अनें तेजू लब्धि फोड्यां ५ क्रिया कही, ते माटे ए सावद्य अनुकम्पा थी गोशाला ने बचायो छै। ए लब्धि फोडणी तो ठाम २ वर्जी छै। लब्धि फोड्यां क्रिया कही प्रमाद नो सेववो कह्यो। विना आलोयां विराधक कह्यो, तो लब्धि फोड़ी गोशाला नें बचायो तिण में धर्म किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति बोल ६ सम्पूर्ण।

केइ अज्ञानी जीव कहे—जे अम्बड श्रावक वैक्रिय लब्धि फोड़ी ने सौ घरां पारणो कियो, सौ घरां वासो लियो, ते धर्म दिखावण निमित्ते, इम कहे ते मृषावादी छै इम लब्धि फोड्यां तो मार्ग दीपे नहीं। जो लब्धि फोड्यां मार्ग दीपे, तो पहिलां गौतमादिक घणा साधु लब्धि धारी हुन्ता, ते पिण लब्धि फोड़ी नें मार्ग क्यूं न दिपाव्यो। मार्ग दीपावण री तो भगवान् री आज्ञा छै। परं लब्धि फोडण री तो भगवान् री आज्ञा नहीं। ए वैक्रिय लब्धि फोड्यां तो पन्नवणा पद ३६ में ५ क्रिया कही छै, पिण धर्म न कह्यो, तो अम्बड सन्यासी वैक्रिय लब्धि फोड़ी तिण नें पिण ५ क्रिया लागती दीसै छै, पिण धर्म नथी। तथा भगवती श० ३ उ० ४ कह्यो मायी विकुर्वे ते विना आलोयां मरे तो विराधक कह्यो आलोयां आराधक। तिहां पिण वैक्रिय लब्धि फोड़नी निषेधी छै। जे साधु वैक्रिय लब्धि

फोडे, तेहनों व्रत पिण भांगे अनें पाप पिण लागे। अनें साधु बिना अनेरो वैक्रिय लब्धि फोड़े तेहनों व्रत न भांगे पिण पाप तो लागे। तो अम्बड पिण वैक्रिय लब्धि फोड़ी तेहनो व्रत न भांग्यो पिण पाप तो लाग्यो। ए तो आप रे छांदे ए कार्य कियो पिण धर्मदीपण निमित्ते नहीं। एतो लोकां ने विस्मय उपजावण निमित्ते वैक्रिय लब्धि फोड़ी सौ घरां पारणो कियो वासो लियो। ते पाठ लिखिये छै।

बहु जणेणं भंते! अण्ण मण्णस्स एव माइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ एवं खलु अंबडे परिव्वायए कंपील पुरणयरे घर सत्ते आहार माहारेति घरसत्ते वसते वसहि उवेइ से कहमेयं भंते! एवं गोयमा! जणं बहुजणे एव माइक्खंति जाव घरसत्तेहि वसेहि उवेति सच्चेणं एसमट्ठे अहं पुण गोयमा! एव माइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु अंवड़े परिव्वाइए जाव वसहिं उवेति से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति अंवडे परिव्वाइए जाव वसहिं उवेति गोयमा! अंवडस्सणं परिव्वायगस्स पगति भद्दयाए जाव वीणियत्ताए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं उड्ढंवाहाओ पगिज्भिय २ सुराभिमुहस्स आयावण भूमिए आयावेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहि अज्भवसाणेहिं लेस्सेहिं विसुज्भमाणीहिं अण्णया कयाइं तदा वरणिज्जाणं कम्माणं खडवसमेणं ईहा पूह मग्ग गवेसणं करेमाणस्स विरिय लद्धि वेउव्विय लद्धि ओहिणाण लद्धि समुप्पण्णा तएणं से अंवडे परिवायए ताए वीरिय लद्धिए वेउव्विय लद्धिए ओहिणाण लद्धि समुप्पणाए जण विह्मावण हेउं

कपिलपुर गागरे घर सत्ते जाव वसहिं उवेति से तेगाट्टेगां गोयमा! एवं वुच्चति अंवडे परिव्वाइये जाव वसहिं उवेति ॥ ३६ ॥

(उवाई प्रश्न १४)

व० घणा एक जन लोक ग्रामादिक नगरादिक सम्बन्धी. भं० हे भगवन्त! अ० अन्योन्य परस्पर माहो माही. ए० एहवो अतिशय स्यू कहे छै ए० एहवू भा० भाषे वचन ने बोले. ए० एहवो उपदेश बुद्धि इं प्रज्ञापे जणावे ए० एहवो परूपे छै. सांभलणहार नें हिये वात जणावे. ए० एणे प्रकारे ख० खलु निश्चय. अ० अम्बड नाम प० परिव्राजक सन्यासी क० कम्पिल्ल नगर जिहां गवादिक नों कर नहीं तेहने विषे. आ० आहार अशन पान खादिम स्वादिम आहारे जीमण करे छे। घ० एक सौ १०० घर गृहस्थ ना तेहने विषे. व० वसवो उ० करे छै. से० तेहवार्त्ता. भं० हे भगवन्! कहो स्यू करो मानूं. भं० भगवन्त कहे छै इमहिज गो० हे गौतम! ज० जेहनें घणा लोक ग्रामादिक नगर सम्बन्धी अ० अन्योन्य परस्पर माहो माही ए० एहवो अतिशय स्यू. मा० इम कहे छै. जा० जाव शब्द थी अनेरा पिण बोल. घ० एक सौ घर तेहनें विषे. व० वसवो. उ० करे छै. स० सत्य सांचा इज छै ए० एहवा ते लोक कहे छै. ए० ते एह अर्थ. अ० हूं पिण निश्चय सहित गो० हे गौतम! ए० एहवो समस्तात् कहूं छूं। जा० जाव शब्द थी अनेरा बोल जाणवा. ए० एहवो परूपूं छूं एणे प्रकारे. ख० निश्चय. अं० अम्बड नामा परिव्राजक सन्यासी. जा० जाव शब्द थी बीजाइं बोल व० वासो. तं. उ० करे छै से० तं. के० केणे अर्थे प्रयोजने भं० हे भगवन्! इम बु० कही इ छै अ० अम्बड परिव्राजक सनयासी छै ते. जा० जाव शब्द थकी बीजाइ बोल व० वसति वासो. उ० करे छै. गो० हे गौतम! अ० अम्बड नामा परिव्राजक सनयासी. प० प्रकृति स्वभावे भद्रीक परिणामे करी. जा० जाव शब्द थी बीजाइं बोल. वि० विनीत पणा करी नें. छ० छठ छठने उपवासे करी नें अ० विचाले तप मुकावे नहीं त० एहवो तप तेह रूप कर्म कर्त्तव्ये करी. उ० बाहु बेहूं ऊंची करी नें. छ० सूर्य ना सामुही दृष्टि मांडी ने आ० आतापना नी भूमि तेह माही ईंट ना चूलादिक नी वरनी नें विषे. आ० आतापना करतां थकां शरीर ने विषे क्लेश पमाड़तां थकां कर्म सन्तापता थकां. छ० शुभ मनोहर जीव सम्बन्धी. प० परिणाम भाव विशेषे करी. प्रशस्त भलो. अध्यवसाय मन ना भावार्थ विशेषे करो. ले० लेश्या तेजू लेश्यादिके विशुद्ध निर्मल तर करो ने. अ० अनयथा कोइक प्रस्तावने विषे जे ज्ञान उपजावणहार छै तेहनें. आवरण विघ्न ना करणहार जे कर्म ज्ञाना वरणीय घातादिक पाप नों. ख० कांई क्षय गया. कांई एक उपशान्त पाम्या तिणे करी. इ० ईस्यू अमुक अथवा अनेरो अमुकोज एहवू ज निश्चय करिवो-स्यू छू म० दा ने विषे वेलडी हाले छै तिम कोई विचार पुरुष जमायो

खयो छै अथवा बीज छै इत्यादिक निश्चय रूप इत्यादिक पूर्वोक्त बोलना करणहार. वि० वीर्य जीव नी शक्ति विस्तारवा रूप लब्धि विशेष वि० वैक्रिय शक्ति रूप तेहनी लब्धि गुण विशेष ओ० अवधि मर्यादा सहित जाणवा स्वरूप ज्ञानशक्ति रूप नी लब्धि गुण विशेष ते सम्यक् प्रकार नी उपनी. त० तिवारे पछे. से० ते अम्बड परिव्राजक. ता० पूर्वोक्त वीर्य लब्धि जे उपनीं तियो करी वैक्रिय लब्धि रूप करवा सम्बन्धी तियो करी तथा ओ० अवधि मर्यादा सहित ज्ञान ते अवधि ज्ञान रूप लब्धि तियो करी. सं० सम्यक् प्रकारे ए त्रिया नें विषे ऊपनी. तें जन वि-स्मापन हेतु. कं० कम्पिलपुर नामा नगर नें विषे एक सौ गृहस्थ ना घर तिहां जाव शब्द थकी भुजेराई बोल. व० वसति वास करी रहिवो करे छै. ते० तिण अर्थें प्रयोजन कहिए छै. गो० गोतम ! इम कहिए छै अम्बड सन्यासी जा० जाव शब्द थी बीजाइ बोल वसति वास करी रहिवो करे छै

अथ अठे ए अम्बड सन्यासी वैक्रिय लब्धि फोडी सौ घरां पारणो कियो सौ घरां वासो लियो ते लोकां नें विस्मय उपजावण निमित्तें कह्यो, पिण धर्म दिपावण निमित्ते, तो कह्यो नथी। ए विस्मय ते आश्चर्य उपजावण निमित्ते ए कार्य कियो छै। इम लब्धि फोड्यां धर्म दिपे नहीं। भगवान् रैं बड़ा २ साधु लब्धि धारी थया त्यां उपदेश देई तथा धर्म चर्चा करी तपस्या करी नें मार्ग दिपायो पिण वैक्रिय लब्धि फोडी नें मार्ग दिपायो चाल्यो नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ७ बोल सम्पूर्ण।

तथा विस्मय उपजायां तो चौमासिक प्रायश्चित्त कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

जे भिक्खू परं विम्हावेइ, विम्हावतं वा साइज्जइ।

(निशीथ उ० ११ बो० १७२)

जे० जे. भि० साधु साध्वी प० अनेरा नें विस्मय उपजावे वि० तथा विस्मय उपजातां नें सा० अनुमोदे तेहने पूर्ववत् चातुर्मासिक प्रायश्चित आवे।

अथ इहां पिण कह्यो—जे साधु अनेरा नें विस्मय उपजावे विस्मय उपजावतां ने अनुमोदे तो चातुर्मासिक दंड आवे। जो ए कार्य में धर्म हुवे तो प्रायश्चित्त क्यूं कह्यो। जे साधुने अनेरा नें विस्मय उपजायां प्रायश्चित आवे तो अम्बड लोकां ने विस्मय उपजावा नें अर्थे सौ घरां धारणो कियो तिण में धर्म किम कहिए। जिम साधु नें काचो पाणी पीधां प्रायश्चित्त आवे तो अम्बड काचो पाणी पीधो तिण नें धर्म किम हुवे। तिम विस्मय उपजायां पिण जाणवो। विस्मय उपजावता नें अनुमोघांइ चातुर्मासिक दंड कह्यो, तो विस्मय उपजावण वाला नें धर्म किम हुवे। श्री तीर्थङ्कर देवे तो ए कार्य अनुमोद्यां दंड कह्यो। तो ते कार्य कियां धर्मपुण्य किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ८ बोल सम्पूर्ण।

इति लब्धि-अधिकारः।



अथ प्रायश्चित्ताऽधिकारः ।

तिवारे कई एक अज्ञानी जीव वैक्रिय. तेजू. आहारिक. लब्धि फोड्यां दो दोष श्रद्धे नहीं। ते कहे—जो ए लब्धि फोड्यां दोष लागे तो भगवान् प्रायश्चित्त कांई लियो ते प्रायश्चित्त सूत्र में क्यूं नहीं कह्यो। तेहनो उत्तर—सूत्र में तो घणा साधां दोष सेव्या त्यांरो प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं। पिण लिया हज होसी। सीहो अनगार मोटे २ शब्दे रोयों तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं। ते पाठ लिखिये छै।

तएणं तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणं तरियाए वट्टमाणस्स अय मेवा रूवे जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु मम धम्मायरिस्स धम्मोवए सगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विउले रोगायंके पडिभूए उज्जले जाव छउमत्थे चेव कालं करेस्सइ वदिस्संति यणं अणउत्थिया छउमत्थ चेव कालगए इमेणं एयारूवेणं महया मणोमाणसिएणं अभिभूए समाणे आयावण भूमीओ पच्चोरुभइ पच्चोरुभइत्ता जेणेव मालुया कच्छए, तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मालुया कच्छयं अंतो २ अणुप्पविसइ अणुप्पविसइत्ता महया महया सद्देणं कुहु कुहुस्स परुणे ॥१४३॥

(भगवती श० ५१)

त० तिवारे त० तिण सीहा अणगार नें झा० ध्यान में बैठा नें अ० एह एतादृशरूप जा० यावत् विचार उत्पन्न हुवो. ए० एतावता रूप म० म्हारे ध० धर्माचार्य धर्मो-

परेयक स० श्रमण भगवन्त महावीर ना शरीर नें विषे. वि० विपुल, रो० रोगान्तक पा० उत्पन्न हुवो. उ० उज्वल जा० यावत्. का० काल करसी व० बोलसी अ० अन्यतीर्थक. छ० छद्मस्थ में काल कीधो. इ० ए ए० एहवो. म० महा मा० मानसिक दुःख ते मन में विषे दुःख छे पिण वचने करी बाहिर प्रकाश्यो नहीं ते दुःखे करी. अ० पराभव्यो थको सिंह नामा साधु अ० आतापना भूमि थकी प० पाछो. ऊ० ऊतरे उ० ऊतरी नें जे० जिहां. मा० मालुया कच्छ छे घन गहन छे तिहां उ० आवे आवी नें. मा० मालुया कच्छ ना. अं० मध्यो-मध्य. अ० तेहनें विषे प्रवेश करी नें. म० मोटे २, स० शब्दे करी नें, कु० कुहु कुहु शब्दे करी नें रुदन करइ ।

अथ इहां सींहो अनगार ध्याने ध्यावतां मन में मानसिक दुःख अत्यन्त ऊपनो । मालुया कच्छ में आइ मोटे २ शब्दे रोयो वांग पाड़ी एहवो कह्यो । पिण तेहनों प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं पिण लियो इज होसी । तिम भगवन्त लब्धि फोड़ी गोशाला नें बचायो । तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं पिण लियो इज होसी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली अइमुत्ते साधु (अति मुक्त) पाणी में पात्री तराई । तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । ते पाठ लिखिये छै ।

तएणं से अइमुत्ते कुमार समणे वाहयं वहयमाणं पासइ २ त्ता मट्टियापालिं बंधइ २ णावियामे २ नाविओवि वणावमयं पडिग्गहयं उदगंसि पवाहमाणे अभिरमइ तं च थेरा अदक्खु ।

(भगवती श० ५ उ० ४)

त० तिवारे. से० ते. अ० अइमुत्तो कुमार. स० श्रमण. वा० वाहलो पाणी नों. व० वहतो थको, पा० देख. देखी नें, मा० माटिनें पालि बांधी णा० नौका ए माहरी एहवी तिक-

कंपना करै, णा० नाविक ना वाहक खेलासिया नी परे अइमुत्तो मुनि- क० आत्मभावपडको प्रते उ० यदृक ने लिये प० प्रवाहतो नावानी परे पक्वों चलावतो अ० अभिरमे छै. रमणक्रिया तें बालस्थावस्था ना वालता थको. तं० ते प्रति स्थविर देखता हुआ.

अथ इहां अइमुत्ते अणगार पाणी रो वाहलो वहतो देखी पाल बांधी पात्री नें पाणी में नावानी परे तरावा लागो। एहवूं स्थविर देखी भगवन्त ने पूछयो। अइमुत्तो केतले भवे मोक्ष जास्ये। भगवान् कह्यो इणहिज भवे मोक्ष जास्ये। एहनी हीलना मत करो अग्लानिपणे सेवा व्यावच करो। एहवूं कह्यो चाल्यो पिण पाणी में पात्री तराई तेहनों प्रायश्चित्त न चाल्यो पिण लियो हुज होसी। तिम भगवान् लब्धि फोड़ी-तेहनो पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं। पिण लियो हुज होसी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण।

तथा वली रहनेमी राजमती नें विषय रूप वचन बोल्यो। तेहनों दंड न चाल्यो। ते पाठ लिखिये छै।

एहिता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं
भुत्तभोगी पुणो पच्छा, जिण मग्गं चरिस्समो ॥३८॥

(उत्तराध्ययन अ० २२ गा० ३८)

ए० आव. ता० पहिलूं. भुं० आपणवेइ भोगवो. भो० भोग. मा० मनुष्य नों भव खु० निश्चय करी. सु० अतिहि दु० दुर्लभ छै. भु० भुक्त भोगी थई ने. प० तिवारे पछे. जि० जिन मार्ग नें. च० आपण वेइ आचरस्यां।

अथ इहां कह्यो—राजमती रो रूप देखी रहनेमी बोल्यो। हे सुन्दरि! आव, आपां भोग भोगवां काम भोग भोगवी पछे वली दीक्षा लेस्यां। एहवा विषय रूप दुष्ट वचन बोल्यो। तेहनों स्यूं प्रायश्चित्त लीधो। मासिक थी

६ मासी ताईं प्रायश्चित्तं कह्या छै। त्यां माहिलो कांई प्रायश्चित्त लीधो। तथा दश प्रायश्चित्त कह्या छै। त्यां माहिलो किसो प्रायश्चित्त लीधो। रहनेमी नें पिण कांई प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं। पिण लियो इज होसी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

तथा धर्म घोष ना साधां नागश्री नें निन्दी ते पाठ लिखिये छै।

तं धिरत्थुणं अज्जो नागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए. जाव निंबोलियाए. जाएणं तहारूवे साहु साहु रूवे धम्मरुइ अणगारे मास खमणंसि पारणगंसि सालइएणं जाव गाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए. ॥२२॥ ततेणं ते समणा णिग्गंथा धम्मघोषाणं थेराणं अंतिए एय मट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपाए नयरीए सिंघाडग तिग जाव बहुजणस्स एव माइक्खति धिरत्थुणं देवाणुप्पिया! णाग-सिरीए माहणीए. जाव णिंबोलियाए जएणं तहा रूवे साहु साहु रूवे सालतिएणं जीवियाओ ववरोवेति ॥२३॥ ततेणं तेसिं समणाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बहुजणो अण्णमण्णस्स एव माइक्खति एवं भासति धिरत्थुणं णाग-सिरीए माहणीए जाव ववरोवेति ॥२४॥

(ज्ञाता अ० १६)

तं० ते माटे धि० धिक्कार हुओ. अहो ते नाग श्री माहणी नें. अ० अधमय अ० अपुण्य दोर्भागिनी जा० यावत् णि० निंबोली नी परे महा जिके कडुओ व्यञ्जन जा०

जेणे. तथा रूप उत्तम साधु नें. मोटो साधु. ध० धर्म रुचि मोटो अनगार साधु. मा० मास खमण नें पारणे. सा० शरद ऋतु नो कडुवो स्नेह करी समारयो ते विषभूत देई नें. अ० अकाले. चे० निश्चय. जी० जीवितव्य थी चुकाव्यो इम कह्यो ते साधु मारयो त० तिवारे. ते श्रमण निर्ग्रन्थ साधु. ध० धर्म घोष. थे० स्थविर नें. अं० समीपे. ए० ए अर्थ. सो० सांभली. णि० अवधारी ने ते साधु चं० चम्पा नगरी नें त्रिक चौक चत्वर बीच मार्गे. जा० यावत् ब० घणा लोका नें. ए० इम आपे कहे. धि० धिक्कार हुवो अरे नाग श्री ब्राह्मणी नें. अधनय अपुण्य दौर्भागिणी जा० यावत् णि० निम्बोली सम कडुवो स्यालणा व्यञ्जन. जा० जेणे त० महा उत्तम साधु. गुणवन्त मास खमण ने पारणे कड़वो तूंबो. सा० सालणा व्यंजन. वहिरावी ने. जी० जीवितव्य थी रहित कीधो. साधु मारयो. त० तिवारे. ते० ते स० श्रमण. अं० समीपे ए बचन. सो सांभली नें णि० अवधारी ने. ब० घणा लोक माहो माही. ए० इम कहे. ए० इम भावे ए बात कहे. धि० धिक्कार हुवो रे नाग श्री ब्राह्मणी नें अधनय अपुण्य दौर्भागिनी जेणे साधु मारयो जीवितव्य थी रहित कियो।

अथ अठे धर्मघोष तो साधां नें कह्यो। जे नागश्री पापिनी धर्म रुचि नें कड़ुवो तुम्बो वहिरायो। तेहथी काल करी धर्मरुचि सर्वार्थ सिद्ध में उपनों। पिण इम न कह्यो नागश्री नें हेलो निन्दो इम आज्ञा न दीधी। अनें गुरां री आज्ञा विना इ साधां बाजार में तीन मार्ग तथा घणा पंथ मिले तिहां जाइ नें नागश्री नें हेली निन्दी। एहवो कार्य साधां नें तो करवो नहीं। अनें ए साधां ए कार्य कियो। अनें निशीथ उ० १३ में कह्यो गाढो अकरो तपी ने (क्रोध करीने) कठोर वचन बोले तो चौमासी प्रायश्चित्त आवे तो गुरां री आज्ञा बिना साधां तपी नें ए कार्य कीधो। तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं। पिण लियो इज होसी। तिम भगवान् लब्धि फोड़ी—तेहनों प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं। पिण लियो इज होसी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

तथा सेलक ऋषि ढीलो पड्यो। तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं। ते पाठ लिखिये छै।

ततेणं से सेलए तंसि रोयायंकंसि उवसंतंसि समाणं सितंसिविउल असणं पाणं खाइमं साइमं मज्जपाणएय मुच्छिये गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने पासत्थे पासत्थ विहारी एवं उसन्ने कुसीले पमत्ते संसत्त विहारी उवबद्ध पीढ फलग सेज्जा संथारए पमत्तेवावि विहरइ. नो संचाएइ. फासुए-सणिज्ज पीढ फलग पच्चप्पिणित्ता मंडुयं चरायं आपुच्छेत्ता बहिया जणवय विहारं वित्तए ॥७४॥

(ज्ञाता अ० ५)

त० तिवारे से० ते सेलकाचार्य ते० ते रोग आतंक उ० उपशम्यां छतां थकां रोग. सि० प्रसंसत शरीर सम्बन्धी बाधा उपशमी त० ते वि० विस्तीर्ण घणो अन्न पाणी खादिम आदि देई नें राज पिंड नें विषे तथा मद्य पान नें विषे मु० मूर्च्छा पाम्यो ग० अत्यन्त मूर्च्छयो. गि० गृध्र थयो अ० तन मय मन थइ रह्यो उ० थाकतो चारित्र क्रिया इ आलसू थयो थको विहार थी, इम ज्ञान दर्शनादिक आचार मूकी पासत्थो रह्यो माठो ज्ञानादिक आचार तेहनों. प० पांच विध प्रमादे करी युक्त थयो. स० कदाचित् क्रिया कदाचित् पासत्थो सकुल तेहवो ही विहार छै जेहनों. उ० ऋतु बद्ध काले पीठ फलक शय्या सत्थारो सेवो छै तेहनों. प० प्रमादी थयो सदा काल थी एहवो विचरे णो० पिण समर्थ नहीं. फा० प्रांशुक एषणीक प्रातिहारिक सज्या सूपी ने मंडूक राजा प्रते. आ० पूछी नें ब० बाहिर देश मध्ये विहार करिवा मन हुवो.

अथ अठे सैलक नें उसन्नो पासत्थो कुसीलियो प्रमादी संसत्तो कह्यो । पाडिहारिया पीढ फलक शय्या सन्थारो आपी विहार करवा असमर्थ कह्यो । एहनों प्रायश्चित्त आवे के न आवे । ए तो प्रत्यक्ष पासत्था कुशीलिया पणा नों ढीलापणा नों प्रायश्चित्त आवे । पिण सूत्रमें सेलक नें प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । पिण लियो इज होसी ।

वली सेलक ज्यूं ढीलो पड़े तिण ने हेलवा निन्दवा योग्य कह्यो । ते पाठ लिखिये छै :।

एवा मेव समणाउसो जाव णिग्गंथो वा २ ओसएणे जाव संथारए. पमत्ते विहरइ. सेणं इह लोए चेव बहुणं समणाणं ४ हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो ॥८२॥

(ज्ञाता अ० ५)

ए० इण दृष्टान्त स० हे आयुषावन्त श्रमणों ! जा० जिहां लगे. णि० म्हारो साधु साध्वी उ० उसन्नो पासत्थो हुवे. जा० यावत्. सं० संथारा नें विषे प० प्रमादी पणे वि० विचरे से० ते. इ० इण मनुष्य लोक नें विषे ब० घणा साधु साध्वी श्रावक श्राविका माहि. हि० हेलवा निन्दवा योग्य सं० चार गति रूप संसारे भ्रमण कहिवो.

इहां भगवन्ते साधां नें कह्यो—जे म्हारो साधु साध्वीं सेलक ज्यूं उसन्नो पासत्थो ढीलो हुवे, ते ४ तीर्थां में हेलवा योग्य निन्दवा योग्य छै । यावत् अनन्त संसारी हुवे । तो जे सेलक नें हेलवा योग्य निन्दवा योग्य कह्यो, उसन्नो पासत्थो कुशीलियो प्रमादी संसत्तो कह्यो । एहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । पिण लियो इज हुस्ये । तथा सेलक नी व्यावच पंथक करी । तेहनों पिण प्रायश्चित्त आवे । ते किम्—ए सेलक तो उसन्नो पासत्थो कह्यो । अनें निशीथ उद्देश्य १५ पासत्था नें अशनादिक दीधां चौमासी प्रायश्चित्त कह्यो । ते माटे ते पाठ लिखिये छै ।

जे भिक्खू पासत्थस्स असणं वा ४ देइ देयंतं वा साइज्जइ ।

(निशीथ उ० १५ बो० ८०)

जे० जे कोई साधु साध्वी. पा० पासत्था नें अ० अशनादिक ४ आहार दे० देवे. दे० देवंतां नें अनुमोदे.

अथ अठे पासत्था नें अशनादिक देवे देतां नें अनुमोदे तो चौमासी दंड कह्यो अनें सेलक नें ज्ञाता में पासत्थो कह्यो । ते सेलक पासत्था कुशीलिया नें

अशनादिक ४ पंथक आणी दीधा। ते माटे पंथक नें पिण चौमासी प्रायश्चित्त निशीथ में कह्यो ते न्याय जोइये। ते पंथक नों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं। पिण लियो इज होसी। केतला एक अजाण, सेलक नी व्यावच पंथक कीधी तिण में धर्म कहे छै। ते कहे ४६६ साधां सेलक नी व्यावच करवा पंथक ने थाप्यो ते माटे धर्म छै। जो धर्म न हुवे तो पंथक नें व्यावच करवा राखता नहीं। इम कहे तेहनो उत्तर—जे ए पंथक ने सेलक नीं व्यावच करवा थाप्यो जद सर्व भेला हुंता. आहार पाणी तो तोड्यो न हुंतो ते पिण आप रो छांदो छै। पूर्वली प्रीति माटे थाप्यो। जो पंथक व्यावच करी तिण में धर्म हुवे तो ४६६ पोते छोड़ी क्यूं गया। त्यां एम विचार्यो—जे श्रमण निर्ग्रन्थ ने पासत्था पणो न कल्पे ते माटे आपां ने विहार करचो श्रेय छै। इम ४६६ साधां मनसूवो कीधो। ते मनसूवा में पिण पंथक न हुंतो। ते माटे पंथक नें थाप्यो कह्यो। अनें ४६६ साधां सेलक नें पूछी विहार कीधो पिण वंदना न कीधी। जे सेलक नी व्यावच में धर्म जाणे तो वंदना क्यूं न कीधी। पछे सेलक विहार कियो। तिवारे मंडूक राजा ने पूछी ने विहार कियो छै ते माटे पूछवा रो कारण नहीं। अने सेलक ने ४६६ चेलां वन्दना पिण न कीधी। ते माटे पंथक सेलक ने वन्दना करी व्यावच करी तिण में धर्म नहीं। जे निशीथ उ० १३ में कह्यो—उसन्ना पासत्था ने वांदे तो चौमासी दंड आवे। तो सेलक उसन्ना पासत्था ने पंथक वांचो ते निशीथ ने न्याय चौमासी दंड आवे ते पंथक नें पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं। पिण लियो इज हुस्ये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

तथा सुमंगल अनगारं मनुष्य मारसी तेहनें पिण दंड चाल्यो नहीं। ते पाठ लिखिये छै।

तएणं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणं णं रएणा सच्चंपि रहसि रेणं णोल्लाविए समाणे आसुरुत्ते जावमिसि

मिसेमाणे आयावण भूमीओ पञ्चो रुभइ पञ्चोरुभइत्ता तेया समुग्घाएणं समोहणहिति समोहणहितित्ता सत्तट्ठपयाइं पञ्चोसक्किहिति पञ्चो सक्किहितेत्ता विमलवाहणं रायं सहयं सरहं ससारहियं तवेणं तेएणं जाव भासरासिं करेहिति ॥१८५॥ सुमंगलेणं भंते! अणगारे विमल वाहणं रायं सहयं जाव भासरासिं करेत्ता कहिं गच्छहित्ति कहिं उववज्जेहित्ति. गो० सुमंगलेणं अणगारे विमलवाहने रायं सहयं जाव भासरासिं करेत्ता वहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठम दसम दुवालस्स जाव विचित्तेहिं तवो कम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे वहूइं वासाइं सामराण परियागं पाउणिहिति बहू २ त्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाइं जाव छेदेत्ता आलोइय पड़िक्कते समाहियत्ते उड्ढ चंदिम सूरिय जाव गेवेज्ज गविमाणे सलयं वीईवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवताए उववज्जिहिति ॥

(भगवती श० १५)

त० तिवारे से० ते सुमगल अनगार वि० विमल वाहन र० राजा त० तीजी वार, र० रथ. सि० थिरे करी ने. णो० उछाल्या छता. आ० क्रोधवन्त जा० यावत् मिसिमिसायमान थया अ० आतापना भूमि थी. प० पाछो ऊसरे ऊसरी नें. ते० तेज समुद्घात. स० करस्ये करी नें स० सात आठ. प० पगलां. प० पाछे ऊसरे स० सात आठ अगलां पाछा ऊसरी ने. वि० विमल वाहन र० राजा प्रते स० घोडा रथ साथे स० सारथी साथे. ते० तेजे करी नें. त० तप यावत्. भस्म राशि करस्ये सु० सुमगल. भ० भगवन्त! अ० अनगार. वि० विमल वाहन राजा प्रते. स० घोडा सहित. जा० यावत्. भ० भस्म राशि करी नें क० किहां. ग० जास्यें. क० किहां उपजस्ये. गो० हे गौतम! सु० सुमगल अ० अनगार. वि० विमल वाहन राजा प्रते स० घोडा सहित जा० यावत्. भ० भस्म राशि करी ने. ब० घणा. च० चउथा. छ० छठ अ० अठम द० दशम. जा० यावत् वि० विचित्र त० तप कर्म करी

ने. अ० आपणा आत्मा प्रते भावी ने. ब० घणा वर्ष. मा० चारित्र पाली नें, मा० मास नी.

स० सलेखणाइं स० साठ. भ० भात पाणी अ० अणसणा यावत् छेदी नें. आ० आलोइ, प० पडिकमे स० समाधि प्राप्ति. उ० अर्द्ध व चन्द्रमा. जा० यावत्. ग्रै० ग्रैवेयक विवानवालना. स० शयन प्रते वि० व्यति क्रमी नें सर्वार्थ सिद्धि. म० महा विमान में विषे. दे० देवता पणे. उ० उपजस्ये,

अथ अठे इम कह्यो—गोशाला रो जीव विमल वाहन राजा सुमंगल अनगार रे माथे तीन वार रथ फेरसी। तिवारे सुमंगल अनगार कोप्यो थको तेजू लेश्या मेली भस्म करसी। ते सुमंगल अनगार सर्वार्थसिद्धि जइ महाविदेह में मोक्ष जासी। इहां सुमंगल अणगार घोड़ा सारथी राजा रथ सहित सर्व नें भस्म करसी। पहवूं कह्यो पिण तेहनों प्रायश्चित्त चाल्यो नथी। जिम मनुष्य मारवा पहवो मोटो अकार्य कीधो तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो न थी। तिम भगवन्ते लब्धि फोड़ी तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो न थी। जिम सुमंगल आराधक कह्यो, सर्वार्थ सिद्धि नी गति कही। ते माटे जाणीइं प्रायश्चित्त लियो इज होसी। तिम लब्धि फोड्यां उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ते माटे इम जाणीइं भगवन्त लब्धि फोड़ी तेहनों पिण प्रायश्चित्त लियो इज हुस्ये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण।

वली केतला एक इम कहे—सुमंगल अनगार नें तो "आलोइय पडिक्कंते" ए पाठ कह्यो। तिणसूं लब्धि फोड़ी तिणरो प्रायश्चित्त चाल्यो। पिण भगवन्त नें प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं इम कहे तेहनों उत्तर—"आलोइय पडिक्कंते" ए पाठ लब्धि फोड़ी तेहनों नहीं छै। ए तो घणा वर्षां चारित्र पाली मास नों संथारो करी पछे "आलोइय पडिक्कंते" ए पाठ कह्यो। ते तो समचे पाठ छेहला अवसर नों चाल्यो छै। ए छेहला अवसर नों "आलोइय पडिक्कंते" पाठ तो घणे ठिकाणे कह्या छै। ते केतला एक लिखिये छै।

ततेणं से खंधए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइय माइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्झित्ता बहु पडिपुण्णाइं दुवालस्स वासाइं सामण्ण परियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालंगए ।

(भगवती श० २ उ० १)

त० तिवारे से० ते. खं० स्कन्दक. अ० अनगार. स० श्रमण भ० भगवन्त. म० महावीर ना. त० तथा रूप तेहवा स्थविर नें. अ० समीपे सा० सामायक आदि देई नें. ए० ११ अंग प्रति. अ० भणी नें. व० घणू प्रतिपूर्ण दु० १२. व० वष. प० चारित्र पर्याय पा० पाली में मा० मास नी सलेखणाइं मास दिवस ने अनशने. अ० आत्मा थकी कर्म क्षीण करी नें. स० साठि दिन राति नी भक्ति छै तेहना त्याग थकी साठि भक्ति अनशने त्यजी नें छेदीने. आ० व्रत ना अतिचार गुरू नें सम्भलावी ने तेहनों मिच्छामि दुक्कड देई नें. समाधि पाम्यो अनुक्रमे काल पाम्यो.

अथ अठे स्कंदक संथारो कियो तेहनों पिण "आलोइय पडिक्कंते" पाठ कह्यो । तो जे संथारो करती वेलां तो ५ महाव्रत आरोप्या एहवो पाठ कह्यो । पछे संथारा में इण स्कंदके किसी लब्धि फोड़ी तेहनी आलोवणा कही। पिण ए तो अजाण पने दोष लागां री शंका हुवे तेहनें ए पाठ जणाय छै। पिण जाण नें दोष लगावे तेहनें ए पाठ नहीं दीसे। तिम सुमंगल रे अजाण दोष रो ए पाठ छै पिण लब्धि फोड़ी तिण री आलोवणा चाली नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ७ बोल सम्पूर्ण ।

तथा तिसक अनगार पिण संथारो कियो तेहनें आलोइय पाठ कह्यो । ते लिखिये छै ।

एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी तीसय नामं अणगारे पगइ भद्दए जाव विणीए छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवो कम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे वहु पडिपुरणाइं अट्ठ संवच्छराइं सामरण परियाइं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता सट्ठिं भुत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते । कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सयंसि विमाणंसि उववायस भाए देव सयणिज्जंसि देव दूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्ज भाग मेत्तीए ओगाहणाए सक्कस्स देविंदस्स देवरणो सामाणिय देवत्ताए उववरणे ।

(भगवती श० ३ उ० १)

ए० इम. खलु. निश्चय. देवानुप्रिय रो. अ० अन्ते वासी. ती० तिष्यक नाम अणगार. प० प्रकृति भद्रीक जा० यावत्. विनीत छ० छठ भत्ति करी अ० निरन्तर. त० तप कर्म करी. अ० आत्मा नें भावतो थको वहु प्रतिपूर्ण आठ वर्ष. सा० दीक्षा पर्याय. पा० पाली ने. मास नी. स० संलेखणा करी नें. अ० आत्मा नें सेवी नें स० साठि भात पाणी ते अनशने. छे० छेदी नें. आ० आलोई नें मनना शल्य नें प० अतिचार ने पडिकमी नें. मन नें स्वस्थ पणे समाधि पाम्या थकां. का० काल करी नें. सो० सौधर्म देवलोके. स० आपना विमान नें विषे. उ० उपपात सभा में. दे० देवशय्या में. दे० वदूष्य रे अन्तर में. अङ्गुल ना असंख्यात भाग मात्र. अवगाहना. स० शक्रेन्द्र. देवेन्द्र. देव राजा रे सामानिक देव पणे उ० उत्पन्न हुवो ।

इहां तिष्यक अनगार ८ वर्ष चारित्र पाली मास रो संथारो कियो तिहां छेहड़े "आलोइय पडिक्कंते" कह्यो । पणे किसी लब्धि फोड़ी तेहनी आलोवणा कही । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ८ बोल सम्पूर्ण ।

तथा कार्त्तिक सेठ १४ पूर्व भणी १२ वर्ष चारित्र पाली संथारो कियो तेहनें पिण आलोइय पाठ कह्यो । ते लिखिये छै ।

तएणं से कत्तिए अणगारे ठाणे सुव्वयस्स अरहओ तहा रूवाणं थेराणं अंतियं सामाइय माइयाइं चउदस्स-पुव्वाइं अहिज्जइ २ त्ता वहूइं चउत्थ छट्ठट्ठम जाव अप्पाणं भावे माणे वहु पड़ि पुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्ण परियागं पाउणइ २ त्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेइ २ त्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाइं छेदेइ छेदेइत्ता आलोइय पडिक्कंते जाव कालं किच्चा सोहम्म कप्पं सोहम्मे वडिंसए विमाणे उववाय सभाए देवसयणिज्जा स जाव सक्के देविंदत्ताए उववण्णे ।

(भगवती १८ उ० २)

त० तिवारे ते० ते. क० कार्त्तिक ते० अणगार. मु० मुनि सुव्रत अरिहंत ना त० तथा रूप. थे० स्थविरां रे कने मू सामायकादि चउदह पूर्व नों अध्ययन करी नें. व० बहुत चतुर्थ भक्ति छठ अठम यावत्. अन आत्मा नें भावता थका. व० बहुत प्रतिपूर्ण दु० १२ वर्ष री साधु री पर्याय पाली ने. मास नो संलेखना सू. अ० आत्मा ने दुर्बल करी ने स० साठि भात अ० अनशन छे० छेदे छेदी ने आलोई ने. जा० यावत्. काल मासे काल करी नें. सो० सौधर्म देवलोक ने विषे सौधर्मावतंसक विमान नें विषे. उपपात सभा नें विषे. दे० देव शय्या ने विषे दे० देवेन्द्र पणे उत्पन्न हुवो ।

अथ इहां कार्त्तिक अनगार नें पिण "आलोइय पडिक्कंते" ए पाठ छेहड़े कह्यो । पणे किसी लब्धि फोड़ी-जेह नी आलोवणा कही । तथा कप्पवड़ीसिय उपाङ्ग में पद्म अनगार नें पिण "आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो । इम धन्नादिक अणगार रे घणे ठिकाणे छेहड़े जाव शब्द में "आलोइय पड़िक्कंते" पाठ कह्यो छै । तथा उपासक दशा में आनन्द कामदेवादिक श्रावका नें पिण छेहड़े "आलोइय पडिक्कन्ते" पाठ कह्यो छै । तिम सुमंगल नें पिण पहिलां तो घणा वर्षां चारित्र पाल्यो ते पाठ कह्यो. पछे संथारा नों पाठ कहि छेड़ड़े "आलोइय पडिक्कंते" पाठ कह्यो छै। पिण लब्धि फोड़वा रो प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । अनें जो लब्धि

फोड़ण रा प्रायश्चित्त रो पाठ हुवे तो इम कहिता "तस्सठाणस्स आलोइय पडिक्कंते" पिण इम तो कह्यो नथी । ते माटे लब्धि फोडण रो प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । भगवती श० २० उ० ६ जंघा चारण विद्या चारण लब्धि फोडे तेहनों प्रायश्चित्त चाल्यो छै । तिहां एहवो पाठ कह्यो छै । "तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कंते" इम कह्यो । तथा भगवती श० ३ उ० ४ वैक्रिय करे तेहनो प्रायश्चित्त कह्यो । तिहां पिण "तस्स ठाणस्स आलोइय पडिक्कंते" इम पाठ कह्यो । लब्धि फोड़ी ते स्थानक आलोयां आराधक कह्या । अनें सुमंगल नें अधिकारे "तस्स ठाणस्स" पाठ नथी । ते माटे लब्धि फोड़ण रो प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । जे सीहो अणगार मोटे २ शब्दे रोयो बांग पाड़ी ते अकल्पनीक कार्य छै । तेहनों प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । अइमुत्ते पाणी में पात्री तराई ए पिण कार्य साधु नें करवा जोग नहीं । उपयोग चूक नें कियो । तेहनें पिण प्रायश्चित्त जोइये पिण चाल्यो नहीं । रहनेमी राजमती ने कह्यो, हे सुन्दरि ! आपां संसार ना काम भोग भोगवीं भुक्त भोगी थइ पछे वली दीक्षा लेस्यां । ए पिण वचन महा अयोग्य पापकारी छै । तेहनों पिण दंड चाल्यो नहीं । धर्मघोष रा साधां गुरां नें विना पूछ्यां घणा पंथ मिले तिहां नागश्री ने हेली निन्दी एहनों पिण दंड चाल्यो नहीं । सेलक नें उसन्नो पासत्थो कुशीलियो संसत्तो प्रमादी कह्यो । वली सेलक जिसो हुवे तिण नें हेलवा योग्य निन्दवा योग्य यावत् अनन्त संसारो कह्यो । ते सेलक नें पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । पंथक सेलक पासत्था नी व्यावच करी तेहनों पिण दंड चाल्यो नहीं । सुमंगल अनगार राजा सारथी घोड़ा रथ सहित नें भस्म करसी तेहनें पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । तिम भगवन्त पिण छद्मस्थ पणे लब्धि फोड़ी गोशाला ने बचायो तेहनों पिण प्रायश्चित्त चाल्यो नहीं । जिम ए पाछे कह्या सीहादिक अणगार नें दंड चाल्यो नहीं । पिण लियो इज होस्यें । तिम भगवन्त पिण लब्धि फोड़ी तिण रो दंड चाल्यो नहीं । पिण लियो इज होसी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

केतला एक कहे—गोशाला में भगवान् लब्धि फोड़ी बचायो । तिण में क्रोध लायो सो भगवान् में मिथ्यो किस्यो हुन्तो । भगवान् में छद्मस्थ पणे कषाय

कुशील नियंठो छै। ते कषाय कुशील नियंठो अपडिसेवी कह्यो छै। ते माटे भगवान् नें दोष लागे नहीं। इम कहे तेहनों उत्तर—कषाय कुशील नियंठा री ताण करे तेहनें पूछी जे गौतम स्वामी में किसौ नियंठो हुन्तो। गौतम स्वामी में पिण कषाय कुशील नियंठो हुन्तो। पिण आनन्द नें घरे वचन में खलाया. वली पडिक्कमणो सदा करता. वली गोचरी थी आवी इरियावही पडिक्कमता जे कषाय कुशील नियंठे दोष लागे इज नहीं। तो गौतम आनन्द नें घरे क्रिम खलाया। वलीं इरियावहि पडिक्कवा रो कांई काम। तथा वली कषाय कुशील नियण्ठे एतला बोल कह्या। ते पाठ लिखिये छै।

कषाय कुसीलेणं पुच्छा. गोयमा! जहराणेणं अट्ठपवयण मायाओ उक्कोसेणं चउद्दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा।

(भगवती श० २५ उ० ६)

क० कषाय कुशील नी पृच्छा. गो० हे गौतम! ज० जघन्य अ० आठ प्रवचन मातृकां अध्ययन भणे. उ० उत्कृष्ट. चो० चउद पूर्व नो. अ० अध्ययन करे।

अथ इहां कह्यो—कषाय कुशील नियंठा रो धणी भणे तो जघन्य ८ प्रवचन मांता ना उत्कृष्टा १४ पूर्व अनें पुलाक नियंठा वालो जघन्य ६ मा पूर्व नी तीजी वत्थु (वस्तु) उत्कृष्टा ६ पूर्व बक्कुश अनें पडिसेवणा कुशील भणे तो जघन्य ८ प्रवचन नैं मांता ना उत्कृष्टा १० पूर्व भणे। हिवे ज्ञान द्वारे कहे छै।

कषाय कुसीलेणं पुच्छा. गोयमा! दोसुवा तिसुवा चउसुवा होज्जा। दोसु होज्जमाणे दोसु आभिणिबो हियणाण सुअणाणेसु होज्जा तिसु होज्जमाणे तिसु आभिणिबोयियणाण सुअणाण ओहिणाणेसु होज्जा अहवा तिसु आभिणिबोहियणाण सुअणाण मण पज्जवणाणेसु होज्जा, चउसु होज्ज-

माणे चउसु आभिणिवोहियणाण सुअणाण ओहिणाण मण पज्जवणाणेसु होज्जा ॥

(भगवती श० २५ उ० ६)

क० कषाय कुशील नीं पृच्छा. हे गौतम ! दो० बे नें विषे. ति० त्रिण नें विषे. चा० चार ने विषे दे० बे ज्ञान नें विषे होय. तिवारे. आ० मतिज्ञान ने विषे. सु० श्रुतज्ञान ने विषे. ति० त्रिण ज्ञान ने विषे हुइ तिवारे आ० मतिज्ञान ने विषे. सु० श्रुतज्ञान ने विषे. ओ० अवधिज्ञान नें विषे हुइं अ० अथवा त्रिण नें विषे हुइं तिवारे त्रिण. आ० मतिज्ञान नें विषे सु० श्रुतज्ञान नें विषे म० मन पर्यव नें विषे च० चार नें विषे हुइ तिवारे आ० मतिज्ञान नें विषे सु० श्रुतज्ञान ने विषे ओ० अवधि ज्ञान नें विषे म० मन पयव ज्ञान नें विषे हुइं ।

अथ अठे कषाय कुशील नियंठे जघन्य २ ज्ञान अनें उत्कृष्टा ४ ज्ञान कह्या । अनें पुलाक वक्कुस पडि सेवणा में उत्कृष्टा मति श्रुत अवधि ३ ज्ञान कह्या । पिण मन पर्यव ज्ञान न कह्यो । हिवे शरीर द्वारे करी कहे छै ।

कषाय कुसीले पुच्छा. गो० ! तिसुवा चउसु वा पंचसु वा होज्जा तिसु उरालिये ते या कम्मए सु होज्जा चउसु होमाणे चउसु उरालियं. वेउव्विह तेया कम्मएसु होज्जा पंचसु होमाणे उरालिय वेउव्विय आहारग तेयग कम्मएसु होज्जा ।

(भगवती शतक २५ उ० ६)

क० कषाय कुशील नीं पृच्छा. गो० हे गौतम ! ति० त्रिण चार प० पांच शरीर हुइं- त्रिण शरीर नें विषे तिवारे हुइं उ० औदारिक. ते० तैजस. क० कार्मण हुइं च० चार शरीर नें विषे हुइं तिवारे चार- उ० औदारिक वे० वैक्रिय ते० तैजस. क० कार्मण नें विषे हुइं पं० पांच शरीर नें विषे हुइ ओ० औदारिक- वे० वैक्रिय- आ० आहारिक- ते० तेजस- क० कार्मण शरीर में विषे हुइ.

अथ इहां कषाय कुशीले में ३ तथा ४ तथा ५ शरीर कह्या । अनें पुलाक में ३ शरीर वक्कुस पड़िसेवणा कुशील में आहारिक विना ४ शरीर पावै । अनें कषाय कुशील में वैक्रिय आहारिक शरीर कह्या, तो वैक्रिय आहारिक लब्धि फोड्यां दोष लागे छै । हिवै समुद्घात द्वार कहे छै ।

कषाय कुसीलेणं पुच्छा. गो० ! छ समुग्घाया प० तं० वेदणा समुग्घाए जाव आहारग समुग्घाए.

(भगवती श० २५ उ० ६)

क० कषाय कुशील नी पुच्छा गो० हे गौतम ! छ० ६ समुद्घात परूपी ते कहे छै. वे० वेदनी समुद्घात यावत् आ० आहारिक समुद्घात.

अथ अठे कषाय कुशील में केवल समुद्घात वर्जी ६ समुद्घात कही । अनें पुलाक में ३ समुद्घात वेदनी १ कषाय २ मारणंती ३ वक्कुस पड़िसेवणा कुशील में आहारिक, केवल वर्जी ५ समुद्घात पावै । *अनें कषाय कुशील में ६ समुद्घात कही । ते भणी वैक्रिय तैजस आहारिक समुद्घात पिण ते करे छै । अनें पन्नवणा पद ३६ वैक्रिय तैजस आहारिक समुद्घात कियां जघन्य ३ क्रिया उत्कृष्टी ५ क्रिया कही छै । इणन्याय कषाय कुशील नियंठे उत्कृष्टी ५ क्रिया पिण लागे छै । ए तो मोटो दोष छै । तथा वली कषाय कुशील नियंठे आहारिक शरीर कह्यो । अनें भगवती श० १६ उ० १ आहारिक शरीर करे ते अधिकरण कह्यो । प्रमाद नों सेविवो कह्यो । अधिकरण अनें प्रमाद सेवे ते तो प्रत्यक्ष दोष छै । तथा वली कषाय कुशील नियंठे वैक्रिय शरीर कह्यो छै । अनें भगवती श० ३ उ० ४ कह्यो । मायी वैक्रिय करे पिण अमायी वैक्रिय न करे । ते मायी विना आलोयां मरे तो विराधक कह्यो । एहवो वैक्रिय नों मोटो दोष कह्यो । ते वैक्रिय दोष रूप कार्य कषाय कुशील में पावे छै । ते कषाय कुशील वैक्रिय तथा आहारिक करे छै । ए तो प्रत्यक्ष मोटा २ दोष कषाय कुशील में कह्या छै । तथा कषाय कुशील नियंठे प्रत्यक्ष दोष लगावे छै । ते पाठ लिखिये छै ।

कसाय कुसीले पुच्छा. गो० ! कसाय कुशीलत्तं जहति पुलायं वा वउसं वा. पडिसेवणा कुसीलं वा. णियंठं वा असंजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जइ.

(भगवती श० २५ उ० ६)

क० कषाय कुशील नी पृच्छा गो० हे गौतम ! क० कषाय कुशील पणुं. ज० तजी पु० पुलाक पणुं. व० वक्कुश पणुं. प० प्रति सेवना कुशील पणुं णि० अथवा निर्ग्रन्थ पणुं. अ० असयम पणुं. स० सयमासयम पणुं. उ० पडिवज्जे.

अथ इहां कह्यो—कषाय कुशील नियंठो छांडि किण में जावे। कषाय कुशील पणो छांडी पुलाक में आवे। वक्कुस में आवे। पड़िसेवण कुशील में आवे। निर्ग्रन्थ में आवे। असंयम में आवे। संयमासंयम ते श्रावक पणा में आवे। कषाय कुशील पणो छांडि ए ६ ठिकाणे आवतो कह्यो। कषाय कुशील नें दोष लागे इज नहीं। तो संयमासंयम में किम आवे। ए तो साधु पणो भांगी श्रावक थयो ते तो मोटो दोष छै। ए तो साम्प्रत दोष लागे तिवारे साधु रो श्रावक हुवे छै। दोष लागां विना तो साधु रो श्रावक हुवे नहीं। जे कषाय कुशील नियंठे तो साधु हुंतो। पछे साधु पणो पाल्यो नहीं तिवारे श्रावक रा व्रत आदरी श्रावक थयो। जे साधु रो श्रावक थयो जद निश्चय दोष लाग्यो। तिवारे कोई कहे—ए तो कषाय कुशील पणो छांडी पाधरो संयमसंयम में आवे नहीं। इम कहे तेहनो उत्तर—जे कषाय कुशील पणो छांड़ी पुलाक तथा वक्कुस थयो। ते वक्कुस भ्रष्ट थई श्रावक पणो आदरे ते तो वक्कुस पणो छांडी संयमासंयम में आयो कहिणो। पिण कषाय कुशील पणो छांडी संयमा संयम में आयो न कहिणो। कषाय कुशील पणो छांडी निर्ग्रन्थ में आवे कह्यो। पिण स्नातक में आवे इम न कह्यो। बीचमें अनेरो नियंठो फर्सि आवे ते लेखे कह्यो हुवे तो स्नातक में पिण आवतो न कहिता। दश में गुणठाणे कषाय कुशील नियंठो हुवे तो तिहां थी १२ में गुणठाणे गयां निर्ग्रन्थ में आयो, तिहां थी १३ में गुणठाणे गयां स्नातक थयो ते निर्ग्रन्थ पणो छांड़ी स्नातक थयो। पिण कषाय कुशील पणो छांडी स्नातक में आयो इम न कह्यो। तिम कषाय कुशील पणो छाडि वक्कुस थयो। ते वक्कुस

भ्रष्ट थई श्रावक थयो। ते पिण वक्कुस पणो छांडी संयमा संयम में आयो। पिण कषाय कुशील पणो छांडि संयमा संयम में न आयो। तथा वक्कुस पणो छांडि पडिसेवणा में आवे १ कषाय कुशील में २ असंयम में ३ संयमासंयम में ४ ए चार ठिकाणे आवे कह्यो। पिण निर्ग्रन्थ स्नातक में आवता न कह्या। ते किम वक्कुस पणूं छांडी निर्ग्रन्थ स्नातक मे आवे नहीं चढतो चढतो २ आघे वक्कुस पणो छांडो पाधरो निर्ग्रन्थ न हुवे। वीचे कषाय कुशील फर्सी ने निर्ग्रन्थ में आवे। ते माटे निर्ग्रन्थ मे कषाय कुशील आवे पिण वक्कुस न आवे। ए तो पाधरो आवे इज नहीं कह्यो छै। ते न्याय कषाय कुशील पणो छांडि संयमासंयम में आवे कह्यो। ते भणी कषाय कुशील में प्रत्यक्ष दोष लागे छै। डाह्या हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १० बोल सम्पूर्ण।

तथा वली पुलाक वक्कुस पडिसेवणा में ४ ज्ञान १४ पूर्व नों भणवो वर्ज्यों छै। अनें कषाय कुशील में ४ ज्ञान १४ पूर्व कह्या छै। अनें १४ पूर्वधारी पिण वचन में चूकता कह्या छै। ते पाठ लिखिये छै।

आयार पन्नति धरं दिट्ठिवाय महिज्जगं।
वाय विक्खलियं नच्चा न तं उवहसे मुणी॥ ५० ॥

(दशवैकालिक अ० ८ गा० ५०)

आ० आचारांग. प० भगवती सूत्र नों धरणहार ते भणणहार छै. दि० दृष्टि वारमा अंग नों. स० भणणहार एहवा नें व० बोलता वचनें करी खलाणो जाणी नें न० नहीं तेहनें. हसे. मु० साधु.

अथ इहां कह्यो—दृष्टि वाद रो धणी पिण वचन में खलाय जाय तो और साधु नें हसणो नहीं। ए दृष्टि वाद रो जाण चूके, तिण में पिण कषाय

कुशील नियंठो छै। वली १४ पूर्वधर ४ ज्ञानी पिण पडिक्कमणो करे। इणन्याय कषाय कुशील नियंठे अजाण तथा जाण नें पिण दोष लगावे छे। जे वैक्रिय तेजू आहारिक लब्धि फोड़े ते जाण नें दोष लगावे छै। वली साधु पणो भांग नें श्रावक पणो आदरे ए जायक भ्रष्ट थयो, तो और दोष किम न लगावे। इणन्याय कषाय कुशील नियंठे दोप लगावे छै। तिवारे कोई कहे ए कषाय कुशील नियंठा नें अपडिसेवी किणन्याय कह्यो। तेहनों उत्तर—ए कषाय कुशील नियंठा नें अपडिसेवी कह्यो—ते अप्रमत्त तुल्य अपडिसेवी जणाय छै। कषाय कुशील नियंठा में गुणठाणा ५ छै। छठा थी दशमा ताईं तिहां सातमें आठमें नवमें दशमें गुणठांणे अत्यन्त शुद्ध निर्मल चारित्र छै। ते अपड़िसेवी छै। अनें छठे गुणठाणे पिण अत्यन्त विशिष्ट निर्मल परिणाम नो धणी शुभ योग में प्रवर्त्ते छै। ते अपडिसेवी छै। तथा दीक्षा लेतां अथवा पुलाक बकुश पडिसेवणा तजी कषाय कुशील में आवे तिण वेलां आश्री अपड़िसेवी कह्यो जणाय छै। पिण सर्व कषाय कुशील रा धणी अपड़िसेवी न दीसे। जिम कषाय कुशील में ज्ञान तो २ तथा ३ तथा ४ इम कह्या। शरीर पिण ३ तथा ४ तथा ५ इम कह्या। अनें लेश्या ६ कही छै। पिण इम नहीं कही १ तथा ३ तथा ६ एहवो न कह्यो। ए लेश्या ६ कही छै। ते छठा गुणठाणा री अपेक्षा इं पिण सर्व कषाय कुशील रा धणी में ६ लेश्या नहीं। ते किम् ७-८-९-१० गुणठाणा में कषाय कुशील नियंठो छै। तिहां ६ लेश्या नथी। कोई कहे ६ लेश्या रा पेटा में किहां १ पावे किहां ३ पावै, ते ६ लेश्या में आगई इम कहे। तिण रे लेखे शरीर पिण पांच इज कहिणा। तीन तथा ४ कहवा रो कांई काम। ३ तथा ४ शरीर पांच रा पेटा में समाय गया। वली ज्ञान पिण ४ कहिणा। २ तथा ३ कहिवा रो कांईं काम। २ तथा ३ ज्ञान तो चार ज्ञान में समाय गया। इम लेश्या न कही समचे ६ लेश्या कही ए छठा गुणठाणा आश्री ६ लेश्या कही। सर्व आश्री कहिता तो १ तथा ३ तथा ६ इम कहिता पिण सर्व रो कथन इहां न लियो। तिम अपड़िसेवी कह्यो। ते पिण अप्रमत्त आश्री तथा अप्रमत्त तुल्य विशिष्ट चारित्र रो धणी छठे गुण ठाणे शुभ योग में वर्त्ते ते आश्री अपड़िसेवी कह्यो जणाय छै। ते ऊपर सूत्र नों हेतु भगवती श० १६ उ० ६ पांच प्रकारे स्वप्न कह्या। वली भाव निद्रा नी अपेक्षाय जीवां नें सुत्ता, जागरा अने सुत्ता जागरा कह्या। तिहां मनुष्य अनें तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय टाल २२ दंडक तो सुत्ता कह्या। सर्वथा

अव्रत माटे। अनें तिर्यंच पंचेन्द्रिय सुत्ता पिण छै। अनें सुत्ताजागरा पिण छै। पिण जागरा नहीं। मनुष्य में तीनूं ही छै। इहां अव्रती नें सुत्ता कह्या। व्रती नें जागरा कह्या। अनें व्रत्यव्रती ते सुत्ताजागरा कह्या। जिम सुत्ता, जागरा, सुत्त-जागरा कह्या। तिमहीज संवुडा, असंवुडा, संवुडाऽसंवुडा पिण कहिवा। "जहेव सुत्ताणं दंडओत्तहे भाणियव्वो" संवुड़ा सर्व व्रती साधु असंवुड़ा अव्रती संवुडाऽसंवुडा, ते व्रत्यव्रती इम ३ भेद छै। तिहां एहवूं पाठ छै ते लिखिये छै।

संवुडेणं भंते सुविणं पासइ. असंवुडे सुविणं पासइ. संवुडासंवुड़े सुविणं पासइ. गोयमा! संवुड़े सुविणं पासइ असंवुडेवि सुविणं पासइ संवुडासंवुडेवि सुविणं पासइ संवुडे सुविणं पासइ अहा तच्चं पासइ. असंवुडे सुविणं पासइ. तहावातं होज्जा अण्णहावा तं होज्जा संवुडासंवुडे सुविणं पासइ एवं चेव ॥ ४ ॥.

(भगवती श० १६ उ० ६)

सं० संवृत भ० हे भगवन्! सु० स्वप्न. पा० देखे. अ० असम्वृत. सु० स्वप्न पा० देखे. सं० सम्वृतासम्वृत सु० स्वप्न पा० देखे गो० हे गौतम! सं० सम्वृत सु० स्वप्न पा० देखे अ० असम्वृत. सु० स्वप्न. पा० देखे सं० सम्वृतासम्वृत स्वप्न देखे सं० सम्वृत सु० स्वप्न. पा० देखे. अ० ते यथा तथ्य पा० देखे. अ० असम्वृत, सु० स्वप्न पा० देखे. त० तथा प्रकार अ० अन्यथा. हो० होवे पिण त० तेहवो सं० सम्वृतासम्वृत सु० स्वप्न पा० देखे. ए० इणी प्रकारे.

अथ इहां कह्यो—संवुड़ो ते साधु सर्वव्रती स्वप्नों देखे। ते यथा तथ्य सांचो स्वप्नो देखे। अनें असंवुडो अव्रती अनें संवुडासंवुड़ो श्रावक ते स्वप्नो साचो पिण देखे। अनें झूठो पिण देखे। इहां संवुड़ो स्वप्नो देखें ते यथा तथ्य साचो देखे कह्यो अनें साधु ने तो आल जंजालादिक झूठा स्वप्ना पिण आवे छै। ते आवश्यक अ० ४ कह्यो। "सोयणवत्तियाए" कहितां जंजालादिक देखवे

करी, तथा आगल कह्यो। "पाण भोयण विप्परियासियाए" कहितां स्वप्न में पाणी नों पीवो। भोजन नों करवो ते अतिचार नों "मिच्छामिदुक्कडं" इहां स्वप्न जंजालादिक कूड़ा विपरीत स्वप्न साधु नें आवता कह्या छै। तो इहां सांचो स्वप्नो देखे इम क्यूं कह्यो। पहनों न्याय ए सर्व संवुड़ा साधु आश्री नथी। विशिष्ट अत्यन्त निर्मल चारित्र नो धणी सम्वुड़ो स्वप्नो देखे ते आश्री कह्यो छै। तिहां टीकाकार पिण इम कह्यो छै। *"सम्वृतश्चेह-विशिष्टतर सम्वृतत्व युक्तो ग्राह्यः"* इहां टीका में पिण इम कह्यो। सांचो स्वप्नो देखे तो सम्वुड़ो विशिष्ट अत्यन्त निर्मल परिणाम नों धणी सम्वुड़ो ग्रहणो। इहां अत्यन्त निर्मल चारित्र आश्रीं सम्वुड़ो साचो स्वप्नो देखे कह्यो। पिण सर्व सम्वुड़ा आश्री नहीं। तिम अत्यन्त विशिष्ट निर्मल परिणाम नों धणी कषाय कुशील अपड़िसेवी कह्यो जणाय छै। तथा दीक्षा लेतां पुलाक वक्कुस पड़िसेवणा तजि कषाय कुशील में आवे ते वेलां आश्री अपड़िसेवी कह्यो जणाय छै। तथा पुलाक वक्कुस पड़िसेवणा नें पड़िसेवी कह्या। ते कषाय कुशील पणो छांडी पुलाक वक्कुस पड़िसेवणा में आवे ते दोष लगायां सेती आवे ते भणी यां तीना नें पड़िसेवी कह्या। अनें कषाय कुशील नें अपड़िसेवी कह्यो। ते दीक्षा लेतां कषाय कुशील पणो आवे ते वेलां अपड़िसेवी. तथा पुलाक वक्कुस पड़िसेवणा तजि कषाय कुशील मे आवे ते वेलां आगलो दंड लेइ अपड़िसेवी थावै। जिम पुलाक वक्कुस पड़िसेवणा पणा नें आदरतां पड़िसेवी कह्यो। तिम कषाय कुशील पणो आदरतां अपड़िसेवी कह्यो। इण न्याय कषाय कुशील नें अपड़िसेवी कह्यो जणाय छै। पिण सर्व कषाय कुशील ना धणी अपड़िसेवी कह्या दीखे नहीं। जिम कषाय कुशील में ६ लेश्यां कही ते पिण प्रमत्त गुणठाणा आश्री कही। पिण सर्व कषाय कुशील ना धणी में ६ लेश्या नहीं। तिम अपड़िसेवी कह्यो। ते पिण अप्रमत्त तुल्य विशिष्ट निर्मल चारित्र नो धणी दीसे छै। पिण सर्व कषाय कुशील चारित्रिया अपड़िसेवी कह्या दीसता न थी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ११ बोल सम्पूर्ण।

वली भगवती श० ५ उ० ४ पंइवो कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै।

अणुत्तरोववाइयाणं भंते! देवा किं उदिण्ण मोहा उव-संत मोहा खीण मोहा, गोयमा! नो उदिण्ण मोहा. उव-संत मोहा. णो खीण मोहा.

(भगवती श० ५ उ० ४)

अ० अनुत्तरोपपातिक. भं० हे भगवन्त देव! कि स्यू उत्कट वेद मोहनी छै. उ० उप-शान्त मोहनी छै अनुत्कट वेद मोहनी, गो० गोतम! णो० नहीं उ० उत्कट वेद मोहनी उ० उपशान्त मोहनी छै. णो० नहीं खीण मोहिनी।

अथ इहां कह्यो—अनुत्तर विमान ना देवता उदीर्ण मोह न थी। अनें क्षीण मोह नें न थी। उपशान्त मोह छै, इम कह्यो। इहां मोह नें उपशमायो कह्यो। अनें उपशान्त मोह तो इग्यारवे ११ गुणठाणे छै। अनें देवता तो चौथे गुणठाणे छै, तिहां तो मोह नों उदय छै। तेहथी समय २ सात २ कर्म लागे छै। मोह नों उदय तो दशमे गुणठाणे ताईं छै। अने इहां तो देवता नें उपशान्त मोह कह्यो, ते उत्कट वेद मोहनी आश्री कह्यो। तिहां देवता नें परिचारणा न थी ते माटे वहुल वेद मोहनी आश्री उपशान्त मोह कह्यो। पिण सर्वथा मोह आश्री उपशान्त मोह न थी कह्या। टीकामें पिण इमेज अर्थ कियो छै। तिण अनुसार विमान ना देवता में उत्कट वेद मोह आश्री उपशान्त मोह कह्या। पिण सर्व मोहनी री प्रकृति रे आश्री उपशान्त मोह न थी कह्या। तिम कषाय कुशील नें अपड़िसेवी कह्यो। ते पिण विशिष्ट परिणाम ना धणी आश्री अपड़िसेवी कह्यो। तथा दीक्षा लेतां अथवा पुलाक बक्कुस पड़िसेवणा तजी कषाय कुशील में आवे ते वेलां आश्री अपड़िसेवी कह्यो जणाय छै। पिण सर्व कषाय कुशील चारित्रिया अपड़िसेवी नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १२ बोल संपूर्ण।

तथा भगवती श० ७ उ० ८ पहवो कह्यो—ते पाठ लिखिये छै।

से णूणं भंते ! हत्थिस्सय कुंथुस्सय समा चेव अपच्चक्खाण किरिया कज्जइ हन्ता गोयमा ! हत्थिस्स कुंथुस्सय जाव कज्जइ । से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ जाव कज्जइ. गोयमा ! अविरइं पडुच्च से तेणट्ठेणं जाव कज्जइ ॥ ६ ॥

(भगवती श० ७ उ० ८)

से० ते. णू० निश्चय. भं० हे भगवन्त ! ह० हाथी नें अने. कुं० कुंथुवा नें. स० सरीखी. चे० निश्चय. अ० अपच्चखाण की क्रिया उपजे. हां. गो० गौतम ! ह० हाथी ने . अने. कु० कुंथुया नें सरीखी अपच्चखाण क्रिया उपजे. से० ते के० केहे अर्थे. भ० भगवन्त ! ए० इम कहीइं. जा० यावत्. क० करे छै. हे गौतम ! अ० अव्रती प्रति आश्री ने. से० ते. ते० इण अर्थे. क० करे.

अथ इहां हाथी कुंथुआ रे अव्रत नी क्रिया बरोबर कही । ते अव्रती हाथी आश्री कही । पिण सर्व हाथी आश्री न कही । हाथी तो देशव्रती पिण छै । ते देशव्रती हाथी थकी तो कुंथुआ रे अव्रत नी क्रिया घणी छै । ते माटे इहां हाथी कुंथुआ रे बरोबर क्रिया कही । ते अव्रती हाथी आश्री कही । पिण सर्व हाथी आश्री नहीं कही । तिम कषाय कुशील नें अपडिसेवी कह्यो । ते विशिष्ट परिणाम ते वेलां आश्री अपडिसेवी कह्यो । तथा दीक्षा लेतां अथवा पुलाक वकुस पडिसेवणा तजी कषाय कुशील में आवे । ते वेलां आश्री अपडिसेवी कह्यो जणाय छै । ते पिण सर्व कषाय कुशील चारित्रिया अपडिसेवी नहीं । वली भगवती श० १० उ० १ पूर्वदिश ने विषे "नो धम्मत्थिकाए" एहवूं पाठ कह्यो । ते पूर्वदिश सम्पूर्ण धर्मास्तिकाय नहीं । पिण देश आश्री धर्मास्तिकाय छै । तिम कषाय कुशील नें पिण अपडिसेवी कह्यो । ते विशिष्ट परिणाम ते आश्री अपडिसेवी छै । पिण सर्व कषाय कुशील चारित्रिया अपडिसेवी नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १२ बोल सम्पूर्ण ।

तथा भगवती श० १२ उ० २ एहवो कह्यो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

सव्वेविणं भंते ! भव सिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति हंता जयंती ! सव्वेविणं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिसंति।

(भगवती श० १२ उ० २)

स० सर्व पिण. भ० हे भगवन्त ! भ० भव सिद्धिक. जीव सीझस्ये. हं० हां ज० जयन्ती श्राविका ! स० सर्व पिण. भ० भवसिद्धिक. जी० जीव. सि० सीजस्ये।

अथ इहां इम कह्यो—सर्व भवी जीव मोक्ष जास्ये। ते मोक्ष जावा योग्य भवी लिया. पिण और अनन्ता भवी मोक्ष न जाय. ते न कह्या। मोक्ष जावा योग्य सर्व भवी जीवां आश्री सर्व भवी सीजस्ये इम कह्यो। तिम कषाय कुशील अपडिसेवी कह्यो। ते पिण विशिष्ट परिणाम नों धणी अप्रमत्त तुल्य अपडिसेवी कह्या जणाय छै। तथा दीक्षा लेतां अथवा पुलाक वक्कुस पडिसेवणा तजी कषाय कुशील में आवे ते वेलां आश्री अपडिसेवी कह्यो जणाय छै। पिण सर्व कषाय कुशील चारित्रिया अपडिसेवी न थी जणाय। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १४ बोल सम्पूर्ण।

तथा भगवती श० १२ उ० ५ में कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

धम्मत्थिकाए जाव पोग्गलित्थकाए एए सव्वे अवगणा जाव अफासा णवरं पोग्गलित्थकाए पंचवगणे दुगंधे पंचरसे अट्ठफासे पगणत्ते ॥ १५ ॥

(भगवती श० १२ उ० ५)

ध० धर्मास्तिकाय जा० यावत्. पो० पुद्गलास्तिकाय ए० ए. स० सर्व अ० वर्ण रहित छै। जा० यावत्. अ० स्पर्श रहित छै. ण० एतलो विशेष. पो० पुद्गलास्ति काय में. पं० पांच वर्ण पं० पांच रस दु० बे गन्ध. अ० आठ स्पर्श परूप्या।

अथ अठे पुद्गलास्तिकाय में ८ स्पर्श कह्या। ते आठ स्पर्शी खंध आश्री कह्या। पिण सर्व पुद्गल परमाणु आदिक में ८ स्पर्श नहीं। तिम कषाय कुशील नियंठा में अपड़िसेवी कह्यो ते विशिष्ट परिणाम ते वेलां आश्री कह्यो। तथा दीक्षा लेतां अथवा पुलाक वक्कुस पड़िसेवणा तजी कषाय कुशील में आवे ते वेलां आश्री अपड़िसेवी कह्यो जणाय छै। पिण सर्व कषाय कुशील अपड़िसेवी जणाय नथी। जिम पुद्गलास्तिकाय नें अष्ट स्पर्शी कह्या अनें सूक्ष्म अनन्त प्रदेशी खंध पुद्गलास्तिकाय में तो छै, पिण अष्ट स्पर्शी नहीं। तिम कषाय कुशील चारित्रिया अपड़िसेवी कह्या, ते अप्रमादी साधु आश्री जणाय छै। पिण सर्व कषाय कुशीलना धणी अपड़िसेवी कह्या दीसै नहीं। इण न्याय कषाय कुशील नियंठा नें अपड़िसेवी कह्यो जणाय छै। तथा वली और किण हीं न्याय सूं अपड़िसेवी कह्यो हुस्यै ते पिण केवली जाणे। पिण कषाय कुशील पणो छांडि श्रावक पणो आदर्यो। वली वैक्रिय. आहारिक. तैजस. लब्धि फोड़े। वली १४ पूर्व धर ४ ज्ञानी में कषाय कुशील पावे ते पिण चूक जावे। इण न्याय कषाय कुशील नों धणी दोष लगावे छै। वली गोतम पिण ४ ज्ञानी आनन्द ने घरे वचन में खलाया। त्यां ने पिण कषाय कुशील नियंठो हुन्तो। त्यां में १४ पूर्व ४ ज्ञान हुन्ता ते माटे। तिवारे कोई कहे—उपासक दशा सूत्र में गोतम में ४ ज्ञान १४ पूर्व नों पाठक कह्यो नथी। ते माटे आनन्द ने घरे वचन में खलाया। ते वेलां १४ पूर्व ४ ज्ञान न हुन्ता। पछे पाया छै। ते वेलां कषाय कुशील नियंठो पिण न हुन्तो। तिण सूं वचन में खलाया इम कहे तेहनों उत्तर। जे आनन्द नें श्रावक ना व्रत आदर्यां नें २० वर्ष थया। तेहने अन्तकाले सन्थारा में गौतम वचन में खलाया। अनें भगवन्त रा प्रथम शिष्य गौतम थया. ते माटे एतला वर्षां में गौतम १४ पूर्व धारी किम न थया। अनें जे उपासक दशा में ४ ज्ञान १४ पूर्व नों पाठ गोतम रे गुणां में न कह्यो—इम कही लोकां नें भ्रम में पाड़े. तेहने इम कहिणो। १४ अङ्ग रच्या तिण में उपासक दशा नों सातमों अङ्ग छठो अङ्ग ज्ञाता नों अनें पांचमों अङ्ग भगवती छै। ते भगवन्ते भगवती रची पछे ज्ञाता रची पछे उपासक दशा रची छै। भगवती नी आदि में गोतम ना गुण कह्या। तिहाँ एहवो पाठ छै। "चोदसपुव्वी चउणाणो वगए" इहां १४ पूर्व अनें ४ ज्ञान गोतम में कह्या। जे पञ्चमा अङ्ग में ४ ज्ञानी १४ पूर्व धारी गोतम ने कह्या, ते भणी सातमा अङ्ग में ४ ज्ञान १४ पूर्व

न कह्या। ते कहिवा रो कंई कारण नहीं। पहिलां ५ मों अङ्ग रच्यो छै, पछे छठो ज्ञाता अङ्ग रच्यो। पछे सातमो अङ्ग उपासक दशा रच्यो। ते माटे पांचमों अङ्ग रच्यो ते वेलां ४ ज्ञानी १४ पूर्व धर था, तो पछे सातमों अङ्ग रच्यो ते वेलां ४ ज्ञान १४ पूर्व किम न हुन्ता। ते अङ्ग अनुक्रमे रच्या तिम इज जम्बू स्वामी सुधर्मा स्वामी नें पूछ्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

जंबू पज्जुवासमाणे एवं वयासी जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स णाश्रा धम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तमस्स णं भंते अंगस्स उवासगदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते।

(उपासक दशा अ० १)

ज० जम्बू स्वामी. प० विनय करी ने. ए० इम बोल्या ज० जो. भं० हे पूज्य! स० श्रमण भगवन्त! जा० यावत्. स० मोक्ष पहुंता तिणे. छ० छठा अङ्ग ना. णा० ज्ञाता. ध० धम कथा ना. अ० एहवा म० अर्थ. प० परूप्या. स० सातमा ना. भ० हे भगवन् पूज्य! अ० अङ्ग ना. उ० उपासक दशा ना. स० श्रमण भगवन्त महावीर जा० यावत्. स० मोक्ष तेणे पहुन्ता. के० कुण. अ० अर्थ. प० परूप्या।

अथ इहां पिण इम कह्यो। जे छठा अङ्ग ज्ञाता ना, ए अर्थ कह्या तो सातमा अंग नों स्यूं अर्थ, इम पांचमों अङ्ग पहिलां थाप्यो पाछे छठो अङ्ग थाप्यो। अनें छठों अङ्ग थापी पछे सातमो अङ्ग थाप्यो ते माटे पांचमां अङ्ग नी रचना में ४ ज्ञान १४ पूर्व धर गोतम ने कह्या। ते सातमा अङ्ग में न कह्या तो पिण अटकाव नहीं। अनें आनन्द रे संथरा रे अवसरे गौतम नें दीक्षा लियां बहुला वर्ष थया ते माटे ४ ज्ञान १४ पूर्व धर किम न हुवे। इणन्याय गौतम ४ ज्ञानी १४ पूर्व धर कषाय कुशील नियंठे हुन्ता। तिवारे आनन्द ने घरे वचन में खलाया छै। तथा वली भगवान् ४ ज्ञानी कषाय कुशील नियंठे थकां लब्धि फोड़ी नें गोशाला नें बचायो ए पिण दोष छै। वली गोशाला ने तिल बतायो, लेश्या सिखाई, दीक्षा

दीधी. ए सर्व उपयोग चूक नें कार्य कीधा। जो उपयोग देवे अनें जाणे ए तिल उखेल नांखसी. तो तिल बतावता इज क्यांने। पिण उपयोग दियां विना ए कार्य किया छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १५ बोल सम्पूर्ण।

इति प्रायश्चित्ताऽधिकारः।



अथ गोशालाऽधिकारः ।

अथ केतला एक कहे—गोशाला नें भगवान् दीक्षा दीधी नहीं । ते एकान्त मृषावादी छै । भगवती श० १५ भगवन्त गौतम नें कह्यो—हे गौतम ! तीनवार गोशाले मोनें कह्यो छै । आप म्हारा धर्म आचार्य, अनें हूं आपरो धर्म अन्तेवासी शिष्य, पिण तेहना वचन ने म्हे आदर न दीधो । मन में पिण भलो न जाण्यो । मौन साधी अनें चौथी वार अङ्गीकार कीधो एहवो पाठ छै । ते लिखिये छै ।

तएणं से गोशाले मंखलि पुत्ते हट्ठतुट्ठे ममं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव णमंसित्ता एवं वयासी तुब्भेणं भंते ! ममं धम्मायरिया अहं णं तुब्भं अंतेवासी ॥ ४० ॥ तएणं अहं गोयमा ! गोशालस्समंखलि पुत्तस्स एय मट्ठं पड़िसुणेमि ॥ ४१ ॥

(भगवती श० १५)

त० तिवारे. से० ते गो० गोशालो. मं० मंखलि पुत्र. ह० हृष्ट तु० तुष्ट थको म० मोने ति० त्रिण वार. आ० आदान. प० प्रदक्षिणा. जा० यावत्. ण० नमस्कार करी ए० इण प्रकारे व० बोल्यो. तु० तुम्हे. भ० हे भगवन्त ! म० म्हारा. ध० धर्माचार्य. अ० हूं तो. तु० तुम्हारो. अ० शिष्य. त० तिवारे. अ० हूं. गो० हे गोतम ! गो० गोशाला नों मं० मंखलि पुत्र नों ए० ए अर्थ प्रति. प० अङ्गीकार करयो ।

अथ इहां भगवान् गौतम नें कह्यो—हे गौतम ! गोशाले मोनें कह्यो ! तुम्हे म्हारा धर्माचार्य. अने हूं तुम्हारो धर्म अन्तेवासी शिष्य तिवारे म्हे अंगीकार कीधो । इहां गोशाला ने अङ्गीकार कीधो चाल्यो ते माटे दीक्षा दीधी । तिहां टीकाकार पिण एहवो कह्यो । ते टीका लिखिये छै ।

एय मट्ठं पडिसुणे मिति—अभ्युपगच्छामि. यच्चैतस्याऽयोग्यस्या प्यभ्युपगमनं भगवत स्तदक्षीणरागतया परिचये नेषत्स्नेहगर्भानुकम्पा सद्भावात् छद्मस्थ तया ऽ नागत दोषानवगमा दवश्यं भावित्वा चैतस्येति भावनीय मिति ।

अथ टीका में पिण कह्यो—ए अयोग्य नें भगवान् अङ्गीकार कीधो ते अक्षीण राग पणे करी. तेहना परिचय करी. स्नेह अनुकम्पा ना सद्भाव थी. अनें छद्मस्थ छै ते माटे आगमिया काल ना दोष ना अजाणवा थकी अङ्गीकार कीधो कह्यो राग परिचय. स्नेह. अनुकम्पा कही। ते स्नेह अनुकम्पा कहो भावे मोह अनुकम्पा कह्यो। जो ए कार्य करवा योग्य होवे तो इम क्यां नें कहिता। तथा छद्मस्थ तीर्थङ्कर दीक्षा लेवे जिण दिन कोई साथे दीक्षा लेवे ते तो ठीक छै। पिण तठा पछे केवल ज्ञान उपना पहिलां और नें दीक्षा देवे नहीं। ठाणांग ठाणे ६ अर्थ में एहवी गाथा कही छै ।

"नपरोवएस विसया नय छउमत्था परोवएसंपि दिंति । नय सीस वग्गं दिक्खंति जिणा जहा सव्वे"

ठाणाङ्ग ना अर्थ में ए गाथा कही. तिहां इम कह्यो छै। छद्मस्थ तीर्थङ्कर पर उपदेश न चाले। अनें आप पिण आगला नें उपदेश न देवे। तथा वली कह्यो। सर्व तीर्थङ्कर शिष्य वर्ग नें दीक्षा न देवे। एहवूं अर्थ में कह्यो छै। अनें भगवन्त आप पोते दीक्षा लीधी ते पाठ में कह्यो। अने टीका में पिण स्नेह रागे करि अङ्गीकार कीधो चाल्यो छै। अनें पाठ में पिण एहवो कह्यो। तीन वार तो अङ्गीकार कीधो नहीं। अनें चौथी वार में "पडिसुणेमि" एहवो पाठ कह्यो। ते प्रतिश्रुत नाम अङ्गीकार नों छै। केतला एक कहे—गोशाला रो वचन भगवान् सुणयो पिण अङ्गीकार न कियो इम कहे ते सिद्धान्त ना अजाण छै। अनें "पडिसुणेइ" पाठ रो अर्थ घणे ठामे अङ्गीकार कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

जे भिक्खू रायाणं रायंतेपुरिया वएज्जा अउसंतो समणा ! णो खलु तुब्भं कप्पइ. रायंतेपुरं णिक्खमित्तएवा,

पविसित्तएवा, आहारेयं पडिग्गहं जायते अहं रायंतेपुराओ असणंवा ४ अभिहडं आहट्टु दलयामि जोतं एवं वदइ पड़िसुणेइ पड़िसुणंतं वा साइज्जइ ।

(निशीथ उ० ६ बो० ५)

जे० जे कोई. भि० साधु, साध्वी नें. रा० राजा ना. रॉ० अन्त पुर नों रक्षक व० कहे. आ० हे आयुष्यवन्त ! स० श्रमण साधु. णो नहीं ख० निश्चय. तु० तुम्ह नें. क० कल्पे. रा० राजा ना अन्त पुर मध्ये णि० निकलवो अने प० पेसवो ते माटे. आ० एतले ल्याव. व० पात्रा ग्रही ने जा० ज्यां लगे तुमने काजे. अ० हूं राजा ना अन्त पुर माहि थी अ० अशनादिक० ४ अ० साहमो. आ० आणी नें. द० देवू. जो० जे साधु नें त० ते रक्षपाल. ए० इस पूछवो व० प्रवेशो कह्यो वचन कहे प्रते. तं० ते. प० सांभले. अङ्गीकार करे. प० सांभलता नें अङ्गीकार करतां नें सा० अनुमोदे. तेहनें प्रायश्चित्त आवे पूर्ववत् दोष छै।

अथ इहां कह्यो—जे राजा ना अन्तःपुर नो रक्षपाल साधु नें कहे—हे आयुष्मन्त श्रमण ! राजा ना अन्तःपुर में निकलवो पेसवो तोनें न कल्पे तो ल्याव पात्रा अन्त पुर मांहि थी अशनादिक आणी ने हूं आपूं। इम अन्तःपुर नो रक्षपाल कहे तेहनों वचन—"पड़िसुणेइ" कहितां अङ्गीकार करे तो प्रायश्चित्त आवे। इहां पिण "पडिसुणेइ" रो अर्थ अङ्गीकार करे इम कह्यो। वली घनेरे घणे ठिकाणे "पडिसुणेइ" रो अर्थ अङ्गीकार कियो। तथा हेम नाममाला ना छठा कापड रे १२४ श्लोक में अङ्गीकार ना १० नाम कह्या छै। ते लिखिये छै। अङ्गीकृत १ प्रतिज्ञात २ ऊरी कृत ३ उररी कृत ४ संश्रुत ५ अभ्युपगत ६ उररी कृत ७ आश्रुत ८ संगीर्ण ६ प्रतिश्रुत १०। इहां पिण प्रतिश्रुत नाम अङ्गीकार नों कह्यो छै। इणन्याय "पड़िसुणेमि" कहितां अङ्गीकार कीधो। इणन्याय चौथी वार गोशाला नें भगवान् अङ्गीकार कियो ते दीक्षा दीधी छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण।

तथा वली आगे गोशाले भगवान् थी विवाद कियो। तिहाँ सर्वानुभूति साधु गोशाला नें कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी पाईण जाणवए सव्वाणुभूई णामं अणगारे पगइ भद्दए जाव विणीए धम्मायरियाणुरागेणं एयमट्ठं असद्दहमाणे उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेइत्ता जेणेव गोशाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ. उवागच्छइत्ता गोशालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी जेवितव गोशाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आरियं धम्मिइं सुवयणं णिसामेइ. सेवि ताव तं वंदइ. णमंसइ. जावं कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासइ. किमंग पुण तुमं गोशाला ! भगवया चेव पव्वाविए भगवया चेव मुंडविए भगवया चेव सेहाविए. भगवया चेव सिक्खाविए. भगवया चेव बहुस्सुई कए भगवओ चेव मिच्छं विप्पडिवण्णे तं मा एवं गोशाला ! णो रिहसि गोशाला ! सच्चेव ते सा छाया णो अण्णा ॥ ६७ ॥

(भगवती श० १५)

ते० तिण काले ते० तिण समयें स० श्रमण. भ० भगवन्त. म० महावीर नों. अ० शिष्य पा० पूर्व दिशा नें. जा० देश नों. सर्वानुभूति. णा० नाम. अ० अनगार. प० प्रकृति भद्रिक. जा० यावत्. विनीत ध० धर्माचार्य ने अनुरागे करि. ए० इण बात नें अ० नहीं श्रद्धता थका. उ० उठीने. ज० जेठे. गो० गोशाला म० मखलि पुत्र छै ते० तठे. उ० आवी नें गो० गोशाला म० मखली पुत्र ने. ए० इण प्रकारे व० बोल्यो। जे० जे कोई. गो० हे गोशाल ! त० तथा रूप स० श्रमण. मा० माहण गुणयुक्त ने अ० पासे. ए० एक पिण. आ० आर्य धा० धार्म्मिक. सु० वचन णि० सुने छै. से० ते पिण. त० तिण ने वं० वांदे छै. ण० नमस्कार करे छै। जा० यावत् क० कल्याण कारी. मं० मङ्गलकारी. दे० धर्मदेव समान चे० ज्ञानवन्त प० पर्युपासना करे छै. कि० प्रश्ने. अं० आमंत्रणे पु० पुनः वली तुमन हे गोशाला मखली पुत्र ! भ० भगवन्त चे० निश्चय प० प्रव्रज्याव्यो. शिष्य पणे अङ्गीकार करवा थी. भ० भगवन्त. चे० निश्चय से० तेजू लेश्या नों उपदेश सिखाव्यो व्रत पणे सेव्यो भ० भगवन्त चे० निश्चय सि० सिखाव्यो.

म० भगवन्ते. बे० निश्चय ब० बहुश्रुति करयो समायो म० भगवन्त संघाते. बे० निश्चय मि० मिथ्यात्व पणू पडिवज्जै छै. त० इण कारणे मा० मत गो० गोशाला ! णो० नहीं. रि० योग्य छै. गो० गोशाला ! ते हीज छाया नहीं. अ० अन्य

अथ इहां सर्वानुभूति साधु, गोशाला नें कह्यो । हे गोशाला ! तोनें भगवान् प्रव्रज्या दीधी. तोनें भगवान् मूंड्यो. तोनें भगवान् शिष्य कियो. तोनें. भगवन्ते सिखायो. तोनें भगवान् बहुश्रुति कीधो । तथा इमज सुनक्षत्र मुनि गोशाला नें कह्यो । त्यां भगवान् सूं इज मिथ्यात्व पडिवज्जे छै । इहां तो प्रत्यक्ष दीक्षा दीधी चाली छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

वली आगे पिण भगवान् गोशाला नें कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

तएणं समणे भगवं महावीरे गोशालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी· जेवि ताव गोशाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा तं चेव जाव पज्जुवासति. किमंग पुण गोशाला ! तुम्हं मए चेव पव्वाविए जाव मए चेव बहुसुई कए. ममं चेव मिच्छं विप्पडिवण्णे तंमा एवं गोशाला जाव णो अण्णा ॥ १०४ ॥

(भगवती श० १५)

त० तिवारे. स० श्रमण. भ० भगवान् म० महावीर गो० गोशाला मं० मंखलि पुत्र नें ए० इण प्रकारे. व० बोल्या. जे० जे गो० हे गोशाला ! त० तथा रूप. स० श्रमण. मा० माहण गुणयुक्त नी वं० तिम प्रकारे जा० यावत् प० पर्युपासना करे छै कि० स्यूं. अं० अंग इति कोमलामंत्रणे. पुणः वली गो० हे गोशाला ! तु० तुम नें. म० म्हें निश्चय प० प्रव्रज्या लेवरावी जा० यावत्. म० म्हे. निश्चय ब० बहुश्रुति करयो. म० मुझ संघाते. मि० मिथ्यात्व पण पडिवज्जे छै । तं० इण कारणे. म० मत. ए० इम. गो० गोशाला ! जा० यावत्. णो० नहीं अ० अन्य.

अर्थ इहां भगवान् पिण कह्यो। हे गोशाला! म्हे तोने प्रव्रज्या दीधी. म्हे तोनैं मूंड्यो शिष्य कीयो. बहुश्रुति कियो. ए तो चौड़े दीक्षा दीधी कही छै। इहां केइ अणहुंती विभक्ति रो नाम लेई कहें:। इहां पांचमी विभक्ति छै। "भगवया चेवं पव्वाविए" ते भगवन्त थकी प्रव्रज्या आई. पिण भगवन्त प्रव्रज्या न दीधी। इम कहै ते झूठ रा बोलणहार छै। "भगवया" पाठ तो ठाम २ कह्यो छै। दशवैकालिक अ० ४ कह्यो 'भगवया एवमक्खायं" त्यारे लेखे इहां पिण पाचमी विभक्ति कहिणी। भगवन्त थकी इम कह्यो, अनें भगवान् न कह्यो तो ए छ. जीवणी काय अध्ययन केणे कह्यो। पिण इहां पञ्चमी विभक्ति नहीं, तीजी विभक्ति छै। ते कर्त्ता अर्थ ने विषे तीजी विभक्ति अनेक जागां छै। सूयगडाङ्ग अ० १ कह्यो "ईसरेण कडे लोए" ईश्वर लोक कीधो। इहां पिण कर्त्ता अर्थ ने विषे तीजी विभक्ति छै। तिम 'भगवया चेव पव्वइये" इहां पिण कर्त्ता अर्थ नें विषे तीजी विभक्ति छै। वली भगवन्ते गोशाला ने कह्यो "तुमं मए चेव पव्वाविए" इहां पिण कर्त्ता अर्थ नें विषे तीजी विभक्ति छै। ते "मए" पाठ अनेक ठामे कह्या छै। भगवती श० ८ उ० १० कह्यो। "मए चत्तारि पुरिस जाया पण्णत्ता" इहां "मए' कहितां म्हे च्यार पुरुष परूप्या। तिम "मए चेव पव्वाविए" कहितां म्हे प्रव्रज्या दीधी। इहां पिण कर्त्ता अर्थ ने विषे तीजी विभक्ति छै। तिवारे कोई कहे "मए" इहां तीजी विभक्ति किहां कही छै। तेहनों उत्तर—अनुयोग द्वार में ८ विभक्ति ओलखाई छै। तिहां 'मए' शब्द रे ठामे तीजी विभक्ति कही छै। ते पाठ लिखिये छै।

तत्तिया कारणं मिकया, भणियंच कयंच तेणं वा मएवा।

(अनुयोग द्वार. नाम विषय)

त० तृतीया विभक्ति का० कारण नें विषे क० कीधो ते दिखाड़े छै. भ० भण्यू. क० कीधूं ते० ते पुरुष म० म्हे. वा० अथवा.

अथ इहां "मए" कहितां तीजी विभक्ति कही छै। ते मांटे भगवान् गोशाला ने कह्यो। "मए चेव पव्वाविए' म्हे प्रव्रज्या दीधी। इहां पिण तीजी विभक्ति छै। इम च्यार ठामे गोशाला री दीक्षा चाली छै। प्रथम तो भगवंते कह्यो—म्हे गोशाला ने अङ्गीकार कियो। वली सर्वानुभूति साधु कह्यो। हे.

गोशाला! तोनें भगवान् प्रव्रज्या दीधी. मूंड्यो यावत् बहुश्रुति कीधो। इम सुनक्षत्र मुनि कह्यो। इमज भगवान् महावीर स्वामी कह्यो। हे गोशाला! म्हे तोनें प्रव्रज्या दीधो यावत् बहुश्रुति कीधो। ए च्यार ठिकाणे दीक्षा चाली। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

वली पांचमे ठिकाणे गोशाला नें कुशिष्य कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

एवं खलु गोयमा! मम अंतेवासी कुसिस्से गोशाले-णामं मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थ चेव कालं किच्चा उड्ढं चंदिम सूरिय जाव अच्चुए कप्पे देवताए उववण्णे।

(भगवती शतक १५)

ए० इम. ख० निश्चय करी नें. गो० हे गौतम! म० माहरो अ० अन्तेवासी कु० कुशिष्य गो० गोशालो म० मखलि नो पुत्र. स० श्रमण साधां नो घातक जा० यावत् छ० छद्मस्थ पणे. चे० निश्चय करी नें का० काल. कि० करी ने (मृत्यु पामी ने) उ० ऊर्ध्व च० चन्द्रमा सू० सूर्य जा० यावत्. अ० अच्युत कल्प नें विषे दे० देवता पणे. उ० उपज्यो.

अथ इहां भगवान् कह्यो—हे गोतम! म्हारो अन्तेवासी कुशिष्य गोशालो मंखलि पुत्र बारमे स्वर्ग गयो। इहां कुशिष्य कह्यो ते पहिलां शिष्य न कियो हुवे तो कुशिष्य किम हुवे। पहिलाँ पूत जन्म्यां विना कपूत किम हुवे पूत थयां कपूत सपूत हुवे। तिम शिष्य कीधा सुशिष्य कुशिष्य हुवे। इण न्याय गोशालो पहिलां शिष्य थयो छै। तिवारे कुशिष्य कह्यो। वली भगवती श० ९ उ० ३३ कह्यो।

"एवं खलु गोयमा! मम अंते वासी कुसिस्से जमाली णामं अणगारे"

इहां जमाली नें कुशिष्य कह्यो। ते पहिला शिष्य थयो हुन्तो। ते माटे कुशिष्य कह्यो। तिम गोशालो पिण पहिलां शिष्य थयो. ते माटे गोशाला नें कुशिष्य

कह्यो। इम पांच ठिकाणे गोशाला री दीक्षा कुशिष्य पणे कही। अनें केई कहे—गोशाला नें दीक्षा न दीधी। ते सिद्धान्त ना उत्थापण हार जाणवा। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

इति गोशालाऽधिकारः।



अथ गुणवर्णनाऽधिकारः ।

केतला एक कहे—भगवान् गौतम नें कह्यो हे गौतम ! मोने १२ वर्ष १३ पक्ष में किञ्चिन्मात्र पाप लाग्यो नहीं । इम कहे ते झूठ रा बोलणहार छै । ते सूत्र नों नाम लेई कहे । ते पाठ लिखिये छै ।

णच्चाणसे महावीरे णोविय पावगं सयम कासी,
अन्नेहिं वाण कारित्था· करंतंपि णाणु जाणित्था ।

(आचाराङ्ग अ० १ अ० ६ उ० ४ गा० ८)

णा० हेय ज्ञेय उपादेय इस्यू जानतां थकां से० तेणे महावीरे· णो० न कीधौ, पा० पाप स० पोते अणकरतां· अनेरा पाहि पाप न करावे क० पाप करतां न णा० नहीं अनुमोदे

अथ अठे तो गणधरां भगवान् रा गुण कह्या । तिहां इम कह्यो । "णच्चा" कहितां· जाणतां थकां भगवान् पाप कियो नहीं करावे नहीं, करता नें अनुमोदे नहीं । ए तो भगवान् रो आचार बतायो छै । सर्व साधां रो पिण ओहीज आचार छै । पिण इहां १२ वर्ष १३ पक्ष रो नाम चाल्यो नहीं ।

अनें इहां गणधरां भगवान् रा गुण वर्णन कीधा । त्यां गुणा में अवगुणा नें किम कहे । गुणा में तो गुणा नें इज कहे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

वली उवाई में साधां रा गुण कह्या । त्यां पहवो पाठ छै ते लिखिये छै ।

उत्तम जाति कुल रूव विणय विणाण लावण वीकम पहाणा सोभाग कंति जुत्ता बहुधणकण णिचय परियालें फीडिया णरवइ गुणाइरेया इत्थिय भोगा सुहं संपलिया किंपागफलोवमं च मुणिय वीसय सोक्खं जल वुंवुय समाणं कुसग्ग जल विन्दु चंचलं जीवियं चणाउणं अधुव मरि रय मीव पडग्गस्स विधुणित्ताणं चइत्ता हिरणं चइत्ता सुवणं जाव पव्वइया ॥ २१ ॥

(सूत्र उवाई)

उ० उत्तम भली जाति मातापक्ष कु० कुल पितापक्ष. रू० शरीर नों आकार वि० नमन गुणरूप वि० अनेक विज्ञान चतुराई पणो ला० शरीर ना गौर वर्णादि आकार नी श्लाघा वि० विक्रम पुरुषाकार प्रधान उत्तम छै. सो० सौभाग्य क० कांति शरीर नी दीप्ति रूप तिणे करी युक्त सहित ब० बहु धन मणि रत्नादिक धान्य गोधूमादिक ना निश्चय कोठार परिवार दासी प्रमुखनें. सर्व नें छांडी न० नरपति राजा तेहना गुणथकी अतिरेक अधिक इ० स्त्री भोग सुख नें विषे अवलिप्त सर्व आनन्दा नें कि० किम्पाक वृक्ष ना फल नी परे प्रथम अन्त्य दुःखप्रद जाणया छै वि० विषय सुखां ने ज० जल बुदबुद नी परे कु० कुशाग्र भागस्थित जल बिन्दु नी परे चंचल जी० जीवित्व ने णा० जाणता छै अ० अध्रुव अनित्य वस्त्र नी रज झाट के जिम छांडी नें हिरण्य छांडी नें सुवर्ण यावत् प्रव्रज्या लीधी

अथ इहां साधां रा गुणा में एहवा गुण कह्या । ते उत्तम जाति उत्तम कुल ना ऊपना कह्या । पिण इम न कह्यो नीच कुल ना ऊपना उर्जन माली आदि देइ । ए अवगुण न कह्या । वली कह्या जे साधु धर्म ध्यान रा ध्यावनहार. विषय सुख नें किंपाक फल (किरमाला) सम जाणणहार. एहवा जे गुण हुन्ता ते कह्या । पिण इम न कह्यो, जे कोई आर्त्तरौद्र ध्यान ना ध्यावनहार. सीहादिक अणगार वली केई निर्याणा रा करणहार. नव नियाणा रा करणहार. नव नियाणा किया. तेहवा साधु केई उपयोग ना चूकणहार. केई तामस ना आणणहार. एहवा अवगुण न कह्या । जे साधां में गुण हुंता ते वखाण्या । पर इम न जाणिये—जे वीर रा. साधु रे कदेइ आर्त्तध्यान आवे इज नहीं. माठा परिणामे

क्रोधादिक आवे इज नहीं इम नथी। कदाचित् उपयोग चूकां दोष लागे। परं गुण वर्णन में अवगुण किम कहे। तिम गणधरां भगवान् रा गुण किया तिण में तो गुण इज वर्णव्या. जेतलो पाप न कीधो तेहिज आश्री कह्यो। परं गुण में अवगुण किम कहे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण।

तथा कोणक राजा ना गुण कह्या ते पाठ लिखिये छै।

सव्वगुण समिद्धे खत्तिए मुईए मुद्धाहि सित्ते माउपिउ सुजाए।

(उवाई सूत्र)

स० सर्व समस्त जे राजाना गुण तिणे करी समृद्ध परिपूर्ण ख० क्षत्रिय जातिवन्त छै मु० मोद सहित छै माता पितादिक परिवार मिलि राज्याभिषेक कीधो छै सा० मातापिता नों विनीत पणे करी सत्पुत्र छै.

अथ अठे कोणक नें सर्व राजा ना गुण सहित कह्यो। मातापिता नों विनीत कह्यो। अनें निराचलिया में कह्यो। जे कोणक श्रेणिक नें बेड़ी बन्धन देई पोते राज्य बैठ्यो तो जे श्रेणक नें बेड़ी बन्धन बांध्यो ते विनीत पणो नहीं। ते तो अविनीत पणो इज छै। पिण उवाई में कोणक ना गुण वर्णव्या। तिणमें जेतलो विनीत पणो तेहिज वर्णव्यो। अविनीत पणो गुण नहीं. ते भणी गुण कहिणे में तेहनों कथन कियो नहीं। तिम गणधरां भगवान् रा गुण किया. त्यां गुणां में जेतला गुण हुन्ता तेहिज गुण बखाण्या परं लब्धि फोड़ी ते गुण नहीं। ते अवगुण रो कथन गुणां में किम करे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

तथा वली उवाई प्रश्न २० श्रावकां ना गुण कह्या। तिहां एहवा पाठ छै ते लिखिये छै।

से जे इमे गामागर नगर सन्निवेसेसु मनुसा भवंति तंजहा अप्पारंभा अप्प परिग्गहा धम्मिया धम्माणुया धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मपलोइ धम्म पलिज्जणा धम्म समुदायरा धम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा साहु ॥ ६४ ॥

(उवाई प्रश्न २०)

से० ते जे० जो गा० ग्राम आगार नगर यावत् सन्निवेशानें विषे म० मनुष्य भ० हुवे छै अ० अल्प आरंभवन्त अ० अल्प परिग्रहवन्त ध० धर्मश्रुत चारित्र रूप ना करणहार ध० धर्मश्रुत चारित्र रूप नें केडे चाले छै. ध० धर्मश्रुत चारित्र रूप नें सभलावे ते धर्मख्यात कहीजे। ध० धर्मश्रुत चारित्र रूप नें ग्रहिवा योग्य जाणी वार २ तिहां दृष्टि प्रवर्त्तावे ध० धर्मश्रुत चारित्र नें विषे प्रकर्षे सावधान छै अथवा धर्म ने रागे रंगाणा छै। प्रमाद रहित छै आचार जेहनों ध० धर्मश्रुत चारित्र ने अखंड पालवे श्रुत ने आराधिवैज वि० वृत्ति आजीविका कल्पना करतां छतां सु० सुष्ठु भलो शील आचार है जेहनों सु० सुष्ठु भलो व्रत है जेहवो. सु० भले कर्त्तव्ये करी आनन्द रा माननहार सा० श्रेष्ठ.

अथ अठे श्रावक नें धर्म ना करणहार कह्या, तो ते स्यूं अधर्म न करे-कांई। वाणिज्य व्यापार संग्राम आदिक अधर्म छै, ते अधर्म ना करणहार छै पिण ते श्रावकां रा गुण वर्णन में अवगुण किम कहे। जेतला गुण हुंता ते कह्या छै। पिण अधर्म करे ते गुण नहीं। वली सुशील ते श्रावकां नो भलो शील आचार कह्यो। पिण ते कुशील सेवे ते सुशील पणो नहीं। ते माटे तेहनों कथन गुण में नहीं कियो। तिम भगवान् रे गुण वर्णन में लब्धि फोडी ते अवगुण नो वर्णन किम करे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

तथा गौतम रा गुण कह्या। तिहां एहवो पाठ छै ते लिखिये छै।

तेणं कालेणं तेणं समयेणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अन्तेवासी इन्द्रभूती णामं अणगारे गोयम गोत्तेणं सत्तुस्सेहे सम चउरंस संठाण संठिए वज्जरिसह नाराय संघयणे कणग पुलगणिघस पम्ह गोरे उग्गतवे. दित्ततवे. तत्ततवे. महातवे. घोरतवे. उराले. घोरे. घोरगुणे. घोर तवस्सी. घोर बंभचेरवासी. उच्छूढ सरीरे।

(भगवती श० १ उ० १)

ते० तिण काल. ते० तिण समय स० श्रमण. भगवत महावीर नो. जे० जेठो. अ० शिष्य. इ० इन्द्र भूति नाम. अ० अनगार गो० गोतम नो. स० सात हाथ प्रमाण उच्च. स० समचतुरस्र संठान स० सहित व० वज्र ऋषभ ना राज संघयणी. क० सुवर्ण. पु० कसौटी ने विषे. घिस्यो थको तिण समान. प० पद्म गौर वर्ण. उ० तीव्र तप. दि० दीप्ततप. कर्मवन दहवा समर्थ. त० तप्या छै तप जेहनें. एहवा. म० महा तपवन्त छै। उ० उदार तपवन्त. घो० निर्दय (कर्म हणवा नें) घो० अनेरो आदरी न सके एहवा घोर गुणवन्त छै। घो० घोर (तीव्र) ब्रह्मचारी छै उ० शुश्रूषा रहित जेहनों शरीर छै।

अथ अठे एतला गोतम ना गुण कह्या छै। अनें गोतम में ४ कषाय ४ संज्ञा स्नेहादिक छै। तथा उपयोग चूके तिण रो पड़िकमणो पिण करता पिण ते अवगुण इहां न कह्या। गौतम ना गुण वर्णव्या पिण इम न कह्यो जे गौतम उपयोग ना चूकणहार सकषायी संज्ञा सहित प्रमादी इत्यादिक अवगुण हुन्ता। ते पिण न कह्या। स्तुति में निन्दा अयुक्त छै। ते माटे तिम गणधरां भगवान् रा गुण कह्या. त्यां गुणा में अवगुण न ही कह्या। जेतलो पाप नहीं कीधो तेहिज वखाण्यो छै। अनें लब्धि फोड़ी तिण रो पाप लाग्यो छै। वली समय २ सात २ कर्म लागता हुन्ता ते पिण न कह्या, ते अवगुण छै ते माटे स्तुति में निन्दा न शोभे। अनें केइ एक पाखंडी कहे—गौतम नें भगवान् कह्यो। हे गोतम! १२ वर्ष १३ पक्ष

में मो ने किञ्चिन्मात्र पाप लाग्यो नहीं। ते झूठ रा बोलणहार छै। अनें भगवान् नें निद्रा आई तिण में नेहीज पाप लाग्यो कहे छे। प्रमाद कहे छै। प्रमाद री ओलखणा बिना भगवान् री द्रव्य निद्रा में प्रमाद कहे छै। अनें वली किञ्चिन्मात्र पाप लागे नहीं इम पिण कहिता जावे छै। त्यां जीवां ने किम समझाविये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

इति गुणवर्णनाऽधिकारः।



अथ लेश्याऽधिकारः।

वली केई पाषंडी कहे—भगवान् में भाठी लेश्या पावे नहीं। भगवान् में लेश्या किहां कही छै। तत्रोत्तरम्—कषाय कुशील नियंठा में ६ लेश्या कही छै। अनें भगवान् में कषाय कुशील नियंठो कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

कषाय कुसीले पुच्छा, गोयमा! तित्थेवा होज्जा अतित्थेवा होज्जा। जइ तित्थेवा होज्जा किं तित्थयरे होज्जा पत्तेयबुद्धे होज्जा गोयमा! तित्थगरे वा होज्जा पत्तेयबुद्धे वा होज्जा एवं नियंठेवि. एवं सिणाते।

(भगवती श० २५ उ० ६)

क० कषाय कुशील नी पृच्छा गो० हे गौतम! ति० तीर्थ नें विषे पिण हुइं. अ० अनें अतीर्थ नें विषे पिण हुइं. छद्मस्थ अवस्था ने विषे तीर्थंकर पिण हुइं. तीर्थंकर ते तीर्थनूं स्थापक पिण तीर्थ माहि नहीं। ज० जो तीर्थ नें विषे हुइं तो. कि स्यू तीर्थंकर नें विषे हुइं. प० प्रत्येक बुद्ध नें विषे हुइं. हे गौतम! ति० तीर्थंकर नें विषे पिण हुइं. प० प्रत्येक बुद्ध ने विषे हुइं ए० एव निर्ग्रन्थ अने ए० एवं स्नातक जाणवा.

अथ अठे तीर्थङ्कर में छद्मस्थ पणे कषाय कुशील नियंठो कह्यो छै। तिण सूं भगवान् में कषाय कुशील नियंठो हुन्तो। अनें कषाय कुशील नियंठे ६ लेश्या कही छै। ते पाठ लिखिये छै।

कषाय कुसीले पुच्छा गोयमा ! सलेस्सा होज्जा णो अलेस्सा होज्जा जइ सलेस्सा होज्जा सेणं भंते! कइ सुलेस्सासु होज्जा, गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा ।

(भगवती श० २५ उ० ६)

कषाय कुशील नी पृच्छा हे गौतम ! स० लेश्या सहित हुइं णो० नहीं अलेश्यावन्त हुइं. ज० जो लेश्या सहित हुइ तो से० ते. भगवन्त ! क० केतली लेश्या नें विषे हुइं गो० हे गौतम ! छ० ६ लेश्या नें विषे हुइ ।

अथ इहां कषाय कुशील नियंठा में छह ६ लेश्या कही छै। ते न्याय भगवान् में ६ लेश्या हुवे तथा पन्नवणा पद ३६ तैजस लब्धि फोड्यां उत्कृष्टी पांच क्रिया कही। अनें हिंसा करे ते कृष्ण लेश्या ना लक्षण कह्या। उत्तराध्ययन अ० ३४ गा० २१ "पंचासवपव्वता" इति वचनात् पञ्च आश्रव में प्रवर्त्ते-ते कृष्ण लेश्या ना लक्षण कह्या। अनें भगवान् तेजू शीतल लेश्या रूप लब्धि फोड़ी तिहां उत्कृष्टी ५ क्रिया कही। ते माटे ए कृष्ण लेश्या नों अंश जाणवो। कोई कहे कृष्ण लेश्या ना लक्षण तो अत्यन्त खोटा छै। ते भगवान् में किम हुवे। तेहनों उत्तर—प्रथम गुण ठाणे ६ लेश्या छै। तिहां शुक्ल लेश्या ना तो लक्षण अत्यन्त निर्मल भला कह्या छै। ते प्रथम गुण ठाणे किम पावे। जिम मिथ्यात्वी में शुक्ल लेश्या नों अंश कही जे। तिम भगवान् में पिण कृष्ण लेश्या नों अंश कही जे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

केतला एक कहे—साधु में ३ माठी लेश्या पावै इज नहीं ते पिण झूठ छै। भगवान् तो घणे ठामे साधु में ६ लेश्या कही छै। प्रथम तो भगवती श० २५ उ० ६ कषाय कुशील नियंठे ६ लेश्या कही छै। तथा भगवती श० २५ उ० ७

सामायक छेदोपस्थापनीक चारित्र में ६ लेश्या पाठ में कही छै। तथा आवश्यक अ० ४ में कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

पडिक्कमामि छहिं लेसाहिं कराहलेशाए. नील लेसाए. काउलेसाए. तेउलेसाए. पम्ह लेसाए. सुक्क लेसाए:

(आवश्यक अ० ४)

निवर्त्तूं छू ६ लेश्या नें विषे जे कोई विपरीत करवो ते कृण ते कहे छै। वि० कृष्ण लेश्या कलह चोरी मृषावाद इत्यादिक ऊपर अध्यवसाय ते कृष्ण लेश्या जाणवी. नी० ईर्षा पर गुण नू असहिवो अमर्ष अत्यन्त कदाग्रह तप रहित कुशास्त्र रूप अविद्या माया इत्यादिक लक्षणे करी नील लेश्या. का० वक्र वचन वक्र. आचार. आप रो दोष ढांके दुष्ट बोले चोर पर सम्पदा सही न सके. इत्यादिक लक्षणे करी काउ लेश्या जाणिये ते० तेउ लेश्या दया दान प्रिय धर्मी दृढ़ धर्मी कीधो उपकार जाणे विविध गुणवन्त तेजू लेश्या. प० पद्म लेश्या दान परीक्षावन्त शील उत्तम साधु पूज्य क्रोधादिक कषाय उपशमान्या सु० सदा मुनीश्वर राग द्वेष रहित हुवे ते शुक्ल लेश्या जाणवी

अथ इहां पिण ६ लेश्या कही जो अशुभ लेश्या में न वर्त्ते तो ए पाठ क्यूं कह्यो। तथा "पडिक्कमामि चउहिं झाणेहिं अट्टेणं झाणेणं रुद्देणं झाणेणं धम्मेणं झाणेणं सुक्केणं झाणेणं" इहा साधु में ४ ध्यान कह्या। जिम आर्त्तरौद्र ध्यान. पावे तिम कृष्ण नील कापोत लेश्या पिण आवे। तेहनों प्रायश्चित्त आवे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण।

तथा पन्नवणा पद १७ उ० ३ में एहवा पाठ कहा है। ते लिखिये छै।

कण्ह लेस्सेणं भंते! जीवे कइ सुणाणेसु होज्जा, गोयमा! दोसु वा तिसु वा चउसु वा णाणेसु होज्जा दोसु

होज्जामाणे आभिणिबोहियणाणे सुत णाणेसु होज्जा तिसु होज्जमाणे अभिणिबोहियणाणे सुय णाणे ओहियणाणे सु होज्जा अहवा तीसु होज्जमाणे आभिणिबोहिय सुय णाणे मण पज्जवणाणे सु होज्जा चउसु होज्जमाणे आभिणिबोहिय-णाणे सुय णाणे ओहिणाणे मणपज्जवणाणेसु होज्जा ।

(पन्नवणा पद १७ उ० ३)

क० कृष्ण लेश्यावन्त. भं० हे भगवन्त ! जीव. क० केतला ज्ञानवंत हुइ गो० हे गौतम ! दो० बे ज्ञानवंत. ति० अथवा त्रिण ज्ञानवंत. च० अथवा च्यार ज्ञानवत हुइ. दो० बे ज्ञानवत हुइ तो आ० मतिज्ञान. सु० श्रुतज्ञान हुइं. ए ज्ञानवत. ति० त्रिण ज्ञानवत हुइं अ० मतिज्ञान. सु० श्रुतज्ञान अवधि ज्ञानवत ए त्रिण ज्ञानवत हुइं. अ० अथवा त्रिण ज्ञानवंत हुइं तो आ० मतिज्ञान. सु० श्रुतज्ञान. म० मन पर्यव ज्ञान. ए त्रिण ज्ञानवत हुइं. अवधि ज्ञान रहित नें पिण मन पर्यव ज्ञान उपजे ते माटे दोष नहीं. च० च्यार ज्ञानवत हुइं तो आ० मतिज्ञान. सु० श्रुतज्ञान. उ० अवधि ज्ञानवत. म० मनः पर्यव ज्ञान ए चार ज्ञान-वत हुइं

अथ अठे मन पर्यवज्ञानी में ६ लेश्या पाठ में कही छै । तिहां टीकाकार पिण मन पर्यवज्ञानी में कृष्ण लेश्या ना मंद अध्यवसाय कह्या । ते टीका लिखिये छै ।

ननु मनः पर्यवज्ञान मति विशुद्धस्य जायते. कृष्णा लेश्या च संक्लिष्टा ऽध्यवसाय रूपा, ततः कृष्णा लेश्याकस्य मनःपर्यव ज्ञान संभव उच्यते । इह लेश्यानां प्रत्येक मसंख्येय लोकाकाश प्रदेश प्रमाणानि अध्यवसाय स्थानानि तत्र कानिचिन्मन्दानुभावान्यध्यवसाय स्थानानि. प्रमत्त संयतस्यापि लभ्यन्ते । अतएव कृष्णा नील कापोत लेश्याः प्रमत्त संयताना गीयन्ते । मनः पर्यव ज्ञानञ्च प्रथमतो ऽप्रमत्तस्यो त्पद्यते. ततः प्रमत्त संयतस्यापि लभ्यते । इति सम्भवति कृष्णा लेश्यापि मनः पर्यव ज्ञानं चतुर्थाभिनिबोधक श्रुतावधि मनः पर्यव ज्ञानेषु ।

अंत्र टीका में कह्यो—लेश्या नां असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाण अध्यवसाय ना स्थानक छै। तिण में कृष्ण नील कापोत ना मंदानुभाव अध्यवसाय स्थानक प्रमत्त संयती में लाभे—तिण में मन पर्यव ज्ञान सम्भवे, इम कह्यो। ए अध्यवसाय रूप भाव लेश्या छै। ते भणी मन पर्यव ज्ञानी में पिण माठी लेश्या पावे छै। तथा भगवती श० ८ उ० २ कृष्ण नील कापोत लेश्या में ४ ज्ञान नी भजना कही। इत्यादिक अनेक ठामे साधु में ६ लेश्या कही छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

तिवारे कोई कहे भगवती में कह्यो—प्रमादी अप्रमादी में कृष्णादिक ३ लेश्या न कहिणी। ते माटे साधु में माठो लेश्या न पावें। तेहनों उत्तर—तिण ठामे एहवो पाठ छै ते लिखिये छै।

कराह लेस्सस्स नील लेस्सस्स काउ लेस्सस्स जहा ओहि-या जीवा णवरं पमत्ता पमत्ता ण भाणियव्वा।

(भगवती श० १ उ० १)

क० कृष्ण लेश्या. नी० नील लेश्या. का० कापोत लेश्या ज० जिम. ओ० ओघिक सर्व जीव. ण० पिण एतले विशेष. प० प्रमत्त अप्रमत्त न कहिवो।

अथ अठे तो इम कह्यो—कृष्ण. नील. कापोत. लेश्यां जिम औधिक (समूचे जीव) तिम कहिवो। पिण एतलो विशेष प्रमादी. अप्रमादी. ए बे भेद संयती रा न करवा। जे अधिक पाठ में संयती रा बे भेद किया ते बे भेद कृष्ण. नील.. कापोत लेश्यी संयती रा न हुवे। ते कृष्णादिक ३ प्रमादी में छै। अनें अप्रमादी में नथी। ते माटे बे भेद करवा नथी। बाकी ओघिक नों पाठ कह्यो, तिम कहिवो। ते ओघिक नों पाठ लिखिये छै।

जीवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा संसार समावण्णगाय, असंसार समावण्ण गाय। तत्थणं जे ते असंसार समावण्ण गाय, तेणं सिद्धा सिद्धाणं णो आयारंभा जाव अणारंभा। तत्थणं जे ते संसार समावण्णगा ते दुविहा प० तं० संजयाय, असंजयाय। तत्थणं जे ते संजया ते दुविहा प० तं० पमत्त संजयाय अपमत्त संजयाय। तत्थणं जे ते अपमत्त संजयातेणं णो आयारंभा णो परारंभा जाव अणारंभा। तत्थणं जे ते पमत्त संजया ते सुहं जोगं पडुच्च णो आयारंभा णो परारंभा जाव अणारंभा असुहं जोगं पडुच्च आयारंभावि, परारंभावि, तदुभयारंभावि णो अणारंभा"

(भगवती श० १ उ० १)

जी० जीव दु० बे प्रकारे. प० कह्या छै. संसार समापन्न असंसार समापन्न. त० त० तिहां जे असंसार समापन्न. ते० ते सिद्ध णो० नहीं आत्मारंभी यावत् अनारम्भी तिहां. जे० जे ते० ते. स० संसार समापन्न जीव. त० ते दु० बेहु प्रकारे प० कह्या छै स० संयती अ० असंयती. त० तिहां. जे० जे. ते० ते स० संयमी. ते० ते. दु० बेहुं प्रकारे. प० परूप्या त० ते कहे छै. प० प्रमत्त संयमी. अ० अप्रमत्त संयमी त० तिहां जे० जे. ते० ते. अ० अप्रमत्त संयमी. ते० ते. आत्मारंभी नहीं. परारंभी नहीं. उभयारंभी नहीं अ० अनारंभी छै. त० तिहां. जे० जे. ते० ते प० प्रमत्त संयमी ते० ते. सु० शुभ योग प्रति अंगीकार करी ने णो० आत्मारम्भी नहीं. प० परारम्भी नहीं. उभयारम्भी नहीं. अ० अनारम्भी छै. अ० अशुभ योग मन वचन काया ना अङ्गीकार करी ने. आ० आत्मारम्भी पिण हुइ प० परारम्भी पिण हुई. उभयारम्भा पिण हुई. णो० अनारम्भी न हुई.

अथ अठे ओघिक पाठ कह्यो—तिण में संयती रा २ भेद प्रमादी. अप्रमादी. किया। अनें कृष्ण, नील. कापोत. लेश्या नें ओघिक नो पाठ कह्यो। तिम कहिवो. पिण एतलो विशेष—संयती रा प्रमादी. अप्रमादी. ए २ भेद न करवा। ते किम. प्रमत्त में कृष्णादिक ३ लेश्या हुवे। अनें अप्रमत्त में न हुवे, ते माटे २ भेद वर्ज्या। अनें साधु में कृष्णादि ३ न हुवे तो "संजया न भाणियव्वा" एहवूं

कहिता। पिण पहवो तो पाठ कह्यो नहीं। जे साधु में कृष्णादिक ३ लेश्या न होवे तो पहिलो बोल संयती रो छोड़ नें प्रमत्त, अप्रमत्त, ए २ भेद संयती रा किया ते क्यां ने वरजे। ए तो साम्प्रत कृष्णादि ३ लेश्या संयती में टाली नथी। ते भणी संयती में कृष्णादिक ३ लेश्या छै। अनें प्रमादी, अप्रमादी, ए २ भेद संयती रा करवा आश्री वर्ज्यां छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

तथा इतरो कह्यां समझ न पड़े तो वली भगवती शतक १ उ० २ कह्यो—ते पाठ लिखिये छै।

णेरइयाणं भंते ! सव्वे समवेदना, गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे. सेकेणट्ठेणं भंते ! गोयमा ! णेरइया दुविहा पगणत्ता तं जहा सरिणभूयाय. असरिणभूयाय। तत्थणं जे ते सरिण-भूया तेणं महावेदणा तत्थणं जे ते असरिणभूया तेणं अप्प-वेयण तरागा सेतेणट्ठेणं जाव णो समवेदणा॥

(भगवती श० १ उ० २)

ने० नारकी भं० हे भगवन्त ! स० सघलाई. स० समवेदनावन्त हुई गो० हे गौतम ! णो० ए अर्थ समर्थ नहीं से० ते क्यां माटे. गो० हे गौतम ! णे० नारकी. दु० बिहुं प्रकारे. प० कह्या. तं० ते कहे छै स० सन्नी भूत अ० असन्नी भूत. त० तिहां जे. स० सन्नी भूत ते० तेहनें. म० महा वेदना हुई. त० तिहां. जे० जे. ते० ते. अ० असन्नी भूत ते० तेहनें. अ० वेदना थोड़ी हुई से० ते माटे. जा० यावत. णो० नहीं स० सरीखी वेदना.

ए समचे नारकी रा नव प्रश्न में सातमों ओधिक प्रश्न कह्यो हिवे समुचे मनुष्य ना नव प्रश्न कह्या तिण में आठमों क्रिया नों प्रश्न कहे छै। ते पाठ लिखिये छै।

मणुस्साणं भंते ! सव्वे सम किरिया, गोयमा ! णोइ-णट्ठे समट्ठे. से केणट्ठेणं भंते, ! गोयमा ! मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता तं जहा सम्मदिट्ठी. मिच्छदिट्ठी. सम्म मिच्छदिट्ठी. तत्थणं जे ते सम्मदिट्ठी ते तिविहा प० तं० संजयाय. असं-जयाय. संजया संजयाय। तत्थणं जे ते संजया ते दुविहा प० तं० सराग संजयाय. वीयराग संजयाय. तत्थणं जे ते वीयराग संजया तेणं अकिरिया तत्थणं जे ते सराग संजया ते दुविहा प० तं० पमत्त संजयाय. अपमत्त संजयाय। तत्थणं जे ते अपमत्त संजया ते सिणं एगा माया वत्तिया किरिया कज्जइ। तत्थणं जे ते पमत्त संजया तेसिणं दो किरिया कज्जइ. तं० आरंभियाय. माया वत्तियाय. तत्थणं जे ते संजयासंजया तेसिणं आदिमाओ तिण्णि किरियाओ कज्जंति। असंज-याणं चत्तारि किरियाओ कज्जंति मिच्छदिट्ठीणं पंच सम्म मिच्छदिट्ठीणं पंच ॥१३॥ वाण मंतर जोइस वेमाणिया जहा असुर कुमारा णवरं वेदणाए णाणत्तं माई मिच्छदिट्ठी उववण्ण गाय अप्प वेयणतरा, अमायी समदिट्ठी उववण्ण-गाय महा वेयण तरा भाणियव्वा। जोइस वेमणियाय ॥१४॥ सलेस्साणं भंते णेरइया सव्वे समाहारगा ओहियाणं सले-स्साणं. सुक्कलेस्साणं ए एसिणं तिण्हं एक्कोगमो कण्ह लेस. णील लेस्साणंपि एक्कोगमो। णवरं वेदणाए मायी मिच्छ-दिट्ठी उववण्णगाय अमायी सम्मदिट्ठी उववण्णगाय भाणि-यव्वा। काउलेस्सा णवि एव मेव गमो णवरं णेरइए जहा

ओहिए दंडए तहा भाणियव्वा. तेउलेस्सा. पम्हलेस्सा. जस्स अत्थि जहाओ. हिओ तहा भाणियव्वा णवरं मणुस्सा सराग वीतरागा ण भाणियव्वा।

(भगवती श० १ उ० २)

म० मनुष्य. भं० हे भगवन्त! स० सम क्रियावन्त. गो० हे गोतम! णो० ए अर्थ समर्थ नहीं. से० ते के० स्यां माटे गो० गोतम! म० मनुष्य. ति० त्रिण भेदे कह्या. त० ते कहे छै स० सम्यग् दृष्टि मि० मिथ्या दृष्टि. स० सम्यग् मिथ्या दृष्टि. ते० तिहां जे सम्यक्-दृष्टि. ते० ते. ति० त्रिण प्रकारे प० कह्या त० ते कहे छै स० संयमी साधु अ० असंयमी. सं० संयमासंयमी त० तिहां जे संयमी साधु ते दु० बिहुं प्रकारे कह्या त० ते कहे छै. सराग संयमी अक्षीण अनुपशान्त कषाय दशमा गुण ठाणा लगे सराग संयमी कहीइं. वी० वीतराग संयमी ते उपशान्त कषाय क्षीण कषाय त० तिहां जे ते. वी० वीतराग संयमी. ते० तेहनें. अ० क्रिया न हुइ. त० तिहां जे ते सराग संयमी ते बिहुं भेद कह्या त० ते कहे छै. प० प्रमत्त संयमी अ० अप्रमत्त संयमी. त० तिहां जे ते. अ० अप्रमत्त संयमी. ते० तेहनें. ए० एक माया वत्तिं नी क्रिया उपजे. अक्षीण कषाय पणा थकी. त० तिहां जे ते. प० प्रमत्त संयमी. ते० तेहने दो० दोय क्रिया उपजे ते० ते कहे छै आ० अप्रमत्त संयमी ने सर्व प्रमत्त योग आरंभ की क्रिया कहे अक्षीण पणा थी मायावत्तिं नी क्रिया कहीइं. त० तिहां जे ते. सं० संयता संयति. ते० तेहनें. आ० प्रथम री ति० तीन कि० क्रिया. क० उपजे छै अ० असंयती ने. च० चार क्रिया. क० उपजे छै. मि० मिथ्या दृष्टि ने ५ स० सम मिथ्या दृष्टि ने ५ (क्रिया उपजे छै) ॥१३॥

वा० वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक. ज० यथा अ० असुर कुमार ण० एतलो विशेष वे० वेदना ने विषे. णा० नाना प्रकार मा० मायी मिथ्या दृष्टि. उ० उपजे. अ० अल्पवेदनावन्त. अ० अमायी सम्यक्दृष्टि उ० उपजे म० महा वेदनावन्त भा० कही जे. जो० ज्योतिषी वैमानिक ने. ॥१४॥

स० सलेशी. भं० भगवन्! णा० नारकी स० सर्व. स० सम आहारी. ओ० औधिक. स० सलेशी शु० शुक्ल लेशी. ए० इण तीन ने विषे एक सरीखो. क० कृष्ण लेश्या नील लेश्या ने विषे ए० एक सरीखा णा० एतले विशेष वे० वेदना रे विषे. मा० मायी मिथ्या दृष्टि ऊपना ते महा वेदना वन्त अ० अने अमायी सम्यग् दृष्टि ऊपना ते अल्प वेदनावन्त. म० मनुष्य. कि० क्रिया नें विषे स० सराग संयमी वीतराग संयमी प० प्रमत्त संयमी. अ० अप्रमत्त संयमी ते कृष्ण लेश्या ना दण्डक ने विषे न कहिवा. का० कापोत लेश्या दण्डक ते नील लेश्या दण्डक सरीखू विण ण० एतले विशेष. नारक पदे ज० जिम औधिक दंडके नारकी बिहुं भेद छै संज्ञी

भूत अनें असंज्ञी भूत. असंज्ञी प्रथम ऊपजे तिहां कपोत लेश्या तं० तेजू लेश्या. प० पद्म लेश्या. ज० जेह जीवनें छै ते जीवनें आश्री ने त० तिम ओघिक दंडक तिम भणवो नारकी विकलेन्द्रिय तेजस्काय. वायुकाय नें प्रथम नी ३ लेश्या पिण. ग० एतलो विशेष. केवल ओघिक दंडक के क्रिया सूत्रे मनुष्य सरागी वीतरागी विशेषण कह्या। ते इहां न कहिवा तेजू पद्म लेश्या सरागी नें हुई. पिण वीतराग नें न हुई. वीतराग नें एक शुक्ल लेश्या न हुवे ते माटे सराग वीतराग न भणवा.

अथ इहां कह्यो—कृष्ण. नील. लेशी नेरिया तो ओघिक नेरिया ना नव प्रश्न नी परे. पिण एतलो विशेष. वेदना में फेर. ओघिक में तो सन्नी भूत नेरिया रे घणी वेदना कही। असन्नी भूत नेरिया रे थोड़ी वेदना कही। अनें इहां मायी मिथ्या दृष्टि रे घणी वेदना अनें अमायी सम्यक्दृष्टि रे थोड़ी वेदना कहिणी। ते किम् असन्नी मरी कृष्ण नील लेशी नेरिया न हुवे। ते माटे सन्नी भूत असन्नी भूत कहिणा। अनें कृष्ण लेशी मनुष्य पिण ओघिक मनुष्य ना प्रश्न नी परे, पिण क्रिया नें फेर. समचे मनुष्य ना भेद क्रिया में किया। तिम कृष्ण नील लेशी मनुष्य ना भेद करणा। पिण सरागी वीतरागी. प्रमादी. अप्रमादी. ए भेद न करवा। जे समचे मनुष्य ना ३ भेद सम्यग्दृष्टि. मिथ्यादृष्टि. सम्यक्मिथ्यादृष्टि. तिम कृष्ण नील लेशी मनुष्य ना ३ भेद सम्यक्दृष्टि. मिथ्यादृष्टि. सम्यक्मिथ्यादृष्टि. तिम समचे मनुष्य ना ३ भेद में सम्यक्दृष्टि मनुष्य रा ३ भेद—संयती, असंयती, संयतासंयती, तिम कृष्ण नील लेशी मनुष्य रा पिण ३ भेद करवा संयती, असंयती. संयतासंयती। इण न्याय संयती में तो कृष्ण नील लेश्या हुवे, अनें आगे समचे मनुष्य रा भेदां में संयती रा २ भेद—सरागी वीतरागी. । अनें सरागी रा २ भेद—प्रमादी, अप्रमादी. ए सरागी वीतरागी प्रमादी अप्रमादी भेद कृष्ण नील लेशी संयती मनुष्य रा न हुवे। वीतरागी अनें अप्रमादी में कृष्ण नील लेश्या न हुवे। ते माटे २-२ भेद न हुवे। सरागी मे तो कृष्ण से नील लेश्या हुवे, परं वीतरागी में न हुवे। ते माटे संयती रा २ भेद सरागी वीतरागी न करवा। अनें प्रमादी में तो कृष्ण नील लेश्या हुवे. परं अप्रमादी में न हुवे। ते माटे सरागी रा २ भेद प्रमादी, अप्रमादी न करवा। इण न्याय कृष्ण नील लेशी संयती रा सरागी वीतरागी प्रमादी अप्रमादी भेद करवा वर्ज्या। परं संयती वर्ज्यों नहीं। संयती में कृष्ण नील लेश्या छै। अनें जो संयती में कृष्णादिक न हुवे तो इम कहिता "संजया न भाणियव्वा" ए पुर नों संयती बोल छोड़ी नें आगला

"सरागी वीतरागी पमत्ता पमत्ता न भाणियव्वा" इतरो क्यूं कहै। वली साधां में कृष्ण नील लेश्या हुवे इज नहीं तो पहिलां सरागी वीतरागी पछे प्रमादी अप्रमादी इम उलटा क्यूं कह्यां। पिण संयती रा भेद आगे इमहिज किया हुन्ता। तिमहिज नाम लेइ इहां वर्ज्यों छै। ते संयती रा भेद करवा वर्ज्या छै। पिण संयती वर्ज्यों नहीं। वली आगे कह्यो तेजू पद्म लेशी मनुष्य क्रिया में पूर्वे मनुष्य ओघिक कह्यो। तिम कहिवो। पिण सरागी वीतरागी न कहिवो। इहां तेजू पद्म लेशी मनुष्य में पिण सरागी वीतरागी वर्ज्या। ते पिण संयती रा २ भेद सरागी-वीतरागी पूर्वे कह्या तिम तेजू पद्म लेश्या संयती रा वे भेद न करवा। ते किम— सरागी में तो तेजू पद्म हुवे। पिण वीतरागी में तेजू पद्म न हुवे। ते भणी तेजू, पद्म, लेशी संयती रा २ भेद वर्ज्या। पिण संयती वर्ज्यों नहीं। निम भ० श० १ उ० ४१ कृष्ण नील कापोत लेशी संयती रा २ भेद प्रमादी, अप्रमादी, करणा वर्ज्या। पिण संयती वर्ज्यों नहीं। तिवारे कोई कहे कृष्ण, नील, कापोत, लेशी में प्रमादी, अप्रमादी बिहूं वर्ज्या। तो साधु में कृष्णादिक ३ किम होवे। तिण ने इम कहिणो— तेजू पद्म में पिण सरागी वीतरागी वर्ज्या छै। जो तेजू, पद्म, लेश्यी साधु में सरागी वीतरागी क्यूं वर्ज्या तो साधु में तेजू पद्म किम कहो छो। तुम्हारे लेखे तो सरागी में पिण तेजू पद्म नथी। अनें वीतरागी में पिण तेजू पद्म नथी। तिवारे साधु में पिण तेजू पद्म न कहिणी। तिवारे आगलो कहे—संयती रा २ भेद कह्या। सरागी में तो तेजू पद्म होवे पिण वीतरागी मे तेजू पद्म न होवे। तिण सूं २ भेद करवा वर्ज्या छै। इम कहे तो तिण ने इम कहिणो। तिम कृष्ण नील कापोत लेशी संयती रा पिण प्रमादी अप्रमादी वे भेद करवा वर्ज्या। प्रमादी में तो कृष्णादिक ३ लेश्या हुवे। पिण अप्रमादी में न हुवे। तिण सूं बे भेद करवा वर्ज्या। पिण संयती नें न वर्ज्यो। ए तो चौड़े साधु में कृष्णादिक लेश्या कही छै। तिवारे कोई कहे—ए तो कृष्णादिक ३ द्रव्य लेश्या छै। अनें भावे होय तो भावे कृष्णादिक में अणआरम्भी किम हुवे। तिण नें कहिणो ए द्रव्य लेश्या छै। तो ३ भली लेश्या पिण द्रव्य हुवे। एहनें पिण आरम्भी कह्या छै। ते भली भाव लेश्या में आरम्भी किम हुवे। एहनों पाठ छै।

"तेउलेस्सस्स पम्हलेस्सस्स सुक्क लेस्सस्स जहा ओहिया, जीवा णवरं सिद्धा ण भाणियव्वा"

इम तीन भली लेश्या नें पिण ओघिक नों पाठ भलायो ते लेखे तेजू पद्म शुक्ल लेशी पिण आरम्भी अणारम्भी बेहु हुवे। जो कृष्णादिक द्रव्य लेश्या कहे तो ए भली लेश्या पिण द्रव्य कहिणी। तिवारे अज्ञानी कहे—भली भाव लेश्या वर्त्ते ते वेलां आरम्भी न हुवे। पिण भली भाव लेश्यावंत साधु नी पृच्छा आश्री आरंभी हुवे। तें न्याय ए ३ भली भाव लेश्यावन्त छै। इम कहे तेहनें इम कहिणो। इणन्याय कृष्णादिक ३ माठी भाव लेश्या वर्त्तें। तिण वेलां अणारम्भी न हुवे। पिण माठी लेश्यावन्त साधु नी पृच्छा आश्री अणारम्भी हुवे ए तो जो कृष्णादिक ३ द्रव्य कहे तो तेजू, पद्म, शुक्ल, पिण द्रव्य कहिणी। अनें जो तेजू, पद्म, शुक्ल, भाव लेश्या कहे तो कृष्णादिक पिण भाव लेश्या कहिणी। ए तो साम्प्रत साधु में ६ लेश्या कही छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

वली जिम भगवती प्रथम शतक दूजे उद्देश्ये कह्यो—तिम पन्नवणा पद १७ उद्देश्ये कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

कण्ह लेसाणं भंते ! णेरइया सव्वे समाहारा समं शरीरा सव्वेव पुच्छा, गोयमा ! जहा ओहिया णवरं णेरइया वेदणाए. माई मिच्छ दिट्ठी उववण्णगाय अमायी सम्म-दिट्ठी उववण्णगाय भाणियव्वा। सेसं तहेव जहा ओहि-याणं असुर कुमारा जाव वाण मंतरा एते जहा ओहिया णवरं मणूसाणं किरियाहिं विसेसो जाव तत्थणं जे ते सम्म-दिट्ठी ते तिविहा पण्णत्ता तंजहा संजया, असंजया, संजया-संजया जहा ओहियाण।

(पन्नवणा पद १७-१२०)

कृ० कृष्ण लेश्यावन्त. हे भगवन्! ने० नारकी. स० सवलाई. स० सरीखा आहार-वन्त छै सम शरीरवन्त छै पूर्वली परे पृच्छा गो० हे गौतम! ज० जिम ओघिक कह्या तिम कहिवा. ग० पिण एतलो विशेष. णे० नारकी. वे० जे कृष्ण लेश्या ना वेदना नें विषे केतला एक मायावन्त मिथ्यादृष्टि मरी ने. नारकी पणे ऊपना छै. अनें केतला एक अमायी सम्यग्दृष्टि मरी ने ऊपना छै ए बे भेद कहिवा मायी मिथ्यादृष्टि ऊपना छै ते अति दुष्टाध्यवसाय निर्वन्ध कर्म थकी महा दुःख वेदनावन्त छै. अमायी सम्यग्दृष्टि ऊपनो छै ते अल्पाध्यवसाय थको स्वल्प दु.ख वेदनावन्त छै ए बे भेद कहिवा पिण सञ्ज्ञी भूत असञ्ज्ञी भूत न कहिवा. जे भणी तो असयती प्रथम नरके ऊपजे छै कृष्ण लेश्यावन्त ५-६ ७ नरके ऊपजे ते भाटे. से० शेष सर्व तिमज ओघिक नी परे. कहिवा कृष्ण लेश्या ना असु कुमार यावत्. वा० वाणव्यन्तर एह सव तिम ओघिक पणे कह्या. तिमज कहिवा. ग० पिण एतलो म० कृष्ण लेश्या ना मनुष्य ने विशेषता छै. ते कहे छै. कृष्ण लेश्या ना मनुष्य सम्यग्दृष्टि ते त्रिण भेद कह्या छे. ते कहे छै सयती असयती स यतास यती। ओघिक नी परे।

इहां पिण कृष्णलेशी मनुष्य रा ३ भेद कह्या छै। संयती. असंयती. संयतासंयती. ते न्याय पिण संयती में कृष्णादिक हुवे। इम संयती मे कृष्णादिक लेश्या घणे ठामें कही छै. अनें कोई कहे साधु रे माठी लेश्या आवैज नहीं। ते झूठ रा बोलणहार छै। अनें साधु रे तो ठाम २ माठी लेश्या कर्मयोगे आवती कही छै। कदे साधु रे कर्म योगे अशुभ योग अशुभ ध्यान पिण आवे। तिम कदे अशुभ लेश्या पिण आवे छै। भगवती श० ३ उ० ४-५ साधु अनेक प्रकार ना रूप वैक्रिय करे ते विना आलोया मरे तो विराधक कह्या। वैक्रिय करे छै, वली कर्मयोगे आहारिक तेजू लब्धि पिण फोडवे इत्यादिक अनेक सावद्य कार्य करे। तिवारे माठी लेश्या आवे छै। तेहनों प्रायश्चित आवे छै। सीहो मुनि रोयो चांग पाडी. रहनेमि विषय परिणाम आणीं खोटो वचन वोल्यो. अइमुत्ते मुनि पाणीमें पाली तराई. धर्म घोष रा साधां नागश्री ने वाजार में हेली निन्दी भगवान् लब्धि फोड़ी गौतम वचन में खलाया इत्यादिक कार्य में साक्षात माठी लेश्या छै। तिवारे प्रायश्चित्त लेवे छै। जो भली लेश्या हुवे तो प्रायश्चित्त क्यूं लेवे। माठा

ध्यान रा अनें माठी लेश्या ना लक्षण केई एक सरीखा छै। अनें केतला एक साधु रे माठो ध्यान कहे। पिण माठी लेश्या न कहे। आर्त्तरुद्र ध्यान ना अनें कृष्ण लेश्या ना लक्षण मिलता छै। ते माठो ध्यान साधु में पावै, तो माठी लेश्या किम् न पावै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण।

इति लेश्याऽधिकारः।



अथ वैयावृत्ति-अधिकारः ।

कोई कहे—जे यक्षे छातां नें मूर्च्छा गति कीधी ते हरि केशी मुनि व्यावच कही, ते भणी ए व्यावच में धर्म छै। जो यक्ष नें पाप हुवे, तो व्यावच क्यूं कही। तत्रोत्तम्—ए तो व्यावच सावद्य छै। आज्ञा बाहिरे छै। जे विप्र-ना बालकां नें अचेत कीधा, ते तो प्रत्यक्ष विरुद्ध कार्य छै। जद केइ कहे—ए व्यावच में धर्म नहीं तो हरिकेशी मुनि इम क्यूं कह्यो। ए यक्षे व्यावच करी इम कहे तेहनों उत्तर—ए तो हरिकेशी मुनि आपरी आशङ्का मेटवा नें अर्थे कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

पुव्विंच इण्हिं च अणागयं च,
मणप्पदोसो ण मे अत्थि कोई।
जक्खाहु वेयावड़ियं करेंति,
तम्हाहु ए ए णिहया कुमारा।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ३२)

पु० यक्ष अलगो थयो हिवे यती बोल्यो पू० पूर्वे. इ० वर्त्तमान काले अ० अनागत काले. म० मोनें करी. प० प्रद्वेष न० नथी मे० माहेर. अ० छै को० कोई अल्प मात्र पिण. ज० जक्ष. हु० निश्चय ते भणी वैयावच पक्षपात करे छै. ते भणी. हु० निश्चय. ए० ए प्रत्यक्ष हणया कुमार

अथ इहां हरिकेशी मुनि कह्यो,—पूर्वे हिंवड़ा अनें आगामिये काले म्हारो तो किञ्चित् द्वेष नहीं। अनें जे यक्ष व्यावच करी, ते माटे ए विप्र-ना बालकां नें

हण्या छै। ए तो पोता नी अशंका मेटवा अर्थे कह्यो। जे छातां ने हण्या ते यक्ष वैयावच करी पिण म्हारो द्वेष न थी। ए छातां ने हण्या ते पक्षपात रूप वैयावच कही छै। आज्ञा वाहिरे छै ते माटे सावद्य छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

वली सूर्याभ नाटक पाड्यो, ते पिण भक्ति कही छै। ते पाठ लिखिये छै।

तं इच्छामि णं, भत्ति पुव्वं गोयमाइणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देवड्ढि जाव वत्तिस विहि नह विहिं उव दंसिए। ततेणं समणे भगवं महावीरे सुरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे सुरियाभस्स एयमट्ठं णो आढाए णो परिजाणइ तुस्सणीए संचिट्ठइ.

(राज प्रश्नेणी)

तं० ते इ० वांछूं छू. दे० हे देवानु प्रिय! भ० तुम्हारी भक्ति पूर्वक. गो० गौतमादिक स० श्रमण. नि० निर्ग्रन्थ ने दि० प्रधान देवता नी ऋद्धि. जा० यावत्. व० वत्तीस प्रकार ना नाटक विधि प्रते देखाडवो वांछू त० तिवारे स० श्रमण भ० भगवान् महावीर. सु० सूर्याभ देव ने. ए० इम वु० कह्यो थके. सु० सूर्याभ. दे० देवता ना. ए० एहवा वचन प्रते णो० आदर न देवे. मन करने भलो न जाणे आज्ञा पिण न देवे अण बोल्या थकां रहे.

इहां सूर्याभ नाटक नें भक्ति कही छै। ते भक्ति सावद्य छै। ते माटे भक्ति नी भगवन्ते आज्ञा न दीधी। "णो आढाए नो परिजाणइ" ए पाठ रो अर्थ टीका में इम कियो छै।

"एष मनन्तरो दितमर्थं नाद्रियते, न तदर्थं करणाया ऽऽ दरपरो भवति । नापि परि जानाति अनुमन्यते स्वतो वीतराग त्वात् । गौतमादीनांच नाट्यविधिः स्वाध्यायादि विघात कारित्वात् केवल तूष्णींकोऽवतिष्टते"

इहां टीका में पिण ए नाटक रूप भक्ति कही। ते अर्थ नें भगवन्ते आदर न दीधो। अनुमोदना पिण न कीधी। पोते वीतराग छै ते माटे। गौतमादिक साधु नें नाटक स्वाध्यायादिक नों व्याघात करणहार छै, ते माटे मौन साधी। पिण आज्ञा न दीधी। अनें सूर्याभे पहिलां वन्दना कीधी ते वन्दना रूप भक्ति नी भगवन्ते आज्ञा दीधी। "अब्भणुणाय मेयं सुरियाभा" ए आज्ञा नों पाठ चाल्यो छै। तिम इहां आज्ञा नों पाठ चाल्यो नहीं जिम ए नाटक रूप भक्ति सावद्य छै। आज्ञा बाहिरे छै। तिम ते छात्र थकी हण्या ते व्यावच पिण सावद्य छै आज्ञा बाहिरे छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली, ऋषभ देव निर्वाण पहुन्ता, तिहां भगवन्त नी इन्द्र दाढा लीधी, बीजा देवता शरीर ना हाड़ लीधा। ते केई देवता भक्ति जाणी नें इम कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

तएणं से सक्के देविंदे देवराया भगवओ तित्थगरस्स उवरिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हइ, ईसाणे देविंदे देवराया उवरिल्लं वामं सकहं गेण्हइ चमरे असुरिंदे असुरराया हिट्ठिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हइ बली वइरोअणिंदे वइरोयणराया हिट्ठिल्लं वामं सकहं गेण्हइ, अवसेसा भवणवइ जाव

वेमाणिया देवा जहारिहं अवसेसाइं अंगुवंगाइं केइ जिण भत्तीए केइ जीअमेयं तिकट्टु केइ धम्मो तिकट्टु गेण्हंति।५८।

(जम्बूद्वीप पन्नत्ति)

स० तिवारे पछे ते शक्र देवेन्द्र देवता नों राजा. भ० भगवन्त तीर्थंकर नी. उ० ऊपरली दा० जीमणा पासानी दाढ़ा ग्रहे. ई० ईशान देवेन्द्र देवता नों राजा ऊपरली. वा० डावी. स० दाढ़ा ग्रहे. च० चमर असुरेन्द्र असुरा नों राजा, हे० हेठली. दा० जीमणी. स० दाढ़ा. गे० ग्रहे व० बलेन्द्र वैरोचनेन्द्र उत्तर दिशा ना असुरा नों इन्द्र वैरोचन राजा हे० हेठली. वा० डावी. स० दाढ़ा ग्रहे. अ० अवशेष बीजा भ० भवन पति जा० यावत् व्यन्तर ज्योतिषी. वे० वैमानिक देवता. ज० यथायोग्य अ० अवशेष थका अग ते हस्त प्रमुख ना अस्थि उपाङ्ग ते अङ्गुलि प्रमुख ना अस्थि ग्रहे. के० केइ एक देवता तीर्थंकर नी भक्ति अने रागे करी. केइ एक देवता जीत आचार साचविवा ने अर्थे इम कही नें. के० केई एक देवता धर्म निमित्ते ति० इम कही नें अस्थि आदि देई ग्रहे.

इहां भगवन्त नी दाढ़ा अङ्ग उपाङ्ग देवता लिया। ते केइक देवता तीर्थङ्कर नी भक्ति जाणी नें केईएक जीत आचार जाणी नें केईएक धर्म जाणी नें ग्रह्या। इहां पिण भक्ति कही छै। ते भक्ति सावद्य छै। आचार कह्यो ते पिण जीत सावद्य छै। धर्म कह्यो ते पिण धर्म नाम स्वभाव नों छै। यथा रीति जिम देवलोक नी जाणी तिम लिया पिण श्रुत चारित्र धर्म नहीं। धर्म तो १० प्रकारे कह्या। तिण में कुल धर्म गणधर्म इत्यादिक जाणिये। पिण वीतराग नों धर्म नहीं। इहां भक्ति १ आचार २ धर्म ३ ए तिण कह्या। ते सावद्य आज्ञा वाहिरे छै। तिम हीज यक्षे व्यावच कीधी ते पिण सावद्य छै। आज्ञा वाहिरे छै। जे विप्रां ना वालकां ने ताड्या, दुःख दीधो, ते तो प्रत्यक्ष विरुद्ध छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

कोई कहे सर्व जीवां नें साता उपजायां तीर्थङ्कर गोत्र बंधे, इम कहे ते पिण झूठ छै। सूत्र में तो सर्व जीवां रो नाम चाल्यो नहीं। वीसां बोलां तीर्थङ्कर गोत्र बांधे तिहां पदवो कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै।

इमें हियाणं वीसाहिय कारणेहिं आसेविय वहुली कएहिं तित्थयर णाम गोयं कम्मं निव्वंतेसु तं जहा—

अरिहंत सिद्ध पवयण गुरु थेरे वहुस्सुए तवस्सीसु।
वच्छल याय तेसिं अभिक्खणाणो वओ गेय ॥१॥
दंसण विणय आवस्सएय, सीलव्वएय णिरवइयारे।
खणलव तवच्चियाए वेयावच्चे समाहीयं ॥२॥
अपुव्वणाण गहणे सुय भत्ती पवयणेप्पभावणया।
एएहिं कारणेहिं त्तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥३॥

(ज्ञाता अ० ८)

इ० प्रत्यक्ष आगले वीस भेदां करी ने. ते भेद कहे छै आ० आसेवित छै मर्यादा करी ने एकवार करवा थकी सेव्या छै. घणी वार करवा थकी घणी वार सेव्या छै। वीस थानक तिणें करी तीर्थंकर नाम. गोत्र कर्म उपार्जन करे वांधे तो हुवो ते महाबल अणगार सेव्या त० ते २० थानक कहे छै अ० अरिहन्त नी आराधना ते सेवा भक्ति करे. सि० सिद्ध नी आराधना ते गुणग्राम करे प० प्रवचन श्रुतज्ञान सिद्धान्त नों वखाणवो गुण धर्मोपदेशक गुरु नों विनय करे थि० स्थविर नों विनय करे. व० वहुश्रुती घणा आगम नों भणनहार एक ७ नी अपेक्षाय करी नें जाणवो. त० तपस्वी एक उपवास आदि देइ घणा तप सहित समीन साधु तेहनी सेवा भक्ति करें, अरिहत १ सिद्ध २ प्रवचन ३ गुरु ४ स्थविर ५ वहुश्रुति ६ तपस्वी ७ ए सात पदां नो वत्सलता पणे भक्ति करी नें अने अनुरागी छतां. णा० ज्ञान नों उपयोग हुंतो तीर्थङ्कर गोत्र वांधे द० दर्शन ते सम्यक्त्व निर्मल पालतो ज्ञान नों विनय ए विहुं ने निरतिचार पालतो थको आवश्यक नों करवो. समय व्यापार थकी नीपनु पडिकमणो करिवो निरतिचार पणे करी उत्तर गुण व्रत कहितां मूल गुण उत्तर गुण में निरतिचार पालतो थको जीव तीर्थंकर नाम कर्म वांधे. ख० क्षीण लवादिक काल नें विषे संवेग भाव नों ध्यान ना सेवा थकी बंधे. त० तप एक उपवासादिक तप सूं रक्तपणा करी चि० साधु यती नें शुद्ध दान देई नें वे० दश विध व्यावच करतो थको स० गुर्वादिक ना कार्य करके गुरु ने सन्तोष उपजावे करी नें. तीथंकर नाम अ० अपूर्व ज्ञान भणतो थको तीर्थंकर नाम गोत्र वांधे सु० श्रुत नी भक्ति सिद्धान्त नी भक्ति करतो थको तीर्थंकर नाम यथाशक्ति साधु मार्ग ने देखाडवे करी प्रवचन नी प्रभावना तीर्थङ्कर ना मार्ग ने दिपावे करी ए तीर्थंकर पणा-ना कारण थकी २० भेद बंधता कह्या।

अथ इहां तीर्थङ्कर गोत्र ना २० बोल कह्या। तिहाँ सत्तरह में बोल में गुरु ने चित्त में समाधि उपजावे, तो तीर्थङ्कर गोत्र बंधे एहवूं कह्यो छै। तेहनी टीका में पिण इम कह्यो। ते टीका लिखिये छै।

"समाधीच गुर्वादीनां कार्य करण द्वारेण चित्त स्वास्थ्योत्पादने सति निर्वर्त्तितवान्"

इहां टीकामें पिण गुर्वादिक साधु इज कह्या। पिण गृहस्थ न कह्या। गृहस्थ नी व्यावच करे ते तो तेत्रीसमो अणाचार छै। पिण आज्ञा में नहीं। अनें वीसां बोलां तीर्थङ्कर गोत्र बंधे। ते वीसूं ही बोल निरवद्य छै। आज्ञा माहि छै। ए तो वीसं बोल महावल अणगार सेव्या ते ठिकाणे कह्या छै। ते महावल अणगार तो साधु हुन्ता। ते गृहस्थ नी व्यावच किम करस्ये। गृहस्थ शरीर नी सांता वांछै. ते सावद्य छै। तेह थी तो तीर्थङ्कर गोत्र बंधे नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

तथा सावद्य साता दीधां साता कहे, तिण नें तो भगवान् निषेध्यो छै ते सूत्र पाठ लिखिये छै।

इह मेगेउ भासंति सायं सातेण विज्जइ।
जेतत्थ आयरिय मग्गं परमं च समाहिय॥ ६॥
मा एवं अव मन्नंता अप्पेण लुप्पहा बहुं।
एअस्स अमोक्खाए अय हरिव्व झूरह॥ ७॥

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ३ उ० ४)

इ० इण संसार माहे मे० एकेक शाक्यादिक अथवा स्वतीर्थी. सा० सुख ते सुखेज करी थाइ पर दुःख थकी सुख न थाइ. जे० जे कोई शाक्यादिक इम कहे तिहां मोक्ष विचारणा नें प्रस्तावे. आ० आर्य तीर्थकर नों परूप्यो मोक्ष मार्ग छोडे परम समाधि नों कारण ज्ञान. दर्शन. चारित्र रूप इण भाषिने परिहरी संसार माहे भ्रमण करे तेहीज देखाडे छै॥ ६॥

अहो दर्शनी मा० रखे ए पूर्वोक्त इण वचने करीज सुखे सुख थाइ इम श्री जिन मार्ग ने हीलता हुन्ता अल्प थोडे विषय ने सुखे करी गमाडो छो घणा मोक्ष ना सुख. अ० असत्य ने पण छांडवे करी ने मोक्ष नथी, निन्दा नें करीने मोक्ष न आइ. ते लोह वाणियानी परे झूरसी.

अथ इहां कह्यो—साता दियां साता हुवे इम कहे ते आर्य मार्ग थी अलगो कह्यो। समाधि मार्ग थी न्यारो कह्यो। जिण धर्म री हेलणा रो करणहार. अल्प सुखां रे अर्थे घणा सुखां रो हारणहार, ए असत्य पक्ष अणछांडवे करी मोक्ष नहीं। लोह वाणिया नी परे घणो झूरसी, साता दियां साता परूपे, तिण में एतला अवगुण कह्या, तो सावद्य साता में धर्म किम कहिये। तेहथी तीर्थङ्कर गोत्र किम बंधे। दशवैकालिक अ० ३ गृहस्थ नी साता पूछ्यां सोलमों अणाचार लागतो कह्यो। तथा गृहस्थ नी व्यावच कीधां अट्ठावीसमों अणाचार कह्यो। तथा निशीथ उ० १३ गृहस्थ नी रक्षा निमित्ते भूती कर्म कियां प्रायश्चित्त कह्यो। तो गृहस्थ री सावद्य साता वांछ्यां तीर्थङ्कर गोत्र किम बंधे। ए तो गुरु ना कार्य करी सन्तोष उपजावियो। तथा साधु माहोमाहि समाधि उपजावे। तथा ज्ञान दर्शन चारित्र री समाधि उपजायां तीर्थङ्कर गोत्र बांधे। पिण सावद्य साता थी तीर्थङ्कर गोत्र न बंधे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

वली कोई कहे—वीसां बोलां तीर्थङ्कर गोत्र बंधे तिण में सोलमों बोल दश प्रकार नी व्यावच करतो कह्यो। ते दश प्रकार नी व्यावच ना नाम कहे छे। आचार्य. उपाध्याय. स्थविर. तपस्वी. ग्लान. नवो शिष्य. कुल. गण. सङ्घ. सा० धर्मी. ए दश व्यावच में सङ्घ अनें साधर्मी में श्रावक नें घाले छे। अनें

भगवन्त तो दसूइं साधु कह्या छै। वली ठाम २ व्यावच करवा ने ठामे सङ्घ अनें साधर्म्मी व्यावच नों अर्थ साधु कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महा निज्जरे महा पज्जवसाणे. तं० अगिलाए सेह वेयावच्चं करेमाणे अगिलाए कुल वेयावच्चं करेमाणे अगिलाए गण वेयावच्चं करेमाणे अगिलाए संघ वेयावच्चं करेमाणे अगिलाए साहम्मिय वेयावच्चं करेमाणे ॥ १२ ॥

(अथाङ्ग ठाणा ५ उ० १)

पं० पाँच स्थान के करी. स० श्रमण निर्ग्रन्थ. म० मोटा कर्मक्षय नों करणहार महा निर्जरा थकी भव ने नसाड़वे करी मोटो अत छै जेहनों. ते महा पर्यवसान. तं० ते कहे छै. अ० खेद रहित नव दीक्षित तेहनूं वे० वैयावच भातादि धर्म ना जे आधारकारी वस्तु तेणें करी ने आधार देतो क० कहतो थको अ० खेद रहित कु० कुल चंद्रादिक साधु नों समुदाय तेहनी व्यावच. खेद रहित ग० गण ते कुल नों समुदाय. एतले एक आचार्य ना साधु ते कुल ते आचार्य साधु ते गण. अ० अनें वली खेद रहित स घ ते गण नू समुदाय एतने घणे आचार्य ना साधु तेहनी वैयावच अ० खेद रहित साधर्मिक ते प्रवचन अनें लिङ्गे करी नें सरीखो धर्म ते साधमिक तेहनी. वे० वैयावच पाणादिक भक्ति नो. क० करतौ थको

अथ अठे कुल. गण. सङ्घ. साधर्म्मी साधु ने इज कह्या। पिण अनेरा नें न कह्या। ते ठाणाङ्ग नी टीका में पिण एहनों अर्थ इम कियो छै। ते टीका लिखिये छै।

कुलं चन्द्रादिकं साधु समुदायः विशेष रूपं प्रतीत्य गणः कुल समुदायः सङ्घो गण समुदाय इति । साधर्मिकः समान धर्म्मो लिंगतः प्रवचनतश्चेति ।

इहां टीका में पिण इम कह्यो—कुल चन्द्रादिक साधु नों समुदाय गण ते कुल नों समुदाय, सङ्घ ते गण नों समुदाय साधर्मिक ते सरीखो धर्म लिङ्ग प्रव-

चन ते साधर्मिक इहां तो कुल गण सङ्घ सधर्मी साधु नें कह्या, पिण श्रावक नें न कह्या । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

तथा ठाणाङ्ग ठाणे १० मे कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

दसविहे वेयावच्चे प० तं० आयरिय वेयावच्चे उवज्झाय वेयावच्चे थेरा वेयावच्चे तवस्सि वेयावच्चे गिलाण वेयावच्चे सेह वेयावच्चे कुल वेयावच्चे गण वेयावच्चे संघ वेयावच्चे साहम्मि वेयावच्चे ॥ १५ ॥

(ठाणाङ्ग ठा० १०)

द० दस प्रकारे वैयावच कही. ते कहे छै. आ० आचार्य पदवी धर तथा पोता ना गुरु तेहनी वैयावच. उ० समीप रहे तेहनें भणावे ते उपाध्याय. थे० स्थविर त्रिण प्रकारे वयस्थविर ६० वर्ष नों १ सूत्र स्थविर ठाणाङ्ग समवायाङ्गादि नों जाणआहार पर्याय स्थविर २० वर्ष दीक्षा लिये हुवा तेहने त० मास क्षमणादिक तप नों करणहार गि० रोगी प्रमुख. से० नव दीक्षित शिष्य तेहनें आचार प्रमुख सीखवे कु० एक गुरु ना शिष्य ते भणी कुल कहिये । ग० घे आचार्य ना शिष्य ते गण स० घणा आचार्य ना शिष्य ते संघ सा० सरीखे धर्म्में विचरे ते साधर्मिक साधु एतलानी व्यावच करे. आहारादिक आपवे करी ने. ।

अथ इहां पिण दश व्यावच साधुनीज कही । पिण श्रावक नी न कही । अनें तेहनी टीका में पिण नव नों तो सुगम माटे अर्थ न कीधो । अनें साधर्मी नो अर्थ कियो ते टीका लिखिये छै ।

"समानो धर्म्मः सधर्म स्तेन चरन्तीति साधर्म्मिकाः साधवः"

इहां पिण साधर्मी साधु नें इज कह्या । पिण गृहस्थ नें साधर्मी न कह्यो । गृहस्थ रो सरीखो धर्म नहीं । एक व्रत धारे तेहनें पिण श्रावक कहिये ।

अनें १२ व्रत धारे तेहनें पिण श्रावक कहिये। ते माटे प्रथम तथा छेहला तीर्थङ्कर ना सर्व साधु रे पांच महाव्रत छै। ते भणी तेहिज साधर्म्मिक कहीजे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ७ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली उवाई में १० व्यावच कही छै। ते पाठ लिखिये छै।

सेकिंतं वेयावच्चे दसविहे प० तं० आयरिय वेयावच्चे. उवज्झाय वेयावच्चे. सेह वे०. गिलाण वे०. तवस्सि वे०. थेरे वे०. साहम्मिय वे०. कुल वे०. गण वे०. संघ वेयावच्चे।

(उवाई)

से० ते केहो भात पाणी आदिक अवष्टम्भादिक घन नों देवो तेहनें दश प्रकारे कह्या. तीर्थ करे त० ते कहे छै. आ० आचार्य पचाचार नों प्रतिपालक तेहने वैयावच अवष्टम्भ साहाय्य देवो. उ० उपाध्याय द्वादशांगो ना भणणहार तेहनी वैयावच. से० शिष्य नव दीक्षित नी वैयावच गि० ग्लान नी वैयावच. त० तपस्वी छठ २ अठमादिक तेहनी वैयावच थे० स्थविर तीन प्रकार तेहनी वैयावच. सा० साधर्म्मिक साधु साध्वी तेहनी वैयावच कु० गच्छ नो समुदाय ते कुल तेहनी वैयावच ग० कुल नों समुदाय ते गण तेहनी वैयावच सं० गण नों समुदाय ते संघ तेहनी वैयावच. आहारादिक अवष्टम्भ देवो.

अथ इहां पिण दश व्यावच में दसुंइ साधु कह्या। पिण श्रावक नें न कह्यो। तेहनी टीका में पिण इम कह्यो। ते टीका लिखिये छै।

"साधर्म्मिकः साधुः साध्वी वा कुलं गच्छ समुदायः गणः कुलानां समुदायः, संघो गण समुदाय इति"

इहां टीका में पिण कुल गण सङ्घ नों अर्थ साधु नों इज समुदाय कीधो। अनें साधर्मी साधु साध्वी नें इज कह्या। पिण श्रावक श्राविका नें न कह्या।

तथा 'व्यवहार' उ० १० में सङ्घ साधर्म्मी साधु नें इज कह्या । तथा प्रश्न व्याकरण तीजे सम्वर द्वारे सङ्घ साधर्म्मी साधु नें कह्या । इम अनेक ठामे सङ्घ साधर्म्मी साधु नें इज कह्या । ते साधु नी व्यावच करण री भगवन्त नी आज्ञा छै । अनें व्यावच ने ठामे सङ्घ नाम समुदाय वाची छै । ते साधु ना समुदाय नें इज कह्यो छै । पिण व्यावच ने ठामे सङ्घ कह्यो तिण में श्रावक न जाणवो । चतुर्विध सङ्घ में श्रावक नें सङ्घ कह्यो । पिण व्यावच नें ठामे सङ्घ कह्यो तिणमें श्रावक नहीं छै समुदाय रो नाम पिण सङ्घ कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै ।

समूह णं भंते ! पडुच्च कति पडिणीया, प० गो० तउ पडिणीया प० तं० कुल पडिणीए गण पडिणीए संघ पडिणीए ।

(भगवती श० ८ उ० ८)

स० समूह ते साधु समुदाय. ते प्रति अंगीकरी नें भं० भगवन्त ! के० केतला प्रत्यनीक परूप्या गो० हे गौतम ! त्रिण प्रत्यनीक परूप्या. त० ते कहे छै कु० कुल चंद्रादिक तेहना प्रत्यनीक ग० गण कोटिकादि तेहना प्रत्यनीक सं० संघ ना प्रत्यनीक. अवर्णवाद बोले.

अथ इहां पिण कुल, गण, सङ्घ, समुदाय वाची कह्या, तेहनी टीका में पिण इम कह्यो ते टीका लिखिये छै ।

"समूहं साधु समुदायं प्रतीत्य तत्र कुलं चन्द्रादिकं, तत्समूहो गणः कोटिकादिः तत्समूहः संघः प्रत्यनीकता चैतेषा मवर्ण वादादिभिरिति"

अथ इहां पिण साधु ना समुदाय नें कुल, गण, संघ कह्यो । तीना नें समूह कह्या । तिण में संघ नाम समुदायनों कह्यो । तथा उत्तराध्ययन अ० २३ गा० ३ में कह्यो । "सीस संघ समाकुलो" इहां पिण शिष्य नों समुदाय ते संघ कह्यो ते भणी इण व्यावच में संघ कह्यो ते साधु ना समुदाय नें इज कह्यो छै । अनें साधर्म्मी पिण साधु साध्वीयां नें इज कह्या छै । किणहिक देशे लोक रूढ़ भाषाइं श्रावकां नें साधर्म्मी कहि बोलाविये छै, ते रूढ़ भाषाइं नाम छै । पिण

व्यावच नें ठामे साधर्म्मिक कह्या, तिण में श्रावक श्राविका नहीं अनें रूढ़ भाषाइं करी तो मागध. वरदाम. प्रभास. ए ३ तीर्थ नाम कहि बोलाया छै। पिण तेह तीर्थ थी संसार समुद्र तरे नहीं। तिम रूढ़ भाषाइं श्रावक श्राविकां नें साधर्मी कोई कहे तो पिण दश व्यावच में साधर्मी कह्या तिण में साधु साध्वी नें इज, कह्या, पिण श्रावक श्राविकां नें न कह्या। ते संघ साधर्मी साधु नीज व्यावच कीधां उत्कृष्टो तीर्थङ्कर गोत्र बंधे। पिण गृहस्थ री व्यावच कियां तीर्थङ्कर गोत्र बंधे नहीं। श्रावक नी व्यावच करणी री तो भगवान् री आज्ञा नहीं। अनें आज्ञा विना धर्म पुण्य निपजे नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ८ बोल सम्पूर्ण।

वली केइ एक अज्ञानी साधु री सावद्य व्यावच गृहस्थ करे तिण में धर्म थापे छै। तिण ऊपर श्री "भिक्षु" महामुनि राज कृत वार्त्तिक लिखिये छै।

केइ एक मूढ़ मिथ्यात्वी भारी कर्म्मा जिन आज्ञा बाहिरे धर्म ना स्थापन हार जिनवर नों धर्म आज्ञा बाहिरे थापे छै। ते अनेक प्रकार कूड़ा २ कुहेतु लगावे। खोटा २ दृष्टान्त देई धर्म नें जिन आज्ञा बाहिरे थापे छै। कूडी २ चर्चा करी ने कूड़ा २ कुहेतु पूछे, जिन आज्ञा बाहिरे धर्म स्थापन रे तांई। ते कहे छै पड़िमा-धारी साधु अग्नि माहि बलता नें बांहि पकड़ने बाहिरे काढ़े। अथवा सिंहादिक पकड़ता नें झाल राखे। तथा हर कोई साधु साध्वी जिन कल्पी. स्थविर कल्पी. त्यांनें बांहि पकड़ने बाहिरे काढ़े इत्यादिक कार्य करी ने साता उपजावे। अथवा जीवां बचावे। अथवा ऊंचा थी पड़तां नें झाल बचावे। अथवा आखड़ पड़ता नें झाल बचावे। अथवा ऊंचा थी पड़तां नें बैठो करे। अथवा आखड़ पड़ता नें बैठो करे। तिण गृहस्थ नें भगवन्त अरिहन्त री पिण आज्ञा नहीं। अनन्ता साधु-साध्वी गये काले हुवा. त्यांरी पिण आज्ञा नहीं। जिण साधु नें बचायो तिण री पिण आज्ञा नहीं। तिण नें पछे पिण सरावे नहीं। थे आछो काम कियो इम पिण कहे नहीं। तिण नें पहिलां पिण सिखावे नहीं। तूं इसो काम कीजे, तिण नें इसी पिण आज्ञा देवे नहीं। तूं इसो काम कर इम तो

कहिता जावे छै। वली इम पिण कहे छैं. तिण गृहस्थ नें धर्म हुवो। देखो धर्म पिण कहिता जावे, तिण धर्म री भगवान् री पिण आज्ञा नहीं। तिण धर्म नें सरावे पिण नहीं इम पिण कहिता जाय। जाव सगलाई बोल पाछे कह्या तें कहिता पिण जावे। अनें धर्म पिण कहिता जावे। त्यांनें इम पूछिये—थे धर्म पिण कहो छौ, भगवन्त री आज्ञा पिण न कहो छौ, तो ओ किण रो सिखायो धर्म छै। ओ किसो धर्म छै। धर्म तो भगवन्ते बे प्रकार नों कह्यो। श्रुत धर्म, अनें चारित्र धर्म, तिण धर्म री तो जिन आज्ञा छै। वली दोय धर्म कह्या छै। गृहस्थ रो धर्म साधु रो धर्म, तिण री पिण जिन आज्ञा छै। वली धर्म रा २ भेद कह्या छै। संवर धर्म. निर्जरा धर्म। सम्वर तो आवता कर्मां ने रोके, निर्जरा आगला कर्मां ने खपावे। तिण धर्म रो पिण जिन आज्ञा छै। सम्वर धर्म रा २० भेद छै। त्यां बीसां री जिन आज्ञा छै। निर्जरा धर्म रा १२ भेद छै। त्यां बाराई भेदां री जिन आज्ञा छै। वली सम्वर निर्जरा रा ४ भेद किया ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, ए च्यारूंइ मोक्ष रा मार्ग छै। त्यां में तो जिन आज्ञा छै। इतरा बोलां नें जिन सरावे छै। अनें जे आज्ञा ण कहे जिन आज्ञा न दे पिण धर्म छै। त्यां ने फेर पूछी जे, ओ किसो धर्म छै। तिण धर्म रो नाम बतावो। जब नाम बतावा समर्थ नहीं तब कूड बोली नें गालां रा गोला चलावी कहे—साधु रो कल्प नहीं छै। तिण सूं आज्ञा न देवे पिण धर्म छै। तिण ऊपर कूड बोली नें कुहेतु लगावे पिण डाहा तो जिन आज्ञा बाहिरे धर्म न मानें। अनें गृहस्थ नें धर्म छै। पिण म्हे आज्ञा नहीं द्यां छां ते म्हारे आज्ञा देण रो कल्प नहीं छै। तिण सूं आज्ञा नहीं द्या छां, इम कहे तिण नें इम कहीजे। धर्म करण वाला नें धर्म हुवे तो धर्म री आज्ञा देणवाला नें पाप किम होसी। अनें धर्म री आज्ञा देणवाला नें पाप होसी तो करणवाला नें धर्म किण विधि होसी। देखो विकलां री श्रद्धा धर्म करण री आज्ञा देण रो कल्प नहीं इम कहे छै। पिण केवली परूप्या धर्म री आज्ञा देण रो तो कल्प छै। पाषंडी परूप्यो सावद्य धर्म तिण री आज्ञा देण रो कल्प नहीं। निरवद्य धर्म री आज्ञा देण रो कल्प नहीं, आ बात तो मिले नहीं। धर्म री आज्ञा न देवे ते तो महा अयोग्य धर्म छै। जिण धर्म री देवगुरु आज्ञा न दे तिण धर्म में भलियार कदेइ नहीं छै। देवगुरु सर्व सावद्य योग रा त्याग किया जिण दिन माठो २ सर्व छांड्यो छै। तिण छांड्या री आज्ञा पिण दे नहीं। ते त्रिविधे

२ छांड्यो छै ते तो माठो छै तरे छांड्यो छै। जे साधु साध्वी जिन कल्पी, स्थविर कल्पी त्यांनें अग्नि माहि बलतां नें कोई गृहस्थ बांहि पकड़ ने बाहिरे काढ़े, अथवा सिंहादिक पकड़ता नें झाली राखे। अथवा ऊंचा थी पड्यां नें बैठो करे। अथवा आखड़ पड़िया नें बैठो करे। ते गृहस्थ नें धर्म कहे छै। जो तिण नें इम कियां धर्म होसी तो इण अनुसारे अनेक बोलां में धर्म होसी। ते बोल लिखिये छै।

पडिमाधारी साधु अथवा जिन कल्पी साधु अथवा स्थविर कल्पी साधु तथा हर कोई साधु अचेत पड्यो छै। तिण थी चालणी न आवे छै। गाम तथा उजाड़ में पड़्यो छै। तिण साधु नें गाड़ी, घोड़ो, ऊंट, रथ, पालखी, पोठिये, भैंसे, गधे, इत्यादिक हर कोई ऊपर बैसाण नें गाम मांही आणे ठिकाणे आणे तो उण री श्रद्धा रे लेखे, उण री परूपणा रे लेखे, तिण में पिण धर्म होसी ॥१॥ अथवा कोई साधु गाम तथा उजाड़ में असमाधियो पड्यो छै तिण सूं हालणी चालणी न आवे, बैसणी, उठणी, न आवे छै, अन्न बिना मरे छै। तो उण री श्रद्धा रे लेखे अशनादिक ले जाय नें दियां में हाथ सूं खवायां में पिण धर्म छै ॥ २ ॥ अथवा कोई साधु उजाड़ में अथवा गाम माहि अचेत पड़्यो छै। तिण सूं बोलणी, चालणी, न आवे छै। उठणी बैसणी, पिण न आवे छै। औषध खाधां बिना जीवां मरे छै, तो उण री श्रद्धा रे लेखे औषधादिक ले जाय नें मुख माहि घाल नें सचेत करे, ढील रे मुसल नें सचेत करे, तिण में पिण धर्म होसी ॥ ३ ॥ अथवा किण ही साधु रे पाटो (रोग विशेष) हुवो छै, गम्भीर हुवो छै, अथवा गूमड़ो हुवो छै, तिण दुख सूं हालणी, चालणी, न आवे छै, गोचरी पिण जावणी न आवे, ते साधु अशनादि बिन खाधा पानी बिना पीधां जीवां मरे छै। तो उण री श्रद्धा रे लेखे अशनादिक आणी खवावे, अथवा तिण नें गोचरी करी नें आणी आपे तिण में पिण धर्म होसी ॥ ४ ॥ अथवा कोइक साधु गरढ़ो (वृद्ध) ग्लान असमाधियो छै, तिण सूं पोथ्यां रा बोझ सूं उपकरण रा बोझ सूं चालणी न आवे छै गाम अलगो छै, भूख तृषा पिण घणी लागी छै, तिण रे असाता घणी छै। तो उण री श्रद्धा रे लेखे बोझ उठायां रो पिण धर्म होसी ॥ ५ ॥ अथवा किण ही साधु नें शीतकाले शीत घणो लागे छै, वाय रो पिण वाजे छै, तिण काल में मेह पिण घणो बरसे छै, साधु पिण घणो धूजे छै। तो उण री श्रद्धा रे लेखे कोई रालो (गूदड़ी) ओढ़ावे तिण में पिण धर्म होसी ॥ ६ ॥ अथवा किण ही साधु रो पेट दूखे छै। तलभल २

करे छै, महा वेदना छै, पेट मुसल्यां विना जीवां मरे छै। तो उण री श्रद्धा रे लेखे पेट मुसले तिण में पिण धर्म होसी ॥ ७ ॥ अथवा किण ही साधु रे पेटूंची (धरण) टली छै। तिण री साधु नें घणो दुःख छै। आहार पिण न भावे छै। फेरो (दस्त लागनो) पिण घणों छै। तो उण री श्रद्धा रे लेखे पेटूंची मुसले तिण में पिण धर्म होसी ॥ ८ ॥ अथवा किण ही साधु रो गोलो चढ्यो छै, महा दुःखी छै, हालणी चालणी पिण न आवे छै, मौत वात छै, तो उण री श्रद्धा रे लेखे गोलो मुसले साधु रे साता करे तिण में पिण धर्म होसी ॥ ९ ॥ साधु नें कल्पे ते भक्ष्य, नहीं कल्पे ते अभक्ष्य, खवाय नें बचावे तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण में पिण धर्म होसी ॥ १० ॥ साधु रे जिण वस्तु रा त्याग छै, अनें ते तो मरे छै, तो उण री श्रद्धा रे लेखे त्याग भंगाय बचायां पिण धर्म होसी ॥ ११ ॥ साधु री व्यावच कल्पे छै ते तो जिन आज्ञा सहित छै, नहीं कल्पे ते व्यावच तो अकार्य छै। साधु नें दुःखी देखनें उण री श्रद्धा रे लेखे नहीं कल्पे ते व्यावच कीधां पिण तेहनें धर्म होसी ॥ १२ ॥ साधु नों संथारो देखी साधु रे घणी असाता देखी साधु नें मरतो देखी नें उण री श्रद्धा रे लेखे किण ही अन्नपाणी मुख माहीं घालयो तिण में पिण धर्म होसी ॥ १३ ॥ साधु भूखो छै, अशनादिक विना मरे छै, तो उण री श्रद्धारे लेखे अशुद्ध वहिरायां पिण धर्म होसी ॥ १४ ॥ वली केइक इसड़ी कहे छै, सुभद्रा सती साधु री आंख माहि थी फांटो काढ्यो तिण मे धर्म कहे छै, जद तो इण अनुसारे अनेक बोलां मे धर्म होसी, ते बोल कहे छै। किणहिक साधु रे आंख में फांटो पड्यो ते बाई काढ्यो तो उण री श्रद्धा रे लेखे उण नें पिण धर्म होसी ॥ १ ॥ अथवा साधु रे पेट दुःखे छै, मरे छै, ते बाई पेट मुसले तो उण री श्रद्धा रे लेखे तिण नें पिण धर्म होसी ॥ २ ॥ किण ही साधु रो गोलो चढ्यो छै, जीव मौत वात छै, उण री श्रद्धा रे लेखे बाई साधु रो गोलो मुसले तिण नें पिण धर्म होसी ॥ ३ ॥ किण ही साधु रे पेटूंची टली छै, तिण रो घणो दुःख छै, आहार पिण न भावे छै। फेरो पिण घणो छै। तो उण री श्रद्धा रे लेखे बाई पेटूंची मुसले तिण नें पिण धर्म होसी ॥ ४ ॥ साधु नें अग्नि माहि बलता नें बाई बांहि पकड़ने बाहिरे काढे तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण नें पिण धर्म होसी ॥ ५ ॥ साधु ऊंचा थी पड़ता नें बाई झेले तो उण री श्रद्धा रे लेखे तिण नें पिण धर्म होसी ॥ ६ ॥ साधु आखड़ पड़ता नें बाई झाल राखे तो तिण री श्रद्धा

रे लेखे तिणं नें पिण धर्म होसी ॥ ७ ॥ साधु ऊंचा थी पड़ता नें बाई बैठो करे तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण नें पिण होसी ॥ ८ ॥ साधु आखड़ पड़िया नें बाई बैठो करे तो तिण रीं श्रद्धा रें लेखे तिण में पिंण धर्म होसी ॥ ६ ॥ साधुं रो माथो दूखतो हुवे जव बाई माथो दावे तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण नें पिण धर्म होसी ॥ १० ॥ साधु रा दूखणा उपरे बाई मलम लगावे तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण में पिण धर्म होसी ॥ ११ ॥ साधु रा दूखणा ऊपर बाई पाटो बांधे तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण में पिण धर्म होसी ॥ १२ ॥ साधु ने मूर्च्छा (लू) हुई छै ते बाई मुसले तो तिण री श्रद्धा रे लेखे तिण में पिण धर्म होसी ॥ १३ ॥ इत्यादिक अनेक कार्य साधु रा बाई करे, साधु ने दुःखी देखी नें पीड़ाणो देखी ने बाई साधु रे साता करे, जीवां बचावे। जो सुभद्रा नें फांटो काढ्यां धर्म होसी तो थां में पिण धर्म होसी। बाई साधु रा कार्य करे तिमही भायो साध्वी रा कार्य करे तो उण री श्रद्धा रे लेखे भाया नें पिण धर्म होसी। ते बोल लिखिये छै। साध्वी रो पेट भायो मुसले १ साध्वी री पेडूंची भायो मुसले २ साध्वी रे गोलो भायो मुसले ३ साध्वी रे माथो दुखे जब भायो मुसले ४ साध्वी रे मूर्च्छा भायो मुसले ५ साध्वी रे दुखणा ऊपरे भायो मलम लगावे ६ साध्वी रे दूखणा ऊपरे भायो पाटो बांधे ७ साध्वी पड़ती नें भायो झेले ८ साध्वी पड़ी नें भायो उठावे बेठी करे तो उण री श्रद्धा रे लेखे तिण ने पिण धर्म होसी ६ साध्वी रो पेट दुखे छै, तलफल २ करे छै, तिण रो पेट भायो मुसले १० इत्यादिक साधु रा कार्य बाई करे, तिम साध्वी रा भायो करें। जा सुभद्रा साधु री आंखि माहि सूं फांटो काढ्यां रो धर्म होसी तो सारां नें धर्म होसी। जो थां में जिन आज्ञा देवे नहीं तो धर्म पिण नहीं। अनें जिण रीते जिनवर कह्यो छै तिण रीते साधु साध्वी ने बचायां धर्म छै। व्यावच कीधां पिण धर्म छै। भगवन्त आप तो सरावे नही आज्ञा पिण देवे नहीं, सिखावे पिण नहीं, तिण कर्त्तव्य में धर्म रो पिण अंश नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो। इति भिक्षु महा मुनिराज कृत वार्त्तिक सम्पूर्णम्।

इति ६ बोल सम्पूर्ण।

केतला एक जिन आज्ञा ना अजाण छै, ते "साधु अग्नि माहि बलता नें कोई गृहस्थी बांहि पकड़ने बाहिर काढ़े, तथा साधु री फांसी कोई गृहस्थ कापे"- तिण में धर्म कहे छै, अनें भगवती श० १६ उ० ३ गौतम स्वामी प्रश्न पूछयो, ते साधु ऊभो आताप ना लेवे छै. तेहना अर्श (मस्सा) कोई वैद्य छेदे छै, तेहनें स्यूं होवे, ते पाठ कहे छै।

अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणस्स तस्सणं पुरच्छिमेणं अवड्ढं दिवसं णो कप्पइ हत्थं वा पायं वा जाव उरुं वा आउंटावेत्तएवा पसारेत्तएवा पच्चच्छिमेणं अवड्ढ दिवसं कप्पइ हत्थं वा पादं वा जाव उरुं वा आउंटा वेत्तए वा पसारेत्तएवा, तस्सय अंसिया ओ लंवइ तं चेव विज्जे अदक्खु इसिंपाडेइ पाडेइत्ता अंसियाओ छिंदेज्जा। सेणणं भंते! जे छिंदइ तस्स किरिया कज्जइ जस्स छिज्जइ णो तस्स किरिया कज्जइ णणत्थेगेणं धम्मंतराइएणं हंता गोयमा जे छिंदइ जाव णणत्थेगेणं धम्मंतराइएणं।

(भगवती श० १६ उ० ३)

अ० अणगार. भं० भगवन्त ! भा० भावितात्मा ने. छ० छट्ठ छट्ठ निरन्तर तप करता नें जा० यावत्. आ० आताप लेतां तेहनें. पु० पूर्व भाग ना दिनार्द्ध लगे एतले पहिला बे प्रहर लगे णो० न कल्पे हा० हाथ अथवा पा० पग बा० बाहु अथवा उ० हृदय. आ० सकोचवो. अथवा प० पसारवो प० पश्चिम भाग ना दिवार्द्ध लगे क० कल्पे. ह० हाथ. जा० यावत् उ० हृदय आ० संकोचवो अथवा प० पसारवो। त० ते साधु नें कायोत्सर्गे रहिया नें अ० अर्श लम्बायमान दीसे. ते अर्श नें वे० वैद्य देखी नें. इ० ते साधु नें किणारेक भूमि नें विषे पाडे पाडी ने. अ० अर्श ने छेदे से० ते निश्चय भगवन् ! जे० छेदे. त० ते वैद्य नें क्रिया हुइ जे साधु नी अर्श छेदाणी छै. णो० तेहने क्रिया हुइ नही. ए० एतलो विशेष. एक धर्मान्तराय क्रिया

हुइ शुभ ध्यान नो विच्छेद हुइं ह० हां गौतम! जे वैद्य छेदे ते वैद्य नें एक धर्मान्तराय क्रिया हुइं

इहां गोतम स्वामी पूछ्यो, जे साधु ऊभो आतापणा लेवे छै, तेहना अर्श वैद्य देखी नें ते अर्श छेदे। हे भगवन्! ते वैद्य नें क्रिया लागे, अनें 'जस्स छिज्जंति" कहितां जे साधु री अर्श छेदाणी ते साधु नें क्रिया न लागे। पिण एक धर्मान्तराय साधु ने पिण हुइं, ए प्रश्न पूछ्यो—तिवारे भगवान् कह्यो। हां गोतम! जे अर्श छेदे ते वैद्य ने क्रिया लागे. अनें जे साधु री अर्श छेदाणी ते साधु नें क्रिया न लागे। पिण एक धर्मान्तराय साधु रे पिण हुवे, ए शब्दार्थ कह्यो। अथ इहां कह्यो—जे साधु नी अर्श छेदे ते वैद्य ने क्रिया लागे एहनूं कह्यो पिण धर्म न कह्यो। ए व्यावच आज्ञा बाहिरे छै। साधु रे गृहस्थ पासे कार्य करावा रा त्याग छै। अनें जिण साधु री आज्ञा विना साधु रो कार्य कियो, ते साधु रो त्याग भंगावणवालो छै। कदाचित् साधु अनुमोदे नहीं। तो ते साधु रो व्रत न भागे। पिण भंगावण रो कार्य करे तिण ने तो त्यागनो भंगावण वालो इज कही जे। जिम कोई साधु नें आधा कर्मी आदिक असूजतो असनादिक जाणो नें देवे, अनें साधु पूछी चोकस कर शुद्ध जाणी नें लियो तो ते साधु नें तो पाप न लागे। पिण आधा कर्मी आदिक साधु नें अकल्पतो दियो तिण नें तो पाप लाग्यो ते तो त्याग भंगावण वालो इज कही जे। पिण धर्म न कहिये। तिम साधु रे गृहस्थ पासे जे व्यावच करावण रा त्याग ते व्यावच गृहस्थ करे। अनें साधु अनुमोदे नहीं, तो तिण रा त्याग न भांगे। पिण आज्ञा बिना अकल्पनीक कार्य गृहस्थ कियो तिण नें तो त्याग भंगावण रो कामी कहिये। पिण तिण में धर्म न कहिये। तथा वली दूजो दृष्टान्त—जिम ईर्या सुमति विना चाले अनें एक पिण जीव न मुयो तो पिण ते साधु नें छह काय नो घाती कहि जे, आज्ञा लोपी ते माटे। तिम ते वैद्य साधु री अर्श छेदी आज्ञा विना ते वैद्य नें पिण त्याग भंगावण रो कामी कहीजे। तिण सूं ते वैद्य नें क्रिया लागती कही। जिम ते वैद्य अर्श छेदे तेहनें क्रिया लागे। तिम अग्नि में बलता नें कोई गृहस्थ बाहिरे काढ़े तिण नें क्रिया हुइं। पिण धर्म न हुइं। तिवारे कोई कहे—ए वैद्य नें क्रिया कही ते पुण्य नी क्रिया छै। पिण पाप नी क्रिया नहीं। एहवो ऊंधो अर्थ करे

तेहनों उत्तर—इहां कह्यो, अर्श छेदे ते वैद्य नें क्रिया लागे, पिण धर्मान्तराय साधु रे पड़ी। धर्मान्तराय ते धर्म में विघ्न पड्यो तो जे साधु रे धर्मान्तराय पाडे तेहनें शुभ क्रिया किम हुवे। ए धर्मान्तराय पाड्यां तो पुण्य बंधे नहीं। धर्मान्तराय पाड्यां तो पाप नी क्रिया लागे छै। ए तो पाधरो न्याय छै। एक तो जिन आज्ञा बिना कार्य कियो बीजो साधु री अकल्पती व्यावच्च करी. ते माटे साधु रा त्याग भंगावण रो कामी कही जे। तीजो साधु रे धर्म ध्यान में अन्तराय पाड़ी। ए तीन कार्य कियां तो पुण्य री क्रिया बंधे नहीं। पुण्य री करणी तो आज्ञा माहि छै। निरवद्य कही छै। ते निरवद्य करणी तो साधु कहिनें करावे छै। ते करणी री साधु अनुमोदना करे छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १० बोल सम्पूर्ण।

वली ए अर्श तो साधु गृहस्थी तथा अन्यतीर्थी पासे छेदावे नहीं। छेदता नें अनुमोदे नहीं। जे साधू अर्श छेदावे छेदवता नें अनुमोदे तो प्रायश्चित्त कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

जे भिक्खू अराण उत्थिएणवा गारत्थिएणवा अप्पाणो कायंसि गडंवा पलियंवा अरियंवा असियंवा भगंदलं वा अराणयरेण वा तिक्खेण सत्थ जाएण आच्छिंदेइ विछिंदेइ आछिंदंतं वा विछिंदंतं वा साइज्जइ. ॥३१॥

(निशीथ उ० १५ बो० ३१)

जे० जे कोई भि० साधु. साध्वी. अ० अन्य तीर्थी वा गा० गृहस्थी पासे अ० आपणी काया ने विषे. गं० गंड मालादिक पं० भेदलियादिक अ० गुमडो वा. अ० अर्श ते अपावन ठाम ना, भगन्दर रोग. वा अ० अनेरो रोग. ति० शस्त्र नी जाति तथा प्रकार ना तीक्ष्ण करी. १ वार अथवा थोड़ो सोई छेदे वि० विशेषे वार छेदवे तथा घणो छेदावे. आ० एक वार छेदता नें, वि० वारवार छेदता नें अनुमोदे.

अथ इहां कह्यो—साधू अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ पासे अर्श छेदावे, तथा कोई अनेरा साधू री अर्श छेदता नें अनुमोदे तो मासिक प्रायश्चित्त आवे। अर्श छेदव्यां पुण्य नी क्रिया होवे तो ए अर्श छेदनवाला नें अनुमोदे तो दंड क्यूं कह्यो। पुण्य री करणी तो निरवद्य छे। निरवद्य करणी अनुमोद्यां तो दंड आवे नहीं। दंड तो पाप री करणी अनुमोद्यां थी ज आवे। पुण्य री करणी आज्ञा माहिज छे। अनें अर्श छेद्यो ते कार्य आज्ञा बाहिरे छे। पुण्य री करणी तो निरवद्य छे। ते आज्ञा माहिली निरवद्य करणी अनुमोद्यां तो साधू नें दंड आवे नहीं। दंड तो सावद्य आज्ञा बाहिर ली पाप री करणी अनुमोद्यां रो छे। जे कोई साधू री अर्श छेदे तेहनी अनुमोदना कियां पाप लागे तो छेदण वाला नें धर्म किम हुवे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ११ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली आचारांगे अ० १३ एहवो पाठ कह्यो छे ते लिखिये छे।

सिया से परो कायं सिवणं अणयरे ण सत्थ जाएणं आछिंदेज्ज वा विच्छिदेज्जा णो तं सातिए णो तं नियमे।

(आचारांग अ० १३ श्रु० २)

सि० कदाचित् से० ते. साधु नों का० शरीर नें विषे. व० व्रण गूमडो उपनों जाणी. अनेरे गृहस्थ स० शस्त्र करी आ० थोडो छेदे वि० घणो छेदे णो० तो ते साधु वांछे नहीं णो० करावे नहीं.

अथ इहां कह्यो—जे साधु रे शरीरे व्रण ते गूमड़ो फुणसी आदिक तेहनें कोई पर अनेरो [illegible] शस्त्रे करी छेदे तो तेहनें मन करी अनुमोदे नहीं। अने वचन करी तथा [illegible] करी करावे नहीं। जे कार्य नें साधु मन करी अनुमोदना इं न करे ते कार्य करण वाला नें धर्म किम हुवे। एणे अध्ययन घणा बोल कह्या छै। जे

साधु ना कांटा आदिक काढ़े. कोई मर्दन पीठी स्नान करावे. कोई विलेपन तथा धूपें करी सुगन्ध करे। तेहनें साधु मन करी अनुमोदे नहीं। जे साधु नां गूमड़ा अर्श आदिक छेद्यां धर्म कहे. तो यां सर्व बोलां में धर्म कहिणो। अनें यां बोलां में धर्म नहीं तो गूमड़ा अर्श आदिक छेद्यां में पिण धर्म नहीं। इणन्याय साधु री अर्श छेद्यां क्रिया कही ते पाप री क्रिया छै पिण पुण्य री क्रिया नहीं। विवेक लोचने करी विचारि जोइजो। तथा केतला एक अज्ञानी "किरिया कज्जइ" ए पाठ नो अर्थ ऊंधो करे छै ते कहे--अर्श छेदे ते वैद्य क्रिया "कज्जइ" कहितां कीधी, वैद्य क्रिया कीधी ते कार्य कीधो अनें साधु क्रिया न कीधी, इम विपरीत अर्थ करे छै। ते एकान्त मृषावादी छै। ए वैद्य क्रिया कीधी ए तो प्रत्यक्ष दीसे छै। ए कार्य कारण रूप क्रिया नों तो प्रश्न पूछ्यो नहीं, कर्म बन्धन रूप क्रिया नों प्रश्न पूछ्यो छै। "कज्जइ" कहितां कीधी इम ऊंधो अर्थ करी भ्रम पाडे तेहनो उत्तर—भगवती श० ७ उ० १ जे साधु ईर्यांई चाले तेहनें स्यूं "इरिया वहिया किरियां कज्जइ संपराइया किरियां कज्जइ." इहां पिण इरिया वहिया किरियां कज्जइ कहितां इरियावहिया क्रिया हुवे के संपराय क्रिया हुवे। इम "कज्जइ" पाठ रो अर्थ हुवे इम कियो छै। "कज्जइ" कहितां भवति। तथा भगवती श० ८ उ० ६ साधु ने निर्दोष देवे तेहने "किं कज्जति" कहितां स्यूं फल होवे इम अर्थ टीका में कियो छै—

"कज्जति-किं फलं भवति"

यहां टीका में पिण कज्जति रो अर्थ भवति कियो छै। तथा भगवती श० १६ उ० २ कह्यो "जीवाणं भंते चेय कड़ा कम्मा कज्जंति" अचेय कडा कम्मा कज्जंति इहां पूछ्यो—चेतन रा कीधा कर्म "कज्जंति" कहितां हुवे. के अचेतन रा कीधा कर्म हुवे इहाँ पिण टीका में कज्जति कहितां भवति एहवो अर्थ कियो छै। इत्यादिक अनेक ठामे "कज्जइ" कहितां हुवे इम अर्थ कियो। तिम अर्श छेदे तिहां पिण "किरिया कज्जइ" ते क्रिया हुवे इम अर्थ छै। तथा ठाणाङ्ग ठाणे ३ कह्यो—जे शिष्य देवलोके गयो गुरां ने दुकाल थी सुकाल में मेले तथा अटवी थी वस्ती में

मेले । तथा गुरां ना शरीर माहि थी १६ रोग बाहिरे काढे । इम गुरां रे साता कीधां पिण शिष्य उऋण न हुई । अनें गुरु धर्म थी डिग्यां नें स्थिर कियां उऋण हुवे । इम कह्यो ते माटे ए सावद्य साता कियां धर्म पुण्य नथी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १२ बोल सम्पूर्ण ।

इति वैयावृत्ति-अधिकारः ।



अथ विनयाऽधिकारः।

केई पाषंडी श्रावक री सावद्य विनय कियाँ धर्म कहे छै। विनय मूल (रो नाम लेई श्रावक री शुश्रूषा तथा विनय करवो थापे। अनें इम कहे—ज्ञाता सूत्र में २ प्रकार रो विनय मूल धर्म कह्यो। एक तो साधु नों विनय मूल धर्म, बीजो श्रावक नों विनय मूल धर्म. ए बिहुं धर्म कह्या ते माटे साधु, श्रावक, बेहुनों विनय कियाँ धर्म छै इम कहे—त्यांरे विनय मूल धर्म री ओलखणा नहिं, ते ज्ञाता सूत्र नों नाम लेई नें सावद्य विनय थापे तिहां एहवो पाठ छै। ते पाठ लिखिये छै।

ततेणं थावच्चा पुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्ते समाणे, सुदंसणं एवं वयासी सुदंसणा विनय मूले धम्मे पण्णत्ते, सेऽविय विणए दुविहे पण्णत्ते तं जहा आगार विणए य अणगार विणए य तत्थणं जे से आगार विणए सेणं पंच अणुव्वयाइं. सत्त सिक्खावयाइं एक्कारस उवासग पडिमाओ तत्थणं जे से अणगार विणए सेणं पंच महव्वयाइं।

(ज्ञाता अ० ५)

त० तिवारे. था० थावच्चा पुत्र. सु० सुदर्शन. ए० एम कह्या थकां. सु० सुदर्शन नें ए० एम. व० बोल्या. सु० हे सुदर्शन. वि० विनय मूल धर्म कह्यो छै. से० ते. विनय मूल धर्म दु० २ प्रकार नों कह्यो छै ते कहे छै. आ० एक गृहस्थ नों विनय मूल धर्म. अ० बीजो साधु नों विनय मूल धर्म. त० तिहां. जे० जे. आ० गृहस्थ नों विनय मूल धर्म. से० ते. ५ अणुव्रत स० सात शिक्षा व्रत. ए० ११. उ० श्रावक नी प्रतिमा गृहस्थ नों विनय मूल धर्म. त० तिहां जे साधु नों विनय मूल धर्म. से० ते. पं० पांच महाव्रत रूप.

इहां २ प्रकार नों विनय मूल धर्म बतायो। तिण में साधु रा पञ्च महाव्रत ते साधु रो विनय मूल धर्म. अनें श्रावक रा १२ व्रत ११ पड़िमा श्रावक नों विनय मूल धर्म ए तो साधु श्रावक नों धर्म बतायो छै। ते धर्म थी कर्म वीणिये ते टालिये, ते भणी व्रतां रो नाम विनय मूल धर्म कह्यो छै। जे व्रतां रा अतिचार टाली निर्मल पाले ते व्रतां रो विनय कहिए। इहां तो साधु श्रावकां रा व्रत सूं किण ही जीवने आसातना उपजे नहीं, ते भणी व्रतां नें विनय मूल धर्म कही जे। ए तो अण आसातना विनय रो लेखो कह्यो पिण शुश्रूषा विनय नों इहां कथन नहीं। तिवारे कोई कहे—श्रावक री शुश्रूषा तथा विनय न कह्यो, तो साधु रो पिण शुश्रूषा तथा विनय इहां न कह्यो। श्रावकां रा व्रतां ने इज विनय मूल धर्म कहिणो, तो साधु री शुश्रूषा तथा विनय करे ते किण न्याय इम कहे तेहनों उत्तर—इहां तो शुश्रूषा विनय करे तेहनों कथन चाल्यो नहीं। साधु, श्रावक, विहूं व्रतां नों इज नाम विनय मूल धर्म कह्यो छै। पिण साधु री शुश्रूषा विनय करे तेहनी तो घणे ठामे श्री तीर्थंङ्कर देवे आज्ञा दीधी छै। "उत्तराध्ययन" अ० १ साधु री शुश्रूषा तथा विनय री भगवान् आज्ञा दीधी छै तथा "दश वैकालिक" अ० ६ शुश्रूषा विनय साधु रो करणो कह्यो। पिण श्रावक री शुश्रूषा तथा विनय री आज्ञा किण ही सूत्र में कही न थी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

केतला एक कहे—भगवती श० १२ उ० १ कह्यो। पोखली श्रावक नें उत्पला श्राविका वन्दना नमस्कार कियो। जो श्रावकां रो विनय कियां धर्म नहीं तो उत्पला श्राविका पोखली श्रावकां नों विनय क्यूं कियो। इम कहे तेहनों उत्तर—ए उत्पला श्राविका पोखली श्रावक नों विनय कियो ते संसार नी रीति जाणी ते साचवी पिण धर्म न जाण्यो। जिम पांडु राजा पिण संसार नी रीति जाणी नारद नों विनय कियो कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

ततेणं से पंडुराया कच्छुल्लं णारयं एज्जमाणं पासति २ त्ता पंचहिं पंडवेहिं कुंतीएय देवीएसद्धिं आसणाओ

अब्भट्ठेति २ त्ता कच्छुल्ल नारयं संत्तट्ठ पयाइं पच्चुगच्छइ तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता महरिहेणं आसणेणं उवणि मंतेति ॥१३२॥

(ज्ञाता अ० १६)

त० तिवारे से० ते. प० पाण्डु राजा. क० कच्छुल्ल नारद ने ए० आवतो थको देखी में पं० पांच. पं० पाण्डव अनें. कु० कुन्ती देवी साथे आ० आसन थी उठी उठी ने क० कच्छुल नारद नें स० सात आठ पगला साहमों जावे जाई ने ३ वार दक्षिणा वर्त्त अंजलि करी नें प० प्रदक्षिणा करे करी में वांदे. नमस्कार करे. वांदी नें नमस्कार करी नें. म० महा मूल्यवन्त आसन री निमन्त्रणा कीधी ।

इहां कह्यो । पाण्डु राजा पांच पाण्डव. अनें कुन्ती देवी सहित नारद नें तिप्रदक्षिणा देई नें वन्दना नमस्कार कियो घणो विनय कियो । संसार नी रीति हुन्ती तिम साचवी । इमज कृष्णे नारद नों विनय कियो । ते जाव शब्दमें पाठ भलायो छै । ते कहे छै ।

"इमंचणं कच्छुल नारए जेणेवं कण्हस्स रन्नो गिहंसि जाव समोवइए जाव निसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ"

इहां कृष्ण अन्तःपुर मे बैठा तिहां नारद आयो । तिहां जाव शब्द कह्या माटे जिम पाण्डु राजा विनय कियो तिम कृष्ण पिण विनय कियो जणाय छै । ते कृष्ण पिण संसार नी रीति जाणी साचवी पिण धर्म न जाण्यो । तिम उत्पला श्राविका पोखली श्रावक नों विनय कियो ते संसार नी रीति छै. पिण धर्म न थी । इमज शंख श्रावक नें और श्रावकां नमस्कार कियो ते आपणे छांदे पिण धर्म हेत न थी । "वंदेइ" कहितां गुणग्राम करिवो. अनें "नमंसइ" कहितां नमस्कार ते मस्तक नमाविवो ते श्रावकां ने मस्तक नमाविवा नी श्रीजिन आज्ञा नहीं । जिम "दशवैकालिक" अ० ५ उ० २ गा० २९ "वंदमाणो न जाएज्जा" जे साधु गृहस्थ में वांदतो थको असनादिक जाचे नहीं । वांदतो ते गुण ग्राम करतो थको आहार न जांचे । इम "वंदइ" रो अर्थ गुणग्राम घणे ठामे कह्यो छै । ते माटे शंख नें और

श्रावकां वांद्यो कह्यो ते तो गुण ग्राम किया । अनें "नमंसइ" रो मस्तक नमायो । पहिलां कडुवा वचन शंख श्रावक नें टशां श्रावकां कह्या हुन्ता । ते माटे खमाया ते तो ठीक, परं नमस्कार कियो तिण में धर्म नहीं । ए कार्य आज्ञा बाहिरे छै । सामायक, पोषा. में सावद्य रा त्याग छै । ते सामायक, पोषा. में माहोमाही श्रावक नमस्कार करे नहीं, ते माटे ए विनय सावद्य छै । वली पोपली में उत्पला नमस्कार कियो ते पिण आवतां कियो । अने पोपली जातां वन्दना नमस्कार न कियो । ते माटे धर्म हेते नमस्कार न कियो । जे धर्म हेते नमस्कार कीधी हुवे तो जातां पिण करता । वली शंख नो विनय पोपली कियो ते पिण आवतां कियो । पिण पाछा जावतां विनय कियो चाल्यो नथी । इणन्याय संसार हेते विनय कियो, पिण धर्म हेते नथी । जिम साधु नों विनय करे ते श्रावक आवतां पिण करे अनें पाछा जावतां पिण करे । तिम पोसली नों विनय उत्पला पाछा जातां न कियो । तथा पोपली पिण शंख कना थी पाछा जातां विनय न कियो । ते माटे संसार नी रीते ए विनय कियो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

केतला एक कहे—जो श्रावक नें नमस्कार कियां धर्म नहीं तो अम्बड ना चेलां अम्बड नें नमस्कार क्यूं कीधो । अम्बड नें धर्म आचार्य क्यूं कह्यो । तेहनों उत्तर—अम्बड नें चेलां नमस्कार कियो ते पोता ना गुरु नी रीति जाणी पिण धर्म न जाण्यो । पहिलां सिद्धां नें अरिहंता नें वांद्या तिण में जिन आज्ञा छै । अनें पछे अम्बड नें वांद्यो तिण में जिन आज्ञा नहीं । ते माटे धर्म नहीं । अम्बड नें चेलां नमस्कार कियो तिहां एहवो पाठ छै । ते पाठ लिखिये छै ।

नमोत्थुणं अम्बडस्स परिवायगस्स अम्हं ध——
धम्मोवदेसगस्स ।

(उवाई प्रश्न १३)

न० नमस्कार होज्यो अं० अम्बड नामा, प० परिव्राजक दण्डधर सन्यासी अ० म्हारा धर्माचार्य नें. ध० धर्म ना उपदेशक ने

अथ इहां चेलां कह्यो—नमस्कार थावो म्हारा धर्माचार्य धर्मोपदेशक नें इहां अम्बड परिव्राजक नें नमस्कार थावो एहवूं कह्यो। अम्बड श्रमणोपासक नें नमस्कार थावो इम न कहयूं। ए श्रमणोपासक पद छांडी परिव्राजक पद ग्रहण करी नमस्कार कीधो। ते माटे परिव्राजक ना धर्म नों आचार्य, अनें परिव्राजक ना धर्म नों उपदेशक छै। तिण ने आगे पिण वन्दना नमस्कार करता हुन्ता। पछे जिन धर्म पिण तिणकने पाम्या। पिण आगलो गुरु पणो मिट्यो नहीं। ते माटे सन्यासी धर्म रो उपदेशक कह्यो छै। तिवारें कोई कहे—ए चेलां श्रावक रा व्रत अम्बड पासे लिया। ते माटे धर्माचार्य अम्बड नें कह्यो छै। इम कहे तेहनों उत्तर—इम जो धर्माचार्य हुवे तो पुत्र कनें पिता श्रावक रा व्रत धारे तो तिण रे लेखे पुत्र ने धर्माचार्य कहीजे। इमहिज स्त्री कने भर्तार श्रावक ना व्रत धारे तो तिण रे लेखे स्त्री ने पिण धर्माचार्य कहीजे। तथा साहू वहू कनें व्रत आदरे, तथा सेठ गुमाश्ता कनें व्रत आदरे, तो तिण नें पिण धर्माचार्य कहीजे। वली "व्यवहार" सूत्र नें कह्यो साधु नें दोष लागां * पछाकड़ा श्रावक पासे तथा वेषधारी पासे आलोवणा करी प्रायश्चित्त लेवे तो १० प्रायश्चित्त में आठमो प्रायश्चित्त नवी दीक्षा पिण तेहनें कह्यां लेवे तो तिण रे लेखे ते पछाकड़ा श्रावक नें तथा वेषधारी नें पिण धर्माचार्य कहीजे। अनें जिण पासे धर्म सीख्या तिण नें वन्दना करणी कहे—तिण रे लेखे पाछे कह्या ते सर्व नें वन्दना नमस्कार करणी। जो अम्बड नें पासे चेलां धर्म पाया ते कारण तेहनें बांधां धर्म छै तो ए पाछे कह्या—ज्यां पासे धर्म पाया छै, त्यां सर्व नें बांधां धर्म कहिणो। अम्बड नें धर्माचार्य कहे तो तिण रे लेखे ए पाछे कह्या त्यां सर्व ने धर्माचार्य कहिणा। पिण इम धर्माचार्य हुवे नहीं। आचार्य ना गुण ३६ कह्या छै अनें अम्बड मे तो ते गुण पावे नहीं। आचार्य पद तो ५ पद माहि छै। अनें अम्बड तो पाच पदां माही नहिं छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

* जो साधु भ्रष्ट हुआ पुनः श्रावक बनता है उसको "पछाकड़ा श्रावक" कहते हैं।

"संशोधक"

तथा धर्माचार्य साधु नें इज कह्या छै। "रायपसेणी" में ३ प्रकार ना आचार्य कह्या छै। कला आचार्य १ शिल्प आचार्य २ धर्म आचार्य ३। ए तीन अचार्यां में धर्माचार्य साधु नें इज कह्या छै। ते पाठ लिखिये छै।

तएणं केशी कुमार समणे पदेसी रायं एवं वयासी—जाणातिणं तुम्हं पएसी! केइ आयरियो पगणत्ता। हंता जाणामि, तओ आयरिया पगणत्ता. तंजहा कलायरिए, सिप्पायरिए. धम्मायरिए.। जाणासि णं तुम्हं पएसी! तेसिं तिण्हं आयारियाणं कस्स काविणय पडिवत्ती पउंजियव्वाहंता जाणामि कलायरिस्स सिप्पा परियस्स उवलेवणं वा समजणं वा करेजा पुप्फाणि वा आणावेजा मंडवेजा वा भोयावेजावा विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलएजा, पुत्ताण. पुत्तीयंवा वित्तिं कपेजा जत्थेव धम्मायरियं पासेजा तत्थेव वंदिजा णमंसेजा सक्कारेजा समाणेजा कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेजा फासुएसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलाभेजा पडिहारिएणं पीढ़ फलग सिजा संथारएणं उवनमंतिजा।

(राय पसेणी)

त॰ तिवारे के॰ केशी कुमार श्रमण प॰ प्रदेशी राजा ने. ए॰ इम बोल्यो जा॰ जाणे छै. तू. प॰ हे प्रदेशी! के॰ केतला आचार्य परूप्या. (प्रदेशी बोल्यो) ह॰ हां जाणू छूं. त॰ तीन आचार्य परूप्या त॰ ते कहे छै क॰ कलाचार्य सि॰ शिल्पाचार्य. ध॰ धर्माचार्य केशीकुमार बोल्यो जा॰ जाणे छै. तु॰ तूं. प॰ हे प्रदेशी! त॰ तिण त्रिण आचार्यां नें विषे. क॰ किण री केहवी भक्ति करिये (प्रदेशी बोल्यो) ह॰ हां जाणू छं. क॰ कलाचार्य री शिल्पाचार्य री भक्ति. उ॰ उपलेपपन. मज्जन करविए पु॰ पुष्पे करी मडन करादिए भोजन कराविए. जी॰ जीवितव्य रे अर्थे. प्रीतिदान दीजिये पु॰ तिण रे पुत्र पुत्रियां री वृत्ति कराविए ज॰ जिहां धर्माचार्य प्रति पा॰ देखी ने. त॰ तिहां व॰ वंदी नें ण॰ नमस्कार करी

ने. सं० सत्कार देई नें. स० सन्मान देई नें. क० कल्याणीक मङ्गलीक. दे० धर्मदेव चि० चित्त प्रसन्न कारी त० ते धर्माचार्य नी सेवा करी नें. फा० अचित्त जीव रहित ए० बयालीस ४२ दोष विशुद्ध. अ० अन्नादिक. पा० पाणी २१ जाति ना खादिम फलादि. सा० मुख स्वाद नी जाति प० इणे करी प्रतिलाभी. प० पाडिहारा ते गृहस्थ नें पाछा सूंपिये. पी० बाजोट. फा० पाटिया. सि० उपाश्रय सं० तृणादिक नों सन्थारो. उं० तणे करी निमन्त्री इं.

अथ इहां ३ आचार्य कह्या तिण में धर्मांचार्य नें वन्दना नमस्कार सन्मान देणो कह्यो। कल्याणीक मंगलीक. 'देवयं' कहितां धर्मदेव एतले सर्व जीवां ना नायक "चेइयं" कहितां भला मन ना हेतु प्रसन्न चित्त ना हेतु ते माटे चेइयं कह्या। एहवा उत्तम पुरुष जाणी धर्माचार्य नी सेवा करणी कही। प्रासुक एषणीक असनादिक प्रतिलाभणो कह्यो। पड़िहारिया पीढ़ फलग शय्या सन्थारा देणा कह्या। एहवा गुणवन्त ते तो साधु इज छै। त्यां नें इज धर्माचार्य कह्या। पिण श्रावक नें धर्माचार्य न कह्यो। इहां तो एहवा गुणवन्त साधु प्रासुक एषणीक आहार ना भोगवणहार नें धर्माचार्य कह्या। अनें अम्बड तो अप्रासुक अनेषणीक आहार नों भोगवणहार थो ते माटे अम्बड नें धर्माचार्य किम कहिए। अनें अम्बड नें जो धर्माचार्य कह्यो ते सन्यासी ना धर्म नों आचार्य अर्थात् सन्यासी नों धर्म नों उपदेशक छै। जिम भगवती श० १५ गोशाला रा श्रावकां गोशालो धर्माचार्य कह्यो. तिम अम्बड रा चेलां रे अम्बड पिण सन्यासी रा धर्म ना आचार्य छै। ते निज गुरु जाणी नें नमस्कार कियो ते संसार री लौकिक रीति छै। पिण धर्म हेते नहीं। इहां कोई कहे—अम्बड धर्माचार्य में नथी। तो कलाचार्य, शिल्पाचार्य, में अम्बड नें कही जे कांई। तेहनों उत्तर—जिम अनुयोग द्वार में आवश्यक रा ४ निक्षेपा में द्रव्य आवश्यक रा तीन भेद कह्या। लौकिक, कुप्रावचनीक, लोकोत्तर, तिहां जे राजादिक प्रभाते स्नान ताम्बूलादिक करी देवकुल सभादिक जावे, ते लौकिक द्रव्य आवश्यक १ अनें सन्यासी आदिक पाषंडी दिन उगे रुद्रादिक नी पूजा अवश्य करे, ते कुप्रावचनीक द्रव्य आवश्यक. २ अनें साधु ना गुण रहित वेषधारी बेहूं टके आवश्यक करे. ते लोकोत्तर द्रव्य आवश्यक ३ अनें उत्तम साधु आवश्यक करे तेहनें भाव आवश्यक कह्यो. तेहने अनुसार धर्म आचार्य रा पिण ४ निक्षेपा में द्रव्य धर्म आचार्य रा ३ भेद करवा। लौकिक १ कुप्रावचनीक २ लोकोत्तर ३ तिहां कला ना अनें शिल्प ना सिखावणहार ते लौकिक द्रव्य

धर्माचार्य १ । अनें सन्यासी योगी आदि ना गुरां नें कुप्रावचनीक द्रव्य धर्माचार्य कहीजे २ । अनें साधु रा वेष मे आचार्य वाजे ते वेषधारयां रा आचार्य नें लोकोत्तर द्रव्ये धर्माचार्य कह्या ३ । अनें ३६ गुणा सहित नें भावे धर्माचार्य कहीजे । अनें तीजा धर्माचार्य कह्या ते भाव धर्माचार्य आश्री कह्यो । कुप्रावचनीक धर्माचार्य रो कथन अनें लोकोत्तर द्रव्य धर्माचार्य रो कथन रायपसेणी में आचार्य कह्या, त्यां में नथी । इहां तो कला, शिल्प, लौकिक, धर्माचार्य, अनें भावे धर्माचार्य ए तीनां रो कथन कियो छै । ते माटे ए० ३ आचार्य में अम्बड नथी । तथा ठाणाङ्ग ठाणे ४ चार प्रकार ना आचार्य कह्या—चाण्डाल रा करंडिया समान, वेश्या ना करंडिया समान, सेठ रा करण्डिया समान, राजा ना करंडिया समान, तो चाण्डाल रा करंडिया समान अनें वेश्या ना करण्डिया समान, किसा आचार्य में लेवा । तथा उपासक दशा अ० ७ शकडाल पुत्र रो धर्माचार्य गोशाला नें कह्यो । ते पिण यां तीनां में, कलाचार्य, शिल्पाचार्य, धर्माचार्य, में नथी । ते माटे अम्बड नें धर्माचार्य कह्यो—ते पिण आगले कुप्रावचनीक रो धर्माचार्य पणो धास्यो ते आश्री कह्यो । पिण भावे धर्माचार्य नथी । इणन्याय चेलां अम्बड़ नें कुप्रावचनीक धर्माचार्य जाणी वांद्यो पिण धर्माचार्य जाणी वांद्यो नहीं । तिवारे कोई कहे—ए संथारो करवा त्यारी थया ते वेलां ए पाप रो कार्य क्यूं कीधो तेहनों उत्तर—जे तीर्थङ्कर दीक्षा लेवे तिवारे १ वर्ष ताईं नित्य १ करोड़ अनें आठ लाख सोनइया दान देवे । वली दीक्षा लेतां आठ हजार चौसठ कलशा थी स्नान करे । ए संसार नी रीति साचवे पिण धर्म नहीं । तिम अम्बड ना चेलां पिण संसार नी रीति साचवी पिण धर्म नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ४ बोल सम्पूर्ण ।

तथा सूर्याभ देवें सम्यग्दृष्टि प्रतिमा आगे "नमोत्थुणं गुण्यो—ते लौकिक रीते पिण धर्म हेते नहीं । तथा भरत जी पिण चक्र नों विनय कियो । ते पाठ लिखिये छै ।

सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता पाय पीढाओ पच्चो-रुहइ २ त्ता पाउयाओ ३ मुयइ २ त्ता एग साडिय उत्तरा संगं करेइ २ त्ता अंजलि मउलि यग्ग हत्थे चक्करयणाभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ २ त्ता वामंजाणु अंचेइ २ त्ता दाहिणं जाणु धरणि तलंसि णिहट्टु करयल जाव अञ्जलि कट्टु चक्क-यणस्स पणामं करेइ २ त्ता।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

सिंहासन थकी. अ० उठे. उठी नें पा० बाजोट थी उतरे उतरी ने. पा० पग नी पावडी तथा पगरखी मूके मूकी ने ए० एक शाटिक वस्त्र नों उत्तरासन करे करी नें अ० हाथ बे जोडी ने मस्तक ने आगे हाथ चढ़ावी ने एहवो थको चक्र रत्ने सन्मुख ते सामुहो सात आठ पगलां. अ० जाई जाई ने. वा० डावो गोडो ऊंचो राखे. राखी ने. दा० जीमणो गोडो. ध० धरती तल ने विषे. णि० थाली क० करतल यावत् हाथ जोडी नें च० चक्ररत्न नें प० प्रणाम करे करी नें

इहां चक्र;उपनों सुण्यो तिहां भरत जी इसो विनय कीधो। पछे चक्र कने आवी पूजा कीधी, ते संसार रीते, पिण धर्म हेते नहिं। तिम अम्बड नें चेलां पिण आप रो निज गुरु जाणी गुरु नी रीति साचवी। पिण धर्म न जाण्यो, जब कोई कहे—सन्मुख मिल्यां तो रीति साचवे, पिण पाप जाणे तो पर पूठ विनय क्यूं कियो। तेहनो उत्तर—भरत जी चक्र उपनों सुणतां पाण हर्ष सन्तोष पाम्या, विकसाय मान थइ परपूठे पिण पतलो विनय कियो ते संसार नी रीति ते माटे। तिम अम्बड ना चेलां पिण संसार ना गुरु जाणी आगलो स्नेह तिण सूं आप री लौकिक रीते विनय नमस्कार कियो पिण धर्म हेते नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

तथा "जम्बूद्वीप पन्नति" में तीर्थङ्कर जन्म्यां इन्द्र घणो विनय करे तें पाठ लिखिये छै ।

सूरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता पाय पीढाओ पचोरुहइ २ त्ता वेरुलिय वरिट्ठ रिट्ठ अञ्जण णिउ णोच्चिय मिसिमिसिंति मणिरयण मंडिआओ पाउआओ उमुअइ २ त्ता एग साडियं उत्तरा संगं करेइ २ त्ता अञ्जलि मउलि-यग्गहत्थे तित्थयराभिमुहे सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ २ त्ता वामं जाणु अंचेइ २ त्ता दाहिणं जाणु धरणि अलंसि साहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणिअलंसि निवेसेइ २ त्ता ईसिं पच्चु-णमइ २ त्ता कडग तुडिय थंभिओ भुयाओ साहरइ २ त्ता कइयल परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अञ्जलि कट्टु एवं वयासी—णमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थ-यराणं संयंसबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिस सीहाणं पुरिस वर पुंडरीयाणं पुरिसवर गंध हत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगणाहाणं लोगहिआणं लोगपइवाणं लोग पज्जोयगराणं अभय दयाणं चक्खु दयाणं मग्गदयाणं सरण दयाणं जीव दयाणं वोहि दयाणं धम्म दयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसार-हीणं धम्मवरचा उरंत चक्कवट्टीणं दीवोताणं सरणगइ पइ-ट्ठाणं अप्पडिहय वरणाण दंसण धराणं विअट्ट छउमाणं जिणाणं जावयाणं तिरणाणं तारयाणं वुद्धाणं वोहियाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वभूणं सव्वदरिसीणं सिवमयल मरुअ-मणंत मक्खय मव्वावाहम पुणरायत्तियं सिद्धि गइ णाम

धेयं ठाणं संपत्ताणं णमो जिणाणं जीयभयाणं णमोत्थुणं भगवओ तित्थयरस्स आईगरस्स जाव संपाविओ कामस्स वंदामिणं भगवंतं तापगयं इहगए पासउ मे भयवं तत्थगए ईहगयं तिकट्टु वंदइ णमंसइ २ त्ता सीहासण वरंसि पुरत्थाभिमुहे सणिणसण्णे ॥ ६ ॥

(जम्बूद्वीप पन्नत्ति)

सू० इन्द्र. सी० सिंहासन थी अ० ऊठे. ऊठो ने पा० पावडी पगरखी मूके. मूकी ने. ए० एक शाटिक अखंड आखो वस्त्र तेहनों उत्तरासंग खंधे ऊपर कांख ने नीचे वस्त्र राखे उत्तरा सग करे. करी नें अ० हाथ जोडी. कमल डोडा ने आकारे अग्र हाथ छै जेहनों एहवो थको. ति० तीर्थं कर ने सामुहो. स० सात आठ पगलां. अ० जाइ जाई नें. वा० डावो गोडो ऊंचो राखे राखी नें. दा० जीमणो गोडो ध० धरणी तल नें विषे. सा० स्थापी नें ति० त्रिण वार मस्तक प्रते. ध० धरती तला नें विषे. नि० लगावे. लगावी नें. ई० ईषत् लिगारेक ऊंचो थई नें. क० कांकण. तु० बहिरखा स० तेणें करी स्तम्भित भु० एहवी भुजा प्रते सा० सकोच सकोची नें क० करतल हाथ ना तला प० एकठा करी ने सि० मस्तके आवर्त रूप म० मस्तक नें विषें अ० अजलि करी नें. ए० इम कहे स्तुति करे. न० नमस्कार थावो या० वाक्यालकारे. अ० अरिहन्त नें. भ० भगवन्त नें ज्ञानवन्त ने. आ० धर्म नी आदि करण हारा नें. ती० च्यार तीर्थ स्थापन करणवाला नें. स० स्वयमेव ज्ञान प्राप्त करण वाला नें पु० पुरुषोत्तम नें. पु० पुरुष सिंह नें. पु० पुरुषां ने विषे पुण्डरीक नी उपमावाला ने. पु० पुरुषां में गन्धहस्ती नी उपमावाला ने लो० लोकोत्तम नें लोकनाथ ने. लो० लोक हितकारी नें लो० लोकां में दीपक समान नें. लो० लोक में प्रद्योत करणवाला ने अ० अभय दाता नें च० ज्ञान रूप चक्षु दाता नें. म० मोक्ष मार्ग दाता नें. स० शरण दाता नें. जी० संयम रूप जीव दाता नें. बो० सम्यक्त्व रूप बोध देणवाला नें. ध० धर्म देणवाला ने ध० धर्मोपदेश करण वाला ने. ध० धर्मनायक नें ध० धर्म सारथि नें. ध० धर्म में चातुरन्त चक्रवर्त्ती नें दी० संसार समुद्र में द्वीप समान ने. स० शरणागत आधार भूत ने. अ० अप्रतिहत केवल ज्ञान केवल दर्शन धारण करण वाला नें. वि० छद्मस्थ पणा रहित ने. जि० राग द्वेष नों जय करणवाला ने तथा करावण वाला ने. ति० संसार समुद्र थकी तिरण वाला ने तथा तारण वाला नें बु० स्वयं तत्वज्ञान जाणण वाला नें. तथा बतावण वाला नें मु० स्वयं आठ कर्मा थकी निवृत्त होण वाला नें तथा निवृत्त करावण वाला नें. स० सर्वज्ञ सर्वदर्शी नें सि० उपद्रव रहित. अचल. अरोग अनन्त अक्षय अव्याबाध अपुनरागमन सिद्ध गति प्राप्त करण वाला ने न० नमस्कार

थावो जिन तीर्थंकर नें जीत्या छै भय जेणे. न० नमस्कार थावो ण वाक्यालंकारे. भ० भगवन्त. ति० तीर्थंकर नें. आ० धर्म ना आदि ना करणाहार. जा० यावत्. सं० मोक्ष गति पामवानों काम अभिलाष छै जेहनों एहवा तीर्थंकर नें. व० वांदू छू भ० भगवन्त प्रते तिहां जन्मस्थान" इ० हूं इहां सौधर्म देवलोक नें विषे रह्यो एहवा नें देखो हे भगवन्! भ० भगवन्त तिहां जन्मस्थान के रह्या. इ० इहां देवलोके रह्या छूं. ति० इम करी नें व० वांदे वचने करी स्तुति करे न० नमस्कार करे कायाइं करी.

अथ इहां कह्यो—तीर्थङ्कर जनम्या ते द्रव्य तीर्थङ्कर नें इन्द्र नमोत्थुणं गुणे, नमस्कार करे, ते पिण इन्द्र नी रीति हुन्ती ते साचवे पिण धर्म जांणे नहीं। तिण ज्ञान सहित इन्द्र एकावतारी नें पिण परपूठे जनम्या छतां द्रव्य तीर्थङ्कर नों विनय करे। "नमोत्थुणं" गुणे ते लौकिक संसार ने हेते रीति साचवे, पिण मोक्ष हेते नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण।

वली इन्द्र पिण इम विचार्यो—जे तीर्थङ्कर नी जन्म महिमा करूं. ते माहरो जीत आचार छै। एहवो पाठ कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

तएणं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अयमेवा रूवे जाव संकप्पे समुपज्जित्था उप्पण्णे खलु भो! जम्बुद्दीपे भयवं तित्थयरे तं जीयमेयं तीय पच्चुप्पण्ण मणागयाणं सक्काणं देविंदाणं देवराईणं तित्थयराणं जम्मण महिमं करित्तए तं गच्छामिणं अहं पि भगवओ तित्थयरस्स जम्मण महिमं करे-मितिकट्टु.

(जम्बूद्वीप पन्नत्ति)

त० तिवारे पछे. त० ते. स० शक्र देवेन्द्र देवता ना राजा नें अ० एहवो एतादृश रूप जा० यावत्. अ० संकल्प विचार उपनो. उ० उपना. ख० निश्चय. भो० भो इति आमन्त्रणे.

ज० जम्बूद्वीप नामा द्वीप ने विषे भ० भगवन्त. ति० तीर्थ कर. त० ते भणी जी० जीत आचार एहवो अतीत काले थया. प० वर्त्तमान काले छै. भ० अनागत काले थास्ये त०वा म० शक्र देवता ना राजा ती० तीर्थ कर ना ज० जन्म महोत्सव महिमा. क० करिवो ते आचार छै. त० ते भणी नाव्. अ० हूं पिण. भ० भगवन्त तीर्थ कर ना. ज० जन्म नी म० महिमा करू. ति० एहवो विचार करी ने.

अथ इहां इन्द्रे विचास्यो—जे तीर्थङ्कर नी जन्म महिमा करूं ते म्हारो जीत आचार छै एहवो कह्यो। पिण ए जन्म महिमा धर्म हेते करूं इम नथी कह्यो। तो जिम इन्द्र जीत आचार जाणी जन्म महिमा करे तीर्थङ्कर जनम्या "नमोत्थुणं" गुणे. ए पिण संसार नी लौकिक रीति साचवे। तिम अम्बड ना चेलां तथा उत्पला श्राविका श्रावकादिक नें नमस्कार किया ते पिण पोता नी लौकिक रीति साचवी पिण धर्म न जाण्यो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ७ बोल सम्पूर्ण।

तथा इन्द्र तीर्थङ्कर नी माता नें पिण नमस्कार करे ते पाठ लिखिये छै।

जेणेव भयवं तित्थ यरे तित्थयर मायाय तेणेव उवा-गच्छइ २ त्ता आलोए चेव पणामं करेइ २ त्ता भयवं तित्थ-यरं तित्थयर मायरंच तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता करयल जाव एवं वयासी--णमोत्थुणं ते रयण कुच्छि धारिए एवं जहा दिसा कुमारी ओजाव धणणासि पुण्णासि तं कयत्थासि अहणणं देवाणुप्पिए! सक्केणामं देविंदे देव राया भगवओ तित्थ यरस्स जम्मण महिमं करिस्सामि।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

जे० जिहां. भ० भगवान् तीर्थ कर छै अनें तीर्थ कर नी माता छै. उ० आवे आवी ने. आ० देखी नें तिमज. प० प्रणाम करी ने भ० भगवन्त तीर्थ कर प्रते ति० तीर्थ कर नी माता

प्रते. ति० त्रिण वार आ० जीमणा पासा थी प० प्रदक्षिणा करे क० हाथ जोडी नें यावत्. ए० इम कहे. न० नमस्कार थावो ते० तुझ नें हे रत्न कुक्षि नी धरणहारी ए० इण प्रकार: ज० जिम दि० दिशाकुमारी कह्या तिम कहे छै ध० तू धन्य छै पु० तू पुण्यवन्त छै क० तू कृतार्थ छै. अ० अहो. दे० देवानुप्रिये ! स० हूं शक्र नामक देवेन्द्र दे० देवता नो राजा. भ० भगवान्. ति० तीर्थंकर नों. ज० जन्म महोत्सव क० करस्यू

अथ इहां तीर्थङ्कर नी माता नें इन्द्र प्रदक्षिणा देई नें नमस्कार कियो । ते इन्द्र तो सम्यग्दृष्टि अने तीर्थङ्कर नी माता सम्यग्दृष्टि हुवे, तथा प्रथम गुणठाणे पिण भगवान् री माता हुवे तो तेहनें पिण नमस्कार करे, ते पोता नों जीत आचार लौकिक रीति जाणी साचवे पिण धर्म न जाणे। तिम अम्बड़ ना चेलां पिण संसार नों गुरु जाणी नमस्कार कियो पिण धर्म हेते नहीं। तथा वली अनेक श्रावक ना मङ्गलीक रे घर ना देव पूजे। "नाग हेउवा भूत हेउवा जक्ख हेउवा" कह्या छै। अभयकुमार धारणी रो दोहिलो पूर्यो पूर्व भव ना मित्र देवता आराध्यो। भरतजी १३ तेला किया, देवता नें नमस्कार करी बाण मूक्यो त्यांनें वश किया। कृष्ण देवता नें आराध्यो छै। पछे गज सुकुमाल को जन्म थयो। इत्यादिक संसार ने हेते सम्यग्दृष्टि श्रावक अनेक सावद्य कार्य करे। पिण धर्म न जाणे। तिम अम्बड़ ना चेलां पिण विनय नमस्कार कियो ते संसार नों गुरु जाणी नें, पिण धर्म हेते नहीं। गृहस्थ नें नमस्कार करण री भगवान् री आज्ञा नहीं ते माटे श्रावक नें नमस्कार कियां धर्म नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ८ बोल सम्पूर्ण ।

तथा आवश्यक सूत्र में नवकार ना ५ पद कह्या—पिण "णमो सावयाणं" इम छठो पद कह्यो नहीं। तथा चन्द्र प्रज्ञप्ति सूत्र में एहवो पाठ कह्यो छै। ते लिखिये छै।

नमिऊण असुर सुर गरुल-भुयंगपरिवंदिए गय किलेसे
अरिहं सिद्धायरिय--उवज्झाय सव्वसाहूय ।

(चन्द्र प्रज्ञप्ति गा० २)

न० नमस्कार करी अ० भवनें पति आदिक सु० वैमानिक ग० गरुड देवता सु० नागकुमार तथा व्यन्तर विशेष ते देवता नो वन्दनीकां प्रते वलि ते केहवा ग० रागादिक क्लेश गयो छै जेहनों अ० अरिह कहितां पूजा योग्य छै. सि० सिद्ध ते सघला कर्म रहित. आ० आचार्य ने. उ० भणे भणावे तेहनें. स० साधु प्रते नमस्कार कियो छै

इहां पिण ५ पदां नें नमस्कार कह्यो पिण श्रावक नें न कह्यो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

तथा सर्वानुभूति सुनक्षत्र मुनि गोशाला नें कह्यो—ते पाठ लिखिये छै ।

जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ २ त्ता गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी--जे वि ताव गोसाला तहा रूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं निसामेति २ त्ता सेवितावि तं वंदति नमंसति जाव कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासति ।

(भगवती श० १५)

जे० जिहां ते गोशालो मंखलिपुत्र तिहां आवे आवी ने. गो० गोशाला मंखलिपुत्र प्रति इम कहे. जे० प्रथम गोशाला तथा रूप श्रमण नो तथा ब्रह्मचारी ना पासा थी ए० एक आदरवा योग्य धर्म सुवचन सांभले सांभली ने. ते पुरुष ते प्रते वांदे. न० नमस्कार करे जा० यावत् कल्याण मङ्गलीक देव नी परे देव चे० ज्ञान वन्त नी पर्युपासना करे.

अर्थ अठे सर्वानुभूति सुनक्षत्र मुनि गोशाला नें कह्यो । हे गोशाला ! जे तथा रूप श्रमण माहण कनें एक वचन सीखे. तेहनें पिण वांदे नमस्कार करे । कल्याणीक मंगलीक देवयं चेइयं जाणी नें घणी सेवा करे । इहां श्रमण माहण कनें सीखे तेहने वन्दना नमस्कार करणो कह्यो । पिण श्रमणोपासक कनें सीखे तेहनें वन्दना नमस्कार करणो—इम न कह्यो । श्रमण माहण नी सेवा कही पिण

श्रमणोपासक री सेवा न कही। ए तो प्रत्यक्ष श्रावक नें टाल दियो, अनें श्रमण माहण नें वन्दना नमस्कार करणो कह्यो, ते मांटे श्रावक नें नमस्कार करे ते कार्य आज्ञा बाहिरे छै। तथा सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० ७ उदक पेढाल पुत्र नें पिण गौतम कह्यो। जे तथा रूप श्रमण माहण कनें सीखे तेहनें वन्दना नमस्कार करे, पिण श्रावक कने सीखे तेहनें नमस्कार करणो न कह्यो। केतला एक कहे श्रमण ते साधु अनें माहण ते श्रावक छै ते पासे सीख्यां तेहनें वन्दना नमस्कार करणो। इम अयुक्ति लगावे तेहनों उत्तर—इहां तो एहवा पाठ कह्या जे तथा रूप श्रमण माहण कनें एक वचन सीखे तो तेहनें "वन्दइ, नमंसइ, सक्कारेइ सम्माणेइ, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं" एतला पाठ कह्या। एहवा शब्द साधु नें तथा भगवान् नें ठामे २ कह्या। पिण श्रावक नें एतला शब्द किहांही कह्या नथी। "कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं," ए ४ नाम भगवान् तथा साधु रा तो अनेक ठामे कह्या, पिण श्रावक रा ४ नाम किहां ही नथी कह्या, ते मांटे श्रमण माहण साधु नें इज इहां कह्या। पिण श्रावक नें माहण नथी कह्यो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १० बोल सम्पूर्ण।

तथा सूयगडांग अ० १६ माहण साधु नें इज कह्या छै ते पाठ लिखिये छै।

अहाह भगवं दंते दविए वोसट्ठकाए त्तिवच्चे माहणे तिवा समणेतिवा भिक्खूति वा निग्गंथेति वा पडिआह भंते! कहणं भंते! दविए वोसट्ठकाए तिवच्चे माहणेति वासमणेति वा। भिक्खूति वा निग्गथेति वा तं नो वूहि मुणी ति विरय सव्व पाप कम्मे पेज दोस कलह अब्भक्खाण पेसुण्ण परि परिवाय अरइ रइ माया मोसा मिच्छादंसणसल्ल विरए समिए सहिए सदाजए णो कुज्झे णो माणि माहणे-तिवच्चे।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १६)

अ० अथ अनन्तर. भ० भगवान् श्री महावीर. ते० साधु नें दं० इन्द्रिय दमणहार. द० मुक्त गमन योग्य. वो० वोसरावी छै काया विभूषा रहित एहवो शरीर जेहनों ति० इम कहिवो. मा० महणो महणो एहवो उपदेश ते माहण अथवा नवगुप्त ब्रह्मचर्य थकी ब्राह्मण स० श्रमण तपस्वी. वा० अथवा साधु भिक्षाइ करी भिक्षु नि० बाह्य आभ्यंतर ग्रंथि रहित ते भणी निर्ग्रंथ कहिए इम भगवंते कहे हुंते शिष्य बोल्यो किम हे भगवन्! दांति. काया वोसरावे ते मुक्त गमन योग्य इम कहिवो मा० माहण त्रस स्थावर न हणे स० श्रमण तपस्वो. भि० आठ कर्म भेदे भिक्षाइ जीवे. नि० निर्ग्रंथ त० तेम्हा ने कहो मुनीश्वर तिवारे गुरु ब्राह्मणादिक च्यार नाम नों अर्थ अनुक्रमे कहिवो छै. सि० जेणे प्रकारे विरत स० सर्व पाप कर्म थकी निवृत्यो. तथा. पे० राग. दो० द्वेष क० कुवचन भाषण अ० अभ्याख्यान अछता दोष नों प्रकाशिवो. पे० पैशुन्य परगुण नों असहिवो तेहना दोष नों उघाडिवो प० पर परिवार अनेरा नों दोष अनेरा आगले प्रकाशिवो. अ० अरति चित्त नों उद्वेग. र० रति चित्त नी समाधि. मा० माया ससार विषे परवचना मो० मृषा अलीक भाषण. मि० मिथ्या दर्शन सल्य तं तत्व ने विषे अतत्व नी बुद्धि अतत्व ने विषे तत्व नी बुद्धि. एहीज शल्य वि० तेह थकी विरत स० पांच सुमति सहित ज्ञानादिक सहित. स० सदा सयम ने विषे सावधान. णो० किणही सू क्रोध न करे. णो० मान रहित एणी परे माया लोभ रहित एत्र गुण कलित माहण कहिवो.

अथ इहां १८ पाप सूं निवृत्यो. पाँच सुमति सहित एहवा महा मुनि नें इज माहण कह्यो। पिण श्रावक नें माहण न कह्यो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ११ बोल सम्पूर्ण।

तथा सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० १ पिण साधु नें इज माहण कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

एवं से भिक्खू परिणाय कम्मे परिणाय संगे परिणाय गिहवासे उवसंते समिए सहिए सया जए से एवं वत्तवे तंजहा—समणेति वा माहणेति वा खंति ति वा दंते तिवा गुत्तेति वा मुत्तेतिवा इसीतिवा मुणीति वा किसीति वा

विऊत्तिवा भिक्खूति वा लुहेति वा तीरट्ठीइवा चरण करण पारविदूत्तिबेमि ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० १)

ए० एणी परे भि० साधु ज्ञाने करी जाणवो. प० ज्ञाने करि जाणी नें पचक्खाणें करी पंचक्खिवो. क० कर्मबंध नों कारण प० प्रत्याख्यान प्रज्ञाइं पचक्खिणो बाह्य आभ्यतर संग जेणे प० जेणे असार करी जाणी नें छांड्यो गि० गृहवास. उ० इन्द्रिय उपशमाव्या. तथा स० पांच सुमति सहित स० ज्ञानादि करी सहित. स० सर्वदाकाल यत्नावत से० ते एहवो चारित्रियो हुइं व० ते कहिवो त० ते कहे छै. स० श्रमण तपस्वी तथा मित्र शत्रु ऊपर समता भाव जेहनों ते श्रमण मा० प्राणिया नें महणो २ जेहनों उपदेश ते माहण ख० क्षमा-वत. द० इन्द्रिय नों दमणहार. गु० त्रिहुं गुप्ति गुप्तो. मु० निर्लोभी लोभ रहित इ० जीव रक्षा करे ते ऋषि. मु० जगत् ना स्वरूप नों जाणणहार कि० सहू कोई कीर्त्ति करे ते कीर्त्ति-वंत वि० परमार्थ थकी पण्डित भि० निरवद्य आहार नों लेणहार लु० अतप्रांत आहार नों करणहार. ती० संसार नों तीर रूप मोक्ष तेहनों अर्थी च० चरण ते मूल गुण क० करण ते उत्तर गुण तेहनों. पा० पारगामी ते भणी चरण करण तेहनों वि० जाणणहार. त्ति० श्री सुधर्मास्वामी जम्बू स्वामी प्रते कहे छै.

अठे साधु रा १४ नाम वली कह्या—जेणे गृहस्थ वास त्याग्यो ते साधु नें इज एतले नामे बोलाव्यो । जिण माहे माहण नाम साधु नों कह्यो पिण श्रावक नों नाम नथी चाल्यो । तिवारे कोई कहे—,"समणंवा माहणंवा" इहां वा शब्द अन्य पुरुष नी अपेक्षाय कह्यो छै, ते माटे श्रमण कहितां साधु अनें माहण कहितां श्रावक कहीजे. इम कहे तेहनों उत्तर—जिम सूयगडाङ्ग श्रु० २ अ० १६ साधु रा नाम ४ पूर्वे कह्या त्यां में पिण वा शब्द अन्य नाम नी अपेक्षाय कह्यो छै पिण अन्य पुरुष नी अपेक्षाय कह्यो नथी । तथा लोगस्स में 'सुविहं च पुप्फदंतं' कह्यो तिहां च शब्द ते सुविध नों नाम बीजो पुष्पदंत तेहनी अपेक्षाय कह्यो, पिण सुविध पुष्पदंत. ए बे तीर्थङ्कर नहीं । नवमा तीर्थङ्कर ना बे नाम छै तेह नी अपेक्षाय च शब्द कह्यो छै । तिम "समणं वा माहणं वा" इहां वा शब्द साधु ना बे नाम नी अपेक्षाय जाणवो । डाह्या हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १२ बोल सम्पूर्ण ।

तथा उत्तराध्ययन अ० २५ माहण ना लक्षण कह्या ते पाठ लिखिये छै।

जो लोए बंभणोवुत्तो अग्गीव महिओ जहा।
सया कुसल संदिट्ठं तं वयं बूम माहणं॥

जो० जे. लो० लोक नें विषे ब० ब्राह्मण कह्या. अ० घृते करी सिञ्चित अग्नि समान दीपे एहवा. म० पूजनीय. ज० यथा प्रकारे. स० सर्वदा काले. कु० कुशले तीर्थंकरादिक सं० कह्या. त० तेहनें. वं० म्हे बू० कहां छां. मा० ब्राह्मण.

अथ इहां कह्यो—लोक नें विषे जे ब्राह्मण कह्या जिम अग्नि पूजे छते घृतादिके दीपे तिम गुणे करी दीपे सदा शोभे ब्रह्म क्रिया इं करी. एहवूं कुशले तीर्थङ्करादिक कह्या, तेहनें म्हे कहां माहण, तथा—

जो न सज्जइ आगंतु पव्वयं तो न सोयइ।
रमइ अज्ज वयणम्मि तं वयं बूम माहणं॥ २०॥

जो० जे. न० नहीं स० आसक्त होवे आ० स्वजनादिक नें स्थान आयां. पं० आवें अनय स्थान के जातां. न० नहीं सो० शोक करे र० रति करे. अं० तीर्थ कर ना व० वचन ना विषे ते० तेहनें व० म्हे बू० कहां छां. मा० माहण

अथ इहां कह्यो—स्वजनादिक नें स्थान आयां आशक्त न होवे, अनें अन्य स्थानके जातां शोक न करे, तीर्थङ्कर ना वचन नें विषे रति करे, तेहनें म्हे कहां छां माहण। तथा—

जायरूवं जहासिट्ठं निद्धंतं मल पावगं।
राग दोस भयाईयं तं वयं बूम माहणं॥ २१॥

जा० सुवर्ण नें. ज० जिम मि० मठारे अग्नि करी घसें. नि० मल दूर करे तिम आत्मा नें. ने रा० राग दोष भयादि करी रहित करे. तं० तेहनें व० म्हे बू० कहां छां. मा० माहण.

अथ इहां कह्यो—सुवर्ण नें मठारे अग्नि करी मल दूर करे तिम आत्मा नें धमी नें कसी नें मल सरीखूं पाप दूर कीधो जेहनें राग द्वेष भय अति क्रम्या जेहनें तेहनें म्हे कहां छां माहण। तथा—

तवस्सियं किसं दंतं अवचिय मंस सोणियं ।
सुव्वयं पत्त निव्वाणं तं वयं वूम माहणं ॥ २२ ॥

त० तपस्वी. कि० तपे करी कृश शरीर छै जेहनों दं० इन्द्रिय दमी जेहनें अ० सूक्यो छै मां मांस लोही जेहनों सु० सुव्रती. प० मोक्ष पद ग्रहण करवा ने योग्य. त० तेहनें. व० म्हे वू० कहां छां. मा० माहण.

अथ इहां कह्यो—तपे करी कृश दुर्बल, इन्द्रिय दमी जेणे, मांस लोही शुष्क. सुव्रती समाधि पाम्यो. तेहनें म्हे कहां छां माहण । तथा,

तस पाणे वियाणेत्ता संगहेणय थावरे ।
जो न हिंसइ तिविहेणं तं वयं वूम माहणं ॥ २३ ॥

त० द्वीन्द्रियादिक त्रस प्राणी नें. वि० विशेष जाणी ने. सं० विस्तारे करी तथा. सक्षेपे करी था० पृथिव्यादिक स्थावर जीव नें. जो० जे न० नहीं. हिं० मारे ति० त्रिविध मन वचन कायाइं करी. तं० तेहनें. व० म्हे. वू० कहां छां मा० माहण

अथ इहां कह्यो—त्रस स्थावर जीव ने तिविधे २ न हणे तेहनें म्हे कहां छां माहण । तथा,

कोहा वा जइवा हासा लोहा वा जइवा भया ।
मुसं न वयइ जोउ तं वयं वूम माहणं ॥ २४ ॥

को० क्रोध थी यदि वा हा० हास्य थी यदि वा लोभ थी यदि वा भ० भय थी मु० मृषा झूठ न० नहीं. व० बोले जो० जे स० तेहनें. व० म्हे व० कहां छां माहण

अथ इहां कह्यो—क्रोध थी हास्य थी लोभ थी भय थी मृषा न बोले तेहनें म्हे कहां छां माहण । तथा,

चित्तमंत मचित्तं वा अप्पं वा जइ वा वहुं ।
न गिण्हइ अदत्तं जे तं वयं वूम माहणं ॥ २५ ॥

चि० सचित्त म० अथवा अचित्त अ० अल्प. अथवा व० बहु वस्तु न० नहीं गि० ग्रहण करे. अ० विना दीधी थकी अर्थात् चोरी न करे जे० जो त० तेहनें म्हे कहां छां माहण.

अथ इहां कह्यो—सचित्त अथवा अचित्त, अल्प अथवा बहु वस्तु री चोरी न करे तेहनें म्हे कहाँ छां माहण । तथा,

दिव्व माणुस तेरिच्छं जो न सेवइ मेहुणं ।
मणसा काय वक्केणं तं वयं बूम माहणं ॥ २६ ॥

दि० देवता सम्बन्धी म० मनुष्य सम्बन्धी. ति० तिर्यक् सम्बन्धी जो० जो न० नहीं से० सेवे मे० मैथुन म० मन करी का० काया करी. वा० वचन करी त० तेहने व० म्हे बू० कहां छां माहण.

अथ इहां कह्यो—देवता, मनुष्य, तिर्यञ्च सम्बन्धी मैथुन मन वचन काया करी न सेवे तेहनें म्हे कहा छां माहण । तथा,

जहा पोमं जले जायं नो वलिपइ वारिणा ।
एवं अलित्तं कामेहिं तं वयं बूम माहणं ॥ २७ ॥

ज० जिम पो० कमल. ज० जल नें विषे, जा० उपना हुवा पिण नो० नहीं लि० लिपावे. वा० पाणी करी ए० इण प्रकारे जो अ० नहीं लिपाय मान हुवा का० काम भोगे करी तं० तेहनें म्हे कहां छां माहण

अथ इहां कह्यो—जिम कमल जल नें विषे उपनों पिण पाणी करी न लिपावे इम काम भोगे करी जो अलिप्त छै । तेहनें म्हे कहां छां माहण । तथा,

आलोलुयं मुहाजीवी अणगारं अकिंचनं ।
असंसत्तं गिहत्थे सु तं वयं बूम माहणं ॥ २८ ॥

अ० अलोलुपी मु० अनत पुरुषां रे अर्थे बनावोडो आहार तेणें करी आग यात्रा करे अ० अनगार घर रहित अ० परिग्रह रहित. अ० असक्त गि० गृहस्थ ने विषे त० तेहने म्हे कहां छां माहण

अथ इहां कह्यो—लोलपणा रहित अज्ञात कुल नी गोचरी करे, घर रहित परिग्रह रहित गृहस्थ सूं संसर्ग रहित, अणगार तेहनें म्हे कहां छां माहण । तथा

जहित्ता पुव्व संजोगं नाति संगेय बंधवे ।
जो न सज्जइ भोगेसु तं वयं बूम माहणं ॥ २६ ॥

(उत्तराध्ययन अ० २५)

ज० छांडी नें विचरे पु० पूर्व सं० संयोग माता पितादिक ना ना० ज्ञाति ते कुल स० संग ते सास सुसरादिक ना ब० बांधव ते भ्राता आदिक नें जो० जो न० नहीं स० संसक्त होवे भोगां नें विषे त० तहनें ब० म्हे कहां छां माहण.

अथ इहां कह्यो—पूर्व संयोग ज्ञाति संयोग तजी नें काम भोग नें विषे गृद्ध पणो न करे। तेहनें म्हे कहां छां माहण। इहां पिण अनेक गाथा में माहण साधु नें इज कह्यो। पिण श्रावक नें न कह्यो। प्रथम तो सूयगडाङ्ग अ० १६ महामुनि नें माहण कह्यो। तथा सूयगडाङ्ग श्रुतखंड २ अ० १ साधु रा १४ नामा में माहण कह्यो। तथा उत्तराध्ययन अ० २५ अनेक गाथा में माहण साधु ने इज कह्यो। तथा सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १ माहण नों अर्थ साधु कियो। तथा तथा तिणहिज उद्देश्ये गा० ५ माहण मुनि नें कह्यो। तथा तेहज उद्देश्ये माहण यति नें कह्यो। इत्यादिक अनेक ठामे माहण साधु नें इज कह्यो। श्रमण ते तपस्या युक्त उत्तर गुण सहित ते भणी श्रमण कह्यो। माहण ते पोते हणवा थी निवृत्या अनें पर नें कहे महणो महणो, मूल गुण युक्त ते भणी माहण कह्यो। एतले श्रमण माहण साधु नें इज कह्यो। पिण श्रावक नें किण ही सूत्र में माहण कह्यो नथी। जिम स्वतीर्थी साधु नें श्रमण माहण कह्या, तिम अन्य तीर्थी में श्रमण शाक्यादिक. माहण ते ब्राह्मण ए अन्य तीर्थी ना पिण श्रमण माहण कह्या। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १३ बोल सम्पूर्ण ।

तथा अनुयोग द्वार में एहवो कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै।

से किं तं सिलोय नामे सिलोए नामे समणे माहणे सव्वा तिही सेतं सिलोग नामे ।

(अनुयोग द्वार)

से० ते कि० कौण सि० श्लाघनीक नाम इति प्रश्न । उत्तर श्लाघनीक नाम स० श्रमण माहण म० सर्व अतिथि ए सर्व साधु वाची नाम. से० ते सि० श्लाघनीक नाम जाणवा

अथ इहां पिण श्रमण माहण सर्व अतिथि नों नाम कह्यो । पिण श्रावक नों नाम श्रमण माहण न कह्यो । जैन मत में जे गुरु तेहना नाम श्रमण माहण कह्या । तथा अन्य मत में जे जे गुरु श्रमण शाक्यादिक माहण ब्राह्मण ते पिण गुरु बाजे । ते माटे सर्व अतिथि नें श्रमण माहण कह्या । पिण श्रावक नें माहण कह्या नथी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

तथा आचाराङ्ग श्रु० २ अ० ४ उ० १ कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

से भिक्खूवा पुमं आमंते माणे आमंतिए वा अपडि सुण माणे एवं वदेज्जा अमुगोतिवा आउसो तिवा आउसं तो ति सावगे ती वा उपासगेति वा धम्मिए ति वा धम्मि पिये ति वा एय प्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतो व घातियं अभि कंख भासेज्जा ॥ ११ ॥

(आचारांग श्रु० २ अ० ४ उ० १)

से० ते साधु साध्वी पु० पुरुष नें आमन्त्रणां करतां थका अ० आमन्त्रे तिवारे किणहो कारणे किण ही पुरुष नें अ० कदाचित ते सांभले नहीं पाछो प्रतिउत्तर नहीं दे । तिवारे साधु ते प्रते ए० इम कहे अ० अमुक (जे नाम हुई ते बोलावे) अथवा आ० आयुष्यमन् ! आ०

आ० आयुष्यवंत ! सा० हे श्रावको ! उ० अथवा हे साधु ना उपासको ! ध० हे धार्मिक ! ध० हे धर्म प्रिय ! ए० एहवा प्रकार नी भाषा नें अ० असावद्य जा० यावत् अ० टया पूर्या अ० बांछे भा० बोलवा.

अथ इहां एतले नामे करी श्रावक बोलावणो कह्यो। तिण नें नाम लेई इम बोलावो। हे श्रावक ! हे उपासक ! हे धार्मिक ! हे धर्मप्रिय ! एहवा नामा करी बोलावणो कह्यो। इहाँ श्रावक उपासक, धार्म्मिक, धर्म्मप्रिय ए नाम कह्या। पिण हे माहण ! इम माहण नाम श्रावक रो न कह्यो। ते भणी श्रावक नें माहण किम कहीजे। अनें किणहिक ठामे टीका में माहण ना अर्थ प्रथम तो साधु इज कियो, अनें बीजो अर्थ अथवा श्रावक इम कियो छै पिण मूल अर्थ तो श्रमण माहण नों साधु इज कियो। अनें किहां एक माहण नों अर्थ श्रावक कियो ते पिण सुणवा रे स्थानक कियो। पिण "वंदइ नमंसइ सक्कारेइ. समाणेइ. कल्लाणं. मंगलं. देवयं. चेइयं." एतला पाठ कह्या तिहां तथा आहार पाणी देवा नें ठामे माहण शब्द कह्यो। तिहां माहण शब्द नों अर्थ श्रावक नथी कह्यो। अनें जे उत्तर अर्थ (बीजो अर्थ) बतावी दान देवा नें ठामे. तथा वन्दना नमस्कार ने ठामे माहण नो अर्थ श्रावक थापे छै, ते तो एकान्त मिथ्यात्वी छै अनें टीका में तो अनेक वातां विरुद्ध छै। जिम आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० १० टीका में सचित्त लूण खाणो कह्यो छै। तथा तिणहिज उद्देश्ये रोग उपशमावा अर्थे साधु नें कारणे मांस नों बाह्य परिभोग करिवो कह्यो छै। तथा निशीथ नी चूर्णी में अनें द्वितीय पदे अर्थ में अनेक मोटा अणाचार कुशीलादिक पिण सेवण कह्या छै। इम टीका में, चूर्णी में, अर्थ में, तो अनेक वातां विरुद्ध कही छै। ते किम् मानिये। तिम सूत्र में तो १८ पाप थी निवृत्या ते मुनि नें माहण घणे ठामे कह्यो। ते सूत्र पाठ उत्थापी वन्दना नमस्कार नें ठामे तथा दान देवा नें ठामे माहण नों अर्थ श्रावक केई कहे ते किम मानिये। श्रावक नें तो माहण किणही सूत्र पाठ में कह्यो नथी। ते भणी श्रावक नें माहण किम थापिये। श्रावक नें नमस्कार करण री भगवान् री आज्ञा नही छै। ते माटे अम्बड ना चेलां नमस्कार कियो ते पोता रो छांदो छै। पिण धर्म हेते नही। जे अन्य तीर्थी ना वेष में केवल ज्ञान उपजे ते पिण उपदेश देवे नही। जो साधु श्रावक केवली जाणे तो पिण ते अन्य लिङ्ग थकां तिण नें प्रत्यक्ष वन्दना नमस्कार करे नहीं। तेहनों अन्य मतो नो लिङ्ग छै ते माटे तो अम्बड तो अन्य लिङ्ग सहित

इज छै। तिण नें नमस्कार कियां धर्म किम होवे। वली कोई कहे—छोटा साधु वड़ा साधु रो विनय करे तिम छोटा श्रावक नें पिण वड़ा श्रावक नों विनय करणो। इम कहे तेहनों उत्तर—प्रथम तो श्रावक रो पुत्र व्रत आद्स्या. अनें पछे ते पुत्र आगे पिताइं १२ व्रत धास्या, त्यांरे लेखे पुत्र रे पगां पिता नें लागणो। जिम पहिलां दीक्षा पुत्र लीधी पछे पिता लीधी, तो ते पिता साधु, पुत्र साधु रे पगां लागे तेहनी ३३ असातना टाले। तिम पुत्र आगे पिता १२ व्रत धास्या तो तेहनी पिण ३३ असातना टालणी, न टाले तो ते पिता नें अविनीत विनय मूल धर्म रो उत्थापणहार त्यांरे लेखे कहीजे। इम पहिलाँ वहू व्रत आद्स्या, पछे वहू कने सासू व्रत आद्स्या, तो ते वहू नों विनय करणो। इमहिज पहिलां गुमाश्ता व्रत धास्या, पछे सेठ व्रत धास्या, ते गुमाश्ता नें पासे सेठ समझ्यो तो तेहनें धर्माचार्य जाणी घणो विनय करणो। जो विनय न करे तो त्यांरे लेखे तेहनें अविनीत कहीजे विनय मूल धर्म रो उत्थापणहार कहीजे। पिण इम नहीं। विनय तो साधु नों इज करणो कह्यो छै। अनें श्रावक नों विनय करे ते तो पोता नों छांदो छै। पिण धर्म हेते नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १४ बोल सम्पूर्ण।

इति विनयाऽधिकारः।



अथ पुण्याऽधिकारः ।

केतला एक अजाण जीव—ते साधु विना अनेरां नें दीधां पुण्य बंधतो कहे ते पुण्य नें आदरवा योग्य कहे. ते पुण्य नें मोक्ष नों साधन कहे. ते ऊपर सूत्र नों नाम लेवी कहे, भगवती श० १ उ० ७ जे जीव गर्भ में मरी देवता थाय तिहां एहवूं पाठ कह्यो छै। "सेणं जीवे धम्म कामए पुण्य कामए सग्ग कामए मोक्ख कामए धम्म कंखिए पुण्ण कंखिए सग्ग कंखिए मोक्ख कंखिए" इहाँ धर्म. पुण्य. स्वर्ग. मोक्ष नों अभिलाषी (बंछणहार) श्री तीर्थङ्करे कह्यो, ते माटे ए पुण्य आदरवा योग्य छै. तिण सूं भगवान् सरायो छै। जो पुण्य छांडवा योग्य हुवे तो सरावता नहीं।

इम कहे तेहनो उत्तर—इहां पुण्य भगवान् सरायो नही। आदरवा योग्य कह्यो नहीं। ए तो जे गर्भ में मरी देवता थाय तेहनें जेहवी वांछा हुन्ती ते बताई छै। पिण पुण्य नी वाञ्छा करे तेहनें सरायो नहीं। तिणहिज उद्देश्ये इम कह्यो—जे गर्भ में मरी नरके जाय ते पर कटक (दूसरा री सेना) थी संग्राम करे। तिहां एहवो पाठ छै ते लिखिये छै।

सेणं जीवे अत्थ कामए. रज्ज कामए. भोग कामए. काम कामए. अत्थ कंखिए. रज्ज कंखिए. भोग कंखिए. काम कंखिए. । अत्थ पिवासिए. रज्ज पिवासिए. भोग पिवासिए. काम पिवासिए. तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे. तदट्ठो वउत्ते तदप्पिय करणे तब्भावणा भाविए एयं सिणं अंतरंसिकालं करेज्जा नेरइएसु उववज्जइ ।

(भगवती श० १ उ० ७)

से० ते. जी० जीव केहवो छै अर्थ नों छै काम जेहनें. र० राज्य नों छै काम जेहनें भो० भोग नों छै काम जेहने. का० शब्द रूप नों काम छै जेहनें. अ० अर्थ नी कांक्षा (वांछा) छै जेहनें र० राज्य नी कांक्षा छै जेहनें. भो० भोग नी कांक्षा छै जेहनें. का० शब्द रूप नी कांक्षा छै जेहनें अर्थ पिपासा राज्य पिपासा भोग पिपासा. काम पिपासा छै जेहनें त० तिहां चित्त नों लगावनहार त० तिहां मन नों लगावनहार. ल० लेश्यावन्त. त० अध्यवसाय-वन्त. ति० तीव्र आरम्भवन्त. अर्थयुक्त रह्यो थको करता भा० भावता भावता इन अन्तरे काल करे ते ने० नरक नें विषे उपनें

अथ इहां नरक जाय ते जीव नें अर्थ नों कामी. राज्य नों कामी. भोग नों कामी. काम नो कामी. तथा अर्थ नो, राज्य नो, भोग नो, काम नो, कांक्षी (वंछणहार) श्री तीर्थङ्करे कह्यो। पिण अर्थ. भोग. राज्य. काम. नी वांछा करे ते आज्ञा में नहीं। जिम अर्थ. भोग. राज्य. काम नी वांछा करे ते आज्ञा में नहीं. जिम अर्थ. भोग. राज्य. काम. नी वांछा नें सरावे नहीं। तिम पुण्य नी वांछा नें स्वर्ग नी वांछा नें पिण सरावे नथी। "पुण्णकामए. सग्गकामए" ए पाठ कह्यां माटे पुण्य नी वांछा नें सराई कहे तो तिण रे लेखे स्वर्ग नों कामी वांछक कह्यो ते पिण स्वर्ग नी वांछा सराई कहिणी। अनें स्वर्ग की वांछा करणी तो सूत्र में ठाम २ वर्जी छै। दशवैकालिक अ० उ० ४ एहवा पाठ कह्या छै ते लिखिये छै।

चउव्विहा खलु तव समाहि भवइ. तंजहा—नोइह लोग-ट्ठयाए तव महिट्ठिज्जा नो परलोगट्ठयाए तव महिट्ठिज्जा नो किंत्ति वराण सद्द सिलोगट्ठयाए तव महिट्ठिज्जा नन्नत्थ नि-जरट्ठयाए तव महिठिज्जा।

(दशवै० अ० ६ उ० ४)

च० चार प्रकार नी ख० निश्चय करी ने आ० आचार समाधि भ० हुवे छै त० ते कहे छै नो० इह लोक नें अर्थ (चक्रवर्त्ती आदिक हुवा नें अर्थे) नहीं. त० तप करे नो० नहीं. प० परलोक (इन्द्रादिक हुआ) नें अर्थे. त० तप करे नो० नहीं. कि० कीर्त्ति. वर्ण शब्द. श्लोक. (श्लाघा) ने अर्थे त० तप करे न० केवल नि० निर्जरा नें अर्थे त० तप करे.

अथ इहां परलोक नी वांछा करवी वर्जी, तो स्वर्ग नें तो परलोक कहीजे, ते परलोक नी वांछा करी तपस्या पिण न करणी तो स्वर्ग नी वांछा करे तेहनें

किम सरावे। तथा उपासक दशा अ० १ श्रावक नें संलेखना ना ५ अतीचार जाणवा योग्य पिण आदरवा योग्य नहीं एहवूं कह्यो तिहां परलोक नी वांछा करणी श्रावक नें पिण वर्जी तो स्वर्ग तो परलोक छै तेहनी वांछा भगवान् किम सरावे। ए ५ अतीचार आदरवा योग्य नहीं एहवो कह्यां माटे परलोक नी वांछा पिण आदरवा योग्य नही। तो परलोक नी वांछा किम कहीजे। इन्द्रादिक पदवी नी वांछा ते परलोक नी वांछा, ते इन्द्रादिक पदवी तो पुण्य थी पावे छै। जे परलोक नी वांछा आदरवा योग्य नहीं, तो पुण्य पिण आदरवा योग्य किम हुवे। इन्द्रादिक पदवी तो पुण्य थीज पावे छै, ते माटे इन्द्रादिक पद. अनें पुण्य बिहूं आदरवा योग्य नहीं। इणन्याय पुण्य नी वांछा अनें स्वर्ग नी वांछा भगवान् सरावे नहीं। वली कह्यो एक निर्जरा टाल और किणही नें अर्थे तपस्या न करणी तो पुण्य ने अर्थे तपस्या किम करणी। पुण्य नें अर्थे तपस्या न करणी तो पुण्य नें आदरवा योग्य किम कहिए। तथा उत्तराध्ययन अ० १० गा० १५ में कह्यो "पचं भव संसारे संसरइ सुभासुभेहिं कम्मेहिं" इहाँ पिण शुभ अशुभ ते पुण्य. पाप. कर्मे करी संसरता ते पचता कह्या। इम पुण्य पाप. ना विपाक नें निषेध्या छै। ते पुण्य पाप नें आदरवा योग्य किम कहिए। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

केतला एक अजाण कहे—जे चित्तजी ब्रह्मदत्त ने कह्यो। जे तूं पुण्य न करसी तो मरणान्ते घणो पिछतावसी इम कहे ते एकान्त मृषावादी छै। तिहां तो एहवो पाठ कह्यो छै ते लिखिये छै।

इह जीविए राय असासयम्मि,
धणियं तु पुण्णाइ अकुव्वमाणो।
सेसोयइ मच्चुमुहोवणीए,
धम्मं अकाऊण परम्मिलोए ॥२१॥

(उत्तराध्ययन अ० १३ गा० २१)

इ० मनुष्य सम्बन्धी जी० आयुषो रा० हे राजन् अ० अशाश्वत (अनित्य) तेहनें विषे. ध० अतिहि. पु० पुण्य नो हेतु शुभ अनुष्ठान ते अ० अणकरणा हारो जे जीव से० ते सो० सोचे पश्चात्ताप करे. म० मृत्यु ना 'मुखे पहुन्तो तिवारे ध० धर्म. अ० अणकीधे थके सोचे. प० परलोक ने विषे

अथ इहां तो कह्यो—हे राजन्! अशाश्वत जीवितव्य ने विषे गाढा पुण्य ना हेतु शुभ अनुष्ठान शुभ करणी न करे ते मरणान्त ने विषे पश्चात्ताप करे। इहां पुण्य शब्दे पुण्य नो हेतु शुभ अनुष्ठान ने कह्यो। तिहां टीका में पिण इम कह्यो ते टीका लिखिये छै।

"पुण्णा इ अकुव्वमाणेति—पुण्यानि पुण्य हेतु भूतानि शुभानुष्ठानानि अकुर्वाणः"

इहां टीका में पिण कह्यो—पुण्य ते पुण्य ना हेतु शुभ अनुष्ठान अणकरे तो मरणान्ते पिछतावे। इहां कोई कहे पुण्य शब्द पुण्य नो हेतु शुभ अनुष्ठान. एहवो पाठ में तो न कह्यो। ए तो अर्थ में कह्यो। अनें पाठ में तो पुण्य करे नहीं ते पिछतावे इम कह्यो छै। इम कहे तेहनों उत्तर—पुण्य शब्दे पुण्य नो हेतु अर्थ में कह्यो ते अर्थ मिलतो छै। अनें तूं पुण्य कर एहवो तो पाठ में कह्यो नथी। अनें इहां पुण्य शब्दे करी पुण्य ना हेतु शुभ अनुष्ठान नें ओलखायो छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण।

तथा उत्तराध्ययन अ० १८ गा० ३४ में पिण इम कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै।

एयं पुण्णपयं सोच्चा अत्थ धम्मो वसोहियं।
भरहो विभरहं वासं चिच्चा कामाइ पव्वए ॥३४॥

(उत्तराध्ययन उ० १८)

ए० क्रियावादी प्रमुख नी श्रद्धहना तेहनी पाप सगति वर्जवा रूप पु० पुण्य नो हेतु ते पुण्य. प० पद. सो० सांभली नें. पुण्य पद केहवो छै ते कहे छै अ० स्वर्ग मोक्ष पामवा नों उपाय ते अर्थें. ध० जिनोक्त धर्म एहवू करी शो० शोभनीक छै जे पुण्य पद ते सांभली नें. भ० भरत चक्रवर्त्ती पिण भ० भरत क्षेत्र नों राजा. चि० छांडी नें. का० काम भोग. प० दीक्षा लीधी.

अथ इहां पुण्य ना हेतु शुभ अनुष्ठान नें पुण्य पद कह्यो तिहां टीका में पिण इम कह्यो ते टीका लिखिये छै ।

"पुण्य हेतुत्वात्पुण्य तत्पद्यते गम्यते ऽ र्थो ऽ नेन-इति पदं स्थानं पुण्य पदम्"

इहां टीका मे पुण्य नो हेतु ते पुण्य पद कह्यो । पुण्य नो हेतु किण नें कहिइं । शुभ योग शुभ अनुष्ठान रूप करणी नें कहिइं, तेहथी पुण्य बधे ते माटे शुभ अनुष्ठान ने पुण्य नो हेतु कहीजे । पुण्य ना हेतु नें पुण्य शब्दे करी ओलखायो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ३ बोल सम्पूर्ण ।

तथा प्रश्न व्याकरण मे पिण इम कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

सव्वगइ पक्खंदे काहिंति अणंतए अकय पुण्णा जेय न सुणंति धम्मं सोऊण यजे पमायंति ॥२॥

(प्रश्न व्याकरण ५ आश्र०)

स० सर्व गति. प० गमन नें का० करस्ये अ० अनन्तवार. अ० अकृत पुण्य ते जेणे आश्रव निरोधक पवित्र अनुष्ठान न थी कीधू ते जीव ससार में रुलस्ये: जे० जे कोई. य० वली. न सांभले. ध० धर्म नें. सो सांभली नें य० वली. जे प० प्रमाद करे. सम्वर, आदरे नहीं.

अथ इहां पिण कह्यो—जे अकृत पुण्य जीव संसार भमे। अकृत पुण्य ते आश्रव निरोध रूप पवित्र अनुष्ठान न करे ते जीव संसार में रुले। तेहनी टीका में पिण इमहिज कह्यो छै। ते टीका—

"अकृतपुण्या अविहिताश्रव निरोध लक्षण पवित्रानुष्ठाना"

एहनों अर्थ—अकृत पुण्य ते न कीधो आश्रव निरोधक पवित्र अनुष्ठान, इहां पिण शुभ अनुष्ठान पुण्य ना हेतु नें पुण्य शब्दे करी ओलखायो छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

तथा उत्तराध्ययन अ० ३ गा० १३ में एहवो पाठ कह्यो छै। ते लिखिये छै।

विगिंच कम्मुणोहेउं जसं संचिणु खंतिए
पाढ़वं सरीरं हिच्चा उड्ढं पक्कमइ दिसं ॥१॥

(उत्तराध्ययन अ० ३ गा० १३)

वि० त्यागी नें क० कर्म ना हेतु मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद, कषाय, आदिक नें. ज० संयम. तप विनय ते यशनूं हेतु ने सं० संचय कर ख० क्षमा करी. पा० पृथ्वी री माटी सरीखो औदारिक स० शरीर ने हि० छोडी ने . उ० ऊर्ध्व ऊपर प० गमन करे छै. दि० परलोक ने विषे

अथ इहां पिण कह्यो—यश नो संचय करे यश नों हेतु संयम तथा विनय तेहनें यश शब्दे करी ओलखायो छै। तिम पुण्य ना हेतु ने पुण्य शब्दे करी ओलखायो छै। पाठ में तो यश नो हेतु कह्यो नहीं, यश नों संचय करणो कह्यो। अनें साधु नें तो कीर्त्ति श्लाघा यश वांछणो तो ठाम २ सूत्र में वर्ज्यो, तो यश नों संचय किम करे। पिण यश ना हेतु नें यश शब्दे करी ओलखायो छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

तथा भ० श० ४१ उ० १ कह्यो—ते पाठ लिखिये छै ।

सेणं भंते ! जीवा किं आय जसेणं उववज्जंति आय अजसेणं उववज्जंति. गोयमा ! णो आय जसेणं उववज्जंति। आय अजसेणं उव वज्जंति ।

(भगवती श० ४१ उ० १)

से० ते. भ० हे भगवन्त ! जो० जीव किं स्यूं आ० आत्मा यशे करी उपजे छै आ० अथवा आत्म अयशे करी उपजे छै गो० हे गोतम ! णो० नही आत्म यशे करी ने उपजे छै. आ० आत्म अयशे करी उपजे छै

अथ इहां पिण कह्यो—जे जीव नरक में उपजे ते आत्म अयशे करी नें उपजे । इहां आत्म यश ते यश नों हेतु संयम तेहनें कह्यो । अनें आत्म सम्बन्धी जे अयश नों हेतु ते असंयम नें आत्म अयश कह्यो । टीका में पिण यश नों हेतु संयम ते यश कह्यो । अनें अयश नो हेतु संयम ते अयश कह्यो—

"यशो हेतुत्वाद्यशः संयमः—आत्मयशः"

इहां यश ना हेतु नें यशे करी ओलखायो छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

तथा उत्तराध्ययन अ० ६ में कह्यो—ते पाठ लिखिये छै ।

आदाणं नरयं दिस्स, नाय एज्ज तणामवि
दोगुंछी अप्पणोपाए, दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं ॥८॥

(उत्तराध्ययन अ० ६ गा० ८)

आ० धनादिक परिग्रह. न० नरक नों हेतु दि० देखी ने ना० ग्रहण न करे त० तृण मात्र पिण आ० आहार विना धर्म रूपियो भार निर्वाहिवा ए देह असमर्थ. इम देही नें

दुगुन्छै निन्दे ते दुगुंछा कहिये एहवोज साधु ते सुधावन्त भिक्षु थयूं तिवारे. अ० आपणा पा० पात्रा नें विषे गि० गृहस्थीइं दीधू असनादिक भोजन करे.

इहां कह्यो—धन धान्याकिक नें नरक ना हेतु देखी नें तृण मात्र पिण आदरे नहीं। इहां पिण नरक ना हेतु धन धान्यादिक नें नरक शब्दे करी ओलखायो छै। तिम पुण्य ना हेतु शुभ अनुष्ठान नें पुण्य शब्दे करी ओलखायो छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ७ बोल सम्पूर्ण।

तथा उत्तराध्ययन अ० १ गा० ५ में कह्यो—ते पाठ लिखिये छै।

कण कुंडगं चइत्ताणं विट्ठं भुंजइ सूयरे
एवं सीलं चइत्ताणं दुस्सीले रमइ मिए ॥५॥

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ५)

क० कण (अन्न) नू कूंडो च० छांडी नें वि० विष्ठा. भु० भोगवे. सू० सूर ए० एणी परे अविनीत. सी० भलो आचार नें च० छांडी नें. दु० भूंडा आचार नें विषे. र० प्रवर्त्ते. मि० मृग पशु सरीखू ते अविनीत

अथ इहां अविनीत नें मृग कह्यो—मृग जिसा अजाण नें मृग शब्दे करी ओलखायो छै। तिम पुण्य ना हेतु नें पुण्य शब्दे करी ओलखायो इत्यादिक एहवा पाठ अनेक ठामे कह्या छै। जिम यश नों हेतु संयम ते यश नें यश शब्दे करी ओलखायो। अयश नों हेतु असंयम नें अयश शब्दे करी ओलखायो। नरक

ना हेतु धन धान्यादिक ते नरक शब्दे करी ओलखायो। मृग जिसा अजाण नें मृग शब्दे करी ओलखायो। तिम पुण्य नो हेतु शुभानुष्ठान ने पुण्य शब्दे करी ओलखायो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ८ बोल सम्पूर्ण।

इति पुण्याधिकारः।



अथ आश्रवाऽधिकारः ।

केतला एक अजाण जीव आश्रव नें अजीव कहे छै। अनें रूपी कहे छै तेहनों उत्तर—ठाणाङ्ग ठा० ६ टीका में आश्रव नें जीव ना परिणाम कह्या छै। तथा ठाणाङ्ग ठा०.५ उ० १ पांच आश्रव कह्या छै ते पाठ लिखिये छै।

पंच आस्सव दारा प० तं० मिच्छत्तं. अविरती. पमादो. कसायो. जोगो. ।

(ठाठाङ्ग ठा० ५ उ० १ समवायाङ्ग स० ५)

प० पांच जीव रूप क्रिया तालाव ने विषे कर्मरूप जल नूं आविवो कर्म बन्धन. दा० तेहनों वारणा नी परे वारणा ते उपाय कर्म आविवा नूं प० परूप्या त० ते कहे छै. मि० मिथ्यात्व खोटा ने खरो जाणे. खरा नें खोटो जाणे. अ० अव्रती किण ही वस्तु ना पचखाण नहीं प० प्रमाद ५ क० क्रोधादिक ४ योग मन वचन काया योग सावद्य निरवद्य प्रवत्त

अथ इहां ५ आश्रव कह्या—"मिथ्यात्व" जे ऊंधी श्रद्धारूप "अव्रत" ते अत्याग भावरूप "प्रमाद" ते प्रमादरूप "कषाय" ते भावे कषाय रूप "योग" ते भावे जीव ना व्यापार रूप, ए पांचुइ जीव ना परिणाम छै। जे प्रथम आश्रव मिथ्यात्व ऊंधी श्रद्धारूप ते मिथ्यात्व आश्रव नें मिथ्या दृष्टि कही जे। अनें मिथ्या दृष्टि ने अरूपी कही छै ते पाठ लिखिये छै।

कण्ह लेस्साणं भंते कइ वण्णा पुच्छा. गोयमा ! दव्व लेस्सं पडुच्च पंच वण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता भाव-

लेस्सं पडुच्च अवरणा एवं जाव सुक्क लेस्सा ॥१७॥ सम्मदिट्ठी ३ चक्खुदंसणे ४ आभिणि बोहिय णाणे ५ जाव विभंगणाणे आहार सरणा जाव परिग्गहसरणा एयाणि अवरणाणि।

(भगवती श० १२ उ० ५)

क० कृष्ण लेश्या ना भं० हे भगवन्त ! क० केतला वर्ण. गो० हे गोतम ! द० द्रव्य लेश्या प्रति प० आश्री नें प० पांच वर्ण. जा० यावत् अ० आठ स्पर्श परूप्या भा० भाव लेश्यावन्त ते अन्तरंग जीवनों परिणाम ते आश्री नें अवर्ण अस्पर्श अमूर्त्त द्रव्य पणा थी ए० इम. जा० यावत् शुक्ल लेश्या लगे जाणवू. स० सम्यग् दृष्टि. मिथ्या दृष्टि सम्यक्मिथ्या-दृष्टि च० चक्षु दर्शन अचक्षु दर्शन २ अवधि दर्शन. ३ केवल दर्शन. आ० मतिज्ञान. श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान. मन पर्यवज्ञान केवल ज्ञान मति अज्ञान. श्रुति अज्ञान विभङ्ग अज्ञान. आ० आहार संज्ञा भय संज्ञा मैथुन संज्ञा परिग्रह संज्ञा ४ ए सर्व अवर्ण वर्ण रहित जाणवा जीव ना परिणाम

अथ इहां ६ भाव लेश्या ३ दृष्टि. १२ उपयोग ४ संज्ञा. ए २५ बोल अरूपी कह्या। तिहां ३ दृष्टि कही तिण में मिथ्यात्व दृष्टि पिण अरूपी कही। ते ऊंधी श्रद्धारूप उदय भाव मिथ्या दृष्टि नें मिथ्यात्व आश्रव कही जे। इण न्याय मिथ्यात्व आश्रव नें जीव कही जे, अनें अरूपी कही जे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण।

वली ६ भाव लेश्या नें अरूपी कही अनें ५ आश्रव नें कृष्ण लेश्या ना लक्षण उत्तराध्ययन अ० ३४ में कह्यो—ते पाठ लिखिये छै।

पंचा सवप्पवत्तो तिहिं अगुत्तो छसु अविरओय।
तिव्वारंभ परिणओ खुद्दोसाहस्सिओ नरो ॥२१॥

निद्धंधस परिणामो निस्संसो अजिइंदिओ ।
एय जोग समाउत्तो किण्ह लेस्सं तु परिणमे ॥२२॥

(उत्तराध्ययन अ० ३४ गा० २१-२२)

कृष्ण लेश्या ना लक्षण कहे छै. प० ५ आश्रव नों प० सेवणहार. ति० तीन मन वचन कायाइं करी. अ० अगुप्तो मोकलो, ६ काय नें विषे अमतो घात नों करणहार होय. ति० तीव्र पणे. आ० आरम्भ ने प० परिणामे करी सहित होई. खु० सर्व जीव ने अहितकारी. मा० जीव घात करवा ने विषे साहसिक मनुष्य ॥२१॥

नि० इह लोक परलोक ना दु.ख नी शङ्का रहित. प० परिणाम छै जेहनों नि० जीव हणता सूग रहित. अ० अणजीता इन्द्रिय जेहनें. ए० ए पूर्वे कह्या ते जो० योग मन वचन काया ना तेणे पाप व्यापार करी. स० सहित थको कि० कृष्ण लेश्या ना परिणामे करी. परिणामे ते कृष्ण लेश्या ना पुद्गल रुप द्रव्य जेहनें संयुक्त करी जिम स्फटिक जेहवा द्रव्य नों संयुक्त हुइ तेहवे रूपे भजे

अथ इहां ५ आश्रव नें कृष्ण लेश्या ना लक्षण कह्या—ते माटे जे कृष्ण लेश्या अरूपी तेहना लक्षण ५ आश्रव ते पिण अरूपी छै। तथा वली "छसु अविरओ" कहितां ६ काय हणवा ना अव्रत ते पिण कृष्ण लेश्या ना लक्षण कह्या ते भणी अव्रत आश्रव ते पिण अरूपी छै। ए ५ आश्रव भाव कृष्ण लेश्या ना लक्षण टीकाकार पिण कह्या छै ते अवचूरी लिखिये छै।

"एतेन पञ्चाश्रव प्रवृत्तत्वादीनां भावकृष्ण लेश्यायाः सद्भावोपदर्शनादासां लक्षण मुक्तं योहि यत्सद्भाव एवस्यात् स तस्य लक्षणम्"

अथ इहां अवचूरी में कह्यो—पाँच आश्रव प्रवृत्त ए आदि देई नें कह्या ते भाव लेश्या ना लक्षण छै। भगवतीमें ६ भाव लेश्या नें अरूपी कही अनें इहाँ भाव कृष्ण लेश्या ना लक्षण ५ आश्रव कह्या ते माटे आश्रव पिण अरूपी छै। भाव लेश्या अरूपी तो तेहना लक्षण रूपी किम हुवे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली ठाणाङ्ग ठाणे २ उ० १ में एहवो पाठ कह्यो छै ते लिखिये छै।

दो किरियाओ पन्नत्ता तं जहा जीव किरिया चेव अजीव किरिया चेव जीव किरिया दुविहा पराणत्ता तं जहा सम्मत्त किरिया चेव मिच्छत्त किरिया चेव अजीव किरिया दुविहा पन्नत्ता तं जहा ईरियावहिया चेव संपराइया चेव ॥२॥

(ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १)

दो० बे क्रिया प० कही त० ते कहे छै जी० जीव क्रिया सांचो अनें भूठो श्रद्धवो. अ० अजीव क्रिया. कर्म पणे पुद्गल नों परिणामवो ते अजीव कहिए जी० जीव क्रिया ना २ भेद प० परूप्या त० ते कहे छै स० सम्यक्त्व क्रिया मि० मिथ्यात्व क्रिया अ० अजीव क्रिया दु० बे प्रकार नी प० कही त० ते कहे छै ई० ईर्या पथिक क्रिया ते योग निमित्त त्रिया गुण स्थानके लगे स० कषाय छै तिहां उपनी ते साम्परायकी पुद्गल नों जीव नें कर्म पणे परिणामवो ते सम्परायकी क्रिया

अथ अठे २ क्रिया जीव क्रिया, अजीव क्रिया, कही। जीव नों व्यापार ते जीव क्रिया, अनें अजीव पुद्गल नों समुदाय कर्मपणे परिणामवो ते अजीव क्रिया. तिहां जीव क्रिया ना बे भेद कह्या—सम्यक्त्व क्रिया, मिथ्यात्व क्रिया। सांची श्रद्धा रूप जीव नों व्यापार ते सम्यक्त्व क्रिया. ऊंधी श्रद्धा रूप जीव नों व्यापार ते मिथ्यात्व क्रिया.। इहां पिण सम्यक्त्व अनें मिथ्यात्व विहूं नें जीव कह्या। ए मिथ्यात्व क्रिया ते मिथ्यात्व आश्रव छै ते पिण जीव छै। अनें सम्यक्त्व क्रिया श्रद्धा रूप सम्वर ते पिण जीव छै। ए सम्यक्त्व अनें मिथ्यात्व जीव क्रिया ना भेद कह्या ते माटे ए सम्यक्त्व अनें मिथ्यात्व जीव छै। अनें इरियावहि सम्पराय, में जीव क्रिया कहीजे जो अजीव क्रिया नें अजीव क्रिया कहे तो जीव क्रिया नें जीव क्रिया कहिणी। जो अजीव नें अजीव क्रिया न कहे तो तिण रे लेखे जीव ने पिण जीव क्रिया न कहिणी। जीव क्रिया ना बे भेदां में सम्यक्त्व नें जीव कहे तो मिथ्यात्व नें पिण जीव कहिणो। अनें मिथ्यात्व क्रिया नें जीव न कहे तो सम्यक्त्व क्रिया नें पिण तिण रे लेखे जीव न कहिणो। ए तो पाधरो न्याय छै।

इहाँ तो सम्यक्त्व. मिथयात्व. नें चौड़े जीव कह्या छै ते माटे मिथयात्व आश्रव जीव छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण ।

तथा मिथयात्व आश्रव किण नें कही जे ते मिथयात्व नों लक्षण ठाणाङ्ग ठा० १० में कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

दस विहे मिच्छत्ते प० तं० अधम्मे धम्म सन्ना धम्मे अधम्म सन्ना उम्मग्गे मग्गसन्ना मग्गे उम्मग्ग सन्ना अजीवेसु जीव सन्ना जीवेसु अजीव सन्ना असाहुसु साहु सन्ना साहुसु असाहु सन्ना अमुत्तेसु मुत्त सन्ना मुत्तेसु अमुत्त सन्ना।

(ठाणाङ्ग ठा० १०)

द० दश प्रकारे मिथ्यात्व. प० परूप्या त० ते कहे छै. अधर्म ने विषे धर्म नी सञ्ज्ञा. ध० धर्म ने विषे अधर्म नी सञ्ज्ञा ऊ० उन्मार्ग (खोटो मार्ग) नें विषे मार्ग (श्रेष्ठ मार्ग) नी सञ्ज्ञा. म० मार्ग ने विषे उन्मार्ग नी सञ्ज्ञा. अ० अजीव ने विषे जीव नी सञ्ज्ञा. जी० जीव नें विषे अजीव नी सञ्ज्ञा. अ० असाधु ने विषे साधु नी सञ्ज्ञा सा० साधु नें विषे असाधु नी सञ्ज्ञा. मु० मुक्त ने विषे अमुक्त नी सञ्ज्ञा. अ० अमुक्त ने विषे मुक्त नी संज्ञा. ते मिथ्यात्व.

अथ इहां दश प्रकार मिथयात्व कह्यो—तिहां धर्म ने अधर्म श्रद्धे तो मिथयात्व विपरीत बुद्धि तेहनें मिथयात्व कह्यो। इम दसूंइ बोल ऊंधा श्रद्धे ते ऊंधी श्रद्धारूप व्यापार जीवनों छै. ते माटे ऊंधो श्रद्धे ते मिथयात्व नों लक्षण कह्यो। ते मिथयात्व आश्रव जीव छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण ।

यथा भगवती श० १७ उ० २ कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

एवं खलु पाणातिवाते जाव मिच्छा दंसण सल्ले वट्ट-माणे सच्चेव जीवे. सच्चेव जीवाया.

(भगवती श० १७ उ० २)

ए० एम ख० निश्चय पा० प्राणातिपात ने विषे. जा० यावत्. मिथ्या दर्शन शल्य नें विषे. व० वर्त्ततां थकां. स० तेहज वे० निश्चय. जी० जीव स० ते हीज जीवात्मा

अथ इहां जे प्राणातिपातादिक १८ पाप में वर्त्ते ते हीज जीव अने ते हीज जीवात्मा कही जे तो १८ पाप में वर्त्ते ते हीज आश्रव छै। मिथ्या दर्शन में वर्त्ते ते मिथ्यात्व आश्रव छै। अनें जे अनेरा पाप में वर्त्ते ते अनेरा आश्रव छै। जे प्राणातिपात. मृषावाद. अदत्तादान. मैथुन. परिग्रह. में वर्त्ते ते अशुभ योग आश्रव छै। ए पिण जीव छै। क्रोध. मान. माया. लोभ में वर्त्ते ते कषाय आश्रव छै. ते पिण जीव छै। इहां भाव कषाय. भाव योग. ते तो जीव छै। द्रव्य कषाय. द्रव्य योग. ते तो पुद्गल छै। कषाय नें अनें योग नें आश्रव कह्या। ते भाव कषाय भाव योग आश्री कह्या, पिण द्रव्य कषाय द्रव्य योग नें आश्रव न कही जे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

तिवारे कोई कहे—कषाय योग नें अरूपी तथा जीव किहां कह्यो छै, तथा भावे योग किहां कह्या छै। इम कहे तेहनों उत्तर—जे ठाणाङ्ग ठा० १० में जीव परिणामी रा तथा अजीव परिणामी रा दश दश भेद कह्या छै ते पाठ लिखिये छै।

दस विहे जीव परिणामे प० तं० गइ परिणामे इंदिय परिणामे. कसाय परिणामे. लेस्सा परिणामे. जोग परिणामे.

उवओग परिणामे. नाण परिणामे. दंसण परिणामे. चरित्त परिणामे वेद परिणामे ॥१६॥

दस विहे अजीव परिणामे प० तं० बंधण परिणामे. गइ परिणामे. संठाण परिणामे. भेद परिणामे. वन्न परिणामे. गंधफास परिणामे. अगरुय लहुय परिणामे. सद्द परिणामे. ॥१७॥

(ठाणाङ्ग ठा० १०)

द० दश प्रकारे जीव ना परिणाम परूप्या छै. ते कहे छै. ग० गति परिणाम ते ४ गति. इ० इन्द्रिय परिणाम ते ५ इन्द्रिय क० कषाय परिणाम ते ४ कषाय. ले० लेश्या परिणाम ते ६ लेश्या. जो० योग परिणाम ते योग ३ उ० उपयोग परिणाम ते उपयोग २ ना० ज्ञान परिणाम ते ५ द० दर्शन ते ३ चरित्र परिणाम ते ५ वे० वेद परिणाम ते ३ वेद ॥१६॥

द० दश प्रकारे. अ० अजीव परिणाम परूप्या तं० ते कहे छै ब० बंध परिणाम १. ग० गति परिणाम २ सं० सस्थान परिणाम ३. भे० भेद परिणाम ४ व० वर्ण परिणाम ५ र० रस परिणाम ६ गन्ध परिणाम ७ स्पर्श परिणाम ८ अगुरु लघु परिणाम ९ शब्द परिणाम १०.

अथ इहां जीव परिणामी रा १० भेद कह्या—तिहां गति परिणामी रा ४ भेद नरक गति. तिर्य्यञ्च गति. मनुष्य गति देव गति. ए भाव गति जीव परिणामी छै। अनें नाम गति तथा कर्म नी ९३ प्रकृति में पिण गति कही ते द्रव्य गति छै। ते जीव परिणामी में नहीं। (१) इन्द्रिय परिणामी ते पिण भाव इन्द्रिय जीव परिणामी छै. द्रव्य इन्द्रिय जीव नहीं (२) कषाय परिणामी ते पिण भावे कषाय जीव परिणामी छै। द्रव्य कषाय मोहणी री प्रकृति ते तो अजीव छै। (३) लेश्या परिणामी ते पिण भाव लेश्या ते जीव रा परिणाम ते माटे जीव परिणामी छै। द्रव्य लेश्या ते तो अष्टस्पर्शी पुद्गल छै। (४) योग परिणामी ते भाव योग जीव ना परिणाम ते माटे जीव परिणामी छै। अनें द्रव्य योग पुद्गल छै. जीव परिणामी नहीं (५) उपयोग ६ ज्ञान ७ दर्शन ८ चारित्र ९ ए तो प्रत्यक्ष जीव ना परिणाम ते भणी जीव परिणामी छै। वेद परिणामी ते पिण भाव वेद

ते जीव ना परिणाम ते मांटे जीव परिणामी छै। द्रव्य वेद मोहनी री प्रकृति ते तो पुद्गल छै। ते जीव परिणामी में नहीं ॥१०॥ इहां तो गति परिणामी ते भावे गति नें जीव कही. भाव इन्द्रिय. भाव कषाय. भाव योग. भाव वेद. ए सर्व जीव ना परिणाम छै। ए कषाय परिणामी ते कषाय आश्रव छै। योग परिणामी ते योग आश्रव छै। ते मांटे कषाय आश्रव. योग आश्रव. ते जीव छै। इहां कोई कहे भाव कषाय भाव योग तो इहां नहीं. समचे कषाय परिणामी. योग परिणामी. कह्या छै। इम कहे तेहनों उत्तर—इहां तो लेश्या पिण समचे कही छै। ए द्रव्य लेश्या छै के भाव लेश्या छै। द्रव्य लेश्या तो पुद्गल अष्टस्पर्शी भगवती श० १२ उ० ५ कही छै। ते तो जीव परिणामी में आवे नहीं। ते भणी ए भाव लेश्या छै। वली गति इन्द्रिय वेद परिणामी ए पिण समचे कह्या—पिण द्रव्य गति. द्रव्य इन्द्रिय. द्रव्य वेद तो पुद्गल छै, ते पिण जीव परिणामी नहीं। तिम कषाय परिणामी. योग ;परिणामी. कह्या ते भाव कषाय. अने भाव योग छै। अनें कषाय परिणामी योग परिणामी. नें अजीव कहे तो तिणरे लेखे उपयोग परिणामी. ज्ञान परिणामी. दर्शन परिणामी. चारित्र परिणामी. पिण अजीव कहिणा। अनें योग. उपयोग. ज्ञान. दर्शन. चारित्र. परिणामी नें जीव कहे तो कषाय परिणामी योग परिणामी. नें पिण जीव कहिणा। श्री तीर्थङ्करे तो ए दसूंइ जीव परिणामी कह्या। ते मांटे ए दसूंइ जीव छै। तथा वली अजीव परिणामी रा दश भेदां में वर्ण. गन्ध. रस. स्पर्श परिणामी कह्या. त्याने अजीव कहे तो कषाय परिणामी. योग परिणामी. नें जीव परिणामी कह्या, त्यांनें जीव कहिणा। अनें जीव परिणामी नें जीव न कहे तो तिणरे लेखे अजीव परिणामी नें अजीव न कहिणा। ए तो प्रत्यक्ष जीव परिणामी रा १० भेद जीव छै। इण न्याय कषाय आश्रव. योग आश्रव नें जीव कही जे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण।

तथा भगवती श० १२ उ० १० आठ आत्मा कही। तिहां पिण कषाय आत्मा. योग आत्मा. कही छै। ते पाठ लिखिये छै।

कइ विहा णं भंते आता पराणत्ता, गोयमा ! अट्ठविहा आता पराणत्ता, तं जहा—दवियाता· कसायाता, जोगाया, उवओगाया. णाणात्ता. दंसणाया. चरित्ताया. वीरि-याता. ॥१॥

(भगवती श० १२ उ० १०)

क० केतले प्रकारे भं० हे भगवन्त ! आ० आत्मा. प० परूप्या गो० हे गौतम ! अ० आठ प्रकारे आत्मा परूप्या त० ते कहे छै द० द्रव्यात्मा क० कषायात्मा. जो० योगात्मा उ० उपयोगात्मा. णा० ज्ञानात्मा द० दर्शनात्मा च० चरित्रात्मा वी० वीर्यात्मा.

अथ अठे आठ आत्मा में कषाय आत्मा अनें योग आत्मा कही छै। ते कषाय आत्मा कषाय आश्रव छै। योग आत्मा योग आश्रव छै। ए आठु इ आत्मा जीव छै। कोई कषाय आत्मा नें अजीव कहे तो तिण रै लेखे ज्ञान. दर्शन. आत्मा नें पिण अजीव कहिणी। अनें उपयोग आत्मा. ज्ञान आत्मा. दर्शन आत्मा. में जीव. कहे तो कषाय आत्मा. योग आत्मा नें पिण जीव कहिणी। ए तो आठु इ आत्मा जीव छै। ते माटे कषाय. अनें. योग आत्मा कही। ते भाव कषाय. भावयोग. नें कह्या छै। ते भाव कषाय तो कषाय आश्रव छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ७ बोल सम्पूर्ण।

तथा अनुयोग द्वार सूत्र में कषाय अनें योग नें जीव कह्या छै। ते पाठ लिखिये छै।

से किं तं उदइए· उदइये दुविहे पराणत्ते, तं जहा उदइएय· उदयनिप्फन्नेय से किं तं उदइए· उदइए अट्ठराहं कम्म पगडीणं उदइएणं से तं उदइए। से किं तं उदय

णिप्फन्ने उदय णिप्फराणे दुविहे पराणत्ते तंजहा—जीवोदय णिप्फन्नेय. अजीवोदय णिप्फन्नेय। से किं तं जीवोदय णिप्फन्नेय. जीवोदय णिप्फन्ने अणेग विहे पराणत्ते तंजहा—नेरइए तिरिक्ख जोणिए. मणुस्से, देवे, पुढवी काइए जाव तस काइए कोह कसाइए जाव लोह कसाइए इत्थीवेदए पुरिस वेदए णपुंसक वेदए. कराहलेस्सेए जाव सुक्कलेस्से मिच्छादिट्ठी अविरए. असन्नी. अरणाणी. आहारी. छउमत्थे. संजोगी. संसारत्थे. असिद्धे. अकेवली से तं जीवोदय णिप्फन्ने। से किं तं अजीवोदय णिप्फन्ने. अजीवोदय णिप्फन्ने अणेगविहे पराणत्ते. तंजहा—ओरालिय सरीरे ओरालिय सरीरप्पयोग परिणामियं वा दव्वं, एवं वेउब्बियं वा सरीरं. वेउव्विय सरीरप्पओग परिणामियं वा दव्वं एवं आहारग सरीरं तेअग सरीरं कम्म सरीरं च भाणियव्वं, पओग परिणामिए वराणे. गंधे. रसे. फासे. से तं अजीवोदय णिप्फन्ने। से तं उदय णिप्फन्ने से तं उदइए नामे ॥ ११२ ॥

(अनुयोग द्वार)

से० हिवे. कि० स्यूं त० ते उ० उदयिक नाम उ० उदयिक नाम दु० बे प्रकारे. प० परूप्या. त० ते कहे छै. उ० उदय १ उदय करी नीपनों ते उदय निप्पन्ने से० ते कोण उदय ते. आ० आठ कर्म नी प्रकृति नी उ० उदय से० ते. उ० उदय कहिए. से० ते कि० कौण. उ० उदय निष्पन्न. उ० उदय निष्पन्न बे प्रकारे परूप्यो त० ते कहे छै. जी० जीवोदय निष्पन्न अ० अनें अजीवोदय निष्पन्न से० ते कि० कोण जी० जीवोदय निष्पन्न जीवोदय निष्पन्न ते अ० अनेक प्रकारे परूप्या त० ते कहे छै. ग़ो० नारकी पणु. ति० तिर्यंच पणु दे० देवता पणु पु० पृथिवी काय पणु जा० यावत्. त० त्रस काय पणु. को० क्रोधादिक ४ कषाय. क० कृष्णा-

दिक ६ लेश्या इ० स्त्री वेद पु० पुरुष वेद न० नपुंसक वेद. मि० मिथ्यादृष्टि. अ० अव्रती अ० असञ्ज्ञी. अ० अज्ञानी. आ० आहारिक. सं० सांसारिक पणु. छ० छद्मस्थ. अ० असिद्धपणु. अ० अकेवली. स० सयोगी. से० एतले जीवोदयनिष्पन्न कह्या. से. ते कौण अजीवोदय निष्पन्न. अ० अजीवोदय निष्पन्न ते अ० अनेकप्रकारे परूप्या तं० ते कहे छै उ० औदारिक शरीर उ० उ० अथवा औदारिक शरीर ने. प० प्रयोगे व्यापार परिणाम् जे द्रव्य वर्णादिक इम वैक्रिय शरीर वे प्रकारे आहारिक शरीर वे प्रकारे ते० तैजस शरीर वे प्रकारे कार्मण्य शरीर वे प्रकारे व० वर्ण ग० गंध. रस स्पर्श से० एतले अजीवोदय निष्पन्न. से० ते उदय निष्पन्न से० तं. उदयिक नाम

अथ इहा उदय रा २ भेद कह्या—उदय. अनें उदय निष्पन्न उदय ते ८ कर्म नी प्रकृति नो उदय, अनें उदय निष्पन्न रा २ भेद. जीव उदय निष्पन्न. अनें अजीवोदय निष्पन्न। तिहां जीव उदय निष्पन्न रा ३३ बोल कह्या। अजीव उदय निष्पन्न रा ३० बोल कह्या। तिहां जीव उदय निष्पन्न रा ३३ बोल ते जीव छै। तिण में ६ लेश्या कही छै। ते भावे लेश्या छै। च्यार कषाय कह्या ते कषाय आश्रव छै, ए भाव कषाय छै। वली मिथ्यादृष्टि कह्यो ते पिण मिथ्यात्व आश्रव छै। अव्रती कह्यो ते अव्रत आश्रव छै। संयोगी कह्यो ते योग आश्रव छै ए तेतीसुंइ बोलां नें जीव उदय निष्पन्न कह्या। ते माटे तेतीसुंइ जीव छै। अनें जे जीव उदय निष्पन्न रा ३३ भेदां नें जीव न कहे तो तिण रे लेखे अजीव उदय निष्पन्न रा ३० भेदां नें अजीव न कहिणा। इहां तो चौड़े ४ कषाय. मिथ्यादृष्टि, अव्रत, योग, यां सर्व नें जीव कह्या छै ते माटे सर्व आश्रव छै। इण न्याय आश्रव जीव छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ८ बोल संपूर्ण।

तथा भगवती श० १२ उ० ५ उत्थान. कर्म. वल. वीर्य. पुरुषा कार पराक्रम नें अरूपी कह्या छै। ते पाठ लिखिये छै।

अह भंते! उट्ठाणे, कम्मे, वले, विरिए, पुरिसक्कार परक्कमए, सेणं कति वण्णे तं चेव जाव अफासे पण्णत्ते।

(भगवती श० १२ उ० ५)

अ० अथ भं० हे भगवन्त! उ० उत्थान क० कर्म. व० वल वि० वीर्य पु० पुरुषाकार पराक्रम. ए माहें केतला वर्ण त० ते. निश्चय. जा० यावत् अ० वर्ण गन्ध रस स्पर्श. तेणे रहित

अथ इहां. उत्थान. कर्म, बल. वीर्य पुरुषाकार पराक्रम नें अरूपी कह्या छै। अनें उत्थान. कर्म. बल. वीर्य. पुरुषाकार पराक्रम. फोडवे तेहिज भाव योग छै। अनें भाव योग नें आश्रव कही जे। ते माटे ए योग आश्रव अरूपी छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ९ बोल सम्पूर्ण।

तथा केतला एक कहे—भाव कषाय किहां कह्यो छै। तेहनों उत्तर—अनुयोग द्वार में १० नाम कह्या छै। तिहां संयोग नाम ४ प्रकारे कह्या. ते पाठ लिखिये छै।

से किं ते संजोगेणं, संजोगेणं चउव्विहे पणत्ते, तं जहा---दव्ब संजोगे, खेत्त संजोगे, काल संजोगे, भाव संजोगे, से किं तं दव्ब संजोगे, दव्ब संजोगे तिविहे पणत्ते, तंजहा---सचित्ते अचित्ते, मीसए। से किं तं सचित्ते, सचित्ते गोमिहे गोहिं पसूहिए महिसीए, उरणीहि उरणिए उट्टीहिं उट्टिवाले सेतं सचित्तं। से किंतं अचित्ते, अचित्ते छत्तेणं छत्ती, दंडेण दंडी, पडेणं, पडी, घडेणं घडी, सेतं अचित्ते। से किं तं मीसए, मीसए हलेणं हालीए सगडेणं सागडिए, रहेण रहिए, नावाए नावीए, से तं दव्व संजोगे ॥ १२९ ॥ से किं तं खेत्त संजोगे, खेत्त संजोगे, भरहेरवए,

हेमवए, हिरणवए, हरिवासे, रम्मगवासए, देवकुरुए, उत्तर कुरुए, पुव्वविदेहए अवर विदेहए अहवा मागहए, मालवए, सोरट्ठए, मरहट्ठए, कुकणए, कोसलए, सेतं खेत्तसंजोगे ॥ १३० ॥ से किं तं काल संजोगे, काल संजोगे सुसमासुसमए, सुसमए, सुसमदुसमए, दुसमसुसमए, दुसमए, दुसमदुसमए, अहवा पावसए, वासारत्तए, सारदए, हेमंतए, वसंतए, गिम्हाए, सेतं काल संजोगे ॥ १३१ ॥ से किं तं भाव संजोगे, भाव संजोगे दुविहे पणत्ते, तंजहा---पसत्थेय, अपसत्थेय, से किंतं पसत्थे पसत्थे णाणेणं णाणी, दंसणेणं दंसणी, चरित्तेणं चरित्ती, से तं पसत्थे। से किं तं अपसत्थे, अपसत्थे कोहेण कोही, माणेण, माणी, मायाए, मायी लोभेणं लोभी सेतं अपसत्थे, से तं भाव संजोगे, सेतं संजोगेणं ॥ १३२ ॥

(अनुयोग द्वार)

से० ते कि० कौण सं० सयोगी नाम सं० संयोग ४ प्रकारे परूप्या. तं० ते कहे छै. द० द्रव्य संयोग खे० क्षेत्र संयोग. का० काल सयोग भा० भाव सयोग से० ते कि० कौण द० द्रव्य सयोग ते कहे छै द० द्रव्य सयोग. ति० तीन प्रकार रा प० परूप्या. त० ते कहे छै स० सचित्त. अ० अ० अचित्त मिश्र. से० ते. कि० कौण सचित्त. ते कहे छै. गो० जेणें कने गायां छै तेणे गोमान् कहे छै. प० पशु करी पशुवन्त. महिषो करी महिषीवन्त ऊ० मेषादि करी मेषादिवन्त. उ० उष्ट्रे करी उष्ट्रवन्त ते सचित्त जाणवा से० ते. कि० कौण. अचित्त ते कहे छै छत्रे करो. छत्री द० दंडे करी. दंडी प० वस्त्रे करी वस्त्री. घ० घटे करी. घटी से० ते. अचित्त जाणवा. से० ते कि० कौण मिश्र. ते कहे छै. मिश्र हले करी हाली. श० शकटे करी शाकटी र० रथे करी रथी. ना० नावा करी नाविक से० ते द्रव्य सयोग ॥ १२६ ॥ से० ते. कि० कौण क्षेत्र सयोग. ते कहे छै. क्षेत्र सयोग. भ० भरत क्षेत्रे रहे ते भारती. एयणेपरे. एरवती हेमवयी. एरणवयी. हरिवासी रम्यकवासी देव कुरुक. उत्तर कुरुक पूर्व विदेही. मागधी मा-

लत्री. सौराष्ट्री महाराष्ट्री. कोकणी. कौशली. से० ते क्षेत्र सयोग कह्या ॥ १३० ॥ से० ते कि० कौण. का० काल सयोग छुषमाछुषमी. छुषमी छुषमदुषमी. दुषमाछुषमी. दुषमी. दुषम दुषमी. अ० अथवा प्रावृट् ऋतु नें विषे जन्म थयो तेहनों तेहनें. पाउसी. इम. वर्षाती. शरदी. हैमन्ती वसन्ती ग्रीष्मी से० ते. का० काल संयोग कह्या ॥ १३० ॥ से० ते कि० कौन भाव संयोग निष्पन्न नाम भाव सयोगिक. ते दु० बे प्रकारे. प० परूप्या त० ते कहे छै प० प्रशस्त गुण नें संयोगे नाम अ० अप्रशस्त गुण नें सयोग नाम. से० ते कि० कौण प० प्रशस्त भाव नें सयोग नाम ते ना० ज्ञान छै जेहनें तेहनें ज्ञानी द० दर्शने करी दर्शनी च० चरित्रे करी चरित्री से० ते. कि० कौण अप्रशस्त भाव संयोग ते क्रोधे करी क्रोधी. माने करी मानी मायाइ करी मायी. लोभे करी लोभी से० ते एतले अप्रशस्त भाव सयोग कह्यो. से० एतले भाव सयोग कह्यो से० ते संयोग रा नाम कह्या ॥ १३१ ॥

अथ इहां चार प्रकार ना संयोगिक नाम कह्या—तिहां द्रव्य संयोग ते छत्र नें संयोगे छत्री, इत्यादिक, क्षेत्र संयोग, ते मगध देश ना ते मागध इत्यादिक क्षेत्र संयोग, काल संयोग ते प्रथम आरा नों जन्मे ते सुषमासुषमी कहिये। अनें भाव संयोग जे ज्ञानादिक ना भला भाव नें संयोगे तथा क्रोधादिक माठा भाव नें संयोग नाम ते भाव संयोग कह्या। तिहां भाव क्रोधादिक नें संयोगे क्रोधी.. मानी. मायी. लोभी. कह्यो, ते माटे ए ज्ञानादिक नें भाव कह्या ते जीव छै। तिम भाव क्रोधादिक पिण जीव छै। एतला भाव क्रोधादिक ४ कह्या, ते जीव रा भाव छै ते कषाय आश्रव छै। ते माटे कषाय आश्रव ने जीव कहीजे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १० बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली अनुयोग द्वार में भाव लाभ कह्या, ते पाठ लिखिये छै।

से किं तं भावाए दुविहे पराणत्ते, तं जहा आगमओय. नो आगमओय. से किं तं आगमतो भावाए आगमतो भावाए जाणए, उवउत्ते से तं आगमतो भावाए। से

किं तं नो आगमतो भावाए. नो आगमतो भावाए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा पसत्थे· अप्पसत्थे से किं तं पसत्थे· पसत्थे तिविहे पण्णत्ते· तं जहा णाणाए. दंसणाए. चरित्ताए. से तं पसत्थे से किं तं अप्पसत्थे, अप्पसत्थे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा कोहाए माणाए. मायाए· लोभाए· से तं अप्पसत्थे। से तं नो आगमतो भावाए से तं भावाए· से तं आए ॥१४॥

(अनुयोग द्वार)

से० ते कि० कौण भा० भाव लाभ ते कहे छै भा० भाव लाभ दु० बे प्रकार नों प० परूप्यो त० ते कहे छै। आ० आगम सू अने नो० नो आगम सू ते कि० कोण आ० आगम सू भाव लाभ ते कहे छै. आ० आगम सू भाव लाभ जे जा० जाणी ने. उपयोग सहित सूत्र पढे से० ते आ० आगम सू भाव लाभ. से० ते. कि० कौण नो० नो आगमसे भाव लाभ ते कहे छै नो० नो आगम सु भाव लाभ दु० बे प्रकार नों छै प० प्रशस्त नों लाभ अप्रशस्त नो लभ से० ते कौण प० प्रशस्त वस्तु नों लाभ ते कहे छै ज्ञान नों लाभ दर्शन नों लाभ च० चारित्र नो लाभ से० ते एतले प्रशस्त लाभ कह्यो से० ते कौण. अप्रशस्त वस्तु नों लाभ को० क्रोध नों लाभ मा० मान नो लाभ मा० माया नों लाभ लो० लोभ नों लाभ. से० ते. एतले अप्रशस्त वस्तु नों लाभ कह्यो। से० ते भाव लाभ से० ते. लाभ

अथ इहां भाव लाभ रा २ भेद कह्या। प्रशस्त भाव नों लाभ ते ज्ञान. दर्शन. चारित्र, नो अनें अप्रशस्त माठा भाव नो लाभ. क्रोध. मान. माया लोभ. नो लाभ इहां क्रोधादिक नें भाव लाभ कह्या छै। ते माटे ए भाव क्रोधादिक नें भाव कषाय कहीजे, ते भाव कषाय ने कषाय आश्रव कहीजे। तथा अनुयोग द्वार में इम कह्यो—"सावज्ज जोग विरई" ते सावद्य योग थी निवर्त्ते ते सामायक। इहां योगां नें सावद्य कह्या। अनें अजीव नें तो सावद्य पिण न कहीजे निरवद्य पिण न कहीजे। सावद्य. निरवद्य तो जीव नें इम कहीजे। इहां योगां ने सावद्य कह्या ते माटे ए भाव योग जीव छै। अने योग आश्रव छै। इण न्याय योग आश्रव नें जीव कहीजे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ११ बोल सम्पूर्ण।

तथा उवाई में पिण "पडिसंलिणया" तप कह्यो—तिहां एहवा पाठ कह्या छै।:ते लिखिये छै।

से किं तं मण जोग पडिसंलिणया, मण जोग पडि-संलिणया. अकुसल मण निरोधोवा· कुसल मण उदरिणं वा से तं मण जोग पडिसंलिणया।

(उवाई)

से० ते कि० कौण म० मन योग मन नो व्यापार तेहनों अतिशय रूयू सं० संलीनता. सवरिवो अ० अकुशल मन तेहनों. नि० निरोध रूंधिवो. कु० कुशल भलो जे मन तेहनी उदी-रणा प्रवर्त्ताविवो से० ते मन जोग पडिसंलिणया

अथ इहां अकुशल मन ते माठा मन नें रूंधवो कह्यो। कुशल मन प्रव-र्त्तावणो कह्यो। इम वचन पिण कह्यो। अकुशल मन रूंधवो कह्यो। ते अजीव ने किम रूंधे. पिण ए तो जीव छै। अकुशल मन ते भावे मन रो योग छै। तेहनें रूंधवो कह्यो। कुशल मन ते पिण भलो भाव मन योग प्रवर्त्ताविवो कह्यो। अजीव नो कुशल अकुशल पणो किम हुवे। ए कुशल योग नों उदीरवो ते भाव योग छै. ते जीव छै। ए योग आश्रव छै। आश्रव जीव ना परिणाम छै। ते घणे ठामे कह्या छै। ते संक्षेप थी कहे छै। ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १ जीव क्रिया ना २ भेद कह्या। सम्यक्त्व क्रिया. मिथ्यात्व क्रिया. कही। मिथ्यात्व क्रिया ते मिथ्यात्व आश्रव छै। तथा भगवती श० १२ उ० ५ मिथ्यादृष्टि अनें ६ भाव लेश्या नें अरूपी कही। तथा भगवती श० १७ उ० २ अठारह पाप में वर्त्ते तेहनें जीवात्मा कही। तथा भगवती श० १२ उ० १० कषाय योगां नें आत्मा कही। तथा अनुयोग द्वार में ६ लेश्या ४ कषाय मिथ्यादृष्टि, अव्रती. सयोगी.:नें जीव उदय निष्पन्न कह्या। तथा ठाणाङ्ग ठा० १० कषायी, मिथ्यादृष्टि, अव्रती, सजोगी, नें जीव उदय निष्पन्न कह्या। तथा ठाणाङ्ग ठा० १० कषाय अनें योग नें जीव परिणामी कह्या। तथा भगवती श० १२ उ० ५ उत्थान, कर्म, वल, वीर्य, पुरुषाकार पराक्रम, नें अरूपी कह्या। तथा अनुयोग द्वार तथा आवश्यक में योगां नें सावद्य कह्या। तथा उवाई

में कुशल मन वचन प्रवर्त्तावणो अकुशल मन वचन रुंधवो कह्यो। तथा अनुयोग द्वारे क्रोधादिक नें भाव कह्यो। तथा ठाणाङ्ग ठा० ६ टीका में नवपदार्थ में ५ जीव ४ अजीव इम न्याय कह्यो। तथा पन्नवणा पद १५ अर्थ मे द्रव्य मन, भाव मन, कह्यो। तिहां नो इन्द्रिय नों अर्थावग्रह ते भाव मन नें कह्यो। तथा ठाणाङ्ग ठा० १ टीका में द्रव्ययोग कह्या। तथा भगवती श० १३ उ० १ द्रव्य, मन, भाव मन कह्या। तथा उत्तराध्यन अ० ३४ गा० २१ पांच आश्रव नें कृष्ण लेश्या ना लक्षण कह्या। इत्यादिक अनेक ठामे आश्रव नें जीव कह्यो, अरूपी कह्यो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १२ बोल सम्पूर्ण।

तिवारे कोई कहे—जो आश्रव जीव छै तो उत्तराध्ययन अ० १८ मे कह्यो—"झायइ झविया सवे" ए गर्द्धभाली मुनि ध्यान ध्यावे करी खपायो छै आश्रव। जो आश्रव जीव छै तो जीव ने किम खपावो इम कहे तेहनों उत्तर— इहां आश्रव खपावे इम कह्यो ते खपावणो नाम मेटण रो छै। जे माठा परिणाम मेट्या कहो भावे खपाया कहो। अनुयोग द्वारे एहवो पाठ कह्यो ते लिखिये छै।

से किं तं भावज्झवणा, भावज्झवणा दुविहा पण्णत्ता तं जहा आगमओ. नो आगमओ। से किं तं आगमओ भावज्झवणा, आगमओ भावज्झवणा जाणए उवओ से तं आगमो भावज्झवणा से किं तं नो आगमओ भावज्झवणा, नो आगमओ भावज्झवणा, दुविहा पण्णत्ता तं जहा पसत्थाय, अपसत्थाय, से किं तं पसत्था, पसत्था चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा--कोह ज्झवणा माणज्झवणा, मायाज्झवणा, लोभज्झवणा, से तं पसत्था। से किं ते अपसत्था,

अपसत्था तिविहा पराणत्ता, तं जहा--णाणज्झवणा, दंसण ज्झवणा, चरित्त ज्झवणा, से तं अपसत्थो, से तं नो आगमओ भावज्झवणा, से तं भाव ज्झवणा, से तं उह निष्फन्ने।

(अनुयोग द्वार)

से० ते. कि कौण भा० भाव झवणा (क्षपणा) ते कहे छै. भा० भाव झवणा दु० बे प्रकार नी प० परूपी छै त० ते कहे छै आ० आगम सू. नो० नो आगम सू से० ते. कि कौण. आ० आगम सू भाव झवणा आ० आगम सू भाव झवणा जा० जाणे ने उपयोग युक्त सूत्र भणे. से० ते. आगम भाव झवणा कही छै. से० ते कौण नो० नो आगम सू भाव झवणा नो० नो आगम सं भाव झवणा दु० बे प्रकार नी प० परूपी त० ते कहे छै प० प्रशस्त भाव नी क्षपणा अ० अप्रशस्त भाव नी क्षपणा से० ते कौण प्रशस्त क्षपणा. प० प्रशस्त क्षपणा ४ प्रकार नी. परूपी छै त० ते कहे छै क्रोध क्षपणा मान क्षपणा माया क्षपणा लोभ क्षपणा से० ते प्रशस्त क्षपणा कही से० ते कि० कौण अप्रशस्त क्षपणा अ० अप्रशस्त क्षपणा ३ प्रकार नी परूपी छै. त० ते कहे छै ज्ञान क्षपणा दर्शन क्षपणा चरित्र क्षपणा. से० ते अप्रशस्त क्षपणा कही से० ते नो आगमओ भाव क्षपणा. से० ते भाव क्षपणा कही.

अथ इहां झवणा ते खपावणा। तिहां प्रशस्त भले भावे करी क्रोध, मान, माया, लोभ, खपे, अनें अप्रशस्त माठा भाव करी ज्ञान, दर्शन, चारित्र खपे, इम कह्यो। ते ज्ञान दर्शन, चारित्र, तो निज गुण छै जीव छै। ते माठा भाव थी खपता कह्या ते खपे कहो भावे मिटे कहो। जे माठा भाव आयां ज्ञान खपे ते ज्ञान रहित हुवे, तेहनें ज्ञान खपे कह्यो। इमहिज दर्शन, चारित्र, खपे कह्यो। जिम माठा भाव थी ज्ञान दर्शन, चारित्र, खपे पिण ज्ञानादिक अजीव नहीं, तिम भला भाव थी अशुभ आश्रव क्षपे कह्या पिण आश्रव अजीव नहीं। अनें आश्रव खपावे ए पाठ रो नाम लेई आश्रव नें अजीव कहे तो तिण रे लेखे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पिण माठा भाव थी खपे इम कह्या माटे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, नें पिण अजीव कहिणा। अनें ज्ञानादिक खपे कह्या तो पिण ज्ञानादिक नें अजीव न कहे तो आश्रव नें खपावणो कह्यो—एहवो नाम लेई आश्रव नें पिण अजीव न कहिणो। अनें आश्रव नें अजीव कहे तो सम्वर पिण तिण रे लेखे अजीव कहिणो अनें

सम्वर नें जीव कहे तो आश्रव नें पिण जीव कहिणो। डाहा हुवे तो विचरि जोइजो।

इति १३ बोल सम्पूर्ण।

अथ आश्रव तो कर्मा नें ग्रहे—अनें सम्वर कर्मा नें रोके, कम आवा रा बारणा ते तो आश्रव छै, ते बारणा रूंधे ते संवर, ए वेहूं जीव छै। देश थी उजलो जीव निर्जरा ते पिण जीव छै। सर्व थकी उजलो जीव मोक्ष ते पिण जीव छै। पुण्य शुभ कर्म, पाप-अशुभ कर्म बंध ते शुभाशुभ कर्म कर्म, ते पुद्गल छै। ते अजीव छै। एहवो न्याय ठाणाङ्ग ठा० ६ वड़ा ठम्बा में कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

नवसब्भावा पयत्था. प० तं० जीवा. अजीवा. पुन्न. पाव. आस्सवो. संवरो. निज्जरा. बंधो. मोक्खो.

(ठाणाङ्ग ठा० ६)

न० नव सद्भाव परमार्थक पिण अपरमार्थक नहीं पदार्थ वस्तु तिहां जो सुख. दुःख रो ज्ञान उपयोग लक्षण ते जीव, अजीव तेहथी विपरीत पु० पुण्य शुभ प्रकृति रूप कर्म ते पुण्य. पा० तेहथी विपरीत कर्म ते पाप आ० शुभाशुभ कर्म ग्रहे ते आश्रव आवता नों निरोध ते सम्वर ते गुप्तयादिके करी ने, निर्जरा ते विपाक थकी अथवा तप करी ने कर्म नो देश थकी खपाविवू आश्रवे ग्रह्या कर्म नू आत्मा सङ्घात्तो योग मेलवो ते बंध मो० सकल कर्म ना क्षय थकी जीव ना पोता ना स्वरूप नें विषे रहिवू ते मोक्ष जीवाजीव व्यतिरेक पुण्य पापादिक न हुइ पुण्य पाप ए वेहूं कर्म छै बंध ते पाप पुण्य नों रूप छै अने कर्म ते पुद्गल नों परिणाम छै पुद्गल ते अजीव छै। आश्रव ते मिथ्या दर्शनादि जीव ना परिणाम छै ते आत्मा ने पुद्गल ने विरह नो करणहार. आश्रव निरोध रूप ते सम्वर, ते देश थकी सर्व थकी आत्मा ना परिणाम निवृत्ति रूप ते निर्जरा ते जीव थकी कर्म झाटको ट जुदो करवू पोता नी शक्ति ते मोक्ष. ते समस्त कर्म रहित आत्मा ते भणी जीवाजीव पदार्थ ते सद्भाव कहिइ एहज भणी इहां पूर्व कहयू जे लोक माहि छै ते सर्व विहुं प्रकारे "तजहा जीवाचेव अजीवाचेव" इहां समचे विहूं पदार्थ कह्या. ते इहां विशेष थकी. नव प्रकारे करी देखाड्या

अथ इहां आश्रव मिथ्या दर्शनादिक जीव ना परिणाम कह्या। संवर निर्जरा, मोक्ष, पिण जीव में घाल्या अनें पुण्य पाप बंध नें पुद्गल कह्या पुद्गल नें अजीव कह्या। इहां तो प्रत्यक्ष नव पदार्थ में जीव, संवर, निर्जरा, मोक्ष नें जीव कह्या। अजीव पुण्य, पाप, बंध, नें अजीव कह्या छै। तेहनी टीका में पिण इम कह्यो। ते टीका लिखिये छै।

"नव सब्भावेत्यादि—सद्भावेन परमार्थेना ऽनुपचारेणे त्यर्थः। पदार्थाः वस्तूनि, सद्भाव पदार्थां स्तद्यथा—जीवाः सुख दुःख ज्ञानोपयोग लक्षणाः। अजीवा—स्तद्विपरीताः। पुण्यं-शुभ प्रकृति रूप कर्म। पापं—तद्विपरीत कर्मैव। आश्रूयते गृह्यते कर्मा ऽनेन इत्याश्रवः शुभाशुभ कर्मादान हेतु रिति भावः। सम्बरः—आश्रव निरोधो गुप्त्यादिभिः। निर्जरा विपाकात्तपसा वा कर्मणां देशतः क्षपणा। वन्धः—आश्रवै रात्तस्य कर्मण आत्मना सयोमः। मोक्षः—कृत्स्न कर्म क्षयात् आत्मनः स्वात्मन्य वस्थान मिति।

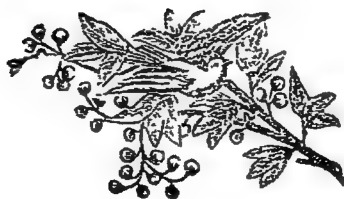
ननु जीवा ऽजीव व्यतिरिक्ताः पुण्यादयो न सन्ति, तथा युज्यमानत्वात्। तथाहि पुण्य पापे कर्मणी, वन्धोपि तदात्मक एव, कर्मच कर्म पुद्गल परिणामः, पुद्गलाश्चा ऽजीवा इति। आश्रवस्तु मिथ्या दर्शनादि रूपः परिणामो जीवस्य, स चात्मान. पुद्गलांश्च विरहय्य कोऽन्यः। सम्बरोपि आश्रव निरोध लक्षणो देश सर्व भेद आत्मनः परिणामो निवृत्ति रूपः। निर्जरा तु कर्म परिशाटो जीवः कर्मणां यत्पार्थक्य मापादयति स्वशक्त्या। मोक्षोऽपि आत्मा समस्त कर्म विरहित इति तस्मात् जीवाऽजीवौ सद्भाव पदार्थाविति वक्तव्यम्. अतएवोक्त मिहैव "जदत्थिचणं लोए तं सव्वं दुप्पडोयारं. तं जहा जीवाचेव अजीवा चेव" अत्रोच्यते सत्य मेतत् किन्तु द्वावेव जीवाऽजीव पदार्थौ सामान्ये नोक्तौ तावेवेह विशेषतो नवधोक्तौ-इति"

अथ इहाँ टीका में पिण आश्रव नें कर्म नो हेतु कह्यो—ते माटे आश्रव नें कर्म न कहीजे। वली आश्रव मिथ्या दर्शनादिक जीव ना परिणाम कह्या। वली

सम्वर नें पिण निवृत्ति रूप आत्मा ना परिणाम कह्या । देश थकी जीव उजलो. देश थकी कर्म नों खपाविवो ते निर्जरा कही । सर्व कर्म रहित ;जीव नें मोक्ष कहिइं । इम आश्रव. सम्वर. निर्जरा. मोक्ष. ४ जीव में घाल्या । अनें पुण्य शुभ कर्म कह्यो, पाप अशुभ कर्म कह्यो. वन्ध ते शुभाशुभ कर्म कह्यो । कर्म—पुद्गल कह्या । पुद्गल नें अजीव कह्या । इम पुण्य. पाप. वन्ध नें अजीव में घाल्या । इणन्याय नव पदार्थां मे ५ जीव. ४ अजीव. कहीजे । पाठ में पिण अनेक ठामे आश्रव, सम्वर, निर्जरा, मोक्ष, नें जीव कह्या । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १४ बोल सम्पूर्ण ।

इति आश्रवाऽधिकारः ।



अथ संवराऽधिकारः ।

केतला एक अज्ञानी संवर नें अजीव कहे छै । अनें संवर नें तो घणे ठामे सूत्र मे जीव कह्यो छै । ते पाठ लिखिये छै ।

पंच संवर दारा प० तं सम्मत्तं १ विरई २ अप्पमादे ३ अकसाया ४ अजोगया ५ ।

(ठाणाङ्ग ठा० ५ उ० २ तथा समवायाङ्ग)

अ० प० पांच स० सम्वर ते जीव रूप तलाव ने विषे कर्म रूप जल ना आगमन रूंधवो. दा० तेहना बारणा नो परे बारणा ते रूंधवा नों उपाय प० परूप्या. त० ते कहे छै. स० सम्यक्त्व पणो करी नें रूंधे मिथ्यात्व रूप पाप ने वि० विरति २ अप्रमाद ३ अ० अकषाय ४ अ० अजोग पणो ५ ।

अथ अठे सम्यक्त्व संवर सम्यग्दृष्टि शुद्ध श्रद्धा नें ऊंधी श्रद्धण रा त्याग ॥ १ ॥ व्रत ते सर्व चारित्र देश चारित्र रूप ॥ २ ॥ अप्रमाद ते प्रमाद रहित ॥ ३ ॥ अकषाय ते उपशान्त कषाय नें तथा क्षीण कषाय नें हुई ॥ ४ ॥ अयोग ते मन वचन काया नों योग रूंधे चउदमे गुणठाणे हुई ॥ ५ ॥

इहाँ सम्यक्त्व शुद्ध श्रद्धा ने ऊंधो श्रद्धण रा त्याग, ते सम्यग्दृष्टि नें सम्यक्त्व सम्वर कह्यो । तथा ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १ 'जीव किरिया दुविहा प० तं० सम्मत्त किरिया, मिच्छत किरिया." इहां सम्यक्त्व मिथ्यात्व ने जीव कह्यो । मिथ्यात्व क्रिया नें मिथ्यात्व आश्रव, अनें सम्यक्त्व क्रिया ऊंधो श्रद्धण रा त्याग, अनें शुद्ध श्रद्धा रूप सम्यक्त्व संवर कहीजे । इणन्याय सम्यक्त्व संवर जीव छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

तथा उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ११ में पहवो पाठ कह्यो। ते लिखिये छै।

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा।
वीरियं उवओगोय, एयं जीअस्स लक्खणं ॥११॥
सद्दं धयार उज्जोओ, पहा छाया तवेइ वा।
वण्ण रस गंध फासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥१२॥

(उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ११-१२)

ना० ज्ञान अनें द० दर्शन. चे० निश्चय च० चारित्र अनें. त० तप त० तिमज. वी० वीर्य सामर्थ्य. उ० ज्ञान ना उपयोग ए० पूर्वोक्त ज्ञानादिक. जी० जीव ना लक्षण छै ॥११॥ स० शब्द. अंधकार उ० उद्योत रत्नादिक नों. प० प्रभा. कांति चन्द्रादिक नी. छा० शीतल छांहड़ी त० ताप सूर्यादिक ना. व० वर्ण. र० रस मधुरादिक. ग० सुगन्ध दुर्गन्ध फा० स्पर्श. पु० पुद्गल नों लक्षण छै।

अथ इहां ज्ञान. दर्शन. चारित्र. तप. वीर्य. उपयोग. नें जीव ना लक्षण कह्या। अनें शब्द अन्धकार. उद्योत. प्रभा. छाया. तावड़ो. वर्ण. गन्ध रस. स्पर्श. ए पुद्गल ना लक्षण कह्या। इहां चारित्र नें जीव ना लक्षण कह्या। अनें चारित्र तेहीज व्रत सम्वर छै। ते भणी सम्वर नें पिण जीव ना लक्षण कह्या। अनें जीव ना लक्षण तो जीव छै। अनें जे कोई चारित्र नें जीव ना लक्षण कहे पिण जीव न कहे। तो तिण रे लेखे वर्ण, रस, गन्ध, स्पर्श, ने पिण पुद्गल ना लक्षण कह्या, ते भणी पुद्गल ना लक्षण कहिणा, पिण पुद्गल न कहिणा। अनें पुद्गल ना लक्षण नें पुद्गल कहे तो जीव ना लक्षण नें जीव कहिणा। तथा ज्ञान, दर्शन, उपयोग, नें जीव ना लक्षण कह्या ए जीव छै तो चारित्र नें पिण जीव ना लक्षण कह्या ते चारित्र पिण जीव छै। ते तो चारित्र व्रत संवर छै। इणन्याय संवर नें जीव कहीजे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोलसंपूर्ण।

तथा अनुयोग द्वार में गुण प्रमाण ना भेद कह्या । जीव गुण प्रमाण, अजीव गुण प्रमाण, ते पाठ लिखिये छै ।

से किं तं गुणप्पमाणे गुणप्पमाणे दुविहे. प० तं० जीव गुणप्पमाणे, से किं तं अजीव गुणप्पमाणे, अजीव गुणप्पमाणे पंच विहे पण्णत्ते, तं जहा--वण्ण गुणप्पमाणे. गंध गुणप्पमाणे. रस गुणप्पमाणे, फास गुणप्पमाणे. संठाण गुणप्पमाणे ।

(अनुयोग द्वार)

से० ते. कि० कौण गु० गुणप्रमाण, गु० गुण प्रमाण ते दु० बे प्रकारे परूप्या त० ते कहे छै । जी० जीव गुण प्रमाण अ० अजीव गुण प्रमाण से० ते. कि कौण अ० अजीव गुण प्रमाण अ० अजीव गुण प्रमाण प० पांच प्रकारे परूप्या त० ते कहे छै. व० वर्ण गुण प्रमाण ग० गन्ध गुण प्रमाण. र० रस गुण प्रमाण. फा० स्पर्श गुण प्रमाण सं० संस्थान गुण प्रमाण

वली जीव गुण प्रमाण नो पाठ कहे छै ।

से किं तं जीव गुणप्पमाणे, जीव गुणप्पमाणे. तिविहे पण्णत्ते तं जहा नाण गुणप्पमाणे. दंसण गुणप्पमाणे. चरित्त गुणप्पमाणे ।

(अनुयोग द्वार)

से० ते. कि० कौण जी० जीव गुण प्रमाण जी० जीव गुण प्रमाण ति० त्रिविधे परूप्या. त० ते कहे छै ना० ज्ञान गुण प्रमाण द० दर्शन गुण प्रमाण. चरित्र गुण प्रमाण

अथ इहां बिहूं पाठां में ५ वर्ण, २ गंध, ५ रस, ८ स्पर्श, ५ संस्थान नें अजीव गुण प्रमाण कह्या । अनें ज्ञान, दर्शन, चारित्र, नें जीव गुण प्रमाण कह्या ।

तिण में चारित्र ते सम्वर छै। तेहनें पिण जीव गुण प्रमाण कहिइं। अनें चारित्र नें जीव गुण प्रमाण कहे पिण जीव न कहे तो तिण रे लेखे ज्ञान, दर्शन, नें पिण जीव गुण प्रमाण कहिणा। पिण जीव न कहिणा। अनें ज्ञान, दर्शन, नें जीव कहे तो चारित्र नें पिण जीव कहिणो। तथा वर्णादिक नें अजीव गुण प्रमाण कह्या, तेहनें अजीव कहीजे। तो ज्ञान, दर्शन, चारित्र, ने जीव गुण प्रमाण कह्या, तेहनें पिण जीव कहिए। ए तो पाधरो न्याय छै। तथा चारित्र, गुणप्रमाण, रा भेद कह्या, तिहां पाच चारित्र रा नाम कही पछे कह्यो। "सेतं चरित्त गुणप्पमाणे, से तं जीव गुणप्पमाणे," इम कह्यो ते माटे पांचूइ चारित्र जीव छै। ते चारित्र व्रत संवर छै। तथा ठाणाङ्ग ठा० १० कह्यो—"दसविहे जीव परिणामे प० तं० गइ परिणामे, इन्द्रिय परिणामे, कसाय परिणामे, लेस परिणामे, जोग परिणामे, उवओग परिणामे, णाण परिणामे, दंसण परिणामे, चरित्त परिणामे, वेय परिणामे," इहां जीव परिणामो रा १० भेदां में ज्ञान दर्शन नें जीव परिणामी कह्या ते जीव छै। तिम चारित्र नें पिण जीव परिणामी कह्यो ते चारित्र पिण जीव छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

तथा भगवती श० १ उ० ६ संवर नें आत्मा कही। ते पाठ लिखिये छै।

तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे कालासवेसिय पुत्ते णामं अनगारे, जेणेव थेरा भगवन्तो तेणेव उवागच्छइ २ त्ता थेरं भगवं एवं वयासी थेरा सामाइयं ण याणंति थेरा सामाइयस्स अट्ठं ण याणंति, थेरा पच्चक्खाणं ण याणंति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठं ण याणंति, थेरा संयमं ण याणंति, थेरा संजमस्स अट्ठं ण याणंति, थेरा संवरं ण याणंति थेरा

संवरस्स अट्ठं ण याणंति. थेरा विवेगं ण याणंति. थेरा विवेगस्स अट्ठं ण याणंति. थेरा विउसग्गं ण याणंति. थेरा विउसग्गस्स अट्ठं णयाणंति. तएणं थेरा भगवंतो कालावसेविय पुत्तं अणगारं एवं वयासी जाणामो णं अज्जो सामाइयं. जाणामो णं अज्जो सामाइयस्स अट्ठं जाव जाणामो णं. विउसग्गस्स अट्ठं। तएणं से कालासवेसिय पुत्ते अणगारे ते थेरे भगवंते एवं वयासी जइणं अज्जो तुब्भे जाणह सामाइयं जाणह सामाइयस्स अट्ठं, जाव जाणह विउसग्गस्स अट्ठं, के भे अज्जो सामाइए के भे अज्जो सामाइयस्स अट्ठे जाव के भे विउसग्गस्स अट्ठे, तएणं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी आयाणे अज्जो सामाइये, आयाणे अज्जो सामाइयस्स अट्ठे. जाव विउसग्गस्स अट्ठे।

(भगवती श० १ उ० ९)

ते० तेणे काले ते० तेणे समये. पा० पार्श्वनाथ ना शिष्य. का० कालासवेसिय पुत्र अणगार साधु. जे जिहां. थे० श्री महावीर ना शिष्य छै श्रुतवन्त छै. ते० तिहां उ० आवे. आवी नें. थे० स्थविर भगवन्त नें इम कहे थे० स्थविर सामायिक समता भाव रूप नें तुम्हे न जानता थे० सूक्ष्म पणा थी स्थविर सामायिक अर्थ. नथी तुम्हे जाणता थे० स्थविर पचक्खाण पौरसी प्रमुख तुम्हे नथी जाणता. थे० स्थविर पचक्खाण अर्थ आश्रव नूं रूंधवू ते नथी जाणता थे० स्थविर सयम जाणता नथी थे० स्थविर संयम नों अर्थ नथी जाणता. थे० स्थविर सम्वर नें नथी जाणता. थे० स्थविर सम्वर नों अर्थ नथी जाणता. थे० स्थविर विवेक नथी जाणता. थे० स्थविर विवेक नों अर्थ नथी जाणता थे० स्थविर कायोत्सर्ग नूं करवू नथी जाणता. थे० सूथविर कायोत्सर्ग नू अर्थ नथी जाणता त० तिवारे. थे० सूथविर भगवन्त. का० कालासवेसिय पुत्र अनगार नें ए० इम कहे जा० जाणी इ छै. अ० हे आर्य ! सा० सामायिक. जा० जाणी इ छै अ० हे आर्य ! सामायिक नों अर्थ जा० यावत् जा० जाणी इ छै. अ० हे आर्य ! वि० कायोत्सर्ग नों अर्थ त० तिवारे. का० कालासवेसिया पुत्र. अ० अणगार थे० सूथविर भगवन्त नें इम कहे. ज० जो. अ० हे आर्यो ! तुम्हे जाणो छो सा० सामायिक नू

यावत्. जा० जाणो छो वि० कायोत्सर्ग नूं अर्थ. के० कुण ते. अ० आर्य ! सामायिक. के० कुण ते अ० आर्य ! सामायिक नों अर्थ. जा० यावत् के० कुण भगवन् ! वि० कायोत्सर्ग नूं अर्थ. त० तिवारे. ते. थे० स्थविर भगवान्. का० कालासवेसिय पुत्र नामे अणगार प्रते. ए० इम कहे आ० म्हारी आत्मा ते सामायिक. "जीवो गुण पडिवण्णो ते यस्स दव्वट्ठिस सामाइयंति गरहामि निंदामि अप्पाण वोसरामि" इति वचनात्, ए अभिप्राय जे सामायिकवन्त छांक्या छै क्रोधादिक ते किम निन्दा करे निन्दा ते द्वेष नू कारण छै ए सामायक नों अर्थ म्हारे आत्मा ते सामायिक नों अर्थ. ते जीव ज कर्म नों अण उपजाविवो जीव ना गुणपणा थी जीव ना अक्षुद्रापणा थी यावत् कायोत्सर्ग नू अर्थ काय नूं वोसराविवूं ।

अथ इहां सामायिक, पचक्खाण. संयम, संवर विवेक, कायोत्सर्ग नें आत्मा कही। तिहां संवर नें आत्मा कही। ते माटे संवर जीव छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ४ बोल सम्पूर्ण ।

तथा प्राणातिपातादिक ना वैरमण ने अरूपी कह्या। ते पाठ लिखिये छै।

अह भंते पाणाइवाय वेरमणे जाव परिग्गह वेरमणे. कोह विवेगे. जाव मिच्छा दंसण सल्लविवेगे एससां कइवण्णे जाव कइ फासे पण्णत्ते, गोयमा ! अवण्णे अगंधे अरसे अफासे पण्णत्ते ॥७॥

(भगवती श० १२ उ० ५)

अ० अथ भं० भगवन्त ! पा० प्राणातिपात वेरमण. जीव हिंसा थी निवर्त्तवू यावत् प० परिग्रहे वेरमण. को० क्रोध नों विवेक ते परित्याग यावत् मि० मिथ्या दर्शन शल्य विवेक. ते परित्याग एहमां केतला वर्ण. जा० यावत्. के० केतला फा० स्पर्श. प० परूप्या. गो० हे गौतम ! अ० अवर्ण. अ० अगन्ध. अरस. अस्पर्श. प० परूप्या.

अथ इहां १८ पाप नों वेरमण अरूपी कह्यो। ते १८ पाप नो वेरमण संवर छै। ते माटे संवर नें अरूपी कहीजे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

तथा भगवती श० १८ उ० ४ कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

पाणाइवाय वेरमणे जाव मिच्छा दंसण सल्ल विवेगे धम्मत्थिकाए. अधम्मत्थिकाए जाव परमाणु पोग्गले सेलेसि पडिवण्णए अणगारे एएणं दुविहा जीव दव्वाय अजीव दव्वाय जीवाणं परिभोगत्ताए णो हव्वमागच्छंति. से तेण-ट्ठेणं जाव णो हव्वमागच्छंति।

(भगवती श० १८ उ० ४)

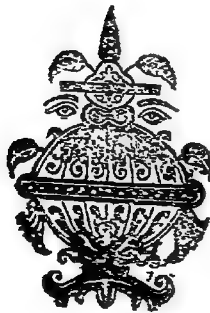
पा० प्राणातिपात वेरमण ते व्रत रूप. जा० यावत्. मि० मिथ्यादर्शन शल्य विवेक ध० धर्मास्तिकाय अ० अधर्मास्तिकाय. जा० यावत्. प० परमाणु पुद्गल. से० सेलेसी प्रतिपन्न. अ० अणगार ने ए० एतला माटे दु० बे प्रकारे जी० जीव द्रव्य. अनें अजीव द्रव्य जी० जीव नें प० परिभोग पणे नहीं आवे

अथ इहाँ कह्यो—१८ पाप नो वेरमण धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, अशरीरी जीव, परमाणु पुद्गल, सलेशी साधु, ए जीव पिण छै, अजीव पिण छै। पिण जीवां रे भोग न आवे तो जे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्ति-काय, आकाशास्तिकाय, परमाणु पुद्गल ए अजीव छै। अनें १८ पाप नों वेरमण अशरीरी जीव, सलेशी साधु, ए जीव द्रव्य छै। जे १८ पाप ना वेरमण नें अरूपी कह्यो छै, ते अजीव में तो आवे नहीं। इहां धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आका-शास्तिकाय थकी १८ पाप नो वेरमण न्यारो कह्यो ते माटे १८ पाप नों वेरमण अजीव अरूपी में आवे नहीं।- ते भणी जीव द्रव्य छै, ते संवर छै। इणन्याय संवर

जीव छै। तथा भगवती श० १२ उ० १० आठ आत्मा में चारित्र आत्मा कही ते पिण संवर छै। तथा अनुयोग द्वार में च्यार चारित्र क्षयोपशम निष्पन्न कह्या छै। तथा प्रश्न व्याकरण अ० ६ दया नें निज गुण कही। ते त्याग रूप दया संवर छै। तथा उत्तराध्ययन अ० २८ चारित्र रो गुण कर्म रोकवा रो कह्यो। कर्मां ने रोके ते संवर जीव छै। अजीव किम रोके, तथा भगवती श० ६ उ० ३१ चारित्रावरणी कह्यो, चारित्र आडो आवरण कह्यो। ते आवरण जीव रे आडो छै अजीव आडो नहीं। तथा भगवती श० ८ उ० १० जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट, चारित्र नी आराधना कही, ए आराधना जीव नी छै। अजीव नी आराधना किम हुवे इत्यादिक अनेक ठामे संवर नें अरूपी कह्यो। इण न्याय संवर नें जीव कहीजे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण।

इति संवराऽधिकारः।



अथ जीवभेदाऽधिकारः।

केतला एक अज्ञानी, भवन पति वाणव्यन्तर में अनें प्रथम नरक में जीव रा ३ भेद कहे—सन्नी (संज्ञी) रो अपर्याप्त १ पर्याप्त २ अनें असन्नी पंचेन्द्रिय रो अपर्याप्तो ११ मो भेद. ३, ए तीन भेद कहे। वली सूत्र रो नाम लेवी कहे देवतामें सन्नी पिण कह्या, असन्नी पिण कह्या। ते माटे देवता नें असन्ना रो ११ मों भेद पावे। इम कहे तेहनों उत्तर—ए नारकी देवता में असन्नी मरी उपजे ते अपर्याप्त पणे विभंग अज्ञान न पावे, तेतला काल मात्र ते नेरइया नों असन्नी नाम छै। अनें विभङ्ग तथा अवधिज्ञान पावे तेहनो सन्नी नाम छै। ए तो संज्ञा आश्री सन्नी, असन्नी. कह्या। पिण जीव रा भेद आश्री न थी कह्या। ए अवधि. विभङ्ग दोनुं रहित नेरइया नों नाम तो असन्नी छै। पिण जीव रो भेद ११ मौ न थी। जीव रो भेद तो १२ मो छै। जिम पन्नवणा पद १५ उ० १ विशिष्ट अवधि ज्ञान रहित मनुष्य नें असन्नी भूत कह्या छै। ते पाठ लिखिये छै।

मणुस्साणं भंते ! ते निज्जरा पोग्गले किं जाणंति ण पासंति आहारंति उदाहु ण जाणंति ण पासतिणं आहारेति गोयमा ! अत्थेगतियाणं जाणंति पासंति आहारेति अत्थेगतिया ण जाणंति ण पासंति आहारेंति से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ अत्थेगतिया जाणंति पासंति आहारेंति अत्थेगतिया ण जाणंति ण पासंति ण आहारेति गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पराणत्ता तं जहा—सरिण भूयाय. असरिण भूयाय. तत्थणं जे ते असरिण भूयाय ते ण जाणंति ण पासंति आहारेंति,

तत्थणं जे ते सरिण भूया ते दुविहा पराणत्ता, तं जहा—उव-उत्ताय अणुवउत्ताय. तत्थणं जे ते अणुव उत्ताय तेणं ण जाणंति ण पासंति ण आहारेंति. तत्थणं जे ते उवउत्ता तेणं जाणंति पासंति आहारेंति से तेणट्ठेणं. गोयमा! एवं आहारेंति।

(पन्नवणा पद १५ उ० १)

म० मनुष्य भ० हे भगवन्! णि० ते निर्जरया पुद्गल प्रते. किं० स्यूं जाणतां थकां पा० देखतां थकां. आ० आहारे छै के अथवा. ण० स्यूं अणजाणतां थकां ण० अणदेखतां थकां आ० आहारे छै गो० हे गौतम! अ० केतला एक मनुष्य जाणतां थकां पा० देखतां थकां आ० आहारे छै अ० अनें केतला एक म० मनुष्य अणजाणतां थकां ण० अणदेखता थकां. आ० आहारे छै से० ते स्यां माटे भ० भगवन्! ए० इम कह्यो छै. अ० केतला एक जाणतां थकां पा० देखतां थकां आ० आहारे छै. अ० अने केतला एक मनुष्य. ण० अणजाणतां थकां ण० अणदेखतां थकां आ० आहारे छै. गो० हे गौतम! म० मनुष्य. दु० बे भेद प० परूप्या त० ते कहे छै स० सन्नी ते विशिष्ट अवधि ज्ञानवन्त अ० अने असंज्ञी ते ताहश ज्ञान रहित त० तिहां जे ते स० असन्नी भूत छै विशिष्ट अवधि ज्ञान रहित छै. त० ते तो अणजाणतां ण० अणदेखतां थकां आ० आहारे छै अने त० तिहां जे ते कार्मणय शरीर ना पुद्गल देखे ते विशिष्ट अवधि ज्ञानवन्त ते सन्नी भूत मनुष्य. दु० बे भेद कह्या छै. त० ते कहे छै. उ० उपयोगी. अ० अने अनुपयोगी त० तिहां जे ते अ० अनुपयोगी छै ते अणजाणता थकां. ण० अणदेखता थकां आ० आहारे छै ते० तिहां जे. ते उपयोगवन्त जा० ते जाणता थकां. पा० देखता थकां आ० आहारे छै. से० ते एणे अर्थ गौतम! आहारे छै.

इहां कह्यो—मनुष्य ना २ भेद, सन्नी भूत ते विशिष्ट अवधिज्ञान सहित, मनुष्य. असन्नी भूत ते विशिष्ट अवधि ज्ञान रहित मनुष्य ते तो निर्जरया पुद्गल न जाणे न देखे अनें आहारे छै। अनें विशिष्ट अवधि सहित ते सन्नी भूत मनुष्य रा २ भेद, उपयोग सहित अनें उपयोग रहित। तिहां जे उपयोग रहित ते तो निर्जरया पुद्गल नें न जाणे न देखे पिण आहारे छै। अनें उपयोग सहित मनुष्य जाणे देखे आहारे छै। इहां निर्जरया पुद्गल तो अवधि ज्ञाने करी जाणीइं देखीइं अवधि ज्ञान विना निर्जरया पुद्गल दिखाइं नहि, ते माटे असन्नी भूत मनुष्य रो अर्थ विशिष्ट

अवधि ज्ञान रहित कियो छै। ते अवधि ज्ञान रहित नें असन्नी भूत कह्यो। पिण असन्नी रो भेद न पावे, तिम नेरइया नें असन्नी भूत कह्या। पिण असन्नी रो भेद न पावे। ए नेरइया अनें देवता नें असंज्ञी कह्या। ते संज्ञावाची छै। जे अवधि विभङ्ग रहित नेरइया नों नाम असंज्ञी छै जिम विशिष्ट अवधि रहित मनुष्य निर्जरा पुद्गल न देखे। तेहनें पिण असन्नी भूत कह्यो। पिण निर्जरा पुद्गल न देखे ते सर्व मनुष्य में असन्नी नों भेद न पावे, तिम असन्नी नेरइया में असन्नी रो भेद न थी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण।

तथा पन्नवणा पद ११ में कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

अह भंते! मंद कुमारे वा मंद कुमारिया वा जाणति वयमाणे वुयमाणा अहमे से बुयामि अहमे से बुबामिति गोयमा! णोइणट्ठे समट्ठे ण णत्थ सरिणणो ॥ १० ॥ अह भंते! मंद कुमारए वा मंद कुमारियावा जाणति आहारं आहारे माणे अहमेसे आहार माहरेमि अहमेसे आहार माहरे मिति· गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे णणत्थ सरिणणणो ॥११॥ अह भंते मंद कुमारए वा मंद कुमारिया वा जाणति अयं मे अम्मा पियरो गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे णणणत्थ सरिणणणो ॥१२॥

(पन्नवणा प द११)

अथ भं० हे भगवन्! मं० मंद कुमार ते न्हानो बालक. अथवा मन्द कुमारिका ते न्हानी बालिका बोलता थका इम जाणे अ० हूं पूछवो. व० बोलूं छूं. गो० हे गोतम! णो० पूछवो अर्थ.

स० समर्थ नहीं छै. या० विशिष्ट अवधिवन्त जाणे शेष न जाणे. अ० अथ भं० हे भगवन् ! म० म्हानों बालक. अथवा. म० म्हानी बालिका. आ० आहार करता थकां इम जाणे. अ० हूं. एहवो आहार करू छूं. हूं आहार करू छूं. गो० हे गोतम ! णो० एह अर्थ समर्थ नहीं है या० विशिष्ट अवधिवन्त जाणे शेष न जाणे. अ० अथ भं० हे भगवन् ! म० म्हानों बालक. अथवा. मं० म्हानी बालिका जा० जाणे छै अय० एह. अ० म्हारा माता पिता छ. गो० हे गोतम ! णो० एहवो अर्थ समर्थ नहीं छै. या० विशिष्ट मति अवधिवन्त जाणे शेष न जाणे।

अथ अठे पिण कह्यो—म्हाना बालक बालिका मन पटुता पणो न पाव्यो। विशिष्ट ज्ञान रहित नें सन्नी न कह्यो। पिण जीव रो भेद तेरमों छै। तिण में असन्नी रो भेद न थी। तिम नेरइया नें असन्नी भूत कह्या। पिण असन्नी रो भेद न थी। ए नेरइया. देवता नें कह्या. ते संज्ञा वाची छै। अवधि विभङ्ग रहित नेरइया नों नाम असंज्ञी छै। तिम विशिष्ट अवधि रहित निर्जरा पुद्गल न देखे तेहनों पिण नाम असंज्ञी भूत कह्यो। पिण निर्जरा पुद्गल न देखे ते सर्व मनुष्य में असन्नी रो भेद न पावे। तथा म्हाना बालक बालिका मन पटुता रहित नें सन्नी न कह्यो. पिण तेहमें असन्नी रो भेद न थी। तिम असन्नी नेरइया में असन्नी रो भेद न थी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

तथा दश वैकालिक अ० ८ गा० १५ में ८ सूक्ष्म कह्या। ते पाठ लिखिये छै।

सिणेह पुप्फ सुहमंच पाणुत्तिं गत हेवय ।
पणगं बीय हरियंच अंड सुहमं च अट्ठमं ॥

(दश वैकालिक अ० ८ गा० १५)

सि० ओस प्रमुख नों पाणी सूक्ष्म १ पु० फूल सूक्ष्म वट वृक्षादिक ना. २ पा० प्राण सूक्ष्म कुंथुयादि ३. उ० कीड़ी नगरा प्रमुख सूक्ष्म ४ तिमज प० पांच वर्ण नी नीलण फूलण

सूक्ष्म. ५ बी० बीज वड प्रमुख ना सूक्ष्म ६ ह० नवी हरी दूर्वादिक ७ अ० अग माखी कीड़ी आदि ना ८ सूक्ष्म.

अथ इहां ८ सूक्ष्म कह्या—धुंयर प्रमुख नों सूक्ष्म स्नेह १ न्हाना फल २ कुंथुआ ३ उत्तिंग कीडी नगरा ४ नीलण फूलण ५ बीज खसखसादिकना ६ न्हाना अंकुर ७ कीड़ी प्रमुख ना अण्डा ८ सूक्ष्म कह्या। ते न्हाना मांटे सूक्ष्म छै। पिण सूक्ष्म रो जीव रो भेद नहीं। तिम नेरइया अनें देवता नें असन्नी कह्या। पिण असन्नी रो भेद नहीं। जे देवता नें असन्नी कह्यां माटे असन्नी रो भेद कहे--तो तिण रे लेखे ए आठ बोलां नें सूक्ष्म कह्या छै यां में पिण सूक्ष्म रो भेद कहिणो। यां आठां में सूक्ष्म रो भेद नहीं तो देवता अनें नेरइया में पिण असन्नी रो भेद न थी। डाहा हुए तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

तथा जीवाभिगम मध्ये प्रथम प्रति पत्ति में तीन त्रस ३ स्थावर कह्या। ते पाठ लिखिये छै।

से किं तं थावरा, थावरा तिविहा पराणत्ता, तंजहा—पुढ़वी काइया, आउक्काइया, वणस्सइ काइया।

(जीवाभिगम १ प्र०)

से० ते. किं किसा था० स्थावर, था० स्थावर ति० त्रिण प्रकारे. प० परूप्या. तं० ते कहे छै पु० पृथिवी काय. आ० अपकाय. व० वनस्पतिकाय.

अथ अठे तो. पृथिवी. अप्. वनस्पति. नें इज स्थावर कह्या। पिण तेउ. वाउ. नें स्थावर न कह्या। वली आगलि पाठ कह्यो, ते लिखिये छै।

से किं तं तसा, तसा तिविहा पराणत्ता तंजहा—तेउकाइया. वाउकाइया. उराला. तसापाणा ।

(जीवाभिगम १ प्र०)

से० ते. कि किसा त० त्रस ति० त्रिण प्रकारे प० परूप्या त० ते कहे छै. ते० तेजसकाय. वा० वायुकाय उ० औदारिक त्रस प्राणी

अथ इहां तेउ वाउ. नें त्रस कह्या चालवा आश्री। पिण त्रस नों जीव नों भेद न थी। जे नेरइया अनें देवता नें असन्नी कह्यां माटे असन्नी रो भेद कहे तो तिण रे लेखे तेउ. वाउ नें पिण त्रस कह्या छै। ते भणी तेउ. वाउ में पिण त्रस नों जीव नों भेद कहिणो। अनें जो तेउ. वाउ में त्रस नों भेद न थी तो देवता अनें नारकी में असन्नी रो भेद न कहिवो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण ।

तथा अनुयोग द्वार में सम्मूच्छिम मनुष्य नें पर्यातो. अपर्याप्तो विहूं कह्या छै। ते पाठ लिखिये छै।

अविसेसिए मणुस्से, विसेसिए सम्मुच्छिम मणुस्सेय, गब्भवक्कंतिय मणुस्सेय। अविसेसिय सम्मुच्छिम, मणुस्से, विसेसिए पज्जत्तग सम्मुच्छिम मणुस्सेय, अपज्जत्तग सम्मुच्छिम मणुस्सेय॥

(अनुयोग द्वार)

अ० अविशेष. ते मनुष्य वि० विशेष ते. सम्मूर्च्छिम म० मनुष्य ग० अनें गभज म० मनुष्य अ० अविशेष. ते स० सम्मूर्च्छिम वि० विशेष ते, प० पर्याप्तो. सम्मूच्छिम मनुष्य,

अथ इहां विशेष. अविशेष ए बे नाम कह्या। तिण में अविशेष थी तो मनुष्य. विशेष थी. सम्मूच्छिम. गर्भज। अनें अविशेष थी तो सम्मूच्छिम मनुष्य अनें विशेष थी पर्यांप्तो अपर्यांप्तो कह्यो। इहां सम्मूच्छिम मनुष्य नें पर्यांप्तो अपर्यांप्तो कह्यो। ते केतलीक पर्याय बंधी ते पर्याय आश्री पर्यांप्तो कह्यो। अनें सम्पूर्ण न बंधी ते न्याय अपर्यांप्तो कह्यो। सम्मूच्छिम मनुष्य नें पर्यांप्तो कह्यो। पिण पर्यांप्ता में जीव रा भेद ७ पावै। ते माहिलो भेद न थी। जे देवता नें असन्नी कह्यां माटे असन्नी रो जीव रो भेद कहे तो तिणरे लेखे सम्मूच्छिम मनुष्य नें पिण पर्यांप्तो कह्यां माटे पर्यांप्ता रो भेद कहिणो अनें सम्मूच्छिम मनुष्य में पर्यांप्ता रो भेद नथी कहे, तो देवता में पिण असन्नी रो भेद न कहिणो। तथा जीवाभिगमे देवता, नारकी नें असंघयणी कह्या। अनें पन्नवणा में कह्यो देवता केहवा छै। "दिव्वेणं संघयणेणं. दिव्वेणं संठाणेणं" इहां देवता में दिव्य प्रधान संघयण, जिसा पुद्गलां नें संघयण कह्या। पिण ६ संघयण माहिला संघयण न कहिवा। तिम असन्नी मरी देवता अनें नारकी थाय ते अन्तर्मुहूर्त्त ताँई असन्नी सरीखा छै विभङ्ग अज्ञान रहित ते माटे असन्नी सरीखा नें असन्नी कह्या। पिण असन्नी रो जीव भेद न कहिवो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

तथा भगवती श० १३ उ० २ असुर कुमार में उपजे तिण समये देवता में बे वेद-स्त्री वेद पुरुष वेद. कह्या। ते पाठ लिखिये छै।

असुर कुमारा वासेसु एग समएणं केवइया असुरकुमारा उववज्जंति केवइया तेउ लेस्सा उववज्जंति केवइया कण्ह पक्खिया उववज्जंति एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा तहेव वागरणं णवरं दोहिं वेदेहिं उववज्जंति, णपुंसगवेदगा ण उववज्जंति सेसं तं चेव।

(भगवती श० १३ उ० २)

अ० असुर कुमार ना आवास मांहि. ए० एक समय में के० केतला. अ० असुर कुमार उ० उपजे छै के० केतला ते० तेउ लेस्सावन्त उ० उपजे छै के० केतला क० कृष्ण पक्षिया उ० उपजे छै. ए० इम र० रत्नप्रभा आश्री पृच्छा त० तथैव अठे जाणवा ण० एतलो विशेष वे० वे वेदे उपजे स्त्री वेदे पुरुष वेदे. न० नपुंसक वेदे ण० न उपजे

अथ इहां कह्यो—असुर कुमार में उत्पत्ति समय वे वेद पावे। पिण नपुंसक वेद न पावे। अने देवता में असंज्ञी रो अपर्यातो ११ मो भेद कह्यो। तो ११ मो भेद तो नपुंसक वेदी छै। ते माटे तिण रे लेखे देवता में नपुंसक वेद पिण कहिणो। जे देवता मे नपुंसक वेद न कहे तो ११ मो भेद पिण न कहिणो। इहां सूत्र मे चौड़े कह्यो। जे उत्पत्ति समय पिण नपुंसक नही ते माटे अपर्याप्ता में ११ मो भेद न थी। अनें जे उत्पत्ति समय थी आगे आखा भव मे देवता में वे वेद कह्या छै। ते पाठ लिखिये छै।

पण्णत्ताएसु तहेव णवरं संखेज्जगा इत्थी वेदगा पण्णत्ता. एवं पुरिस वेदगावि. णपुंसग वेदगाणत्थि ।

(भगवती श० १३ उ० २)

प० पन्नवणा सूत्र ने विषे कह्यो त० तिमज जाणवो ण० एतलो विशेष स० सख्याता इ० स्त्री वेदिया पिण कह्या ए० इम पुरुष वेदिया पिण संख्याता कह्या. न० नपुंसक वेदिया न थी

अथ अठे असुरकुमार मे बीजा समय थी लेई नें आखा भव मे वे वेद कह्या। पिण नपुंसक वेद न पावे। तो जे नपुंसक रो ११ मो भेद देवता में किम पावे। जो देवता मे ३ जीव रा भेद कहे तो तिण रे लेखे वेद पिण ३ कहिणा। अनें जे वेद २ कहे नपुंसक वेद न कहे तो जीव रा भेद पिण दोय कहिणा। ११ मो भेद न कहिणो। तथा ५६३ जीव रा भेद कहे तिण मे पिण ७ नारकी रा १४ भेद कहे छै। जे पहिली नारकी मे जीव रा भेद ३ कहे तो तिण रे लेखे ७ नारकी रा १५ भेद कहिणा। वली १० भवन पति रा भेद २० कहे। अनें जे भवनपति में ३ भेद कहे तिण रे लेखे १० भवनपति रा २० भेद कहिणा। वासठिया मे तो नारकी

अनें देवता में ३ भेद कहे । अनें नव तत्व में ५६३ भेदां में नारकी में सर्व देवता में जीव रा भेद २ कहे । एहवो अजाणपणो जेहनें छै । तिण नें शुद्ध श्रद्धा आवणी परम दुर्लभ छै । जे सूक्ष्म एकेन्द्रिय रो अपर्याप्तो प्रथम जीव रो भेद ते पर्याय बंध्यां बीजो भेद हुवे । तीजो भेद पर्याय बंध्यां. चौथो हुवे । पांचमो भेद पर्याय बंध्यां छठो हुवे । सातमो भेद पर्याय बंध्यां आठमो हुवे । चतुरिन्द्रिय नों अपर्याप्तो नवमो भेद पर्याय बंध्यां दशमो हुवे । ११ मो भेद असन्नी पंचेन्द्रिय रो अपर्याप्तो पर्याय बंध्यां असन्नी पंचेन्द्रिय रो पर्याप्तो १२ मो भेद हुवे । पिण असन्नी रो अपर्याप्तो ११ मो भेद पर्याय बंध्यां चउदमो भेद सन्नी रो पर्याप्तो हुवे नहीं ए तो सन्नी रो अपर्याप्तो १३ मों भेद पर्याय बंध्यां १४ मो भेद सन्नी रो पर्याप्तो हुवे । इणन्याय नारकी. देवता मे असन्नी रो अपर्याप्तो ११ मों भेद नथी । ए तो १३ मो भेद छै ते पर्याय बंध्यां १४ मों होसी । ते माटे ए सन्नी रो अपर्याप्तो १३ मों भेद छै । पिण असन्नी रो अपर्याप्तो नहीं । जे अपर्याप्ता पणे तो असन्नी अनें पर्याय बंध्यां सन्नी हुवे । ए तो वात प्रत्यक्ष मिले नहीं । ए देवता में अने नारकी में असन्नी मरी जाय तेहनों नाम असन्नी छै । ते पिण विभङ्ग न पामे तेतला काल मात्र इज अवधि दर्शन सहित नेरइया अनें देवता नों नाम सन्नी छै । अनें अवधि दर्शन रहित नेरइया अनें देवता नो नाम असन्नी छै । ते संज्ञा मात्र असन्नी छै । पिण असन्नी रो भेद नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

इति जीवभेदाऽधिकारः ।

अथ आज्ञाऽधिकारः।

केतला एक अजाण जिन आज्ञा बाहिरे धर्म कहे। अनें आज्ञा माही पाप कहे। अनें साधु आहार करे, उपकरण राखे निद्रा लेवे, लघु नीति बड़ी नीति परठे, नदी उतरे, इत्यादिक कार्य जिन आज्ञा सहित करे तिण में पाप कहे। अनें कहे—साधु नदी उतरे तिहां जीव री घात हुवे ते माटे नदी उतरे तेहनों साधु नें पाप लागे छै। इम जीव री घात नों नाम लेइ जिन आज्ञा में पाप कहे। अनें भगवन्त तो कह्यो श्री वीतराग थी पिण जीव री घात हुवे पिण पाप लागे नहीं। ते पाठ लिखिये छै।

रायगिहे जाव एवं वयासी, अणगारस्स णं भंते! भावियप्पाणो पुरओ दुहओ मायाए पेहाए रीयं रीय माणस्स पायस्स अहे कुक्कड पोतेवा वट्टा पोतेवा कुलिंग च्छाएवा परियावज्जेवा तस्सणं भंते! किं इरिया वहिया किरिया कज्जइ· संपराइया किरिया कज्जइ· गोयमा! अणगारस्सणं भावियप्पणो जाव तस्सणं इरियावहिया किरिया कज्जइ· णो संपराइया किरिया कज्जइ· से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ जहा सत्तमसए संवुडुद्देसए जाव अट्ठो णिक्खत्तो। सेवं भंते! भंतेत्ति जाव विहरइ।

(भगवती श० १२ उ० ८)

रा० राजग्रही नगरी नें विषे जा० यावत् गोतम भगवान् नें इम कहे. अ० अणगार नें भगवन्! भा० भावितात्मा नें. पु० आगल. दु० ४ हाथ प्रमाणे भूमिका ने प० जोई नें. री०

गमन करतां नें प० पग नें हेठे कु० कुक्कुट ना न्हाना वालक अथवा अण्डा. व० वटेरा ना वालक अथवा अण्डा कु० कीड़ी अथवा कीडी ना अण्डा प० परितापना पावे तो त० तेहनें. भं० हे भगवन्! किं स्यूं. इ० इरियावहिको क्रिया उपजे सं० वा सम्पराय क्रिया उपजे. गो० हे गोतम! अ० अणगार नें भा० भावितात्मा नें जा० यावत्. त० तेहनें ई० ईरियावहिकी क्रिया उपजे णो० नहीं साम्परायिकी क्रिया. जा० यावत् क० उपजे से० ते. के० केणे अर्थे भं० हे भगवन्! ए० इम कहिइं ज० जिम सातमा शतक नें विषे स० सम्वृत ना उद्देश्या नें विषे. जा० यावत् अ० अर्थ कहिउ तिम जाणवो से० ते सत्य भ० भगवन्! भं० भगवान् जा० यावत् वि० विहरे छै

अथ इहां कह्यो—जे मान, माया, लोभ, विच्छेद गया ते साधु ईर्याई जोय चाले तेहने पग हेठे कुक्कुट ना अण्डा तथा वटेर पक्षी ना अण्डा तथा कीड़ी सरीखा जीव मरे तो तेहनें ईरियावहि की क्रिया लागे। सम्पराय न लागे। इहां ईर्याई चाले ते वीतराग ना पग थी जीव मरे तेहनें ईरियावहिया क्रिया ते पुण्य नी क्रिया लागती कही। ते वीतराग नी आज्ञाई चाले ते माटे पुण्य रूप क्रिया लागती कही। अनें साधु आज्ञा सहित नदी उतरे। तिण में पाप कहे जीव मुआ ते माटे। तो जे आज्ञा सहित चालतां पग ने हेठे कुक्कुटादिक ना अण्डादिक मुआ तेहनें पिण तिण रे लेखे पाप कहिणो। इहां पिण जीव मुआ छै। अनें जे इहां पाप नहीं तो नदी उतरे तिण में पिण पाप नहीं, श्री तीर्थङ्कर नी आज्ञा छै ते माटे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण।

तिवारें कोई कहे—ए वीतराग थी जीव मरे तेहनें पाप न लागे। पिण सरागी थी जीव मरे तेहनें पाप लागे इम कहे—तेहनों उत्तर—जो वीतराग पग थी जीव मुआ तेहने पाप न लागे तो वीतराग री आज्ञा सहित सरागी कार्य करतां जीव मुआ तेहनें पाप किम लागे। आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

समियंति मगणमाणस्स समियावा असमिया समिया होति उवेहाए आसमियंति मगणमाणस्स समियावा असमियावा असमिया होति उवेहाए।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ०५)

स० सम्यक् एहवो म० मानतो थको सं० शका रहित पणे जे भावना चित्त सू भावतो. स० सम्यग् वा अ० असम्यक् तो पिण तेहने नि शकपणो स० सम्यक् इज हुइ उ० आलोचो ने जिम ईर्या पथिक युक्त ने किवारे प्राणिया नी घात थाइ परं तेहने वाती न कहिवाइ. तिम इहां पिण जाणवो. तथा पहिलां अ० असम्यक् ए वचन असत्य एहवो माने तेहने स० सम्यक् तथा अ० असम्यक् छे तो पिण तेहने विपरीत उ० आलोचवे. अ० असम्यक् इज हो० हुइ एतावता जिम भावै तेहने तिमज सपजे-

अथ इहां इम कह्यो। सम्यक् प्रकारे मानता नें "समिया" कहितां सम्यक् छै. ते तथा "असमिया" कहितां असम्यक् छै। पिण सम्यक् पणे आलोची करतां ते असम्यक् पिण सम्यक् कहिइं। एतले-जिन आज्ञा सहित आलोची कार्य करता कोई विपरीत थयो ते पिण ते शुद्ध व्यवहार जाणी आचस्यो। ते माटे तेहनें शुद्ध कहिए। ते केहनी परे जिम ईर्या सहित साधु चालतां जीव हणाइ तो पिण तेहनें पाप न लागे। तिहां शीलाङ्काचार्य कृत टीका में पिण इम कह्यो। ते टीका लिखिये छै।

"समिय मित्यादि सम्यगित्येवं मन्यमानस्य शका विचिकित्सादि रहितस्य सत स्तद्वस्तु यत्नेन तथा रूपतयैव भावितं तत्सम्यग्वास्या दसम्यग्वास्यात्। तथापि तस्य तत्र तत्र सम्यक् प्रेक्षया पर्यालोचनया सम्यगेव भवती र्यापथोपयुक्तस्य कथंचित् प्राण्युपमर्दवत्"

अथ इहां कह्यो—सम्यक् जाणी करतां असम्यक् पिण सम्यक् हुवे। ईर्या-युक्त साधु थी जीव हणाइ पिण तेहनें पाप न लगे ते माटे सम्यक् कहिइं। अनें असम्यक् जाणो करे तेहनें असम्यक् तथा सम्यक् पिण असम्यक् हुवे। जे जोयां

विना चाले अनें एक पिण जीव न हणाई तो पिण ६ काय नों घाती आज्ञा लोपी ते माटे कहीजे। अनें आज्ञा सहित चालतां साधु थी जीव मरे तो पिण तेहनें पाप न लागे। एहवूं कह्यूं। ते माटे सरागी साधु नें पिण आज्ञा सहित कार्य करतां जीव घात रो पाप न लागे तो आज्ञा सहित नदी उतर्यां पाप किम लागे। तिवारे कोई कहे नदी उतरवा नी आज्ञा किहां दीधी छै। जे १ मास में ३ माया ना स्थान सेव्यां सबलो-दोष कह्यो तो दोय सेव्यां थोड़ो दोष तो लागे। तिम १ मास में ३ नदी ना लेप लगायां सबलो-दोष कह्यो छै। तो दोय नदी ना लेप लगायां थोड़ो दोष छै, पिण धर्म नहीं। एहवो कुहेतु लगावी नदी उतर्यां दोष कहे। तेहनों उत्तर—जे २१ सबलां दोषां में कह्यो--३ लेप ते नाभि प्रमाण पाणी एहवो १ मासमें ३ लेप लगायां सबलो दोष कह्यो। जे नाभि प्रमाण एहवो मोटी नदी एक मासमें एक हीज उतरवी कल्पे छै। ते माटे एहवी मोटी नदी बे उतर्यां थोड़ो दोष, अनें ३ उतर्यां सबलो दोष छै। ए नाभि प्रमाण पाणी तेहनें लेप कहिए। ते नदी एक मास में १ कल्पे, गोड़ा प्रमाणे २ कल्पे, अर्ध जङ्घा ते पिण्डी प्रमाण पाणी हुवे ते नदी १ मास में ३ कल्पे। अनें नाभि प्रमाण लेप नदी एक मास में ३ उतर्यां सबलो दोष छै। ते एक मास में एकहिज कल्पे, ते माटे दोय नों थोड़ो दोष छै। ठाणाङ्ग ठा० ५ उ० २ एक मास में घणो पाणी एहवी ५ मोटी नदी बे वार ३ वार उतरवी वर्जी। पिण एक वार उतरवी वर्जी नथी। ते मोटी नदी एक मास में मायादिके करी तथा जङ्घादिके करी १ वार उतरवी कल्पे। पिण बे वार न कल्पे ते बे वार रो थोड़ो दोष अनें जे १ वार उतरवी १ मास में ते नदी ३ वार उतर्यां सबलो दोष लागे। ते पाठ लिखिये छै।

अन्तो मासस्स तओ उदग लेव करेमाणे सबले ।

(दशाश्रुतस्कंध, अ० २)

अ० एक मास माहे. त० तीन उ० पाणी ना लेप लगावे. लेप ते नाभि प्रमाण जल अवगाहे ते लेप कहिए मवसो सबलो दोष कह्यो

अथ इहां १ मास में ३ उदक लेप कह्या। ते उदक लेप नों अर्थ नाभि प्रमाणे जल अवगाहे ते लेप कहिये। एहवो अर्थ कियो छै। तथा ठाणाङ्ग ठाणे ५

इहां बे वार उतरवी वर्जी। पिण एक वार न वर्जी। ए नाभि प्रमाण किम जाणिइं। "संतरित्तएत्रा" कहिता वांहि तथा जंघादिके करीने न उतरवी कही। ते माटे ए नाभिप्रमाण छै। तथा घणों पाणी छै ते माटे नावाइं करी कही। बे वार वर्जी ते माटे नाभि प्रमाण तथा नावा पिण एक मासमें एक वार उतरवी कल्पै। अनें अर्ध जङ्घा पींडी प्रमाण कुञ्जला नगरी समीपे एरावती नदी वहै ते सरीखी नदी तिहाँ एक पग जल नें विषे एक पग थल ते आकाश नें विषे इम एक मासमें बे वार त्रिण वार उतरवी। "संतरितएवा" कहितां वार वार उतरवी कल्पे इहां अर्द्ध जङ्घा पिण्डी प्रमाण नदी १ मास में ३ वार उतरवी कही। ए नदी उतरवा नी श्री तीर्थङ्करे आज्ञा दीधी ते माटे जिन आज्ञा में पाप नहीं। अनें नदी उतरे तिण में पाप हुवे तो आज्ञा देवा वालाँ ने पिण पाप हुवे। अनें जो आज्ञा देणवालां नें पाप नहीं तो उतरणवाला नें पिण पाप नहीं। मुई तो साधु ने जिन आज्ञा पालवी। किणहिक कार्य में जीव री घात छै पिण ते कार्य री जिण आज्ञा छै तिहां पाप नहीं। किणहिक कार्य में जीव री घात नहीं पिण तिण कार्य में जिन आज्ञा नहीं ते माटे तिहा पाप छै। तिम नदी उतरवा में जिन आज्ञा छै ते माटे पाप नहीं। तिवारे कोई कहे। जो नदी उतरवां पाप न हुवे तो प्रायश्चित्त क्यूं लेवे। तेहनों उत्तर—ए प्रायश्चित्त लेवे ते नदी उतरवा रा कार्य रो नहीं छै। जिम भगवन्ते कह्यो। 'एग पायं जले किच्चा" "एग पायं थले किच्चा" इम उतरणी आयो नहीं हुवे, कदाचित् उपयोग में खामी पड़ी हुवे ते अजाण पणा रूप दोष रो प्रायश्चित्त इरिया वहिरी थाप छै। जो इरिया सुमति में विशेष खामी जाणे तो बेलो तथा तेलो पिण लेवे, ए तो खामी रो प्रायश्चित्त छै पिण नदी रा कार्य रो प्रायश्चित्त नहीं। जिम गोचरी जाय पाछो आय साधु इरियावहि गुणे, दिशा जाय पाछो आय नें इरियावहि गुणे, पडिलेहन करी नें इरियावहि गुणे. पिण ते गोचरी दिशा. पडिलेहण रा कार्य रो प्रायश्चित्त नहीं। ए प्रायश्चित्त तो कार्य करतां कोई आज्ञा उलङ्घ ने अजाण पणे दोष लागो हुवे तेहनों छै। जिम भगवान् कह्यो तिम करणी न आयो हुवे ते खामी नी इरियावहि छै। पिण ते कार्य रो प्राश्चयत्ति

नहीं तिम नदी रा कार्य रो प्रायश्चित्त नहीं । ए तो भगवान् कह्यो ते रीति उतरणी न आयो हुवे ते स्वामी रो प्रायश्चित्त छै। आगे अनन्ता साधु नदी उतरतां मोक्ष गया छै। जो पाप लागे तो मोक्ष किम जाय। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोलसंपूर्ण ।

वली कोई कहे—जिहां जीव री घात छै तिहां जिन आज्ञा नहीं ते मृषा-वादी छै। ए तो प्रत्यक्ष नदी में जीव घात छै, तिहां भगवन्त आज्ञा दीधी छै। ते पाठ लिखिये छै।

से भिक्खू वा (२) गामा णुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से जंघा संतारिमे उदए सिया से पुव्वामेव से सीसोवरियं कायं पादेय पमज्जेज्जा से पुव्वामेव पमज्जेत्ता एगं पायं जले किच्चा. एगं पायं थले किच्चा तओ संजया मेव जंघा संतारिमे उदए आहारियं रियेज्जा ॥ ९ ॥ से भिक्खू वा (२) जंघा संतारिमे उदगे आहारियं रीयमाणे णो हत्थेण वा हत्थं, पादेण वापादं, काएण वा कायं, आसाएज्जा से अणासा-दए अणासादमाणे. तओ संजया मेव जंघा संतारिमे उदए आहारियं रियेज्जा ॥ १० ॥

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० ३ उ० २

से० ते. भि० साधु साध्वी. गा० ग्रामानुग्राम प्रते. दु० विहार करतां थकां इम जायाँ वि० विचाले. ज० जङ्घा सन्तारिम. उ० पाणी छै. से० साधु. प० पहिलां. स० मस्तक का० शरीर पा० पग लगे शरीर. नें. पु० पहिलां. प० प्रमार्जी नें. जा० यावत् ए० एक पग जले करी ए० एक पग स्थले करी एतावता चालतां जिम पाणी डुहलाइ नहीं तिम चालवो. त० तिवारे पछे. सं० जयणा सहित ज० जंघा सन्तारिम. उ० उदक नें विषे. श्री जगन्नाथे जिम ईर्याँ कही

तिम रीति चाले ॥६॥ हिवे वली विशेष कहे छै. से० ते सा० साधु साध्वी. ज० जङ्घा प्रमाण उतरवो उ० उदक पाणी. आ० जिम श्री जगन्नाथे ईर्या कही छै तिम चालतो थको. णो० नहीं हाथ सू ह० हाथ. प० पग सू पग. का० काया सू काया. अ० अङ्गोपाङ्ग महोमाहो अण फरसतो थको. त० तिवारे पछे स० जयणा सहित. ज० जंघा प्रमाण उतरे. उ० उदक ने विषे. आ० जिम जगन्नाथे ईर्या कही तिम चाले

अथ इहां पिण काया, पग, नें पूंजी एक पग जल में एक स्थले में पग ते ऊंचो उपाड़ी इम जङ्घा ते पिण्डी प्रमाण नदी उतरवी कही। इहा तो प्रत्यक्ष नदी उतरवा री आज्ञा दीधी छै। इहां नावा नों घणो विस्तार कह्यो छै। ते नावा नी पिण आज्ञा दीधी छे। तो जिन आज्ञा में पाप किम कहिये। इहां नदी तथा नावा उतरतां जीव री घात हुवे, पिण जिन आज्ञा छै ते माटे पाप नही। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

वली अनेक ठामे जीव री घात छै ते कार्य री जिन आज्ञा छै, तिहां पाप नहीं। ते पाठ लिखिये छै।

निग्गंथे निग्गंथी सेयंसिवा पंकंसिवा पणगंसिवा उदयंसिवा ओक समाणिवा ओवुब्भ माणिंवा गेरहमाणे वा अवलंबमाणेवा नाइक्कमइ ॥ १० ॥

(बृहत्कल्प उ० ६)

नि० साधु. नि० साध्वी ने से० पाणी सहित जे कादो तिहां वूडती प० जल रहित कादा ने विषे वूडतो प० अनेरा ठाम नों कादो आव्यो पातलो ते ढीलो अथवा नीलण फूलण उ० नदी प्रमुख ना पाणी माहि. उ० उदक पाणी माहि ते पाणीये करी ताणीजती थकी ने. गि० ग्रहतां थकां पूर्ववत् आ० आधार देतां थकां ना० आज्ञा अतिक्रमे नहीं.

अथ अठे कह्यो—साध्वी पाणी में डूबती नें साधु वाहिरे काढे तो आज्ञा उल्लंघे नहीं । जे पाणी में डूवती साध्वी नें पिण साधु वाहिरे काढे तेहमें एक तो पाणी ना जीव मरे. बीजो साध्वी रो पिण संघटो. ए बिहूं में जिन आज्ञा छै ते माटे तिण में पाप नहीं । ए तिम नदी उतरे तिहां जीव री घात छै, पिण जिन आज्ञा छै ते माटे पाप नहीं । अनें जे नदी में पाप कहे तिण रे लेखे नदी में डूबती साध्वी नें पाणी माहि थी वाहिरे काढे तिण में पिण पाप कहिणो । अनें साध्वी पाणी माहि थी वाहिरे काढ्यां पाप नहीं तो नदी उतर्यां पिण पाप नहीं छै । अनें पाणी माहि थी साध्वी नें वाहिरे काढे अनें नदी उतरे. ए बिहूं ठिकाने जीव नी घात छै, अनें बिहूं ठिकाणे जिन आज्ञा छै । ते माटे बिहूं ठिकाणे पाप नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली बृहत्कल्प उ० १ कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

नो कप्पइ निग्गंथस्स एगाणियस्स राओवा वियाले वा वहिया वियार भूमिं वा विहार भूमिं वा निक्खमित्तएवा पविसित्तए वा कप्पइ से अप्पविइयस्स वा अप्प तईयस्स वा राओवा वियाले वा वहिया वियाद भूमिं वा विहार भूमिं वा निक्खमित्तए वा । पविसित्तए वा ॥ ४७ ॥

(बृहत्कल्प उ० १)

नो० न कल्पे नि० निर्ग्रन्थ साधु नें. ए० एकलो उठवो जायवो. रा० रात्रि नें विषे व० वाहिर वि० स्थण्डिल भूमिका ने विषे. वि० स्वाध्याय भूमिका ने विषे नि० स्थानक थी वाहर निकलवो स्वाध्याय प्रमुख करवा प० पेसवो. क० कल्पे से० ते साधु ने अ० पोता सहित बीजो. अ० पोता सहित तीजो. रा० रात्रि ने विषे वि० सन्ध्या ने विषे

व० बाहिर वि० स्थंडिले जाइवो वि० स्वाध्याय करिवा नी भूमिका नें विषे जायवो पा० पेसवो.

अथ अठे पिण कह्यो—रात्रि तथा विकाले “विकाल ते सन्ध्यादिक केतलीक वेला ताई विकाल कहिइं) न कल्पे एकला साधु नें स्थानक बाहिरे दिशा जाइवो तथा स्थानक बाहिरे स्वाध्याय करवा जाइवो। अनें आप सहित बे जणा नें तथा तीन जणा नें स्थानक बाहिरे दिशा जाइ वो तथा स्वाध्याय करवा जायवो कल्पे। इहां पिण रात्रि नें विषे स्थानक बाहिरे दिशा जावा री तथा स्वाध्यायकरवारी आज्ञा दीधी। तिहां रात्रिमें अपकाय वर्षे ते माटे इहां पिण जीव री घात छै। जो नदी उतस्यां जीव मरे तिण रो पाप कहै तो रात्रिमें स्थानक बाहिरे दिशा जावे तथा स्वाध्याय करवा जावे तिहां पिण तिण रे लेखे पाप कहिणो। अनें रात्रिमें दिशा जाय तथा स्वाध्याय करवा जाय तिहां पाप नहीं तो नदी उतस्यां पिण पाप नहीं। तथा स्थानक बाहिरे दिशा जाय तथा स्वाध्याय करवा जाय ए बिहूं ठिकाणे जीव री घात छै अनें बिहूं ठिकाणे जिन आज्ञा छै। जो इण कार्य में पाप हुवे तो उदेरी नें स्वाध्याय करवा क्यूं जाय, पिण इहां जिन आज्ञा छै ते माटे पाप नहीं। तिम नदी उतस्या पिण पाप नहीं। जो वीतराग री आज्ञा में पाप हुवे तो किण री आज्ञा में धर्म हुवे। अनें जे कार्य में पाप हुवे तिण री केवली आज्ञा किम देवे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण।

इति आज्ञाऽधिकारः।



अथ शीतल-आहाराऽधिकारः ।

केतला एक कहे—वासी ठण्डा आहार में द्वीन्द्रिय जीव छै। इम कहे ते सूत्र ना अजाण छै। अनें भगवन्त तो ठाम २ सूत्र में ठण्डो आहार लेणो कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

पंताणि चेव सेवेज्जा सीय पिण्डं पुराण कुम्मासं ।
अदुवक्कसं पुलागं वा जवणट्ठाए निसेवए मंथुं ॥१२॥

(उत्तराध्ययन अ० ८ गा० १२)

प० निरस असनादिक. से० भोगवे सी० शीतल पिण्ड. आ० आहार घणावर्ष नू जूनों धान कु० अभ्यन्तर नीरस. उडद. अ० अथवा. व० मूग उडदादिक. पु० असार वालचणादिक. ज० शरीर नें निर्वाह थावा ने अर्थे नि० भोगवे. म० बोरनू चूर्ण.

अथ इहां पिण शीतल ठण्डो आहार लेणो कह्यो। जे ठण्डा आहार में द्वीन्द्रिय जीव हुवे तो भगवान् ठण्डा आहार भोगवण री आज्ञा क्यूं दीधी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली आचाराङ्ग में कह्यो—ते पाठ लिखिये छै।

अविसूइयं वा सुक्कंवा सीय पिंडं पुराण कुम्मासं ।
अदु वुक्सं पुलागं लद्धे पिंडे अलद्धए दविए ॥१३॥

(आचाराङ्ग श्रु० १ १ अ० ६ उ० ४)

अ० ढीलो मुव्य सु० लाखरा सरीखो सूखो सी० शीतल पि० आहार पु० जूना घणा दिवसना नीपना कु० उड़दां नू भात अ० अथवा. वु० जूना धान नों पु० चयणा नू धान लाधे थके पि० आहार. अ० अणलाधे थके. रागद्वेष रहित. द० एहवो थको. मुक्ति गामी थाय.

अथ इहां पिण भगवन्त ओल्यो (ठण्डो आहार विशेष) लीधो कह्यो । वली शीतल पिण्ड ते वासी आहार पिण भगवान् लीधो एहवो कह्यो । तिहां टीका में पिण "सीयपिण्ड" ए पाठ नों अर्थ वासी भात कह्यो । तिहां टीका लिखिये छै ।

"शीत पिंड वा पर्युषित भक्तंवा तथा पुराण कुल्मापं वा बहुदिवस सिद्ध स्थित कुल्मापंवा"

इहाँ टीका में पिण कह्यो—शीतल पिण्ड ते रात्रि नों रह्यो वासी भात, तथा पुराणा उड़द नो भात, तथा घणा दिवस ना नीपना उड़द नों भात भगवान् लीधो, ते माटे ठण्डा वासी आहार में जीव नही । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

तथा अनुत्तरोवाई में कह्यो—धन्ने अणगार एहवो अभिग्रह धास्यो, ते पाठ लिखिये छै ।

तएणं से धरणे अणगारे जंचेव दिवसे मुंडे भवित्ता जाव पव्वइयाए तं चेव दिवसेणं समणं भगवं महावीरं वंदइ नमं-

सइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासो एवं खलु इच्छामिणं भंते! तुब्भेहिं अब्भगुणाए समाणे जाव जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अणिखित्तेणं आयंबिल परिगहिएणं तवो कम्मेणं अप्पाणं भाव माणस्स विहरित्तए छट्ठस्स वियणं पारणयंसि कप्पइ, से आयंबिलस्स पडिगाहित्तए णो चेवणं अणायं बिलेतं पिय संसट्ठं णो चेवणं असंसट्ठं तं पिय णं उब्भिय धम्मियणो चेवणं अणुज्भिय धम्मियं तं पिययणं अणे वहवे समण. माहण. अतिथी. किवण वणी मग्ग नाव कंखंति अहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंधं करेह।

(अनुत्तर उवाई)

त० तिवारे. से० ते. ध० धन्नो अणगार. जे० जि० जिन दिन मुंडितहुवो प० दीक्षा दीधी तिण हो, स० श्रमण भगवान् महावीर नें. व० वांदे नमस्कार करीने. ए० इम बोल्यो ए० इम निश्चय इ० माहरी इच्छा छै. भ० हे भगवन्! तु० तुम्हारी. अ० आज्ञा हुइ थके. जा० यावत् जीव लगे. छ० वेले २ पारणो. अ० आंतरा रहित. आ० आंबलिक रू प० एहवो अभिग्रहो करी नें. त० तप कर्म ते १२ भेदे तिण सू अ० आपणी आत्मा नें भा० भावतो थको विचरू छ० जिवारे वेला रो. पा० पारणो आवे तिवारे. क० कल्पे म० मुझ नें. आ० आंबिल योग्य ओदनादिक प० एहवो अभिग्रह करू णो० नहीं. 'चे० निश्चय करी नें. आ० आंबिल योग्य ओदनादिक न हुइ ते न लेउ त० ते पिण स० खरड्या हस्तादिक लेस्यू णो० नहीं चे० निश्चय करी नें अ० अण खरड्यो न लेस्यू. त० ते पिण उ० नाखीतो आहार लेस्यू ध० स्वभाव छै. णो० नहीं चे० निश्चय करी नें. अ० अणनाखीतो आहार न लेस्यू ध० स्वभावे त० ते पिण अ० अनेरा. ब० घणा. स० श्रमण शाक्यादिक. मा० ब्राह्मणादिक. अ० अतिथि. कि० कृपण दरिद्री व० वणीमग रांक ते न वांछे तं लेस्यू (भगवान् बोल्या) आ० जिम तुम्हा नें सुख हुइ तिम करो दे० हे देवानुप्रिय. मा० ए तप करवा नें विषे ढील मत करो

अथ अठे धन्ने अणगार अभिग्रह लियो वेले २ पारणे आंबिल खरड्ये हाथे लेणो, ते पिण नाखीतो आहार वणीमग भिख्यारी बांछे नहि तेहवो आहार लेणो

कह्यो। ते तो अत्यन्त नीरस ठण्डो स्वाद रहित. वणीमग रांक वांछे नहिं ते लेणो कह्यो। अनें ठण्डा में जीव हुवे तो किम लेवे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

तथा प्रश्न व्याकरण अ० १० में कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

पुणरवि जिब्भिंदिएण साइयरसाइं अमणुण्ण पावगाइं किंते अरस विरस सीय लुक्ख निजप्प पाण भोयणाइं दोसीय वावण्ण कुहिय पूहिय अमणूण्ण विणट्ठ सुय २ बहु दुब्भिगंधाइं त्तित्तकडुअ कसाय अंबिल रस लिंद नी रसाइं अण्णेसुय एव माइएसु अमणुण्ण पावएसु तेसु समणेण रूसियव्वं जाव चरेज्ज धम्मं ॥ १८ ॥

(प्रश्नव्याकरण अ० १०)

उ० वली जि० जिह्वा इन्द्रिये करी. सा० अस्वादीय रस अ० अमनोज्ञ पा० पाडुआरस अस्वादो चारित्रया नें द्वेष न आणिवो. कि० ते केहवो अ० गुललवणादिक लूखौ घोपर रहित. रस रहित वि० पुराना भावे करी विगतरस सी० ताढ़ा जेह थकी शरीर नी याप नी न थाइ एतावता निर्वल रस. भोजन तथा एहवा पाणी नें दो० वासी अन्नादिक. व० वनिष्ट क० कह्यो पु० अपवित्र अत्यन्त कुह्यो अ० अमनोज्ञ. वि० विणठारस व० घणा दु० दुर्गन्ध ति० नीव सरीखो क० सूठ मिरच सरीखो. क० कषायलो बहेड़ा सरीखो अ० अंबिल रस तक्र सरीखो. लि० शेवाल सरीखो नी० पुरातन पाणी सरीखो. नीरस रस सहित. एहवो रस आस्वाद द्वेष न आणिवो अ० अनेरा. इत्यादिक रसने विषे अ० अमनोज्ञ पा० पाडुआ. तेहने विषे. रु० रिसवो नहीं जा० इत्यादिक पूर्ववत्. चे० धर्म चारित्र लक्षण रूप निरतिचार प०चे, चौथी भावना कही

अथ अठे पिण शीतल आहार लेणो कह्यो। वली "दोसीण" कहितां वासी अन्नादिक बावण कहितां विमष्ट कह्यो अत्यन्त अमनोज्ञ विणठो रस एहवो आहार भोगवी चारित्रिया नें द्वेष न आणवो कह्यो। ते माटे ठण्डा आहार में विणस्यां पुद्गल कहीजे। पिण जीव न कहीजे। जे किणहिक काल में ठण्डो आहार नीलण फूलण सहित देखे ते तो लेवो नहीं। तथा उन्हाला में १२ मुहूर्त्त नी रात्रि अनें १८ मुहूर्त्त नों दिन हुवे जो सन्ध्या नी कीधी रोटी प्रभाते न लेवे वासी में जीव श्रद्धे ते माटे। तो तिण में बीचमें मुहूर्त्त १२ बीत्यां जीव श्रद्धे तो जे प्रभात री कीधी रोटी ते आथण रा किम लेवी। तिण बीच में तो १७-१८ मुहूर्त्त बीत्यां तिण में जीव उपना क्यूं न श्रद्धे। अनें रात्रि में जीव उपजे दिन में जीव न उपजे, एहवो तो सूत्र में चाल्यो नहीं। अनें जे प्रभात री कीधी रोटी में आथण रा जीव श्रद्धे न कहे तो सन्ध्या नी कीधी रोटी में पिण प्रभाते जीव न कहिणा। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

इति शीतल-आहाराऽधिकारः।



अथ सूत्रपठनाऽधिकारः।



केतला एक कहे—गृहस्थ सूत्र भणे तेहनी जिन आज्ञा छै। ते सूत्र ना अजाण छै अनें भगवन्त नी आज्ञा तो साधु नें इज छै। पिण सूत्र भणवा री गृहस्थ नें आज्ञा दीधी न थी। जे प्रश्न व्याकरण अ० ७ कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

महारिसीणय समयप्प दिरणं देविंद नरिंद भायियत्थ।

(प्रश्न व्याकरण अ० ७)

म० महर्षि उत्तम साधु तेहनें स० संयम भणिये सिद्धान्त तेणे करी. प० दीधो श्री वीतरागे दीधो सिद्धान्त साधु होज भणी सत्य वचन जाणे भाषे एणे अक्षरे इम जाणिये श्री वीतराग नी आज्ञाइ सिद्धान्त भणिवो साधु होज ने छै वीजा गृहस्थ ने दीधां इम न कह्यां। ते भणी वली गीतार्थ कहे ते प्रमाण दे० देव सौधर्म इन्द्रादि न० नरेन्द्र राजादिक तेहनें. भा० भाष्या प० परूप्या अर्थ जेहना एतावता नरेन्द्र देवेन्द्रादिक सिद्धान्तार्थ सांभली सत्य वचन जाणे.

अथ इहां कह्यो—उत्तम महर्षि साधु नें इज सूत्र भणवा री आज्ञा दीधी। ते साधु सिद्धान्त भणी नें सत्य वचन जाणे भाषे। अनें देवेन्द्र नरेन्द्रादिक नें भाष्या अर्थ ते साभली सत्य वचन जाणे। ए तो प्रत्यक्ष साधु नें इज सूत्र भणवा री आज्ञा कही। पिण गृहस्थ नें सूत्र भणवा री आज्ञा नहीं। ते माटे श्रावक सूत्र भणे ते आप रे छांदे पिण जिन आज्ञा नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण।

तथा व्यवहार उद्देश्य १० जे साधु सूत्र भणे तेहनी पिण मर्यादा कही छै। ते पाठ लिखिये छै।

तिवास परियाए समणस्स निग्गंथस्स कप्पति आयार कप्पे नामं अज्झयणे उद्दिसित्तए वा चउवास परियाए समण णिग्गंथस्स कप्पति सुयगड णामं अंगं उद्दिसित्तए वा। पंचवास परियायस्स समणस्स निग्गंथस्स कप्पति दसाकप्प-ववहार नामं अज्झयणे उद्दिसित्तएवा। अट्ठवास परियागस्स समणस्स निग्गंथस्स कप्पति ठाण समवाए णामं अङ्ग उद्दि-सित्तए। दसवास परियागस्स समणस्स णिग्गंथस्स कप्पति विवाहे नाम अंगे उद्दिसित्तए।

(व्यवहार-१० उ०)

ति० ३ वर्ष नी प्रव्रज्या ना धणी ने. स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थने आ० आचार. कल्प. नाम अ० अध्ययन. उ० भणवो च० ४ वर्ष नी प्रव्रज्या ना धणी ने स० श्रमण. नि० निर्ग्रन्थ ने स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ ने क० कल्पे सु० सूयगडाङ्ग उ० भणवो प० ५ वर्ष नी प्रव्रज्या ना धणी नें. स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ ने द० दशाश्रुत स्कन्ध व० बृहत्कल्प व० व्यवहार नामे अध्ययन उ० भणवो. अ० आठ वर्ष नी प्रव्रज्या ना धणी ने स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ ने क० कल्पे ठा० ठाणांग अने . समवायाङ्ग. उ० भणवो १० वर्ष नी प्रव्रज्या ना धणी ने स० श्रमण. नि० निर्ग्रन्थ ने क० कल्पे वि० विवाह पण्णत्ति नाम अंग. उ० भणवो.

अथ अठे कह्यो—तीन वर्ष दीक्षा लियां नें थया ते साधु नें आचार. कल्प ते निशीथ. सूत्र भणवो कल्पे। च्यार वर्ष दीक्षा लियां साधु ने कल्पे सूय-गडाङ्ग भणिवो। ५ वर्ष दीक्षा लियां साधु नें कल्पे दशाश्रुतस्कंध. बृहत्कल्प. अने ववहार सूत्र भणवो। अनें आठ वर्ष दीक्षा लियां साधु नें कल्पे ठाणाङ्ग सम-वायाङ्ग भणवो। १० वर्ष दीक्षा लिया साधु नें कल्पे भगवती सूत्र भणिवो। ए साधु नें पिण मर्यादा सूत्र भणवा री कही। जे ३ वर्ष दीक्षा लियां पछे निशीथ

सूत्र भणवो कल्पे। अनें ३ वर्ष दीक्षा लियां पहिलां तो साधु नें पिण निशीथ सूत्र भणवो न कल्पे। अनें ३ वर्ष पहिलां साधु निशीथ सूत्र भणे तेहनी जिन आज्ञा नहीं। तो गृहस्थ सूत्र भणे तेहनी आज्ञा किम देवे। जे ३ वर्षां पहिलां साधु सूत्र भणे ते पिण आज्ञा बाहिरे छै तो जे गृहस्थ सूत्र भणे ते तो प्रत्यक्ष बाहिरे छै। जे श्रावक निशीथ आदि दे सूत्र भणे ते जिन आज्ञा में छै तो जे साधु ने ३ वर्षां पहिलां निशीथ भणवा री आज्ञा क्यूं न दीधी। अनें साधु नें पिण ३ वर्ष पहिलां आज्ञा न देवे तो श्रावक सूत्र भणे तेहने आज्ञा किम देवे। ए तो प्रत्यक्ष श्रावक कालिक उत्कालिक सूत्र भणे ते आज्ञा बाहिरे छै। पोता ने छांदे भणे छै तेहमें धर्म नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण।

तथा निशीथ उ० १६ कह्यो—ते पाठ लिखिये छै।

जे भिक्खू अण्ण उत्थियंवा गारत्थियं वा वायतिवायं तं वा साइज्जइ॥ २७॥

(निशीथ उ० १६)

जे० जे कोई साधु साध्वी अ० अन्यतीर्थी नें. गा० गृहस्थ ने. वा० वाचणी दे. वा० वाचणी देता ने अनुमोदे तौ पूर्ववत् प्रायश्चित्त कह्यो.

अथ इहां कह्यो—अन्यतीर्थी नें तथा गृहस्थ नें साधु वाचणी देवे तथा वाचणी देता नें अनुमोदे तो प्रायश्चित्त आवे। ते माटे साधु वाचणी देवे नहीं वाचणी देता ने अनुमोदे नहीं तो गृहस्थ सूत्र भणे तेहनें धर्म किम हुवे। जे श्रावक नें सूत्र नी वाचणी देता नें साधु अनुमोदना करे तो पिण चौमासी-दण्ड आवे तो

गृहस्थ आचरे मते सूत्र नी वांचणी मांहो माहि देवे तेह में धर्म किम हुवे हुवे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण ।

वली तिण हीज ठामे निशीथ उ० १६ कह्यो—ते पाठ लिखिये छै।

जे भिक्खू आयरिय उवज्झाएहिं अविदिन्नं गिरं आइयइ आइयंतं वा साइज्जइ. ॥ २६ ॥

(निशीथ उ० १६)

जे० जे कोई साधु. साध्वी आ० आचार्य. उ० उपाध्याय नी अ० अणदीधो गि० वाणी आ० आचरे भणे वांचे. आ० आचरतां नें वांचता नें अनुमोदे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त

अथ अठे इम कह्यो—जे आचार्य उपाध्याय नी अण दीधो वाचणी आचरे तथा आचरतानें अनुमोदे तो चौमासी दंड आवे। ते गृहस्थ आपरे मते सूत्र भणे ते तो आचार्य री अण दीधी वाचणी छै। तेहनी अनुमोदना कियां चौमासी दंड आवे तो जे अणदीधां वाचणी गृहस्थ आचरे तेहनें धर्म किम कहिये। श्रावक सूत्र भणे तेहनी अनुमोदना करण वाला नें धर्म नहिं तो श्रावक सूत्र भणे तेहनें धर्म किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

तथा ठाणाङ्ग ठाणे ३ उ० ४ कह्यो—ते लिखिये छै।

तउ अवायणिज्जा प० तं०—अविणीए विगइ पडिवद्धे अविओ सियपा हुडे।

(ठाणांग ठा० ३ उ० ४)

त० त्रिण प्रकारे वाचना नें अयोग्य प० परूप्या त० ते कहे छै अ० सूत्रार्थना देणहार नें वदना न करे ते अविनीत वि० घृतादिक रस नें विषे गृद्ध अ० क्रोध जेणे उपशमाव्यो नथी. खमावी नें वली २ उदेरे

इहां कह्यो— ए ३ वांचणी देवा योग्य नहीं। अविनीत १ विघे ना लोलुपी २ क्रोधी खमावी वली २ उदेरे ३ ए तीन साधु नें पिण वाचणी देणी नहीं तो गृहस्थ तो क्रोधी, मानी, पिण हुवे अविनीत पिण हुवे। विघै नों गृध्र ज्यो आदिक नों गृध्र पिण हुवे। ते माटे श्रावक नें वाचणी देणी नहीं। अनें साधा री आज्ञा विना कोई गृहस्थ सूत्र वांचे तो पोता नो छांदो छै। तेहनें साधु अनुमोदे पिण नहीं, तो गृहस्थ सूत्र वांचे तेहनें धर्म किम हुवे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

तथा उवाई प्रश्न २० श्रावकां रे अधिकारे पहुवो कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

निग्गंथे पावयणे निस्संकिया णिक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंज पेमाणु रागरत्ता॥ ६७॥

(उवाई प्रश्न २०)

नि० निग्रंथ श्री भगवन्त नों भाष्यो. पा० श्री जिन धर्म जिन शासन ना भाव भेद नें विषे, वि० शंका रहित. नि० निरन्तर अतिशय स कांक्षा अनेरा धर्म नी वांछा रहित. णि० नि-

रन्तर अतिशय सू तिगिच्छा धर्म ना फल नों संदेह तिणे रहित. ल० लाधा छै सूत्र ना अर्थ वार वार सांभलवा थकी ग० ग्रहया बुद्धिइं ग्रह्या छै मन नें विषे धारया छै पु० पूछ्या छं अर्थ संशय ऊपने. वार २ पूछवा थकी. अ० वार २ पूछयां थकां अतिशय सू पाम्या अर्थ निर्णय करी धारया अ० जेहनी अस्थि मींजी पिण प्रेमानुराग रक्त छै धर्म नें विषे.

अथ इहां कह्यो—अर्थ लाधा छै, अर्थ ग्रह्या छै. अर्थ पूछया छै अर्थ जाण्या छै, इहां श्रावकां नें अर्थां रा जाण कह्या। पिण इम न कह्यो "लद्धासुत्ता" जे लाधा भण्या छै सूत्र इम न कह्यो ते माटे सिद्धान्त भणवा नी आज्ञा साधु नें इज छै। पिण श्रावक नें नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली सूयगडाङ्ग में श्रावकां रे अधिकारे पहवो कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

इणमेव निग्गंथे पावयणे निस्संकिया णिक्कंखिया निव्वितिगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा अट्ठिमिंज पेमाणुरागरत्ता ।

(सूयगडांग अ० १८)

इ० एह० नि० निर्ग्रन्थ श्री भगवन्त नों भाख्यो. पा० श्री जिन धर्म जिन शासन ना भात्र भेद ने विषे. नि० शंका रहित णि० निरन्तर अतिशय सू कांक्षा अनेरा धर्म नी वांछा रहित. णि० निरन्तर अतिशय सू तिगिच्छा धर्म ना फल नों संदेह तिणे रहित. ल० लाधा छै सूत्र ना अर्थ वार वार सांभलवा थकी. ग० ग्रहया बुद्धिइ ग्रह्या छै. मन ने विषे धारया छै पु० पूछ्या छै अर्थ संशय ऊपने. वार २ पूछवा थकी अ० वार २ पूछयां थकां अतिशय सू पाम्या अर्थ निर्णय करी धारया. अ० जेहनी अस्थि मींजी पिण प्रेमानुराग रक्त छै. धर्म नें विषे.

इहां पिण निर्ग्रन्थ ना प्रवचन ने सिद्धान्त कह्या । जे सिद्धान्त भणवारी आज्ञा साधु नें इज छै । ते माटे निर्ग्रन्थ ना प्रवचन कह्या । सग्रन्थ ना प्रवचन न कह्या । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ७ बोल सम्पूर्ण

तथा सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ११ में कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

आयगुत्ते सयादंते छिन्न सोए अणासवे ।
ते धम्म सुधम्मक्खाइं पडिपुण मणे लिसं ॥२४॥

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ११ गा० २४)

आ० मन वचन कायाइ करी जेहनो आत्मा गुप्त छै ते आत्मा गुप्त छै सदा इ काले इन्द्रिय नों दमणहार छि० छेद्या छै ससार स्रोत जेणे अ० अना श्रवण प्राणातिपातादिक कर्म प्रवेश द्वार रूप राल्या ते आश्रव रहित ते जेहवो शुद्ध धर्म कहे ते धर्म केहवो छै. प० प्रतिपूर्ण सर्व व्रति रूप. म० निरुपम अन्य दर्शन ने विषे किहाइं नथी

तथा इहा कह्यो—जे आत्मा गुप्त साधु इज शुद्ध धर्म नों परूपणहार छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ८ बोल सम्पूर्ण

तथा सूर्य प्रज्ञप्ति में कह्यो—ते पाठ लिखियें छै ।

सद्धाद्धिइ उट्ठाणुच्छाह कम्म वल वीरिए पुरिस कारेहिं । जो सिक्खिउ उवसंतो अभायणे पक्खिवेज्जाहिं ॥ ३ ॥

सोप वयण कुल संघवाहि रो नाण विणय परिहीणा। अरि-
हन्त थेर गणहर मइ फिरहोंति बालिंणो ॥ ४ ॥

(सूय प्रज्ञप्ति २० पाहुड़ा)

जे कोई. श्रद्धा. धृति. उत्थान. उत्साह कर्म बल. वीर्य. पुरुषकार (पराक्रम) करी अभाजनं सूत्रज्ञान नें देशी तो देन वालां नें हानि होसी. ॥ ३ ॥ इण प्रकारे अभाजन नें ज्ञान देणवाला साधु प्रवचन. कुल. गण. संघ. सूं. बाहिर जाणवा ज्ञान विनय रहित अरिहन्त तथा गणधरां री मर्यादा ना उल्लंघन हार जाणवा ॥ ४ ॥

अथ इहां कह्यो—ए सूत्र अभाजन नें सिखावे ते कुल. गण. संघ बाहिरे ज्ञानादिक रहित कह्यो। अरिहन्त. गणधर. स्थविर. नी मर्यादा नों लोपहार कह्यो। जो साधु अभाजन नें पिण न सिखावणो तो गृहस्थ तो प्रत्यक्ष पञ्च आश्रव नों सेवणहार अभाजन इज छै। तेहन सिखायां धर्म किम हुवे। इत्यादिक अनेक ठामे सूत्र भणवा री आज्ञा साधु न इज छै। तिवारे कोई कहे—जो सूत्र भणवारी आज्ञा श्रावकां ने नहीं तो जिम नन्दी तथा समवायांगे साधां नें "सुय-परिग्गहिया" कह्या तिम हिज श्रावकां ने पिण "सुयपरिग्गहिया" कह्या तिण न्याय जो साधां ने सूत्र भणवो कल्पे तो श्रावकां ने किम न कल्पे बिहुं ठिकाणे पाठ एक सरीखो छै, एहवी कुयुक्ति लगावी श्रावकां ने सूत्र भणवो थापे तेहनों उत्तर—

जे नन्दी समवायांगे साधां नें "सुयपरिग्गहिया" कह्या ते तो सूत्र श्रुत अनें अर्थ श्रुत बिहूंना ग्रहण करवा थकी कह्या छै। अनें श्रावकां ने "सुयपरिग्ग-हिया" कह्या ते अर्थ श्रुत ना हिज ग्रहण करणहार माटे जाणवा। उवाई तथा सूय-गडांग आदि अनेक सूत्रां में श्रावकां ने अर्थ ना जाण कह्या पिण सूत्र ना जाण किहां ही कह्या नथी। अने केई बाल अज्ञानी "सुय परिग्गहिया" नो नाम लेई ने श्रावका नें सूत्र भणवो थापे ते जिनागम ना अनभिज्ञ जाणवा। सुय शब्द नो अर्थ श्रुत छै पिण सूत्र न थी। डाहा हुवे तो विचारि जोई जो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण

तिवारे कोई कहे जे "सुय" शब्द नों अर्थ श्रुत छै सूत्र न थी तो श्रुत नाम तो ज्ञान नो छै। अनें तमे सूत्र श्रुत अनें अर्थ श्रुत ए बे भेद करो छो ते किण सूत्र ना

अनुसार थी करो छो। इम कहे तेहनो उत्तर—ठाणाङ्गठाणे २ उद्देश्ये १ कह्यो ते पाठ लिखिये छे।

दुविहे धम्मे पण्णत्ते तं जहा—सुअ धम्मे चेव. चरित्त धम्मे चेव.। सुअ धम्मे दुविहे पण्णत्ते तं०---सुत्त सुअधम्मे चेव अत्थ सुअ धम्मे चेव.। चरित्त धम्मे दुविहे पण्णत्ते तं०---आगार चरित्त धम्मे चेव. अणगार चरित्त धम्मे चेव।

(ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १)

दु० बे प्रकारे ध० धर्म प० परूप्यो त० ते कहे छे। सु० श्रुतधर्म चे० निश्चय अनें च० चारित्र धर्म च० निश्चय.। सु० श्रुतधर्म दु० बे प्रकारे. प० परूप्यो. त० ते कहे छै. सु० सूत्र श्रुत धर्म. चे० निश्चय. अ० अर्थ श्रुतधर्म। चे० निश्चय च० चारित्र धर्म दु० बे प्रकारे प० परूप्यो तं० ते कहे छै आ० आगार चारित्र धर्म ते बारह व्रत रूप अनें चे० निश्चय. अ० अणगार चारित्र धर्म ते पांच महाव्रत रूप. चे० निश्चय

अथ इहां श्रुत धर्म्म ना बे भेद कह्या—एक तो सूत्र श्रुत धर्म बीजो अर्थ श्रुत धर्म्म ते अर्थ श्रुत धर्म ना जाण श्रावक हुवे तेणे कारणे श्रावकां ने "सुयपरिग्गहिया" कह्या। पिण सूत्र आश्री कह्यो न थी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १० बोल सम्पूर्ण

तथा वली भगवती श० ८ उ० ८ अर्थ ने श्रुत कह्यो ते पाठ लिखिये छे।

सुयं पडुच्च तओ पडिणीया प० तं०—सुत्त पडिणीया अत्थ पडिणीया तदुभय तदुभय पडिणीया।

(भगवती श० ८ उ० ८)

सु० श्रुत ने प० आश्री त० त्रिण. प० प्रत्यनीक. प० परूप्या. त०—ते कहे छे सु० सूत्र ना प्रत्यनीक. अ० अर्थ ना प्रत्यनीक खोटा अर्थ नू भणतू इत्यादिक त० सूत्र अनें अर्थ ते विहूंना प्रत्यनीक बैरी.

अथ इहां पिण श्रुत आश्री तीन प्रत्यनीक कह्या। सूत्र ना १ अर्थना २ अने विहूंना ३। तिण में अर्थ ना प्रत्यनीक नें श्रुत प्रत्यनीक कह्यो तथा ठाणाङ्ग ठाणे ३ पिण इम हिज श्रुत आश्री तीन प्रत्यनीक कह्या तिहां पिण अर्थ ने श्रुत कह्यो इत्यादिक अनेक ठामे अर्थ ने श्रुत कह्यो छे। तेणे कारणे अर्थ ना जाण होवा माटे श्रावक नें "श्रुत परिग्रहीता" कह्यो पिण "सूत्र परिग्रहीता" किहां ही कह्यो न थी। डाहा हुवे तो विचारि जोईजो।

इति ११ बोल सम्पूर्ण

तथा वली पन्नवणा पद २३ उ० २ पंचेन्द्रिय ना उपयोग नें श्रुत कह्यो छै ते पाठ लिखिये छै।

केरिसएणं नेरइये उक्कोस कालट्ठितीयं णाणावरणिज्जं कम्म बंधति गोयमा! सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जती हिं- पज्जत्ते सागारे जागरे सूत्तो वडते मिच्छादिट्ठी कराइ लेसे उक्कोस संकिलिट्ठ परिणामे ईसि मज्झिम परिणामे वा एरिस एणं गोयमा! णेरइए उक्कोस काल ट्ठितीयं णाणा वरणिज्जं कम्मं बंधति॥ २५॥

(पन्नवणा पद २३ उ० २)

के० केहवो थको णे० नारकी. उ० उत्कृष्ट काल स्थिति नूं. णा० ज्ञाना वरणीय कर्म बांधे. गो० हे गोतम! स० सज्ञी पचेन्द्रिय स० सर्व पर्याप्तो. साकारोप योगवन्त जा० जागतो निद्रा रहित नारकी ने पिण किरा'क निद्रा नो अनुभव हुइ ते माटे जागृत कह्यो सु० श्रुतोपयुक्त

पचेन्द्रिय ना उपयोगवन्त मि० मिथ्या दृष्टि क० कृष्ण लेश्यावन्त उ० उत्कृष्ट आकार संक्लिष्ट परिणामवन्त इ० अथवा लिगारेक मध्यम परिणाम वन्त ए० एहवो थको गो० हे गोतम ! णे० नारकी उ० उत्कृष्ट काल नी स्थिति न० ज्ञाना वरणीय कर्म व० बांधे

अथ इहां कह्यो—जे सन्नी पंचेन्द्रिय 'पर्याप्तो जागरे सुत्तो वडत्ते" कहितां जागतो थको श्रुतोपयुक्त अर्थात् उपयोगवन्त ते मिथ्या दृष्टि कृष्ण लेश्यी उत्कृष्ट संक्लिष्ट परिणाम ना धनी तथा किञ्चित मध्यम परिणाम ना धणी उत्कृष्ट स्थिति नो ज्ञाना वरणीय कर्म बांधे। इहां पंचेन्द्रिय ना अर्थना उपयोग ने श्रुत कह्यो ते श्रुत नाम अनेक ठिकाणे अर्थनो छै। ते अर्थ ना जाण श्रावक होवा थी "सुय परिग्गहिया"कह्या छै। डाहा हुवे तो विचारि जोई जो।

इति १२ बोल सम्पूर्ण

तथा वली आवश्यक सूत्र मा अर्थ ने आगम कह्यो अने अनुयोग द्वार मा भावश्रुत ना दश नाम परूप्या तिहां आगम नाम श्रुत नो कह्यो छै ते पाठ लिखिए छै।

सेतं भाव सुयं तस्सणं इमे एगट्ठिया णाणा घोसा णाणा वंजणा नाम धेज्जा भवंति तं जहा—

सुयं सुत्तं गंथं सिद्धंति सासणं आणत्ति वयण उवएसो। पण्णवणे आगमेऽविय एगट्ठा पज्जवासुत्ते। से तं सुयं ॥ ४२ ॥

(अनुयोगद्वार)

से० ते भा० भावश्रुत कहिए त० ते भावश्रुत ने इ० एप्रत्यक्ष ए० एकार्थक ना० जुदा जुदा घोष उदात्तादिक. ना० जुदा जुदा व्यंजनाक्षर णा० नाम पर्याय प० परूप्या त० ते कहे छे— सु० श्रुत सु० सूत्र. गं० ग्रन्थ सि० सिद्धान्त सा० शासन आ० आज्ञा व० प्रवचन० उ० उपदेश. प० प्रज्ञापन आ० आगम ए० एकार्थ प० पर्याय नाम सूत्र ने विषे से० ते सु० सूत्र कहिए ।

इहां श्रुत ना दश नाम कह्या तिण में आगम नाम श्रुत नो कह्यो। अने अनुयोग द्वार मा अर्थ ने आगम कह्यो ते कहे छे। "तिविहे आगमे प० तं०—सुत्तागमे अत्थागमे तदुभयागमे" ए अर्थ रूप आगम कह्यो भावे अर्थ रूप श्रुत कह्यो आगम नाम श्रुत नों हीज छे। इत्यादिक अनेक ठामे अर्थ ने श्रुत कह्यो ते माटे श्रावकां ने अर्थ रूप श्रुत ना जाण कहीजे।

तिवारे कोई कहे—जे तमे कहो छो श्रावकां ने सूत्र भणवो नहीं तो आवश्यक अ० ४ श्रावक पिण तीन आगम ना चवदे अतीचार आलोवे तो जे श्रावक सूत्र भणे इज नहीं तो अतीचार किण रा आलोवे तेहनो उत्तर—ए सूत्र रूप आगम तो श्रावक रे आवश्यक सूत्र अर्थात् प्रतिक्रमण सूत्र आश्रयी छै। तिवारे कोई कहे-जो श्रावक नें सूत्र भणवो इज नहीं तो आवश्यक अर्थात् प्रतिक्रमण क्यूं करे तेहनों उत्तर—आवश्यक सूत्र भणवारी तो श्रावक ने अनुयोग द्वार सूत्र में भगवान् नी आज्ञा छै। ते पाठ कहे छै।

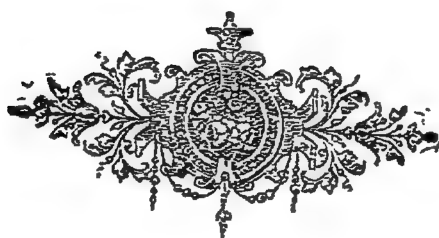
"समणे णं सावएणय अवस्सं कायव्वे हवइ जम्हा अन्तो अहो निसस्साय तम्हा आव वस्सयं नाम०" साधु तथा श्रावक नें बेहूं टंक अवश्य करवो तेह थी आवश्यक नाम कहिए। तेणे कारणे आवश्यक सूत्र आश्रयी सूत्रागम ना अतीचार आलोवे पिण अनेरा सूत्र आश्रयी न थी। तथा अनेरा सूत्र पाठना रसा कसा वैराग्य रूप केई एक गाथा श्रावक भणे तो पिण आज्ञा-बाहिर जणाता न थी। ते किम तेह नो न्याय कहे छै। साधु नें अकाल में सूत्र नहीं वाँचवो पिण रसा कसा रूप एक दोय तीन गाथा वांचवारी आज्ञा निशीथ उद्देश्ये १६ दीनी छै। तिम श्रावक पिण रसा कसा रूप सूत्र नी गाथा तथा बोल बाचे तो आज्ञा बाहिरे दीसे नहीं। तथा ज्ञान ना चवदे अतीचार मा कह्यो "अकाले कओ सिज्झाओ काले न कओ सिज्झाओ" ते पिण आवश्यक सूत्र आश्रयी जणाय छै।

तिवारे कोई कोई कहे—श्रावक न सूत्र नहीं भणवो तो राजमती ने बहुश्रुति क्यूं कही अनें पालित श्रावक नें पण्डित क्यूं कह्यो इम कहे तेहनो उत्तर--ए पिण अर्थ रूप श्रुत आश्रयी बहुश्रुति तथा पण्डित कह्यो दीसे छै। पिण सूत्र आश्रयी कह्यो दीसे नहीं। क्यूं कि कालिक उत्कालिक सूत्र अनुक्रम भणवो तो साधु ने हीज कह्यो छै पिण श्रावक नें कह्यो न थी। अनें गोतमादिक साधां मे कोई चवदे पूर्व

भण्यो कोई इग्यार अङ्ग भण्यो एहवा अनेक ठामे पाठ छै। पिण अमुक श्रावक एतला सूत्र भण्यो एहवो पाठ किहां ही चाल्यो न थी। ते माटे सिद्धान्त भणवारी आज्ञा साधु ने हीज छै। पिण अनेरा गृहस्थ पासत्थादिक नें सिद्धान्त भणवार आज्ञा श्री वीतराग नी न थी। डाहा हुवे तो विचारि जोई जो।

इति १३ बोल सम्पूर्ण

इति सूत्र पठनाऽधिकारः



अथ निरवद्य क्रियाधिकारः ।

केतला एक अजाण आज्ञा बाहिरली करणी थी पुण्य बंधतो कहे। ते सूत्र ना जाणणहार नहीं। भगवन्त तो ठाम २ आज्ञा माहिली करणी थी पुण्य बंधतो कह्यो। ते निर्जरा री करणी करतां नाम कर्म उदय थी शुभ योग प्रवर्त्ते तिहां इज पुण्य बंधे छै। ते करणी शुद्ध निरवद्य आज्ञा माहिली छै। पुण्य बंधे तिहां निर्जरा री नियमा छै। ते संक्षेप मात्र सूत्र पाठ लिखिये छै।

कहरणं भंते ! जीवाणं कल्लाण कम्मा कज्जंति कालोदाई ! से जहा नामए केइ पुरिसे मणुण्णं थाली पाप सुद्धं अट्ठारस वंजण उलं ओसह मिस्सं भोयणं भुंजेज्जा तस्सणं भोयणस्स आवाए नो भद्दए भवइ तओपच्छा परिणाम माणे २ सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव सुहत्ताए नो दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइ वाय वेरमणे जाव परिगाह वेरमणे कोह विवेगे जाव मिच्छा दंसण सल्ल विवेगे तस्सणं आवाए नो भद्दए भवइ तओपच्छा परिणममाणे २ सुरूवत्ताए जाव नो दुक्खत्ताए भुज्जो २ परिणमइ. एवंखलु कालोदाई जीवाणं कल्लाण कम्मा जाव कज्जंति ।

(भगवती श० ७ उ० १०)

क० किम भ० भगवन्त! जी० जीव नें क० कल्याण फल विपाक संयुक्त. क० कर्म क० हुइ का० हे कालोदायी! से० ते यथानामे यथा दृष्टांते. के० कोइक पुरुष. म० मनोज्ञ. था० हांडली पाके करी शुद्ध निर्दोष. अ० १८ भेद व्यञ्जन शाक तक्रादिक तेणें करी युक्त उ० औषध महातिक्त घृतादिक तिणें मिश्र भो० भोजन प्रति. भोगवे ते भोजन नो. आ० आपात कहितां प्रथम ते रूड़ू न लागे. त० तिवारे पछे औषध परिणमता छते छरूप पणे सु० सुवर्ण पणे यावत् सु० सुख पणे णो० नहीं. दु० दुःख पणे भु० वार २ परिणमे ते० ए० औषध मिश्रित भोजन नी परे का० कालोदाई जी० जीव ने पा० प्राणातिपात वे० वेरमण थकी जा० यावत्. प० परिग्रह वेरमण थकी. को० क्रोध विवेक थकी यावत्. मि० मिथ्यादर्शन शल्य विवेक थकी. त० तेहनें प्रथम न हुइ छल नें अर्थे इन्द्रिय ने प्रतिकूल पणा थी त० तिवारे पछे प्राणातिपात. वेरमण थी उपनू जे० पुण्य कर्म ते परिणमते छते सु० सुरूप पणे जा० यावत्. णो० नहीं दुःख पणे परिणमे ए० इम निश्चय का० कालोदाई. जी० जीव नें क० कल्याण फल जा० यावत्. क० हुइ

अथ इहां कह्यो १८ पाप न सेव्यां कल्याणकारी कर्म बंधै। पाछले आलावे १८ पाप सेव्यां पाप कर्म नो बन्ध कह्यो। ते पाप नों प्रतिपक्ष पुण्य कह्यो. भावे कल्याणकारी कर्म कह्यो। ते १८ पाप न सेव्यां पुण्य बंधतो कह्यो। ते माटे १८ पाप न सेवे ते करणी निरवद्य आज्ञा मांहिली छै ते करणी सूं इज पुण्य रो बन्ध कह्यो। तथा समवायाङ्ग ५ मे समवाये कह्यो।

"पञ्च निज्जरट्ठाणा. प० पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावायाओ अदिन्ना दाणाओ, मेहुणाओ वेरमणं परिग्गहाओ वेरमणं"

इहां ५ आश्रव थी निवर्त्ते ते निर्जरा स्थानक कह्या। जे त्याग विनाइ पांच आश्रव टाले ते निर्जरा स्थानक ते निर्जरा री करणी छै। अनें भगवान् पिण कालोदाई नें इण निर्जरा री करणी थी पुण्य बंधतो कह्यो छै। पिण सावद्य आज्ञा बाहिर ली करणी थी पुण्य बंधतो न कह्यो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ९ बोल सम्पूर्ण

तथा उत्तराध्ययन अ० २६ कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

वंदण एणं भंते ! जीवे किं जणयइ वंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ उच्चागोयं कम्मं निबंधइ, सोहग्गंच णं अपडिहयं आणा फलं णिवत्तेइ दाहिणा भावं चणं जणयइ ॥१०॥

(उत्तराध्ययन अ० २६)

व० गुरु नें वन्दना करवे करी. भं० हे पूज्य ! जी० जीव किं० किसो फल उपार्जे इम शिष्य पूछयां थकां. गुरु कहे छै वं० गुरु नें वदना करवे करी करी ने नी० नीचा गोत्र नीचा कुल पामवाना कर्म ख० खपावे ऊ० ऊंचा कुल पामवाना. कर्म. नि० बांधे. सौभाग्य अनें अ० तिण री. अप्रतिहत आ० आज्ञा रो फल नि० प्रवर्त्ते दा० दाक्षिण्य भाव उपार्जे

अथ इहां कह्यो—वन्दना इं करी नीच गोत्र कर्म खपावे ए तो निर्जरा कही अनें ऊंच गोत्र कर्म बंधे, ए पुण्य नों वन्ध कह्यो। ते पिण आज्ञा माहिली निर्जरा री करणी सूं पुण्य नों वन्ध कह्यो। डाहा हुवे तो विचारे जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण

तथा उत्तराध्ययन अ० २६ बो० २३ कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

धम्म कहाएणं भंते। जीवे किं जणयइ. धम्म कहाएणं निज्जरं जणयइ. धम्म कहाएणं पवयणं पभावेइ. पवयणं पभावे णं जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबंधइ. ॥२३॥

(उत्तराध्ययन अ० २६)

ध० धर्म कथा कहिवे करी भं० हे भगवन् ! जीव किसोफल ज० उपार्जे. इम शिष्य पूछे छते गुरु कहे छै. ध० धर्म कथा कहिवे करी. नि० निर्जरा करवा नी विधि उपार्जे ध० धर्म कथा

कहवे करी सि० सिद्धांत नी प्रभावना करे. सिद्धांत ना गुण दिपावे सिद्धांत ना गुण दिपावे करी. जी० जीव. आ० आगले भ० कल्याण पणे शुभ पणे. क० कर्म बांधे

अथ इहां पिण धर्म कथाई करी शुभ कर्म नों बन्ध कह्यो। ए धर्म कथा पिण निर्जरा ना भेदां में तिहां जे शुभ कर्म नों बंध छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

तथा उत्तराध्ययन अ० २६ कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

वेयावच्चेणं भंते! जीवे किं जणइय. वेयावच्चेणं तित्थयर णाम गोत्तं कम्मं निबंधइ ॥४३॥

(उत्तराध्ययन अ० २६)

वे० आचार्यादिक नो वैयावच करवे करी भ० हे पूज्य! जी० जीव कि० किसो ज० फल उपार्जे इम शिष्य पूछे थके गुरु कहे छै. वे० आचार्यादिक नी वैयावच करवे करी. ति० तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म नि० बांधे.

अथ इहां गुरु नी व्यावच कियां तीर्थङ्कर नाम गोत्र कर्म नों बन्ध कह्यो। ए व्यावच निर्जरा ना १२ भेदां माहि छै। तेह थी तीर्थङ्कर गोत्र पुण्य बंधे कह्यो, ए पिण आज्ञा माहिली करणी छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

तथा भगवती श० ५ उ० ६ कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

कहणं भंते ! जीवा सुभ दीहाउ यत्ताए कम्मं पकरंति गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता नो मुसं वइत्ता तहा रूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता जाव पज्जुवासेत्ता अण्णयरेणं मणुण्णेणं पीइकारएणं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभित्ता एवं खलु जीवा जाव पकरंति ॥४४॥

(भगवती श० ५ उ० ६)

क० किम. जी० जीव. भ० भगवन्! सु० शुभ दीर्घ आयुषा नों कर्म बांधे. गो० हे गौतम ! णो० नहीं जीव प्रति हणे. णो० नहीं मृषा प्रति बोले. त० तथा रूप स० श्रमणप्रति. मा० माहण प्रति व० वांदी ने यावत् प० सेवा करी ने अ० अनेरो म० मनोज्ञ. पी० प्रीति कारी इ भले भावे करी. अ० अशन पान खादिम स्वादिमे करी नें प्रतिलाभे. ए० इम. निश्चय जीव यावत् शुभ दीर्घायुषो बांधे

अथ इहां जीव न हण्या. झूठ न बोल्यां. तथा रूप श्रमण माहण. नें वन्दनादिक करी. अशनादिक दियां. शुभ दीर्घ आयुषा नों बन्ध कह्यो । शुभ दीर्घ आयुषो ते तीन बोल निरवद्य थी बंधतो कह्यो । तथा ठाणाङ्ग ठा० ६ साधु नें अन्नादिक दियां पुण्य कह्यो । अनें भगवती श० ८ उ० ६ साधु नें दीधां निर्जरा कही । ते आज्ञा माहिली करणी छै । डाहा हुए तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्ण ।

तथा ठाणाङ्ग ठा० १० बोल दश करी नें कल्याणकारी कर्म नों बन्ध कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

दसहिं ठाणेहिं जीवा आगमेसि भद्दत्ताए कम्मं पगरेंति तं० अति दाणयाए दिट्ठि संपन्नयाए. जोग वहिययाए

खंति खमणयाए. जीइंदियाए. अमाइल्लयाए. अपासत्थयाए. सुसामन्नयाए. पवयण वच्छल्लयाए. पवयण उज्झावणयाए ॥११४॥

(ठाणांग ठा० १०)

आगमोइ भवांतरे रूड़ू देव पणो तदनतर रूड़ू मनुष्य पणू पामवूं द० दश स्थानके करी जीव अनें मोक्ष ने पामवे कल्याण छै तेहने पणो अर्थे. क० कर्म शुभ प्रकृति रूप प० बांधे वं० ते कहे छै ए दश बोल भद्र कर्म जोड़वू. अ० छेदे जेणे करी आनन्द सहित मोक्ष फलवर्त्ती ज्ञानादिक नी आराधना रूप लता, देवेन्द्रादिक नी ऋद्धि नू प्रार्थना रूप अध्यवसाय ते रूप कुहाड़े करी ते नियाणू ते नथी जेहने ते अनिदान तेणे करी १ सम्यक्त्व दृष्टि पणे करी २ जो सिद्धान्त ना योग ने वहिवे अथवा सगले उछरङ्ग पणा रहित जे समाधि योग तेहने. करवे करी ख० खमाइ करी परिषह खमवे करो क्षमातु ग्रहण कहिउ ते असमर्थ पणे खमवा नू निषेध भणी समर्थ पणे खमे इ० इन्द्रिय ने निग्रहवे करी. अ० मायावी पणा रहित अ० ज्ञानादिक नें देश थकी सर्व थकी बाहिर तिष्ठे ते पार्श्वस्थ दोष थकी ते शय्यातर पिण्ड अभिहड नित्यपिण्ड अग्रपिण्ड निकारणे भोगवे सु० पार्श्वस्थादिक ने दोष ने वर्जवे करी शोभन श्रमण पणू तेणे करी भद्र. प० पवयण प्रकृष्ट अथवा प्रशस्त वचन आगम ते प्रवचन द्वादशाङ्गी अथवा तेहनों आधार सङ्घ तेहनों वात्सल्य हितकारी पणे करी प्रत्यनीक पणू टालिवू तेणे करी भद्र प० द्वादशांगी नू प्रभाव चू ते० धर्म कथावाद नी लब्धि करी यशनू उपजाविवू. तेणे करी भद्र कर्म करे. ए भद्र कल्याण कर्म करणहार ने.

अथ-अठे १० प्रकारे कल्याणकारी कर्म बंधता कह्या—ते दसूंइ बोल निरवद्य छै। आज्ञा माहि छै। पिण सावद्य करणी आज्ञा बाहिर ली करणी थी पुण्य बंध कह्यो न थी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण।

तथा भगवती श० ७ उ० ६ अठारह पाप सेव्यां कर्कश वेदनी बंधे, अनें १८ पाप न सेव्यां अकर्कश वेद नी बंधे इम कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

कहराणं भंते ! जीवाणं कक्कस वेयणिज्जा कम्मा कज्जंति गोयमा ! पाणाइवाए णं जाव मिच्छा दंसण सल्लेणं एवं खलु गोयमा जीवाणं कक्कस वेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ।

(भगवती श० ७ उ० ६)

क० किम भ० हे भगवन् ! जी० जीव. क० कर्कश वेदनीय कर्म प्रति उपार्जे छै हे गोतम ! पा० प्राणातिपाते करी. यावत्. मि० मिथ्या दर्शन शल्ये करी नें १८ पाप स्थानके ए० इम निश्चय गो० हे गोतम ! जीव नें कर्कश वेदनी कर्म हुवे छै

अथ इहां १८ पाप सेव्यां कर्कश वेद नी कर्म नों वन्ध कह्यो । ते करणी सावद्य आज्ञा वाहिर ली छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ७ बोल सम्पूर्ण ।

तथा अर्कर्कश वेदनी आज्ञा माहि ली करणी थी बंधे इम कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

कहराणं भंते ! जीवाणं अकक्कस वेयणिज्जा कम्मा कज्जन्ति गोयमा ! पाणाइवाय वेरमणेणं जाव परिग्रह वेरमणेणं कोह विवेगेणं जाव मिच्छा दंसण सल्ल विवेगेणं एवं खलु गोयमा ! जीवाणं अकक्कस वेयणिज्जा कम्मा कज्जन्ति ।

(भगवती श० ६ उ० ७)

क० किम. भ० भगवन्त ! जीव अकर्कश वेदनी कर्म प्रति उपार्जे छै. गो० हे गोतम ! पा० प्राणातिपात वेरमणे करी ने सयम इ करी यावत् परिग्रह वेरमणे करी नें क्रोध ने वेरमणे

करी नें. जा० यावत् मिथ्या दर्शन शल्य वेरमणे करी नें १८ पाप स्थानक वर्जवे करी ए० ए निश्चय गो० हे गोतम! जीव नें. अ० अकर्कश वेदनीय कर्म उपजे छैं.

अथ इहां १८ पाप न सेव्यां अकर्कश वेद नी पुण्य कर्म नों वन्ध कह्यो। ते करणी निरवद्य आज्ञा माहि ली छै। पिण सावद्य आज्ञा वाहर ली सूं पुण्य नों वन्ध न कह्यो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ८ बोल सम्पूर्ण।

तथा २० वोलां करी तीर्थङ्कर गोत्र बंधतो कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

इमे हियाणं वीसाहिय कारणेहिं असविय वहुलीकएहिं तित्थयर णामगोयं कम्मं निव्वतेसु तंजहा—

अरिहंत सिद्ध पवयण, गुरु थेरे बहुस्सुए तवस्सीसु।
वच्छलयाय तेसिं, अभिक्ख णाणोवओगेह॥ १॥
दंसण विणय आवस्सएय, सीलव्वए यणिरवइयारे।
खणलव तवच्चियाए, वेयावच्चे समाहीयं॥ २॥
अपुव्वणाण गहणे, सुयभत्ती पवयणेप्पभावणया।
एएहिं कारणेहिं, तित्थयरत्तं लहइ जीवो॥ ३॥

(ज्ञाता अ० ८)

इ०.ए प्रत्यक्ष आगले वी० वीस २० भेदां करी नें, ते भेद केहवा छै. आ० आसेवित छै. मर्यादा करी नें एक वार करवा थकी सेव्या छै व० घणी वार करवा थकी घणी वार सेव्या वीस स्थानक. तेणे करी. तीर्थ कर नाम गोत्र कर्म नि० उपार्जन करे. बांधे ते महावल अणगार सेव्या ते स्थानक केहवा छै अ० अरिहन्त नी आराधना ते सेवा भक्ति करे. सि० सिद्ध नों

आराधनां ते गुणग्राम करवो. प० प्रवचन सु० श्रुत ज्ञान. सिद्धान्त नों वखाणवो. गु० धर्मोंपदेश गुरु नों विनय करे थि० स्थविरां नों विनय करे बहुश्रुति घणा आगम नों भणनहार. एक २ अपेक्षाय करी नें जाणवो. त० तपस्वी एक उपवास आदि देई घणा तप सहित साधु तेहनी सेवा भक्ति व० अरिहन्त सिद्ध. प्रवचन गुरु. स्थविर. बहुश्रुति तपस्वी ए सात पदानी वत्सलता पणे. भक्ति करी ने अने जे अनुरागी छतां ज्ञान नों उपयोग हुन्तो तीर्थंकर कर्म बांधे. द० दर्शन ते सम्यक्त्व निर्मली पालतो, ज्ञान नों विनय. आ० आवश्यक नों करवो पड़कमणो करवो नि० निरतिचार पणे करिये. सी० मूल गुण उत्तर गुण नें निरतिचार पालतो थको तीर्थंकर नाम कर्म बांधे., ख० क्षणलवादिक काल नें विषे सम्वेग भाव ना ध्यान रा सेवा थकी बंध. त० तप एक उपवासादिक. तप सू रक्त पणा करी. चि० साधु नें शुद्ध दान देई ने. वे० १० विध व्यावच करतो थको गु० गुरुादिक ना कार्य करके गुरु नें सन्तोष उपजावे करी नें तीर्थंकर नाम गोत्र बांधे. अ० अपूर्व ज्ञान भणतो थको जीव तीर्थंकर नाम गोत्र बांधे सु० सूत्र ना भक्ति सिद्धान्त नी भक्ति करतो थको तीर्थंकर नाम कर्म बांधे प० यथाशक्ति साधु मार्ग नें देखाड़वे करी. प्र.चन नी प्रभावना तीर्थंकर ना मार्ग ने दीपावे करी. ए तीर्थंकर पणा ना कारण थकी २० भेदी बंधतो कह्यो

अथ अठे वीसुंइ बोलां नों विचार कर.लेवो। तीर्थङ्कर नाम कर्म ए पुण्य छै। ए पिण शुभ योग प्रवर्त्ततां बंधे छै। ए वीसुंइ बोल सेवण री भगवन्त नी आज्ञा छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

तथा विपाक सूत्र में सुमुख गाथा पति साधु नें दान देई प्रति संसार करी मनुष्य नों आयुषो बांध्यो कह्यो छै। ते करणी आज्ञा महिली छै। इम दसुंइ जणा सुपात्र दान थी प्रति संसार कियो. अनें मनुष्य नों आयुषो बांध्यो ते करणी निरवद्य छै। सावद्य करणी थी पुण्य बंधे नहीं। तथा भगवती श० ७ उ० ६ प्राण. भूत जीव. सत्व. नें दुःख न दियां साता वेद नी रो बन्ध कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

अत्थिणं भंते! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति, हंता अत्थि। कहण्णं भंते! साया वेयणिज्जा कम्मा कज्जंति, गोयमा! पाणाणुकंपयाए. भूयाणुकंपयाए. जीवाणुकंपयाए. सत्ताणुकंपयाए. बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए. असोयणयाए. अजूरणयाए. अतिप्पणयाए. अपिट्टणयाए. अपरियावणयाए. एवं खलु गोयमा! जीवाणं साया वेयणिज्जा कम्मा कज्जंति एवं नेरइया णवि जाव वेमाणियाणं। अत्थिणं भंते! जीवाणं असाया वेयणिज्जा कम्मा कज्जंति, हंता अत्थि। कहणं भंते! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा कज्जन्ति, गोयमा! परदुक्खणयाए. परसोयणयाए. परजूरणयाए. परतिप्पणयाए. परपिट्टणयाए परपरितावणयाए, बहूणं पाणाणं भूयाणं. जीवाणं. सत्ताणं. दुक्खणयाए. सोयणयाए. जाव परियावणयाए, एवं खलु गोयमा! जीवाणं असाया वेयणिज्जा कम्मा कज्जन्ति. एवं नेरइयाणवि. जाव वेमाणियाणं. ॥ १० ॥

(भगवती श० ७ उ० ६)

अ० अहो भगवन्! जीव साता वेदनीय कर्म करे छै ह० हां गोतम! जीव साता वेदनीय कर्म करे छै क० किम. भ० भगवन्! जीव सा० साता वेदनीय कर्म बांधे. (भगवान् कहे) गो० हे गोतम! पा० प्राणी नी अनुकम्पा करी ने. भू० भूत नी अनुकम्पा करी जी० जीवनी अनुकम्पा करी. स० सत्व नी अनुकम्पा करी. व० घणा प्राणी भूत जीव सत्व ने दुःख न करवे करी अ० शोक न उपजावे अ० झुरावे नहीं अ० आंसूपात न करावे अ० ताड़ना न करे अ० पर शरीर ने ताप न उपजावे. दुःख न देवे. इम निश्चय गो० हे गोतम! जी० जीव साता वेदनी कर्म उपजावे ए० एणे प्रकार नारकी सू वैमानिक पर्यन्त चौवीसुइ दण्डक जाणवा. अ० अहो भ० भगवन्! जी० जीव असाता वेदनी कर्म उपार्जे छै ह० (भगवान् बोल्या) हां उपार्जे क०

किम भं० भगवन् ! जी० जीव असाता वेदनी कर्म उपजावे गो० गोतम ! प० पर नें दुःख करी. प० परनें शोक करी. प० पर ने झुरावे करी प० परनें अश्रुपात करावे करी. प० परनें पीटया करी पर नें परिताप ना उपजावे करी. व० घणा प्राणी नें यावत् स० सत्व नें दुःख उपजावे करी. सो० शोक उपजावे करी. जीव नें परिताप ना उपजावे करी. ए० इम निश्चय करी ने गो० गोतम ! जीव असाता वेदनी कर्म उपजावे छै. ए० इमज नारकी नें पिण यावत् वैमानिक लगे

अथ इहां कह्यो—साता वेदनी पुण्य छै ते प्राणी नी अनुकम्पा करी. भूत नी अनुकम्पा करी. जीव नी सत्व नी अनुकम्पा करी घणा प्राणी भूत. जीव सत्व ने दुःख न देवे करी. इत्यादिक निरवद्य करणी सूं नीपजे छै। ते निरवद्य करणी आज्ञा माहिली इज छै। अनें असाता वेदनी कही ते पर नें दुःख देवे करी. इत्यादिक सावद्य करणी सूं नीपजे छै। ते आज्ञा बाहिर जाणवी। ते माटे पुण्य नी करणी आज्ञा माहिली छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १० बोल सम्पूर्ण ।

वली आठों इ कर्म बंधवा री करणी रे अधिकारे एहवा पाठ छै। ते पाठ लिखिये छै।

कम्मा शरीरप्पओग बंधेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते गोयमा ! अट्ठ विहे पण्णत्ते तं जहा—णाणा वरणिज्ज कम्मा शरीरप्पओग बंधे जाव, अंतराइयं कम्मा शरीरप्पओग बंधे। णाणा वरणिज्ज कम्मा सरीर प्पओग बंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं गोयमा ! नाण पडिणीययाए नाण निण्ह वणयाए नाणंतराएणं नाणप्पदोसेणं णाणच्चासाय णेणं नाण विसंवादणा जोगेणं नाणावरणिज्ज कम्मा सरीरप्पओग

नामाए कम्मस्स उदएणं नाणावरजि कम्मा सरीरप्पओग वंधे ॥ ३७ ॥ दरिसणा वरणिज्ज कम्मा सरीरप्पओग वंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं गोयमा ! दंसणं पडिणीययाए एवं जहा नाणावरणिज्जं नवरं दंसण नाम धेयव्वं जाव दंसण विसंवायणा जोगेणं दंसणावरणिज्ज कम्मा सरीरप्पओग णामाए कम्मस उदएणं जावप्पओग वंधे ॥३८॥

साया वेयणिज्ज कम्मा सरीरप्पओग वंधेणं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं गोयमा ! पाणाणुकंपयाए. भूयाणुकंपयाए. एवं जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए जाव अपरियावणयाए। सायावेयणिज्ज कम्मा सरीरप्पओग नामाए कम्मस्स उदएणं साया वेयणिज्ज जाव बंधे। असाया वेयणिज्ज पुच्छा गोयमा ! पर दुःखणयाए परसोयणयाए जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए जाव परितापणयाए असाया वेयणिज्ज कम्मा जावपओग वंधे ॥ ३९ ॥

मोहणिज्ज कम्मा सरीर पुच्छा गोयमा ! तिव्व कोहयाए तिव्वमाणयाए. तिव्वमाययाए. तिव्वलोहयाए. तिव्वदंसण मोहणिज्जयाए तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए. मोहणिज्ज कम्मा सरीरप्पओग जाप्पओग वंधे ॥ ४० ॥

णेरइया उयकम्मा सरीरप्पओग वंधेणं भंते ! पुच्छा गोयमा ! महारंभयाए. महा परिग्गहियाए. पंचिंदिय वहेणं. कुणिमाहारेणं. णेरइया उयकम्मा सरीरप्पओग णामाए कम्मस्स उदएणं णेरइया उपकम्मा सरीरप्पओग

जाव बंधे। तिरिक्ख जोणिया उयकम्मा सरीरपुच्छा गोयमा! माइल्लयाए, निवडिल्लयाए, अलियवयणेणं कूड तुल्ल कूड माणेणं तिरिक्ख जोणियाउय कम्मा जावप्प ओग बंधे। मणुस्सा उयं कम्मा सरीर पुच्छा गोयमा! पगइ भद्दयाए पगइ विणीययाए, साणुक्कोसणयाए, अमच्छरियत्ताए, मणुस्सा उयकम्मा जावप्पओग बंधे। देवा उयकम्मा सरीर पुच्छा गोयमा! सराग संजमेणं संजमासंजमेणं वालतवो कम्मेणं अकाम णिज्जराए देवाउय कम्मा सरीर जावप्प ओग बंधे॥ ४१॥

सुभ नाम कम्मा सरीर पुच्छा गोयमा! काउज्जुययाए भावुज्जुययाए भासुज्जुययाए, अविसंवादणा जोगेणं सुभ णाम कम्मा सरीर जावप्पओग बंधे असुभ नाम कम्मा सरीर पुच्छा गोयमा! काय अणुज्जुययाए जाव विसंवादणा जोगेणं असुभणाम कम्मा सरीर जावप्प ओग बंधे॥ ४२॥

उच्चा गोय कम्मा सरीर पुच्छा गोयमा! जाति अमदेणं, कुल अमदेणं, बल अमदेणं, रूव अमदेणं, तव अमदेणं, लाभ अमदेणं, सुअ अमदेणं, इस्सरिय अमदेणं, उच्चा गोय कम्मा सरीर जावप्पओग बंधे णीया गोय कम्मा सरीर पुच्छा गोयमा! जाति मदेणं, कुल मदेणं, बल मदेणं, जाव इस्सरिय मदेणं, णीयागोय कम्मा सरीर-जावप्पओग बंधे॥ ४३॥

अंतराइय कम्मा सरीर पुच्छा गोयमा! दाणंतराएणं,

लाभंतराएणं. भोगंतराएणं. उवभोगंतराएणं. वीरियंतराएणं. अन्तराइय कम्मा सरीरप्पओग णामाए. कम्मस्स उदएणं अन्तराइय कम्मा सरीरप्पओग बंधे ॥ ४४ ॥

(भगवती श० ८ उ० ९)

हिवें कार्मणय शरीर प्रयोग बन्ध अधिकारे करी कहे. क० कार्मणय शरीर प्रयोगबन्ध भं० हे भगवन्त ! केतला प्रकारे प० परूप्यो गो० हे गौतम ! अ० आठ प्रकारे कह्यो । णा० ज्ञानावरणीय कर्म शरीर प्रयोग बंधे जाव० यावत्. अ० अन्तराय कर्म शरीर प्रयोग करी बांधे उपार्जे। णा० ज्ञानावरणीय कर्म शरीर प्रयोग बंधे भ० भगवन् ! क० कुण कर्म ना उदय थी गो० हे गौतम ! णा० ज्ञान तथा ज्ञानवन्त सूं प्रतिकूल तिणे करी ज्ञान नों गोपवो तें निण्हवो. णा० ज्ञान भणतो होय तेहने अंतराय करे तथा ज्ञानवन्त सूं द्वेष करे. ज्ञान तथा ज्ञानवंत नी असातना करी ने णा० ज्ञान तथा ज्ञानवंत ना. वि० अवर्णवाद तिणे करी ने ज्ञानावरणीय कर्म शरीर प्रयोगबन्ध नाम कर्म ने उदय करी णा० ज्ञानावरणीय २ कर्म शरीर प्रयोग बंधे । द० दर्शना वरणीय कर्म शरीर प्रयोग बंधे. भ० हे भगवन्त ! कुण कर्म ने उदय करी गो० हे गोतम ! द० दर्शन ते. द० ज्ञाना वरणी नी परे जाणवो । न० एतलो विशेष द० दर्शन एहवो नाम क.ी ने जाणवो. जा० यावत् ज्ञाना वरणी नी परे. द० दर्शन ना वि० विसम्वाद योगेकरी द० दर्शना वरणीय कर्म शरीर प्रयोग बंधे ॥३८॥ सा० साता वेदनी कर्म बंधे शरीर प्रयोग बंधे. भ० भगवन्त ! कुण कर्म नें उदय थी गो० हे गोतम ! पा० प्राणी नी अनुकम्पा करी. भु० भूत नी दया करी. ए० इम जिम सातमे शतके दुःसम नामा छठे उद्देशे कह्यो तिम जाणवो. जा० यावत् अ० अपरितापे करी नें सा० साता वेदनी कर्म शरीर प्रयोग कर्म ना उदय थी सा० साता वेदनी कर्म जा० यावत्. व० बंधे । अ० असाता वेदनी कर्म नी पृच्छा प० पर ने दुःख पमडावे करी. प० पर ने शोक पमाडवे करी ज० जिम सातमे शतके दूषम उद्देशे कह्यो तिमज जाणवो जा० यावत् पर नें परिताप उपजावे तिवारे अ० असाता वेदनी कर्म नो यावत् प्रयोग बंध हुवे ॥३९॥ मो० मोह नी कर्म शरीर प्रयोग नी पृच्छा. गो० हे गोतम ! ति० तीव्र लाभे करी ति० तीव्र दर्शन मोहनीय करी. ति० तीव्र चारित्र मोहनी अनें नो कषाय नों लक्षण इहां चारित्र मोहनी कर्म शरीर प्रयोग बन्धे होय. ॥४०॥ ने० नारकी नों आयुषो कर्म शरीर प्रयोग बन्ध किम होय पृच्छा गो० हे गोतम ! म० महा आरम्भ कर्मादिक करी म० महा परिग्रहवन्त तृष्णा तेणे करी प० पचेन्द्रिय नी घात,करी ने. कु० मांस नों भक्षण करवे करी ने० नारकी नों आयुषो कर्म शरीर प्रयोग बन्ध नाम कर्म नें उदय करी नारकी नों आयु कर्म शरीर प्रयोग बन्ध होय । ति० तिर्यञ्च योनि कर्म शरीर नी पृच्छा गो० हे गोतम ! मा०

माया कपटाई करी नें. नि० पर नें वञ्चवे करी गूढ़ माया करी अ० झूठा वचन बोलवे करी. कु० कूड़ा तोला कूड़ा मापा करी नें. ति० तिर्यञ्च नों आयु कर्म बन्ध होय. म० मनुष्य नों आयु कर्म नी पृच्छा गो० हे गोतम ! प० प्रकृति भद्रीक प० प्रकृति नों विनीत. सा० दाया ना परिणामे करी. अ० अणामत्सरता करी नें म० मनुष्य नों आयुषो. जा० यावत् कर्म प्रयोग बधे। दे० देवता ना आयु कर्म शरीर नी पृच्छा. गो० हे गोतम ! स० संयम ते सराग सयमे करी सयमासयम ते श्रावक पणा करी बाल तप करी तापसादिक. अ० अकाम निर्जरा करी. दे० देवता नों आयु कर्म ना शरीर प्रयोग बधे. ॥४१॥ सु० शुभ नाम कर्म पृच्छा. गो० हे गोतम ! का० काया ना सरल पणे करी भा० भावणा सरल पणे करी भा० भाषा नों सरल पणो. अ० गीतार्थ कहे तेहवो करवो अविसम्वाद कह्यो तेणे करी. सु० शुभ नाम कर्म शरीर जा० यावत् प्रयोग बधे अ० अशुभ नाम कर्म री पु० पृच्छा. गो० हे गोतम ! का० काया नों वक्र पणो. भा० भाव रो वक्र पणो. भा० भाषा रो वक्र पणो. वि० विसम्वाद ते विपरीत करवो अ० अशुभ नाम कर्म. जा० यावत् प्रयोग बधे ॥४२॥ उ० उच्च गोत्र कर्म शरीर नी पृच्छा. गो० गोतम ! जा० जाति नों मद नहीं करे कु० कुल नों मद नहीं करे. ब० बलनों मद नहीं करे. त० तप नों मद नहीं करे. सु० सूत्र नों मद न करे ई० ईश्वर मद ते ठकुराई नों मद न करे. णा० ज्ञान ते भणवा नों मद नहीं करे. उ० एतला बोले करी ऊंच गोत्र बधे. नी० नीच गोत्र कर्म शरीर. जा० यावत् प० प्रयोग बधे ॥४३॥ अ० अन्तराय कर्म नी पृच्छा. गो० हे गोतम ! दा० दान नी अन्तराय करी ला० लाभ नी अन्तराय करी. भो० भोग नी अन्तराय करी उ० उपभोग नी अन्तराय करी. वी० वीर्य अन्तराय करी अ० अन्तराय कर्म शरीर प्रयोग नाम कर्म नें. उ० उदय करी अ० अन्तराय कर्म शरीर प्रयोग बधे ॥४४॥

अथ अठे आठुं इ कर्म निपजावा री करणी सर्व जुदी २ कही छै। तिणमें ज्ञानावरणीय. दर्शनावरणीय. मोहनी. अन्तराय. ४ ए कर्म तो घण घातिया छै. एकान्त पाप छै। अनें एकान्त सावद्य करणी थी निपजे छै। तिण करणी री तीर्थङ्कर नी आज्ञा नहीं। असाता वेदनी. अशुभ आयुषो. अशुभ नाम. नीच गोत्र. ए ४ कर्म पिण एकान्त पाप छै. ए पिण एकान्त सावद्य करणी सूं निपजे छै। ते सर्व पाप कर्म जाणवा। ते तो १८ पाप स्थानकसेव्यां लागे छै। अनें साता वेदनी. शुभायुषो. शुभ नाम ऊंच गोत. ए ४ कर्म पुण्य छे। शुभ योग प्रवर्त्त्यां लागे छै। ते करणी निर्जरा री छै। जे करतां पाप कटे तिण करणी नें तो शुभ योग निर्जरा कहीजे। ते शुभ योग प्रवर्त्ततां नाम कर्म रा उदय सूं सहजे जोरी दावे पुण्य बंधे छे। जिम गेहूं निपजतां खाखलो सहजे निपजे छै। तिम दयादिक भली करणी करतां शुभ योग प्रवर्त्ततां पुण्य सहजेइ लागे छै। तिम निर्जरा री करणी

करतां कर्म कटे अने पुण्य बधे। पिण सावद्य करणी करतां पुण्य निपजे नहीं। ठाम २ सूत्र में निरवद्य करणी सम्वर, निर्जरा नी कही छै। पुण्य तो जोरी दावे विना वाञ्छा लागे छै। ते किम शुद्ध साधु नें अन्नादिक दीधो तिवारे अव्रत माहि सूं काढ्यो व्रत में घाल्यो। तेहथी व्रत नीपन्यो, शुभयोग प्रवर्त्यां, तिण सूं निर्जरा हुवे । अनें शुभयोग प्रवर्त्ते तठे पुण्य आपेही लागे छै। तिण सूं आठ कर्म अनें ८ कर्म नी करणी उत्तम हुवे। ते ओलख नें निर्णय करे। सूत्र में अनेक ठामे निर्जरा सूं इज पुण्य रो बन्ध कह्यो ते करणी निरवद्य आज्ञा माहि छै। पिण सावद्य आज्ञा बाहिर ली करणी थी पुण्य बंधतो किहां इज कह्यो नथी। जे धन्नो अणगार विकट तप करी सर्वार्थ सिद्ध ऊपन्यो। एतला पुण्य उपाया। ए पुण्य भली करणी थी बंध्या के आज्ञा बाहिर ली करणी थी बंध्या। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ११ बोल सम्पूर्ण ।

केतला एक आज्ञा बाहिरे धर्म ना थापणहार कहे जो आज्ञा बाहिरे धर्म न हुवे तो धर्म रुचि नें गुरां तो कड़वो तुम्बो परठण री आज्ञा दीधी। अनें धर्म-रुचि पीगया। ए आज्ञा बाहिर लो काम कीधो तो पिण सर्वार्थ सिद्ध गया आरा-धक थया, ते माटे आज्ञा बाहिरे पिण धर्म छै। तत्रोत्तरम्—

धर्म रुचि तो आज्ञा लोपी नहीं, ते आज्ञा माहिज छै। ते किम् गुरां कह्यो ए तुम्बो पीधो तो अकाले मरण पामसी। ते माटे एकान्त परठो इम मरवा नों भय बतायो। पिण इम न कह्यो। जे तुम्बो पीधो तो विराधक थास्यो। इम तो कह्यो नहीं। गुरां तो मरवा नों कारण कही परठण री आज्ञा दीधी छै। ते पाठ लिखिये छै।

ततेणं धम्मघोसे थेरे तस्स सालतियस्स णेहाव-गाढस्स गंधेणं अभि भूय समाणा ततो सालाइयातो

णेहावगाढाओ एकग विंदुयं गहाय करयलंसि आसादेइ तित्तगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विस भूतिं जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वयासी—जतिणं तुमं देवाणुप्पिया ! एयं सालतियं जाव णेहावगाढं आहारेसि तेणं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरो विज्जसि, तंमाणं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालइयं जाव आहारेसि माणं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरो विज्जसि तं गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालातियं एगंत मणवाते अचित्ते थंडिले परिट्ठवेति २ अण्णं फासुयं एसणिज्जं असणं ४ पडिगाहेत्ता आहारं आहारेति ॥ १५ ॥

(ज्ञाता अ० १६)

त० तिवारे ध० धर्म घोष थे० स्थविर. त० ते सा० शाक णे० स्नेह छै मिल्यो थको जेहनें विषे. तिणरी. ग० गधे करी. अ० पराभूत हुवो थको. ति० तिण. सा० शाक नों णे० स्नेह छै मिल्यो थको जेहनें विषे. तिण सू ए० एक विन्दु. ग० ग्रहो ने . क० हाथ ने विषे. आ० आस्वादन कीधो ति० तिक्तक. क्षार. क० कडुवो अ० अखाद्य अ० अभोज्य वि० विष सूत एहवो जा० जाणी नें. ध० धर्मरुचि अणगार नें ए० इम कहे. ज० जो हे धर्म रुचि साधु देवानुप्रिय ! ए० ए क्षार रस युक्त वघारयो वीगरयो आहार जीमसी तो तो० तू अ० अकालेज जीवतव्य थी रहित थासी त० ते माटे मा० रखे तूहे देवानुप्रिय इण शाक नों आहार करसी मा० रखे अकाले जीवितव्य थी रहित थासी ते मोटे ज० जाउ तु० तुम्ह देवानुप्रिय ! ए० ए क्षार रसयुक्त व्यञ्जन. ए० एकान्त कोई नी दृष्टि पडे नहीं एहवे निर्जीव स्थण्डिले परिठवो २ अ० अन्य फा० प्राशुक ए० एषणीय आ० आहार प्राणी नें. आहार करो.

अथ अठे तो मरवा रो कारण कही परठण री आज्ञा दीधी छै। अनें तुम्बो खावो वर्ज्यो ते पिण मरण रा भय माटे वर्ज्यो छै। पिण विराधक रे कारण वर्ज्यो न थी। जे गुरा तो मरण रो कारण कही तुम्बो पीणो वर्ज्यो। अनें धर्मरुचि पंडित मरण आरे करी नें विशेष निर्जरा जाणी नें पी गया। तिण सूं आज्ञा मांहिज

छै। ए तो उत्कृष्टा ई कीधी छै। पिण आज्ञा लोपी नहीं। अनें जो आज्ञा वाहिरे ए कार्य हुवे तो विराधक कहिता अविनीत, कहिता अनें गुरां तो धर्म रुचि नें विनीत कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

ततेणं धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छति उवओगं गच्छित्ता समणे णिग्गंथे णिग्गंथीओय सद्दावेति २ त्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जो मम अंतेवासी धम्मरुई णामं अणगारे पगइ भद्दए जाव विणीए मासं मासेणं अणिक्खत्तेणं तवो कम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे। ततेणं सा नागसिरी माहणी जाव णिसिरइ। तएणं धम्मरुई अणगारे अहपज्जत्तमितिकट्टु जाव कालं अणवकंखमाणे विहरति। सेणं धम्मरुई अणगारे वहूणि वासाणि सामण्ण परियागं पाउणित्ता। आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढंजाव सव्वट्ठ सिद्धि महा विमाणे देवताए उववण्णे।

(ज्ञाता अ० १६)

तिवारे ते ध० धर्म घोष स्थविर पू० चवदे पूव माहे उपयोग दीधो ज्ञाने करी जाण्यो. स० श्रमण नि० निर्ग्रन्थ ने साधवीया नें स० तेडावे तेडावी नें ए० इम कहे ख० निश्चय हे आर्य्यों माहरो शिष्य अंतेवासी. धर्म रुचि नामे साधु अ० अणगार प० प्रकृति स्वभावे करी. भ० भद्रीक. प० परिणाम नों धणी जा० यावत् तपस्वी. वि० विजयवन्त मा० मास क्षमण निरन्तर तप करतो त० तप करी नें जा० यावत्. ना० नागश्री ब्राह्मणी रे घरे आहारार्थ. अ० गयो. त० तिवारे. ना० नागश्री ब्राह्मणी आहार आप्यौ जा० यावत् ग्रही ने निसरे त० तिवारे ध० धर्म रुचि अणगार अ० अथ पर्याप्त. जाणी नें यावत् का० काल की अपेक्षा रहित विहलो ध० धर्म रुचि अणगार व० बहु वर्ष पर्यन्त साधु पणो. पाली नें आ० आलोचना प्रतिक्रमण करी ने समाधि सहित. काल ना अवसर ने विषे. काल करके (मृत्यु पामी ने) उ० ऊर्ध्व स्वार्थ सिद्ध विमान ने विषे देवता पणे ऊपन्यो

अथ इहां धर्म घोष स्थविर धर्मरुचि नें भद्रीक अनें विनीत कह्यो छै। इण न्याय धर्मरुचि तुम्बो पीधो ते आज्ञा माहि छै, पिण बाहिर नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १२ बोल सम्पूर्ण ।

इमहिज सर्वानुभूति सुनक्षत्र नें बोलवो बर्ज्यो। ते पिण बोलवा रा कारणं माटे अनें दोनूं साधु पंडित मरण आरे कर लीधो ते माटे आज्ञा माहि छै। जब कोई कहे—बालवा रो कारण तो कह्यो नथी तो बालवा रो कारण किम जाणियें इम कहे तेहनों उत्तर—जिवारे आनन्द स्थविर गोचरी गया अनें गोशाले वाणियां रो दृष्टान्त देइ आनन्द स्थविर ने कह्यो। तूं वीर नें जाय नें कहीजे जे म्हारी बात करसी ते हूं बाल ना खस्यूं। अनें तूं जाय वीर नें कहिसी तो तोनें बालूं नहीं। तिवारे आनन्द स्थविर वीर नें आवी कह्यो। भगवान् कह्यो हे आनन्द ! गौतमादिक साधां नें जाय नें कहो। गोशाला सूं धर्मचोयणा कोई कीजो मती गोशाले साधां सूं मिथ्यात्व पडिवज्जो छै। ते भणी तिवारे आनन्द गौतमादिक साधा नें कह्यो। जे गोशाले कह्यो म्हारी बात कीधी. तो बाल नाखस्यूं। ते भणी भगवान् कह्यो छै। गोशाला थी धर्मचोयणा करज्यो मती। गोशाले साधां सूं मिथ्यात्व पड़िवज्जो छै ते माटे इहां गोशाले कह्यूं हूं बाल नाखस्यूं। ते बालवा रा कारण माटे भगवान् बर्ज्यो छै। पछे गोशालो आयो लेश्या थी खाली थयो पछे बलवा रो भय मिट गयो। तिवारे भगवान् साधां नें पह्चो कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

एवामेव गोशाला वि मंखलिपुत्ते ममं वहाए सरीरगंसि गेयं णिसिरित्ता हततेये जाव विणट्ठ तेये तच्छंदेणं अज्जो-तुब्भे गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पड़िचोयणाए पडि-चोएह ।

(भगवती श० १५)

या० इण पूर्वले दृष्टांते गो० गोशालो मं० मंखलिपुत्र म० म्हारा व० वध ने अर्थे स० शरीर नें विषे ते० तेज लेश्या प्रति मूकी नें ह० हत तेज थयो. जा० यावत् वि० विनष्ट तेज थयो त० ते भणी. छा० छांदे स्वाभिप्राये करी नें यथेच्छाइं करी ने तु० तुम्हें गो० गोशाला. म० मंखलीपुत्र प्रति ध० धर्मचायणा तिणें करी नें प० पडिचोयणा द्यो।

अथ इहां भगवान् साधां ने कह्यो—जे गोशाले मोनें हणवा नें तेजू लेश्या शरीर थी काढ़ी. ते माटे हिवे तेजू लेश्या रहित थयो छै। तिण सूं तुमारे छांदे छै। हे साधो! गोशाला सूं धर्मचोयणा करो तेजू लेश्या रो भय मिट्यो। जद धर्म चोयणा रो उदेरी नें कह्यो। अनें पहिलां वर्ज्या ते बालवा रा कारण मांटे। पिण गोशाला सूं बोल्यां विराधक थास्यो इम-कह्यो नहीं। ते माटे सर्वानुभूति सुनक्षत्र गिण पंडित मरण आरे करी नें बोल्या छै। अनें जो आज्ञा बाहिरे हुवे तो भगवान् तो पहिलां जाणता हुन्ता, जे हूं वरजूं छूं। पिण ए तो बोलसी तो आज्ञा बाहिरे थासी, इम बोल्यां आज्ञा बाहिरे जाणे तो भगवान् बोलवा रो ना क्या नें कहे। जो आज्ञा बाहिरे हुन्ता जाणे, तो भगवान् साधां नें आज्ञा बाहिरे क्यूं कीधा। तथा वली बोल्यां पछे निषेधता। जे म्हारी आज्ञा बाहिरे बोल्या. इसो काम कोई साधु करज्यो मती। इम कहिता, इम पिण कह्यो नहीं। भगवन्त तो अपूठा दोनूं साधां नें सराया विनीत कह्या छै। ते पाठ लिखिये छै।

एवं खलु गोयमा! ममं अंतेवासी पाईण जाणवए सव्वाणुभूई णामं अणगारे पगइ भद्दए जाव विणीए सेणं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं भासरासी करेमाणे उड्ढं चंदिम सूरिय जाव बंभलंतग महा सुक्के कप्पे वीई वइत्ता सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववण्णे।

(भगवती श० १५)

प० इम ख० निश्चय गो० हे गौतम ! म० माहरो अ० अन्तेवासी (शिष्य) प्राचीन जानपदी स० सर्वानुभूति नामे अणगार. प० प्रकृति भद्रीक. जा० यावत् वि० विनीत. से० ते त० तिवारे गोशाला मंखलि पुत्रे करी. भ० भस्म हुवो थको उ० ऊर्ध्व चन्द्र. सूर्य यावत् घणा अंतग महाशुक्र विमान में. श्री० उल्लंघी नें. स० सहस्सार कल्प देवता में विषे उ० उत्पन्न हुवो.

इहां भगवन्ते सर्वानुभूति नें प्रशंस्यो घणो विनीत कह्यो ।

वली इमज सुनक्षत्र मुनि नें पिण विनीत कह्यो । अनें जो आज्ञा बाहिरे हुवे तो अविनीत कहिता । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १२ बोल सम्पूर्ण ।

तथा उत्तराध्ययन में आज्ञा प्रमाणे कार्य करें ते शिष्य नें विनीत कह्यो । अनें आज्ञा लोपे तेहनें अविनीत कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

आणा निद्देश करे गुरूण मुववाय कारए ।
इंगियागार संपण्णे से विणीयत्ति वुच्चइ ॥

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० २)

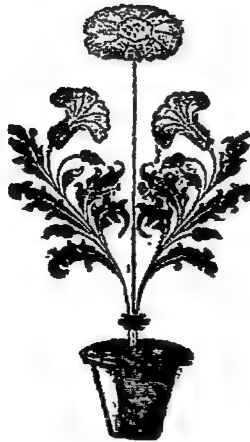
आ० गुरु नी आज्ञा नि० प्रमाण नूं करणहार गु० गुरु नी दृष्टि वचन तेहनें विषे. रहिवो एहवा कार्य नूं करणहार इं० सूक्ष्म अङ्ग भ्रमुरादिक. अवलोकना चेष्टा ना जाणपणा सहित एहवूं हुइ तेहनें विनीत कहिये.

अथ इहां गुरु नीं आज्ञा प्रमाणे कार्य करे गुरु नी अङ्ग चेष्टा प्रमाणे वर्त्ते ते विनीत कहिये । ए विनीत रा लक्षण कह्या । अनें सर्वानुभूति सुक्षत्र मुनि नें

भगवन्त विनीत कह्यो । ते माटे ए वोल्या ते आज्ञा माहिज छै । आज्ञा लोपी ने न वोल्या । आज्ञा लोपी ने वोल्या हुवे तो विनीत न कहिता । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १४ बोल सम्पूर्ण ।

इति निरवद्य क्रियाऽधिकारः ।



अथ निर्ग्रन्थाऽऽहाराधिकारः।

केतला एक अज्ञाण जीव—साधु आहार उपकरणादिक भोगवे तेहमें प्रमाद तथा अव्रत कहे छे। पाप लागो श्रद्धे छे। अनें साधु, आहार, उपकरण, आदिक भोगवे ते सूत्र में तो निर्जरा धर्म कह्यो छे। भगवती श० १ उ० ६ कह्यो। ते पाठ लिखिये छे।

फासु एसणिज्जं भंते! भुंजमाणे किं बंधइ. जाव उवचिणाइ. गोयमा! फासु एसणिज्जं भुंजमाणे आउय वज्जाओ सत्तकम्म पगडीओ धणियबंधन बद्धाओ। सिढिल बंधण बद्धाओ पकरेइ. जहा से संवुडेणं णवरं आउयं चणं कम्मंसि बन्धइ. सिय नो बन्धइ. सेसं तहेव जाव वीई वयइ॥

(भगवती श० १ उ० ६)

फा० प्राशुक ए० एषणीय निर्दोष. भं० हे भगवन्! भुं० आहार करतो थको स्यूं बांध जा० यावत् स्यूं उ० सचय करे गो० हे गोतम! फा० प्राशुक एषणी भोगवतो आहार करतो. आ० आयुषा वर्जित ७ कर्म नी प्रकृति घ० गाढा बन्धन बांधी होइ ते सि० शिथिल नन्ध ने करी करे. ज० जिम सम्वृत अणगार नों. अधिकार तिमज जाणवो न० एतलो विशेष. आ० आयुषों कर्म बांधे कदाचित् सि० कदाचित् न बांधे. से० शेष तिमज जाणवो जा० यावत् ससार थी छूटे मोक्ष जावे.

अथ इहां साधु प्रासुक. एषणीक आहार भोगवतो ७ कर्म गाढा बंध्या हुवे तो ढीला करे। संसार नें अतिक्रमी मोक्ष जाय. कह्यो। पिण पाप न कह्यो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो

इति १ बोल सम्पूर्ण।

तथा ज्ञाता अ० २ कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

एतामेव जंबू! जेणं अम्हं णिग्गंथो वा णिग्गंथी वा जाव पव्वति ते समाणे ववगय ण्हाण भद्दण पुप्फगंध मल्लालंकारे विभूसे इमस्स ओरालियस्स सरीरस्स नो वन्न हेउंवा रूवं हेउंवा विसय हेउंवा तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहार माहारेति, नन्नत्थ णाण दंसण चरित्ताणं वहणट्टयाए।

(ज्ञाता अ० २)

ए० एणी प्रकारे. पूर्व ले दृष्टान्त. ज० हे जम्बु! अ० म्हारा णि० साधु णि० साध्वी. जा० यावत् प० प्रव्रज्या ग्रही नें व० त्याग्यो छै ण्हा० स्नान मर्दन पुष्प गन्ध. माल्य अलङ्कार विभूषा जेहनें एहवा थका. इ० एह औदारिक शरीर नें. नो० नहीं. वर्ण निमित्ते रू० नहीं रूप निमित्ते वि० नहीं विषय निमित्ते वि० घणो असन पान खादिम. स्वादिम आहार देवे छै स० केवल ज्ञान. दर्शन चारित्र पालवा नें काजे आहार करे छै

अथ इहां वर्ण रूप. नें अर्थे आहार न करिवो, ज्ञान. दर्शन. चारित्र वहवानें अर्थे आहार करणो कह्यो। ते ज्ञानादिक वहण रो उपाय ने निरवद्य निर्जरा री करणी छै। पिण सावद्य पाप नों हेतु नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण।

तथा ज्ञाता अ० १८ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

एवामेव समणाउसो अम्ह णिग्गंथो वा इमस्स ओरालिय सरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स शोणियासवस्स जाव अवस्स विप्प जहियस्स णो वण्ण हेउंवा णो रूव हेउंवा णो वल हेउं वा णो विसय हेउंवा आहारं आहारेति नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणं संपावणट्ठाए ।

(ज्ञाता अ० १८)

ए० एणों प्रकारे पूर्वे दृष्टांते स० हे आयुष्यवंत श्रमणो ! अ० म्हारा णि० साधु. णि० साध्वी इ० एह ओदारिक शरीर ने. वन्ताश्रव पिताश्रव. शुक्राश्रव. शोणिताश्रव एहवा ने. जा० यावत् अ० अवश्य त्यागवा योग्य नें णो० नहीं वर्ण निमित्ते णो० नहीं रूप निमित्त णो० नहीं बल निमित्ते. णो० नहीं वि० विषय निमित्त. आहार देवे छै न० केवल ए० एक सि० मोक्ष प्राप्ति निमित्ते देवे छै

अथ इहाँ कह्यो—जे वर्ण. रूप. बल. विषय. हेते आहार न करिवो । एक सिद्धि ते मोक्ष जावा नें अर्थे आहार करिवो । जो साधु रे आहार कियां में प्रमाद. पाप. अव्रत. हुवे तो मोक्ष क्यूं कही । ए तो कार्य निरवद्य छै. शुभ योग निर्जरा री करणी छै । ते माटे मुक्ति जावा अर्थे आहार करिवो कह्यो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ३ बोल सम्पूर्ण ।

तथा दश वैकालिक अ० ५ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

जयंचरे जयं चिट्ठे जयमासे जयंसए ।
जयं भुज्जंतो भासंतो पाव कम्मं न बंधइ ॥
(दशवैकालिक अ० ४ गा० ८)

हिवे गुरु शिष्य प्रते कहे छे ज० जयणाइं च० चाले ज० जयणाइं ऊभो रहे. ज० जयणाइं बैसे ज० जयणाइ .सूवे. ज० जयणाइ जीमे. ज० जयणाइ भा० बोले तो. पा० पाप कर्म न बधे.

अथ इहां जयणा सूं भोजन करे तो पाप कर्म न बंधे एहवूं कह्यो तो आहार कियां प्रमाद. अव्रत. किम कहिए। प्रमाद थी तो पाप बंधे अनें साधु आहार कियां पाप न बंधे कह्यो ते माटे । डाहा हुए तो विचारि जोइजो ।

इति ४ बोल सम्पूर्ण ।

तथा दश वैकालिक अ० ५ कह्यो. ते लिखिये छै ।

अहो जिणेहिं असावज्जा वित्ती साहूण देसिया ।
मोक्ख साहण हेउस्स साहु देहस्स धारणा ॥
(दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० ६२)

अ० तीर्थङ्कर असावद्य ते पाप रहित. वि० वृत्ति आजीविका. सा० साधु ने देखाड़ी कही छे मो० मोक्ष साधवा नें निमित्ते स० साधु नी देह री धारणा छे

अथ इहां कह्यो—साधु नी आहार नी वृत्ति असावद्य मोक्ष साधवा नीं हेतु श्री जिनेश्वर कही । ते असावद्य मोक्ष ना हेतु नें पाप किम कहिए । ए आहार नी वृत्ति निरवद्य छै । ते माटे असावद्य मोक्ष नी हेतु कही छै । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्ण ।

तथा दश वैकालिक अ० ५ उ० १ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

दुल्लहाओ मुहादाई मुहाजीवीवि दुल्लहा ।
मुहादाई मुहाजीवी दोवि गच्छंतिसुग्गइं ॥१००॥

(दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० १००)

दु० दुर्लभ निर्दोष आहार ना दातार मु० निर्दोष आहारे करी जीवे ते पिण साधु दुर्लभ मु० निर्दोष आहार ना दातार मु० अनें निर्दोष आहार ना भोक्ता ए दोनूं. ग० जावे छै सु० मोक्ष में विषे

अथ इहां कह्यो—निर्दोष आहार ना लेणहार. अनें निर्दोष आहार ना दातार. ए दोनूं मरी शुद्ध गति नें विषे जावे छै। निर्दोष आहार ना भोगवण वाला नें सद्गति कही, ते माटे साधु नों आहार पाप में नहीं। परं मोक्ष नों मार्ग छै। पाप नों फल तो कडुवा हुवे छै। अनें इहां निर्दोष आहार भोगव्यां सद्गति कही, ते माटे निर्जरा री करणी निरवद्य आज्ञा माहि छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

तथा ठाणाङ्ग ठा० ६ कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

छहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे आहार माहारेमाणे णाइ-क्कमइ तं० वेयण वेयावच्चे. इरियट्ठाए. य संजमट्ठाए. तह-पाणवत्तियाए. छट्ठं पुण धम्म चिंताए

(ठाणांग ठा० ६ उ० १)

छ० ६ स्थान के करी नें स० श्रमण नि० निर्ग्रंथ आ० आहार प्रते मा० करतो थको. णा० आज्ञा अतिक्रमे नहिं. त० ते स्थानक कहे छै वे० वेदनी री शांति रे निमित्त. वे० वैयावच

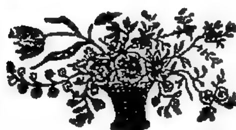
निमित्त इ० ईर्यासमति निमित्त सं० संयम निमित्त. प्रा० प्राण रक्षा निमित्त. छ० छठो. धर्म चितवनो निमित्त.

अथ इहां कह्यो । ६ स्थानके करी श्रमण निर्ग्रन्थ आहार करतो आज्ञा अतिक्रमे नहीं । तथा उत्तराध्ययन अ० ८ गा० ११-१२ में संयम यात्रा नें अर्थे. तथा शरीर निर्वाहवा नें अर्थे आहार भोगविवो कह्यो । तथा आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ३ उ० २ संयम यात्रा निर्वाहवा आहार भोगविवो कह्यो । तथा प्रश्न व्याकरण अ० १० धर्म उपकरण अपरिग्रह कह्या । पिण धर्म उपकरण नें परिग्रह में कह्यो न थी । साधु उपकरण राखे, ते पिण ममता नें अभावे परिग्रह रहित कह्या । तथा दश वैकालिक अ० ६ गा० २१ वस्त्र पात्रादिक साधु राखे मूर्च्छा रहित पणे, ते परिग्रह नहीं. एहवूं कह्यो । तथा ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० २ साधु ना उपकरण निष्परिग्रह कह्या । च्यार अकिंचणया ते मन. वचन. काया. अनें उपकरण. कह्या ते माटे । तथा ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० १ च्यार सु प्रणिधान ते भला व्यापार कह्या । मन. वचन. काया. सु प्रणिधान अनें उपकरण सु प्रणिधान ए ४ भला व्यापार साधु नें इज कह्या । पिण अनेरा नें भला न कह्या । तथा उत्तराध्ययन अ० २४ साधु आहार भोगवे ते एषणा तीजी सुमति कही । अनें प्रमाद हुवे तो सुमति किम कहिये । इत्यादिक अनेक ठामे साधु उपकरण राखे तथा आहार भोगवे तेहनों धर्म कह्यो, पिण पाप न कह्यो । तिवारे कोई कहे जो आहार कियां धर्म छै तो आहार ना पचक्खान क्यूं करे । आहार कियां पाप जाणे छै । तिण सूं आहार ना त्याग करे छै । इम कहे—तिण रे लेखे साधु काउसग्ग में चालवा रा निरवद्य बोलवारा. त्याग करे तो ए पिण पाप रा त्याग कहिणा । कोई साधु बोलवारा. वखाणरा. शिष्य करणरा. साधु री व्यावच करणरा अनें करावण रा कोई साधु नें आहार दे.ण रा. अनें तिण कनें लेवारा त्याग करे तो ए पिण तिणरे लेखे पाप रा त्याग कहिणा । पिण ए पाप रा त्याग नहीं । ए आहारादिक भोगवण रा त्याग करे ते विशेष निर्जरा नें अर्थे शुभ योग रा त्याग करे छै। केवली पिण आहार करे छै । त्यांने तो पाप लागे इज नहीं । ते पिण सन्थारो करे छै । भरत केवली आदि सन्थारा किया ते विशेष निर्जरा नें अर्थे, पिण पाप जाण नें आहार ना त्याग न कीधा । तथा कोई कहे आहार कियां धर्म छै तो घणो खायां घणो धर्म होसी । इम कहे तेहनों उत्तर—साधु नें १ प्रहर तांई ऊंचे शब्दे वखाण दियां धर्म छै

तो तिण रे लेखे आधी रात रो वखाण दियां धर्म कहिणो। तथा पडिलेहन कियां धर्म छै तो तिण रे लेखे आखोइ दिन पडिलेहन कियां धर्म कहिणो। जो मर्यादा प्रमाण वखाण दियां तथा पडिलेहन कियां धर्म छै तो आहार पिण मर्यादा सूं कियां धर्म छै। पिण मर्यादा उपरान्त आहार कियां धर्म नहीं। अनें साधु आहार कियां प्रमाद हुवे तो दातार नें धर्म किम हुवे। डाहा हुवे तो विचारि ओइजो।

इति ७ बोल सम्पूर्ण।

इति निर्ग्रन्थाऽऽहाराधिकारः।



अथ निर्ग्रन्थ निद्राऽधिकारः ।

केतला एक अज्ञानी—साधु नींद लेवे तिण नें प्रमाद कहे—आज्ञा बाहिरे कहे। तिण नें प्रमाद री ओलखणा नहीं। प्रमाद तो मोहनी कर्म रा उदय थी भाव निद्रा छै। ए द्रव्य निद्रा तो दर्शनावरणीय रा उदय थी छै। ते माटे प्रमाद नहीं प्रमाद तो आज्ञा बाहिर छै। अनें साधु निद्रा लेवे तेहनी घणे ठामे भगवन्त आज्ञा दीधी छै। दश वैकालिक अ० ४ गा० ८ में कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयंसये।
जयं भुञ्जंतो भासंतो पाव कम्मं न बंधइ ॥ ८ ॥

(दश वैकालिक अ० ४ गा० ८)

ज० जयणाइं चाले ज० जयणाइ ऊभौरहे. ज० जयणाइ बैठे अ० जयणाइ सुवै. ज० जयणाइं जीमे. ज० जयणाइं बोले तो ते साधु नें पाप कर्म न बंधे.

अथ इहां जयणा थी सूतां पाप कर्म न बंधे इम कह्यो। ए द्रव्य निद्रा प्रमाद हुवे तो सोवण री आज्ञा किम दीधी। अनें पाप न बंधे इम क्यूं कह्यो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण।

तिवारे कोई कहे ए तो सोवण री आज्ञा दीधी पिण निद्रा रो नाम न कह्यो तेहनों उत्तर—ए सूता कहो भावे द्रव्य निद्रा कहो एकहिज छै। दशवैकालिक अ० ४ कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय विरय पडिहय पव-क्खाए पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा ।

(दश वैकालिक अ० ४)

से० ते पूर्वं कह्या ५ महाव्रत सहित. भि० साधु अथवा. भि० साध्वी. सं० संयमवन्त वि० निवर्त्या छै सर्व सावद्य थकी. प० पचक्खाणे करी पाप कर्म आवता रोक्या छै. दि० दिवस में विषे. रात्रि नें विषे अथवा. ए० एकाकी थको. अथवा. प० पर्षद् माही बैठो थको अथवा. सु० रात्रि ने विषे सूतो थको. जा० जागतो थको.

अथ इहां "सुत्ते" ते निद्रालेता. "जागरमाणे" ते जागता कह्या । ते माटे "सुत्ते" नाम निद्रावन्त नों छै । साधु निद्रा लेवे ते आज्ञा माहि छै । ते माटे पाप नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

तथा भगवती श० १६ उ० ६ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

सुत्तेणं भंते ! सुविणं पासइ जागरे सुविणं पासइ सुत्त-जागरे सुविणं पासइ गोयमा ! णो सुत्ते सुविणं पासइ णो जागरे सुविणं पासइ सुत्त जागरे सुविणं पासइ ॥ २ ॥

(भगवती श० १६ उ० ६)

सु० सुत्तो. भं० हे भगवन् ! सु० स्वप्न. पा० देखे. जा० जागतो स्वप्नो देखे. सु० अथ . कांई सूतो कांई जागतो स्वप्नो देखे. गो० हे गोतम ! णो० नहीं सूतो स्वप्न देखे णो० नहीं जागतो स्वप्न देखे. सु० कांइक सूतो कांइक जागतो स्वप्न देखे.

अथ इहाँ कह्यो—सूतो स्वप्नो न देखे जागतो पिण न देखे। कांइक सूतो कांइक जागतो स्वप्नो देखतो कह्यो। ते "सुत्ते" नाम निद्रा नों "जागरे" नाम नाम जागता नों छै। पिण भाव निद्रा नी अपेक्षाय ए "सुत्ते" न कह्यो। द्रव्य निद्रा नी अपेक्षाय इज कह्यो छै। तेहनी टीका में पिण इम कह्यो ते टीका लिखिये छै।

"नाति सुप्तो नाति जाग्रदित्यर्थः। इह सुप्तो जागरश्च द्रव्यभावाभ्यां स्यात् तत्र द्रव्य निद्रापेक्षया भावतश्चा विरत्यपेक्षया। तत्र स्वप्न व्यतिकरो निद्रा-पेक्ष उक्तः।

इहाँ पिण द्रव्य निद्रा भाव निद्रा कही छै। ते भाव निद्रा थी पाप लागे पिण द्रव्य निद्रा थी पाप न लागे। अनेक ठामे सूवणो ते निद्रा नों नाम कह्यो छै। ते माटे जयणा थी सूतां पाप न लागे, सूवण री आज्ञा छै ते माटे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

तथा उत्तराध्ययन अ० २६ कह्यो—ते पाठ लिखिये छै।

पढमं पोरिसि सज्झायं बीतियं झाणं झियायई।
तइयाए निद्दमोक्खंतु चउत्थी भुजो वि सज्झायं॥

(उत्तराध्ययन अ० २६ गा० १८)

प० पहिली पौरिसी में. स० स्वाध्याय करे. बि० बीजी पौरसी में ध्यान ध्यावे. त० तीजी पौरसी में. नि० निद्रा मूके च० चौथी पौरसी में भु० वली स० स्वाध्याय करे.

अथ इहां अभिग्रह धारी साधु पिण तीजी पौरसी में निद्रा मूके कह्यो। ते देशी भाषाइं करी किहांइ निद्रा काढ़े किहांइ निद्रा लेवे कहे। किहांइ निद्रा मूके

इम कहे। ए तीजी पौरसीइं निद्रा नी आज्ञा अभिग्रहधारी नें पिण दीधी। अनें प्रमाद नी तो एक समय मात्र पिण आज्ञा नहीं। "समयं गोयमा! मापमायए" एहवूं उत्तराध्ययने कह्यो ते माटे ए द्रव्य निद्रा प्रमाद नहीं। परं आज्ञा माहि छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

तथा वृहत्कल्प उ० १ कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

नो कप्पइ निगंथाणं वा निगंथीणं वा दगतीरंसी—चिट्ठित्तएवा. निसीइत्तएवा. तुयट्टित्तएवा. निद्दाइत्तएवा. पयलाइत्तएवा, असणंवा. पाणंवा. खाइमंवा. साइमंवा. आहार माहारेत्तए, उच्चारंवा. पासवणंवा. खेलंवा. सिङ्घाणं वा. परिट्ठवेत्तए. सज्झायंवा. करेत्तए. झाणंवा झाइत्तए काउसग्गंवा ट्ठाणंवा ट्ठाइत्तए ॥ १८ ॥

(वृहत्कल्प उ० १)

नो० नहीं कल्पे. नि० साधु नें. तथा. नि० साध्वी नें द० पाणी नें तीरे अर्थात् नदी तलाव प्रमुख नें तीरे ऊभौ रहिवौ. नि० अथवा वैसवो. तु० अथवा शयन करवो अथवा. नि० थोड़ी निद्रा लेवी. प० अथवा विशेष निद्रा लेवी. अ० अशन. पा० पान खा० खादिम सा० स्वादिम. आ० आहार खावो उ० बड़ो नीत पा० छोटी नीत. खे० खेल कहितां वलखादिक. सि० नासिका नों मल. प० परिठवो न कल्पे स० स्वाध्याय करवी न कल्पे. झा० ध्यान ध्यात्रो न कल्पे. का० कायोत्सर्ग करवो. ठा० तिहां पाणी नें तीरे साधु साध्वी न रहे तिहां पाणी पीवा नों मन थाय तथा लोक इम जाणे जे पाणी पीवा वैठो छै तथा जलचर जीव जल माहिला त्रास पामे. ते माटे न कल्पे.

अथ इहां कह्यो—पाणी ना तीरे ऊभो रहिवो. बैसवो. निद्रादि लेवी स्वाध्याय ध्यानादिक न कल्पे। ए सर्व पाणी ना तीरे वर्ज्या। पिण और जगां ए बोल वर्ज्या नहीं। जिम अनेरी जगां स्वाध्याय. ध्यान. अशनादिक करणा कल्पे। तिम अनेरी जगां निद्रा पिण लेवी कल्पे। ए तो सर्व बोलां री जिन आज्ञा छै, तिण में प्रमाद नहीं। जिम स्वाध्याय. ध्यान. अशनादिक में पाप नहीं तो निद्रा में पाप किम कहिए। ए सर्व बोलां री आज्ञा छै के मारे तथा बृहत्कल्प उ० ३ कह्यो। न कल्पे साधु नें साध्वी नें स्थानक विकट वेलाइं स्वाध्यायादिक करवी. निद्रा लेवी. इम कह्यो। पिण अनेरे ठामे स्वाध्याय निद्रादिक वर्जी नथी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

तथा बृहत्कल्प उ० ३ कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

नो कप्पइ निग्गंथाणं वा निग्गंथीणं वा अंतरगिहंसि आसइत्तएवा चिट्ठित्तएवा निसीइत्तएवा तुयहित्तएवा निद्दाइत्तएवा पयलाइत्तएवा असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा आहार माहारित्तए. उच्चारंवा पासवणंवा खेलंवा सिंघाणं वा परिट्ठवेत्तए सज्झायंवा करेत्तए. झाणंवा झाइत्तए. काउसग्गंवा करित्तए ठाणं वा ठाइत्तए अहपुण एवं जाणेज्जा जराजुण्णे वाहिए. तवस्सी दुब्बले किलं ते मुच्छेज्जवा पवडेज्जवा एवं से कप्पइ अंतरागिहंसि आसइत्तएवा जाव ठाणंवा ठाइत्तए ॥ २२ ॥

(बृहत्कल्प उ० ३)

नो० न कल्पे नि० साधु नें तथा नि० साध्वी नें. अ० गृहस्थ ना अन्तर घर नें विषे. चि० ऊभो रहवो नि० बैठवो. तु० सूयवो. नि० थोड़ी निद्रा करवी. प० विशेष निद्रा करवी अ० अशन. पान. खादिम. स्वादिम. आहार खावो. तथा. उ० वड़ी नीति पा० छोटी नीति. खे० खलखादिक सि० नासिका नों मल परिठवो तथा. सा० स्वाध्याय करवो. झा० ध्यान ध्यावो का० कयोत्सर्ग करवो. ठा० स्थान ठावो न कल्पे अ० हिवे पु० वली ए० इम जाणवा ज० जरा जीर्ण वा० रोगियो. थे० वृद्ध. त० तपस्वी. दु० दुर्वल कि० क्लामना पाम्यो थको. मु०मूर्च्छा पाम्यो. प० पड़तो थको. ए० एहवा नें. क० कल्पे अ० गृहस्थ ना घर नें विचाले. आ० बैसवो सूयवो जाव कहितां यावत् स्थान ठायवो.

अथ इहां कह्यो—गृहस्थ ना अन्तर घर नें विषे साधु नें स्वाध्यायादिक निद्रा पिण न कल्पे। जे अन्तर घर नें विषे न कल्पे तो अन्तर घर विना अनेरा घर नें विषे तो स्वाध्यायादिक निद्रादिक कल्पे छै। ते माटे अन्तर गृह में ए बोल वर्ज्या छै। जिम स्वाध्याय ध्यानादिक और जगां कल्पे तिम निद्रा पिण कल्पे छै। अनें जे व्याधिवन्त. स्थविर (वृद्ध) तपस्वी छै, तेहनें ए सब बोल अन्तर घर नें विषे पिण कल्पे छै। तिण में निद्रा पिण लेणी कही, तो जे निद्रा प्रमाद हुवे तो प्रमाद नी तो रोगी. तपस्वी. वृद्ध नें पिण आज्ञा देवे नहीं। ते माटे ए द्रव्य निद्रा प्रमाद नहीं। अन्तर घर ते रसोड़ादिक घर विचाले जगां नें कह्यो छै। अन्तर शब्द मध्यवाची छै। ते घरे रोगियादिक नें पिण निद्रा लेवी कही। ते माटे ए द्रव्य निद्रा प्रमाद नहीं, प्रमाद तो भाव निद्रा छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

तिवारे कोई कहे—द्रव्य निद्रा किहां कही. तेहनों उत्तर—सूत्र पाठ थी कहे छै।

सुत्ता अमुणीसया। मुणिणो सया जागरंति॥ १॥

(आचाराङ्ग अ० ३ उ० १)

सु० मिथ्यात्व अज्ञान रूप मोह निद्राइ करी "सुत्ता" ते अ० मिथ्यादृष्टि जायावो मुणी. तत्व ज्ञान ना जाया ग्राहार मुक्ति मार्ग नों गवेपक. स० सदा निरन्तर जा० जागे हित समाचरे अहित परिहरे यदपि बीजी पौरसी आदि निद्रा करे तथापि भाव निद्रा नें अभावे ते जागता इज कहिइ.

अथ इहां कह्यो—मिथ्यात्व अज्ञान रूप मोह निद्रा करी सुत्ता अमुणी मिथ्यादृष्टि कह्या। अनें साधु नें जागता कह्या। ते निद्रा लेवे तो पिण भाव निद्रा नें अभावे जागता कह्या। ते भाव निद्रा थी अहित कह्यो। पिण द्रव्य निद्रा थी अहित न कह्यो। ते माटे द्रव्य निद्रा थी अहित नथी। तथा भगवती श० १६ उ० ६ "सुत्तांजागरा" नें अधिकारे अर्थ में द्रव्य निद्रा भाव निद्रा कही छै। तिहां भाव निद्रा थी तो पाप लागो छै। अनें द्रव्य निद्रा थी तो जीव दवे छै। पिण पाप न लागे। एक मोहनी रा उदय विना और कर्म रा उदय थी पाप न लागे। निद्रा में स्वप्नो आवे ते मोहनी रा उदय थी, ते भाव निद्रा छै, तेहथी पाप लागे। "थिणद्धि" निद्रा तो दर्शनावरणी रै उदय। अर्द्ध वासुदेव नों बल ते अन्तराय कर्म ना क्षयोपशम थी, माठा कार्य करे ते मोहनी रा उदय थी, जेतला मोह कर्म नां उदय थी कार्य करै ते सर्व भाव निद्रा छै कर्म बन्ध नों कारण छै। पिण द्रव्य निद्रा पाप नों कारण नथी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ७ बोलसंपूर्ण।

इति निर्ग्रन्थ निद्राऽधिकारः।

अथ एकाकिसाधुअधिकारः ।

केतला एक अज्ञानी कहे—कारण बिना पिण साधु नें एकलो विचरणो कल्पे इम कहे ते सूत्र ना अजाण छै। कारण विना एकलो फिरे तिण नें तो भगवन्त सूत्र में ठाम २ निषेध्यो छै। तथा व्यवहार उ० ६ कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

से गामंसिवा जाव संनिवेसंसि वा अभिणिणवगडाए. अभिणिण दुवाराए अभि णिक्खमण पेसवाए नोकप्पति बहु-सुयस्स वज्झागमस्स एगाणियस्स भिक्खुस्सवत्थए. किमं गपुण अप्पसुयस्स अप्पागमस्स ॥१४॥

(व्यवहार उ० ६)

से० ते ग्राम नें विषे जा० यावत्. सं० सन्निवेश सराय प्रमुख नें विषे अ० प्रत्येक कोट में वाडी वरडो हुवे अ० जुआ २ बारणा हुइ प्रत्येक जुदा २ निकलवा ना मार्ग छै. प० प्रवेश करवा ना मार्ग छै. तिहां. नो० न कल्पे. व० बहुश्रुति नें व० घणा आगम ना जाण नें. ए० एकाकी पणो. भि० साधु नें व० रहिवो. जो बहुश्रुति ने एकलो रहिवो सो कि० किस्यू कहिवो. पु० वली अल्प आगम ना जाण. भि० साधु नें जे ग्रामादिके घणा जुदा २ बारणा जुदा २ ठाम होय घणा फेर मा होय तिहां एककी बहुश्रुति थको पिण पाप अनाचार सेवा लहे अनें जो एक ठां हुइ तो बहुश्रुति तिहां वसतो थको पाप अनाचार लज्याइं न सेवो सके.

अथ इहां कह्यो—जे ग्रामादिक ना घणा निकाल पैंसार हुवे। तिहां बहुश्रुति घणा आगम ना जाण नें पिण एकाकी पणे न कल्पे तो किस्यूं कहिवो अल्प आगम ना जाण नें इहां तो प्रत्यक्ष एकलो रहिवो बर्ज्यो छै। ते माटे एकलो रहे तेहनें साधु किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

तिवारे कोई कहे—ए तो एक जगां थानक ना घणा निकाल पैसार हुवे तिहां ए रहिवो वर्ज्यो छै। तेहनों उत्तर—जे ग्रामादिक ना घणा निकाल पैसार हुवे तिहां "अगड़सुया" साधु नें रहिवो न कल्पे। तिहां पिण एहवो इज कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

से गामंसित्रा जाव सन्निवेसंसित्रा. अभिणिवगडाए अभिनिदुवाराए. अभिनिक्खमण प्पवेसणाए नोकप्पति बहुणं अगड सुयाणं एगयओवत्थए ॥१३॥

(व्यवहार उ० ६)

से० ते ग्राम ने विषे. जा० यावत् स० सन्निवेश सराय प्रमुख ने विषे अ० प्रत्येक २ जुदा २ कोटादिक होइ जुदा २ परिखेर हुइ स्थापना घणा निकलवा ना मार्ग छै. घणा पेसवा मार्ग छै तिहां. नो० न कल्पे घणा अगीतार्थ ने एकला रहिवो

अथ इहां पिण ग्रामादिक ना घणा दरवाजा हुवे, तिहां घणा अगड़सुया ते निशीथ ना अजाण तेहनें न कल्पे, इम कह्यो। तो तेहने लेखे ए पिण एक जगां घणा वारणा कहिवा। अनें जो ग्रामादिक ना घणा वारणा छै। तिण ग्रामादिक में अगडसुया नें न कल्पे तो तिहाँ एकला बहुश्रुति नें पिण वर्ज्यो छै। ते माटे ते ग्रामादिक ना घणा वारणा छै ते ग्रामादिक में बहुश्रुति नें एकलो रहिवो नहीं। एक निकाल ते ग्रामादिक में पिण अगडसुया न वर्ज्यो छै। अनें बहुश्रुति एकला नें अहोरात्र सावधान पणे रहिवूं कह्यो छै। ते ग्रामादिक आश्री छै। पिण स्थान आश्री नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वृहत्कल्प उ० १ कह्यो—जे ग्रामादिक ना एक निकाल तिहां साधु साध्वी नें एकडा न रहिवा। अनें घणा वारणा तिहां रहिवो कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

से गामंसि वा जाव राय हाणिंसिवा अभिनिवगडाए. अभिनिदुवाराए. अभिनिक्खमण पवेसाए. कप्पइ निग्गंथाणय निग्गंथीणय एकत्तउवत्थए ।

(वृहत्काल उ० १ बो० ११)

से० ते गा० ग्रामादिक नें विषे जा० यावत् पाछला बोल लेवा. राजधानी. तिहां अ० जुदा २ गढ़ हुवे अ० जुदा २ बारणा हुवे जुदा २ निकलवा ना पेसवा ना मार्ग हुवे तिहां कल्पे साधु नें साध्वी ने एकठा वसवा.

अथ इहां घणा बारणा ते ग्रामादिक में साधु साध्वी नें रहिवा कह्या । ते ग्रामादिक ना घणा निकाल आश्री पिण स्थानक ना घणा बारणा आश्री नहीं । तिम बहुश्रुति एकला नें घणा बारणा निकाल पैसार हुवे ते ग्रामादिक में न रहिवो । ए पिण ग्राम ना घणा निकाल आश्री कह्या । पिण स्थानक आश्री नहीं । अनें जे एक स्थानक ना घणा बारणा हुवे तिहां एकल बहुश्रुति नें न रहिवूं इम कहे तिण रे लेखे एक स्थानक ना घणा निकाल हुवे ते स्थानक साधु साध्वी नें पिण भेलो रहिवूं । पिण ए तो ग्रामादिक ना घणा दरवाजा तिहां बहुश्रुति नें एकलो रहिवूं वर्ज्यो छै, तो अल्पश्रुति नें किम रहिवो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ३ बोल सम्पूर्ण ।

तथा एकलो रहे तेहमें ८ अवगुण कह्या ते पाठ लिखिये छै ।

पासह एगे रूवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे एत्थ फासे पुणो पुणो. आवंतिकेआवंति लोयंसी आरंभजीवी ॥७॥ एएसु चेव आरंभजीवी एत्थविबाले परिपच्चमाणे रमति पावेहिं कम्मेहिं असरणं सरणंति मरणमाणे ॥८॥ इह मेगेसिं एग

चरिया भवति। से बहु कोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोहेबहुरए बहुनेनड बहुसढे बहुसंकप्पे आसव सक्की पलिओछन्ने उट्ठिय वायं पवयमाणे "मा मेकेइ अदक्खू" अन्नाण पमाय दोसेणं सततं मूढे धम्मं णाभिजाणाति ॥४॥ अट्टापया माणव कम्मकोविया जे अणुवरया अविज्जाए पलिमोक्खमाहु अवट्टमेव मणुपरियट्टंति त्तिबेमि।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० १)

पा० देखो ए० केतलाक. रू० रूप ने विषे वृद्ध प० परिणमता थका ए० इहां. फ० स्पर्श पु० वारम्वार. आ० जेतला के० ते माहि थकी केइ लो० लोक मनुष्य लोक ने विषे. आ० सावद्य अनुष्ठाने करी जी० आजीविका करे ते दुःख भोगवे एतले गृहस्थ देखाड्या वली अनेरा ने देखाडे छै. ए० ए सावद्य आरम्भ ने विषे प्रवर्त्तता गृहस्थ तेहने विषे शरीर निर्वाह नें काजे प्रवर्त्ततो अनय तीर्थी तथा पासत्थादिक द्रव्य लिंगी थई 'आरम्भ जीवी थाइ'. सावद्य अनुष्ठाने वर्त्तें ते पिण एहवा दुःख पामे तथा. गृहस्थ पिण वेगला रहो. 'तीर्थिक अने' दर्शनी ते पिण वेगला रहो जे ससार समुद्र ने तीर सम्यक्त्व पामी वीर परिणाम लही कर्म नें उदय ते पिण सावद्य अनुष्ठान नें विषे प्रवर्त्तें तो अनेरा नों किस्यू कहिवो इम देखाडे छै. ए० एणे अरिहन्त भाषित सयम नें विषे. बा० बाल अज्ञानी राग द्वेष व्याकुल चित्त विषय तृष्णाइं पीडातो छतो र० रमे रति करे पा० पाप कर्मे करी सावद्य अनुष्ठान ने स्यू जागतो छतो करे. ते कहे छै। अ० जे जीवां ने दुर्गति पडतां शरण न थाइ ते अशरणक सावद्य अनुष्ठान तेहिज. स० शरण सुख नू कारण म० मानतो थको अनेक वेदना नारकादिक ने विषे भोगवे वली एहिज नों विशेष कहे छै. इण मनुष्य लोक ने विषे. एकएक विषय. कषाय निमित्ते. ए० एकाकी पणे भमवो थाइ घणा परिवार माहि रहिता परिवार मी शकाइ विषय सेवी न सके ते भणी एकलो हींडे स्वेच्छाचारी थाइ केहवो हुवे ते कहे छै. से० ते विषय गृद्ध एकलो भमतो अकालचारी देखी लोके पराभवतो ब० घणो क्रोध वर्त्तें ब० अणवांदतो मानव हैं तू किस्यू वांदसी मुझ ने घणाइं वांदे छ इम माने वर्त्तें. ब० तप अकरवे तप कहे तथा रोगादिक कारण विना इ कहि लाये घणी माया करे. ब० सर्व आहार शुद्ध अशुद्ध ने लेवे बहुलोभ एहवो छतो ब० वज्र पाप जाणवो तथा रे घणा आरम्भ नें विषे रत न० नटनो परे भोग नो अर्थी थको बहु वेष धरं. ब० घणे प्रकारे करी मूर्ख ब० घणा मन ना अध्यवसाय नें विषे वर्त्तें एहवो छतो हिंसादिक आश्रव ने विषे स० आ८क तथा प० कर्मे करी आच्छाद्यो एहवो

पिण स्यूं बोले ते कहे छै. सु० आपणपे धर्म आचरण नें विषे उठ्यो उद्यमवन्त. इम वाद बोलतो एतावता हूं "चरित्रियो छू" एहवो बोलतो परं अशुद्ध वर्त्ते इम करतो आजीविकाय नों बहितो किम प्रवर्त्ते ते कहे छै. मा० मुझनें. के० केइ अकार्य करता देखे एह भणी छानों अकार्य करे अ० अज्ञान प्रमाद ने दो० दोषे करी स० निरन्तर मू० मूढ़ मूर्ख मोह्यो छतो ध० धर्म न जाणे अधर्म्में प्रवर्त्ते अ० विषय कषायादिक री आर्त्त व्याकुल एहवा थया जीव भा० अहो मानव ! क० ते कर्म अष्ट प्रकार बांधवा ने विषे को० पण्डित पर धर्म अनुष्ठान ने विषे पण्डित न थी. जे० पाप अनुष्ठान थकी अनिवृत्त अ० ज्ञान चारित्र थकी विपरीत मार्गे प० संसार नों उत्तरणा मोक्ष. मा० कहे ते पर सत्य धर्म न जाणे ते धर्म अजाणा तो स्यू पामे. ते भाव कहे छै. आ० संसार तेहने विषे अरहट घटिका ने न्याय भ्रमण तेणे नरकादि गति ते विषे वली २ भ्रमण करे श्री सुधर्मा स्वामी जम्बू स्वामी प्रति कहे छै

अथ इहां पिण एकलो रहे तिण में आठ दोष कह्या । बहुक्रोधी. मानी. मायी. लोभी. कह्यो । घणो पाप करवे रक्त घणो नटनी परे वेष धरे. घणो धूर्त. घणो सङ्कल्प. क्लेश. घणो कह्यो । वली पाप कर्म बाँधण नें पण्डित कह्यो । कदाचित् कोई माहरो अकार्य देखे इम जाणो नें छाने २ अकार्य करे । इत्यादिक एकला में अनेक अवगुण कह्या । ते माटे एकलो रहे तिण नें साधु किम कहिए । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ४ बोल सम्पूर्ण ।

तथा आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

गामाणु गामं दूइज्ज माणस्स दुज्जातं दुप्परिक्कंतं भवति अवियत्तस्स भिक्खुणो ॥१॥ वयसावि एग चोइया कुप्पंति माणवा उन्नय माणेय णरे महता मोहेण मुज्झति संबाह बहवो भुज्जो दुरतिक्कमा अजाणतो अपासतो एयंते माउ होउ एयं कुसलस्स दंसणं ॥२॥ तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए तपुरक्कारे तस्सनी तन्नीवेसणे जयं विहारी चित्त णिवाति पंथ णि-

उझाती वलि बाहिरे पासिय पणो गच्छेज्जा । से अभिक्कम-माणे संकुंच माणे पसारे माणे विणियट्ट माणे संपलिमज्ज माणे ॥३॥

(आचारांङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० ४)

गा० ग्रामानुग्राम विचरतां एकाकी साधु ने . दु० दुष्ट मन थाइ जावतां आवतां अण-गमतां उपसर्ग ते उपजे अरहन्नक नी परे भलो न थाइ तथा. दु० दुष्ट पराक्रम नों स्थानक एकाएकी ने भ० थाइ एतावता एकाकी स्थानक न पामे स्थूल भद्र वेश्या ने घरे गया साधु नी परे इम समस्त ने थाइ किन्तु जेहवा न होइ ते कहे छै. अ० अव्यक्त साधु नें जे सूत्रे करी अव्यक्त तथा वय करी अव्यक्त सूत्रे करी अव्यक्त ते कहिइ. जिण आचाराङ्ग पूरो सूत्र थकी भण्यो न हुवे गच्छ में रह्या साधु नी स्थिति अने गच्छ थकी निकल्या ने नवमा पूर्व नी तीजी वस्तु भणी न होइ ते सूत्र अव्यक्त तथा वय करी अव्यक्त ते कहिये जे गच्छ माहि रह्यो १६ वर्ष में वर्त्तें अनें गच्छ बाहिर ३० वर्ष माहि ते वय अव्यक्त हुइ . इहां अव्यक्त नी चउभङ्गी छै सूत्र अने वये करी जे अव्यक्त तेहनें एकलो रहियो न कल्पे सयम अनें आत्मा नी विराधना थाइं ते भणी पहिलो भांगो थाइ . तथा सूत्रे करी अव्यक्त वये करी व्यक्त तेहनें पिण एकल पणो न कल्पे. अगीतार्थ पणे सयस अनें आत्मा नी विराधना थाइ . ए बीजो भांगो तथा सूत्रे करी व्यक्त अनें वय करी अव्यक्त तेहने पिण एकलो न कल्पे बाल पणा ने भावे सर्व लोक पराभववानों ठाम थाइं तीजो भांगा तथा सूत्र अने वये करी व्यक्त एहने गुरु नें आदेशे एकलचर्या कल्पे. पिण आदेश विना न कल्पे जे भणी गुरु आज्ञा विना एकलो रहे तेहवा ने पिण घणा दोष उपजे. परं ते दोष गच्छ माहि रह्या ने न उपजे गुरु ने आदेशे प्रवर्त्तातां घणा गुण उपजे. तिणं दोष नहीं. भि० साधु नें वली कर्म वशी एक गुरु नों पिण वचन न माने ते कहे छै व० कियाहि एक तप सयम ने विषे सीदावता हुंता श्री गुरु धर्मवचने. ए० एक अज्ञानी चोया प्रेर्या हुंता. कु० क्रोध ने वशी हुवे म० मनुष्य इम कहे हूं घणा एतला साधु माहि रहि न सकू कांई में स्यू करस्यो अनेरा पिण सहू इमज वर्त्तें छै तेहने स्यू न कहो एणी परे ते उ० अभिमान ने आपणपो मोटो मानतो न० मनुष्य मो० प्रवल मोहनीय ने उदय मूरखो कार्य अकार्य विवेक विकल थाइ ते मोहे माहितो छतो मान पर्वते चढ्यो अति क्रोधे करी गच्छ थकी निकसे तेहनें ग्रामानु-ग्राम एकाकी पणे हिडता जे हुइ ते कहे छै स० जे अव्यक्त एकाकी हिडता ने बाधा पीडा ते उपसर्ग थकी ऊपनी घणी थाइ मु० वली ॰ उल्लघता दोहिली. केहवा ने दुरतिक्रम कहिये ए अर्थ अ० ते पीडा अहियासवा नों अणजाणता अणदेखता ने पीडा लांघतां समतां दोहिली होइ एहवो देखाडी भग वान् वली शिष्य प्रते कहे छै ए० एकला रह्या नें आबाधा अतिक्रमतां

दुर्लभ पणो माहरे उपदेशे वर्त्ततां ते तुझ नें. मा० मा हुज्यो आगमानुसारे सदागच्छ मध्यवर्त्ती थाइं श्री वर्धमान स्वामी कहे छै ए पूर्वे कह्यो ते. कु० श्री वर्द्धमान स्वामी नों दर्शन अभिप्राय जाणवो एकलो विचरे तेहनें घणा दोष. इम जाणी सदा आचार्य गुरु समीपे वर्त्ततां नें घणा गुण छै हिवे आचार्य समीपे किम प्रवर्त्ते ते कहे छै. त० ते आचार्य गुरु नें दृष्टि अभिप्राय चाले प्रवर्त्ते त० मुक्त सर्व संग विरति तेणे करी सदा यत्न करवो. एतावता लोभ रहित. त० ते आचार्य नों पुरस्कार सर्व धर्मकार्य नें विषे आगिल स्थापवो एहवो छते प्रवर्त्तवो त० ते आचार्य नी सं० सज्ञो ज्ञान तेणे वर्त्ते मतु आपणी मति प्रवर्त्तावी नें कार्य करवो त० ते आचार्य नों स्थानक छै जेहनें एतावता गुरुकुल वासे वसिवो तिहां वसतो केहवो थाइं ते कहे छै ज० जयणाइं. वि० विचरे. एतावता जीव हिंसा टालतो पडिलेहणादि क्रिया करे चि० आचार्य ना चित्त नें अभिप्राये वर्त्ते तथा प० गुरु किहांइ पोहता हुइ तेहनों पन्थ जोवे तथा शयन करवा वांछतो जाणी संथारो करे तथा क्षुधा जाणी आहार गवेषे इत्यादिक गुरु नों आराधक थाइं प० गुरु नी अवग्रह थकी कार्य विना बाहिर न रहे. अवग्रह मांहि रहतां सदाइ वन्दना वेयावचादि कार्य विना बाहिर असातना थाइं इस्यो जाणी अवग्रह बाहिर न रहे पा० गुरु किहांइ मोकल्यो हुवे तो भूसर प्रमाणे पन्थ नें विषे. पा० प्राणी जीव. पा० दृष्ट जावतो ग० जाइ पर विध्वस पणे न हींडे ईर्यासमति सू चाले से० ते. अ० आवे प० जावे. स० सकोचन करे. प० प्रसार करे. वि० निवर्त्ते प० प्रमार्जन करे.

अथ इहां अव्यक्त दुष्ट रहिवो स्थानक ने विषे अनें दुष्ट गमन विचरवो पिण दुष्ट कह्यो ते अव्यक्त नों अर्थ इम कह्यो छै। जे १६ वर्ष मांहि ते वय अव्यक्त, अनें निशीथ नों अजाण ते सूत्र अव्यक्त, ए तो गच्छ माहि रह्या नी स्थिति। अनें गच्छ माहि थी निकल्या नें ३० वर्ष माहि वय अव्यक्त अनें नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु भण्यो नहीं ते सूत्र अव्यक्त। ते व्यक्त अव्यक्त नींचो भंगी श्रुत अव्यक्त. अने व्यक्त. तेहनें एकलो रहिवो न कल्पे। तथा वय अव्यक्त अनें सूत्र व्यक्त तेहनें पिण एकल पणो न कल्पे। तथा सूत्र अव्यक्त अनें वय अव्यक्त नें पिण एकल पणो न कल्पे। अनें सूत्र करी व्यक्त अनें वय करी व्यक्त गुरु ने आदेशे तेहनें एकल पणो कल्पे। इहां पिण नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु भण्या विना अव्यक्त नें एकल रहिवो विचरवो वर्ज्यो। तो जे श्री वीतराग नी आज्ञा लोपी नें एकल रहे त्यां नें साधु किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ५ बोल सम्पूर्ण ।

तथा ठाणाङ्ग ठा० ८ कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

अट्ठहिं ठाणेहिं सम्पन्ने अणगारे अरिहइ एगल्ल विहार पडिमं उवसंपजित्ताणं विहरित्तए तं० सड्ढी पुरिस जाए, सच्चे पुरिसजाए. मेहावी पुरिसजाए. बहुस्सुए पुरिसजाए सत्तिमं अप्पाहिगरणे धिइमं वीरिय संपन्ने ॥१॥

(ठाणांग ठा० ८)

अ० आठ ठा० स्थानक गुण विशेष करी सयुक्त अ० अणगार अ० योग्य थाइ ए० एकाकी नू. वि० ग्रामादिक नें विषे जावू ते. प० प्रतिमा अभिग्रह ते एकाकी विहार प्रतिमा अथवा जिन कल्पिक ने प्रतिमा अथवा मासादिक भिक्खू नी प्रतिमा पडिवज्जी ने. वि० ग्रामादिक ने विषे विचरवा योग्य थाइ. ते कहे छै. श्रद्धा तत्व श्रद्धवो अथवा अनुष्ठान नें विषे अभिलाष. ते सहित स० सर्व इन्द्रादिक पिण चाली न सके सम्यक्त्व चोर थकी, पुरुष जाति ते पुरुष प्रकार ए अर्थ. स० सत्यवादी प्रतिज्ञा शूर पणा थकी. मेहावी श्रुत ग्रहवानी शक्ति सहित अथवा मर्यादावर्त्ती एहिज भणी. ब० सूत्र अर्थ थकी आगम भणो छै जेहनें जघन्य तो नवमा पूर्व नी तीजी वस्तु नों जाण उत्कृष्टो असम्पूर्ण दश पूर्वधर स० समर्थ ५ विधे तुलना कोधी तप श्रुत. एकत्व पणु सत्वे करी अनें शरीर नी समर्थाइ करी जिन कल्पी नें ए ५ प्रकार नी तुल्यता करवी अ० कलहकारो नहीं चित्तना स्वास्थ पणा सहित अरति रति अनुलोम प्रतिलोम उपसर्ग नू सहणहार. अधिक उत्साह सहित इहां जे छेहला ४ शब्द ने पुरुष जाति शब्द नथी. पिण धुरला चौकडा नें विषे छै. तेह भणी इहां पिण जाणवू.

अथ इहां आठ गुणा सहित नें एकल पडिमा योग्य कह्यो ते आठ गुण, श्रद्धा में सैंठो देव डिगायो डिगे नहीं. सत्यवादी. मेधावी ते मर्यादावान् "बहुस्सुए" नों अर्थ इम कह्यो—जे जघन्य नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु नों जाण शक्तिवान्, कलहकारी नहीं. धैर्यवन्त. उत्साह वीर्यवान् ए आठ गुणा में नवमी पूर्व नी तीजी वत्थु ना जाण ने सकल पडिमा योग्य रहियो कह्यो । ते माटे नवमा पूर्व. तीजी वत्थु भण्या विना एकल फिरे ते जिन आज्ञा बाहिरे छै । तिवारे कोई ६ गुणा ना धणी नें गण धारणो कह्यो तिण में पिण "बहुस्सुयवा" पाठ कह्यो छै । ते माटे नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु भण्या विना एकल पणो न कल्पे । तो नवमा पूर्व नी

तीजी वत्थु भण्या विना गण धारवा योग न कह्यो ते माटे टोलो करणो पिण न कल्पे। इम कहे तेहनों उत्तर—छ गुणा सहित साधु नें गण धरवो कह्यो ते "गणं गच्छं धारयितुं" ते गण गच्छ नों धारवो ते पालवो अर्थ कियो छै। ते गण गच्छ नों स्वामी ६ गुणा रा धणी नें कह्यो। तिहां ६ गुणा में "बहुस्सुए" नो अर्थ घणा सूत्र नों जाण एहवूं अर्थ कियो पिण नवमा पूर्व नों नाम न थी चाल्यो। अनें ८ गुण एकला ना कह्या। तिण मे "बहुस्सुए" नों अर्थ नवमा पूर्व नी तीजी वस्तु कही छै। ते माटे गच्छ ना स्वामी नें नवमा पूर्व नों नियम न थी। डाहा हुए तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

तिवारे कोई कहे—६ गुणामें अनें आठ गुणा में पाठ तो एक सरीखो छै। अनें अर्थ में ८ गुणा में तो नवमा पूर्व नों जाण ते बहुस्सए अनें ६ गुणा में घणा सूत्र नों जाण ते बहुस्सुए पिण पूर्व न कह्या। एहवो अर्थ मे फेर क्यूं एक सरीखा पाठ नों अर्थ पिण एक सरीखो कहिणो। इम कहे तेहनों उत्तर उवाई में प्रश्न २० २१ में साधु नें अनें श्रावक नें पाठ एक सरीखा कह्या। ते पाठ लिखिये।

धम्मिया धम्माणुया धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मपलोइ धम्म पलज्जणा धम्म समुदायरा धम्मेणं चेव वित्ति कप्पे-माणा सुसीला सुव्वया सुपडियाणंदा साहु ॥ ६४ ॥

(उवाई प्रश्न २०-२१)

ध० धम श्रुत चारित्र रूप ना करणहार. ध० धर्मश्रुत चारित्र रूप ने केडे चाले छै ध० धर्मिष्ठ धर्म नी चेष्टा रूडी छै. ध० धर्मश्रुत. चारित्र. रूप नें सभलावे ते धर्मख्यात कहिवूं. ध० धर्मश्रुत चारित्र रूप में ग्रहवा योग्य जाणी वार वार तिहां दृष्टि प्रवर्त्तावे ध० धर्मश्रुत चारित्र ने विषे प्रकर्षे सावधान छै अथवा धर्म नें रागे रगाणा छै. ध० धर्म नें विषे प्रमाद रहित छै आचार जेहनां. ध० धर्मश्रुत चारित्र नें अखंड पालवे. श्रुत ने आराधवे इज. वि० आजीविका

कल्पना करता थका. सु० भला शील आचार छै जेहनों. सु० भला व्रत द्रव्य रूप जेहनों सु० आह्लाद हर्ष सहित चित्त छै. साधु ने विषे जेहना सा० साधु श्रेष्ठ वृत्तिवन्त

अथ इहाँ साधु. श्रावक विहूं नें धर्म ना करणहार कह्या। ते साधु सर्व धर्म ना करणहार अने श्रावक देश थकी धर्म्म नो करणहार। वली साधु अनें श्रावक नें "सुव्वया" कह्या। ते भला व्रत ना धणी कह्या। ते साधु सर्व व्रती ते माटे सुव्रती. अनें श्रावक देश थकी व्रती ते माटे सुव्रती. ए साधु श्रावक नों पाठ एक सरीखो पिण अर्थ एक सरीखो नहिं तिम ६ गुणा में "बहुस्सुए" ते घणा सूत्र नों जाण अनें एकल ना ८ गुणा में "बहुस्सुए" ते नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु नो जाण एहवो अर्थ कियो ते मानवा योग्य छै। ते माटे बीजा साधु छतां नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु भण्या विना एकल फिरे। ते वीतराग नी आज्ञा बाहिर छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ७ बोल सम्पूर्ण।

तथा वृहत्कल्प उ० १ कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

नो कप्पइ निग्गंथस्स एगाणियस्स राओ वा वियाले वा बहिया वियार भूमिं वा विहार भूमिं वा निक्खमित्तए वा पविसित्तएवा॥

(वृहत्कल्प उ० १ बो० ४७)

न० न कल्पे. नि० साधु नें ए० एकलो उठवो जायवो. रा० रात्रि ने विषे. वि० सूर्य अस्त पामते छते सध्या नें विषे ब० बाहिर स्थंडिल भूमिका नें विषे. वि० स्वाध्याय भूमि नें विषे नि० स्थानक थकी बाहिर निकलवो स्वाध्याय प्रमुख करवा नें पेसवो न कल्पे।

अथ इहां पिण कह्यो। घणा साधां मे पिण रात्रि मे तथा विकाल नें विषे एकला नें दिशा न जाणो, तो जे एकलो इज रहे ते किण नें साथे ले जावे। ते माटे

कारण विना एकलो रहिवो नहीं. एहवी आज्ञा छै। डाहा हुए तो विचारि जोइजो।

इति ८ बोल सम्पूर्ण।

तथा केतला एक उत्तराध्ययन अ० ३२ मा रो नाम लेई कहे, जे चेलो न मिले तो एकलो इज विचरणो, इम कहे. ते गाथा लिखिये छै।

आहार मिच्छे मियमेसणिज्जं,
सहाय मिच्छे निउणत्थ बुद्धिं।
निकेय मिच्छेज्ज विवेक जोगां,
समाहि कामे समणे तवस्सी ॥४॥

न वा लभेज्जा निउणं सहायं,
गुणाहियं वा गुणओ समंवा।
एगो विपावाइ विवजयंतो,
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणे ॥५॥

(उत्तराध्ययन अ० ३२)

आ० ते साधु एहवो आहार. मि० वांछे. मात्राइ मानोपेत ए० एषणीक ४२ दोष रहित. निर्दोष. वली मध्यवर्त्ती छतो. स० सखाया नें वांछे केहवा नें निपुण भली छै ठ० जीवादिक अर्थ नें विषे बुद्धि जेहनी एहवा नें., वली ते साधु. नि० उपाश्रय नें वांछे केहवा नें. स्त्री संसर्गादिक ना अभाव नों योग्य एतले तेहना आतापादिक नें असम्भव करी केहवो हुवे ते कहे छै स० ज्ञानादिक समाधि पामवा नों कामी वांछक स० श्रमण चारित्रियो. त० तपस्वी एहवो छतो ॥४॥

न० अथवा कदाचन न पामे निपुण बुद्धिवन्त. स० सखाइयो. वली केहवो गु० ज्ञानादिक गुणे करी अधिक वा० अथवा पोता ना गुण आश्री स० सम तुल्य एहवो. एहवो न पावे तो स्यूं करिवो. एकलो सखाइया रहित पिण पाप हेतु अनुष्ठान नें वर्जतो परिहरतो. वि० विचरे. संयम मार्ग नें विषे केहवो काम भोग नें विषे. प्रतिबन्ध अणकरतो

अथ अठे तो कह्यो । जे ज्ञानादिक नें अर्थ गुर्वादिक नी सेवा करे ते गच्छ मध्यवर्त्ती साधु निपुण सखाइयो वांछै । ते सहाय नों देणहार सखाइयो मिलतो न जाणे तो पाप कर्म वर्जतो थको एकलोइ विचरे । इहां गच्छ मध्यवर्त्ती थको एहवो चेलो वांछै, इम कह्यो । न मिले तो एकलो रहे । ते चेला नें अभावे एकलो कह्यो । परं गच्छ मध्य कह्यां माटे गुरु. गुरुभाई आदि समुदाय सहित जणाय छै । तिवारे कोई कहे गच्छ मध्यवर्त्ती ए तो अर्थ में कह्यो, पिण पाठ में नहीं । इम कहे तेहनों उत्तर—ए अर्थ पाठ सूं मिलतो छै । ते माटे मानवा योग्य छै । जिम आवश्यक सूत्रे पाठ मे तो कह्यो छै "छप्पइ संघट्टणयाए" छप्पइ कहितां जूं तेहनों संघटो करणो नहीं, इहां पाठ में तो जूं नों संघटो किम न करे । अनें एहनों अर्थ इम कियो जे जूं नों अविधे संघटो करणो नहीं । ए अविध रो नाम तो अर्थ में छै ते मिलतो छै । तिम ए पिण अर्थ मिलतो छै । तथा आवश्यक अ० ४ कह्यो । "पडिक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं" इहां पञ्च महाव्रत थी निवर्त्तवो कह्यो । ते महाव्रत थी किम निवर्त्ते । महाव्रत तो आदरवा योग्य छै । एहनों अर्थ पिण इम कियो छै । ते पंच महाव्रतां मे अतीचारादिक दोष थी निवर्त्तवो । ए पिण अर्थ मिलतो छै । इत्यादिक अनेक अर्थ मिलता मानवा योग्य छै । एहनी ज अवचूरी में एहवो कह्यो । ते अवचूरी लिखिये छै ।

आहार मशनादिवत् अपे र्गम्यत्वा दिच्छे दभिलषे दपिमित मेषणीय मेवा दान भोजने तद्दूरा पास्ते. एवं विधाहार एवहि प्रागुक्त गुरु वृद्ध सेवादिज्ञान कारणान्याराधयितु क्षमः । तथा सहायं सहचरमिच्छेद्गच्छान्तर्वर्त्ती सन् शत गम्य । निपुणाः कुशलाः अर्थेषु जीवादिषु बुद्धि रस्येति निपुणार्थ बुद्धिस्ते अतिदशोहि स यः स्वाच्छन्द्योपदेशादिना ज्ञानादि हेतु गुरु वद्ध सेवादि अशमेव कुर्यात् । निकेतनाश्रय मिच्छेत् । विवेकः स्त्रयादि संसर्गाभाव स्तस्मैभ योग्य मुचितं तदा पाताद्य समवेन विवेक योग्य अविविक्ता श्रयोहि स्त्रयादि संसर्गाचित्त विप्लवोत्पत्तौ कुतो गुरु वृद्ध सेवादि ज्ञानादि कारण सभवः समाधिर्ज्ञानादीना परस्पर मवाधनया वस्थानं त कामयतेऽभिलपति समाधिकामो ज्ञानाद्या वाप्तु काम इत्यर्थः श्रमण स्तपस्वी ।

अथ इहां अवचूरी में पिण कह्यो। निर्दोष मर्यादा सहित आहार वांछे। एहवे आहार लाधे छते गुरु वृद्ध नी सेवा ज्ञानादिक नों कारण छै। ते आराधवा समर्थ हुइं। तथा गच्छ मध्ये रह्यो छतो निपुण सखाइयो वाँछे। एहवो सखाइयो मिल्ये छते ज्ञानादिक ना हेतु गुरु वृद्ध नी सेवा छै। ते अति ही करणी आवे तथा स्त्रयादिक संसर्ग रहित उपाश्रय वांछे जो स्त्रियादिक सहित उपाश्रये रहे तो तेहनो संसर्ग चित्त ना विप्लव नी उत्पत्ति थकी गुरुवृद्ध नी सेवा ज्ञानादिक ना कारण किहां थकी निपजे। इहां गुरु वृद्ध नी सेवा नें अर्थे शिष्य सहाय नों देणहार वांछणो कह्यो। ए तो गच्छ माही रह्या साधु नी विधि कही। पिण गच्छ बाहिर निकलवा नी विधि कही न दीसे। अनें एहवो शिष्य न मिले तो एकलो पाप रहित विचरणो कह्यो। ते चेलां नें अभावे गुरु गुरु भाई सहित नें पिण एकलो कह्यो। तथा राग द्वेष नें अभावे एकलो कहीजे। राग द्वेष रूप बीजा पक्ष में न वर्त्ते ते घणा में रहितो पिण एकलो कहिइं।

तथा उत्तराध्ययन अ० ३२ वे गाथा कही, ते लिखिये छै।

नाणस्स सव्वस पगासणाए,
अन्नाण मोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स य संखएणं,
एगंत सोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥२॥
तस्सेस मग्गो गुरुविद्ध सेवा,
विवज्जणा बाल जणस्स दूरा।
सज्झाय एगंत निसेवणाय,
सुतत्थ संचिणयाधि ईय ॥३॥

(उत्तराध्ययन अ० ३२)

ना० मतिज्ञानादिक. स० सर्व ज्ञान नें विषे प० निर्मल करवे करो नें अ० मति अज्ञानादिक अनें मो० दर्शन मोहनी ने वि० विशेषे व० वर्जवे करी. रा० राग अनें दो० द्वेष तेहनें साचे मन क्षय करो ने ए० एकान्ती सुख सम्यक् प्रकारे पामें मु० मोक्ष ॥२॥ त० ते

मोक्ष पामवानों. ए० आगलि कहिस्ये. म० ते मार्ग गु० गुरु ज्ञानादिके के करी गुण वडा तेहनी से० सेवा करवी. वि० विवर्जना करवी पासत्थादिक अज्ञानियानी दु० दूर थकी स० स्वाध्याय एकान्त स्थान के नि० करवी सु० सूत्र अनें सूत्रार्थ साचे मने करी चिन्तविवो एकाग्र चित्त पणे.

अथ अठे कह्यो—ज्ञान, दर्शन, चारित्र, ए मोक्ष ना उपाय कह्या । ते ज्ञानादिक पामवा नो मार्ग गुरु वृद्ध ते ज्ञान वृद्ध दीक्षा वृद्ध साधु नी सेवा करतो शुद्ध आहार शिष्य वांछतो कह्यो । ए गुरु वृद्ध घणा साधु नी समुदाय रूप गच्छ छै ते माहे रह्यो थको ज निपुण सखायो वांछणो कह्यो । पिण गच्छ बाहिरे निकलवो न कह्यो ।

इति ९ बोल सम्पूर्ण ।

तथा राग द्वेष ने अभावे एकलो तो घणे ठामे कह्यो ते केतला एक पाठ लिखिये छै ।

माय चंडालियं कासी बहुयं माल आलवे ।
कालेणय अहिजित्ता तओ झाइज एगओ ॥१०॥

(उत्तराध्ययन अ० १)

मा० कदाचित् क्रोधादिक ने वशे हिंसादिक घोर कार्य न करिवो. ब० घणू २ स्त्री कथादिक न बोलवो. का० प्रथम पौरसी प्रमुखे सिद्धान्त भणी ने गुरु समीपे तिवारे पछे धर्म ध्यानादिक ध्यावो ए० एकलो राग द्वेष रहित छतो.

अथ अठे पिण एकलो ध्यान ध्यावे एगुरां समीपे ते पिण एकलो कह्यो ते भाव थी राग द्वेष ने अभावे एकलो रहवो अर्थ कियो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १० बोल सम्पूर्ण ।

तथा उत्तराध्ययन अ० १ कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

नाइदूर मणासन्ने नन्नेसिं चक्खु फासओ।
एगो चिट्ठेज्जा भत्तट्ठा लंघित्ता तं नाइकम्मे ॥३३॥

(उत्तराध्ययन अ० १)

ना० भिक्षाचर ऊभा हुई तिहां अति दूर ऊभो न रहे. म० अति समीप ऊभो न रहे जिहां गोचरी जाय तिहां. न० नहीं ऊभो रहे भिखारी नी तथा गृहस्थ नी दृष्टिगोचर आवे तिहां ए० एकलो राग द्वेष रहित. चि० ऊभो रहे असनादिक नें अर्थे ल० अनेरा भिखारी नें उल्लङ्घी नें प्रवेश न करे ते दातार नें अप्रतीत उपजे ते भणी.

अथ इहां पिण कह्यो। राग द्वेष नें अभावे एकलो ऊभो रहे पिण भिख्यारां नें उल्लंघी न जाय इम कह्यो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ११ बोल सम्पूर्ण।

तथा सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ४ उ० १ कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

जे मायरं च पियरं च विप्पजहा य पुव्व संयोगं
एगे सहिए चरिस्सामि आरत मेहुणो विवित्तेसी ॥१॥

(सूयगडांग अ० ४ उ० १ गा० १)

जे मा० हूं माता मा पिता मा पूर्व संयोग छांडी नें ए० एकलो ही राग द्वेष रहितो ज्ञानादि सहित छांड्या छै मैथुन जेणे. वि० स्त्री पुरुष पंडग पशु रहित स्थान नो गवेषणाहार

अथ इहां कह्यो—जे हूं राग द्वेष नें अभावे ज्ञानादि सहित एकलो विचरस्यूं। इम विचारि दीक्षा ले इहां पिण राग द्वेष नों भाव नथी ते माटे एकलो कह्यो। डाह्या हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १२ बोल सम्पूर्ण।

तथा उत्तराध्ययन अ० १५ पिण राग द्वेष नें अभावे एकलो विचरणो कह्यो ते पाठ लिखिये छे।

असिप्प जीवी अगिहे अमित्ते,
जिइंदिए सव्वओ विप्प मुक्को।
अणुक्कसाई लहुअप्प भक्खो,
चिच्चागिहं एक चरे स भिक्खू॥

(उत्तराध्ययन अ० १५)

अ० चित्रकार नी कलाइ न जीवे गृ० घर रहित अ० शत्रु मित्र नहीं छै जेहनें एहवो थको जि० जितेन्द्रिय स० सर्व बाह्य आभ्यन्तर परिग्रह थी मुकाणा छै अ० थोड़ी कषाय अथवा उत्कर्ष रहित. लघु आहारी. चि० छांडी नें. गृ० घर ए० एकलो राग द्वेष रहित विचरे. भि० साधु

अथ इहां पिण कह्यो—घर छांडी राग द्वेष नें अभावे एकलो विचरे। इत्यादिक अनेक ठामे घणा साधां में रहिता पिण राग द्वेष नें अभावे भाव थी एकलो कह्यो। चेला न मिले तो ते साधु चेलां नें अभावे तथा राग द्वेष नें अभावे एकलो विचरे एहवूं कह्यो दीसे छै। पिण एकलो अव्यक्त रहे तिण नें साधु किम कहिए। तिवारे कोई कहे—जे ३ मनोरथ में चिन्तवे जे किवारे हूं एकलो थइ दश विध यति धर्मधारी विचरस्यूं इम क्यूं कह्यो। इम कहे तेहनों उत्तर—

इहां एकलो कह्यो ते एकल पड़िमा धारवा नी भावना भावे इम कह्यो ते एकल पड़िमा तो जघन्य नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु ना जाण ने कल्पे । इम ठाणाङ्ग ठा० ८ कह्यो छै ते पूर्व नों ज्ञान अनें एकल पड़िमा वेहु हिवड़ां नथी । अने पूर्व नों ज्ञान विच्छेद अनें पूर्व ना जाण विना एकल पड़िमा पिण विच्छेद छै । ए साधु ना ३ मनोरथ में प्रथम मनोरथ इम कह्यो । जे किवारे हूं थोड़ो घणो सूत्र भणसूं । दूजो मनोरथ जे किवारे हूं एकल पडिमा अङ्गीकार करस्यूं । तीजो मनोरथ किवारे हूं सन्थारो करस्यूं । इहां प्रथम तो सिद्धान्त भणवा नी भावना भावे ते पिण मर्यादा व्यवहार सूत्रे कही ते रीते भणे पिण मर्यादा लोपी न भणे अनें मर्यादा सहित सूत्र भणी नें पछे दूजो मनोरथ एकल विहार पड़िमा नी भावना कही । ते पिण ठाणाङ्ग ठा० ८ कही ते प्रमाणे पूर्व भणी नें एकल पडिमा पिण अङ्गीकार करे । जिम सूत्र भणवा नों मनोरथ कह्यो । पिण १० वर्ष दीक्षा पाल्यां पछे भगवती सूत्र भणवो कल्पे पहिलां न कल्पे । इम अन्य सूत्र पिण मर्यादा प्रमाणे भणवो कल्पे । तिम एकल पड़िमा रो मनोरथ कह्यो । ते एकल पड़िमा पिण नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु भण्या पछे कल्पे पहिलां न कल्पे । इम हिज आचारांग में पिण नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु भण्या विना एकल पडिमा न कल्पे कह्यो । ते माटे ३ मनोरथ रो नाम लेइ एकल पड़िमा थापे ते पिण न मिले जिम सूत्र भणवा ना मनोरथ नो नाम लेइ १० वर्ष पहिलां भगवती भणवो थापे तो न मिले तिम नवमा पूर्व नी तीजी वत्थु भणवा विना एकल पड़िमा थापे ते पिण न मिले । तथा कोई कहे दश वैकालिक अ० ४ कह्यो । "से भिक्खू वा भिक्खुणीवा जाव एगोवा परिसागओवा" इहाँ साधु नें एकलो क्यूं कह्यो, इम कहे तेहनों उत्तर—इहां साधु नें साध्वी ने वेहूं नें एकला कह्या छै । "भिक्खूवा भिक्खुणीवा" ए पाठ कह्याँ माटे जो इम छै तो साध्वी एकली किम रहे । वली "एगोवा परिसागओवा" कह्यो छै । परिषदा में रह्यो थको तथा परिषदा ने अभावे एकलो रह्यो थको इहां साधु साध्वी नें परिषदा नें अभावे एकला कह्या छै । पिण एकल पणो विचरवो पाठ में कह्यो नथी । तिवारे कोई कहे और साधु मरतां २ एकलो रहि जाय तिण में साधु पणो हुवे के नहीं । तथा और भागल हुवे ते माहि थी कोई न्यारो थइ साधु पणो पाले तिण नें साधु किम न कहिए । इम कहे तेहनों उत्तर—

जिम मरतां २ साध्वी एकली रहे तो स्यूं करे तथा घणा भागल माहि थी एकली साध्वी न्यारी हुवे तेहनें साधु पणो निपजे के नहीं । इम पूछ्यां जवाव

देवा असमर्थ जद अकवक बोले पिण अन्यायी हुवे ते लीधी टेक छोडे नहीं। अनें जे कारण पड्यां एकल पणे रहे तो जिम पोता नों संयम पले तिम करे। उत्तम जीव हुवे ते थोड़ा दिन में आत्मा नों कार्य सवारे पिण किञ्चित् दोष लगावे नहीं। तिवारे कोई कहे—कारण-पड्यां तो एकला में पिण साधु पणो पावे छै तो एकल रहे ते भ्रष्ट एहवी परूपणा किम करो छो। इम कहे तेहनों उत्तर—गृहस्थ नें घरे बैसे तेहनें भ्रष्ट कहीजे। मास चौमास उपरान्त रहे तिण नें भ्रष्ट कहीजे। पहिला प्रहर रो आण्यो आहार छेहले प्रहर भोगवे तेहनें पिण भ्रष्ट कहीजे। मर्दन करे तेहनें पिण भ्रष्ट कहीजे। इत्यादिक अनेक दोष सेवे तिण नें भ्रष्ट कह्यो। अनें कारण पड्यां पाछे कह्या ते बोल सेवणा कह्या तिण में दोष नहीं तो पिण थोक मार्ग में परूपणा तो ए बोल न सेवण री ज करे, कारणे सेवे तो ए बोलां री थाप थोक मार्ग में नही। थोक मार्ग में तो ते बोल सेव्यां दोष इज कहे। कारण री पूछे जब कारण रो जबाव देवे मर्दन कियां अनाचारी दशवैकालिक में कह्यो। अनें बृहत्कल्प में कारणे मर्दन करणो कह्यो। ते तो बात न्यारी, पिण मर्दन कियां अनाचारी ए परूपणा तो बिगटे नहीं तिम सकल पणे विचरे तिण नें भ्रष्ट कहीजे। ए थोक मार्ग में परूपणा छै। अनें कारण में एकल पणे रह्यां ते परूपणा उठे नहीं। एकली साध्वी विचरे तिण नें भ्रष्ट कहीजे। एकली गोचरी तथा दिशा जाय ते पिण भ्रष्ट. एकलो साधु स्थानक बाहिरे रात्रि दिशा जाय ते पिण भ्रष्ट कहीजे। अनें कारणे ए सर्व एकल पणे संयम निर्वहे तो थोक मार्ग में तेहनी थाप नहीं। ते माटे परूपणा में दोष नहीं। तिम एकल नें थोक मार्ग में भ्रष्ट कहीजे। अनें कारण री बात न्यारी छै। कारण पड्यां भगवन्त कह्यो ते प्रमाणे विचर्‌यां दोष नहीं। अनें केतला एक एकल अपछन्दा कहे छै ते साधु एकल विचर्‌यां दोष नहीं। एहवी परूपणा करे छै ते सिद्धान्त ना अजाण छै। सिद्धान्त में तो एकल पणे विचरवो घणे ठामे वर्ज्यो छै। प्रथम तो व्यवहार उ० ६ घणा निकाल पैसारे हुवे ते ग्रामादिक में एकला बहुश्रुति नें रहिवो न कल्पे कह्यो। तथा आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० १ एकला में आठ अवगुण कह्या। तथा आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० ४

अव्यक्त नें एकलो विचरवो रहिवो वर्ज्यो । तथा ठाणाङ्ग ठा० ८ आठ गुण विना एकलूं रहिवूं नहीं । तथा आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० ४ गुरु कहे हे शिष्य ! तोनें एकल पणो मा होईजो । तथा बृहत्कल्प उ० १ रात्रि विकाले स्थानक बाहिरे एकला नें दिशा जायवो न कल्पे कह्यो । इत्यादिक अनेक ठामे एकलो रहिवो कारण विन वर्ज्यो छै । ते माटे एकल रहे तिण नें साधु किम कहिये । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति १३ बोल सम्पूर्ण ।

इति एकाकी साधु-अधिकारः ।



अथ उच्चार पासवणाऽधिकारः ।

केतला एक पाषंडी कहे—साधु न गृहस्थ देखतां मात्रो परठणो नहीं। अनें ते कहे—जे सूत्र निशीथ उ० १५ कह्यो "बाजार में उच्चार. (वड़ी नीति) पासवण. (छोटी नीति) परठ्यां चौमासी प्रायश्चित्त आवे" ते माटे गृहस्थ देखतां मात्रो परठणो नहीं। इम कहे, तेहनों उत्तर—

ए उच्चार. पासवण. परठण रो वर्ज्यो ते उच्चार आश्री वर्ज्यो छै। पासवण तो उच्चार रे सहचर हुवे ते माटे भेलो शब्द कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

जे भिक्खू उच्चार पासवणं परिट्ठवेत्ता न पुच्छेइ न पुच्छन्तं वा साइज्जइ ॥१६१॥

(निशीथ उ० ४)

जे० जे कोई साधु साध्वी उ० वडी नीति पा० लघु नीति. प० परिठवी नें. न० नही वस्त्रे करी. पू० पूछे. न० नहीं. वस्त्रे करी. पू० पूछता नें अनुमोदे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त

अथ इहां कह्यो—उच्चार (वड़ी नीति) पासवण (छोटी नीति) परिठवी (करी) नें वस्त्रे करी न पूंछे तो प्रायश्चित्त कह्यो। तो पासवण रो कांई पूंछे. ए तो उच्चार नों पूंछणो कह्यो छै। उच्चार करतां पासवण हुवे ते माटे वेहूं भेला कह्या छै। परं पूछे ते उच्चार नें, पासवण नें पूंछे नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण।

तथा तिणहिज उद्देश्ये एहवा पाठ कह्या छै। ते लिखिये छै।

जे भिक्खू उच्चार पासवणं परिट्ठवेत्ता कठेण वा कविलेण वा अंगुलियाए वा सिलागए वा पुच्छइ पुच्छंतं वा साइज्जइ ॥१६२॥

(निशीथ उ० ४)

जे० जे कोई साधु साध्वी. उ० बडी नीति पा० लघु नीति. प० परिठवी नें का० काष्ठ करी. क० बांस नी खांपटी करी नें अ० अंगुलिइ करी वा. सि० अनेरा काष्ठ नी शलाका करी नें पु० पूछे वा पू० पूछता नें अनुमोदे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त

अथ इहां उच्चार, पासवण, परठी काष्ठादिके करी पूंछ्यां प्रायश्चित्त कह्यो। ते पिण उच्चार आश्री, पिण पासवण आश्री नहीं। तिम वाजार में उच्चार पासवण परठ्यां प्रायश्चित्त कह्यो। ते पिण उच्चार आश्री छै, पासवण आश्री नहीं। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण।

तथा तिणहिज उद्देश्ये एहवा पाठ कह्या—ते लिखिये छै।

जे भिक्खू उच्चार पासवणं परिट्ठवेत्ता. *णायमइ. णायमंत वा साइज्जइ ॥१६३॥

जे भिक्खू उच्चार पासवणं परिट्ठवेत्ता तत्थेव आयमंति. आयमंतं वा साइज्जइ ॥१६४॥

जे भिक्खू उच्चार पासवणं परिट्ठवेत्ता अइदूरे आयमइ. अइदूरे आयमंतं वा साइज्जइ ॥१६५॥

(निशीथ उ० ४)

जे० जे कोई. भि० साधु साध्वी उ० वडी नीति पा० लघु नीति. 'प० परठी (करी) ने णा० शुचि न लेवे. अथवा णा० शुचि न लेतां नें अनुमोदे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त ॥१६३॥

जे० जे कोई भि० साधु साध्वी. उ० वडी नीति. पा० छोटी नीति प० परठी नें त० तठेई (तिण ऊपरेइज) आ० शुचिलेवे वा आ० शुचि लेता नें अनुमोदे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त ॥१६४॥

जे० जे कोई साधु. साध्वी उ० वडी नीति. पा० लघु नीति. प० परठी नें अ० अति दूरे आ० शुचि लेवे अथवा अतिदूरे शुचि लेतां नें अनुमोदे तो पूर्ववत् प्रायश्चित्त ॥१६५॥

अथ इहां कह्यो—उच्चार. पासवण परठी (करी) नें शुचि न लेवे, अथवा तठे ई उच्चार रे ऊपरे इज शुचि लेवे. अथवा अति दूर जाई नें शुचि लेवे तो प्रायश्चित्त आवे। ते पिण उच्चार आश्री शुचि लेणों कह्यो। पासवण तो पोतेइ शुचि छै तेहनी शुचि कांई लेवे। इहां उच्चार, पासवण. परठणो नाम करवा नो छै। जिम दिशा जाय नें शुचि न लेवे तो दण्ड कह्यो, तिम गृहस्थ देखतां दिशा जाय तो दण्ड जाणवो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

तथा निशीथ उ० ३ कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

जे भिक्खू सपायंसि वा परपायंसि वा, दियावा. राओवा. वियाले वा उब्बाहिमाणे सपायं गहाय जाइत्ता उच्चार पासवणं परिठ्ठवेत्ता अणुग्गए सूरिए एडेइ. एडंतं वा. साइज्जइ ॥८२॥ तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारठ्ठाणं ओग्घाइयं॥

(निशीथ उ० ३)

जे० जे कोई साधु साध्वी नें स० आपणा पात्रा ते पात्रिया नें विषे. प० अन्य साधु ना पात्रा नें विषे दि० दिन नें विषे. रा० रात्रि ने विषे. वि० विकाल नें विषे उ० प्रबल थयो बला-

त्कारे उच्चार बाधा करी पीड्यो थको. स० पोता नों पात्रो ग्रही नें तथा प० पर पात्रो याची नें उ० वडी नीति. पा० छोटी नीति. प० ते करी नें. अ० सूर्य नों ताप न पहुंचे तिहां ए परिठवै न्हांखै. ए परिठवता नें अनुमोदे तो मासिक प्रायश्चित्त आवे.

अथ इहां कह्यो—दिवसे तथा रात्रि तथा विकाले पोतारे पात्रे तथा अनेरा साधु ने पात्रे उच्चार पासवण परठवी नें सूर्य रो ताप न पहुंचे तिहां न्हांखे तो दण्ड आवे। इहां उच्चार. पासवण. परठणो नाम करवा नों कह्यो छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइज्यो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण ।

तथा ज्ञाता अ० २ कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

तत्तेणं से धण्णे विजएणं सद्धिं एगंते अवक्कमइ २ त्ता उच्चार पासवणं परिट्ठवेइ।

(ज्ञाता अ० २)

त० तिवारे. धन्नो सार्थवाह विजय सङ्घाते. ए० एकान्ते. अ० जावे. जावी ने. उ० बडी नीति पा० लघुनीति मात्रो. प० परिठवे.

अथ इहां धन्नो सार्थवाह विजय चोर साथे एकान्ते जाइ उच्चार पासवण परठयो कह्यो। इहां पिण उच्चार. पासवण. परठणो नाम करवा रो कह्यो छै। इत्यादिक अनेक ठामे परठणो नाम करवा नों कह्यो छै। ते माटे गृहस्थ देखतां अङ्ग उपाङ्ग उघाड़ा करी नें उच्चार पासवण परठणो ते करणो नहीं। तथा उत्तराध्ययन अ० २४ कह्यो। उच्चार पासवण. खेल ते बलखो. संघाण ते नाक नो मल अशनादिक ४ आहार. जीव रहित शरीर. इत्यादिक द्रव्य कोई आवे नहीं देखे नहीं, तिहां परठणा कह्या। ते पिण किणाहिक द्रव्य आश्री कह्यो छै। पिण सर्व द्रव्य आश्री नहीं। जिम मनुष्य में उपयोग १२ पावे पिण एक मनुष्य में १२ नहीं।

जिम साधु में लेश्या ६ पावे पिण सर्व साधु मे नहीं । तिम कोई आवे नहीं देखे नहीं तिहाँ उच्चारादिक परठे कह्या । ते पिण किणहिक द्रव्य आश्री छै । वली १० दोष रहित क्षेत्र मे परठणो कह्यो छै । कोई आवे नहीं देखे नहीं संयम प्रवचन री विराधना न हुवे. सम बरोबर भूमि. तृणादिक रहित. बहु काल थयो भूमि नें अचित्त थया नें विस्तीर्ण भूमि. ४ अंगुल ऊपरली अचित्त. ग्रामादिक थी दूर. ऊँदरादिक ना बिल रूँधावे नहीं. त्रस बीजादिक रहित. ए १० बोल हुवे तिहाँ परठणो कह्यो । ते समचे द्रव्य परठण रा १० बोल कह्या । पिण १-१ द्रव्य परठे ते ऊपर १० बोल रो नियम नहीं । तिम उच्चार पासवण परठी न पूंछे तो प्रायश्चित्त कह्यो ते उच्चार नें पूंछणो छै । पिण पासवण रो पाठ कह्यो ते तो उच्चार रे सहचर हुवे ते माटे भेलो पाठ कह्यो छै । तिम १० दोष रहित क्षेत्र में उच्चारादिक द्रव्य परठणा कह्या । ते पिण किणहिक द्रव्य आश्री दश दोष रहित क्षेत्र कह्यो । पिण सर्व द्रव्यां ऊपर १० बोल नहीं । वृहत्कल्प ३१ कह्यो साधु नें बाजार मे उतरणो ते माटे बाजार में उतरसी. तो मात्रादिक किम न परठसी । अनें जो गृहस्थ देखतां आत्रो न परठणो तो पाणी रो कड़शो. रेत. राख. भाटो ठलियो लूहणादिक नों धोवण. पगांरे गोबरादिक लागो. इत्यादिक सीत मात्र काई परठणो नहीं । तिहां तो सर्व द्रव्य वर्ज्या छै । जिम एक सीत मात्र परठे ते ऊपर १० दोष रहित क्षेत्र न मिले । तिम मात्रो परठे तिहां पिण १० दोष रहित क्षेत्र नों नियम नथी । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्ण ।

इति उच्चार पासवणाऽधिकारः ।

अथ कविताऽधिकारः ।

केतला एक अज्ञानी कहे—साधु नें जोड़ करणी नहीं। जोड़ कियां मृषा भाषा लागे, इम कहे—तो तेहने लेखे साधु नें वखाण देणो नहीं। जो जोड़ कियां मृषा लागे तो वखाण दियां पिण मृषा लागे। वली धर्मचर्चा करतां, ज्ञान सीखतां, पिण उपयोग चूक नें झूठ लग जावे तो तिण रे लेखे साधु नें बोलणो इज नहीं। अनें जो वखाण दियां, धर्मचर्चा कियां, दोष नहीं तो निरवद्य जोड़ कियाँ पिण दोष नहीं। अनें जे कहे जोड़ न करणी तेहनों जवाब कहे छै। नन्दी सूत्र में जोड़ करण रो न्याय कह्यो छै। ते पाठ लिखिये छै।

एव माइ याइं चउरासिइं पइन्नग सहस्साइं भगवओ अरहओ उसह सामियस्स आइतित्थयरस्स तहा संखिज्जाइं पइण्णग सहस्साइ मज्झिमगाणं जिणवराणं चोद्दस पइन्नग सहस्साणि भगवओ वद्धमान सामिस्स अहवा जस्स जत्ति-यासीसा उप्पत्तियाए. विणइयाए. कम्मियाए. परिणामियाए. चउव्विहीए. बुद्धिए उववाए तस्स तत्तियाइं पन्नग सहस्साइं पत्तेय बुद्धावि तत्तिया चेव। से तं कालिय।

(नन्दी-पञ्चज्ञानवर्णन)

च० चौरासी हजार. प० पइन्ना कालिक सूत्र. भ० भगवन्त अ० अरिहन्त. उ० ऋषभ देव स्वामी नें होइ. आ० धर्म नी आदि ना करणहार. त० तथा सख्याता हजार प० पइन्ना कालिक सूत्र. म० मध्यम. जि० जनवर तीर्थङ्कर नें होइ. च० १४ हजार. प० पइन्ना कालिक सूत्र भ० भगवन्त व० वर्द्धमान स्वामी नें होइ ज० जेहना जेतला शिष्य हुवा ते. उ० औत्पातिक बुद्धि करी. वि० विनय बुद्धि करी. क० कार्म्मिक बद्धि करी. प० परिणामिक बुद्धि करी च०

च्यारू प्रकार नी बुद्धि करी त० तेहना तेतला हजार इज पइन्ना हुवे प० प्रत्येक बुद्धि पिण जेतला हुइं तेतलापइन्ना करे ते कालिक सूत्र.

अथ इहां कह्यो—तीर्थङ्कर ना जेतला साधु हुइं ते ४ बुद्धिइं करी तेतला पइन्ना करे, तो साधु नें जोड़ न करणी तो ते साधां पइन्ना नी जोड़ क्यूं कीधी। अनें जो पइन्ना जोड्यां तेहनें दोष न लागे। तो अनेरा साधु निरवद्य जोड़ करे तेइनें दोष किम लागे। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली नन्दी सूत्र में कह्यो ते पाठ लिखिये छै ।

से किं तं आभिणिबोहियणाणं, आभिणिबोहियनाणं दुविहं पणत्तं तं जहा सुयं निस्सियं च असुय निस्सियं च। से किंतं असुय निस्सियं असुय निस्सियं चउव्विहं पणत्तं।

उप्पत्तिया वेणइया, कम्मया पारिणामिया।
बुद्धि चउव्विहावुत्ता, पंचमा नोवलब्भइ ॥१॥
पुव्व मदिट्ठमसुयं मवेइ अतक्खण विशुद्ध गहिअत्था।
अव्वाहय फल जोगा बुद्धि ओप्पतिया नाम ॥२॥

(नन्दी)

से० ते. भगवन्. कि केतला प्रकारे. आ० मतिज्ञान. (भगवान् कहे छै) आ० मतिज्ञान. दु० बे प्रकारे प० परूप्या त० ते कहे छै. सु० श्रुत निश्रित. अने अ० अश्रुत निश्रित भगवान्. कि० केतला प्रकारे. अ० अश्रुत निश्रित (भगवान् कहे छै) अ० अश्रुत निश्रित. च० ४ प्रकारे. प० परूप्या. यथा—उ० ओत्पत्तिक बुद्धि. वि० वैनयिक बुद्धि. क० कार्म्मि बुद्धि. पा० परिणामिक बुद्धि च० ४ प्रकारे. बु० कही प० पन्चम बुद्धि नो० नहीं छै पु० पहिलां म० देख्या न होइ अ० सुण्या न होइ म० वेद्या न हो तथापि म० जाणें त० तत्काल. वि० निर्मल भावार्थ अ० नही हणवा योग्य छै फलयोग तेहनों इहवी. बु० ओत्पत्तिकी बुद्धि छै।

अथ इहां मतिज्ञान ना बे भेद किया। श्रुत निश्चित. अश्रुत निश्चित. तिहां जे सूत्र विना ही ४ बुद्धि करी सूत्र सूं मिलतो अर्थ ग्रहण करे। सूत्र विना ही बुद्धि फैलावे। ते अश्रुत निश्चित मतिज्ञान नो भेद कह्यो छै। वली कह्यो—पूर्वे दीठो नहीं सुण्यो नहीं ते अर्थ तत्काल ग्रहण करे ते उत्पात नी बुद्धि अश्रुत निश्चित मतिज्ञान नों भेद कह्यो। तो जोड़ सूत्र सूं मिलती करे ते तो उत्पात नी बुद्धि छै। अश्रुत निश्चित भेद मे छै। तो ते जोड़ नें खोटी किम कहिये। तथा "सम्मदिट्ठिस्सभइमइ नाणं" ए पिण नन्दी सूत्रे कह्यो। समदृष्टि नी मति नें मतिज्ञान कह्यो तो जे साधु मतिज्ञान थी विचारी निरवद्य जोड़ करे तेहनें दोष किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली नन्दी सूत्र मे कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

से किं तं मिच्छ सुयं, मिच्छ सुयं जं इमं अण्णाणि एहिं मिच्छ दिट्ठि एहिं. सच्छंद बुद्धि मइ विगप्पियं तं जहा भारहं रामायणं. भीमा. सुरूक्खं. कोडिल्लयं. सगडं भदियाओ. खभगंदियाओ. खंडामुहं. कप्पासियं. नाम सुहुमं कणगसत्तरी वइसासियं वुद्ध वयणं तेसियं वेसियं लोगाययं सट्ठितं तं माठरं पुराणं वागरणं भागवयं पायपुंजली पुस्स देवयं लेहं गणियं सउण रूयं नडयाइं अहवा बावत्तरिं कलाओ चत्तारिवेया संगो वंगाए याइं मिच्छदिट्ठिस्स मिच्छत्त परिग्गहियाइ. मिच्छसुयं एयाइं चेव. सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्त परिग्गहिया सम्मदिट्ठी सम्मसुयं।

(नन्दी सूत्र)

से० ते. किं० केहो मि० मिथ्यात्व श्रुत ज० जे प्रत्यक्ष. अ० अज्ञानी ना कीधा मि० मिथ्यात्वी ना कीधा स० आपणी कल्पना करी बुद्धिमति इ निपाया त० ते कहे छे भा० भारत रा० रामायण. भी० भीम स्वरूप को० कोडिलीय स० सगड भद्र कल्पनीक शास्त्र ख० खडा छल. क० कपासीय. ना० नाम सूक्ष्म क० कणग सतरी व० वैशेषिक बु० बुद्धि वचन शास्त्र वि० विशेष का० कायिक शास्त्र लोगापाय स० साठित शास्त्र म० माठर पुराण वा० व्याकरण भा० भागवत पा० पाय पूजलो पु० पुस्प देवता ले० लिखवानी कला ग० गणित कला स० शकुल शास्त्र. ना० नाटक विधि शास्त्र अ० अथवा ७२ कला च० च्यारवेद स० अङ्गोपाङ्ग सहित. भारतादिक. ए जे. मि० मिथ्यात्वी ने मिथ्यात्व पणे ग्रह्या थका मि० मिथ्यात्व होय परिणामे ए० भारतादिक शास्त्र सम्यग् दृष्टि ने सांभलतां भणतां सम्यक्त्व मार्गथकी परिणामे

अथ इहां कह्यो—जे भारत रामायणादिक ४ वेद मिथ्यादृष्टि रा कीधा मिथ्यादृष्टि रे मिथ्यात्व पणे ग्रह्या मिथ्या सूत्र अनें एहिज भारत रामायणादिक सम्यग्दृष्टि रे सम्यक्त्व पणे ग्रह्या छै ते माटे सम्यक्त्व सूत्र छै। जे सम्यग्दृष्टि ते खरां नें खरो जाणे खोटां नें खोटो जाणे, ते माटे भारतादिक तेहनें सम्यक् सूत्र कह्यो। इहां मिथ्यात्वी रा कीधा ग्रन्थ पिण सम्यग्दृष्टि रे सम्यक् सूत्र कह्या जेहवा छै तेहवा जाणे ते माटे तो बहुत विचारी जोड़ करे तेहमें सावद्य किम आणे। अनेरा ना कीधा पिण सम पणे परिणमे तो पोते निरवद्य जोड़ करे तेहनें दोष किम कहिये। खोटी जोड़ किम कहिये। डाहा हुए तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

तथा केतला एक कहे—साधु नें राग काढ़ी गावणो नहीं। ते सूत्र ना अजाण छै। ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० ४ कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

चउव्विहे कव्वे पराणत्ते गद्दे. पद्दे. कत्थे. गेए.।

(ठाणाङ्ग ठा० ४ उ० ४)

च० ४ प्रकारे काव्य ते ग्रन्थ परूप्या ग० गद्य छन्द विना बांध्यो, शास्त्र परिज्ञाध्ययन नी परे प० पद्य छन्दे करी बांधयो विमुक्ताध्ययन नी परे. क० कथा करी बांधयो ज्ञाताध्ययन नी परे. गे० गान योग्य पूर्ने गानायोग्य

अथ इहां ४ प्रकार ना काव्य कह्या । गद्य बन्ध, पद्यबन्ध, कथा करी, गायवे करी, ए ४ निरवद्य काव्य करी मार्ग दिपायां दोष नहीं । तथा भगवान् रा ३५ वचन रा अतिशय में राग सहित तीर्थङ्कर नी वाणी कही छै । अनें गायां दोष छै तो सूत्रादिक नी गाथा काव्य में राग छै । ते माटे ए पिण कहिणी नहीं । अनें जो सूत्र नी गाथा काव्यादिक राग सहित गायां दोष नहीं तो और निरवद्य वाणी पिण राग सहित गायां दोष नहीं । हे देवानुप्रिया ! एहवा कोमल आमन्त्रण मे दोष नहीं । तिम राग में पिण दोष नही उत्तम जीव विचारि जोइजो । केतला एक कहे च्यार काव्य समचे कह्या पिण साधु नें आदरवा एहवो न कह्यो । इम कहे तेहनों उत्तर—ए च्यार काव्य नों एहवो अर्थ कियो छै । "गद्दे" कहितां गद्य ते छन्द विना "शास्त्र परिज्ञाध्ययन" नी परे । "पद्दे" कहितां पद्य ते पद करि बांध्यो ते गाथा बन्ध " विमुक्त अध्ययन" नी परे । "कत्थे" कहितां साधु नी कथा "ज्ञाताध्ययन" नी परे । "गेए" कहितां गावा योग्य, एहवूं अर्थ कियो छै ।।ते माटे च्यारूं निरवद्य काव्य साधु नें आदरवा योग्य छे । तिवारे कोई कहे ए "गद्दे. पद्दे. कत्थे." तो आदरवा योग्य छै । पिण "गेए" आदरवा योग्य नहीं । इम कहे तेहनो उत्तर—ए गद्य. पद्य. बे काव्य नें अनाभूत कथा. अने गेय कह्या छै । विशिष्ट धर्म माटे जुदा कह्या जणाय छै । पिण गद्य पद्य नें अन्तर इज छै । तिहां टीकाकार पिण इम कह्यो ते टीका लिखिये छै ।

"काव्यं ग्रन्थः—गद्य मच्छन्दोनिवद्धं. शास्त्रपरिज्ञाध्ययन वत् । पद्यं छन्दो निवद्धं. विमुक्ताध्ययनवत् कथायां साधु कथ्यं. ज्ञाताध्ययनादिवत् । गेयं गान योग्यम् । इह गद्य पद्यान्तर भावे पि कथा गानयोर्धर्म विशिष्टतया विशेषो विवक्षितः"

इहां टीका में "कत्थे-गेए" ए गद्य पद्य नें अन्तर कह्या । अनें गद्य ते शस्त्र परिज्ञाध्ययन नी परे । पद्य ते विमुक्ताध्ययन नी परे कह्या छै । ते माटे "कत्थे गेए" पिण निरवद्य आदरवा योग्य छै । तिवारे कोई कहे ए तो च्यारूं काव्य सूत्र नी भाषाइं कह्या छै । ते माटे "गेए" पिण सूत्र नी भाषांइं कहिवूं । पिण अनेरी भाषाइं ढाल रूप राग कहिवो न थी । इम कहे तेहनों उत्तर—जे गेय अनेरी भाषाइं कहिवूं नहीं तो गद्य, पद्य, कथा, पिण अनेरी

भापाइं कहिवी नहिं। जे सूत्र नो अर्थ छन्द त्रिना कहिवो तेहनें गद्य कहिइं। तो तेहने लेखे अर्थ पिण कहिचो नथी। तथा सूत्र ना अर्थ किणहि छन्द रूप भापाइं रच्या ते पद्य कहिइं तो तेहनें लेखे वे निरवद्य पद्य पिण कहिवा नथी। तथा अनेरी नन्दी सूत्र नी कथा तथा ज्ञातादिक में ए जो साधु नी कथा ते पिण पाठ थी कहिणी पिण अनेरी भाषाइं कथा रूप कहिणी नथी। जे अनेरी भापाइं "गेय" कहिवी नथी। तो अनेरी भाषाइं गद्य. पद्य कथा. पिण कहिणी न थी। अने जो सूत्र नी भाषा थी अनेरी भापाइं गद्य पद्य शुद्ध कथा कहिणी तो अनेरी भाषाइं पिण गावा योग्य निरवद्य कहिवूं। इहां गद्य ने शास्त्रपरिज्ञाध्ययन नी परे कह्या छै। ते भणी शास्त्र परिज्ञा ध्ययन पिण गद्य छै, अनें तेहनी परे कह्यां माटे अनेरी भाषाइं निरवद्य छन्द विना सर्व गद्य मे आयो, पद्य ते विमुक्त अध्ययन नी परे कह्यां माटे विमुक्त अध्ययन पिण पद्य में आयो। अनें तेहनी परे कह्या माटे ते अनेरी छन्द रूप भाषा में पद्य में निरवद्य जोड़ पिण पद्य मे कहिये। अनें कथा. गेय ए वे भेद छै ते कथा तो गद्य में अनें गेय ते पद्य मे. इम कथा. गेय. ए वे हूं गद्य पद्य. में आवे। ते माटे सूत्र नी भाषाइं तथा सूत्र विना अनेरी भाषाइं गद्य. पद्य. कथा. गेय कह्यां दोप नहीं। सावद्य गद्य. पद्य कथा. गेय. कहिणा नहीं। अनें जे सूत्र विना अनेरी भाषाइं गद्य. पद्य, कथा. गेय. न कहिवा, तो नन्दी सूत्र में मतिज्ञान ना वे भेद क्यूं कह्या। श्रुत निश्रित. अनें अश्रुत निश्रित. ए वे भेद किया छै। तिहां जे श्रुत निश्रित विना वुद्धि फैलावे ते मतिज्ञान रो अश्रुत निश्रित भेद कह्यो छै। ते पिण साधु नें आदरवा योग्य कह्यो छै। तथा अश्रुत निश्रित ना ४ भेदां में ओत्पातिक वुद्धि जे अणदीठो. अणसांभल्यो. तत्काल मन थी उपजावी शुद्ध जवाव देवे, ते पिण मतिज्ञान रो भेद श्रुत निश्रित विना कह्यो छै। ए पिण साधु नें आदरवा योग्य छै। ते माटे सूत्र नी भाषा थी अनेरी भाषाइं पिण गद्य. पद्य. कथा. गेय. कह्यां दोप न थी। ते माटे अनेरी भाषाइं गेय ते गायवा योग्य ते शुद्ध आदरवा योग्य छै। डाहा हुए तो विचारि जोइजो।

इति ४ बोल संपूर्ण।

तथा उत्तराध्ययन कह्यो ते पाठ लिखिये छै।

मयत्थ रूवा वयणप्प भूया गाहाणुगीया नर संघ मज्झे ।
जंभिक्खुणो सील गुणोववेया इहज्जयंते समणो मिजाओ ॥

(उत्तराध्ययन अ० १३ गा० १२)

म० मोटो वणो अर्थ द्रव्य पर्याय रूप व० वचन अल्प मात्र. गा० धर्म कहिवा रूप गाथा. आ० कहिइ स्थविर मनुष्य ना समुदाय माहीं जे गाथा सांभली नें भि० चारित्र अनें ज्ञानादि गुणे करी ए वे हुं गुणे करी. व० सहित साधु इ० जग माहीं अथवा जिन वचन नें विषे. ज० यत्नवन्त हुया अथवा भणवे करी. अ० अनुष्ठान कर वे करी लाभ ना उपजावणहार. स० हूं तपस्वी. साधु. जा० हुयो.

अथ गांथाइं करीं वाणी करी वाणी कथी एहवूं कह्यूं. ते गाथा तो छन्द रूप जोड़ छै । तिहां टीका में गाथा नो शब्दार्थ इम कियो छै "गीयत इतिगाथा" गावी जाय ते गाथा इम कह्यो । ते माटे निरवद्य गेय नें दोष नहीं । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ५ बोल सम्पूर्ण ।

तिवारे कोई कहे—जो राग संयुक्त गायां दोष नहीं तो निशीथ में साधु नें गावणो क्यूं निषेध्यो, इम कहे तेहनों उत्तर—निशीथ में तो वाजारे लारे गावे तेहनों दोष कह्यो छै, ते पाठ लिखिये छै।

जे भिक्खू गाएज्जा. वाएज्जवा. नच्चेज्जवा. अभिणच्चेज्जवा. हय हिंसेज्जवा. हत्थि गुलगुलायंतं उक्किट्ठ सीहणाय करेइ. करंतं वा साइज्जइ ।

(निशीथ अ० १७ बो० १४०)

जे० जे कोई भि० साधु साध्वी. गा० गावे गीत राग अलापी नें वा० वजावे वीणा ढाल तालादिक न० नाचे थेइ २ करे अ० अत्यन्त नाचे. ह० घोड़ा नी परे हींसे हणहणाहट करे

कोई विषय पीडतो थको, ह० हाथी नी परे. गु० गुलगुलाहट करे विषय पीड्यो थको ते उत्कृष्ट सिंहनाद करे विषय पीड्यो थको. क० करता नें अनुमोदे तो पूर्ववत् प्रायश्चित.

अथ इहां तो वाजारे लारे ताल मेली गायां दण्ड कह्यो छै। गावे वा बजावे ए नाटक नों प्रायश्चित्त कह्यो छै। पिण एकलो निरवद्य गायवो नथी वर्ज्यो। ए तो नाटक में गावे तेहनों दण्ड कह्यो छै। जिम निशीथ उ० ४ कह्यो। उच्चार पासवण परठी शुचि न लेवे तो प्रायश्चित्त आवे ते पासवण परठी ने शुचि किम लेवे ते पासवण तो पोतेइ शुचि छै ते शुचि तो उच्चार री छै। पिण उच्चार करे तिवारे पासवण पिण लारे हुवे ते माटे बेहूं पाठ भेला कह्या छै। ते उच्चार, पासवण, बेहूं करी नें उच्चार री शुचि न लेवे तो प्रायश्चित्त छै। पिण एकलो पासवण परठवी (करी) में शुचि न लेवे तो प्रायश्चित्त नहीं। तिम गावे बजावे नाचे तो प्रायश्चित्त कह्यो। ते पिण वाजारे लारे तान मेली गावे तेहनों प्रायश्चित्त छै। तथा सावद्य गाथा रो प्रायश्चित्त छै पिण निरवद्य गाथा रो प्रायश्चित्त नहीं। तथा भगवती श० १ उ० २ तेजू लेशी ने "सरागी वीतरागी न भाणियव्वा" एहवूं कह्यूं तो तेजू लेशी नें सरागी किम न कहिइं। पिण इहां तो कह्यो—तेजू, पद्म, लेशी रा सरागी, वीतरागी ए बे भेद न करिवा, ते किम—तेजू, पद्म, सरागी में में छे, वीतरागी में नथी। ते माटे सरागी वीतरागी ए बे भेद भेला वर्ज्या। पिण एकलो सरागी वर्ज्यो नहीं। तिम गावे बजावे तो दण्ड कह्यो, ते पिण नाटक में वाजारे लारे गावणो संलग्न छै। ते माटे गायां वजायां दण्ड कह्यो छै। पिण एकलो गावणो न वर्ज्यो। तिण सूं निरवद्य गायां दोष नहीं। इम संलग्न पाठ घणे ठिकाणे कह्या। तेहनों न्याय तो उत्तम जीव विचारे। अनें जो निशीथ रो नाम लेई नें सर्व गावणो निषेधे—तेहनें लेखे तो सूत्र नी गाथा, काव्य, पिण गायने न कहिणा। जो घणी राग में घणो दोष कहे तो थोड़ी राग में थोड़ो दोष कहिणो। जो इम हुवे तो श्री गणधरे गाथा काव्य छन्द रा सूत्र क्यूं रच्या। निशीथ में इम तो न कह्यो जे सूत्र री गाथा काव्य राग सहित कहिणा। अनें अनेरो न कहिणो। इम तो न कह्यो। जे जावक गावण ने निषेधे तेहने लेखे तो किञ्चिन्मात्र पिण राग सहित गाथा कहिणी नहीं-इम कह्यां शुद्ध जवाव देवा असमर्थ जत्र अकवक अव्यक्त वचन वोले, पिण मत पक्षी लीधी टेक छोड़े नहीं। अनें न्यायवादी सिद्धान्त रो न्याय मेली शुद्ध श्रद्धा धारे ते सावद्य वचन मे दोष जाणे

पिण निरवद्य वचन में दोष श्रद्धे नहीं। ते निरवद्य वाणी वचन मात्र कहो—भावें छन्द जोड़ी राग सहित कहो ते राग में दोष नहीं। प्रथम तो समवायाङ्ग ३५ समवाय नी टीकामें तीर्थङ्कर वाणी राग सहित कही, ग्राम युक्त कही—ते टीका लिखिये छै।

उपनीत रागत्वं मालवा केशिक्यादि ग्रामराग युक्तता

अथ इहां राग सहित मालवा केशिक्यादि ग्राम सहित तीर्थङ्कर नी वाणी नो सातमो अतिशय कह्यो तें माटे निरवद्य वाणी राग सहित गाया दोष नहीं १। तथा ठाणाङ्ग ठा० ४ च्यार काव्य कह्या गद्य. पद्य. कथ्य. गेय. इहां पिण गेय कहितां गावा योग्य कह्यो २। तथा उत्तराध्ययन अ० १३ गा० १२ कह्यो—मुनीश्वर गाथाई करी धर्म देशना दीधी एहवूं कह्यो। ते गाथा कहिवे जोड़ अनें राग वेहूं आवे तिहां टीका मे "गावे ते गाथा इम कह्यो ३। तथा नन्दी सूत्र में सूत्र नी नेश्राय विना बुद्धि फेलावे ते मतिज्ञान रो भेद कह्यो। तथा अणदीठ्यो अणसांभल्यो जबाव तत्काल उपजावी देवे ते औत्पातिकी बुद्धि मतिज्ञान रो भेद कह्यो ४। तथा उत्तराध्ययन अ० २६ बो० २२ अर्थ में कवि पणो करी मार्ग दीपावणो कह्यो ५। तथा नन्दी सूत्र मे कह्यो—महावीर रा साधु रा १४ हजार पइन्ना कीधा। तथा अनेरा तीर्थङ्कर रा जेतला साधु थया त्यां पोता नी ४ बुद्धिइं करी तेतला पइन्ना कीधा ६। तथा मिथ्यात्वी रा पिण कीधा ग्रन्थ सम्यग्दृष्टि रे समश्रुत कह्या तो साधु पोते जोड़े तेहने मिथ्या श्रुत किम कहिये ७। तथा गणधरे पिण सूत्र नी जोड़ कीधो तेहमें छन्द काव्यादिक राग सहित छै ८। इत्यादिक अनेक ठिकाणे जोड़ अने राग सहित वाणी निरवद्य कही छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण।

इति कविताऽधिकारः।

अथ अल्पपाप बहु निर्जराऽधिकारः !

केतला एक अज्ञानी कहे—साधु ने असूजतो अशनादिक जाणी नें श्रावक देवे तेहनों पाप थोड़ो अनें निर्जरा घणी निपजे। ते अनेक कुयुक्ति लगावी अशुद्ध आहार री थाप करे। वली भगवती रो नाम लेई विपरीत कहे छै। ते पाठ लिखिये छै।

समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण पाण खाइम साइमेणं पड़िलाभेमाणस्स किं कज्जइ गोयमा ! बहुतरिया से निज्जरा कज्जइ. अप्पतराए से पावे कम्मे कज्जइ ।

(भगवती श० ८ उ० ६)

स० श्रमणोपासक नें भ० भगवन् ! त० तथारूप. श्रमण प्रते मा० ब्रह्मचारी प्रते अ० अप्राशुक सचित्त अ० अनेषणीक दोष सहित अ० अशन पान खादिम स्वादिम प० प्रतिलाभता नें कि० स्यू फल हुइ . गो० गोतम ! ब० घणी निर्जरा हुइ अ० अल्प थोड़ू पाप कर्म हुइ .

अथ इहां इम कह्यो—जे श्रावक साधु नें सचित्त. अनें असूजतो देवे तो अल्प पाप बहु निर्जरा हुवे। ए पाठ नों न्याय टीकाकार पिण केवली नें भलायो छै। तो ए अशुद्ध आहार री थाप किम करणी। अशुद्ध आहार री थाप कियां ठाम २ सूत्र उत्थपता दीसे छै। सूत्र मे तो अशुद्ध आहार नें ठाम ठाम निषेध्यो छै। ते माटे अशुद्ध आहार नी थाप न करणी। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण।

तथा भगवती श० ५ उ० ६ साधु नें अप्राशुक अनें अनेषणीक आहार दियां अल्प आयुषो बंधतो कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

कहरणं भंते ! जीवा अप्पाउयत्तए कम्मं पकरेंति. गोयमा ! तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पा उयत्तए कम्मं पकरेंति । तंजहा—पाणे अइवाइत्ता. मुसं वदित्ता. तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असणं पाणं. खाइमं. साइमं. पडिलाभित्ता भवइ एवं खलु जीवा अप्पा उयत्ताए कम्मं पकरेंति ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

क० किम भ० भगवन्त ! जीव. अ० अल्प थोड़ो आयुषो कर्म बांधे. गो० हे गोतम ! ति० त्रिण स्थानके करी नें. जी० जीव अ० अल्प थोड़ो आयुः कर्म बांधे. तं० ते कहे छै पा० प्राणी जीव नें हणी नें. मु० मृषावाद बोली नें. त० तथा रूप दान योग्य पात्र श्रमण नें माहण नें अ० अप्राशुक सचित्त अ० असूझतो अ० अशन. पान खादिम स्वादिम. प० प्रतिलाभी ने, ए० इम निश्चय जीव. अ० अल्प आयुः कर्म बांधे

अथ इहां तो साधु नें अप्राशुक. अनेषणीक आहार दीधां अलपायुष बांधे कह्यो इहां तो जे असूझतो देवे ते जीव हिंसा अनें झूठ रे बरोबर कह्यो छै। अल्प आयुषो ते निगोद रो छै । जे जीव हण्या. झूठ बोल्यां. साधु नें अशुद्ध अशनादिक दीधां. बंधतो कह्यो । इम हिज ठाणाङ्ग ठा० ३ अशुद्ध दियां अल्पआयुषो बंधतो कह्यो । तो अशुद्ध दियां थोड़ो पाप घणी निर्जरा किम हुवे । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति २ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली भगवती श० १८ कह्यो जे साधु नें अशुद्ध आहार तो अभक्ष्य छै। ते पाठ लिखिये छै

धरागा सरिसवा ते दुविहा परागत्ता. तंजहा--सत्थ परिगाय. असत्थ परिगाय. तत्थगां जेते असत्थ परिगाया तेगां समगागां निग्गंथागां अभक्खेया, तत्थगां जेते सत्थ परिगाया ते दुविहा परागत्ता, तंजहा--एसगिज्जाय, अगोसगिज्जाय। तत्थगां जेते अगोसगिज्जा तेगां समगागां गिग्गंथागां अभक्खेया। तत्थगां जेते एसगिज्जा ते दुविहा परागत्ता, तंजहा--जातियाय अजातियाय। तत्थगां जेते अजाइया तेगां समगागां गिग्गंथागां अभक्खेया। तत्थगां जेते जाइया ते दुविहा परागत्ता, तंजहा. लद्धाय. अलद्धाय. तत्थगां जेते अलद्धा तेगां समगागां गिग्गंथागं अभक्खेया। तत्थगां जेते लद्धा तेगां समगागां गिग्गंथागं भक्खेया, से तेगाट्ठेगां सोमिला! एवं वुच्चइ जाव अभक्खेयावि ॥ ६ ॥

(भगवती श० १८ उ० १०)

ध० धान सरिसव ते दु० बे प्रकारे. प० परूप्या. त० ते कहे छै स० शस्त्र परिगात अ० अशस्त्र परिगात त० तिहां जेते अ० अशस्त्र परिगात त० ते श्रमण ने नि० निर्ग्रंथ ने. अ० अभक्ष्य कह्या. त० तिहां जे ते स० शस्त्र परिगात ते० ते बे प्रकारे परूप्या त० ते कहे छै ए० एष-गीक. अ० अनेषगीक. त० तिहां जे ते अ० अनेषगीक ते. स० श्रमण ने नि० निर्ग्रन्थ नें अ० अभक्ष्य कह्या त० तिहां जे ते ए० एषगीक ते बे प्रकारे परूप्या. त० ते कहे छै. जा० याच्या अने अ० अगायाच्या त० तिहां जे अगायाच्या. ते० ते श्रमण नें निर्ग्रन्थ ने. अ० अभक्ष्य कह्या. त० तिहां जे ते जा० याच्या ते दु० बे प्रकारे परूप्या त० ते कहे छै. ल० लाधा अ० अगालाधा त० तिहां जे ते अगालाधा ते स० श्रमण निर्ग्रन्थ ने अ० अभक्ष्य कह्या त० तिहां जे ते लाध्या ते श्रमण ने निर्ग्रन्थ ने. भ० भक्ष्य जाणवा ते० तिण कारणे. सो० सोमिल! ए० इम कह्या. जा० यावत् सरिसव भक्ष्य पिण अभक्ष्य पिण.

अथ इहां श्री महावीर स्वांमी सोमिल नें कह्यो। धान सरसव (सर्षप) ना बे भेद कह्या। शस्त्र परिणत अनें अशस्त्र परिणत। अशस्त्र परिणत ते सचित्त

ते तो अभक्ष्य छै। अनें अशस्त्र परिणत रा वे भेद कह्या। एषणीक, अनेषणीक। अनेषणीक ते असूझतो ते तो अभक्ष्य। एषणीक रा वे भेद कह्या। याच्यो, अणयाच्यो। अणयाच्यो तो अभक्ष्य छै। याच्या रा वे भेद कह्या। लाधो. अणलाधो.। अणलाधो अभक्ष्य, छै अनें लाधो ते भक्ष्य, इम हिज मासा कुलथा. पिण अप्राशुक अनेषणीक. अभक्ष्य. कह्या छै। ए तो प्रत्यक्ष सचित्त अनें असूजतो आहार तो साधु नें अभक्ष्य कह्यो। ते अभक्ष्य आहार साधु नें दीधां बहुत निर्जरा किम होवे। तथा ज्ञाता अ० ५ मे सुखदेवजी नें स्थावर्चा पुत्रे पिण इम अनेषणीक आहार अभक्ष्य कह्यो। तथा निरावलिया वर्ग ३ सोमिल नें पार्श्वनाथ भगवान् पिण अप्राशुक. अनेषणीक आहार साधु नें अभक्ष्य कह्यो तो अभक्ष्य साधु नें दियां घणी निर्जरा किम हुवे अनें तिहां देवा वालो समणोपासक कह्यो छै। ते माटे श्रावक अप्राशुक अनेषणीक अभक्ष्य आहार जाणी ने साधु ने किम वहिरावे डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ वोल सम्पूर्ण।

तथा उवाई प्रश्न २० श्रावकां रा गुण वर्णन में एहवो पाठ कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

समणे णिग्गंथे फासुए एसणिज्जेणं असणं पाणं खादिमं सादिमेणं वत्थ परिग्रह कंवल पायपुच्छणेणं उसह भेसजेणं पडिहारिएणं पीढ फलग सेजा संथारएणं पडिलाभेमाणे विहरंति।

(उवाई प्रश्न २०)

स० श्रमण. तपस्वी ने निर्ग्रन्थ नें. फा० प्राशुक. ए० एषणीक. अ० अशन पान. खादिम स्वादिम व० वस्त्र परिग्रह क० कम्बल. प० पाय पूछणो. उ० औषध. शुराठ्यादिक भे० बूटी बाटी प० पाडिहारो ते धणी ने पाछो सूपे पीढ़ फलगशय्या. सन्थारा. प० वहिरावतां थकां वि० विचरे.

अथ इहां श्रावकां रा गुण वर्णन में प्राशुक एषणीक. नों देवो कह्यो । तो जाणी नें अप्राशुक ते सचित्त असूझतो आहार साधु नें श्रावक किम वहिरावे तथा भगवती श० २ उ० ५ तुंगिया नगरी ना श्रावक पिण साधु नें प्राशुक. एषणीक आहार वहिरावे इम कह्यो । तथा राय प्रसेणी मे चित्त अनें प्रदेशी पिण साधु नें प्राशुक. एषणीक आहार प्रतिलाभतो विचरे इम कह्यो तो श्रावक जाणी नें असूझतो आहार साधु नें किम विहरावे । डाहा हुए तो विचारि जोइजो ।

इति ४ बोल सम्पूर्ण ।

तथा उपासक दशा अ० १ आनन्द श्रावक कह्यो । ते पाठ लिखिये छै ।

कप्पइ मे समणे निग्गंथे फासुए एसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं वत्थ परिग्गह कंवल पाय पुच्छणेणं पीढ फलक सेज्जा संथारएणं उसह भेसज्जेणं पडिलाभेमाणस्स विहरित्तए तिकट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता पसिणाइं पुच्छति ।

(उपाशक दशा अ० १)

क० कल्पे मे० मुझ ने , स० श्रमण ने नि० निर्ग्रन्थ नें फा० प्राशुक ए० एषणीक. अशन पान. खादिम स्वादिम. व० वस्त्र परिग्रह क० कम्बल पा० पाय पूछणो. पी० पीढ़ फलक शय्या सन्थारो ऊ० औषध भे० भेषज. प० दान देतो थको वि० विचरू. ति० इम करी ने . इ० ए.हवो अ० अभिग्रह ग्रह्यो ग्रही ने प्रश्न पूछे छै.

अथ इहां आनन्द श्रावक कह्यो । कल्पे मुझ ने—श्रमण निर्ग्रन्थ नें प्राशुक एषणीक. अशनादिक देवो । तो अप्राशुक अनेषणीक जाण नें साधु ने देवे ते श्रावक नें किम कल्पे । इत्यादिक ठाम २ सूत्र मे साधु नें प्राशुक. एषणीक.

अशनादिक ना दातार श्रावक नें कह्या। श्रावक नें तो असूझतो देणो न कल्पे। अनें असूझतो लेणो साधु नें न कल्पे, तो असूझतो दियां अल्प पाप बहु निर्जरा किम हुवे। भगवती श० ५ उ० ६ कह्यो आधाकर्म्मी आदिक असूझतो आहारा ए निरवद्य छै। एहवो मन में धाटे तथा परूपे ते बिना आलोयां मरे तो विराधक कह्यो। तो सचित्त अनें असूझतो जाण नें साधु नें दियां बहुत निर्जरा एहवी थाप उत्तम जीव किम करे। तथा वली भगवती श० ७ उ० १ कह्यो जे श्रावक प्राशुक एषणीक अशनादिक साधु नें देई समाधि उपजावे तो पाछो समाधि पामे इम कह्यो। पिण अप्राशुक अनेषणीक दियां समाधि पामती न कही। तो अप्राशुक अनेषणीक जाण नें दियां बहुत निर्ज़रा किम हुवे। केतला एक कहे—कारण पड्यां श्रावक अप्राशुक. अनेषणीक. साधु नें बहिरावे तो अल्प पाप बहुत निर्जरा हुवे। ते पिण विपरीत कहे छै। साधु नें असूझतो देणो श्रावक नें तो कल्पे नहीं। तो ते असूझतो किम देवे। अनें कारण पड्यां पिण साधु नें असूझतो न कल्पे ते किम लेवै। अनें कारण पड्यां ई असूझतो लेसी तो सेंठो कद रहसी। भगवान् तो कह्यो—कारण पड्यां सेंठो रहिणो पीड़ा अङ्गीकार करणी। पिण कारण पड्यां दोष न लगावे। राजपूत रो पुत्र संग्राम मे कारण पड्यां भागे तो ते शूर किम कहिए। सती बाजे ते कारण पड्यां शील खंडे तो ते सती किम कहिये। तिम कारण पड्यां अशुद्ध लेवारी थाप करे तेहनें साधु किम कहिए। अनें तिहां "अफासु अणेसणिज्जेणं" एहवो पाठ कह्यो छै। ते "अफासु" कहितां सचित्त अनें "अणेसणिज्जेणं" कहितां असूजतो ते तो श्रावक शङ्का पड़्यां कोई साधुनें न देवै। तो जाण नें अप्राशुक. असूझतो साधु नें किम देवै। अनें साधु जाणनें सचित्त असूझतो किम लेवै। ते भणी कारण पड़्यां अशुद्ध लेवारी थाप करणी नहीं। टीकाकार पिण केवली ने भलायो छै। ते टीका लिखिये छै।

"यत्पुनरिह तत्वं तत्केवलि गम्यमिति"

अथ इहां पिण टीका में ए पाठ नों न्याय केवली नें भलायो ते माटे अशुद्ध लेवारी थाप करणी नही। ज्ञानी नें भलावणो तथा कोई बुद्धिमान इण पाठरो अनुमान थी न्याय मिलावे पिण निश्चय थाप किम करै; जे अनेरा सूत्र पाठ न उत्थपै। अनें ए पिण पाठ न्याये करी थापै एहवूं न्याय तो उत्तम जीव मिलावे। तिवारे कोई कहै-एहवूं न्याय किम मिलै। तेहनों उत्तर-जे-

रात्रि नों वासी पाणी स्त्री आदिक ना कह्यां सूं श्रावक जाणतो हुन्तो ते वासी पाणी ने किणही अनेरे वावरी लीधो अनें ते ठाम में काचो पाणी घाल्यो, पिण ते श्रावक नें काचा पाणीरी खबर नहीं ते तो वासी पाणी जाणे छै। एतले साधु आव्या तिवारे तेणे श्रावक ते वासी पाणी जाणी नें पोता नों व्यवहार शुद्ध निर्दोष चौकस करी नें साधु नें वहिरायो। पाणी तो अप्राशुक, अनें तेहनी पागड़ी में पक्षी आदिक सचित्त न्हाख्यो तथा सचित्त रजादिक शरीर रे लागी तेहनी पिण श्रावक ने खबर नहीं, ए अनेषणीक ते असूझतो छै, पिणआपरा व्यवहार में प्राशुक एषणीक, जाणी अत्यन्त चौकस करी घणूं हर्ष आणीनें साधुनें वहिरायो, तेहनें अल्प पाप. ते पाप तौ नहिज छै। अनें हर्ष करी दीधां वहुत घणी निर्जरा हुवे। ए न्याय करी पाठ कह्यो हुवे तो पिण केवली जाणे ते सत्य। इम हिज मूंगड़ा में घाणी मे कोरो अन्न छै, अचित्त दाखां मे सचित्त दाख छै। अचित्त स्वादिम में सचित्त स्वादिम छै। इम च्यारूं आहार सचित्त असूझतो छै, पिण श्रावक तो शुद्ध व्यवहार करी देवे तो अल्प पाप ते पाप न थी अनें वहुत निर्जरा हुई। ते पिण अचित्त सूझतो जाणी सर्वज्ञ जाणे ए न्याय सूत्र करी मिलतो दीसे छै।

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

तथा इण हिज न्याय पर गाथा लिखिये छै।

अहा कडाणि भुंजंति अण्ण मन्नेस कम्मुणा।
उवलित्तिय जाणिज्जा अणुवलित्तेतिवा पुणो ॥८॥
एते हिं दोहिं ठाणेहिं ववहारो न विज्जइ।
एएहिं दोहिं ठाणेहिं अणायारंतु जाणए ॥९॥

(सूयगडाङ्ग श्रु० २ उ० ५ गा० ८।९)

या० जे—साधु आश्री ६ काय मर्दी नें वस्त्र भोजन उपाश्रयादिक. कीधा एतला. भुं० उपभोग करे. ते. अ० माहोमाही स० आपणा कर्मे उपलिप्त जाणीवा इसो एकान्त न बोले अथवा कर्मे

करी उपलिप्त न हुयो इसो पिण न बोले जिण कारण आधा कर्मी आदिक आहार पिण सूत्र नें उपदेशे शुद्ध निश्चय करी ने निर्दोष जाणी जीमतो कर्मे न लिपाइं. अथवा सूझतो आहार पिण शंका सहित जीमतो कर्मे करी लिपाइ. इस्यो ते एकान्त वचन न बोलें। ए विहूं स्थानके करी. व० व्यवहार न थी। ए० विहूं स्थानके करी अनाचार जाणो.

अथ इहां कह्यो—शुद्ध व्यवहार करी नें आधा कर्मी लियो निर्दोष जाणी नें तो पाप न लागे। तिम श्रावक पिण शुद्ध निर्दोष प्राशुक. एषणीक जाण नें अप्राशुक अनेषणीक दियो तेहनें पिण पाप न लागे। तथा भगवती श० १८ उ० ८ कह्यो वीतराग जोय २ चाले तेहथी कुक्कुटादिक ना अण्डादिक जीव हणीजे तेहनें पिण पाप न लागे। पुण्य नी क्रिया लागे शुद्ध उपयोग माटे। तथा आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ४ उ० ५ कह्यो जो कोई साधु ईर्याई चालतां जीव हणीजे तो तेहनें पाप न लागे हणवारो कामी नहीं ते माटे। तिम श्रावक पिण शुद्ध व्यवहार करी अप्राशुक अनेषणीक दियो तेहनें पिण पाप न लागे। अजाण पणे तो साधु भेलो अभव्य पिण रहे चौथा व्रत रो भागल पिण अजाण पणे भेलो रहे पिण तेहनों शुद्ध व्यवहार जाणी अनेरा साधु वांदे व्यावच करे। त्यांने पाप न लागे। अनें अभव्य तथा भागल नें जाण नें भेलो राखे तो दोष लागे, तिम श्रावक पिण शुद्ध व्यवहार करी अणजाणपे अशुद्ध अशनादिक देवे साधु नें, तो ते श्रावक नें पिण पाप न लागे। अनें जाण नें अशुद्ध दियां पाप लागे छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

तिवारे कोई कहे—अल्प पाप कह्यो ते अल्प शब्द थोड़ो अर्थ वाची कहिइं पिण अल्प अभाव वाची किहां कह्यो छै, अल्प कहितां नथी एहवूं पाठ किहांई कह्यो हुवे तो बतावो इम कहे तेहनों उत्तर—पाठे करी लिखिये छै।

ततेणं अहं गोयमा ! अण्णया कयायी पढम सरद कालसमयंसि अप्पवुट्ठि कायंसि गोसाले णं मंखलिपुत्ते णं

सद्धिं सिद्धत्थगामाओ नगराओ कुम्भ गामं नगरं संपट्ठिए विहाराए ॥

(भगवती श० १५)

त० तिवारे भ० हूं गोतम ! अ० एकदा प्रस्तावे. प० प्रथम शरत्काल समय नें विषे माग शीष. अ० अविद्यमान वृष्टि छते. गो० गोशाला मंखली पुत्र साथे सि० सिद्धार्थ ग्राम न० नगर थकी. कु० कूर्म ग्राम नगर प्रते. सं० चाल्या विहार नें अर्थे

अथ इहां कह्यो अल्प वर्षा में भगवान् विहार कियो। तो थोड़ी वर्षा में तो विहार करणो नहीं। पिण इहां अल्प शब्द अभाव वाची छै। अल्प वर्षा ते वर्षा न थी ते समय विहार कीधो। तिहां भगवती री टीका में पिण अल्प शब्द अभाव वाची पहवो अर्थ कियो छै ते टीका लिखिये छै।

"अप्पवुट्ठि कायंसिति-अल्पशब्दस्याऽभाववचनत्वादविद्यमान वर्षेत्यर्थः"

अथ इहां पिण अल्प शब्द नों अर्थ अभाव कियो। अल्प वर्षा ते अविद्यमान वर्षा (वर्षा नहीं) इम टीका में अर्थ कियो छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ७ बोल सम्पूर्ण।

तथा पाठ लिखिये छै।

अप्प प्पाणे प्पबीजंमि पडिच्छन्न वुडेम्मिसं समयं संजए भुञ्जे, जयं अपरिसाडियं ॥३५॥

(उत्तराध्यान अ० ६ गाह ३५)

अ० अल्प (न थी) प्राणी द्वीन्द्रियादिक अ० अल्प (नथी) बीज. अन्नादिक ना, प० ढक्योड़ी पहवी भूमि नें विषे. स० आचार वन्त. सं० साधु. भु० जावे ज० यत्ना सहित. अ० आहार नें अण नाखतों थकों.

इहां पिण कह्यो—अल्प प्राणी अल्प वीज छै जिहां ते स्थानके साधु नें आहार करवो । तिहां टीका में अल्प शब्द अभाव वाची इम अर्थ कियो छै । प्राण वीज न हुवे ते स्थानके आहार करिवो । "अविद्यमानानिबीजानि" इति टीका । इहां टीका में पिण नहीं छै वीज जिहां एहवो अर्थ कियो । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ८ बोल सम्पूर्ण ।

तथा आचाराङ्ग में पिण अल्प शब्द अभाववाची कह्यो—ते पाठ लिखिये छै ।

सेय आहच्च पड़िगाहिए सिया. से तं आयाए एगंत मवक्कमेज्जा एगंत मवक्कमित्ता अहे आरामंसिवा अहे उवस्सयंसिवा अप्पंडे अप्पपाणे अप्पवीए. अप्पहरीए. अप्पोसे अप्पोदए. अप्पुत्तिंग-पणग. दग. मट्टिअ. मक्कडा. संताणए. विगिंचिय. २ उम्मीसं विसोहिय २ तओ संजया मेव भुंजिज्जवा पीइज्जवा.

(आचाराङ्ग. श्रु० २ अ० १ उ० १)

से० ते. आ० अकस्मात्. प० अजाणपणे सचित्त आहार ने प० ग्रहण करै सि० कदाचित् से० ते. त० तिण आहार ने. आ० ग्रहण करी ने ए० निर्जन स्थान नें विषे. म० जावै. ए० एकान्त में जावी नें अ० हेठे आ० वाग नें विषे अ० हेठे उपाश्रय नें विषे अ० अल्प न थी अण्डा अल्प न थी. प्राणी. अल्प न थी वीज अ० अल्प न थी लीलौती अल्प न थी ओस अल्प न थी जल. अल्प न थी तृणस्थित जल. प० तथा फूलन द० पानी म० मिट्टी म० मांकड़ी रा सं० जाला एहवा स्थान नें विषे. वि० काढी काढी नें मि० मिल्या हुवा ने वि० शोधी ने त० तिवारे. स० साधु खावे तथा पीवे.

अथ इहां पिण अल्प शब्द अभाववाची कह्यो । प्राण वीजादिक नहीं होवे, ते स्थानके शुद्ध करी आहार करवो । टीका में पिण इहां अल्प शब्द अभाव-

वाची कह्यो छै। इम अनेक ठामे अल्प कहितां न थी इम कह्यो छै। तिम साधु नें सचित्त असूझतो अजाण्ये देवै पिण पोता नों व्यवहार शुद्ध करी नें दियो ते माटे तेहनें पिण अल्प ते न थो पाप अनें घणा हर्ष थी शुद्ध व्यवहार करी दियां वहुत निर्जरा हुवै। एहवो न्याय सम्भवियै छै। शुभ योगां थी तो निर्जरा अनें पुण्य वंधै पिण शुभ योगां थी पाप न वंधै। अनें थोड़ो पाप घणी निर्जरा वतावे तिण नै पूछी जे—ए किसा योगां थी हुवै। वली च्यारूं आहार सूझता छै। पिण शङ्का सहित दियां पाप वंधै। तिम च्यारूं आहार असूझता छै पिण शुद्ध व्यवहार करी सूझता जाणी दीधां पाप न वंधै।

इति ९ बोल संपूर्ण।

तिवारे कोई कहै—अल्प शब्द अभाव वाची पिण छै। अनें अल्प नाम थोड़ा नों पिण छै। अठे अल्प पाप वहुत निर्जरा कही ते वहुत नी अपेक्षाय अल्प थोड़ों पाप सम्भवे। पिण अल्प शब्द अभाववाची न सम्भवे इम कहै तेहनों उत्तर पाठ करी लिखिये छै।

इह खलु पाईणं वा जाव उदीणं वा संते गतिया सड्ढा भवंति तंजहा गाहा वईवा जाव कम्म करीवा ते सिंचणं आयार गोयरे णो सुणिसंते भवति जाव तं रोय माणे हिं एक्कं समण जायं समुद्दिस्स तत्थ २ आगारीहिं आगाराइं चेइयाइं भवंति, तंजहा आएसणाणिवा जाव भवण गिहाणिवा महयापुढविकाय समारंभेणं एवं महया आउ. तेउ. वाउ. वणस्सइ तसकाय समारंभेणं महया आरंभेणं महया विरूव रूवेहिं पाव कम्मेहिं तंजहा छायणओ लेवणओ संथार दुवार पिहणओ सीतोदए वा परिट्ठवियै

पुव्वे भवति, अगणिकाए वा उज्जलिय पुव्वे भवति जे भयंतारो तहप्प गाराइं आएस णाणिवा जाव भवणगिहाणिवा उवागच्छंति इतरा तरेहिं पाहुडेहिं वट्टंति दुपक्खं ते कम्मं सेवंति अयमाउसो महा सावज्ज किरिया वि भवइ ॥१५॥

इह खलु पाईणं वा जाव तंरोयमाणेहिं अप्पणो सयट्ठाए तत्थ २ आगारीहिं आगाराइं चेइयाइं भवंति तंजहा आएसणाणिवा जाव भवण गिहाणि वा महया पुढविकाया समारंभेणं जाव अगिणिकाय वा उज्जालिय पुव्वे भवति जे भयंतारो तहप्प गाराइं आएसणाणिवा जाव भवण गिहाणि व उवागच्छंति इतरातरेहिं पाउडेहिं वट्टंति एगपक्खं ते कम्मं सेवंति अयमाउसो अप्पसावज्जा किरिया वि भवति ॥१६॥

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० २ उ० २)

इ० इहां ख० निश्चय. पा० पूर्व दिशा नें विषे. जा० यावत् उ० उत्तर दिशा नें विषे. एं० केइएक. स० श्रद्धावन्त हुवे छे तं० ते कहे छै गा० गृहस्थ. जा० यावत् क० नौकरनी. त० तिण. आ० आचार. गो० गोचर. णो० नहीं सु० सुण्या हुइं जा० यावत् तं० ते. रो० रुचिवन्त थई. पु० एक सा० साधु नें सा० स० उद्देश्य करी नें. त० तठे अ० गृहस्थ अ० घर. चे० बनाव्यो हुं त० ते कहे छै आ० लोहारशाला था० यावत्. भ० भवन घर. म० महा पु० पृथिवी कायना आ० आरंभे करी म० महा पानी. ते० अग्नि. वा० वायु व० वनस्पति. त० त्रस कायाना. एं० आरम्भ करी नें. म० मोटो. एं० चिन्तवन म० मोटो आरम्भ म० महा वि० त्रिविध प्रकार पा० पाप कर्मे करी. छ० छपावे. ले० लेपावे सं० बिछावणा करे दु० द्वार करे सी० शीतल पाणी छांटे. पु० पहिले भ० हुइं अ० अग्नि प्रज्वाले पु० हुइं जे० जे म० साधु. त० तथा प्रकार. आ० लोहारशाला. जा० यावत् भ० भवन घर. उ० आवे इ० इम प्रकार पा० ढक्या मकान नें विषे व० वसै दु० दोनूं पक्ष सम्बन्धी. क० कर्म. सेवे. तो. आ० हे आयुष्मन् ! म० महा सावद्य क्रिया. भ० हुइं ॥ १५ ॥

इ० इहां. ख० निश्चय. पा० पूर्व दिशा नें विषे. जा० यावत्. त० ते. रुचिकर्त्ता अ० आपणे. स० स्वार्थ. त० तिहां. अ० गृहस्थ. अ० घर. चे० कराव्या भ० हुइ त० ते कहे छै. आ०

आ० लोहारशाला यावत्. भ० भवन घर. म० महा पु० पृथ्वी कायना आरम्भ करी जा० यावत् अ० अग्निकाय. पु० पहिलां प्रज्वालित. भ० हुइ. जे० जे साधु. त० तथा प्रकार आ० लोहार-शाला यावत्. भ० भवन घर उ० आवे इ० इम पा० तक्या मकान नें विषे व० रह्या थका. ए० एक पक्ष कर्म. से० सेवै तो आ० आयुष्मन्! अ० अल्प (नहीं , सा० सावद्य क्रिया भ० हुइ. ॥ ११ ॥

अथ इहां कह्यो—साधु रे अर्थे कियो उपाश्रयो भोगवै तो महासावद्य क्रिया लागे। दोय पक्ष रो सेवणहार कह्यो। अनें गृहस्थ पोता नें अर्थे कीधा उपाश्रय साधु भोगवे तो एक शुद्ध पक्ष रो सेवणहार कह्यो। अनें अल्प सावद्य क्रिया कही। ते सावद्य क्रिया नहीं इम कह्यो। जे बहुत निर्जरा नी अपेक्षाय अल्प थोड़ो पाप कहे त्यांरे लेखे इहां आधा कर्म्मी स्थानक भोगव्यां महा सावद्य क्रिया कही। तिम महा नी अपेक्षाय शुद्ध उपाश्रय भोगव्यां अल्प सावद्य ते थोड़ी सावद्य क्रिया तिणरे लेखे कहिणी। अनें इहां अल्प थोड़ो सावद्य न सम्भवे, तो तिहां पिण अल्प थोड़ो पाप न सम्भवे अनें निर्दोष उपाश्रय भोगव्यां थोड़ो सावद्य लागे तो किस्यो उपाश्रय भोगव्यां सावद्य न लागे। तिहाँ टीकाकार पिण. अल्प सावद्य ते "सावद्य न थी" इम कह्यो। पिण महा सावद्य नी अपेक्षाय थोड़ो सावद्य इम न कह्यो। तिम बहुत निर्जरा रे ठामे अल्प थोड़ो पाप न सम्भवै। बहुत निर्जरा नी अपेक्षा य अल्प थोड़ो पाप कहे ए अर्थ अण मिलतो सम्भवै छै। ते माटे अप्राशुक अने-षणीक आहार अण जाणतां दियां बहुत निर्जरा हुवै अनें पाप न हुवे। ए अर्थ न्यायं सूं मिलतो छै। वली ए पाठ नों अर्थ केवली कहे ते सत्य छै। डाहा हुवे तो विचारी जोइ जो।

इति १० बोल सम्पूर्ण ।

इति अल्पपाप बहु निर्जराऽधिकारः !



श्रीभिक्षु महामुनिराज कृत

अथ कपाटाधिकारः ।

केई पाषण्डी साधु नाम धराय नें पोते हाथ थकी किमाड़. जड़े उघाड़े, अनें सूत्र ना नाम झूठा लेई नें किमाड़ जड़वानी अनें उघाड़वानी अणहुंती थाप करैछै। पिण सूत्र में तो ठाम २ साधु नें किमाड जडणो तथा उघाडणो वर्ज्यौं छै। ते सूत्र ना पाठ सहित यथातथ्य लिखिये छै।

मनोहरं चित्त हरं मल्ल धूवेण वासियं ।
सकवाडं पंडुरुल्लोवं मणसावि न पत्थए ॥४॥

(उत्तराध्ययन अ० ३५)

म ० सुन्दर. च० चित्रघर. स्त्री आदिक ना चित्र युक्त तथा. म० माल्य पुष्पादिके करी तथा धू० धूपे करी सुगन्धित स० किमाड सहित प० श्वेत वस्त्रे करी ढांक्यो एहवा मकान नें साधु म० मन कर पिण न० नहीं प० वाञ्छे।

अथ अठे इम कह्यो—किमाड सहित स्थानक मन करी नें पिण वांछणो नहीं। तो जड़वो किहां थकी। अनें केई एक पाषण्डी इम कहै छै। ए तो विषय कारी स्थानक वर्ज्यो छै। पिण किमाड जड़णो वर्ज्यो नहीं। तेहनों उत्तर—मनोहर चिताम सहित घर-रहिवा नें अनें देखवा नें काम आवै। तथा फूल आदिक सूंघवानें अनें देखवा नें काम आवे। इम इज किमाड़-जड़वा अनें उघाड़वा रे काम आवै छै। ते माटे साधु नें किमाड मने करी पिण जड़णो. उघाड़णो. न वाञ्छणो। तो किमाड़ जड़े तथा उघाड़ै तेहनें साधु किम कहिये। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति १ बोल सम्पूर्ण ।

तथा वली आवश्यक अ० ४ गोचरिया नी पाटी में कह्यो। ते पाठ लिखिये छै।

पडिक्कमामि गोचर चरियाए भिक्खायरियाए उघाड कमाड उघाडणाए।

(आवश्यक सूत्र अ० ४)

प० प्रति क्रमण करू छू. गो० गौ जिम स्थाने २ घास चरे छै तिम हिज स्थाने स्थाने जे भिक्षा ग्रहण किये तिण नें गोचरी कहीइं ते गोचरी ने विषे दोष हुइ ते उ० थोड़ो उघाड़ो विशेष उघाड़ो किमाड़ ने पिण न हुइ तेहनों उघाड़वो ते अजयणा तेहथी प्रतिक्रमू छू।

अथ अठे कह्यो। थोड़ो उघाड़णो पिण किमाड़ घणो उघाड़्यो हुवे तेहनों पिण "मिच्छामि दुक्कडं" देवे तो पूरो जड़णो उघाड़णो किहां थकी। साधु थई नें रात्रि में अनेक वार किमाड़ जड़ै उघाड़ै, अनें दिन रा पिण आहारादिक करतां किमाड़ जड़ै उघाड़ै तिण में केइएक तो दोष श्रद्धै, अनें केइ एक दोष श्रद्धै नहीं। एहवो अन्धारो वेष में छै। तथा गृहस्थ किमाड़ उघाड़ी नें आहारादिक वहिरावे तो जद तो दोष श्रद्धै, अनें हाथां सूं जड़ै उघाड़ै जद दोष न जाणे। जिम कोई मूर्ख भङ्गी अर्थात् चाण्डाल रा घरनी रोटी तो खावे, पिण भङ्गी री दीधी रोटी न खावे। तिम हिज बाल अज्ञानी पोते किमाड़ जड़े. खोले, अनें गृहस्थ खोली नें वहिरावे तो दोष श्रद्धै। ते पिण तेहवा मूर्ख जाणवा। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति २ बोल सम्पूर्ण।

तथा सूयगडाङ्ग में एहवी गाथा कही छै। ते लिखिये छै।

णो पिहेणाव पंगुणे दारं सुन्न घरस्स संजए।
पुट्ठेण उदाहरे वायं ण समुत्थे णो संथरे तणं॥

(सूयगडाङ्ग)

णो० किणहिक कारणें साधु सूने घर रह्यो ते घर नों बारणो ढाके नहीं. णो० किमाड़ उघाड़े पिण नहीं. दा० बारणो पिण सूना घर नों न उघाड़े. किणहिक धर्म पूछ्यो अथवा मार्ग-

दिक पूछ्यां थकां. गा० सावद्य वचन न बोले जिन कल्पी निरवद्य वचन पिण न बोले. गा० तिहां रहितो तृण कचरादि न प्रमार्जे. गो० तृणादिक पाथरे नहीं. ए आचार जिन कल्पी नों छै.

अथ अठे इम कह्यो और जगां न मिले तो सूना घर नें विषे रह्यो साधु पिण किमाड़ जड़े उघाड़े नहीं तो ग्रामादिक में रह्यो किमाड़ किम जड़े उघाड़े ए तो मोटो दोष छै। तिवारे केई अज्ञानी इम कहे। ए आचार तो जिन कल्पी नों छै। स्थविर कल्पी नों नहीं। इम कहे तेहनों उत्तर—इहां पाठ में तो जिन कल्पी नों नाम कह्यो न थी। अनें अर्थ में ३ पदां में जिन कल्पी अनें स्थविर कल्पी नों भेलो आचार कह्यो छै। अनें चौथा पद में जिन कल्पी नों आचार कह्यो छै। अनें शीलाङ्काचार्य कृत टीका में पिण इम हिज कह्यो। ते टीका लिखिये छे।

"केन चिच्छ्यनादि निमित्तेन शून्यगृह माश्रितो भिक्षु स्तद्द्वारं कपाटादिना स्थगयेन्नापि तच्चालयेत्-यावत्. "णावपंगुणेति" नोद्घाटयेत्तत्रस्थो न्यत्र वा केन-चिद्धर्मादिकं मार्गादिकं पृष्टः सन् सावद्यां वाचं नोदाहरेत्। आभिग्राहिको जिन कल्पिकादि निरवद्यामपि न ब्रूयात्। तथा न समुच्छिन्द्यात् तृणानि कचवरं वा प्रमार्जनेन नापनयेत्। नापि शयनार्थी कश्चि दाभिग्रहिकस्तृणादिकं संस्तरेत्। तृणैरपि संस्तारं न कुर्यात्। कम्बलादिना न्योवा सुषिरतृणं न संस्तारेदिति।

अथ इहां कह्यो शयनादिक नें कारणे सूना घर में रह्यो साधु ते घरना किमाड़ जड़े उघाड़े नहीं। अनें कोई धर्म नी बात पूछे तो पूछ्यां थकां सावद्य पाप कारी वचन बोले नहीं। ए आचार स्थविरकल्पी नों जाणवो। अनें वली जिन कल्पी तो निरवद्य वचन पिण नहीं बोलै। तथा तृणादिक कचरो पिण बुहारे नहीं। ए आचार जिन कल्पिकादिक अभिग्रहधारी नो जाणवो। जे पूर्वे ३ पद कह्या, तिण में जिन कल्पी स्थविर कल्पी नों आचार भेलो कह्यो। अनें चौथा पद में केवल जिन कल्पी नों आचार कह्यो। ते माटे इहां सगली गाथा में जिन कल्पी नों नाम लेई स्थविर कल्पी ने किमाड़ जड़णो उघाड़णो थापे ते जिन मार्ग ना अजाण एकान्त मृषावादी अन्यायी छै। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो।

इति ३ बोल सम्पूर्ण।

तथा वली मूर्ख कोई अज्ञानी आचाराङ्ग सूत्र में कण्टक बोंदिया नों नाम लेई साधु नें किमाड़ जड़णो तथा उघाड़णो थापे। ते पाठ लिखिये छै।

से भिक्खू वा गाहावति कुलस्स दुवार वाहं कंटक बोंदियाए पडि पिहियं पेहाए तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणणुन्नविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो अव गुणेज्जवा पविसेज्जवा णिक्खमेज्जवा तेसिंपुव्वा मेव उग्गहं अणुन्नविय पडिलेहिय २ पमज्जिय २ तनो संजया मेव अव गुणेज्जवा पविसेज्जवा णिक्खमेज्जवा ॥ ६ ॥

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० ५)

से० ते भि० साधु साध्वी. ग० गृहस्थ ना घरना बारणा. क० कांटा नी डाली सूं प० ढक्यो थको पे० देखी नें. त० तिण नें. पु० पहिलां. उ० अवग्रह विना लियां अ० विना देख्यां. अ० विना पूज्यां णो० नहीं. उघाड़वो. प० नहीं प्रवेश करवो. णि० नहीं निकलवो. ते० तिण री पु० पहिलां. उ० आज्ञा अ० मागी नें प० देख २ प० पूज २ त० वली स० साधु अ० उघाड़ै प० प्रवेश करे. णि० निकले

अथ अठे इम कह्यो। कण्टकबोंदिया. ते कांटा नी शाखा करी बारणो ढंक्यो हुवे तो धणी नी आज्ञा मागी नें पूंजकर द्वार उघाड़णो। अनें केइएक पाषण्डी इम कहै-कंटक बोंदिया ते फलसो छै। इम झूठ बोले छै पिण कण्टक बोंदिया नों नाम फलसो तो किहां ही कह्यो न थी अभयदेवसूरि कृत टीका में पिण कांटा नी शाखा कही। ते टीका लिखिये छै।

से भिक्खू वेत्यादि-भिक्षुर्भिक्षार्थं प्रविष्टः सन् गृहपति कुलस्य "दुवार वाहंति" द्वारभाग सकण्टकादि शाखया पिहितं प्रेक्ष्य"

इहां पिण कांटानी शाखा ते डाली कही। पिण फलसो कह्यो नहीं। ते माटे कण्टक बोंदिया नें फलसो थापे ते शास्त्र ना अजाण जीवघातक जाणवा। डाहा हुवे तो विचारि जोई जो।

इति ४ बोल सम्पूर्ण।

तथा वली केई बाल अज्ञानी आचाराङ्ग नों नाम लेई नें साधु ने किमाड़ जड़णो उघाड़णो थापे, ते जिनागम नी शैलीमा अजाण मूर्ख थका अण हुन्ती थाप करे छै। पिण तिहां तो किमाड़ उघाड़वो पड़े एहवी जायगां में साधु नें रहिवो वर्ज्यौं छै। ते पाठ लिखिये छै।

से भिक्खू २ वा उच्चार पासवणे णं उव्वाहिज्जमाणे राओ वा वियालेवा गाहवति कुलस्स दुवार वाहं अवगुणेज्जा तेणेय तस्संधियारि अणुपविसेज्जा तस्स भिक्खूस्स णो कप्पति एवं वदित्तए "अयं तेणे पविसइवा" णोवा पविसइ उवलियति णोवा उवलियति आयवतिव णोवा आयवति वदतिवा णोवा वदति तेण हडं अणेण हडं तस्स हडं अण्णस्स हडं अयं तेणे अयं उवयरए अयं हंता अयं एत्थ मकासी तं तवस्सिं भिक्खुं अतेणं तेणंति संकति अहभिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा जावणो चेतेज्जा ॥ ४ ॥

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० २ उ० २)

से० ते. भि० साधु साध्वी. उ० बड़ी नीति. पा० छोटी नीति नी. उ० बाधा हुवे. रा० रात्रि नें विषे वि० सन्ध्या नें विषे. गा० गृहस्थ ना. कु० घर ना दु० बारणा अ० उघाड़े. ते० चोर. त० तिहां अन्धकार में अ० प्रवेश करे त० ते भि० साधु नें ण० नहीं क० कल्पे. ए० इम बोलवो. "अ० ए तिवारे ते० चोर. प० प्रवेश करे. छै" णो० नहीं प्रवेश करे छै. उ० छिपावे छै णो० नहीं छिपावे छै आ० पड़्यो छै णो० नहीं पड़्यो छै व० बोले छै णो० नहीं बोले छे ते० चोर हरयो. अ० अनेरो हरयो. अ० एह चोर. उ० सहायक अ० ए मारणे वालो अ० एह अठे इम कियो ते० ते भि० तपस्वी साधु नें अचोर नें चोर इम शङ्का हुवे. अ० भि० साधु पु० पहिलां. उपदेश यावत् णो० नहीं. चे० करे

अथ इहां कह्यो। एहवे स्थानके साधु नें नहीं रहिवो। तेहनों ए परमार्थ जे उपाश्रय मांही लघुनीति तथा बड़ी नीति परठण री जगां नहीं हुवे, अनें गृहस्थ बाहिरला किमाड़ जड़ता हुवे तिवारे

रात्रि नें विषे अथवा विकाल नें विषे आबाधा पीड़तां किमाड़ खोलणा पड़े। ते खुलो देखी माहे तस्कर आवे, बतायां-न बतायां अवगुण उपजता कह्या। सर्व दोषां में प्रथम दोष किमाड़ खोलवा नों कह्यो। तिण कारण थी साधु नें किमाड़ खोलतो पड़े एहवे स्थानके रहिवो नहीं। तिवारे कोई कहे इहां तो साधु साध्वी बेहूं नें रहिवो वर्ज्यो छै। जो साधु नें किमाड़ खोल्यां दोष उपजे तो साध्वी नें पिण किमाड़ न खोलणा। इम कहे— तेहनो उत्तर।

इहां "से भिक्खू भिक्खुणीवा" ए साधु रे संलग्न साध्वी रो पाठ कह्यो छै। पिण इहां अभिप्राय साधु नों इज छै। साध्वी नों न सम्भवे। कारण कि इण हिज पाठ मे आगल कह्या "तंतवस्सिं भिक्खुं अतेणं तेणं तिसंकति" इहां तपस्वी भिक्षु अचोर प्रति चोर नी शङ्का उपजै, ए साधु नों इज पाठ कह्यो। अनें साधु रे साथे साध्वी रो पाठ कह्यो ते उच्चारण साथ आयो छै। जिम आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० ३ में कह्यो—साधु साध्वी नें सर्व भण्डोपकरण ग्रही गोचरी, विहार, दिशा जावणो कह्यो तिहां अर्थ में जिन कल्पिकादिक कह्यो। तो साध्वी ने तो जिन कल्पिक अवस्था न हुवे, पिण साधु रे संलग्न साध्वी रो पाठ कह्यो छै। तिम इहां पिण साधु रे संलग्न साध्वी रो पाठ आयो जणाय छै। तथा वली आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० ३ एहवो कह्यो—गृहस्थ ना घर मे थई नें जाणो पड़े ते उपाश्रय नें विषे साध्वी ने तो रहिवो कल्पे,अनें साधु नें न कल्पे। ते माटे इहां आचाराङ्ग में एहवी जगां रहिवो वर्ज्यो ते साधु नी अपेक्षाय सम्भवे छै। अनें साध्वी नों पाठ कह्यो ते साधु रे संलग्न माटे जणाय छै। तिम इहां पिण "से भिक्खूवा भिक्खुणीवा" ए साधु रे संलग्न साध्वी रो पाठ कह्यो सम्भवे छै। पिण इहां साध्वी रो कथन नहीं जाणवो। डाहा हुवे तो विचारि जोइजो

इति ५ बोल सम्पूर्ण।

तथा वली बृहत्कल्प उ० १ कह्यो साध्वी नें तो अभंग दुवार रहिवो कल्पे नहीं। अनें साधु नें कल्पे कह्यो ते लिखिये छै

नो कप्पइ निग्गंथीणं अवंगुय दुवारिए उवस्सए वत्थए, एगं पत्थारं अंतोकिच्चा, एगं पत्थारं बाहिं किच्चा ओहाडिय चल मिलियागंसि एवण्हं कप्पइ वत्थए॥ १४॥ कप्पइ निग्गंथाणं अवगुंय दुवारिए उवस्सए वत्थए॥ १५॥

(वृहत्कल्प उ० १)

नो० नहीं. क० कल्पे नि० साध्वी नें. अ० किमाड़ रहित. उ० उपाश्रय नें विषे व० रहिवो (कदाचित् रहिवो पड़े तो) ए० एक. प० पड़दो अ० माहि नें जठे सूवे बठे कि० बांधी नें. ए० एक प० पड़दो. बा० बाहिर. कि० बांधी नें. चि० पछेवड़ी प्रमुख बांधी नें ब्रह्मचर्य यत्न निमित्ते. उ० उपाश्रय में. व० रहिवो. क० कल्पे छै नि० साधु नें. अ० किमाड़ रहित पिण उ० उपाश्रय नें विषे. व० रहिवो।

अथ अठे इम कह्यो। साध्वी नें उघाड़े बारणे रहणो नहीं। किमाड़ न हुवे तो चिलमिली (पछेवड़ी) बांधी नें रहिणो। पिण उघाड़े बारणे रहिवो न कल्पे तिणरो ए परमार्थ शीलादिक राखवा निमित्ते किमाड़ जड़नों। पिण शीलादिक कारण विना जड़नों उघाड़नों नहीं। अनें साधु ने तो उघाड़े द्वारे इज रहिवो कल्पे इम कह्यो। धर्मसिंह कृत भगवती ना टब्बा में १३ आंतरा मे आठमो आंतरा नों अर्थ इम कियो। „मग्गंतरे हि” कहितां साधु साध्वी नें ५ महाव्रत सरीखा छते साधुनें ३ पछेवड़ी अनें साध्वी नें ४ पछेवड़ी, तथा साधु तो किमाड़ देई न रहै। अनें साध्वी किमाड़ विना उघाड़े किमाड़ न सूवे। तो मार्गमांही फेवड़ो स्यूं फेर। उत्तर-साध्वी तो ४ पछेवड़ी अनें सकिमाड़ रहै ते स्त्री ना खोलिया माटे वीतराग नी आज्ञा ते मार्ग मुक्ति नों इज छै। धर्मसिंह कृत १३ आंतरा में आर्या नें किमाड़ जड़वो कह्यो। अनें साधु ने किमाड़ जड़णो वर्ज्यो। ते भणी आवश्यक सूयगडाङ्ग आचाराङ्ग वृहत्कल्प आदि अनेक सूत्रां में साधु नें किमाड़ जड़वो उघाड़वो खुलासा वर्ज्यो छतां जे द्रव्यलिङ्गी पेट भरा जिनागम ना रहस्य ना अजाण पोता नो मत थापवानें

काजे अनेक करोल कल्पित कुयुक्ति लगावी नें साधु नें किमाड़ जड़वो तथा उघाड़वो थापे ते महा मृषावादी अन्यायी अनन्त संसार रा वधारणहार जाणवा । डाहा हुवे तो विचारि जोइजो ।

इति ६ बोल सम्पूर्ण ।

इति कपाटाऽधिकारः ।

इति श्री जयगणि विरिचितं

भ्रमविध्वंसनम् ।

